देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला—२१

जहाँगीर का आत्मचरित

(जहाँगीरनामा)

अनुवादक

ब्रजरत्नदास

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

शबीह मुबारक शाहजादा सलीम—अमल दसवंत तलमीज़
ख्वाजा अब्दुस्समद शीरीं कलम

माला का परिचय

जोधपुर के स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी मुंसिफ इतिहास और विशेषतः मुसलिम-काल के भारतीय इतिहास के बहुत बड़े ज्ञाता और प्रेमी थे, तथा राजकीय सेवा के कामों से वे जितना समय बचाते थे, वह सब वे इतिहास का अध्ययन और खोज करने अथवा ऐतिहासिक ग्रंथ लिखने में ही लगाते थे। हिंदी में उन्होंने अनेक उपयोगी ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे हैं जिनका हिंदी संसार ने अच्छा आदर किया।

श्रीयुत मुंशी देवीप्रसाद की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि हिंदी में ऐतिहासिक पुस्तकों के प्रकाशन की विशेष रूप से व्यवस्था की जाय। इस कार्य के लिए उन्होंने ता० २१ जून १९१८ को ३५०० रुपया अंकित मूल्य और १०५०० रु० मूल्य के बंबई बंक लि० के सात हिस्से सभा को प्रदान किये थे और आदेश किया था कि इनकी आय से उनके नाम से सभा एक ऐतिहासिक पुस्तकमाला प्रकाशित करे। उसी के अनुसार सभा यह 'देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला' प्रकाशित कर रही है। पीछे से जब बंबई बंक अन्यान्य दोनों प्रेसीडेंसी बंकों के साथ सम्मिलित होकर इंपीरियल बंक के रूप में परिणत हो गया, तब सभा ने बंबई बंक के हिस्सों के बदले में इंपीरियल बंक के चौदह हिस्से, जिनके मूल्य का एक निश्चित अंश चुका दिया गया है, और खरीद लिए और अब यह पुस्तकमाला उन्हींसे होनेवाली तथा स्वयं अपनी पुस्तकों की बिक्री से होनेवाली आय से चल रही है। मुंशी देवीप्रसाद का वह दान-पत्र काशी नागरी प्रचारिणी सभा के २६ वें वार्षिक विवरण में प्रकाशित हुआ है।

विषय-सूची

—o—

भूमिका

वक्तव्य

मानव स्वभावतः अपनी जाति, भाषा तथा देश के पूर्व गौरव की गाथा गाने का इच्छुक रहता है और इसकी स्मृति ही उसे उन्नति पथ पर दृढ़ता से अग्रसर होने को प्रोत्साहित करती रहती है। प्रत्येक भाषा के साहित्य-भांडार में इतिहास, जीवनचरित्र आदि का प्रमुख स्थान है, जिनमें उस भाषा-भाषी देश की सारी गौरव-गाथाएँ संचित रखी जाती हैं किंतु हमारी मातृभाषा, समग्र भारत की मानी हुई राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा, हिंदी के साहित्य में इसको उपेक्षणीय सा माना गया है। हिंदी-साहित्य के किसी भी बड़े इतिहास को उठाकर यदि देखा जाय तो उसमें भी इस प्रकार की रचनाओं तथा इनके विद्वान रचयिताओं का उल्लेख तक नहीं मिलेगा। इधर-उधर कहीं साहित्यिक इतिहासों तथा जीवनचरित्रों का उल्लेख भले ही मिल जाय पर शुद्ध इतिहास, पुरावृत्त, जीवनचरित्र आदि का नामोल्लेख तक नहीं मिलेगा। यह कहा नहीं जा सकता कि ऐसा साहित्य हिन्दी के भांडार में हई नहीं है जिनका उल्लेख किया जा सके। तब ऐसी उपेक्षा का क्या कारण हो सकता है? कारण कुछ भी हो पर इसका कुफल अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है कि ऐसी रचनाओं की प्रगति नाम मात्र ही को हो पाती है। व्यवसायी प्रकाशकगण तो ऐसी रचनाओं से दूर भागते ही हैं, उन्हें तो वैसी रचनाओं से फुर्सत ही नहीं मिलती जो धड़ाधड़ बिकती चली जाय। बड़ी बड़ी प्रकाशक संस्थाएँ भी यदि अपने प्रकाशनों की सूची देखें तो इतिहास, जीवनचरित आदि के प्रकाशनों की...

संख्या स्यात् ही पाँच प्रतिशत पावेंगे। ऐसी अवस्था में कोई भी साहित्यकार ऐसी रचनाओं को प्रस्तुत करने में क्यों प्रयास करेगा जिन्हें प्रकाशित करने के लिए कोई न मिले।

भारतवर्ष प्रायः एक सहस्र वर्ष तक पददलित रहने के अनंतर अब स्वतंत्र हुआ है अतः अब इसका यह कर्तव्य हो गया है कि अपने इतिहास का पूरा विवरण प्रस्तुत कराए तथा उसके अंक में जिन जिन महापुरुषों ने विशिष्ट अभिनय किए हैं उनके जीवनचरित्र भी तैयार कराए। यह कार्य केवल किसी एक विशद, कई जिल्दों के भारी, ग्रंथ से कभी पूरा नहीं हो सकता और न वह ग्रंथ ही अपने में संपूर्ण हो सकेगा। इसके लिए एक विशद आयोजन की आवश्यकता होगी, जिसका प्रथम कार्य होगा कि अन्य भाषाओं में प्राप्त भारत की समग्र इतिहास सामग्री का हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत करे। इस प्रकार के सभी साधनों के प्राप्त होने ही पर हिंदी विद्वानगण अपने अध्ययन तथा अध्यवसाय से भारत के अनेक राजवंशों, जातियों, प्रांतों आदि का प्रामाणिक इतिहास तथा महान् पुरुषों के जीवनचरित्र लिख सकेंगे और इनके कई मालाओं में ग्रथित किए जाने के अनंतर ही भारत का सर्वांगपूर्ण बृहत् इतिहास लिखा जा सकेगा।

अस्तु, कुछ ऐसे ही विचारों से जब स्व० मुंशी देवीप्रसाद जी ने काशी नागरीप्रचारिणी सभा में सन् १९१८ ई० में एक निधि स्थापित की तथा 'देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला' निकालना निश्चित हुआ तब भारतीय इतिहास के मुस्लिम या मध्यकाल का विद्यार्थी होने के कारण मैंने भी इसमें सहयोग देने का विचार किया। सं० १९८०, सन् १९२३ ई० में इस माला के ५ वें पुष्प के रूप में गुलवदन बेगम कृत हुमायूँ नामा का मेरा अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसके पहले सुलेमान सौदागर, फाहियान, सुंगयुन तथा अशोक की धर्मलिपियाँ प्रकाशित हो चुकी

थीं। इसके अनंतर मेरे ही प्रस्ताव पर मुंशी देवीप्रसाद जी, श्रीचंद्रधर शर्मा गुलेरी जी आदि ने मआसिरुलउमरा के हिंदी अनुवाद को इस माला में प्रकाशित किए जाने की सम्मति दी और इसके प्रकाशन का निश्चय हुआ। उक्त विशद फारसी ग्रंथ से हिंदू सर्दारों की जीवनियाँ अलग करके उनका संग्रह मुगल दरबार प्रथम भाग के रूप में सं० १६८८ में प्रकाशित हुआ। अन्य भागों में मुसलमान सर्दारों की जीवनियाँ अक्षरानुक्रम से संगृहीत हैं। द्वितीय भाग सं० १६६५ में, तृतीय भाग सं० २००४ में और चतुर्थ भाग सं० २००६ में प्रकाशित हुआ। अभी अंतिम पाँचवाँ भाग प्रकाशित होने को पड़ा ही है। इस प्रकार लगभग तीस वर्ष में चार भाग प्रकाशित हो सके हैं और आशा है कि पाँचवाँ भाग भी मेरे जीवनकाल में प्रकाशित हो जायगा।

प्रायः चार वर्ष हुए कि सभा ने मेरे ही प्रस्ताव पर, क्योंकि उक्त माला में बहुत दिनों से कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हो पाई थी, तुजुके जहाँगीरी के अनुवाद कराने का निश्चय किया और अब वह अनुवाद प्रकाशित होकर पाठकों तथा इतिहास-प्रेमियों के सम्मुख उपस्थित है। ऐतिहासिक ग्रंथों के अनुवाद के लिए जिस भाषा में वह ग्रंथ हो उसका तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाय उसका दोनों का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है और तत्कालीन इतिहास की पूरी जानकारी भी आवश्यक है। कुछ ऐसा होने के कारण मेरा बहुत विचार था कि इतने लंबे काल में हिंदी साहित्य को मैं ऐसे अनुवाद अधिक संख्या में देता पर प्रकाशकों के अभाव तथा उपेक्षा से ऐसा नहीं कर पाया। इस लंबे काल ने अवश्य ही मेरे शरीर को जराजीर्ण कर डाला और अब उत्साह भी वैसा नहीं रह गया। अब इस ग्रंथ का परिचय, मुसलमानी शक आदि का विवरण तथा ग्रंथकार का परिचय भूमिका में दे देना उचित है, जो आगे दिया जा रहा है।

———

ग्रंथ-परिचय

भारतीय इतिहास के मुस्लिम काल या मध्य काल में जितनी मुसल्मान सलतनतें भारत में स्थापित और विलीन हुई उनमें सबसे अधिक शक्तिशाली तथा वैभवपूर्ण साम्राज्य मुगल-सम्राज्य था। ये सम्राट् गण वास्तव में तुर्कमान, चगत्ताई तुर्क, थे पर भारत के इतिहास में ये मुगल सम्राट् के नाम ही से प्रसिद्ध हुए। इस साम्राज्य के संस्थापक जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने पहले पहल अपना आत्मचरित तुर्की भाषा में लिखा था, जो ऐतिहासिक तथा राजनीतिक दृष्टि से जितना महत्वपूर्ण है उतना ही वह साहित्यिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी है। इसके अनंतर दूसरा आत्मचरित हुमायूँ की सौतेली बहिन गुलबदन बेगम ने अकबर के राज्य-काल में तथा उसी के कथन पर, जैसा कि प्रथम वाक्य ही से ज्ञात होता है, अपने पिता बाबर तथा भाई हुमायूँ का ज्ञात वृत्तांत लिखा है। यह रचना सन् १४५७ ई० के लगभग की है। इसका अनुवाद हिंदी में इसी माला में प्रकाशित हो चुका है। उसके उपरांत इस राजवंश के चतुर्थ सम्राट् जहाँगीर का लिखा हुआ आत्मचरित है, जिसका अनुवाद इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ की अनेक प्रकार की प्रतियाँ मिलती हैं और इसके नामों के भी अनेक रूप मिलते हैं, जिन पर विचार कर लेना उचित है। इसके अनेक नाम इस प्रकार हैं—

१—द्वाजदः सालए जहाँगीरी (जहाँगीर के बारह वर्ष)
२—वाकेआतें जहाँगीरी (जहाँगीर-काल की घटनाएँ)
३—तुजुके जहाँगीरी[1] (जहाँगीर की स्वयं लिखी घटना)

१—ब्रिटिश म्यूजिअम की प्रति का यही नाम है।

४—कारनामए जहाँगीरी (जहाँगीर के कामों की पुस्तक)
५—बयाजे जहाँगीरी[1]
६—मक़ालाते जहाँगीरी (जहाँगीर की कही हुई बातें)
७—जहाँगीर नामा[2] (जहाँगीर की जीवनी)
८—तारीखे सलीम शाही[3] (सलीमशाह का इतिहास)

फारसी में लिखे गए इतिहासों में इस आत्मचरित का पहले पहल उल्लेख मआसिरुल् उमरा के संयुक्त लेखक अब्दुल् हई खाँ ने उक्त रचना की भूमिका में इस प्रकार किया है—'संपादन-कार्य में निम्न-लिखित पुस्तकों से सहायता ली गई थी—संख्या ६. जहाँगीरनामा जिसमें जहाँगीर ने अपने राज्यकाल के बारह वर्ष का वृत्तांत स्वयं लिखा था।' यह संपादन-कार्य सन् ११८२ हि० (सन् १७६८-९ ई०, सं० १८२५ वि०) में आरंभ किया गया था। यह लेखक उस वंश का था, जिसमें इसके पूर्वज कई पीढ़ियों तक मुगल बादशाहों के प्रांतीय शासक रह चुके थे और इस कारण इसका यह कथन कि जहाँगीर ने केवल बारह वर्ष तक का वृत्तांत स्वयं लिखा था, विशेष महत्वपूर्ण है।

इसके अनंतर सन् १७८५-८६ ई० के एशाटिक मिसेलनी भाग २ पृ० ७१-१७३ पर जेम्स ऐंडरसन ने उक्त आत्मचरित के कुछ उद्धरण

१—बयाज अरबी शब्द है जिसका अर्थ सफेदी, स्वच्छता है। स्वच्छ लिखी हुई मूल पांडुलिपि को बयाज कहते हैं पर भ्रम से अंग्रेज विद्वानों ने बयाजे जहाँगीरी को इस ग्रंथ का एक नाम मान लिया है।

२—इंडिया ऑफिस की प्रति संख्यक ५४६ का यह नाम है और जहाँगीर ने स्वयं भी यह नाम अनेक बार दिया है।

३—रायल एशाटिक सोसायटी की प्रति का नाम 'तारीखे जहाँगीर नामा सलीमी' है और सर एच० एम० इलिअट ने तारीखे सलीम शाही कहा है।

अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रकाशित कराए थे। ऐंडरसन के सामने दो प्रतियाँ थीं जिनमें एक 'द्वाजदः सालए जहाँगीरी' थी अर्थात् इसमें बारह वर्ष का वृत्तांत था और जिसकी प्रतिलिपियाँ वितरित की गई थीं। दूसरी प्रति उन्नीस वर्ष तक के वृत्तांत की थी, जिसके अनंतर, कहा जाता है कि, स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण जहाँगीर ने आत्मचरित लिखना छोड़ दिया था। इसका नाम सर एच० एम० इलियट ने वाकेआते जहाँगीरी लिखा है पर उन प्रतियों पर तुजुके जहाँगीरी नाम लिखा है। जहाँगीर ने स्वयं पहले जहाँगीरनामा ही नाम बराबर दिया है पर बाद में उसने इकबालनामए जहाँगीरी भी लिखा है, जो मोतमिद खाँ के संपर्क के कारण लिखा गया ज्ञात होता है। मोतमिद खाँ ने भी अपनी रचना का दूसरा नाम रखा है।

इसके अनंतर मेजर डेविड प्राइस ने इस ग्रंथ का एक अनुवाद अंग्रेजी में करके 'मेमौयर्स आव द एम्परर जहाँगीर रिटिन बाई हिमसेल्फ एंड ट्रांसलेटेड फ्रॉम ए पर्शिअन मैनुस्क्रिप्ट' के नाम से द ओरिएंटल ट्रांसलेशन कमिटी द्वारा प्रकाशित कराया था, जिसका स्यात् दूसरा संस्करण सन् १८२९ ई० में हुआ था। इसकी तथा ऐंडरसन की मूल हस्तलिखित प्रतियों में विभिन्नता थी, जिसके संबंध में प्राइस स्वयं लिखता है कि दोनों की तुलना से ज्ञात होता है कि 'उसने (ऐंडरसन) कभी कभी कुछ घटनाओं के बीच के, जो दोनों में लिखे गए हैं, पूरे पूरे पृष्ठ छोड़ दिए हैं।' इससे इतना स्पष्ट हो जाता है कि प्राइस की प्रति में कुछ अंश परिवर्द्धित थे और जो प्रक्षिप्त हो सकते हैं। प्राइस की मूल प्रति में १५वें वर्ष सन् १०२९ हि० तक का वृत्तांत आया है ऐसा कहा जाता है।

इन दोनों प्रतियों को लेकर कुछ दिन वाद-विवाद भी हुआ था, जिसमें सर एच० एम० इलिअट, प्रोफेसर डाउसन, ड सासी आदि

विद्वानों ने योग दिया था। ड सासी (जर्नल दे सेवान्स, १८३० में) अपनी सम्मति इस प्रकार देता है कि दोनों प्रतियाँ विभिन्न हैं। ऐंडरसन की प्रति में छोटी तथा संक्षिप्त होते भी बहुत सी ऐसी घटनाएँ वर्णित हैं, जिनका प्राइस की बड़ी प्रति में उल्लेख नहीं हुआ है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि बड़ी प्रति का छोटी प्रति संक्षिप्तीकरण है। साथ ही प्राइस की प्रति में मूल्य, संख्या, आय-व्यय आदि इतना बढ़ाकर लिखा गया है कि असंभव सा ज्ञात होता है। ऐंडरसन की प्रति सम्राट् की लिखी हुई विशेष रूप से ज्ञात होती है और प्राइस की प्रति सम्राट् के लिखे ग्रंथ के आधार पर होते भी किसी दूसरे की लिखी ज्ञात होती है, जिसने अनुचित रूप से प्रथम पुरुष में लिखते हुए तथा ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम का विचार न रखते हुए बहुत सी बाहरी बातें लिख डाली हैं और बहुत सी आवश्यक बातों को छोड़ दिया है।

इसके अनंतर रायल एशाटिक सोसाइटी लंदन की हस्तलिखित प्रतियों की सूची बनाते हुए मि० मार्ले ने इस ग्रंथ की एक प्रति पाई और इंडिया आफिस की प्रति से मिलान करने पर उन्हें स्पष्टतया ज्ञात हुआ कि वे एक ही ग्रंथ के दो संस्करण हैं। इनमें जिस संस्करण का अनुवाद मेजर प्राइस ने किया था उसे इन्होंने केवल इस कारण प्रथम संस्करण मान लिया था कि इसकी मूल प्रति जहाँगीर की मृत्यु के तीन वर्ष अनंतर सन् १०४० हि० की लिखी हुई थी। उन्होंने इसे इसी कारण प्रामाणिक भी माना कि इतनी शीघ्र प्रतिलिपि करते हुए कोई भी इतने प्रक्षिप्त अंश सम्मिलित कर जनता को धोखा नहीं दे सकता। इतने पर भी मि० मार्ले को इसकी प्रामाणिकता पर शंका बनी रही और उन्होंने दूसरे छोटे संस्करण ही को विशिष्ट माना। मुहम्मदशाह के समय किसी मुहम्मद हादी ने इस ग्रंथ को संपादित कर इसका एक तितिम्मा (परिशिष्ट) लिखा और उसकी भूमिका में वह लिखता है कि

जहाँगीर ने अठारह वर्ष तक का निज वृत्तांत लिखा था इसलिए उसकी मृत्यु तक का वृत्तांत अन्य साधनों से लेकर पूरा कर दिया है। जहाँगीरनामा की अनेक हस्तलिखित प्रतियों में, जो मिलती हैं, यह तितिम्मा जोड़ा हुआ पाया जाता है। इस मुहम्मद हादी का उल्लेख करते हुए मि० मार्लें लिखते हैं कि यह बड़ा संस्करण अर्थात् अठारह वर्ष का जीवन-वृत्तांत जहाँगीर का लिखा ज्ञात होता है।

इसके साथ साथ मि० मार्लें ने दो संभावनाएँ की हैं। प्रथम यह कि जहाँगीर ने अपनी रचना के लिए पहले एक रूप रेखा बनाई, जो बाद में पूरी की गई है और यही दो संस्करण होने का रहस्य है परन्तु यदि ऐसा हुआ हो तो वह अवश्य ही जहाँगीर के बहुत दिनों बाद मुहम्मद हादी द्वारा किया गया है। द्वितीय संभावना यह बतलाई कि जहाँगीर ने अपनी रचना अपनी मातृभाषा चगत्ताई तुर्की में लिखी थी और ये भिन्न संस्करण फारसी में अनुवाद करते समय पूरा या अधूरा किए जाने के कारण हो गए हैं। परंतु यह संभावना भी ठीक नहीं जँचती क्योंकि इन संस्करणों में ऐसी विभिन्नताएँ हैं जो एक मूल को आधार नहीं बतलाती हैं।

सर इलियट का कथन है कि प्राइस ने जिस संस्करण से अनुवाद किया है वह किसी सम्राट् का लिखा नहीं ज्ञात होता प्रत्युत् किसी जौहरी का। परंतु दोनों ही संस्करणों में रत्नों के मूल्य आदि दिए गए हैं। वास्तव में जहाँगीर रत्नों का प्रेमी था पर अवश्य ही प्राइस के संस्करण में मूल्य आदि बहुत बढ़ाकर लिखे गए हैं और इसलिए ऐंडरसन का संस्करण ही प्रामाणिक है। प्रोफेसर डाउसन की सम्मति है कि जहाँगीर सा सम्राट् अपने आत्मचरित लिखने के परिश्रम को नहीं उठा सकता था। उसने स्वयं लिखा है कि उसने मोतमिद खाँ को आत्मचरित आगे लिखने के लिए नियुक्त किया है, जो पहले ही से उसके राज्यकाल

की घटनाओं को लिखने में लगाया गया था। संभव है कि ऐसे और भी लेखक रहे हों जिनके कारण भिन्न भिन्न संस्करण मिलते हैं। एंडरसन का संस्करण बारह वर्षों तक ही का है और इसकी अनेक प्रतियाँ तैयार कराकर जहाँगीर ने स्वयं वितरित किया था। अतः यह संस्करण मूल लेखक-सम्मत है और प्रामाणिक है। प्राइस के संस्करण को ऐसी संमति या प्रामाणिकता प्राप्त नहीं है।

इस प्रकार के विवेचन से ज्ञात होता है कि जहाँगीर के आत्मचरित की तीन प्रकार की प्रतियाँ प्राप्त हैं। प्रथम में केवल बारह वर्ष तक का वृत्तांत है। यह सरलता से लिखी गई है और इसपर सत्यता तथा गंभीरता की छाप है, जो सम्राट्-लेखक के उपयुक्त है अतः विशेष मान्य है। इस पुस्तक के पृ० ५३६ पर लिखा है कि 'जहाँगीरनामा के बारह वर्ष का वृत्तांत समाप्त हो चुका है इसलिए हमने अपने निजी पुस्तकालय के लेखकों को आज्ञा दी कि इनकी एक जिल्द बनालें और इनकी कई प्रतिलिपियाँ प्रस्तुत करें।' इस उद्धहरण से स्पष्ट ध्वनि निकली है कि आगे का कार्य रुका नहीं है प्रत्युत् चल रहा है और केवल प्रथम जिल्द बारह वर्षों के वृत्तांत की अलग बना ली गई है। पहली प्रति शुक्रवार ८ शहरिवर सन् १०२७ हि० (सावन सुदी ८ सं० १६७५ के लगभग तैयार हुई और शाहजहाँ को दी गई थी। इस कोटि की प्रतियाँ विशेष मिलती हैं। दूसरे प्रकार की प्रति वह है जिसका अनुवाद प्राइस ने किया है। इसमें पंद्रहवें वर्ष तक का वृत्तांत आया है, जिसमें प्रथम से बहुत कुछ निकाल दिया गया है, घटाया तथा विस्तार किया हुआ है और बहुत सी बातों को मनमाना रूप दे दिया गया है। इन कारणों से यह प्रामाणिकता की कोटि में नहीं आती और जाली सिद्ध होती है। इसके लिए केवल एक उदाहरण दिया जाता है। जहाँ जहाँगीर ने अपने पिता अकबर के रूप, रंग, स्वभाव आदि का कुछ वर्णन किया है वहीं प्राइस के अनुवाद में उसके ऐश्वर्य

का भी उल्लेख मिलता है। उसका अनुमान करते हुए पृष्ठ ७८ पर लिखता है कि 'आगरा के कोषागारों में से केवल एक कोषागार के सोने को एक सहस्र मनुष्य चार सौ तुलाओं को लेकर दिन रात पाँच महीने तक तौलते रहे तब भी वह पूरा नहीं हुआ। इस पर शाही आज्ञा से तौलाई रोक दी गई और यह केवल एक नगर के एक कोष के संबंध में है।' इसी प्रकार बारह सहस्र हाथी तथा बीस सहस्र हथिनी आदि का उल्लेख किया है।

तीसरे प्रकार की वे प्रतियाँ हैं जिनमें उन्नीसवें वर्ष के कुछ अंश तक का वृत्तांत है। इस जहाँगीरनामा के पृ० ७६०-१ पर लिखा है कि 'दो वर्ष हुए कि हममें जो निश्शक्तता आ गई थी और अब तक बनी हुई है उसके कारण......लिख नहीं पाते। अब मोतमिद खाँ भी......आ गया है।...पहले भी इसे यह कार्य सौंपा जा चुका है इसलिए हमने आज्ञा दी कि जिस तिथि तक हम हाल लिख चुके हैं उसके बाद से......वह लिखे और हमारे संस्मरण में जोड़ दिया करे।' इसके अनंतर का हाल स्पष्टतः मोतमिद खाँ का लिखा है, जो अधिक नहीं है। इससे यह निश्चित होता है कि इस प्रकार की प्रतियों पर आत्मचरित लेखक ने अपनी छाप दे दी है और ये प्रामाणिकता की कोटि के बाहर नहीं जातीं। ऐसी कुछ प्रतियों के अंत में मुहम्मद हादी का लिखा तितिम्मा (परिशिष्ट) जुड़ा हुआ मिलता है जिसमें जहाँगीर के अंतकाल तक का विवरण पूरा कर दिया गया है। ऐसी प्रतियों पर वाकेआते जहाँगीरी नाम मिलता है और ये जहाँगीर के बाद प्रस्तुत की गई हैं।

इस प्रकार देखा जाता है कि जहाँगीरनामा की तीन प्रकार की प्रतियाँ मिलती हैं और इसके नाम भी आधे दर्जन प्रकार के मिलते हैं। सन् १८६३ ई० में सर सैयद अहमद खाँ ने अंतिम

प्रकार की कई प्रतियों का मिलान कर एक सुसंपादित संस्करण गाजीपुर से निकाला था और इसके दूसरे ही वर्ष इसे अलीगढ़ से भी प्रकाशित कराया था। इसकी प्रति भी अब अप्राप्य है। इस संस्करण का अनुवाद अलेक्ज़ेंडर रॉगर्स ने किया था जिसे हेनरी बेवारिज ने संपादित कर प्रकाशित कराया। प्रथम भाग सन् १६०६ ई० में और द्वितीय भाग सन् १६१४ में रायल एशाटिक सोसाइटी लंदन से प्रकाशित हुआ। इसका नाम तुज़ुके जहाँगीरी या मेमौयर्स आव जहाँगीर है। यह अनुवाद अच्छा हुआ है।

उक्त अनुवाद को मि० एच० बेवरिज ने संपादित किया था और वह लिखते हैं कि सैयद अहमद ने केवल एक ही हस्तलिखित प्रति के आधार पर इस ग्रंथ का संपादन किया होगा ऐसा ज्ञात होता है और वह प्रति भी त्रुटि पूर्ण रही है और इसमें नाम आदि विशेषकर अशुद्ध रहे हैं। इस कारण इंडिया हाउस तथा बृटिश म्यूजियम की सुंदर शुद्ध प्रतियों से मिलान कर मि० बेवरिज ने इस अनुवाद का संशोधन किया तथा रायल एशाटिक सोसाइटी की प्रति से भी सहायता ली, जो उनकी राय में बहुत अच्छी नहीं है। डा० र्यू ने लिखा है कि मि० विलिअम अर्सकिन ने बृटिश म्यूजिअम वाली प्रति से नौ वर्ष तक का वृत्तांत अनुवाद किया था पर यह कभी प्रकाशित हुआ था या नहीं इसका उल्लेख नहीं है।

इलिअट एंड डाउसन के 'हिस्ट्री आव इंडिया एज टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरिअन्स' के भाग ६ में पृ० सं० २६४-७५ तक तारीखे सलीमशाही के और पृ० २८४-३६१ तक वाकेआते जहाँगीरी के अनूदित उद्धरण दिए गए हैं और उन दोनों की भूमिका में उक्त आत्मचरित की हस्तलिखित प्रतियों पर विचार किया गया है। इन दोनों प्रतियों के आरंभ तथा अंत के कुछ अंशों के मूल उद्धरण भी दिए गए

हैं। तुज़ुके जहाँगीरी के आरंभ तथा अंत के भी कुछ अंश उद्धृत हैं, जिन्हें कारनामए जहाँगीरी (जोनाथन स्काट के पुस्तकालय की प्रति) के ठीक अनुसार बतलाया गया है। हमारी निजी हस्तलिखित प्रति सन् १२१२ हि० (सन् १७९९-१८००ई०) को दिल्ली की लिखी हुई है और उससे यह दोनों पूर्णतया मिलती हैं। इसका नाम जहाँगीर नामा दिया हुआ है। इसमें १७४४ पंक्तियाँ है और कारनामए जहाँगीरी में १८२६ हैं। तारीख सलीमशाही की प्रति का जो मूल उद्धरण इस ग्रंथ में दिया गया है उनमें केवल आरंभ के अंशों का मिलान किया जा सकता है क्योंकि अंत के अंश भिन्न भिन्न हैं। आरंभिक अंशों में गद्य भाग एक ही है पर सलीमशाही में तीन शेर अधिक हैं, दो एक दम पहले जोड़े गए हैं और एक बीच में। इससे ज्ञात होता है कि तारीखे सलीमशाही में प्रतिलिपिकार ने अपनी ओर से बहुत कुछ जोड़ दिया है, जो डेविड प्राइस का आधार हो सकता है। इस प्रति में नौ पंक्तियों के ४९८ पृष्ठ अर्थात् ४४८२ पंक्तियाँ हैं अर्थात् प्रथम दो हस्तलिखित प्रतियों का ढाई गुना है। मूल आधार के एक होते भी परिवर्द्धन करने में जहाँगीर के दोषों को छिपाने तथा ऐश्वर्य को बढ़ाकर लिखने का पूरा प्रयास है और ऐसा करने से ऐतिहासिक अशुद्धियाँ हो गई हैं।

यद्यपि इस रचना के कई नाम मिलते हैं पर वास्तव में इसका जहाँगीरनामा ही नाम मान्य होना चाहिए जैसा कि इस रचना ही में अनेक बार आया है। दूसरा नाम इकबालनामा जो इस रचना में बाद को आ गया है वह मोतामिद खाँ के कारण आया ज्ञात होता है क्योंकि वह इस रचना के लिखने में जहाँगीर का सहायक था तथा उसने अपनी रचना का भी यही नाम रखा है। फारसी के अन्य इतिहास ग्रन्थों में भी यही पहला नाम आया है और छोटा होते पूर्ण विषय प्रगट

कर देता है। इस हिंदी अनुवाद का नाम 'जहाँगीर का आत्मचरित' रहेगा और हमारी निजी प्रति का भी यही नाम जहाँगीरनामा है।

जहाँगीर स्वयं लिखता है कि बारह वर्ष का वृत्तांत पूरा होने पर उसने उसकी अनेक स्वच्छ प्रतिलिपियाँ कराईं और जिल्दें बँधवाकर बहुत से लोगों में वितरित कीं। इसके अनंतर उसने आगे का वृत्तांत मोतमिद खाँ की सहायता से १८ वें वर्ष के मध्य तक का लिखा और तब बीमार हो जाने से यह कुल कार्य उसी को सौंप दिया। बारह वर्ष तक के वृत्तांत की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हैं पर १६वें वर्ष तक के वृत्तांत की प्रतियाँ बहुत कम मिलती हैं। इसका यह कारण बतलाया जाता है कि जहाँगीर ने शाहजहाँ के विद्रोह के समय के वृत्त में उसके संबंध में बहुत कड़ी कड़ी बातें लिखी हैं इसलिए शाहजहाँ के राज्यकाल में आगे के भाग की प्रतिलिपियाँ नहीं हुईं, इसी से इसका प्रचार नहीं हुआ। शाहजहाँ का विद्रोह १७ वें वर्ष में हुआ था और कम से कम पाँच वर्ष का वृत्तांत इस कठिनाई से मुक्त था। वास्तव में इसका कारण यह ज्ञात होता है कि प्रथम बारह वर्ष का वृत्त तो वस्तुतः जहाँगीर ही की निजी रचना है और उसने इसकी अनेक प्रतिलिपियाँ स्वतः प्रस्तुत कराकर लोगों में वितरित की थीं अतः वे अधिक संख्या में प्राप्त हैं पर इसके अनंतर का अंश कुछ बोलकर लिखा गया है या संकेत देने पर लिखे जाने के बाद दुहराकर ठीक कराया गया है तथा जिनकी प्रतिलिपियाँ प्रस्तुत कराने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। सन् १६१८ ई० में गुजरात की जलवायु जहाँगीर के अनुकूल नहीं पड़ी और वह बीमार पड़ गया, क्षय का रोग हो गया और वह बहुत दिनों तक कश्मीर में रहा। सन् १६२० ई० के नवम्बर में लौटने पर वह मरने-मरने को हो गया था और अच्छे होने पर भी वह अंत तक निर्बल ही बना रहा। जब वह नितांत अशक्य हो गया तब उन्नीसवें वर्ष

में इस कार्य को बन्द कर दिया, जिसकी पूर्ति मोतमिद खाँ ने अप इकबालनामा में किया है।

जहाँगीरनामा की भाषा बराबर सरल तथा सुबोध है और यत्र-तः अलंकृत भाषा का भी उपयोग हुआ है। बीच-बीच में अनेक प्रसिद्ध कवियों के शैर भी दिए गए हैं। वार्तालाप के रूप में दो एक स्थलों पर उत्तर-प्रत्युत्तर भी दिए हैं। इसने अपने भावों को यथा शक्ति खूब स्पष्ट करके लिखा है जिससे इसकी प्रकृति का बहुत ठीक पता चलता है। इसने बहुत से हिंदी शब्दों का प्रयोग किया है और अनेक स्थलों पर फारसी शब्दों का पर्याय हिंदी में दिया है। मुसल्मान-काल के फारसी इतिहासों में चापलूसी तथा प्रशंसा इतनी भरी रहती है और इस कारण घटनाओं की वास्तविक स्थिति तक इतनी दबा दी जाती है कि उनपर पूरी आस्था नहीं रह जाती। परंतु जब बादशाह स्वयं लिखने बैठता है तो उसे किसी अन्य की न चापलूसी करनी रहती है और न किसी की प्रशंसा अतः वह निष्पक्ष होकर ठीक बातें लिख डालता है। किंतु इसके साथ ही इनमें आत्म-श्लाघा का दोष पाया जाता है, जो जहाँगीर में बहुत अधिक मात्रा में मिलता है। यद्यपि जहाँगीर ने दूसरों के दोष दिखाने में कुछ कमी नहीं की है और अपने विचारों के अनुसार उन्हें दोषी प्रमाणित करने में कुछ उठा नहीं रखा है पर उन दोषियों की स्थिति आदि पर ध्यान नहीं रखा है। उसने स्वयं अपने दोषों का, पाशविक अत्याचारों का, भी वर्णन किया है पर तब भी बहुत सी बातें विशेषकर निजी बातें दबा गया है जिन्हें वह प्रगट नहीं करना चाहता था।

जहाँगीर न अपने प्रपितामह बाबर और न अपने पिता अकबर के समान महत्वशाली व्यक्ति था। यद्यपि उसने अनेक स्थलों पर अपने को उनसे कुछ ऊँचा दिखलाने का प्रयास किया है।

एक प्रकार कहा जा सकता है कि यह एक महान् व्यक्ति का पुत्र होने ही के कारण किसी प्रकार बाईस वर्ष राज्य चला पाया था और अंतकाल में अपने ही बढ़ाए एक सर्दार के हाथ अप्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ था। जहाँगीर अपने आत्मचरित में अपने विषय में जो कुछ लिखता है, बड़े बड़े आक्रमणों तथा विजयों की इच्छा-प्रगट करता है, अपने पिता से बढ़कर अपने को प्रगट करने का प्रयत्न करता है वहाँ वह कभी कभी घृणा, उपेक्षा या उपहास का पात्र बन जाता है। ज्ञात होता है कि कोई नशे में बहक रहा है। इसने न शाहजादगी की अवस्था ही में और न बादशाह होने पर ही किसी युद्ध में स्वयं योग दिया था। राज्य के आरंभ में खुसरू का पीछा करने में इसने जो तत्परता दिखलाई थी वह न कभी पहले और न बाद में दिखलाई पड़ी। तब भी इसने अपने संबंध में जो कुछ लिखा है वह अत्यंत आकर्षक है। मदिरोत्सवों का, अहेरों का, पशु-पक्षी, फूल-फल, प्रकृति प्रेम आदि का अत्यंत सुन्दर स्वाभाविक वर्णन किया है। यह कहीं अपने ही को अत्यंत क्रूर हिंसक सा प्रगट करता है और कहीं अत्यंत प्रेमी, जीवों के प्रति अत्यंत दयालु सा। जहाँगीर ने अपने आत्मचरित में अपने पिता का बहुत कुछ वर्णन दिया है और बड़ी श्रद्धा के साथ दिया है, जिसके विरुद्ध वह उसके जीवनकाल में विद्रोह कर चुका था।

यह आत्मचरित भारतेतिहास की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। इस काल के दो अन्य इतिहास भी फारसी में प्राप्त हैं, जिनमें मोतमिद खाँ के इकबालनामा का उल्लेख किया जा चुका है। कहा जाता है कि यह तीन भागों में लिखा गया था, जिनमें प्रथम में बाबर तथा हुमायूँ का और द्वितीय भाग में अकबर का वृत्तांत दिया गया है। तीसरे में जहाँगीर का पूरा वृत्तांत तीन सौ पृष्ठों में दिया गया है। प्रथम दो भागों की प्रतियाँ प्रायः नहीं के समान हैं पर तृतीय की

बहुत मिलती हैं। मोतमिद खाँ का नाम मुहम्मद शरीफ था और इसे यह पदवी बाद में मिली थी। यह जहाँगीर का समकालीन था। दूसरा इतिहास 'मआसिरे जहाँगीरी' है, जिसका लेखक ख्वाजा कामगार गैरत खाँ था। इसे 'कामगार हुसेनी' भी लिखा गया है। इस इतिहास का शाहजहाँ के संकेत पर सन् १६३० में लिखना आरंभ हुआ था। इसकी मृत्यु सन् १६४० ई० में हो गई अतः इस इतिहास का रचनाकाल इसी दस वर्ष के बीच में है। इसके सिवा अब्दुल् बाकी के मआसिरे रहीमी तथा मुहम्मद अमीन के अनफउल् अखबार से इस काल के इतिहास पर कुछ प्रकाश पड़ता है जो उसी काल की रचनाएँ हैं।

इस जहाँगीरनामा का एक अनुवाद उर्दू में किसी अहमदअली सीमाब रामपुरी ने मुहम्मद हादी के संस्करण के आधार पर किया था; जो सन् १८७४ ई० में नवलकिशोर प्रेस से छपा था। इसके अनंतर मुंशी देवीप्रसाद जी ने मोतमिद खाँ के आधार पर एक जहाँगीरनामा संक्षिप्त रूप में बहुत से अंशों को छोड़ते हुए लिखा जो सन् १९०५ ई० में भारत मित्र प्रेस से प्रकाशित हुआ था। इस आत्मचरित का अभी तक अनुवाद हिंदी में प्रस्तुत नहीं हुआ था वही अब पूरा हुआ है। राजर्स एंड बेवरिज का जहाँगीरनामा ही इसका आधार है और एक निजी हस्तलिखित फारसी प्रति से, जो डेढ़ सौ वर्षों से अधिक प्राचीन है, मिलान करते हुए लिखा गया है। अन्य प्रतियों का भी तथा इकबालनामा फारसी तथा इलियट डाउसन भाग ६ से भी सहायता ली गई है। यथाशक्ति यह अनुवाद बहुत कुछ जाँच कर लिखा गया है। अब जहाँगीर का संक्षिप्त परिचय तथा फारसी सनों तथा महीनों की कुछ विवेचना कर देना आवश्यक है, जो आगे दिया जाता है।

फारसी सन् आदि का विवरण

हिंदुस्थान के इतिहास के मुसलिम-काल का अंश अधिकतर फारसी में लिखे गए इतिहास ग्रंथों के आधार पर लिखा गया है और इनमें तथा सिक्कों पर हिजरी सन् या जलूस के वर्ष ही दिए गए हैं। सम्राट् अकबर ने इलाही सन् भी चलाया था, जो जहाँगीर के राज्य के अंत तक प्रचलित रहा। इसका आरंभ उसने अपनी राजगद्दी के प्रथम वर्ष से किया है और ईरान के सौर महीने लिए हैं। जहाँगीर ने अपने आत्मचरित में राशियों का भी उल्लेख बराबर किया है इसलिए संक्षेप में इन राशियों तथा महीनों का वर्णन दे देना उचित ज्ञात होता है। सूर्य का क्रांतिचक्र बारह भागों में विभक्त किया गया है। कुल को खचक्र या राशिचक्र कहते हैं, जिसका फारसी पर्याय मंतिकतुल्बुरूज है। प्रत्येक राशि को बुर्ज कहते हैं। इनके नाम फारसी, हिंदी तथा अंग्रेजी में निम्न प्रकार हैं —

	हिंदी	फारसी	अंग्रेजी
१.	मेष	हमल	एरीज्
२.	वृष	सौर	टॉरस
३.	मिथुन	जौजा	जेमिनी
४.	कर्क	सरतान	कैंसर
५.	सिंह	असद्	लिओ
६.	कन्या	सुंबुलः	विरगो
७.	तुला	मीजान	लिब्रा
८.	वृश्चिक	अकरब	स्कौर्पिओ

९.	धन	कौंस	सैगिटेरिअस
१०.	मकर	जदी	केप्रिकौर्नस
११.	कुंभ	दिलौ	ऐक्वेरिअस
१२.	मीन	हूत	पिसेस

जिस दिन सूर्य मीन राशि समाप्त कर मेष राशि में प्रवेश करता है वही दिन नौरोज कहा जाता है और उसी दिन से ईरानी वर्ष का प्रथम महीना फरवरदीन आरंभ होता है। इस मास के उन्नीसवें दिन को रोज शर्फ कहते हैं। ईरानी या फारसी तारीख को तारीख यज्दजुरदी कहते हैं क्योंकि इसका आरंभ ईरान के शाह यज्दजुर्द के समय में हुआ था। इस का वर्ष ३६५ दिन १५ घड़ी का माना जाता है। इसमें तीस तीस दिन के बारह महीने होते हैं पर अंतिम महीने इस्फंदारमुज के अंत में पाँच दिन बढ़ा देते हैं, जिन्हें खमसा कहते हैं। इस प्रकार ३६५ दिन एक वर्ष में हो जाते हैं पर चौथाई दिन जो एक वर्ष में बढ़ता है उसे एक सौ बीस वर्ष के बाद एक साथ एक महीना बढ़ाकर पूरा कर देते हैं। महीनों का नाम इस प्रकार है:—

१–फरवरदीन	२–उर्दिबिहिश्त	३–खुरदाद	४–तीर
५–मुर्दाद या अमुर्दाद	६–शहरिवर	७–मेह्र	८–आबाँ
९–आजर	१०–दै	११–बहमन	१२–इस्फंदारमुज

हिजरी सन् अरब से प्रचलित हुआ है और इसके महीने चंद्रदर्शन के दिन से आरंभ होते हैं। प्रथम दिन को गुर्रः कहते हैं और अंतिम दिन को सलाख कहते हैं। इसमें प्रायः छ महीने ३० दिन के तथा छ महीने उन्तीस दिन के होते हैं। इस प्रकार इसका वर्ष ३५४ दिन २२ घड़ी का होता है। इसके महीने तथा वर्ष दोनों चांद्र हैं, जिससे प्रत्येक छत्तीस वर्ष पर यह अन्य सौर शकों से एक वर्ष बढ़ जाता है।

हैं शक मक्का से मदीना की ओर काफिरों को कष्ट देने के लिए हिजरत (यात्रा करने) आरंभ करने के दिन से आरंभ होता है और इसके महीने इस प्रकार हैं—

१—मुहर्रम	२—सफर	३—रबीउलअव्वल	४—रबीउलआखिर
५—जमादिउल् अव्वल या औला	६—जमादिउल् आखिर या उखरा	७—रजब	८—शाबान
९—रमजान	१०-शव्वाल	११—जीकदः या जिल्कदः	१२—जीहिज्जः या जिल्हिज्जः

सम्राट् जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर ने अपने राज्य के २९ वें वर्ष सन् ९९२ हि० में इलाही सन् का प्रचार किया और इसका आरंभ ३ रबीउस्सानी सन् ९६३ हि० (फाल्गुन शुक्ला ५ सं० १६१२ वि०, २५ फरवरी सन् १५५६ ई०) को अपनी राजगद्दी से माना। इसके वर्ष तथा महीने सौर हैं और ईरानी यज्दजुर्दी महीनों के ही नाम इसमें रखे गए हैं, जिनका उल्लेख किया जा चुका है। इसके महीनों में २९ दिन से ३२ दिन तक होते हैं।

तारीख जलूसी किसी भी बादशाह की राजगद्दी से आरंभ होकर उसकी मृत्यु तक चलता है और प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि जलूसी वर्ष कहा जाता है। सम्राट् अकबर का जलूसी वर्ष हुमायूँ की मृत्यु के दूसरे दिन ३ रबीउस्सानी सन् ९६३ हि० से चलना चाहिए था पर ईरानी सन् इसके २५ दिन बाद आरंभ होता था अतः इसके प्रथम जलूसी वर्ष का आरंभ २८ रबीउस्सानी ही से माना गया। अकबर की मृत्यु पचासवें जलूसी या इलाही वर्ष में हुई। जहाँगीर ने बाईस वर्ष राज्य किया था अतः उसका बाईसवाँ जलूसी वर्ष बहत्तरवें इलाही वर्ष में पड़ा था।

फारसी की हस्तलिखित प्रतियों के अंत में ५ का अंक प्रायः ए
बार या कई बार दिया रहता है। इस्लाम धर्म में पाँच अंक पवित्र मान
जाता है, जैसे पंज दुआ, पंज इरकान आदि। इबारत 'अज पंज बिना
इस्लाम' से कलमा, निमाज, रोजा, हज्ज तथा जकात से तात्पर्य है
खत्म अर्थात् समाप्त शब्द के तीन अक्षर का अबजद के अनुसार
६००+४००+४०=१०४० संख्या होती है जिसे जमल कबीर कहते
हैं और यदि जोड़ की संख्या के अंकों का जोड़ लिया जाय, जो पाँच
आता है, तो वह जमल सगीर कहलाता है। अर्थात् ५ का अंक
खत्म का भी चिन्ह माना जाता है। इसी प्रकार आरंभ में भी 'बिस्मिल्ला
अल्रहमान अल्रहीम' का भी दोनों जमलों के अनुसार जोड़ निकाल
कर नौ की संख्या दे देने से इसी का बोध होता है। जमल शब्द का
अर्थ ऊँट तथा जफर का अर्थ ऊँट की खाल है। ज्योतिष का ग्रंथ
इसी खाल पर लिखा होने से उसे भी जफर कहते हैं।

———

जहाँगीर का संक्षिप्त परिचय

जहाँगीर के प्रपितामह जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने सन् १५२६ ई० में पानीपत के युद्ध में दिल्ली के पठान सुलतान इब्राहीम लोदी को परास्त कर भारत में मुगल साम्राज्य की संस्थापना की। इसके दूसरे वर्ष बाबर ने कन्हवा युद्ध में महाराणा साँगा को परास्त कर इस संस्थापना की पुष्टि की। इसके अनंतर चंदेरी दुर्ग लेकर सन् १५२९ ई० में घाघरा युद्ध में बिहार तथा बंगाल के अफगानों को परास्त किया पर इस प्रकार राज्य का विस्तार करते हुए भी सन् १५३० ई० में बाबर की मृत्यु हो गई और उसे अपने नव संस्थापित साम्राज्य को दृढ़ करने का अवसर नहीं मिला।

बाबर का बड़ा पुत्र हुमायूँ गद्दी पर बैठा पर अपने भाइयों की शत्रुता तथा शेरशाह सूरी अफ़ग़ान के प्राबल्य के कारण चौसा (सन् १५३९ ई०) तथा कन्नौज (सन् १५४० ई०) के युद्धों में परास्त होकर वह सिंध की ओर भागा और सन् १५४४ ई० में फारस चला गया। शेरशाह पाँच वर्ष राज्य कर मर गया और उसके पुत्र, पौत्रादि की अयोग्यता के कारण तथा भाइयों का अंत हो जाने पर हुमायूँ सन् १५५५ ई० में भारत आया और दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार कर लिया। परंतु वह कुछ न कर पाया था कि गिरने से जनवरी सन् १५५६ ई० में इसकी मृत्यु हो गई।

हुमायूँ के बड़े पुत्र अकबर की उस समय केवल तेरह वर्ष की अवस्था थी परंतु उसके सौभाग्य से उसका अभिभावक बैरम खाँ खानखानाँ नियत हुआ। १४ फरवरी सन् १५५६ ई० को अकबर कलानौर में गद्दी पर बैठा परंतु यह मुग़ल-साम्राज्य की राजगद्दी नहीं

थी, क्योंकि वह हुमायूँ के भागने के साथ साथ मिट चुकी थी। मृत हुमायूँ ने केवल आक्रमण कर दिल्ली तथा आगरे पर अधिकार कर मुगल-साम्राज्य पुनः स्थापित करने का प्रयास मात्र आरंभ किया था। सिकंदर सूर पंजाब में और मुहम्मद शाह सूर आदिल चुनार में अधिकार जमाए हुए थे। इसी समय द्वितीय का योग्य सेनापति हेमू विशाल सेना के साथ दिल्ली की ओर बढ़ा और उसने दिल्ली तथा आगरा पर पुनः अधिकार कर लिया। बैरम खाँ ससैन्य कलानौर से दिल्ली की ओर आया और ५ नवंबर सन् १५५६ ई० को पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमू को परास्त कर मार डाला। अकबर का दिल्ली तथा आगरा पर फिर से अधिकार हो गया। सिकंदर सूर के अधीनता स्वीकार कर लेने तथा मुहम्मद शाह अदली के बंगाल में मारे जाने पर अकबर का साम्राज्य दृढ़ हो गया। इसके अनंतर ग्वालियर दुर्ग, अजमेर तथा जौनपुर प्रांत पर अधिकार हो गया पर इसी समय सन् १५६० ई० में बैरम खाँ के विरुद्ध षड्यंत्र हुआ और उसे अपने पद से हट जाना पड़ा। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि, मुग़ल साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक बैरम खाँ ही था। इसके उपरांत प्रायः चार वर्ष तक अकबर अपने धाय-परिवार के प्रभाव में रहा और तब इसके अनंतर उसके निजी साहस, उत्साह आदि प्रकट हुए। इसने अपने साम्राज्य के विस्तार में बहुत प्रयत्न किए, जिसमें इसे अनेक योग्य सेनापतियों की सहायता मिली, अनेक विद्रोह शांत किए और राज्य-प्रबंध दृढ़ किया। अकबर की सन् १६०५ ई० में मृत्यु हुई।

शेख सलीम चिश्ती की 'दुआ' से अकबर को तीन पुत्र हुए—सलीम, मुराद और दानियाल। १७ रबीउल् अव्वल सन् ९७७ हि०, ३० अगस्त सन् १५६९ ई० बुधवार को सीकरी में जहाँगीर का जन्म हुआ और शेख के नाम पर इसका सलीम नामकरण किया गया

तथा अकबर इसे शेखू बाबा कहकर पुकारता था। इसने क्रमशः मीर कलाँ हरवी, शेख अहमद, कुतुबुद्दीन मुहम्मद खाँ अतगा तथा नवाब अब्दुर्रहीम खाँ खानखानाँ से शिक्षा प्राप्त की। इसका प्रथम विवाह सन् १५८५ ई० में राजा भगवान दास की पुत्री मानमती से हुआ, जिससे सुलतानुन्निसा बेगम तथा खुसरो दो संतानें हुईं। सन् १५८६ ई० में क्रमशः तीन विवाह और हुए। पहला जोधपुर के राजा उदयसिंह उर्फ मोटा राजा की पुत्री जगत गोसाइन से हुआ, जिससे खुर्रम शाहजहाँ तथा शहरयार दो पुत्र थे। दूसरा बीकानेर के राजा रायसिंह की पुत्री से और तीसरा सईद खाँ काशगरी की पुत्री से हुआ। इसके अनंतर इसने क्रमशः एक दर्जन से अधिक निकाह किए। सन् १६११ ई० में इसका निकाह नूरजहाँ बेगम से हुआ, जिसका प्रभुत्व जहाँगीर पर उसके अंत समय तक रहा।

जहाँगीर को पुत्र तथा पुत्री बहुत हुईं पर पुत्रियों में केवल एक सुल्तानुन्निसा बेगम पूर्ण अवस्था पर मरी। पुत्रों में तीन का ऊपर उल्लेख हो चुका है और पर्वेज तथा जहाँदार ख्वाजा हसन की पुत्री साहिब जमाल से उत्पन्न हुए थे। इनमें खुसरो, पर्वेज तथा जहाँदार अपने पिता के जीवन ही में मर गए और शहरयार पिता की मृत्यु के बाद मारा गया। खुर्रम शाहजहाँ के नाम से सम्राट् हुआ।

सलीम तीन भाई थे। मुराद की सन् १५६६ ई० में और दानियाल की सन् १६०४ ई० में मृत्यु हो चुकी थी। मुराद की मृत्यु के अनंतर ही दक्षिण जाते समय अकबर ने सलीम को मेवाड़ की चढ़ाई पर भेजा पर यह अजमेर पहुँच कर वहीं ठहर गया। इसी समय बंगाल में अफगानों का विद्रोह आरंभ हो जाने से राजा मानसिंह, जो सलीम के साथ नियुक्त थे, बंगाल चले गए और तब

सलीम का विद्रोह आरंभ हुआ। यह वहाँ से अपनी सेना सहित आगरे आया और आगरा दुर्ग पर अधिकार न कर सकने पर इलाहाबाद चला गया। यहाँ दुर्ग पर अधिकार कर सलीम ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और सेना एकत्र करने लगा। सन् १६०१ ई० में जब अकबर दक्षिण से आगरे आया तब यह तीस सहस्र सेना के साथ उस ओर चला पर डाँटे जाने पर इलाहाबाद लौट आया। इसी समय अकबर ने दक्षिण से अबुल्फ़जल को बुला भेजा पर मार्ग ही में सलीम ने वीरसिंह देव बुंदेला के द्वारा सन् १६०२ ई० में उसे मरवा डाला। इसके अनंतर सलीमा सुलतान बेगम इलाहाबाद आईं और सलीम को लिवाकर आगरे गईं। पिता-पुत्र का सम्मिलन हुआ और सलीम क्षमा कर दिया गया।

इसके अनंतर अकबर ने सलीम को पुनः मेवाड़ भेजा पर यह फ़तहपुर पहुँच कर वहीं रुक गया और आगे नहीं बढ़ा। अंत में इसे इलाहाबाद लौट जाने की छुट्टी मिली और यह वहाँ पहुँच गया। इसने सन् १६०४ ई० में पुनः स्वतत्र दरबार स्थापित कर लिया और मंसब तथा पदवी बाँटने लगा। इसी समय दानियाल की भी मृत्यु हो गई और उत्तराधिकार का कोई झगड़ा नहीं रह गया तब भी सलीम ने अपने ही कुकृत्यों से अपने राजसिंहासन की सुगम प्राप्ति में झंझट खड़ा कर दिया। अकबर ने सलीम के बड़े पुत्र खुसरू पर, जो सत्रह वर्ष का हो चुका था, विशेष कृपादृष्टि रखना आरंभ कर दिया और उसे आशा हो गई कि वही अपने पितामह का उत्तराधिकारी बनाया जायगा। इस प्रकार सलीम तथा खुसरू में वैमनस्य का बीज पड़ गया, जिसका फल यही हुआ कि पहले खुसरू की माता ने आत्महत्या कर ली और बाद में खुसरू भी नष्ट हो गया।

दानियाल की मृत्यु के कुछ दिन बाद सलीम को दंड देने के विचार से अकबर ससैन्य इलाहाबाद की ओर बढ़ा पर अपनी माता के

विशेष रुग्ण हो जाने का समाचार पाकर लौट गया। इसकी माता की मृत्यु हो गई और इस अवसर का लाभ उठाकर सौभाग्य से सलीम शोक मनाने के लिए आगरे चला आया। कुछ दिन दंडित रहने पर यह क्षमा कर दिया गया। एक दिन हाथियों की युद्ध-क्रीड़ा में सलीम तथा खुसरू के आचरण पर अकबर को इतना दुःख हुआ कि उसे ज्वर आ गया और अंत में उसकी मृत्यु हो गई परंतु मृत्यु के पहले उसने स्पष्ट रूप से सलीम को उत्तराधिकार दे दिया। इसी कारण राजगद्दी के समय किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हुआ और सलीम नूरुद्दीन जहाँगीर बादशाह गाजी के नाम से गद्दी पर बैठ गया।

जहाँगीर ने अपने पिता के समय के सभी पदाधिकारियों तथा राजकर्मचारियों को पहले के अपने-अपने पदों पर बहाल रखा पर जिन लोगों ने विद्रोह में उसका साथ दिया था उन्हें आशा से बढ़ कर पुरस्कृत किया। राजा मानसिंह को संतोष दिलाकर जहाँगीर ने खुसरू को अपने पास रख लिया, जिसे लिवाकर वह बंगाल जाना चाहते थे। यद्यपि खुसरू पर जहाँगीर ने पहले प्रेम दिखलाया पर वह उसका विश्वास नहीं कर सका और उसे एक प्रकार के कड़े निरीक्षण में रखा। न इसे कोई उच्च मंसब दिया और न इसे युवराज बनाने ही का विचार प्रकट किया। खुसरू इस कारण अन्यमनस्क रहता और इसे आजीवन कारारोध समझ कर वह उपद्रवियों के प्रलोभन में पड़ गया। जहाँगीर के राज्य के प्रथम वर्ष ही में यह षड्यंत्रकारियों की सहायता से आगरे से निकल भागा और पंजाब की ओर चल दिया। इस पर निरीक्षण इतना कठोर था कि थोड़ा ही देर में जहाँगीर को इसके भागने का समाचार मिल गया और पीछा भी आरंभ हो गया।

खुसरू सिकंदरा होता हुआ मथुरा गया, जहाँ हुसेनबेग बदख्शी ने इसका पक्ष ग्रहण कर लिया। मथुरा लूटते हुए और दिल्ली के पास

नरेला की सराय जलाते हुए यह पानीपत पहुँचा। यहाँ लाहौर का दीवान अब्दुर्रहीम इससे मिला और इसका साथी हो गया। तरन-तारन में सिख गुरु अर्जुन से आशीर्वाद लेकर खुसरू लाहौर पहुँचा। लाहौर सुरक्षित था, जिससे नौ दिन घेरने पर भी यह उसे नहीं ले सका। इसी समय जहाँगीर की सेना भी पीछा करती हुई पास पहुँच गई, जिससे खुसरू घेरा उठा कर युद्ध के लिए लौटा। भैरोवाल के युद्ध में परास्त होकर खुसरू भागा पर अंत में साथियों सहित पकड़ा गया। इसके साथियों को ऐसा कठोर दंड दिया गया जो मनुष्यत्व के परे था।

खुसरू के इस विद्रोह का प्रभाव पड़ना अवश्यंभावी था और कई साधारण विद्रोह हुए, जो शीघ्र ही शांत कर दिए गए। इसी अवसर पर ईरान के शाह ने कंधार दुर्ग पर चढ़ाई कर उसे घेर लिया पर ठीक समय पर सहायता पहुँच जाने से वह असफल हो लौट गया। इस सफलता के अनंतर जहाँगीर काबुल गया और प्रायः तीन महीने वहाँ रह कर लौट आया। खुसरू को भी जहाँगीर काबुल लिवा गया था और वहीं पुनः षड्यंत्र होने लगा। इसके कई समवयस्क पक्षपातियों ने निश्चय किया कि अहेर के समय जहाँगीर को मार डाला जाय तथा खुसरू को बादशाह बनाया जाय। परंतु इस विद्रोह का समाचार खुर्रम को मिल गया और उसने तुरंत अपने पिता को सतर्क कर दिया। जहाँगीर ने तुरंत ही इसके मुख्य साथियों को कठोर दंड दिया और खुसरू को अंधा करने की आज्ञा दे दी। इसकी आँखें फोड़ दी गईं पर बाद में औषधि करने पर एक अच्छी हो गई।

खुसरू अपने कष्टों तथा असफलताओं के कारण ऐसा लोकप्रिय हो गया था कि सन् १६१० ई० में उसके नाम पर कुतुब नामक एक व्यक्ति ने पटना में विद्रोह किया कि वही खुसरू है और कारागार से

निकल भागा है। शीघ्र ही उसने एक अच्छी सेना एकत्र कर ली और पटने पर अधिकार कर लिया। बिहार के प्रांताध्यक्ष अफजल खाँ ने ससैन्य उस पर आक्रमण किया और उसे परास्त कर पटना ले लिया। कुतुब को प्राणदंड मिला।

सलीम पहले ही से मेहरुन्निसा पर प्रेम करने लगा था पर अकबर ने उसका निकाह अली कुली इस्तजलू शेर अफगन खाँ से करा दिया था। राजगद्दी पर बैठते ही सलीम ने इसे वर्दवान का फौजदार बनाकर वहाँ भेज दिया। सन् १६०६ ई० में कुतुबुद्दीन खाँ कोका बंगाल का शासक नियत किया गया और इसे शेर अफगान खाँ पर दृष्टि रखने का आदेश मिला। कुतुबुद्दीन वर्दवान गया और वहीं भेंट होने पर दोनों मारे गए। इसके अनंतर मेहरुन्निसा अपनी संपत्ति तथा संतानों के साथ दरबार भेज दी गई। अंत में पाँच वर्ष बाद सन् १६११ ई० में सलीम का मेहरुन्निसा से निकाह हो गया और इसे पहले नूर महल तथा फिर नूरजहाँ की पदवी मिली। अब नूरजहाँ का पूर्ण प्रभुत्व साम्राज्य पर हो गया और जहाँगीर के अंत तक बना रहा। नूरजहाँ के पिता एतमादुद्दौला वकील कुल और इसके बड़े भाई अबुल्हसन आसफखाँ खानखानाँ नियत हुए। आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमंद बानू से खुर्रम का निकाह हुआ, जिसे ताजमहल की पदवी मिली। इस प्रकार नूरजहाँ, उसके पिता तथा भाई और खुर्रम का एक गुट्ट बन गया और प्रायः दस वर्ष तक इसी गुट्ट का राज्य-शासन में प्राधान्य रहा।

बंगाल में पठानों का उपद्रव शांत करने के लिए एक विशाल सेना शुजाअतखाँ के अधीन भेजी गई और पठान सेना भी उसमानखाँ की अध्यक्षता में युद्ध करने के लिए आजमी। नेक उज्याल के पास

नदी के तट पर १२ मार्च सन् १६१२ ई० को घोर युद्ध हुआ, जिसमें शाही सेना प्रायः परास्त हो चुकी थी। दैव योग से उसमान खाँ के सिर में गोली लगी और पठान-सेना हटने लगी। रात्रि में उसमान की मृत्यु हो जाने पर पठान भागे पर पीछा किए जाने पर संधि का प्रस्ताव किया। संधि हो जाने पर भी दरबार जाते हुए उसमान का भाई वलीखाँ तथा पुत्र ममरेज खाँ मार्ग में मार डाले गए तथा बचे हुए कैद किए गए। पठानों ने इसके अनंतर मुगल-साम्राज्य के विरुद्ध फिर कभी विद्रोह नहीं किया।

भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर रोशानियों का उपद्रव बराबर चलता रहा और काबुल के प्रांताध्यक्षगण भी निरंतर इसे शांत करने में लगे रहे। इसी के साथ सन् १६१७ ई० में बंगश में भी विद्रोह मच गया और कई युद्ध हुए। महाबतखाँ खानखानाँ भी इसी विद्रोह को दमन करने के लिए काबुल का प्रांताध्यक्ष नियत किया गया और पाँच वर्ष इस पद पर रहा पर इन विद्रोहों को शांत न कर सका। इसके अनंतर रोशानियों के सर्दार की मृत्यु हो जाने पर उसके पुत्र ने संधि कर ली पर बंगाल में उपद्रव जहाँगीर के अंतकाल तक बना रहा।

यद्यपि जहाँगीर स्वयं अपनी शाहजादगी के समय मेवाड़ की चढ़ाइयों से विमुख रहा पर उसने राजगद्दी पर बैठते ही अपने पुत्र पर्वेज को भारी सेना के साथ उसपर अधिकार करने भेजा। इस सेना का प्रधान अध्यक्ष आसफ खाँ मिर्जा किवामुद्दीन जाफरबेग था। देबारी में घोर युद्ध हुआ पर कोई पक्ष निश्चित रूप से विजयी नहीं हो सका। इसी के अनंतर खुसरू का विद्रोह होने पर बादशाही सेना लौट गई। सन् १६०८ ई० में महाबत खाँ के अधीन दूसरी सेना मेवाड़ पर भेजी गई और इसने बहुत प्रयत्न किए पर सफलता नहीं

मिली। सन् १६०६ ई० में महावत खाँ के स्थान पर अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग भेजा गया। अनेक युद्ध हुए पर किसी में एक पक्ष हारता तो किसी में दूसरा। सन् १६११ ई० में अब्दुल्ला खाँ गुजरात भेज दिया गया और उसके स्थान पर राजा बासू नियत हुआ पर यह भी कुछ न कर सका। सन् १६१२ ई० में राजा बासू को यहीं मृत्यु हो गई और खानआजम मिर्जा अजीज कोका इसके स्थान पर भेजा गया। यह भी कुछ न कर सका पर इसकी प्रार्थना पर जहाँगीर स्वयं सन् १६१३ ई० आगरे से अजमेर आया और खुर्रम को भारी सेना के साथ सहायतार्थ भेजा। खानआजम तथा खुर्रम से नहीं पटी और खुर्रम ने खानआजम को कैद कर दरबार भेजा दिया।

खुर्रम ने युद्ध तथा घेरे का कुल प्रबंध अपने हाथ में ले लिया और युद्ध चलने लगा। निरंतर के युद्ध से मेवाड़ शक्तिहीन होता चला गया था और अब उसमें इतना सामर्थ्य नहीं रह गई थी कि वह अपनी रक्षा सफलतापूर्वक कर सके। अंत में संधि की बातचीत चलने लगी और राणा के नाम मात्र की अधीनता स्वीकार कर लेने पर सन् १६१५ ई० के आरंभ में इस युद्ध का अंत हो गया।

दक्षिण में कई मुसल्मानी सल्तनतें स्थापित थीं, जो प्रायः आपस में लड़ा करती थीं। अकबर ने सन् १५९१ ई० में पहले पहल इन सल्तनतों में से चार के यहाँ राजदूत भेजे, जिनकी सीमाएँ मुगल-साम्राज्य से मिलती हुई थीं। ये सल्तनतें खानदेश, अहमद नगर, बीजापुर तथा गोलकुंडा थीं। खानदेश ने अधीनता स्वीकार कर ली पर अन्य सभी ने ऐसा उत्तर दिया जिससे अकबर संतुष्ट नहीं हुआ। इसने सन् १५९३ ई० में नवाब अब्दुर्रहीम खाँ खानखानाँ के अधीन एक विशाल सेना अहमद नगर पर भेजी, जिसने अहमद नगर घेर लिया। चाँद सुलताना ने बड़े साहस से दुर्ग की रक्षा की पर अंत में

बरार देकर संधि कर ली। चाँद बीबी ने इस संधि के पहले अन्य तीनों राज्यों से भी संधि की थी, जिनकी सम्मिलित सेना बाद में आ पहुँची पर आस्टी के युद्धस्थल में खानखानाँ ने उस सेना को परास्त कर दिया। इसके अनंतर अकबर स्वयं दक्षिण आया और खानदेश के नए सुलतान के अधीनता से मुख मोड़ने पर उसने असीरगढ़ घेर कर विजय कर लिया और खानदेश के राज्य का अंत हो गया। चाँद बीबी गृह-कलह में मारी जा चुकी थी, इस लिए अहमद नगर पर भी अधिकार हो गया। सलीम के विद्रोह का समाचार सुन कर अकबर लौट गया और दक्षिण का कार्य ढीला पड़ गया।

जहाँगीर ने भी पिता की नीति का अनुसरण किया और सन् १६०८ ई० में दक्षिण के प्रांताध्यक्ष खानखानाँ की सहायता के लिए भारी सेना भेजी। शाहजादा पर्वेज दक्षिण का प्रधान सेनापति बनाया गया और इसका अभिभावक आसफ खाँ मिर्जा जाफर नियत हुआ। पर्वेज सन् १६१० ई० के आरंभ में बुर्हानपुर पहुँचा। इसने ठीक वर्षा काल में खानखानाँ की सम्मति के न होने पर भी अहमद नगर राज्य पर चढ़ाई कर दी, जिसका फल यही हुआ कि बहुत सी सेना कटाकर तथा असम्मानपूर्ण संधि कर लौट आना पड़ा। अहमद नगर भी अधिकार से निकल गया और कुल दोष खानखानाँ पर डाला गया, जिससे वह असम्मानित किया जाकर दरबार बुला लिया गया। इसके स्थान पर खानजहाँ लोदी भारी सेना के साथ भेजा गया पर यह भी सफल प्रयत्न नहीं हो सका।

सन् १६११ ई० में जहाँगीर ने अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग को गुजरात की ओर से और खानजहाँ लोदी को उत्तर की ओर से चढ़ाई करने की आज्ञा दी पर अब्दुल्ला खाँ ने शीघ्रता कर यह आयोजन नष्ट कर दिया और दूसरी सेना के पहुँचने के पहले ही परास्त होकर लौट गया।

इस समाचार को पाकर खानजहाँ भी बरार ही से लौट आया। अंत में जहाँगीर ने फिर वृद्ध सेनापति नवाब खानखानाँ को दक्षिण भेजा। इसने पहले शत्रु-पक्ष के आपसी फूट को प्रोत्साहित किया जिससे मलिक अंबर के कई सर्दार इसके पास चले आए। खानखानाँ के बड़े पुत्र शाहनवाज खाँ ने बड़ी सतर्कता से अंबर पर चढ़ाई की। युद्ध में खानखानाँ का द्वितीय पुत्र दाराब खाँ शाही हरावल का अध्यक्ष था और इसने ऐसे प्रबल वेग से आक्रमण किया कि शत्रु की सेना को उलटता-पुलटता मलिक अंबर पर जा पड़ा। अंत में अंबर पूर्णतया परास्त हो भागा और खानखानाँ ने मुगल सेना की बिगड़ी धाक पुनः जमा दी। परंतु पर्वेज तथा अन्य सर्दारों के कारण खानखानाँ और कुछ अधिक न कर सका।

सन् १६१६ ई० में जहाँगीर ने पर्वेज को बुला लिया और उसके स्थान पर शाहजादा खुर्रम को नियत किया। इसे शाह की पदवी तथा बीस हजारी १०००० का मंसब मिला और यह विशाल सेना के साथ दक्षिण पहुँचा। जहाँगीर स्वयं भी अजमेर से मांडू आकर ठहरा तथा वहीं से दक्षिण के कार्य का निरीक्षण करने लगा। मार्ग में जहाँगीर ने उज्जयिनी में साधु जदुरूप से भेंट की थी। शाह खुर्रम ने ससैन्य दक्षिण में पहुँचतेही शत्रुपक्ष के पास संधि के लिए राजदूत भेजे और आदिलशाह, कुतुबशाह तथा मलिक अंबर सभी ने, जो खानखानाँ द्वारा परास्त होने तथा सारी मुगल शक्ति को सामने देखकर संधि के लिए तैयार हो चुके थे, संधि के कुल अनुबंधों को स्वीकार कर लिया और संधियाँ हो गईं। इसके अनंतर दक्षिण के अधिकृत भाग का प्रबंध खानखानाँ को सौंपकर खुर्रम लौटा और सन् १६१७ ई० के अक्तूबर में मांडू पहुँच गया, जहाँ इसका बड़े समारोह के साथ स्वागत किया गया।

जहाँगीर इसके अनंतर गुजरात प्रांत में भ्रमण करने चला। जंगली हाथियों के अहेर तथा समुद्र देखने की भी इसकी प्रबल इच्छा थी। सन् १६१७ ई० के अंत में यात्रा आरंभ कर यह दो महीने में खंभात पहुँचा और यहाँ से अहमदाबाद गया। जहाँगीर यहाँ साढ़े तीन महीने रहा। इसी के बाद यहाँ एक प्रकार का ज्वर फैला जिससे सभी ग्रस्त हुए और लौटने की इच्छा करने पर भी वर्षा के आधिक्य के कारण रुकना पड़ा। २ सितम्बर सन् १६१८ ई० को जहाँगीर ने उत्तर की यात्रा आरंभ की। मार्ग में दोहद में २४ अक्तूबर को औरंगजेब का जन्म हुआ। इसके अनंतर यह शाही पड़ाव मालवा तथा राजस्थान में होता हुआ आगरे के पास पहुँचा। आगरे में भी महामारी फैली हुई थी इसलिए जहाँगीर फतहपुर सीकरी में ठहर गया। सन् १६१६ ई० के अप्रैल में साढ़े पाँच वर्ष बाद यह दिल्ली पहुँचा। इस यात्रा का प्रभाव जहाँगीर पर यह पड़ा कि यह क्षयग्रस्त सा हो गया और बहुत कुछ औषधि होने पर भी यह रोगमुक्त न हो सका। इसी कारण यह इसी वर्ष के अंत में कश्मीर गया और वहाँ सात महीने रहकर लौटा पर पुनः बीमार हो गया। यह बराबर प्रतिवर्ष कश्मीर जाता था पर अंत तक कभी स्वस्थ न हो पाया।

दक्षिण की चढ़ाई के सिवा छोटी छोटी चढ़ाइयाँ, युद्ध आदि अन्य प्रांतों में होते रहे। सन् १६१२ ई० में छोटे तिब्बत पर सेना भेजी गई पर वह वहीं नष्ट हो गई। सन् १६१५ ई० में बिहार प्रांत में खोखर राज्य पर अधिकार हो गया। उड़ीसा प्रांत के खुरदा राज्य पर कई चढ़ाइयाँ हुईं और अंत में सन् १६१७ ई० में उसपर अधिकार हो गया। गुजरात प्रांत में कच्छ के दो राजाओं जाम तथा बहारा ने इसी वर्ष में अधीनता स्वीकार कर ली। कश्मीर प्रांत के दक्षिण में किश्तवार एक पार्वत्य स्थान है। सन् १६१६ ई० में इस

पर चढ़ाई हुई और कई वर्ष युद्ध चलता रहा। सन् १६११ ई० के अंत में इस राज्य पर अधिकार हो गया। इसके अनंतर भी वहाँ कई बार उपद्रव हुए पर वे शांत कर दिए गए। कांगड़ा दुर्ग पर चौदह महीने के घेरे के अनंतर १६ नवंबर सन् १६२० ई० को अधिकार हो गया।

जहाँगीर को इस प्रकार निश्शक्त तथा अस्वस्थ होते देखकर नूरजहाँ सशंकित रहने लगी क्योंकि उसके प्रभुत्व का आधार वही था। शाहजहाँ उस समय तीस वर्ष का हो चुका था और नूरजहाँ के दल के प्रभाव से वह युवराज मान लिया गया था। नूरजहाँ उसकी योग्यता, राजकार्य-कुशलता तथा महत्त्वाकांक्षा को समझ गई थी और जानती थी वह किसी प्रकार का उसका हस्तक्षेप सहन न कर सकेगा। इसलिए शाहजहाँ उसकी ध्येय-पूर्ति नहीं कर सकता था। खुसरू से कुछ आशा उसे थी ही नहीं क्योंकि वह उसके विरुद्ध बराबर रही। पर्वेज मद्यप, अयोग्य, रोगी तथा अहंमन्य था। उसके जीवन की भी आशा कम थी। इन सब विचारों से उसने सबसे छोटे पुत्र शहरयार को ही चुना, जो उस समय सोलह वर्ष का था और इस कार्य में अदम्य उत्साह तथा साहस से दत्तचित्त हो गई।

सन् १६२० ई० में नूरजहाँ ने अपनी पुत्री लाडिली बेगम से, जो शेर अफगन खाँ से हुई थी, शहरयार का निकाह कर दिया और उसे मंसब तथा पदवी भी दिलवाई। दैवयोग से दूसरे ही वर्ष नूरजहाँ के माता-पिता दोनों का अंतकाल हो गया, जिनकी सम्मति की उसे इस समय विशेष आवश्यकता थी। नूरजहाँ का बड़ा भाई आसफ खाँ प्रगट में इसी से मिला हुआ था पर हृदय से अपने जामाता शाहजहाँ का पक्षपाती था। इस प्रकार अब जो दो राजनीतिक दल बन गए, उनमें एक ओर नूरजहाँ तथा तथा शहरयार थे और दूसरी ओर

आसफखाँ तथा शाहजहाँ थे। इसपर नूरजहाँ का अपने भाई के प्रति स्नेह भी था और यही कारण है कि वह अंत में अपने ध्येय में सफल न हो सकी।

दक्षिण में शाहजहाँ ने जो शान्ति स्थापित की थी वह स्थायी नहीं थी और इसी कारण सन् १६२० ई० में मलिक अंबर ने बीजापुर तथा गोलकुंडा से संधि कर विशाल सेना एकत्र की और मुगल थानों पर आक्रमण करना आरंभ किया। सभी थानों की सेना हटती हुई मेहकर में इकट्ठी हुई पर यहाँ भी ठहर न सकने पर बालापुर चली आई। युद्ध में मुगल सेना विजयी हुई पर इसका भी शत्रु पर कुछ प्रभाव न पड़ा। अंत में दाराब खाँ अपने पिता के पास बुर्हानपुर चला आया पर शत्रु ने पीछा नहीं छोड़ा और बुर्हानपुर को घेर लिया। शत्रु ने मांडूतक पहुँच कर उसे लूट लिया और अहमदनगर तथा बुर्हानपुर को छोड़कर बचे हुए कुल दक्षिणी प्रान्तपर अधिकार कर लिया। अन्त में बादशाह ने शाहजहाँ को दक्षिण जानेका आदेश दिया।

साम्राज्य की राजनीतिक परिस्थिति में जो परिवर्तन हो गया था उसे शाहजहाँ भली प्रकार जानता था और यह भी जानता था कि सिवा उसके दक्षिण में दूसरा शान्ति स्थापित नहीं कर सकता था। इस कारण अपना उत्तराधिकार निश्चित करने के लिए उसने कुछ माँगें उपस्थित कीं, जो स्वीकृत कर ली गईं। उसने खुसरूको अपनी रक्षा में रखनेके लिए माँगा जिसे नूरजहाँ की सम्मति से जहाँगीर ने मान लिया। नूरजहाँ के लिए खुसरू तथा शाहजहाँ दोनों ही कंटक थे और इनमें से किसी एक का नाश उसकी ध्येय-पूर्ति में सहायक ही होता। इस प्रकार इस माँग के पूरे होने पर तथा आवश्यकतानुसार सेना, धन आदि का प्रबंध हो जाने पर शाहजहाँ सन् १६२१ ई० के आरंभ में दक्षिण को चल दिया। पहले इसने कुछ सेना माँडू भेजी, जिसे

शत्रु ने घेर रखा था और सम्मिलित सेना ने शत्रु को परास्त कर नर्मदा नदी पार भगा दिया। इसके अनंतर शाहजहाँ कूच करता हुआ ४ अप्रैल को बुर्हानपुर पहुँच गया। यहाँ से शाहजहाँ ने अपनी सेना के पाँच भाग कर तथा योग्य सेनापति नियुक्त कर आगे भेजा। कई युद्धों में विजय प्राप्त कर तथा निजामशाही नई राजधानी खिरकी पर अधिकार कर एक सेना अहमदनगर की ओर गई और मार्ग में शत्रु सेना को परास्त भी कर दिया। शत्रु अहमदनगर का घेरा उठा कर चले गए।

दूसरी सेना ने बरार तथा खानदेश पर फिर से अधिकार कर लिया और बालाघाट पहुँची। यहाँ शत्रु-सेना को परास्त कर शाही सेना ने वासिम पर अधिकार कर लिया। मलिक अंबर ने शाही सेना की इन सफलताओं को देख कर संधिका प्रस्ताव किया और राजा विक्रमाजीत के द्वारा कुल अनुबंधों के स्वीकृत हो जाने पर संधि हो गई और दक्षिण के तीनों सुलतानों ने दंड देकर अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार छ महीने के भीतर दक्षिण में शांति स्थापित हो जाने पर विजयोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। इसीके अनंतर जहाँगीर के रुग्ण हो जाने का समाचार मिला, जिसके उपरान्त ही खुसरू की मृत्यु घटना घटी।

जहाँगीर की बीमारी का समाचार पाने के बाद शाहजहाँ एक दिन अहेर खेलने चला गया और उसकी अनुपस्थिति में खुसरू का अंत हो गया तथा यह प्रगट किया गया कि वह शूल रोग से मर गया। इसका शव बुर्हानपुर में पहले गाड़ा गया और उसके कुछ महीने बाद सन् १६२२ ई० के महीने में शाही आज्ञा आने पर आगरे भेजा गया, जहाँ से इलाहाबाद भेजा जाकर खुसरू बाग में गाड़ा गया। इस बात का

लाभ शाहजहाँ तत्काल नहीं उठा सका प्रत्युत् उसके प्रतिद्वन्द्वियों ही ने उठाया और जहाँगीर को शाहजहाँ के विरुद्ध कर दिया।

कंधार दुर्ग अनेक कारणों से भारत तथा ईरान दोनों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है और यह कई बार इन दोनों के बीच अधिकार परिवर्तित कर चुका था। जहाँगीर के राज्य के प्रथम वर्ष में ईरान की ओर से इसपर असफल चढ़ाई हुई थी और अब दक्षिण के उपद्रव का समाचार पाकर फारस के तत्कालीन शाह अब्बास ने सन् १६२२ ई० के आरंभ में कंधार घेर लिया। यह समाचार पाते ही जहाँगीर ने शाहजहाँ के पास संदेश भेजा कि वह कुल सेना के साथ चला आवे। साथ ही उसने विशाल सेना एकत्र करने का आयोजन किया पर भूल से थोड़ी सहायता भी कंधार की सुरक्षा के लिए नहीं भेजी। शाहजहाँ ने भी निजी विचारों के अनुसार मांडू पहुँचकर कंधार जाने के लिए कुछ माँगें उपस्थित कीं और उन्हें लिखवाकर शाही राजदूत के हाथ दरबार भेज दिया। उसकी माँगें संक्षेप में ये थीं कि वह वर्षा के अनंतर कंधार भेजा जाय, पंजाब प्रांत उसे जागीर में मिले, रणथंभौर दुर्ग उसे दिया जाय, काफी धन मिले और जो सेना उसके साथ कंधार जाय उस पर उसका पूर्ण अधिकार रहे। उस समय सम्राट् जहाँगीर के बाद साम्राज्य में शाहजहाँ ही सबसे अधिक प्रभुत्वशाली था और इन माँगों की पूर्ति पर तो वह अपने पिता के समकक्ष हो जाता। नूरजहाँ ने जब यह बातें जहाँगीर को समझाईं तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हो गया और आदेश भेजा कि शाहजहाँ जहाँ है वहीं रहे और अधीनस्थ शाही सेना को तुरंत दरबार भेज दे।

शाहजहाँ इस आज्ञापालन में सोच विचार कर ही रहा था कि एक ऐसी साधारण घटना हो गई, जिससे विद्रोह का तत्काल सूत्रपात हो गया। शाहजहाँ ने धौलपुर के परगने को अपने लिए जागीर में माँगा

था और उसके मिल जाने का निश्चय कर उसने दरिया खाँ अफगान को ससैन्य अधिकार करने वहाँ भेज दिया। इसी बीच वह परगना शहरयार को मिल गया था और उसकी ओर से शरीफुल्मुल्क उस पर अधिकृत हो चुका था। दरियाखाँ के वहाँ पहुँचने पर दोनों में युद्ध हो गया, जिसमें शरीफुल्मुल्क घायल हो गया। यह समाचार पाकर जहाँगीर ने शाहजहाँ को बहुत डाँटा और तुरंत सेना भेज देने को लिखा।

जहाँगीर ने शहरयार को प्रधान सेनापति नियुक्त कर मिर्जा रुस्तम को उसका अभिभावक तथा मुख्य सेना-संचालक बनाया। उसी समय शाहजहाँ की सभी जागीरें, जो उत्तरी भारत में थीं, उससे लेली गईं और शहरयार को दे दी गईं। जब शाहजहाँ ने देखा कि उसकी चाल ठीक नहीं बैठी तब उसने अल्लामा अफजल खाँ मुल्ला शुक्रुल्ला को क्षमायाचना का पत्र देकर दरबार भेजा परंतु इसका जहाँगीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और अफजल खाँ लौट आया। शाहजहाँ भी मांडू से दक्षिण लौट गया और विद्रोह की तैयारी करने लगा। यद्यपि कुछ सर्दार शाही आज्ञा के अनुसार उत्तर की ओर चले गए पर तब भी बहुत से सर्दार दक्षिण ही में थे और सभी ने शाहजहाँ का पक्ष ग्रहण कर लिया। दरबार में इसका श्वशुर आसफ खाँ और अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग उपस्थित थे, जिनसे इसे विशेष आशा थी। इस प्रकार पूरी तैयारी करके शाहजहाँ ने शीघ्रता से मांडू से उत्तर की ओर यात्रा आरंभ कर दी कि शाही सेना के तैयार होने के पहले वह आगरे पर अधिकार कर ले।

इसी बीच पैंतालीस दिन के घेरे पर कंधार टूटा और उसपर फारस का अधिकार हो गया। यद्यपि जहाँगीर ने सेना वहाँ भेजी पर वह कुछ न कर सकी। शाहजहाँ के विद्रोह करने तथा उत्तर की ओर ससैन्य यात्रा करने का समाचार भी इसी समय आया। शाहजहाँ ने

नूरजहाँ की योग्यता तथा जहाँगीर के प्रति प्रजा की राजभक्ति पर ध्यान नहीं रखा और इसीसे वह सफल न हो पाया। शीघ्रही जहाँगीर ने महाबत खाँ खानखानाँ के अधीन विशाल सेना शाहजहाँ को रोकने को भेजी। इस सेना में मारवाड़ नरेश गजसिंह, आमेर नरेश जयसिंह, राव रत्न हाड़ा, वीरसिंह देव बुंदेला आदि क्षत्रिय वीर अधिक थे। शाहजहाँ आगरे के पास फतहपुर सीकरी पहुँच गया और उसके एक सेनापति राजा विक्रमाजीत ने आगरा नगर लूट लिया। इसी समय शाही सेना आ पहुँची। बिलूचपुर के पास घोर युद्ध हुआ, जिसमें शाहजहाँ परास्त हुआ और लौटकर मांडू चला गया। इस युद्ध में राजा विक्रमाजीत मारा गया और अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग बादशाह का पक्षत्याग कर शाहजहाँ से मिल गया।

बादशाही सेना फतहपुर पहुँची और यहाँ से अजमेर गई। शाहजादा पर्वेज भी सेना सहित आपहुँचा और तब चालीस सहस्र सेना पर्वेज तथा महाबत खाँ के अधीन शाहजहाँ का पीछा करने के लिए भेजी गई। जहाँगीर ने राजा बासू के पुत्र जगतसिंह के विद्रोह को शांत करने के लिए, जिसे शाहजहाँ ने इसी कार्य के लिए भेजा था, सादिक खाँ बख्शी को पंजाब का प्रांताध्यक्ष नियत कर भेजा और खुसरू के पुत्र दावरबख्श उर्फ बुलाकी को आठ हजारी ३००० सवार का मंसब देकर गुजरात का प्रांताध्यक्ष नियत किया। इसका अभिभावक खानआज़म अजीज कोका नियत किया गया और आदेश मिला कि शाहजहाँ के नियुक्त सर्दारों को निकाल कर उस प्रांत पर अधिकार कर ले। इतना प्रबंध कर जहाँगीर अजमेर में आकर ठहरा कि कुल कार्यों पर दृष्टि रख सके।

शाहजहाँ ने मांडू पहुँचकर पुनः अपनी सेना सुसज्जित की और मराठा सवारों को शाही सेना में लूट मार करने के लिए भेजा। महाबत

खाँ ने इनका उचित प्रबंध किया, जिससे विशेष हानि नहीं हो सकी और उसने शाहजहाँ के कई सर्दारों को भी मिला लिया। कालियदह के पास ठीक युद्ध के अवसर पर हरावल के अध्यक्ष रुस्तम खाँ तथा बर्कंदाज खाँ शाही सेना से जा मिले, जिससे शाहजहाँ का कुल प्रबंध छिन्न भिन्न हो गया और वह अन्य सरदारों से भी सशंकित हो लौट गया। नर्मदा नदी पार कर इसने बैरमबेग को उसके उतारों की रक्षा के लिए नियत किया। कितने सर्दार अब भी अवसर पाकर महाबत खाँ से मिलने जा रहे थे और नवाब अब्दुर्रहीम खाँ खानखानाँ का भी एक पत्र इसी आशय का पकड़ा गया। तब शाहजहाँ आसीरगढ़ गया और अपने परिवार को यहाँ सुरक्षित रखकर बुर्हानपुर गया।

गुजरात के प्रांताध्यक्ष राजा विक्रमाजीत के मारे जाने पर शाहजहाँ ने अब्दुल्ला खाँ को उसके स्थान पर नियत किया और वहाँ से कोष आदि लाने का आदेश दिया। अब्दुल्ला खाँ ने अपने प्रतिनिधि रूप में वफादार को सेना सहित वहाँ भेजा पर वहाँ के नियुक्त अन्य सर्दारों ने शाहजहाँ का पक्ष छोड़कर जहाँगीर का पक्ष लिया। गुजरात के दीवान महम्मद सफी ने शाहजहाँ की बची कुल संपत्ति जब्त कर ली और अहमदाबाद पर अधिकार कर तथा सेना एकत्र कर युद्ध के लिए तैयार हो गया। कुँअरदास वहाँ से कुछ संपत्ति कोष लेकर शीघ्रता से शाहजहाँ के पास पहुँच गया, जिससे इसे कुछ सुविधा हो गई। अब्दुल्ला खाँ यह सब समाचार पाकर सेना सहित गुजरात गया पर शाही सेना से परास्त होकर भागा और भड़ोच तथा सूरत में धन एकत्र करता हुआ बुर्हानपुर चला आया।

शाहजहाँ ने गुजरात के अधिकार से निकल जाने पर मलिक अंबर तथा आदिलशाह से सहायता माँगी पर उन दोनों ही ने अस्वीकार कर दिया। इसके अनंतर इसने बादशाह से क्षमा-याचना करने का

निश्चय किया और राव रत्न हाड़ा द्वारा महाबत खाँ से बातचीत आरंभ की। महाबत खाँ के कहलाने पर कि खानखानाँ के आने ही पर संधि की बातचीत हो सकती है, शाहजहाँ ने खानखानाँ को उससे शपथ लेकर तथा पुत्रों को ओल में रखकर भेजा। इसके नर्मदा के तट पर पहुँचने तथा संधि की बात चलाने से उतारों के रक्षकों ने सावधाना में ढिलाई कर दी जिससे महाबत खाँ ने कुछ सेना रात्रि में पार उतार दी और शत्रु पर आक्रमण कर दिया। विद्रोही सेना भागी और खान-खानाँ के उस पार पहुँचते ही महाबत खाँ ने उसे कैद कर लिया।

शाहजहाँ यह सब समाचार पाकर हताश हो गया। इसके लिए एक ही मार्ग रह गया था कि वह मुगल-साम्राज्य के बाहर चला जाय और यही इसने किया। इसके बहुत से सर्दार इसका साथ छोड़कर चले गए और अंत में वह अपनी एक बेगम मुमताज महल, तीनों पुत्र तथा राजा भीम के अधीनस्थ राजपूत सेना के साथ गोलकुंडा के राज्य में चला गया। पर्वेज तथा महाबत खाँ भी सीमा तक पहुँच कर रुक गए और फिर बुर्हानपुर लौट आए। जहाँगीर भी अजमेर से कश्मीर की ओर चल दिया।

शाहजहाँ ने गोलकुंडा के मुहम्मद कुतुबशाह से सहायता माँगी पर उसने धन, सामान आदि की सहायता करते हुए भी सैनिक सहायता देना अस्वीकार कर दिया। अपने राज्य में से होकर उड़ीसा जाने में उसने कोई बाधा नहीं डाली और मार्ग में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। ५ नवंबर सन् १६२३ ई० को शाहजहाँ मछली-पत्तन पहुँच गया। यहाँ एक सप्ताह रुक कर यह उड़ीसा गया, जहाँ का प्रांताध्यक्ष अहमद बेग खाँ पाँच-छ सहस्र सेना के रहते हुए भी विद्रोहियों का मार्ग न रोक कर पहले कटक चला गया और वहाँ से बर्दवान पहुँचा। बर्दवान के फौजदार सालिह बेग की कुछ सहायता

न कर यह यहाँ से अपने पितृव्य इब्राहीम खाँ फतहजंग के पास ढाका गया, जो बंगाल का प्रान्ताध्यक्ष था।

शाहजहाँ ने बिना किसी विरोध के उड़ीसा पर अधिकार कर लिया और सालिह बेग के विद्रोही-पक्ष न ग्रहण करने पर बर्दवान को घेर लिया। कुछ दिन के घेरे के अनंतर बर्दवान पर अधिकार हो गया और बंगाल के बहुत से जमींदारों के इसका पक्ष ले लेने पर शाहजहाँ की सैनिक शक्ति भी बढ़ गई। अब शाहजहाँ राजमहल की ओर बढ़ा और इसने इब्राहीम खाँ को पत्र लिखा कि वह बंगाल पर से अपना अधिकार उठा ले तथा दरबार चला जावे। इब्राहीम खाँ ने यह स्वीकार नहीं किया और युद्ध की तैयारी की। २० अप्रैल सन् १६२४ ई० को घोर युद्ध हुआ, जिसमें इब्राहीम खाँ मारा गया और इसकी सारी संपत्ति, जिसमें चौबीस लाख नगद ही था, जब्त कर ली गई। बंगाल पर शाहजहाँ का अधिकार हो गया और इसने अपने पक्ष-पातियों को अच्छी प्रकार पुरस्कृत किया।

शाहजहाँ ने दाराब खाँ को बंगाल का प्रांताध्यक्ष नियत किया और उसके परिवार को ओल में अपनी रक्षा में रख कर बिहार की ओर बढ़ा। अभी तक किसी ओर से बादशाही सेना के आने का समाचार नहीं मिला था, इसलिए शाहजहाँ ने बिहार, अवध तथा इलाहाबाद प्रांत पर अधिकार कर लेने का निश्चय किया और राजा भीम को कुछ सेना के साथ पटना भेजा। शाहजहाँ ने बिहार के प्रान्ताध्यक्ष मुखलिस खाँ के पास भी पत्र भेजा कि वह उसका पक्ष ग्रहण कर ले पर उसने भी स्वीकार नहीं किया। साथ ही उसने युद्ध की कुछ तैयारी नहीं की और राजा भीम के पटना पहुँचते ही वह अपने सहायकों के साथ इलाहाबाद चला गया। शाहजहाँ का बिहार प्रांत पर अधिकार हो गया और वह वहाँ का शासन ठीक कर आगे

का प्रबंध करने लगा। इसने अपनी सेना के तीन भाग किए और एक भाग को अब्दुल्ला खाँ फीरोज जंग के आधीन जौनपुर होते इलाहाबाद भेजा। दूसरे भाग को दरिया खाँ रूहेला के अधीन अवध में कड़ा मानिकपुर होते हुए वहीं भेजा और तीसरे भाग को, जिसमें राजा भीम की सेना थी, अपने अधीन रखकर तोपखाने तथा जलसेना के साथ वह स्वयं बनारस की ओर बढ़ा।

जौनपुर का फौजदार जहाँगीर कुली खाँ अब्दुल्ला खाँ के पहुँचते ही इलाहाबाद चला गया और अब्दुल्ला खाँ भी जौनपुर पर अधिकार करता झूसी पहुँच गया। शाहजहाँ भी जौनपुर पहुँच गया और सहायता के लिए जल-सेना अब्दुल्लाखाँ के पास भेज दी, जिसने गंगा पार कर इलाहाबाद दुर्ग को घेर लिया। शाहजहाँ ने राजा भीम को आरैल और दरिया खाँ रुहेला को मानिकपुर भेजा कि दुर्गवालों को किसी ओर से सहायता न मिल सके। परंतु यह सब होते दुर्गाध्यक्ष रुस्तम खाँ बड़ी दृढ़ता से दुर्ग की रक्षा करता रहा। इधर शाहजहाँ ने पंद्रह सहस्र सेना के साथ वजीर खाँ को चुनार दुर्ग लेने के लिए भेजा और अब उसे सफलता की बहुत कुछ आशा हो गई।

यहाँ तक शाहजहाँ का सौभाग्य उसका साथ देता चला गया था पर अब उसके मार्ग में ऐसी बाधा आ पड़ी, जिसकी पहली ही टक्कर में वह दूर जा बैठी। शाहजादा पर्वेज तथा महाबत खाँ आदेश पत्रों के कई बार पहुँचते ही ठीक वर्षा ऋतु में उत्तर की ओर सेना सहित चल पड़े और कालपी के पास यमुना नदी पार कर कड़ा पहुँच गए। महाबत खाँ ने बड़े प्रयत्न से तीस नावें एकत्र कीं और कड़ा से कुछ पश्चिम हट कर छ सहस्र सवारों को गंगा पार भेज दिया। इलाहाबाद दुर्ग के अध्यक्ष के पास समाचार भेज कर वह उन सवारों के साथ दरिया खाँ पर जा टूटा, जो परास्त होकर इलाहाबाद चला आया। बादशाही सेना

पीछा करती हुई इलाहाबाद पहुँची और अब्दुल्ला खाँ घेरा उठा कर झूसी चला गया। शाही सेना का एक भाग मुहम्मद जमाँ के अधीन आगे बढ़ा, जिसे रोकने के लिए बैरम बेग खानदौराँ नियत हुआ पर संगम के पास युद्ध में वह घायल होकर मारा गया और इसका पुत्र भी मारा गया। विद्रोही सेना अब हट कर यहाँ से जौनपुर चली गई।

शाहजहाँ ने यह सब समाचार पाकर अपनी कुल सेना एकत्र की, चुनार से वजीर खाँ को सेना सहित बुला लिया और सुरक्षा के लिए अपने परिवार को रोहतासगढ़ भेज दिया। अब वह सम्मिलित सेना के साथ बनारस होता इलाहाबाद की ओर बढ़ा। गंगा-टोंस संगम के पास दोनों सेनाओं का सामना हुआ और घोर युद्ध के अनंतर परास्त होकर शाहजहाँ रोहतासगढ़ चला गया। दाराब खाँ को इसने बंगाल में प्रांताध्यक्ष नियुक्त कर रखा था इस लिए उसे लिखा कि कुल सेना के साथ वह गढ़ी में आकर मिले पर दाराब खाँ वैसा नहीं कर सका। इस पर दाराब खाँ के पुत्र को अब्दुल्ला खाँ ने मार डाला। इसके अनंतर शाहजहाँ पुनः उसी मार्ग से, जिससे कि आया था, दक्षिण को लौट गया।

शाही आज्ञानुसार पर्वेज दरबार लौट गया और बंगाल का प्रबंध ठीक करने के लिए महाबत खाँ यहीं रह गया। इसने दाराब खाँ को बुला कर शाही आज्ञा से मरवा डाला और उसका सिर खानखानाँ के पास भेज दिया। दक्षिण में मलिक अंबर उपद्रव मचाए हुए था तथा शाहजहाँ ने वहाँ पहुँच कर उसकी सहायता की इस लिए पर्वेज तथा महाबत खाँ पुनः दक्षिण भेजे गए। इनके पहुँचने का समाचार पाते ही शाहजहाँ भाग गया और क्षमा याचना के लिये प्रार्थना पत्र दरबार भेजा। बादशाह ने कुछ शर्तें लगाकर इसे क्षमा कर दिया और यह भी उन शर्तों को पूरा कर नासिक में जाकर रहने लगा।

जहाँगीर के पुत्रों में खुसरो मारा जा चुका था और शाहजहाँ शक्तिहीन होकर एकांतवास करने लगा था। अब पर्वेज प्रभावशाली हो रहा था और महाबत खाँ उसका साथ दे रहा था इसलिए नूरजहाँ ने इन दोनों को अलग करना उचित समझा क्योंकि वह शहरयार को बादशाह बनाना चाहती थी। आसफ खाँ ने भी इस कार्य में सहयोग दिया क्योंकि वह शाहजहाँ का पक्षपाती था। महाबत खाँ दक्षिण से बुलाया जाकर बंगाल में नियुक्त किया गया और पर्वेज के पास उसके स्थान पर खानजहाँ लोदी भेजा गया। महाबत खाँ पर सरकारी धन, हाथी आदि गबन करने का दोष लगाया गया, जिससे क्रुद्ध हो वह पाँच छ सहस्र सवारों के साथ पंजाब पहुँचा और झेलम नदी के पास जहाँगीर तथा नूरजहाँ को अपनी रक्षा में लेकर काबुल गया। वहाँ से लौटते समय नूरजहाँ के प्रयत्न से जहाँगीर छूट गया और महाबत खाँ भाग कर दक्षिण शाहजहाँ के पास चला गया। महाबत खाँ के उपद्रव के समय शाहजहाँ ने पुनः कुछ प्रयत्न किया था पर इसके भागने का समाचार सुन कर और स्वयं असफल होने पर फिर नासिक लौट गया।

जहाँगीर प्रायः अस्वस्थ रहता था और महाबत खाँ के भागने पर वह स्वास्थ्य लाभ के लिए मार्च सन् १६२७ ई० में कश्मीर गया। वहाँ भी उसकी बीमारी बढ़ गई, इस लिए कश्मीर से वह लौटा पर २८ अक्तूबर सन् १६२७ ई० को भीमवर के पास उसकी मृत्यु हो गई। इस समय इसकी अवस्था अट्ठावन वर्ष की थी और इसने बाईस वर्ष राज्य किया था। इसकी मृत्यु होते ही राजगद्दी का प्रश्न उठा। शहरयार वहाँ उपस्थित नहीं था और गंजेपन के रोग से ग्रस्त होकर वह कश्मीर से लाहौर चला आया था। यद्यपि नूरजहाँ ने उसे समाचार भेजा पर इसी बीच उसका भाई आसफ खाँ कई सर्दारों को मिला कर तथा

खुसरू के पुत्र दावरबक्स उर्फ बुलाकी को अस्थायी रूप से गद्दी पर बिठा कर ससैन्य पड़ाव पर पहुँचा और जहाँगीर के शव को साधारण रूप से लाहौर भेज दिया। इसने नूरजहाँ को भी अपनी रक्षा में ले लिया कि वह कोई उपद्रव न कर सके।

शहरयार ने यह समाचार पाते ही कोष लुटा कर एक बड़ी सेना एकत्र कर ली और आसफ खाँ के लाहौर पहुँचते ही दोनों सेना में युद्ध हुआ। शहरयार परास्त हो पकड़ा गया और अंधा किया जाकर कैद हुआ। शाहजहाँ को दक्षिण में समाचार भेज दिया गया था अतः वह वहाँ से उत्तर को चला और सन् १६२६ ई० की २८ जनवरी को आगरा पहुँच गया। बुलाकी भी गद्दी से उतारा जाकर अन्य शाहजादों के साथ समाप्त कर दिया गया। ४ फरवरी सन् १६२८ ई० को शाहजहाँ गद्दी पर बैठा।

जहाँगीर जब तीस वर्ष का था तभी इसका सबसे छोटा भाई मुराद मर गया और केवल एक छोटा भाई दानियाल इसके प्रतिद्वंद्वी के रूप में बच गया था। इसी समय इसके पिता ने इसे मेवाड़ पर भेजा पर यह आज्ञा के विरुद्ध अजमेर से आगे नहीं बढ़ा। राजा मानसिंह के बंगाल चले जाने पर तथा अकबर के दक्षिण में होने के कारण इसने विद्रोह आरंभ कर दिया और आगरा न ले सकने पर इलाहाबाद पहुँच कर अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। यहीं रहते समय इसने जमानाबेग से प्रताप उज्जैनिया का सोते समय खून करा डाला और उसका पड़ाव लुटवा दिया, जिसे अपनी सहायता के लिए निमंत्रित किया था। इसी पर जमाना बेग को महाबत खाँ की पदवी दी गई थी। इसी के अनंतर वीर सिंह देव बुंदेला के द्वारा अपने पिता के मित्र अबुल्फ़जल को मरवा डाला। इसके बाद पिता-पुत्र में संधि हुई और

पुनः यह मेवाड़ भेजा गया। परंतु प्रकृत्या महा आलसी होने से यह आगे नहीं बढ़ा तब इसे इलाहाबाद लौट जाने की छुट्टी मिल गई। इसी के अनंतर सन् १६०४ ई० में दानियाल की मृत्यु हो गई और सलीम के अकेले रह जाने से उत्तराधिकार का झगड़ा नहीं रह गया तब भी इसने स्वतंत्र दरबार स्थापित कर लिया। इसने अपने आत्म-चरित्र में ईरान के शाह तहमास्त्र का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसने एक हौज बनवाकर लोगों से पूछा कि इसे किस वस्तु से भरवाना चाहिए। सब की बातों को काट कर अंत में उसने कहा कि इसे राज-द्रोहियों के सिरों से भरना चाहिए। इसी प्रकार टर्की के सुलतानों का उल्लेख करते लिखा है कि वे अपने एक पुत्र की रक्षा करते थे और बचे हुए अन्य पुत्रों को स्वर्ग विजय करने के लिए भेज देते थे। पूर्व लिखित इन कुछ बातों ही से ज्ञात हो जाता है कि जहाँगीर कितना कठोर तथा क्रूर हृदय था।

जहाँगीर ने अपने आत्म चरित में लिखा है "हमारा मदिरापान इतना बढ़ गया था कि प्रति दिन बीस प्याला तथा कभी-कभी इससे अधिक पीता था।...हमारी ऐसी अवस्था हो गई थी कि यदि एक घड़ी भी न पीता तो हाथ काँपने लगते तथा बैठने की शक्ति नहीं रह जाती थी।" यह वृतांत राजगद्दी होने से पहले का था क्योंकि आत्म-चरित का लिखा जाना गद्दी पर बैठने के बाद आरंभ हुआ था। अतः यह ठीक है कि जहाँगीर पक्का शराबी था। बाद में इसने जिस प्रकार का व्यवहार अपने पिता के प्रसिद्ध सेनापतियों तथा उसके दरबार के बचे हुए नवरत्न के साथ किया था, जिनमें एक उसका गुरु, अभि-भावक तथा ददिया श्वसुर था और जिस प्रकार उसने अपने साधारण स्तर के सहयोगियों के साथ व्यवहार किया था उन दोनों की तुलना करने से उसकी प्रकृति और भी स्पष्ट हो जाती है। सन् १६११ ई० में

नूरजहाँ के साथ निकाह होने पर जहाँगीर ने सारा शासन भार उसे सौंप दिया और कहा कि अब हमें केवल खाने-पीने के लिए थोड़ा मांस-मदिरा भर चाहिए। इन सबके उल्लेख का तात्पर्य इतना ही है कि जहाँगीर की प्रकृति पर कुछ प्रकाश पड़ जाय।

———

जहाँगीर का आत्मचरित

ऊपर—शबीह जवानी जहाँगीर बादशाह
नीचे—शबीह सुलतान खुसरो

जहाँगीर का आत्मचरित

'ईश्वर के नाम पर जो दयालु तथा कृपालु है'

असीम स्तुति और असंख्य धन्यवाद है उस स्वतः निर्मित को, जिसने एक शब्द 'कुन' (हो) कहकर किसी अज्ञात अनस्तित्व से आकाश के मंडलों तथा प्रकृति के तत्वों को अस्तित्व में ला दिया और उस स्रष्टा को, जिसने आकाश की परतों को बहुत ऊँचे उठाया, भूमि को अनेक प्रकार की प्राकृतिक वस्तुओं से सजाया एवं मनुष्य को वाक्शक्ति के आभूषण तथा बुद्धि के ऐश्वर्य से विशेषता दी, जिससे उसने दया का मुकुट एवं सरदारी का वस्त्र पहिरा और पृथ्वी तथा संसार पर अपना पूर्ण अधिकार जमाया। 'खुदा ने फिरिश्तों से कहा कि हमने ऐसा जीव उत्पन्न किया है जो सबका सरदार हो' (अरबी)।

अपरिमित प्रशंसा हमारे पैगंबर मुहम्मद मुस्तफा बादशाह की है कि कुमार्ग की पगदंडी से हटाया और सेवा के राजमार्ग पर पहुँचा दिया।

अब अपने वृत्तांत का कुछ अंश वर्णन करते हैं जिससे संसार के पृष्ठों पर चिन्ह बना रहे।[1] २० जमादिउल् अव्वल सन् १०१४ हि० बृहस्पतिवार को सवेरे ज्योतिषी के बतलाए हुए साइत में आगरा नगर में अड़तीस वर्ष की अवस्था में बादशाही सिंहासन पर बैठे[2] तथा बादशाह हुए एवं अपनी इच्छापूर्ति के आसन पर शोभायमान हुए।

---

१. राजर्स के अनुवाद में यहाँ तक का अंश नहीं है।

२. सिंहासन पर बैठने की तारीख के इसी ग्रंथ की कई प्रतियों में विभिन्न पाठ मिलते हैं। सन् और दिन ठीक हैं पर किसी में २० जमादि-

शैर का अर्थ

मत हँसो यदि मैंने सांसारिक माया में मन लगाया है क्योंकि सुलेमान से बढ़कर नहीं हूँ जिसने हवा का तकिया बनाया था।

सूर्य के प्रकाश (नूर) फैलाने का समय प्रभात काल है और केवल आकाश के झरोखे से सिर निकालना और सारे संसार को अपने अधिकार में लाना उसके लिए एक ही बात है इसीलिए हमने अपनी पदवी नूरुद्दीन जहाँगीर बादशाह[1] और नाम जहाँगीर शाह निश्चित किया। उस जड़ाऊ सिंहासन पर जिसे हमारे पिता ने बनवाया था कि नौरोज़[2] के जशन के समय उसपर बैठते थे, हम बैठे। उस सिंहासन में लगभग साठ लाख अशर्फी के मूल्य के अच्छे रत्न लगे थे, जो एराक़ के नौ लाख तूमान[3] के बराबर हैं। इसके सिवा उसमें पचास मन हिंदुस्तानी लाल सुवर्ण लगा था, जो एराक़ के पाँच सौ शाही मन के बराबर है। उस सिंहासन को स्थान से हटाने बढ़ाने के योग्य करने लिए इस प्रकार बनाया था कि उसको अलग अलग कर सकते थे और फिर जहाँ आवश्यकता हो मिलाकर एक बना लेते थे। जब हम इस

उस्सानी, किसी में ८ जमादिउस्सानी और किसी में २० जमादिउल् अव्वल दिया है। अकबर की मृत्यु १२ जमादिउस्सानी सन् १०१४ हि० को हुई थी और जहाँगीर एक सप्ताह शोक मनाकर गद्दी पर बैठा था अतः २० जमादिउस्सानी ही ठीक है जो २४ अक्तूबर सन् १६०५ ई० तथा मार्गशीर्ष कृष्ण ८ सं० १६६२ को पड़ता है। इसके अनंतर राजगद्दी के समारोह आदि का अंश राजर्स के अनुवाद में नहीं है।

१. नूरुद्दीन—धर्म का प्रकाश। जहाँगीर—संसार-विजेता। इस प्रति में ग़ाज़ी शब्द नहीं दिया गया है पर अन्य प्रतियों में है।

२. वर्ष के आरंभिक नौ दीन।

३. तूमान—एराक देश का एक सिक्का।

सिंहासन पर बैठे तब आज्ञा दी कि सात दिन-रात प्रसन्नता का शाही नक्कारः बजता रहे। सिंहासन के चारों ओर घेरे में लगभग चालीस जरीब[1] भूमि थी, जो सब ज़रबफ्त[2] के कालीनों, कलाबत्तू के काम के नमदों, जड़ाऊ, सोने तथा चाँदी के वर्तनों, जिनमें 'ऊद'[3] जलाए जाते हैं और शमादानों से, जिनमें अंबर[4] की बत्तियाँ जलती थीं, सजाई गई थी। हमने आज्ञा दे रखी थी जिससे प्रत्येक रात्रिको उस फर्श पर तीन सहस्र कपूर की बत्तियाँ सभी जड़ाऊ, सोने तथा चाँदी के शमादानों में डाली जाती थीं और अंबर की बत्तियाँ भी इतनी लगाई जाती थीं कि सवेरे तक जलती रहती थीं।

शैर का अर्थ

यह वह समय है कि खूब आनंद व आराम कर लूँ।
क्योंकि मदिरा सुराही में है और सुराही हृदयहीन है॥

सुनहले जामे, जड़ाऊ कमरबंद और पन्ना, हीरा, नीलम, फीरोजा के बाजूबंद पहिरे सजी हुई बहुत सी यूसुफ[5] के समान मुखवाली स्त्रियाँ ज़रबफ्त के छत्र लिए हुए पक्ति पर पंक्ति बाँधे हुए मर्यादा के हाथों को छाती पर रखे हुए सेवा की प्रतीक्षा में खड़ी थीं। पाँच सदी से पाँच हजारी तक के लगभग सात सौ प्रसिद्ध सरदारगण उत्तम वस्त्रों तथा रत्नों से सजे हुए कंधे से कंधा मिलाए हुए अदब के साथ खड़े थे।

---

१. जरीब—भूमि नापने की जंजीर, जो साठ गज लंबी होती है।

२. ज़रबफ्त—कलाबत्तू के बेल बूटे युक्त रेशमी वस्त्र।

३. ऊद—अगर नाम की सुगंधित लकड़ी।

४. अंबर—सुगंधित द्रव्य।

५. यूसुफ नामक एक अत्यंत सुंदर पुरुष जिसने मिश्र देश पर राज्य किया था।

शैर का अर्थ

वस रात्रि में रातभर खिलनेवाले इन पुष्पों के सुगंध को इस हठी नाक में प्रति दिन भरता रहा।

मिष्टभाषिणी नायिकाएँ बाल खोले हुए उमंग के साथ गाने और नाचने में मस्त थीं, जिसके देखने-सुनने से चेतनता ठीक हो जाती थी। इसी प्रकार सात दिन व रात आनंदोत्सव होता रहा। इस मजलिस के द्वारा संसार को स्वर्ग के नंदन वन का द्वेष-पात्र बना दिया।

हमारे पिता को सत्ताइस[1] वर्ष की अवस्था तक न पुत्र हुए और न जिए। एक पुत्र हमारी माता को आठवें महीने में हुआ था पर वह एक घड़ी बाद मर गया[2]। इस कारण हमारे पिता ने पुत्र के लिए बहुत परिश्रम किया और ईश्वर के दरबार में निरंतर प्रार्थना करते रहे। जहाँ कहीं किसी सिद्ध फ़क़ीर का पता मिलता वहीं उसके पास जाकर पुत्र के लिए प्रार्थना करते थे। इसका कारण यह था कि पिता की फकीरों पर बड़ी श्रद्धा थी और उन पर बहुत विश्वास रखते थे। सर्दारों में से एक ने इनके पास आकर समाचार दिया कि ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के

---

१. पाठा० अट्ठाइस। यहीं से रागर्स का अनुवाद पुनः आरंभ होता है।

२. सन् १५६२ ई० में एक पुत्री फातमा बानू हुई जो शीघ्र मर गई। इसके अनंतर सन् १५६४ में युग्म पुत्र हुए, जिनका नाम हसन तथा हुसेन रखा गया पर एक महीने बाद दोनों मर गए। इसके अनंतर भी चार वर्ष में कई संतानें हुईं पर एक भी जीवित नहीं रहीं। इलि० डा० जि० ५ पृ० ३३२, स्मिथ का अकबर पृ० ९९-१००। जहाँगीर की माता राजा भारमल की पुत्री थी, जिसे मरियमुज्जमानी पदवी मिली थी।

पवित्र रौज़ा में एक सिद्ध फकीर हैं, जिसके बराबर इस समय हिंदुस्तान में दूसरा कोई पहुँचा हुआ साधु नहीं है। वह रौजा अजमेर नगर में स्थित है। हमारे पिता ने श्रद्धा तथा विश्वास के साथ मन्नत मानी कि यदि परमेश्वर हमें पुत्र देगा, जो हमारा स्मारक होगा तो हम अपनी राजधानी आगरा से अजमेर तक, जो एक सौ चालीस कोस दूर है, पैदल उस दरगाह के दर्शन को जायँगे। पिता की यह मिन्नत सच्चे हृदय से की गई थी इस लिए उस भाई की मृत्यु के छ साल बाद बुधवार १७ रबीउल् अव्वल सन् ९७७ हि०[१] को जब दिन सात घड़ी चढ़ चुका था और तुला राशि चौबीस दर्जा उठ चुकी थी उस समय ईश्वर ने हमें इहलोक में पैदा किया। पिता अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार पैदल ही बहुत से सरदारों के साथ दस कोस प्रति दिन यात्रा करते हुए आगरे से चले और शेख मुईनुद्दीन चिश्ती के पवित्र रौज़ा तक पहुँचे[२]। वहाँ दर्शन कर उस दरवेश का सत्संग करना चाहा, जो वहाँ रहता था और जिसका नाम शेख सलीम[३] था। हमारे पिता उसके आश्रम पर गए, जो

---

१. जब जहाँगीर की माता गर्भवती थी तभी वह शेख के गृह पर भेज दी गई थी कि वहीं पुत्र प्रसव हो। अकबर बराबर आगरा तथा सीकरी आता जाता था। जहाँगीर की उत्पत्ति का समाचार अकबर को आगरा में मिला और तब वह यात्रा को गया। जहाँगीर का जन्म ३० अगस्त सन् १५६९ ई०, सं० १६२६ बुधवार को हुआ था।

२. यह यात्रा २० जनवरी सन् १६२० ई० को आरंभ हुई और सोलह दिन में समाप्त हुई।

३. शेख सलीम काबुल के फर्रुखशाह के वंश से था पर इसके पूर्वज दिल्ली में आबसे थे, जहाँ सन् १४९७ ई० में इसका जन्म हुआ था। यह ख्वाजा इब्राहीम का शिष्य हुआ और उसके बाद बाईस वर्ष तक मुसलमानी देशों में यात्रा करता रहा। यह इस्लाम धर्म का अच्छा

सीकर के पास के पहाड़ में रहता था। हमको उस फकीर की गोद में डाल दिया और उससे कहा कि आप मेरे पुत्र के जीवन के लिए प्रार्थना करें। इसके अनंतर उस फकीर से पूछा कि क्या खुदा मुझे कई पुत्र देगा। दैवयोग से उस समय उन्होंने विशेष कृपा दिखलाई और कहा कि खुदा तुम्हें प्रसन्न होकर तीन पुत्र देगा। पिता ने कहा कि हमने अपने प्रथम पुत्र को आपकी गोद में डाल दिया है। शेख ने कहा कि ईश्वर भला करे और इस कारण कि तुमने इसे हमारी गोद में दिया है, हम इसका नाम महम्मद सलीम रखते हैं।[1]

हमारे पिता ने सीकरी ग्राम को शुभ समझकर उसे अपनी राजधानी बनाया और उस ग्राम का नाम गुजरात के विजय के अनंतर फतहपुर रखा। अब वह इसी नाम से प्रसिद्ध है। हमने अपने पिता के स्वस्थ समय में या पान करते हुए कभी नहीं सुना और न लड़कपन में तथा

ज्ञाता था और अंत में सूफी होगया। यह सन् १५६४ में भारत लौट आया और अंत तक सीकरी में रहा। यह गृहस्थ था और इसे कई संतानें थीं। यह दोनों समय स्नान करता, जाड़े में भी साधारण वस्त्र पहिरता और कठोर तपस्या करता था। इसने शेख मुबारक की रक्षा की जिसे कठमुल्लाओं के अत्याचार से आगरे से भागना पड़ा था। इसके कई शिष्य प्रसिद्ध हुए। (देखिए बदायूनी भाग ३ पृ० ११-२ फारसी)

१. रागर्स के अनुवाद में सलीम की उत्पत्ति के पहले शेखजी ने पूछने पर तीन पुत्र होना कहा था और इसके उत्तर में प्रथम पुत्र को उसकी रक्षा में देने को बादशाह ने कहा था तथा शेख ने अपना नाम उस पुत्र को देना स्वीकार किया था। यह ठीक भी है क्योंकि इसी के अनंतर प्रसव-काल आने पर सलीम की माता शेख के गृह पर भेजी गई थी।

न बड़े होने पर सुना कि वह कभी हमें महम्मद सलीम के नाम से पुकारते थे।[1] सदा वह हमें बाबा के नाम से पुकारते थे। यदि हम स्वयं अपने को सलीम कहलवाएँ या इस नाम से संतुष्ट हों तो रूम के शाहों के नाम[2] की शंका हो। नाम के इस संबंध से हमारे मन ने इस नामको पसंद नहीं किया और हमने चाहा कि ऐसा नाम तथा पदवी धारण करूँ जैसा किसी बादशाह ने नहीं रखा हो। इसी विचार से कि बादशाहों का कार्य संसार को विजय करना है, हमने सोचा कि अपना नाम जहाँगीर शाह रखना चाहिए[3]। ईश्वर की कृपा से आशा रखता हूँ कि जैसा कि अपना नाम रखा है यदि ईश्वर जीवन दे तथा सौभाग्य साथ दे तो अपने नाम को सार्थक कर दिखलाऊँ।

---

१. अकबर ने फकीर के नाम पर इसका सलीम नाम रखा परंतु पुकारने में फकीर का नाम होने से उसे न लेकर वह शेखू बाबा या केवल बाबा कहता था।

२. टर्की के सुलतानों में कई पीढ़ियों तक सलीम प्रथम, सलीम द्वितीय आदि नाम थे।

३. इस नाम के संबंध में पहले भी जहाँगीर ने लिखा है। रा० बे० पृ० २ पर लिखा है कि 'मैंने भारतीय फकीरों से अपनी शाहजादगी के समय सुना था कि जलालुद्दीन अकबर के बाद साम्राज्य का शासक नूरुद्दीन होगा। इसलिए हमने नाम तथा पदवी नूरुद्दीन जहाँगीर शाह रखा।' इसके आगे के शैर आदि नहीं देकर आगरा का वर्णन देने का कारण इस प्रकार लिखा है कि 'इस कारण कि यह बड़ी घटना आगरा में हुई, यह आवश्यक हुआ कि इस नगर का वर्णन यहाँ दिया जाय।' वर्णन में इस अनुवाद तथा अंग्रेजी अनुवाद में कुछ भिन्नता है।

शैर का अर्थ

संसार में सत्य बोलने वाला वही है जो साथियों के साथ पाथेय खाता है।
खुदा जब प्रसन्न होता है तभी मनुष्य से निष्काम मनुष्य पैदा होता है ॥
जिस स्थानपर युद्धकी आग भड़की हो वहाँ अपने योग्य मित्रको मत रहनेदो

आगरा नगर हिंदुस्तान के बड़े नगरों में से है और इसमें पुराना दुर्ग था। हमारे पिता ने हमारा जन्म होने के पहले उसे गिरवाकर नए सिरे से कटे हुए पत्थरों की नींव देकर निर्माण कराया था इसलिए इसे उसका नया रूप कहना चाहिए[1]। यह नगर जमुना नदी के किनारे पर स्थित है और दोनों ओर बसा हुआ है। आगरा नगर नदी के इस ओर दस कोस लंबा और चार कोस चौड़ा है तथा नदी के उस ओर तीन कोस लंबा और दो कोस चौड़ा है[2]। बड़ी मस्जिदों, स्नानघरों तथा सरायों की इतनी अधिकता है कि उसके समान नगर एराक, खुरासान और मावरुन्नहर में कुछ ही होंगे[3]। बहुधा मनुष्यों ने तीन-तीन और चार-चार खंडों के मकान बनवाए हैं। इस नगर में इतनी प्रजा बसी है कि प्रातःकाल से एक प्रहर रात्रि तक मार्ग कठिनता से चल सकते हैं, यहाँ तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते हैं। आगरे के पूर्व में

---

१. दुर्ग का विवरण रा० बे० पृ० ३ पर यहीं है पर इस प्रति में आगे दिया गया है।

२. रा० बे० पृ० ३ पर लिखा है—पश्चिम ओर जिधर अधिक बस्ती है उसका घेरा सात कोस तथा चौड़ाई एक कोस है। दूसरी ओर अर्थात् पूर्वकी ओर की बस्ती का घेरा ढाईकोस, लंबाई एक कोस तथा चौड़ाई आधकोस है।

३. रा० बे० पृ० ३ पर लिखा है कि इन देशों के कितने नगर मिलकर आगरे के बराबर होंगे।

कन्नौज, पश्चिम में नागौद[1], उत्तर में संभल और दक्षिण में चंदेरी है। यह कहा जा सकता है कि आगरा हिंदुस्तान के सभी नगरों से ऐश्वर्य में बढ़ गया है। हिंदुओं के ग्रंथों में यह लिखा है कि यमुना नदी कलिंद पहाड़ से निकली है परंतु मनुष्यों का उस पर्वत तक जाना, बर्फ की अधिकता के कारण कठिन ही नहीं है प्रत्युत् असंभव है। परंतु यह ज्ञात है कि यमुना नदी खिज्राबाद के पास पहाड़ों से प्रकट होकर उत्तर तथा पूर्व के मध्य से इतने वेग से निकलती है कि यदि हाथी भी वहाँ पर पार उतरना चाहे तो तिनके के समान चक्कर खाकर डूब जाय। इस नदी को पार करना भयप्रद तथा कठिन है। आगरे की वायु गर्म तथा रूक्ष है। जो कोई वहाँ से जल्दी में चला जाता है, वही आराम पाता है। इसी कारण इस नगर के निवासियों में बहुत निर्बलता रहती है और सब प्रकृतिवालों के लिए यह अनुकूल नहीं है पर श्लैष्मिक प्रकृतिवालों को तथा वैसी प्रकृति के पशुओं को यह विशेष अनुकूल है, जैसे हाथी, बैल, भैंस तथा गैंडा। अफ़ग़ानों के शासन के पहले भी आगरा बड़ा नगर था क्योंकि मसऊद (बिन) साद (बिन) सुलेमान ने सुलतान महमूद ग़ज़नवी के पुत्र[2] मसऊद के पुत्र सुलतान इब्राहीम के पुत्र महमूद की प्रशंसा में जो क़सीदा लिखा है उसमें आगरा नगर की भी प्रशंसा उस समय की है, जब दुर्ग आगरा पर अधिकार किया गया था।

---

१. पाठा० नागौर।

२. महमूद गजनवी के पुत्र मसऊद का पुत्र इब्राहीम था। प्रतिलिपिकार की भूल से एक नाम इस प्रति में छूट गया था पर अन्य प्रतियों में है।

शेर का अर्थ

दुर्ग आगरा जब पैदा हुआ तो उसने मझोला कर दिया पहाड़ की ऊँचाई को, जिस पर बुर्ज शृंगों के समान शोभित थे।[1]

सुलतान इब्राहीम के समय के एक कवि ने कहा है कि मैंने दुर्ग बहुत देखे पर एक को विशेष कर सर्व से बड़ा देखा। सौबार धन्यवाद है कि अब हम दुर्ग आगरा में है, जिस दुर्ग से तलवार व तीर का धुँआ निकलता है।[2]

जब सिकंदर लोदी की ग्वालिअर दुर्ग लेने की इच्छा हुई और वह दिल्ली से, जो हिंदुस्तान के शासकों की राजधानी है, आगरा आया तब इसी को अपना निवासस्थान बनाया और इसी कारण आगरे में बस्ती तथा ऐश्वर्य खूब बढ़ा। यह दिल्ली के सुलतानों की राजधानी हुई। जब ईश्वर ने हिंदुस्तान की बादशाही इस वंश-परंपरा को कृपा कर दी तब हज़रत फिर्दौसमकानी बाबर बादशाह ने सिकंदर लोदी के पुत्र इब्राहीम के मारे जाने पर, जो दिल्ली का बादशाह था, तथा उसे विजय करने पर और राणा साँगा के विजय के उपरांत, जो हिंदुस्तान के राजाओं में सबसे बड़ा था, यमुना के उस पार अच्छे वायु के स्थान पर चारबाग बनवाया, जिसमें मस्जिद, प्रस्तरनिर्मित गृह, सीढ़ी युक्त कुँए आदि थे। यह बाग़ एक सौ पचीस जरीब घेरे में है। इसका नाम

---

१. आर. बी. ने इसका अर्थ नहीं समझा है और कर्द को गर्द समझकर तथा मियान का अर्थ बीच लेकर ऐसा आशय लगा लिया है, जिससे आगरा दुर्ग की प्रशंसा न होकर निंदा हो गई है। यहाँ जो अर्थ दिया गया है वही ठीक है।

२. यह अंश आर. बी. में नहीं है।

गुलअफशाँ (पुष्प वर्षक) रखा और उनका विचार था कि इसमें बड़ा प्रासाद बनवावें पर बाबर बादशाह की अवस्था ने उन्हें इसके लिए अवसर नहीं दिया।[१]

हमारे पिता अर्श आशियानी अकबर बादशाह ने आगरा दुर्ग की कटे हुए लाल पत्थरों से नींव डलवाई और पूरा तैयार कराया। इसमें चार फाटक और दो दरीचे हैं, जो सब संसार में अलभ्य है। वास्तव में यह आश्चर्यजनक दुर्ग है, जो तैयार हो जाने पर ज्ञात होता है कि सौभाग्य रूपी कारीगर ने एक पत्थर में से काटकर रख दिया है। इस दुर्ग के बनवाने में छत्तीस लाख रुपए हिंदुस्तानी[२], जो एराक में प्रचलित एक लाख तूमान के बराबर है, व्यय हुआ था। हर एक ऐश्वर्य-शाली सेवक तथा राजभक्त ने बड़े-बड़े प्रासाद बनवाए और उद्यान लगवाकर इसे अच्छा नगर बना दिया। इस नगर, ग्वालियर और मथुरा के, जो कृष्णजी का निवास स्थान है और जिनको हिंदू ईश्वर समझकर

---

१. इसी के अनंतर आर. बी. में इतना अंश अधिक है—

इस आत्मचरित में जहाँ साहिब-किरानी लिखा है वहाँ उससे तात्पर्य अमीर तैमूर गुर्गन से है, फिर्दौस-आशियानी जहाँ लिखा हो उससे बाबर बादशाह, जहाँ जन्नत-आशियानी हो उससे हुमायूँ बादशाह और जहाँ अर्श-आशियानी प्रयुक्त हो उससे हमारे आदरणीय पिता जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी से तात्पर्य है।

इसके अनंतर का कुछ अंश प्रजा के उद्यानादि बनवाने तथा काशी, मथुरा आदि के मंदिरों का विवरण आर. बी. में नहीं है।

२. आर.बी. पृ० २ पर पैंतीस लाख रुपए, जो एराक के एक लाख पंद्रह सहस्र तूमान तथा तूरान के एक करोड़ पाँच लाख खानी के बराबर है, व्यय होना लिखा है।

पूजा करते हैं निवासियों की भाषा एक है और हिंदुस्थान की अन्य भाषाओं से मधुर है। ये थोड़े नगर हैं जिनका उल्लेख किया गया है और इनकी हिंदुओं में बड़ी प्रतिष्ठा है। मथुरा में मेरे पिता की इरमों ने जैसे राजा मानसिंह की पुत्री और अन्य बड़े राजाओं ने बड़े बड़े मंदिर बनवाए हैं, जिनमें एक एक में एक लाख व दो लाख रुपए व्यय हो गए हैं और अभीतक कितने पूरे नहीं हुए हैं। दूसरे मंदिर बनारस में बनवाए हैं। राजा मानसिंह ने उस सरकार में जो मंदिर निर्माण कराया है उसमें हमारे पिता के आठ दस लाख रुपए लग गए। हिंदुओं की उस नगर पर ऐसी श्रद्धा है कि (उनका कहना है कि) जो कोई बनारस में मरता है वह स्वर्ग को जाता है, चाहे वह मनुष्य हो, कुत्ता या बिल्ली या किसी प्रकार का जीव हो।[1] वे ऐसा भी कहते हैं कि उस मूर्ति की ऐसी सत्ता है कि जो वहाँ मरता है स्वर्ग को जाता है। स्वर्ग जाने की एक निशानी यह है कि जिस किसी को वहाँ भेजते हैं उसके बाएँ कान में आप से आप छिद्र हो जाता है और इस संबंध में बहुत विश्वास रखते हैं। हम इसपर कुछ भी विश्वास नहीं करते पर यह चाहते हैं कि इन सब का झूठ संसार पर प्रकट हो जाय। एक विश्वासी मनुष्य को भेजता हूँ कि इसे जाँचकर इसे असत्य सिद्ध कर दे। अस्तु, मानसिंह के इस मंदिर में स्वयं एक लाख रुपए व्यय किए, जिससे कोई अच्छा मंदिर बनारस में नहीं है। एक मंदिर इससे भी बड़ा वहाँ था, जिसे बनवाने की हमने आज्ञा देदी थी। इस संबंध में हमने अपने पिता से पूछा था कि इन मंदिरों के आपके बनवाने का क्या कारण है तब उन्होंने कहा कि बाबा, हम लोग बादशाह हैं और बादशाह खुदा की छाया है इसलिए जब खुदा ने प्रजा को अपनी कृपा से हमें सौंपा है तो

---

१. 'काश्याम् मरणान् मुक्तिः' का अर्थ लेकर या सुनकर यह लिखा गया है।

हमें भी चाहिए कि उन पर दया तथा स्नेह रखें। हम खुदा की कुल प्रजा को शांति के साथ रखते हैं और किसी को कष्ट नहीं पहुँचाते।[1]

आगरा और उसके आसपास के खरबूजे बहुत अच्छे होते हैं और बहुत मिलते हैं पर उन पर मेरी कुछ भी रुचि नहीं है क्योंकि हिंदुस्तानी खरबूजे कहीं के भी बड़े नहीं होते। अधिकतर लोग छोटे को पसंद करते हैं। परंतु लाहौर और काबुल में बदख्शाँ से बड़े तथा मीठे खरबूजे लाए गए थे किंतु वे भी मुझे पसंद नहीं आए। हिंदुस्तान के फलों में हमें हमन या आम अच्छा लगता है। बयाना का आम, जो आगरे से बीस कोस पर है, छोटी गुठली का तथा मीठा होता है परंतु हमारे विचार से जरामूदा का आम जो आगरे से तीस कोस पर है सारे हिंदुस्थान में मिठास में बढ़ कर है।[2] शाह अर्श-आशियानी अकबर के राज्यकाल में बहुधा वे मेवे जो हिंदुस्तान में नहीं होते थे बाहर से मँगाए जाते थे। इनमें अनन्नास है जो फिरंग के सभी मेवों से अच्छा है। किसी किसी बाग में पैदा भी होता है। विशेषकर बाबर बादशाह के बनवाए हुए बागमें पैदा होता है, जो जमुना के उसपार है और जिसका नाम गुल अफशाँ रखा गया है। प्रति वर्ष वहाँ तीन लाख अनन्नास होता है। बहुत प्रकार के अंगूर होते थे जैसे साचेई, किशमिशी, चेनेर-वाली, खाक कबक, मिसकाली तथा समरकंदी।[3] ये लाहौर के बाजार

---

१. यह मंदिरों वाला अंश रा० बी० में नहीं आया है।

२. इन दोनों स्थान के आमों का उल्लेख आर० बी० में नहीं है।

३. इस प्रति में आठ प्रकार के अंगूर का उल्लेख है पर आर० बी० में (केवल) साहिबी, हब्शी तथा किशमिशी का उल्लेख है। टिप्पणी में हब्शी का पाठांतर चीनी तथा हुसेनी दिया है। गोल छोटे अंगूर किशमिशी कहलाते हैं और लंबे बड़े अंगूर ही सूखने पर द्राक्षा या मुनक्के कहलाते हैं। अन्य आगे दिए फलों का उल्लेख आर० बी० में नहीं है।

में बिकते हैं और सबको बहुत मिलते हैं। मीठे, बड़े, दर्शनीय तथा स्वादिष्ट सेब, बिना गुठली के सताल्लू, तर बादाम, सुलेमानी ज़रदालू, आलू बालू, किदंगान आदि अच्छे फल छोटे बड़े बहुत होते हैं। वृक्षों में भी सरो, काज, सुफेदबार, अर अर, चिनार, तोद आदि बहुत होते थे। संदल के वृक्ष, जो विशेष कर नीचे (दक्षिण) के टापुओं में होते हैं, यहाँ भी होने लगे। हिंदुस्थान के अन्य फल तथा वृक्ष बहुत हैं, जिनको लिखने को विस्तार की आवश्यकता है। उद्यानों में हर प्रकार के फूल बहुत से हैं, विशेषकर गुले लाला, मुश्की, यासमीन, गुलज़र्द, गुल-मिल्लः, गुलबनफशा, गुल आतशीं तथा चमेली, जो भारतीय पुष्पों में मान्य है। दूसरे फूल बहुत हैं पर उनका उल्लेख करना विस्तार करना है।[1] नगर के निवासीगण विद्या तथा कला सीखने में बहुत प्रयत्न करते थे और अपने गुण में उच्च योग्यता प्राप्त कर लेते थे। इस नगर में हरएक प्रकार के तथा सभी धर्म एवं मत के मनुष्य बसे हुए थे।

जिस घड़ी हम स्वेच्छा के सिंहासन पर बैठे उस समय जो पहली आज्ञा की वह न्याय की जंजीर लगाने की थी, जिसका एक सिरा शाह बुर्ज के कगूरे में दृढ़ किया हुआ था और दूसरे को नदी के तट तक लेजा कर पत्थर के खंभे में जो बन चुका था, बाँध दिया गया था। यह इस लिये था कि यदि न्यायालयों के अध्यक्ष निर्णय करने में विलंब करें तो न्यायेच्छुक तथा शीघ्रता करनेवाला इस लटकती जंजीर तक आकर थोड़े ही दिनों

---

१. आर० बी० में पुष्पों में चंपक, केवड़ा, रायबेलि, मालश्री, केतकी तथा चमेली का उल्लेख है और उनके फुलेलों का। इसके अनंतर सरो, सनोबर, चिनार, सफेदार तथा वृक्ष मूला पौधों का उल्लेख है। इसके अनंतर चंदन के वृक्ष का उल्लेख है। जहाँगीर ने इन सब की बड़ी प्रशंसा लिखी है।

अपने काम को पूरा कर न्याय को पहुँच जाय। इस जंजीर को बहुत व्यय कर सोने की बनवायी थी जो चालीस गज़ लंबी थी और उसमें साठ घंटियाँ लगी थीं। उसकी तौल दस मन के लगभग है, एराक़ के एक सौ मन के बराबर होता है।[1]

बारह नियम

हमने बारह नियम बनाए कि वे राज्य भर के कुल सेवकों तथा राजभक्तों द्वारा काम में लाए जायँ।

(१) ज़कात्, मीर बहरी व तुमग़ा[2] को, जिससे प्रतिवर्ष आठ सौ

---

१. सोने की यह जंजीर अहंता तथा वैभव का प्रदर्शन मात्र था। इसे हिलाकर किसी के न्याय पाने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता और न अपने आत्मचरित ही में इसके उपयोग किए जाने का विवरण दिया है। अमीर खुसरो के नुह सिपहर में दिल्ली के राजा अनंगपाल की ऐसी जंजीर का उल्लेख है। चीन के किसी सम्राट् यू तू ने भी ऐसी जंजीर लगवाई थी। प्राइस ने अपनी रचना में इसे एक सौ चालीस गज़ लंबी अस्सी घंटियों सहित साठ मन के तौल की लिखा है। इलियट डाउसन जि० ६ पृ० २८४ पर इसे तीस गज़ लंबी, साठ घंटियों सहित चार मन हिंदुस्तानी या बत्तीस मन एराकी तौल की बतलाया गया है। यही रागर्स-बेवरिज के मेमौयर्स पृ० ७ पर दिया है पर एराकी बयालिस मन लिखा है।

२. ज़क़ात—आय का चालीसवाँ भाग जो दान किया जाता है, कर।
मीर बहरी—जल से आने जाने या माल ले जाने का कर।
तुमग़ा—व्यापार के सामान पर लगाया गया सरकारी कर तथा मुहर।

मन[1] हिंदुस्तानी तौल से, जो एराक़ का आठ सहस्त्र मन होता है, सोना उतरता था, पूर्ण रूप से ईश्वरी प्रजा को छोड़ दिया जिससे कष्ट में पड़े हुए लोगों का कष्ट दूर हो जाय।

(२) जिन मार्गों में चोर या डाकू पैदा हो जायँ और जिस स्थान में यात्रियों को लूट लिया गया हो उस स्थान के आदमी पद से हटा दिए जायँ। जहाँ मार्ग कम हो या न हो वहाँ के लिए आदेश दिया कि कस्बे बसाए जाँय तथा रास्ते पूर्ण किए जायँ जिसमें ईश्वर के सेवकों को हानि न पहुँचे। जागीरदारों को आज्ञा दी कि जहाँ उजाड़ हो वहाँ मार्ग पर मस्जिद तथा सराय बनवावें, जिससे यात्रीगण आराम से आ जा सकें। बहुधा वैसी भूमि खालसा[2] में पड़ती थी, जिससे प्रत्येक मनुष्य जो वहाँ का करोड़ी[3] हो हमारे खालसा के धन से ये इमारत बनवावे। खालसा सरकार के कार्यकर्ता को करोड़ी कहते हैं। मेरे पिता ने अपने राज्य के आरंभ काल में एक करोड़ दाम की तहसील पर एक आदमी नियत किया था और इस कारण उसको करोड़ी कहते थे तथा अब भी उसी प्रकार करोड़ी कहते हैं।

३--मार्गों में व्यापारी के बोझों को उसकी सम्मति बिना कोई न खोले।

---

१. प्राइस ने इसका दूना लिखा है। इलि० डाउ० में इसका उल्लेख नहीं है।

२. खालसा--जिस भूमि पर स्वयं राज्य का सीधा अधिकार हो।

३. करोड़ी--जितनी भूमि की आय एक करोड़ दाम हो, उसके उगाहने वाले कार्यकर्ता को करोड़ी कहते थे। उस समय चालीस दाम का एक रुपया होता था अर्थात् ढाई लाख रुपए को तहसील करने वाला करोड़ी था।

४—यदि कोई मनुष्य मर जाय और उसके यहाँ बादशाही हिसाब बाकी न हो तथा उसके पुत्र हों, यदि अयोग्य भी हों तो भी उसकी संपत्ति में कोई हस्तक्षेप न करे और उसके उत्तराधिकारी को तनिक भी न रोके। जिसके कोई संतान न हो तो उसकी संपत्ति या भाग से मस्जिद, तालाब तथा पुल बनवावें।

५—मदिरा न बनावें और न बेचें। यद्यपि हमने ऐसी आज्ञा दी पर हमारी स्वयं मदिरा पर बहुत रुचि है। हमने सोलहवें[1] वर्ष की आयु से मदिरा पीना आरंभ कर दिया था। वास्तव में जब इच्छानुकूल युवकगण उपस्थित हों, आकर्षक स्थान, मनोहर वायु तथा बड़े प्रासाद हों, जिनके फर्श, दीवाल एवं छत बड़ी सुंदरता से सजाए हुए हों तो ऐसे महलों में बिना विचार के मस्त न होना मूर्खता ही है। भरे हुए प्यालों तथा इच्छानुकूल थालों से दूसरी अवस्था हो जाती है और कौन मादक द्रव्य अंगूरी मदिरा से बढ़कर है। यदि तिरयाक की बान हो तो व्यर्थ ही है। मनुष्य को वह मनुष्यत्व तथा पुरुषार्थ से दूर कर देता है और यदि वैसा अभ्यास नहीं है तो इसके सिवा क्या होगा कि मनुष्य को कठोर तथा स्वार्थी बना देता है तथा झूठी इच्छाएँ उत्पन्न करता है, दूसरा गुण नहीं रखता। फिलूनिया[2] भी तिरयाक का भतीजा है। हम मादक द्रव्यों में केवल अंगूरी मदिरा ही पीते हैं।

शैर का अर्थ

प्याले में चित्त को आनंददायिनी अंगूरी मदिरा भर दो, इसके पहले कि प्याला धूल से भर जावे।

---

१. आर. बी. में अठारहवाँ वर्ष लिखा है और बहुत संक्षिप्त है। हमारी प्रति में, जिसका यहाँ अनुवाद दिया गया है, अपने संबंध में जहाँगीर ने विशेष लिखा है।

२. अफीम तथा बनज अर्थात् अजवाइन या भाँग के बीज को मिलाकर बनाए गए माजून को फिलूनिया कहते हैं।

बस, हमारा मदिरापान यहाँ तक बढ़ गया था कि प्रति दिन बीस प्याला तथा कभी कभी इससे अधिक पीता था। प्रत्येक प्याला एक सेर का होता था तथा बीस प्याला एराक का एक मन।[1] इस कारण हमारी ऐसी अवस्था हो गई कि यदि एक घड़ी भी न पीता तो हाथ काँपने लगते तथा बैठने की शक्ति नहीं रह जाती थी। हमने यह जानकर कि यदि इसी प्रकार यह बढ़ता जायगा तो इसका परिणाम कठिन हो जायगा अतः निरुपाय होकर इसे कम करना आरंभ कर दिया और छ महीने[2] के समय में बीस प्याले से पाँच प्याले तक पहुँचा दिया। जब अपनी इच्छा से भोज करता तब एक या दो प्याला उससे बढ़ा देता था। बहुधा जब दिन एक दो घड़ी रह जाता था तब मदिरापान आरंभ कर देता था परंतु अब राज्यकार्य के कारण सावधान रहना आवश्यक था इससे सोने के समय की निमाज़ हो जाने के अनंतर मदिरापान करना आरंभ करता हूँ और पाँच प्याले से अधिक किसी भी कारण नहीं पीता तथा मन भी इससे अधिक नहीं स्वीकार करता। ऐसे समय केवल स्वाद के लिए कुछ भोजन करता था, नहीं तो हमारा भोजन करना केवल एक समय का था। उसकी भी मदिरापान करने के कारण इच्छा होती थी इस कारण कि मनुष्य खाने पीने ही से जीवित रहता है, निरुपाय होकर पूर्णतः मदिरापान करना नहीं त्याग सका। नहीं तो हमारी इच्छा थी और ईश्वर से यही चाहता भी हूँ कि इससे तौबः कर लूँ। मेरे बड़े

---

१. प्राइस ने प्रत्येक प्याला आध सेर अर्थात् छ आउंस और आठ प्याले का एक एराकी मन लिखा है, जो ठीक ज्ञात होता है क्योंकि इस ग्रंथ में अन्यत्र एराकी मन चार सेर का लिखा गया है। यहाँ प्रतिलिपि कर्त्ता ने नीम सेर का यक सेर तथा हश्त का बीस्त भूल से लिख दिया है।

२. इलि. डाउ० भा. ५ पृ० २८५ पर सात वर्ष लिखा है पर प्राईस ने छ ही महीने लिखे हैं। यही ठीक है।

पिता[1] का जिस प्रकार पक्का तौबा पैंतालीस वर्ष की अवस्था में पूरा उतर गया था उसी प्रकार ईश्वर की इच्छा से मेरा भी पूरा उतरे।

६. किसी के गृह में कोई बलात् न रहे। हमारे सैनिकों में से यदि कोई किसी नगर में जाय और किराए पर स्थान मिले तो ठीक है, नहीं तो नगर के बाहर खेमा डालकर अपने लिए स्थान बना ले। वास्तव में इससे किसी प्रजा को कष्ट नहीं होगा। जैसे कोई अपने परिवार के साथ अपने घर में बैठा है और एकाएक कोई अज्ञात मनुष्य द्वार में घुस आवे और चाहे कि उस गृह के अच्छे भाग अपने अधिकार में कर ले तथा उस अभागे के स्त्री-बच्चों को इतना स्थान भी न बचे कि वे रह सकें तो उसे कितना कष्ट होगा।[2]

७. किसी भी अपराध में कोई किसी की नाक कान न काटे। यदि उसका अपराध घात हो तो उसे मार डालना अच्छा है और यदि कोई अन्य अपराध है तो काँटेवाली बेंत से दंड दिया जाय।

८. प्रजा की भूमि को करोड़ी या जागीरदार बलात् न छीन लें, स्वयं उस पर न कुछ बनावें और न स्वयं उसमें खेती करें।

९. जो जिस परगने का जागीरदार हो वह दूसरे के परगने में आज्ञा न चलावे और दूसरे के परगने के बैल या आदमी को बलात् न पकड़े। प्रत्येक अपने स्थान में कृषि करने का खूब प्रयत्न करे और लगान उतारे।[3]

---

१. बाबर से तात्पर्य है।

२. आर० बी० में केवल इतना लिखा है—कोई किसी दूसरे के गृह पर अधिकार न करे।

३. आर० बी० में लिखा है—सरकारी कर उगाहनेवाला या जागीरदार बिना आज्ञा के उस परगने के आदमियों से जिसमें वह है विवाह न करे।

१०. बड़े नगरों के शासकगण अपने नगरों में चिकित्सालय बनवा कर तथा हकीम नियुक्त कर जो कोई रुग्ण हो उसे वहाँ लावें औ हमारी सरकार के व्यय से वह जब स्वस्थ हो जाय तब उसको प्रसन्नचि करके विदा करें।

११. हमारे जन्म का महीना रबीउल्अव्वल है और उक्त महीने अठारहवीं[१] को माँस न बनाने की आज्ञा दी और हर वर्ष में बराबर ए दिन विश्वास करके पशु न काटने की आज्ञा दी। सप्ताह में बृहस्पतिवा को, जो हमारे राजगद्दी का दिन है, और आदित्यवार को भी माँस खाने का आदेश दिया क्योंकि वह सृष्टि की उत्पत्ति के आरंभ दिवस है जिससे किसी सजीव को निर्जीव न किया जाय। हमारे पि भी उस दिन किसी कारण वश[२] मांस की रुचि नहीं करते थे। हमा अनुमान से पंद्रह वर्ष तक या उससे अधिक हुआ होगा कि उन्हों आदित्यवार को कभी मांस नहीं खाया। उस दिन सभी नगरों में मां न खाने का आदेश दे दिया था।

१२. दूसरी यह आज्ञा दी कि हमारे पिता के कुल नौकरों के मंसब तथा जागीर पहले की तरह, जैसी उनके जीवन-काल में थी, उसी प्रकार बनी रहे। जो उन्नति के योग्य था उसका उसकी योग्यता के

---

१. जहाँगीर का जन्म १७ रबीउल्अव्वल बुध को हुआ था और इसके दूसरे दिन के लिए यह निषेधाज्ञा हुई थी।

२. जहाँगीर ने रविवार की अपनी निषेधाज्ञा का कारण तो दे दिया है पर अपने पिता की ऐसी आज्ञा का कारण इसलिए नहीं दिया है क्योंकि उसे वह कुफ्र समझता था। अकबर सूर्योपासक भी था अतः उसने उस पवित्र दिन के लिए भी निषेधाज्ञा जारी की थी।

अनुसार मंसब तथा जागीर में दस बारह, दस पंद्रह, दस बीस तथा चालीस तक बढ़ा दिया[1] पर ऐसा करने पर उन अभागे नौकरों पर ईश्वर का दंड पड़े जिन्होंने इस कृपा तथा आराम को कुछ भी नहीं माना। कुछ ऐसे हैं जो तस्लीम तथा कोर्निश करने में आनाकानी करते हैं। मेरी इच्छा होती है कि ऐसे झगड़ालू चित्तवालों से किसी प्रकार का सलूक न रखें क्योंकि ये बहुधा युद्ध ही चाहते हैं और सर्वदा अशांति मनाया करते हैं। इसे वे अपनी आय की उन्नति का कारण समझते हैं। परंतु ये अभागे अदूरदर्शी यह नहीं समझते कि ऐसी घटनाओं में वे ही पहले नष्ट होते हैं। स्वर्ग में स्थित फिर्दौसमकान शाह तहमास्प ने बहुत ठीक कहा था। जब उन्होंने एक हौज बनवाया तब अपने स्वर्गोपम राजसभा के मनुष्यों से पूछा कि इसे किस वस्तु से भरवाना अच्छा होगा। एक ने कहा कि इसे अशर्फियों से भरवाना चाहिए। शाह ने उत्तर दिया कि तुझे माल व धन का विशेष लोभ है इससे ठीक नहीं कहा है। दूसरे ने कहा कि इसे गुलाबजल तथा शरबत मिलाकर भरना चाहिए, जिसमें बर्फ के टुकड़े पड़े हों। इसपर शाह ने फिर कहा कि प्रकट है कि तू अफीमची है और तूने यह अपनी ही हँसी कराने के लिए कहा है। एक अन्य ने कहा कि इसे मिठाइयों से भरवाना चाहिए। शाह ने फिर कहा कि तू भी पीनेवाला है कि मिठाई से इतनी रुचि है।

---

१. हमारी मूल प्रति में इन आज्ञाओं की क्रम संख्या आरंभ में न देकर 'दीगर' अन्य लिखा है पर छ के समाप्त होने पर एकाएक 'हश्तुम' आठवाँ लिख दिया है और अंतिम के पहले संख्या क्रम न देकर फिर 'दीगर' लिख दिया है। अनुवाद में क्रम ठीक रखा गया है। इसके अनंतर शाह तहमास्प की कहानी तथा उसपर जहाँगीर का विचार आर० बी० में नहीं दिया गया है किंतु इससे जहाँगीर की प्रकृति पर प्रकाश पड़ता है।

अंत में शाह ने कहा कि तुम लोगों ने जो यह सब कहा है वह सब ठीक नहीं है, यह हौज विद्रोहियों के सिरों से भरा जाना चाहिए। सत्य ही बहुत बहुत बहुत ठीक कहा है। अपने पिता के मृत्यु-काल में हमने जो कुछ इनका व्यवहार देखा उससे जान गया कि राजभक्त कम हैं और यदि हैं तो लाख में एक। हमने कभी अपनी राजकुमारावस्था में सुना है कि शाह अब्बास[1] ने उस फर्हादखाँ[2] को मरवा डाला जिसे छोटे मनुष्य को स्वयं बड़ा बनाया था। एक बार उक्त फर्हादखाँ को घाव लग गया था तो संसार के शरणदाता शाह स्वयं उसे देखने गए और अपने हाथ से उसका घाव सीकर बाँधा था। इसीका इसके अनंतर आज्ञा देकर शिर शरीर से अलग करा दिया था। अवश्य ही यह ठीक जान पड़ता है कि शाह ने जो कुछ किया उचित था क्योंकि राजद्रोही को मार डालने में दया दिखलाना मूर्खता है। हाँ, ऊँचे हुए नौकरों पर कृपा रखनी चाहिए। जो नौकर काम का अवसर पड़ने पर वेतनवृद्धि की प्रार्थना करता है वह अभागा तथा निष्ठुर है।

---

१. फारस के शाह अब्बास का राज्यकाल सन् १५८६ ई० से सन् १६२८ ई० तक था। यह जहाँगीर का प्रायः समकालीन था। इसने उजबेगों तथा तुर्कों को परास्त किया था और अंग्रेजों की सहायता से पुर्तगीजों को औमुंज से निकाल बाहर किया था।

२. फर्हाद खाँ करामान्लू ने सन् १००७हि० में दीन मुहम्मद उजबेग के युद्ध में बड़ी वीरता दिखलाई थी। पर उसपर दोष लगाया गया जिससे वह भागा। जाँच पर दोषी निश्चित होने से इसे मारने की आज्ञा हुई और अलीवर्दी खाँ ने कई दासों के साथ जाकर इसे मार डाला। इसके अनंतर इसके भाई जुल्फिकार खाँ पर पहले कृपा दिखलाई पर उसके बाद उसे भी मरवा डाला। इसका पुत्र सपरिवार भारत चला आया।

हमने कुल अहदियों का वेतन दस से पंद्रह बढ़ा दिया पर शागिर्द पेशा वालों का दस से बारह तक ही बढ़ाया। कुछ का उसके वित्त तथा योग्यता के अनुसार अधिक बढ़ाया। अपने पिता के हरम के लोगों का, जो लगभग तीन सहस्र के थे, दस से बीस कर दिया। अपने साम्राज्य के मददेमआश को, जो प्रार्थना करने वालों की सेना है, अपने पिता के आज्ञापत्रों के अनुसार जो उचित था प्रत्येक को दिया। मीरान सदरेजहाँ को, जो हिंदुस्तान के सैयदों तथा स्तंभों में से था, आज्ञा दी कि योग्य पुरुषों को अच्छी प्रकार कालयापन करने योग्य सहायता दे। साम्राज्य के बंदियों तथा कैदियों को जो बहुत दिनों से कारागार में थे, छोड़ दिया और क्षमा कर दिया।[1]

हर एक धातुओं के सिक्कों को, जो साम्राज्य में प्रचलित हैं, अपने प्रसिद्ध नाम पर सिक्का ढालने की आज्ञा शुभ साइत में दी तथा प्रत्येक का विशिष्ट नाम रखा। सौ तोले की मुहर को नूरे शाही, पचास तोले की मुहर को नूरजहाँ सुलतानी,[2] बीस तोले की मुहर को नूरे दौलत, दस तोले की मुहर को नूरजहाँ,[3] पांच तोले की मुहर को नूरे मेहर तथा एक तोले की मुहर को नूरानी[4] नाम दिया। चाँदी के जो सिक्के ढले उनमें प्रथम सौ तोले का था। उसके एक ओर नूरुद्दीन मुहम्मद

१. यहाँ जहाँगीर की बारह आज्ञाओं का अन्त होता है।

२. आर. बी. में केवल नूरे सुलतानी है।

३. आर. बी. में नूरे करम है। ज्ञात होता है कि नूरजहाँ के सम्राज्ञी होने पर नाम में कुछ परिवर्तन होने से बाद की प्रतियों में ऐसा लिखा गया हो।

४. आर. बी. में नूरेजहानी दिया है। इसके अनंतर एक वाक्य है कि 'इसके आधे को नूरानी तथा चौथाई को रवाजी हमने नाम दिया' तात्पर्य आधी और चौथाई मुहर से है।

जहाँगीर बादशाह लिखवाया, जो रुपए के बदले में है। चाँदी के सिक्कों को, जैसा पहले सोने के सिक्कों को कहते थे, उन्हीं नाम से सिक्का ढालने की आज्ञा दी।[१] उन पर जलूस का सन् लिखा गया। उनके दूसरी ओर टकसाल के प्रांत तथा नगर का नाम तथा 'लाएलाए-लिल्लाह महम्मद रसूलुल्लाह' लिखवाया। एक एक लाख सिक्का प्रत्येक का ढलवाया तथा गृह-व्यय के लिए दे दिया।

सईद खाँ को, जो पिता के पैतृक सेवकों में से था, हाथी और खिलअत देकर पंजाब का शासक नियत किया। सईदखाँ[२] मुगल जाति का है और उसके पूर्वजों ने हमारे पूर्वजों की सेवा की थी। उसको बिदा करने के अनंतर, जब वह कुछ पड़ाव जा चुका था, मनुष्यों से सुना कि उसके ख्वाजासरा अत्याचार करते हैं तथा दरिद्रों और निर्बलों को

---

१. आर. बी. में चाँदी के सिक्कों के नाम भी दिए हैं। १००, ५०, २०, १०, ५, १, आधा, चौथाई तोले तथा दाम का नाम क्रम से कौकिबे तालअ (भाग्य-नक्षत्र), कौकिबे इक्बाल, कौकिबे मुराद (इच्छा), कौकिबे-बख्त, कौकिबे साद, जहाँगीरी, सुलतानी, निसारी तथा खैरे कबूल रखा। मुहरों पर कई शैरों के, आसफ खाँ, शरीफ खाँ के बनाए, लिखे जाने का उल्लेख हैं। इसके अनंतर इसकी राजगद्दी के अवसर पर मकतूब खाँ की बनाई तारीख के कई शैर दिए हैं। इसी के अनंतर खुसरू को एक लाख रुपए देने का उल्लेख है कि इस धन से दुर्ग के बाहर अपने रहने के लिए मुनइमखाँ खानखानाँ की हवेली ठीक कराले।

२. सईद खाँ चगत्ता का वृत्तांत मआसिरुल्उमरा भाग २ फारसी में विस्तार से दिया है और इस घटना का इसी पुस्तक के अनुसार उसमें उल्लेख है पर सईद खाँ इसी के अनंतर सरहिंद पहुँचते ही मर गया। इसने बारह सौ सुंदर ख्वाजासराओं को एकत्र किया था।

सताते हैं। इस पर ख्वाजा मुहम्मद यहिया के पुत्र ख्वाजा सादिक को भेजा कि उसको सूचित करे कि हमारा न्यायालय किसी के अत्याचार को नहीं सह सकता और छोटे-बड़े का भेद नहीं मानता। यदि इसके अनंतर तुम्हारा कोई अनुयायी किसी पर अत्याचार करेगा तो उसे तुरन्त दंड मिलेगा। सईद खाँ ने यह सुनते ही प्रतिज्ञा पत्र लिख कर ख्वाजा सादिक को दे दिया कि बादशाह के पास ले जावे।

प्रत्येक सहस्र हाथियों पर फौजदार नियत किया है, जिसमें वह उनके खाने पीने का ठीक प्रबंध रखे। यद्यपि सरकारी हाथियों की संख्या गिनती से बहुत है परन्तु बड़े तथा अमूल्य युद्धीय हाथी, जो युद्ध के दिन बराबर लड़ सकते हैं, बारह सहस्र हैं। ये हमारे पिता के समय से हैं। इनके सिवा दस सहस्र छोटे हाथी तथा हथिनियाँ हैं, जो बड़े हाथियों की सेवा में रहती हैं। हथसाल के व्यय के लिए दो सौ चालीस लाख रुपए वार्षिक ज़ब्तात की दीवानी से दिए जाते थे, जो एराक के अस्सी हजार तूमान के बराबर है। इसके सिवा नौकरों का वेतन था जो उनकी सेवा में रहते थे, उनकी सेवा में रहने वाले अन्य छोटे हाथियों का व्यय था तथा उन फौजदारों का वेतन था, जो हर स्थान व परगने में, जहाँ एक सहस्र हाथी थे, एक सहस्र सैनिकों के साथ उनकी देखभाल करते थे।

अस्तु, एक दिन हथसाल के फौजदार ने यह समाचार हम तक पहुँचाया कि एमादुद्दीन हुसेन का पुत्र सुलतान अहमद एक मस्त हाथी सात सहस्र रुपए का लाया है और हमारे पिता के धाय भाई जैनखाँ के पुत्र शुक्रुल्ला के हाथ बेंचना चाहता है। हथसाल के इस फौजदार की इच्छा थी कि इसे सुनते ही हम सुलतान अहमद को हाथी के पैरों के नीचे डलवा कर मार डालें। यदि हम ऐसी आज्ञा देते हैं कि कोई हमारे सरकार के सिवा किसी दूसरे के हाथ मस्त हाथी न बेंचे तो दुष्टों

को एक मार्ग मिले और ईश्वर के सेवकों को कष्ट पहुँचे। इसलिए हमने उत्तर दिया कि 'अच्छा किया, हर एक व्यक्ति को अपने माल पर अधिकार है।'[1] इससे हमारा यही अभिप्राय था कि चुगुलखोरों को फिर कहने का साहस न पड़े। इस कारण अपने सामने बुलाकर कहा कि हर एक व्यक्ति अपने माल पर स्वत्व रखता है, तू क्यों चुगली खाता है। यदि दूसरी बार ऐसी बात हमारे सामने कहेगा तो तुझे पूरा दंड मिलेगा।'

शेख बुखारी[2] को जो पिता की सेवा में मीर बख्शी था, खिलअत, जड़ाऊ तलवार तथा जड़ाऊ दावात देने की कृपा की। उसे उसी सेवाकार्य पर नियत रखा तथा उसका आदर बढ़ाने को उससे कहा कि हम तुम्हें तलवार तथा लेखनी दोनों का स्वामी[3] समझते हैं। मुकीमखाँ को, जिसे पिता ने वजीरखाँ की पदवी दी थी, वजीर नियुक्त कर उसी पदवी से सम्मानित किया। ख्वाजगी फतहुल्ला[4] को खिलअत देकर बख्शी नियत किया। अब्दुर्रज्जाक मामूरी बिना कारण हमारे यहाँ से भागकर पिता के पास चला गया था और पिता ने उसे बख्शी नियत किया था (उसी पद पर रहने दिया)। अमीनुद्दीन हमारी शाहजादगी के समय हमारा बख्शी था पर बिना हमसे छुट्टी लिए आगरे से भागकर हमारे पिता के पास चला गया था परन्तु हमने उसके इस दोष का विचार न कर जो सेवा[5] पिता ने उसे दिया था उस पर उसे पहले के

---

१. आर. बी. में हाथी, हथसाल का उल्लेख नहीं है।

२. शेख फरीद बुखारी। देखिए मुगल दरबार भा० ४ पृ० ५२-६१।

३. साहिबुस्सैफ वल्कलम।

४. मुगल दरबार भा० ४ पृ० ३५-७ देखिए।

५. आतिशबेगी का पद। अन्य पाठ यातिशबेगी भी मिलता है। इसका नाम अन्य प्रति में अमीनुद्दौला भी दिया है पर यही नाम ठीक है।

समान नियत कर दिया। हमारे पिता के समय के जो सेवक थे उन सब को, चाहे वे अंतःपुर के या बाहर के थे, पहले के समान नियत रहने दिया और हर एक का पद तथा मान बढ़ाया।

अब्दुस्समद खाँ मुसव्विर का पुत्र शरीफ खाँ[1] था, जो बचपन से हमारे साथ बड़ा हुआ था और जिसे अपनी शाहजादगी के समय खाँ की पदवी दी थी। उसकी सेवा हमारे संबंध में इस सीमातक पहुँच गई थी कि हम उसे भाई, पुत्र, मित्र तथा दरबारी सब मानते थे प्रत्युत् अपने अंगों में से एक अंग समझते थे। बुद्धि, दूरदर्शिता तथा कर्मठता में बादशाही सेना में उसके समान कोई नहीं था। हमने उसे अपना वकीले-आजम नियत कर अमीरुल्उमरा की पदवी दी। यद्यपि खुदा की सौगंध हमनें बहुत सोचा कि इसके योग्य तथा इसकी स्थिति के अनुकूल कोई पदवी हो पर एक भी नहीं मिली। हमारे पिता ने बड़े से बड़े सरदार को पाँच हजारी से अधिक मंसब नहीं दिया था क्योंकि जिसके

---

१. ख्वाजा अब्दुस्समद शीरीं-कलम शीराज से आकर हुमायूँ का कृपापात्र हो गया। यह चित्रकला तथा सुलिपि-लेखन में प्रसिद्ध था। महम्मद शरीफ सन् १५९०ई. में काबुल से अकबर के साथ लौटते समय एक लुच्चे का लुचपन में साथ देने के कारण दंडित हुआ था। जब जहाँगीर विद्रोह कर इलाहाबाद चला गया तब अकबर ने महम्मद शरीफ को उसका सहपाठी समझकर उसके पास समझाने को भेजा पर इसने जहाँगीर को पिता के विरुद्ध भड़काया और उसका वकील बन गया। जब जहाँगीर पिता के पास चला गया तब यह पहाड़ों में भाग-कर छिपा रहा। जहाँगीर की राजगद्दी के पंद्रह दिन अनंतर दरबार पहुँचा। इसका इतना सम्मान हुआ कि यह घमंडी हो गया, जिससे अन्य सर्दारों से नहीं पटती थी। यह दक्षिण में बहुत दिनों रहा। यह कवि भी था।

पास सेना अधिक हो जाती उसका सिर फिर जाता और वह अपने स्वामी से दूर हो जाता। शैतान ऐसे कम हैं कि उसको कुसम्मति न देते तथा कान में विद्रोह न भरते। इसी कारण पिता ने ऐसा नियम बना रखा था। तिस पर भी शरीफ खाँ के लिए मैंने बहुत सोचा कि पाँच हजारी मंसब कम है। यद्यपि जो कुछ मेरा है मानों वह सब उसके आगे है और मंसब भी उसे जितना हो सकता था देता, परन्तु उसने स्वयं दो बार प्रार्थना की कि मुझसे आपकी एक भी ऐसी सेवा नहीं हो सकी है कि पाँच हजारी मंसब भी आप से लूँ। इस पर उसकी प्रार्थना के अनुसार यही मंसब उसको दिया। जिस समय मैं इलाहाबाद से कूच कर अपने पिता के पास आया उस समय जिन सर्दारों पर हमारा निजी विश्वास था उसमें यही था। जलूस के पंद्रह दिन अनंतर चौथी[1] को आकर जब सेवा में उपस्थित हुआ उस दिन उसका आना मानो ईश्वर का मुझे नया जीवन देना था और उस समय मैंने जाना कि मैं वास्तव में बादशाह हुआ। यह भी मैंने समझा कि जब तक वह मेरी सेवा में है, चाहे मैं अपनी भलाई न देखूं तब भी कोई हानि नहीं है क्योंकि वह मेरे रक्षक के स्थान पर है। यद्यपि ईश्वर हर एक की रक्षा करता है पर तब भी बादशाहों को अपनी रक्षा का प्रबंध रखना बहुत बहुत उचित है। अमीरुल्उमरा की सेवा मेरे संबंध में उच्च कोटि की थी। जिस समय उसको बंगाल के शासन पर भेजा तब उस प्रांत का कुल प्रबंध उसके अधिकार में दे दिया। उस समय उसे डंका, झंडा तथा दो हजारी मंसब दे चुका था। इसलिए उच्च मंसब पाँच

---

१. चौथी रज्जब। इससे पंद्रह दिन पहले २० जमादिउस्सानी पड़ती है, जो जहाँगीर की राजगद्दी की तिथि है। आरंभ में जो २० जमादिउल् अव्वल या ८ जमादिउस्सानी दिया है उसके अशुद्ध होने का यह अंश समर्थन करता है।

हजारी कर दिया। अमीरुल् उमरा के पूर्वज शीराज के निवासी थे। इसका दादा ख्वाजा निजामुल्मुल्क शीराज के शाह शुजाअ का मंत्री था। इसका पिता (अब्दुस्समद) फिर्दौस मकानी हुमायूँ बादशाह के साथ बैठने वाला, दरबारी तथा सत्संगी था और पिता की सेवा में उसने बहुत सम्मान तथा पद प्राप्त कर लिया था। माता की ओर से भी यह अच्छा आदमी है। इनका वृत्तांत जफर नामा तथा मतलउस्सादैन में विस्तार से लिखा हुआ है।[1]

बंगाल प्रांत के शासन पर हमने महीने[2] से राजा मानसिंह को नियत किया। यद्यपि उसे ऐसी कृपा की हमसे आशा भी न रही होगी क्योंकि उससे कुछ ऐसे ही कार्य हो चुके थे पर हमने उसे खिलअत, जड़ाऊ म्यारकब (बिना बाहों का अबा) तथा कोहपारः (पर्वत का टुकड़ा) नामक घोड़ा पुरस्कार में दिया, जो हमारे बहुमूल्य घुड़साल का सिरमौर था। इसके पिता का नाम राजा भगवानदास था और दादा राजा भारमल था। यह सत्यता, शील तथा साहस में अपनी जाति में प्रतिष्ठित था। हमारे पिता ने इसका सम्मान बढ़ाने को इसकी पुत्री[3] अपने महल में लेली और भगवानदास की पुत्री[4] का संबंध

---

१. मआसिरुल्उमरा, फारसी भाग २ पृ० ६२५-२९ पर शरीफखां का पूरा वृत्तांत दिया हुआ है।

२. मूल प्रति में महीने का नाम नहीं दिया है।

३. आमेर नरेश राजा भारमल की पुत्री का विवाह अकबर से सन् १५६२ ई० में हुआ था और इसी के गर्भ से सन् १५६९ ई० में जहाँगीर का जन्म सीकरी में हुआ था।

४. आमेर-नरेश राजा भगवानदास की पुत्री मानमती या मानबाई का विवाह सलीम के साथ १५८५ ई० में हुआ। २६ अप्रैल सन् १५८६ को सुल्तानुन्निसा बेगम का और ६ अगस्त सन् १५८७ ई० को

हमसे किया। इसीसे भाग्यवान पुत्र खुसरू हुआ, जो हमारा पहला पुत्र है। खुसरू की सगी बहन उससे एक वर्ष बड़ी है। उस समय मैं सत्रह वर्ष का था और अब वह बीस वर्ष की है। आशा है कि ईश्वर उसे एक सौ बीस वर्ष की अवस्था दे। इसलिए कि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ, ईश्वर भी उससे प्रसन्न रहेगा। आज तक सिवा सेवा तथा शालीनता के उससे कोई अयोग्य कार्य नहीं हुआ, जिसके लिए ईश्वर को धन्यवाद है। सिवा इसके कि यौवनावस्था में बच्चों तथा लड़कों को एक प्रकार की जो अहंता होती है, वैसा कुछ घमंड था परंतु वह इस कारण कि ईश्वर ने उसे हमारे वंश में पैदा किया था और ऐसा ऐश्वर्य दिया था।[1]

खुसरू के अनंतर सईद खाँ काशगरी की पुत्री[2] से, जो काशगर के सुल्तान सारंद का पुत्र था, एक लड़की हुई जिसका नाम इफ्फत बानू बेगम रखा। वह तीन वर्ष की अवस्था में मर गई। इसके उपरांत

खुसरो का जन्म हुआ। सन् १६०४ ई० में अपने पुत्र के पिता के विरुद्ध विद्रोह करने से इसका उन्माद रोग इतना बढ़ गया कि इसने आत्म-हत्या कर ली।

१. यह साठ वर्ष की अवस्था पाकर मरी और सिकंदरा में गाड़ी गई। इसने इलाहाबाद के खुसरो बाग में भाई के मकबरे के पास अपने लिए मकबरा बनवाया था पर वह खाली पड़ा है।

२. आर० बी० में इन विवाहों का पर्वेज की माँ से उल्लेख आरंभ होता है। सन् १५८६ ई० में सलीम के तीन निकाह हुए। प्रथम जोधपुर-नरेश उदयसिंह उपनाम मोटा राजा की पुत्री जगत गोसाइन उपनाम जोधाबाई से, द्वितीय बीकानेर के राय रायसिंह की पुत्री से और तृतीय सईद खाँ काशगरी की पुत्री से हुआ था।

जैनखाँ कोका की रिश्तेदार साहब जमाल[1] से काबुल में एक पुत्र हुआ, जिसका नाम हमारे पिता ने पर्वेज रखा। ईश्वर की कृपा से वह पूर्ण अवस्था को पहुँचे। हमको बहुत मानता है और हमारी सेवा में बहुत तत्पर तथा सतर्क रहता है। पहली सेवा जो मैंने उसे सौंपी वह काफिर के विरुद्ध थी अर्थात् उसे राणा पर भेजा।[2] साढ़े चार महीने हुए कि वह गया है। हमारे जो सर्दार उसकी सेवा में नियत हुए हैं वे सब उसके सलूक से प्रसन्न हैं व धन्यवाद दे रहे हैं। इस समय भी लगभग दस सहस्र अहदी पर्वेज के साथ हैं। इसके अनंतर दरिया कौम की पुत्री से, जो बड़े राजाओं में से है और पर्वत की तराई में रहता है, सात महीने की पुत्री हुई जो मर गई। इसका नाम दौलतुन्निसा बेगम रखा गया। इसके उपरांत करमेती[3] से, जो राणा सूर के वंश से है, एक पुत्री हुई जिसका नाम बहारबानू बेगम रखा पर दो महीने की होकर वह मर गई।

---

१. जैन खाँ कोका अकबर का धायभाई था। इसीके चाचा ख्वाजा हसन की पुत्री साहब जमाल से सन् १५८८ ई० में सलीम का विवाह हुआ। २ अक्तूबर सन् १५८९ ई० को पर्वेज तथा सन् १६०५ ई० में जहाँदार दो पुत्र इससे हुए।

२. एक मुगल सम्राट् उदयपुराधीश महाराणा अमर सिंह के संबंध में इस प्रकार अपना भाव तथा अपनी धर्मांधता प्रगट कर रहा है। इस में भूतकालीन बात कही गई है पर आ० बी० भा० १ पृ० १६–१७ पर भेजने का विवरण दिया गया है और उसके साथ गई हुई सेना तथा सर्दारों का उल्लेख है।

३. राजा केशोदास राठौड़ की पुत्री करमसी उपनाम करमेती से बहार बानू बेगम का जन्म २३ शहरिवार सन् ९९८ हि० (सन् १५८९ ई०) को हुआ था।

इसके अनंतर जगत गुसाइन[1] से, जो राजा उदयसिंह की पुत्री थी जिसके पास अस्सी सहस्र अश्वारोही सेना थी और जिससे बढ़कर हिंदुस्थान में कोई राजा नहीं था, एक पुत्री हुई। इसका नाम वेगम सुलतान रखा गया पर तीन वर्ष की होकर वह मर गई। इसके बाद राजा केशो की पुत्री[2] साहिब जमाल से एक लड़की हुई जो सात दिन जीवित रही। इसके अनंतर मोटा राजा की पुत्री से खुर्रम हुआ[3] जो बहुत बहुत गुणों से सुसंपन्न है। इसलिए आशा करता हूँ कि ईश्वर की इच्छा से उसमें पूर्ण उन्नति होती रहे। इन्हीं सब गुणों के कारण हमारे पिता सब लड़कों में उसे ही अच्छा समझते थे, उससे बहुत बहुत प्रसन्न रहते थे और सर्वदा मुझसे उसके पक्ष में कहते थे कि तुम्हारे किसी लड़के में इसके ऐसे गुण नहीं हैं।[3] तात्पर्य यह कि वह छोटा था इसलिए हमारे पिता को वह प्रिय था। वास्तव मे हम लोगों की दृष्टि में भी वह वैसा ही है।

---

१. यह इतिहास में जोधा बाई के नाम से प्रसिद्ध है। प्रथम संतान सन् १५८८ ई० में हुई थी।

२. जैनखां कोका की भतीजी का नाम साहिब जमाल था और राजा केशो दास की पुत्री का नाम करमेती था। संभव है कि इसी करमेती को बाद में यह पदवी दी गई हो।

३. खुर्रम अर्थात् शाहजहाँ का जन्म १ रबीउल् अव्वल सन् १००० हि०, ५ जनवरी सन् १५९२ ई० (सं०१६४८वि०) बृहस्पति वार को हुआ था।

इसके अनंतर कश्मीर के शासक की लड़की से, जो चक है, एक वर्ष की पुत्री हुई और अच्छी हुई।[1] इसके उपरान्त कामराँ मिर्जा के दौहित्रों में से एक इब्राहीम हुसेन मिर्जा की पुत्री निसा वेगम[2] से आठ महीने पर एक पुत्री हुई। इस कारण कि आठवें महीने की संतति कम जीवित रहती है वह भी उसी दिन मर गई। इसके उपरान्त पर्वेज की माता साहब जमाल से एक और लड़की हुई जो पाँचवें महीने में मर गई।[3] इसके अनंतर खुर्रम की माता जगत गोसाइन से एक पुत्री और हुई, जिसका नाम निशा वेगम था पर यह पाँच वर्ष की होकर मर गई। इसके उपरान्त साहब जमाल से एक पुत्र राजगद्दी के समय उत्पन्न हुआ, जिसका नाम जहाँदार रखा। खुर्रम के बाद एक और पुत्र हुआ।[4]

---

१. छोटे तिब्बत के, जो कश्मीर के अंतर्गत है, अलीराय चक की पुत्री से सन् १५९१ ई० में सलीम का निकाह हुआ, जिसे उस प्रांत से राजदूत मिर्जा वेग काबुली लिवा लाया था। इसकी सन्तान पुत्री एक वर्ष की होकर मर गई। मूल प्रति के पाठ में कुछ भ्रम है।

२. कामराँ मिर्जा के दौहित्र इब्राहीम हुसेन मिर्जा तथा गुलरुख वेगम की पुत्री नूरुन्निसा वेगम से सलीम का निकाह हुआ था और नूरुन्निसा के भाई मुजफ्फर हुसेन को जहाँगीर की वहिन व्याही थी।

३. जैन खाँ कोका की भतीजी साहिब जमाल से यह पुत्री हुई जो पाँचवें महीने में मर गई। इसके अनंतर सन् १६०५ ई० में इसी से एक पुत्र हुआ, जिसका जहाँदार नाम रखा गया था।

४. जगत गोसाइन की पुत्री का नाम इस प्रति में निसा वेगम तथा अन्य में लज्जतुन्निसा वेगम दिया है। शहरयार का जन्म भी सन् १६०५ ई० में हुआ था। इसीका निकाह नूरजहाँ वेगम की प्रथम पति शेर अफगन से उत्पन्न पुत्री लाडली वेगम से हुआ, जो जहाँगीर की मृत्यु पर राज्याधिकार की लड़ाई में मारा गया।

इसका नाम शहरयार रखा। ये दोनों एक ही महीने में पैदा हुए थे।[१]

इस प्रकार के संबंधों के कारण मानसिंह शक्तिमान होगए और पिता के राज्यकाल में पूर्ण दृढ़ता प्राप्त कर ली। वह हर छ महीने अपनी जागीर में रहते थे और छ महीने हमारे पिता की सेवा में उपस्थित रहते थे। जब वह आते तब ऐसा कम होता था कि पचास लाख रुपयों से कम भेंट देते। मानसिंह ने अपने पितामह से इतनी अधिक उन्नति तथा ऐश्वर्य बढ़ा लिया था कि हिंदुस्थान के राजाओं में कोई भी उसकी योग्यता तथा वैभव को नहीं पहुँचता था।[२]

दूसरा प्रार्थनापत्र सईद खाँ का आया जिसमें मिर्जा जानी बेग के पुत्र मिर्जा गाज़ी बेग की सिफारिश की गई थी कि उसे उसी दिन बिदाई मिलनी चाहिए जिस में वह मेरे साथ चला जाय क्योंकि उसे मैंने पुत्र बनाया है। हमने उसे उत्तर दिया कि हमारे पिता ने उससे संबंध करने का अर्थात् उसकी बहिन से हमारे पुत्र खुसरो का विवाह करना निश्चय किया है इसलिए वह संबंध हो जाने पर विदा किया जायगा।[३] मिर्जा जानी बेग मिर्जा मुहम्मद पायंदः का पुत्र था

१. जहाँगीर ने अपनी स्त्रियों तथा संतानों की पूरी सूची नहीं दिया है।

२. इसके अनंतर आर० बी० भा० १ पृ० १७–१८ पर राणा सगर माधोसिंह, रुक्नुद्दीन आदि कई सर्दारों का विवरण है पर इस प्रति में नहीं है।

३. आर० बी० भा० १ पृ० २० पर गाजी बेग के संबंध में इतना ही लिखा है, इसके बाद का अंश नहीं है। मुगल दरबार भा० ३ पृ० २३०–३ पर इसकी जीवनी दी है और इसी भाग के पृ० २८५–९१ पर जानी बेग तथा पृ० ५०६–८ पर ईसा तरखान की जीवनियाँ दी गई हैं।

ौर वह मिर्जा अब्दुल् अली तर्खान के पुत्र मिर्जा ईसा के पुत्र मिर्ज़ा ाकी का पुत्र था। अब्दुल् अली सुलतान अहमद मिर्जा के समय बुखारा ा शासक था और शाही खाँ ने, जो उजबकों का बादशाह था, अपने ोगों के साथ बहुत दिनों तक उसकी नौकरी की थी। यह शंकल बेग र्खान के वंश से था। जब इसका पिता अतकू तैमूर तक़तमिश खाँ के साथ ुद्ध करने में मारा गया तब इस कारण साहिबक़िराँ तैमूरलंग ने इसे छोटी अवस्था ही में तर्खान बना दिया। ये अर्गून खाँ के वंश से हैं इसलिए नको तर्खान तथा अर्गून दोनों कहते हैं।

मखसूस खाँ के पुत्र मक़सूद ने अपने भतीजे के मंसब के संबंध में ार्थनापत्र दिया था इसलिए मैंने उत्तर दिया कि जब उसका पिता ही ससे अप्रसन्न है तब वह कैसे ईश्वरीय कृपा तथा बादशाही दया के ोग्य है। कई धार्मिक पुरुषों से मैंने कहा कि खुदा के नामों की सूची यार करें जिनका मिलना सुगम है। उन लोगों ने पाँच सौ बाईस नामों ी, जिनकी आधी संख्या मेरे पिता अकबर बादशाह की नाममाला में ी, अबजद के अक्षरों के अनुक्रम से सूची प्रस्तुत की और मेरे पास ले ाए[१]। मैंने उन नामों को जपना अपना नित्य कर्म बना रखा है। प्रत्येक ुक्रवार की रात्रि को विद्वानों, योग्यों तथा सभी धार्मिक व्यक्तियों का त्संग रखता हूँ।[१] बादशाह होने के एक साल पहले मैंने निश्चय कर लेया था कि शुक्रवार की रात्रि में किसी भी कारण से तनिक मदिरा पिऊँगा और ईश्वर से आशा करता हूँ कि बचे हुए जीवन भर मुझे स निश्चय में दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करे। उसी ईश्वर की कृपा अब तक ऐसा हो रहा है और बची हुई अवस्था भर ऐसी ही कृपा नी रहे।

---

१. आर. बी. भा० १ पृ० २१ पर शब्दमाला तथा सत्संग का ल्लेख है।

अपने पास वालों से हमने कह दिया था कि जो कोई अपने यो
वेतन न पाता हो और जिस किसी की वास्तविक स्थिति तथा अवस्
का वृत्तांत हम तक न पहुँचा हो वह उसे हमसे कहे जिससे उसव
उन्नति होवे। दूसरी आज्ञा यह भी दे रखी थी कि जब तक हमारे पि
अकबर बादशाह का उर्स[1] तथा चिल्ला[2] न बीत जाय तब तक सूफि
का खाना, जिससे तात्पर्य बिना माँस के भोजन से है, खावें और विवा
के अवसर जो गाना बजाना आदि होता है वह साम्राज्य में (उत्त
भारत में) न करें। इसी बीच हमने सुना कि हकीम अली अपने पु
का विवाह कर रहा है। हमने मुम्मद तकी को उसके पास भेजा कि
उससे जाकर कहे कि तेरी हकीमी से हमारे पिता को लाभ नहीं पहुँच
इसलिए सभी सेवकों से बढ़ कर तुझे शोक व लज्जा कर दुखी होन
चाहिए था। पुत्र के विवाह तथा महफिल का यह कौन सा अवस
है। *जिस समय महम्मद तकी वहाँ पहुँचा, बाजे बज रहे थे और* काज
उपस्थित रह कर निकाह बाँधने का प्रबंध कर रहा था। जब हकीम
यह बात सुनी तब उस मजलिस को तुरंत अस्त व्यस्त करके वह पश्चा
त्ताप करने लगा।

कुलीज खाँ[3] को, जो गुजरात का शासक नियत हुआ था, ए
लाख रुपए तथा अच्छा खिलअत दिया। यह बलख का निवासी तथ

---

१. उर्स—मरण दिवस पर होने वाला भोज, फातिहा।

२. चिल्ला—चालीसवें दिन का शोक।

३. कुलीजखाँ बलख के अंतर्गत फर्गानः प्रांत के सैहून नदी तटस्
अंदजान नगर का निवासी था इसलिए अंदजानी कहलाता था
यह जानी कुरबानी जाति का था जैसा मआसिरुल् उमरा हिन्दी भा
३ पृ० ९२ पर तथा बदायूनी भाग ३ पृ० १८८ पर लिखा है। प्रति
लिपिकार की असावधानी से बिंदियों की कमी से इस प्रति में जा

ानफर्मानी जाति का था। मुहम्मद रज़ा (सब्जवारी) को आठ हस्र[1] रुपए देकर दिल्ली भेजा कि वहाँ के पवित्र रौजों के साधुओं था दीनों को बाँट देवे। मिर्जा जान[2] बेग को उसका स्वत्व समझकर ़त्तरी भारत का मंत्रित्व दिया क्योंकि अपनी शाहजादगी की अवस्था ं उसे वज़ीरुल्मुमालिक (प्रांतों का मंत्री) की पदवी दे दी थी। इसका मंसब पाँच सदी था इससे हजारी बना दिया।[3] शेख फरीद ुखारी चार हजारी मंसबदार था उसे पाँच हजारी मंसब देकर म्मानित किया तथा डंका, झंडा और जड़ाऊ कमरबंद दिया।[4] यह ोख जलाल के वंश का था, जो शेख बहाउद्दीन जिकिरिया मुलतानी ा पुत्र था। शेख फरीद के चौथे पूर्वज सैयद अब्दुल् गफ्फार ने ्रपने पुत्रों को वसीअत किया था कि वे कभी 'मददे मआश' न ग्रहण ़रेंगे और सैनिक वृत्ति स्वीकार कर अपना कालयापन करेंगे। ये ुखारी सैयद कहलाते थे। रामदास (कछवाहा) दो हजारी मंसबदार ा और उसे तीन हजारी मंसब देकर सम्मानित किया। कधार के शासक

़र्मानी हो गया है। इसने प्रायः तीस वर्ष अकबर की सेवा की थी और ़ई उच्च पदों पर रहा। विशेष के लिए देखिए मुगल दरबार हिंदी भाग १ पृ० ९२-७। कुलीजखाँ का उल्लेख आर. बी. भा० १ पृ० २१ पर है।

१. आर. बी. में बीस सहस्त्र लिखा है।

२. आर. बी. भा० १ पृ० २० पर खान बेग है पर टिप्पणी में जान बेग ठीक बतलाया गया है।

३. आर. बी. भा० १ पृ० २० पर लिखा है कि वजारत दो भाग कर के आधा जान बेग को और आधा वजीर खाँ मुकीम को दिया था। तात्पर्य इसका यह है कि दोनों संयुक्त वजीर नियत हुए थे।

४. आर. बी. भा० १ पृ० २० पर शेख फरीद के संबंध में इतना दिया है, आगे का वृत्त नहीं है।

मिर्जा सुलतान हुसैन के पुत्र मिर्जा रुस्तम[1], वैरमखाँ फजिलबाश के पु
अब्दुर्रहीम खाँ खानखानाँ और उसके पुत्रों एरिज व दाराब तथा शे
ख्वाजा[2], जो मिर्जा अली बेग अकबर शाही के वंश का था, ये सभ
अच्छी अवस्था में थे और प्रत्येक को खिलअत, जड़ाऊ कमरबंद तथ
जड़ाऊ जीन सहित घोड़ा भेजा। अब्दुर्रहमान बेग का पुत्र बर्खुरदार
बिना बुलाए हुए अपना स्थान छोड़कर दरबार चला आया थ
इसलिए उस पर कृपा नहीं किया और आज्ञा दी कि वह अपने स्था
को लौट जाय क्योंकि स्वामी के आज्ञानुसार काम करना ही आदेश
पालन का चिह्न है, सेवा-कार्य का उत्साह प्रगट करना या चापलूस
करना नहीं है। और भी—शैर का अर्थ—

बादशाह के दरबार में बिना बुलाए जाना राजनियम से दूर है।
नहीं तो शौक के पाँव को द्वार या दीवाल नहीं रोकते॥

लालः बेग काबुली को, जिसे शाहजादगी के समय बाजबहादु
की पदवी मिली थी और जो हमारे राजगद्दी पर बैठने के एक मही
बाद सेवा में आया था, डेढ़ हजारी मंसब से चार हजारी मंस
देकर सम्मानित किया और बिहार जी प्रांत को भेज दिया
इसी के साथ उसे बीस सहस्र[4] रुपए दिए और आज्ञा दी

---

१. आर. बी. भा० १ पृ० २१ पर इसके दादा इस्माइल का
उल्लेख है।

२. आर. बी. भा० १ पृ० २१ पर इसका उल्लेख नहीं है, केव
'अन्य सर्दारों को जो दक्षिण के कार्य पर नियत थे' लिखा है।

३ आर. बी. में इसके दादा मुवैयद बेग का भी नाम दिया है

४. आर. बी. भा० १ पृ० २१ पर दो सहस्र लिखा है और प्रा
दंड तक देने का उल्लेख नहीं है।

बिहारकी प्रांत के छोटे या बड़े मंसबदारों में से जो कोई भी उसकी आज्ञा न माने उसे प्राण-दंड देने का अधिकार होगा। उसकी जागीर भी इन सब से बढ़कर नियत की गई क्योंकि बाज बहादुर हमारे खास: खेलों में से था। इसके पिता का नाम निजाम किताबदार था, जो मेरे पितृव्य के महफिल का चिरागची था। मुहम्मद हकीम मिर्जा के एक अन्य सेवक को, जो पाँच सदी मंसबदार था, एक हजारी बना दिया।[१]

केशवदास[२] को जो मेड़ता प्रांत के राजपूतों में से था और जो अपने बराबर वालों से राजभक्ति में आगे बढ़ गया था, आठ सदी से डेढ़ हजारी मसब बढ़ाकर सम्मानित किया। मीरान सदरुद्दीन जहाँ[३] हजारी मंसबदार था, उसे चार हजारी मंसब प्रदान किया। यह हमारे पिता के पुराने सेवकों में से है और इसका मंसब पहले तीन सदी का था। जिस समय हमें शेख अब्दुन्नबी चालीस हदोस का पाठ सिखलाता था, उस समय यह हमारी पाठशाला में उपस्थित रहता था। यह हमारा

१—आर. बी, भा० १ पृ० २१ पर इसका उल्लेख नहीं है और इसमें भी नाम नहीं है केवल 'मगफूरे' लिखा है।

२—आर. बी. भा. १ पृ. २१ पर इसके नाम के साथ 'मारू' पदवी रूप में दिया है जिसका अर्थ मरु देश का निवासी है।

३—यह लखनऊ के अंतर्गत पिहानी का निवासी था। यह विद्वान था और जहाँगीर ने इसे सदर नियत किया था। इसने मददे मआश लोगों में खूब बाँटा। इसने एक सौ बीस वर्ष की अवस्था पाई थी। इसकी मृत्यु सन् १६११ ई० में हुई थी अतः इसका जन्म १४९५ ई० के लगभग हुआ होगा। इसने बाबर, हुमायूँ, सूरी वंश के सुलतानों तथा अकबर सभी का समय देखा था।

खलीफा (आचार्य) था। हमारे पिता के यहाँ शेख अब्दुन्नबी[1] से बढ़कर, मखदूमुल्मुल्क को केवल छोड़कर, किसी की भी प्रतिष्ठा या पार्श्ववर्तिता नहीं थी। इसका नाम शेख अब्दुल्ला था और यह विद्या, बुद्धि तथा अभिव्यंजना-शक्ति में अद्वितीय था। यह वृद्ध पुरुष था और सलीमखाँ तथा शेर खाँ अफगान के समय भी इसका अच्छा सम्मान था। यह ज्योतिष का अद्वितीय विद्वान था परन्तु इसका भाग्य-नक्षत्र हमारे पिता के पास नहीं चमका। अंत में इसने किनारा खींचा। हकीम हुमाम[2] को राजदूत नियत कर और मीरान सदरजहाँ को अब्दुल्ला खाँ के पिता की मृत्यु का शोक मनाने को मावरुन्नहर भेजा और जब वे तीन साल बाद वहाँ से लौट आए तब पिता ने सदरजहाँ को सैनिक बना दिया और कई बार में उसका मंसब दो हजारी कर दिया तथा उत्तरी भारत का उसे सदर नियत कर दिया। मीरान सदरजहाँने हमारी हित-कामना में बहुत बहुत प्रयत्न किया था और जो कुछ उत्साह तथा हितेच्छा का सामान है वह सब उसमें था एवं है। एक प्रकार खलीफा-पन का जो संबंध हमारे उसके बीच में था उसके कारण हमारे बचपन से उसके हृदय में हमारे प्रति स्नेह उत्पन्न हो गया था और स्वामिभक्ति के जो कुछ नियम थे उसने सब पूरे किए। हमने अपनी शाहजादगी के समय मीरान से प्रतिज्ञा की थी कि तुमको ऋणदातागण बहुत कष्ट पहुँ-

१—शेख अब्दुन्नबी तथा मखदूमुल्मुल्क का आरंभ में अकबर के यहाँ बहुत मान था पर सन् १५७९ ई० के बाद कट्टरता के कारण ये दृष्टि से गिर गये तथा दोनों मक्का भेज दिए गए।

२—जहाँगीरनामा में हकीम हुमाँ लिखा है पर वास्तव में इसका नाम हुमाम ही है। मआसिरुल् उमरा या मुगल दरबार में भाग ४ पृ० ३४२-४ पर मीरान सदर जहाँ की जीवनी में यह सब हाल इसी पुस्तक से लिया हुआ दिया गया है।

ाते हैं पर जब हमें ईश्वर बादशाह बनावेंगे तब जो मंसब माँगोगे वही ुम्हें दूँगा या जो कुछ ऋण रहेगा उसे चुका देंगे। जब ईश्वर ने हमें ारे हिन्दुस्तान का बादशाह बना दिया तब हम उन दो में से जो वह ाँगे पूरा करने को तैयार हुए। उसने प्रार्थना की कि मेरी यही च्छा है कि मुझे चार हजारी बना दें और जब यह मंसब मुझे मिल ायगा तो उसी से सब ऋण चुका दूँगा। इसलिए उसकी इच्छानुसार उसे चार हजारी बना दिया[1]।

मिर्जा गियास बेग हमारे बयूतात का दीवान था और उसे आठ दी का मंसब मिला था। इसको वजीर खाँ के स्थान पर दीवान का द तथा एतमादुद्दौला की पदवी और तीन हजारी मंसब, डंका तथा ंडा देकर सम्मानित किया[2]। रायरायान राजा विक्रमाजीत[3] को मीर ातिश के पद पर नियुक्त कर उसे आज्ञा दी कि साम्राज्य के चारों

१—आर. बी. भा. १ पृ० २२ पर इस प्रति की कुछ बातें छोड़ ी गई हैं। मि० प्राइस ने इसके बाद प्रायः ढाई पृष्ठ अनर्गल बातें लिख ाली हैं, जिनका वास्तविक जहाँगीरनामा में उल्लेख तक नहीं है।

२—मआसिरुल् उमरा में लिखा है कि गियास बेग को एक हजारी ंसब तथा बयूतात की दीवानी अकबर के समय मिल चुकी थी और हाँगीर ने राज्य के आरम्भ में एतमादुद्दौला की पदवी तथा मिर्जा जान ेग वजीरुलमुल्क के साथ संयुक्त दीवान का पद दिया था। यह नूरजहाँ ेगम का पिता था। (मुगल दरबार भाग २ पृ० ५४१)

३—मुगल दरबार भाग १ पृ० ३८०–२ पर इसकी जीवनी दी ै। यह प्रायः चालीस वर्ष अकबर की सेवा में व्यतीत कर चुका था। हाँगीर द्वारा मीर आतिश नियत होने तथा पंद्रह परगने दिए जाने ादि का इसमें भी उल्लेख है।

और जो तोप तथा तोपची हैं उनके सिवा राजधानी में पचास सहस्र तोपची और बीस सहस्र तोपें कुल सामान के साथ तथा कारखाने की इमारत सहित तैयार रखे। इन सब के लिए पंद्रह परगने नियत किए जहाँ तीस लाख रुपए प्रस्तुत थे और जिसे बारूद आदि संग्रह करने एवं तोपखाने की इमारत के निर्माण में व्यय करे। रायरायान को हमारे पिता ने एक बार दीवान नियत किया था और यह हमारे पिता के पुराने सेवकों में से है। यह वयोवृद्ध, अनुभवी और नीतिकुशल है तथा सैनिक गुणों में भी संसार में एक है। इसने सांसारिक अनुभव भी खूब प्राप्त किए थे और हमारे पिता के राज्यकाल में यह धन अर्जित कर ऐश्वर्यवान हो गया था। यहाँ तक कि अपने समान सर्दारों में कोई भी हिंदू उस सा वैभवशाली नहीं था। यह हथसाल के मीर पद से उन्नति कर वजीर हो गया और सर्दारों में सम्मानित हुआ[1]। हिंदुस्थान के बादशाहों की राजधानी दिल्ली का शासन इसे जागीर में दिया। सैयद कमान (गुमान या कमाल) का पिता अफगानों के साथ पेशावर में युद्ध करते हुए मारा गया। खान आजम के पुत्र मिर्जा खुर्रम को, जो दो हजारी था, तीन हजारी[2] मंसब देकर सम्मानित किया।

हिंदू स्त्रियों के जलाने के संबंध में, जो इस मत के आदमियों में (सती के नाम से) प्रचलित है, आज्ञा दी कि जो स्त्री सती होना न चाहे उसे न जलावें और जो स्त्री गर्भवती हो उसे विशेष रूप से सती न

१—ऐसा ज्ञात होता है कि इस हस्तलिखित प्रति में एक वाक्य छूट गया है जो सैयद कमाल से संबंधित है और जिसमें उसके उन्नति पाने का उल्लेख था। राजा विक्रमाजीत के दिल्ली के शासन पाने का उसकी जीवनी में उल्लेख नहीं मिलता। आर. बी. की प्रति से इस पर प्रकाश नहीं पड़ता प्रत्युत उसमें कमाल का उल्लेख ही नहीं है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० २३ पर ढाई सहस्र का मंसब लिखा है।

होने का आदेश दिया। अन्य के लिए जैसा इनके धर्म के अनुसार उचित हो वैसा करें। कोई एक दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप न करे। इस कारण कि ईश्वर ने हमको अपना साया बनाया है और ईश्वरीय कृपा सारी सृष्टि पर समान रूप से है, यह ईश्वरीय साया के लिए उचित है कि वैसा ही होवे। एक संसार का 'कतले आम' करना संभव नहीं है। हिंदुस्थान के छ भाग मनुष्यों में पाँच भाग हिंदू तथा मूर्ति-पूजक हैं। बहुत सा व्यापार, खेती, वस्त्र बुनना, कारीगरी तथा अन्य कार्य इन्हीं के हाथ में है। यदि चाहें कि सबको मुसलमान बना लें तो संभव नहीं कि वे मारे न जावें। यह कार्य कठिन है और अंत में ईश्वर उन्हें नर्क में दंड दे सकेगा। मुझे इनके मारने से क्या काम है[1]।

दूसरी यह आज्ञा दी कि जो कोई विश्वासपात्र सेवक अपने देश जाने की छुट्टी चाहे वह मीर बख्शी शेख फरीद के द्वारा प्रार्थनापत्र दे और तब उसे छुट्टी सुविधापूर्वक मिल जायगी[2]। हमारे पिता जब जागीर का फर्मान लिखवाते थे तो उसका चारो ओर का घेरा सिंदूर से और केवल मुहर सोने से बनवाते थे पर मैंने कुल सोने से बनने की आज्ञा दी[3]।

वजीर खाँ को कुल बंगाल का दीवान नियत कर उस ओर भेजा कि उस प्रांत की तहसील की नए सिरे से जाँच कर दरबार में उपस्थित

१—यह अंश आर. बी. के ग्रन्थ में नहीं है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० २३ पर इसके बदले में लिखा है कि 'जो भी अकबरी या जहाँगीरी सर्दार अपने जन्मस्थान को जागीर में लेना चाहता हो वह प्रार्थना करे तो उसे चंगेजी तोरा के अनुसार वह दे दिया जायगा और उसकी वह संपत्ति हो जायगी' परंतु यह ठीक नहीं है और न ऐसा किसी सर्दार को दिया गया।

३—आर. बी. ने यहाँ भी स्पष्ट नहीं किया है।

हो क्योंकि दस साल बीत गये थे और वहाँ की तहसील की जाँच नहीं हुई थी[१]। एतमादुद्दौला को वजीर के स्थान पर बिठा दिया[१]। बदख्शाँ के शासक मिर्जा शाहरुख के पुत्र मिर्जा सुल्तान बेग को, जो मिर्जा के अन्य पुत्रों से योग्यतर था तथा इस कारण कि हम उसे पुत्रवत् मानते थे, प्रथम बार होने से केवल एक हजारी मंसब प्रदान किया। साम्राज्य की तहसील का दफ्तर जो पिता के समय महाल में था, अमीरुल् उमरा को सौंपा। खाने आजम के पुत्र मिर्जा शम्सी[२] के न्याय माँगनेवालों का मामला बाजबहादुर[३] को सौंप दिया कि वह उसकी जाँच करे। राजा मानसिंह को केवल एक पुत्र भाव सिंह[४] बच रहा था। राजा मानसिंह को पंद्रह सौ महल थे और प्रत्येक से दो तीन संताने हुईं पर क्रमशः एक एक कर सभी मर गईं। केवल यही एक बच रहा था और इसमें वैसे

१—यह अंश आर. बी. में इस स्थान पर नहीं है, पृ० २२ पर है और वहाँ कुल आय उसी को देना लिखा है जो पूर्णतः अशुद्ध है।

२—खान आजम मिर्जा अजीज कोका का सबसे बड़ा पुत्र शम्सुद्दीन मिर्जा शम्सी को जहाँगीर कुली खाँ की पदवी मिली थी। जहाँगीर खाने आजम से चिढ़ा हुआ था क्योंकि उसने खुसरो का पक्ष किया था और इसी से मिर्जा शम्सी से रुष्ट था। अकबर के समय ही इसे दो हजारी मंसब मिल चुका था। (मु० द० भा० ३ पृ० २६८)

३—मालवा के सुलतान बाज बहादुर से यह भिन्न व्यक्ति ज्ञात होता है। यह लालः बेग बाज बहादुर हो सकता है।

४—इसका नाम भाऊ सिंह या भाव सिंह था पर इसे मिर्जाराजा बहादुर सिंह की पदवी मिली थी। अकबर ने इसे एक हजारी मंसब दिया था। इसके बड़े भाई जगत सिंह के पुत्र महा सिंह के रहते भी जहाँगीर ने इसे ही उक्त पदवी तथा चार हजारी मंसब देकर जयपुराधीश बना दिया। यह सन् १६२० ई० में मर गया।

गुण नहीं थे कि अपने पिता के बाद उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा कर सके। इसके पिता की प्रसन्नता के लिए इसको डेढ़ हजारी मंसब प्रदान किया। हमारे पिता के समय इसे एक हजारी मंसब मिला था।

जमाना बेग काबुली छोटी अवस्था ही से हमारी सेवा में रहता था और इसे अपनी शाहजादगी के समय पाँच सदी मंसब दे चुका था। इसे महाबत खाँ की पदवी, डेढ़ हजारी मंसब और शागिर्द पेशेवालों की बख्शीगिरी दी[1]। राजा बरसिंह देव को, जो अच्छे राजाओं में से था और पैदल सेना तथा वीरता में अपने बराबर वालों तथा संबंधियों में बहुत बढ़कर था एवं जिससे अच्छी सेवाएँ हो चुकी थीं, तीन हजारी मंसब प्रदान कर सम्मानित किया[2]। मीर जियाउद्दीन कजवीनी को

१—यह गयूर बेग काबुली का पुत्र था और जहाँगीर के अहदियों में पहले भर्ती हुआ था। जिस कार्य के पुरस्कार स्वरूप इसे जहाँगीर ने पदवी, पद तथा मंसब दिया था वह इस प्रकार है। जहाँगीर के एक सर्दार मुअज्जम खाँ फतहपुरी के वचन देने पर राजा उज्जैनिया सेना सहित उसके पास आया था पर उससे चिढ़कर जहाँगीर ने जमाना बेग को उसे मार डालने का संकेत किया और इसने रात्रि में उसके डेरे में जाकर उसे सोते हुए ही मार डाला। जहाँगीर के आदेश से राजा का पड़ाव लूट लिया गया। (मु० द० भा० ४ पृ० २४३-५)

२—आर. बी. भा. १ पृ० २४-५ पर इस कृपा का कारण इस प्रकार लिखा है 'हमारे पिता के जीवन के अंत समय शेख अबुल्फ़जल, जो हिन्दुस्तान के शेखजादों में बुद्धि तथा विद्या में बढ़कर था, बाहरी सचाई के रत्न से सुसज्जित होकर उसे पिता के हाथ बड़े मूल्य पर बेंचा था। वह दक्षिण से बुलाया गया था और हमारे प्रति उसके भाव सच्चे नहीं थे इस लिए एकांत में तथा सर्वसाधारण में वह हमारे विरुद्ध कहा करता था। उस समय हमारे पिता लोगों के कहने से

एक हजारी मंसबदार बना दिया। घोड़ों के दारोगा भीखनदास[1] को आज्ञा दी कि प्रतिदिन वह कुछ घोड़े दरबार में उपस्थित किया करे जिससे वे सैनिक वीरों को पुरस्कार में दिए जा सकें क्योंकि तवेलों में बहुत से घोड़ों के बँधे रहने से वे वृद्ध तथा लँगड़े हो जाते हैं और सहस्र दोष पैदा हो जाते हैं।

११ शाबान सन् १०१७ हि० (सन् १६०६ ई०) को बहराम मिर्जा के पौत्र रुस्तम मिर्जा की पुत्री का अपने पुत्र शाहजादा पर्वेज से विवाह कर दिया और डेढ़ करोड़ रुपया, जो एराक के डेढ़ लाख तूमान के बराबर होता है, दान मेहर नियत किया। इसके जशन में सर्दारों में से जो भी आदमी उपस्थित हुए थे उन सब को खिलअतें प्रदान किया। हिंदुस्तानी तौल से दस मन के लगभग ऊद तथा सुगंधित द्रव्य कस्तूरी व

हमारे बहुत विरुद्ध हो गए थे और यदि वह पिता के पास पहुँच जाता तो हम पिता से कभी न मिल पाते। इसलिए उसका पिता के पास पहुँचने न देना आवश्यक हो गया। वीर सिंह देव का राज्य उसके मार्ग में पड़ता था और वह विद्रोही भी था। हमने उसे कहला भेजा कि यदि वह उस उपद्रवी को रोक कर मार डाले तो हम उस पर सब प्रकार की कृपा करेंगे। ईश्वर की कृपा से जब वह उसके राज्य से चला तब इसने उसे रोक कर सेना अस्त व्यस्त कर दी और उसे मार डाला। उसका सिर काट कर उसने हमारे पास इलाहाबाद भेज दिया। यद्यपि इससे गत सम्राट् बहुत क्रुद्ध हुए पर अंत में इससे हम पिता के महल की देहली चूम सके और सम्राट् का क्रोध क्रमशः समाप्त हो गया।

१—यह नाम आर. बी. में नहीं दिया है। केवल घोड़ों का उल्लेख है और तीस घोड़े प्रति दिन उपस्थित करने का आदेश है।

अंबर इस जशन में खर्च हो गया, जो एराक का पचास मन होता है। अन्य वस्तुएँ भी इसी हिसाब से खर्च हुई होंगी। मोती की माला, जिसमें साठ दाने थे और हर एक दाने का मूल्य हमारे पिता ने दस दस सहस्र रुपए दिया था अर्थात् एराक के तीन तीन सौ तूमान हर एक का दाम था। इसका कुल मूल्य छ लाख रुपए था, जो एराक के अठारह सहस्र तूमान के बराबर था। जिस रात्रि में उस पुत्रवधू को महल में लिवा लाए उस समय यह माला उसे दिया। एक जोड़ा लाल भी, जो ढाई लाख रुपए का अर्थात् साढ़े सात सहस्र एराकी तूमान का था, उसे दिया[१]।

मिर्जा अली अकबरशाही[२] को चार हजारी मंसब देकर कश्मीर की सीमा पर भेजा और उसे बीस सहस्र रुपए पुरस्कार में दिये तथा जड़ाऊ जीन सहित घोड़ा, कमरबंद एवं जड़ाऊ तुर्रा कृपाकर प्रदान किया। रामसिंह को तीस सहस्र रुपए पुरस्कार में दिये और उसे अपने पिता के पवित्र रौज़ा के सरकार को सौंपा।[3] साथही आदेश दिया कि जो कोई बड़ा या छोटा सर्दार हमारी सेवा में आवे वह पहले हमारे पिता के पवित्र रौजे में जाकर कोर्निश तथा तस्लीम करे और तब हमारी कोर्निश से सम्मानित हो। हमारे पिता का पवित्र मकबरा आगरा से तीन कोस उस

---

१. यह अंश आर० बी में नहीं है। ज़ियाउद्दीन के बाद मिर्जाअली का वर्णन आरंभ हो गया है।

२. मुगल दरबार भा० २ पृ० २९६-७ पर इसकी जीवनी दीहुई है और नाम अलीबेग दिया है। इस में भी जहाँगीर की राजगद्दी के समय इसे कश्मीर भेजना लिखा है और इसके बाद अवध में जागीर मिलना बतलाया है। आर० बी० में कश्मीर का उल्लेख नहीं है और संभल जागीर में मिलना लिखा है

३. सिकंदरा में अकबर का मकबरा है।

ओर है[1]। एक दिन अमीरुल्उमरा ने एक बात हमसे निवेदन की, जो हमें बहुत पसंद आई।[2] हमने अमीरुल्उमरा को आदेश दिया कि हमारे सेवकों में से जब कोई किसी कार्यपर भेजा जावे तो उसको पहले कसौटी पर कस कर देखलें कि यदि वह कार्य उसके द्वारा हो सकता है, तभी उसे भेजें क्योंकि बड़े कार्य अयोग्य मनुष्यों से नहीं हो सकते और साधारण कार्यों पर अनुभवी मनुष्यों को भेजना मच्छर पर बाज़ छोड़ने के समान है। क्योंकि अच्छे सेवा-कार्य नासमझों द्वारा पूरे नहीं किये जा सकते और सहज कार्य भी आलसी अननुभवी मूर्ख के ध्यान न देने से पूरे नहीं पड़ते तथा शासन के कार्यों में से कितने कार्य रह जाते हैं। बादशाहों के पार्श्ववर्तियों के लिए साम्राज्य के कार्यों के संबंध में सुशासन, सुप्रबंध तथा सुसम्मति ही मुख्य ध्येय है न कि अपना स्वार्थ।

शैर के अर्थ

प्रत्येक दृष्टि जो डालते हैं।
जामे को शरीर के अनुसार सीते हैं॥
प्रत्येक गर्दभ को मसीहा का सामान नहीं खींचता।
प्रत्येक सिर राज्य के भेदों का ज्ञाता नहीं होता॥

---

१. आर०बी० में रामसिंह का तथा इस आदेश का उल्लेख नहीं है।

२. आर० बी० भाग १ पृ० २५–६ पर शरीफ खाँ की बात दी गई है, जो नीचे दी जाती है पर उसके बाद शैरों तक का अंश नहीं दिया गया है, जो जहाँगीर की उस पर निजी टिप्पणी है।

'ईमानदारी तथा बेईमानी नगद तथा सामान तक सीमित नहीं है। अपने परिचितों के वे गुण बतलाना जो उनमें नहीं हैं और अपरचितों के वास्तविक गुणों को छिपाना बेईमानी ही है। वास्तव में वक्तव्य की सचाई परिचितों तथा अपरचितों में भेद नहीं करना है और प्रत्येक मनुष्य को वह जैसा हो वैसा ही वर्णन करने में है।'

लाजवर्द का घेरे में केंद्र है ।
मनुष्य की प्रतिष्ठा मनुष्यत्व के समान है ॥
प्रत्येक प्राणी को गर्व करने का उत्साह नहीं होता ।
प्रत्येक पेट भेद नहीं पचा सकता ॥

११ शाबान सन् १०१६ हि०[1] को चिरंजीव पर्वेज को राणा[2] की चढ़ाई पर भेजा । हमने उसे एक लड़ाऊ तलवार, मस्त हाथी, खास घोड़ा जड़ाऊ जीन सहित, डंका, झंडा, तीन सहस्र तोप तथा दो सहस्र दो अस्पा सवार दिए और आदेश दिया कि यदि राणा स्वयं आवे या अपने बड़े पुत्र (पाटवी राजकुमार) को तुम्हारी सेवा में भेजे तो उससे युद्ध न कर उसके उपयुक्त उपहार दे और उसका देश उसे छोड़ कर क्षमा कर दे । इसके विरुद्ध यदि वह युद्ध करना निश्चय कर मैदान में आवे तो जितनी सेना की आवश्यकता होगी उतनी सहायतार्थ भेज दी जावेगी । जब पर्वेज उस सीमा पर पहुँचा उसी समय राणा ने अपने बड़े पुत्र को कई प्रसिद्ध हाथी तथा अच्छे रत्नों के साथ उसके पास मार्ग

---

१. सं० १६६५, सन् १६०८ ई० ।

२. महाराणा प्रताप की मृत्यु पर उनके बड़े पुत्र राणा अमरसिंह माघ शुक्ल ११ सं० १६५३ (२९ जनवरी सन् १५९७ ई०) को मेवाड़ की गद्दी पर बैठे । दो वर्ष बाद अकबर ने सुलतान सलीम तथा राजा मानसिंह को मेवाड़ पर भेजा परंतु सलीम अजमेर में ही आनंद करता रह गया । राजा मानसिंह ने शाही सेना को लेकर खूब युद्ध किया परंतु बंगाल के उपद्रव के कारण उन्हें वहाँ चला जाना पड़ा । इससे युद्ध बंद हो गया और विद्रोही सलीम इलाहाबाद चला गया । १६०३ ई० में अकबर ने सलीम को पुनः मेवाड़ पर भेजा पर वह फतहपुर सीकरी से आगे बढ़ा ही नहीं । इसके बाद अकबर की मृत्यु हो गई और तब सलीम ने अपने पुत्र पर्वेज को सेना सहित भेजा ।

ही में भेज दिया।[1] इसके साथ ही एक नम्रतापूर्ण प्रार्थनापत्र हमारे पास भेजकर स्वयं न उपस्थित होने के संबंध में निवेदन किया कि सर्वदा अकबर के समय भी अपने बड़े पुत्र को दरबार भेजता आया हूँ और स्वयं जंगल के एक कोने में कालयापन करता रहा हूँ। इसी पुरानी प्रथा के अनुसार अपने बड़े पुत्र[2] को सेवा में भेज दिया है। वह पुत्र आकर छ महीने तक हमारी सेवा में रहा और उसके अनंतर उसे तीन हजारी मंसब प्रदान कर सम्मानित किया तथा उसे उसके पिता के पास भेज दिया। किसी देश के लेने से तात्पर्य वहाँ के निवासियों तथा शासकों की अधीनता मात्र है इसलिए सेना को युद्ध करने की आज्ञा नहीं दी और खुदा के बंदों के रक्त को मूर्खता तथा अज्ञानता से नहीं गिराया।[3]

---

१. आसफ खाँ मिर्जा किवामुद्दीन जाफर बेग की अभिभावकता में बीस सहस्र सेना के साथ पर्वेज मेवाड़ पर भेजा गया। इनके साथ अन्य कई बड़े बड़े सर्दार भी गए। कई युद्ध हुए पर सुलतान खुसरो के विद्रोह के कारण आसफ खाँ दरबार बुला लिया गया। इसने जाने के पहले संधि कर ली और राणा अमर सिंह ने अपने छोटे पुत्र कुँअर बाघ को दरबार भेजा।

२. छोटे पुत्र कुँअर बाघ को भेजा था। बड़ा पुत्र कुँअर कर्ण शाहजादा खुर्रम की चढ़ाई पर दरबार आया था, जिसे पाँच हजारी मंसब मिला था।

३. आर. बी. भा. १ पृ० २६ पर जहाँगीर के ऐसे आदेश देने का कारण भी दिया है और इस प्रति में भी कुछ बातें विशेष हैं। दो कारण दिए गए हैं, जिनमें एक में मावरुन्नहर पर चढ़ाई करना अवसरानुकूल बतलाया है और दूसरा दक्षिण के युद्धों को समाप्त करना है। दोनों कारणों का इस प्रति में इसी के आगे वर्णन किया है।

समरकंद का, जो बाकी खाँ उजबेग के अधीन था, यह समाचार सुनने में आया कि उसका भाई वलीखाँ उसके स्थान पर बैठ गया। यह उसका पहला शासन था और वह ऐसा पुरुष भी नहीं था कि हमारा सामना कर सके इसलिए पुत्र पर्वेज को उस पर भेजने का विचार किया। ईश्वर की इच्छा से एक समय विचार था कि स्वयं मावरुन्नहर पर चढ़ाई करूँ। पहली बार दक्षिण का कार्य, जिसे हमारे पिता अधूरा कर छोड़ गए हैं, बीच में बचा हुआ है, इससे पहले दक्षिण जाने का विचार है। ईश्वरेच्छा से दक्षिण के कार्य को पहले एक ठीक मार्ग पर लाकर तब बदख्शाँ या बलख या समरकंद की ओर जाऊँगा। हमारे पिता की यह सदा इच्छा बनी रही कि अपने पैतृक देश पर अधिकार करलें परंतु एक लड़के के हाथ में हिंदुस्थान देश को खाली छोड़ कर जाना सेनापतित्व से दूर था इसलिए नहीं गया।

इसी के अनंतर हमने पर्वेज को राणा पर नियत कर उसका देश पर्वेज को दे दिया। आगरा प्रांत की जागीरदारी भी उसीके हाथ में रहने दिया, जिसमें वह पूर्ण रूप से निश्चिंत रहे। अब यदि ईश्वर जीवन देगा तो इसी जलूसी वर्ष में दक्षिण की ओर जाऊँगा। यदि राणा अपने दुर्भाग्य से सेवा से सिर हटा लेगा[1] तो इसी विशाल सेना के साथ, जो हमारी अनुगामिनी रहेगी, उसके सिर पर पहुँचकर जड़ मूल से उसे खोद डालूँगा। जिन सर्दारों पर पर्वेज के साथ बिदा करने के लिए अपनी कृपा दिखलाई थी उनमें प्रथम आसफखाँ था।[2] इसे

---

१. बड़े पुत्र पाटवी राजकुमार कर्ण को न भेजकर छोटे पुत्र को भेज देने से राणा पर शंका बनी हुई थी इसलिये यह उद्गार है। जहाँगीर अपने जीवन में न किसी चढ़ाई पर गया और न कोई युद्ध इसने किया। यह सब एक प्रकार की उसकी बहक भर है।

२. देखिए मुगल दरबार भाग २ पृ० ४१४-२०। आर. बी. भा. १

पाँच हजारी मंसब, जड़ाऊ कमरबंद तथा तलवार, मस्त हाथी और घोड़ा पुरस्कार दिया था। इसे ही पर्वेज का अभिभावक भी नियत किया था। आसफखाँ जाफरबेग इसका नाम है और यह कजवीन का निवासी है। इसका पिता बदीउज्जमाँ आका अमला[1] का पुत्र है, जो शाह तहमास्य के वजीरों में था। हमारे पिता ने इसको आसफखाँ की पदवी दी थी। यह पहले हमारे पिता का मीर बख्शी था और अपनी विशेष योग्यता तथा कार्यदक्षता के कारण यह वजीर के पद पर प्रतिष्ठित हुआ। इसने हमारे पिता का मंत्रित्व दो वर्ष तक दृढ़ता के साथ किया। इसमें बुद्धि की तीव्रता तथा विचारशक्ति अच्छी थी इसलिए हमने इसको वजीर से अमीर बना दिया। साथ ही यह भी आज्ञा दी कि सभी छोटे बड़े मंसबदारगण, चाहे वे किसी जाति या संप्रदाय के हों और जो शाहजादे की सेवा में नियत हों, आसफखाँ की सम्मति व राय के बाहर न जायँ क्योंकि वह हर प्रकार से भलाई लिए होगी। हमने मोती की एक माला और एक लाख रुपया शाहजादा पर्वेज के लिए भेजा और आदेश दिया कि राणा के देश में, अपने भाइयों के स्थान के लिए, बनारस के बराबर एक नगर बसावे और पर्वेजाबाद के नाम से उसे बसावे।

राजा भारमल के पुत्र जगन्नाथ[2] को जो राजा मान सिंह का चाचा और पाँच हजारी मंसबदार था, जड़ाऊ तलवार और अच्छा घोड़ा दिया।

में पर्वेज का अभिभावक होकर इसका भेजा जाना पृ. १६ पर इसी वर्णन के साथ लिखा है।

१. आका मुल्लाई नाम था और यह दवातदार कहलाता था। बदीउज्जमाँ काशान का वजीर था।

२. देखिए मुगल दरबार भाग १ पृ. १४९-५१।

दूसरा राणा सिंह[1] राणा का चचेरा भाई था जिसे हमारे पिता ने राणा की पदवी से विभूषित किया था और चाहते थे कि इसको खुसरो के साथ राणा पर भेजें परन्तु उसी समय उनकी मृत्यु हो गई। उसी वर्ष राजा मान सिंह के भाई माधो सिंह[2] को, जो हमारे पिता के पार्श्ववर्ती राजाओं में विश्वासपात्र था, झंडा और डंका प्रदान किया। इस प्रकार की कृपा करने की इच्छा हमारे पिता की भी थी और वह ऐसा सर्वदा कहा करते थे क्योंकि वह बराबर खास महल के दरबार में रहता था[3]। अब्दुर्रज्जाक मामूरी को एक हजारी मंसब देकर अपने पुत्र पर्वेज का बख्शी नियत किया। आसफ खाँ के चाचा मुख्तार बेग को आठ सदी का मंसब देकर पर्वेज के साथ विदा किया। शेख रुक्नुद्दीन अफगान को अपनी शाहजादगी के समय शेर खाँ की पदवी दी थी और वह साहसी पुरुष था। अमीरों की नौकरी में उसका हाथ तलवार से कटकर गिर गया था[4]। इस पर भी वह अत्यंत बुद्धिमान तथा सतर्क था।

१—इसका नाम राणा सगर था। यह राणा उदय सिंह का पुत्र और राणा प्रताप का सौतेला भाई था। राणा अमर सिंह ने इसके सगे भाई जगमाल की मृत्यु का बदला राव सुरताण से नहीं लिया इससे संतप्त हो यह जहाँगीर के पास चला आया और उसे मेवाड़ पर चढ़ाई करने को उभाड़ा। (मूता नैणसी की ख्यात भाग १ पृ० ६३ और मुगल दरबार भाग १ पृ० ४००)

२—देखिये जीवनी मुगल दरबार भाग १ पृ० २८६-७।

३—प्राइस ने इन तीन हिंदू राजाओं का अपनी पुस्तक में उल्लेख नहीं किया है। आर. बी भा० १ पृ० १६-७ पर इनका उल्लेख है। माधो सिंह के साथ रायसाल दरबारी का भी वर्णन है।

४—प्राइस ने स्यात् भूल से 'बशमशेर' को कश्मीर पढ़कर कश्मीरी सरदारों की नौकरी करना लिख दिया। उर्दू में अमरा तथा उमरा एक सा लिखा जाता है, अमरा से राणा अमर सिंह से तात्पर्य हो सकता

शेख अबुल्फजल के पुत्र शेख अब्दुर्रहमान[1] को दो हजारी मंसब देकर सम्मानित किया। क़रा खाँ तुर्कमान के वजीर सादिक मुहम्मद खाँ के पुत्र जाहिद खाँ[2] को दो हजारी मंसब प्रदान किया। हमारे पिता के समय यह क़ोश वेगी (विहंगाध्यक्ष) था और दुर्ग असीर के घेरे में इसने बहुत प्रयत्न किया था। इन्हीं सेवाओं के उपलक्ष में इसे इतनी उन्नति मिली। राय मनोहर कछवाहा पर हमारे पिता उसकी अल्पावस्था में बहुत कृपा रखते थे और उससे फारसी में बातचीत करते थे। यह बहुत अनुभवी था और अच्छा सैनिक था। यह कभी कभी शेर भी कहता था और इसके शेर नपे तुले होते थे। यह शेर उसके शेरों में से एक है। उर्दू रूपान्तर—

गरज थी खिलअते साय: से यह कि कोई।
रखे न हजरते खुर्शीद के नूर पर पाँव॥

भावार्थ—छाया रूपी खिलअत देने का यही अभिप्राय है कि कोई महान् सूर्य के प्रकाश पर अपना पैर न रखे।

है और उसी चढ़ाई या सेवा में इसका हाथ कटा हो। अन्य प्रतियों में अफगान के स्थान पर उजबेग मिलता है। आर. बी. भा० १ पृ० १७ पर अब्दुर्रज्जाक तथा मुख्तार बेग के क्रमशः बख्शी एवं दीवान नियत किए जाने का उल्लेख है।

१—देखिए मुगल दरबार भाग २ पृ० १७६-८। प्राइस ने इसके साथ अबुल्फजल के प्रभाव से अकबर के नास्तिक होने का विवरण प्रायः दो पृष्ठों में बढ़ाया है।

२—देखिए मुगल दरबार भाग ३ पृ० ३०६। आर. बी. भा. १ पृ० १७ पर वजीर जमील तथा करा खाँ तुर्कमान दो नाम और दिए हैं पर इस प्रति में 'जाहिद खाँ पिसर सादिक मुहम्मद खाँ वजीर करा खाँ तुर्कमान' लिखा है। यही ठीक भी ज्ञात होता है।

इस जाति (कछवाहा) में समझ की पूर्णता नहीं आ सकती। राजा भाव सिंह[1] मान सिंह का स्थानापन्न है और उससे बढ़कर कोई मर्द नहीं है परंतु यह राजा मान सिंह के साथ कभी नहीं रहा। मान सिंह अपनी जाति में अद्वितीय है। बहादुर खाँ बसूली[2] दो हजारी मंसबदार है और मान सिंह का पितृव्य है। यद्यपि यह एकांत-प्रिय है पर शस्त्रविद्या की कुशलता में बुरा नहीं है। उसकी बहिन हमारे पिता के हरम में थी। यद्यपि वह अत्यंत सुंदर थी पर उसके भाग्य अच्छे नहीं थे।

दौलत खाँ ख्वाजासरा हमारे पिता की सेवा में था और उसे नाजिरुद्दौला की पदवी मिली थी। यह घूस लेने और अपना कर्तव्य न पूरा करने में अपना जोड़ नहीं रखता था। इसकी मृत्यु पर तीन लाख तूमान के रत्न इसके पास निकले जिसके सिवा नगद धन था[3]। जफर

१—यह राजा मानसिंह का पुत्र था और इसे बहादुरसिंह की पदवी भी मिली थी। मुगल दरबार या मआसिरुल् उमरा भाग १ पृ० २३२ पर इसी नाम से इसकी जीवनी दी है। जहाँगीर की इस पर विशेष कृपा थी इसी से दूसरे बड़े भाई जगतसिंह के पुत्र महासिंह का उत्तराधिकार छीनकर इसे ही आमेर का राजा नियत कर दिया था। सात वर्ष राज्य कर सं० १६७७ में इनकी मृत्यु हो गई और तब महासिंह के पुत्र जयसिंह राजा हुए।

२—यह विचित्र नाम है और राजा मानसिंह के वंश के किसी के मुसलमान होने का भी उल्लेख नहीं मिलता। आर. बी. में भी इसका उल्लेख नहीं है। फारसी लिपि के कारण कुछ भ्रम हो गया है।

३—प्राइस ने अपने अनुवाद में रत्न, नगद, सोने चाँदी के सामान आदि लिख कर उसका मूल्य तेरह करोड़ अशर्फी पाँच मिसकाली लिख डाला है।

खाँ[1] जैनखाँ कोका का पुत्र है। हमारे पिता जैनखाँ[2] पर बहुत कृपा रखते थे। इसे तथा खाने आजम को वह अपने पुत्र के समान समझते थे। खानआजम का जैनखाँ से कहीं अधिक हमारे पिता के साथ संबंध था। जफरखाँ भला आदमी है और उससे हमें विशेष आशा है। यह समझदार है पर जैनखाँ की बुद्धि तक कम आदमी पहुँचेंगे। जैनखाँ कल्पना तथा अनुमान करने में एक ही था। यहाँ तक कि हवा में उड़ते हुए कबूतरों पर एक दृष्टि डालकर उनकी संख्या बतला देता था, जो गिनने पर न एक कम और न एक अधिक होते थे। साथ साथ हिंदवी संगीतों का भी अच्छा ज्ञान रखता था। यह शस्त्रविद्या कौशल में भी वेजोड़ था।

इसी समय भदौरिया जाति को, जो आगरा के आसपास बसी हुई थी और बहुधा सड़कों पर लूटमार व चोरी किया करती थी, पकड़वाकर सबको हाथियों के पैरों के नीचे डलवा उनके सिर नरम करवा दिए तथा दंड को पहुँचाया।

राजा विक्रमाजीत, जो अब बड़े राजाओं में परिगणित है, साहसी तथा बुद्धिमान है पर इसमें कुछ पागलपन भी है। इसको पाँच सदी मंसब दिया। राय दुर्गा का पुत्र चांदा[3] सात सदी मंसबदार था।

१—मुगल दरबार भाग ३ पृ० २४८-९ देखिए।

२—मुगल दरबार भा० ३ पृ० ३३७-४३ देखिए।

३—मूल प्रति में 'वल्द राय दुर्गा' लिखा है और नाम छूट गया है जो राव चंदा होना चाहिए। यही सात सदी मंसबदार उस समय था। राय दुर्गा चार हजारी था। प्राइस ने यह अशुद्धि ठीक नहीं की। ये चंद्रावत सीसौदिया राजपूत हैं। इनका वंश पहले मालवा के सुल-तान के अधीन रामपुरा का जागीरदार था पर जब महाराणा कुंभा ने

रायदुर्गा राणा प्रताप के सर्दारों में से है। यह बहुत वीर है पर अब वह बहुत वृद्ध हो गया है[1] तब भी बदला नहीं है। शुजाअतखाँ का पुत्र मुकीमखाँ सात सदी मंसबदार है। शुजाअतखाँ हमारे पिता का एक अमीर है। अपनी अल्पावस्था के काल की यह बात हमें स्मरण है कि हमारे पिता ने हम से कहा था कि हम इससे धनुर्विद्या सीखें।

रूप खवास हमारे पिता के छ सौ तीस दासों के साथ भाग गया था और उन सब को गुमराह कर दिया था। वह हिम्मतपुर में पराजित होने के समय पकड़ा गया। यह साहसी दास है पर यह निरंतर शराब पीता और उन्मत्त रहता है। इन सब दोषों के रहते भी यह निमाज का पक्का था। सारी अवस्था में इसने रमजान का न एक रोजा और न एक निमाज कभी छोड़ा था इसलिए उसको प्राणदंड देने से हाथ रोक लिया तथा उसके दोष हमने क्षमा कर दिए। साँवलदास अच्छा जवान और साहसी सैनिक था इसलिए उसे पाँच सदी मंसब दिया। शहबाजखाँ कंबू बाजारू आदमी था पर उससे काम निकलता था। यही कारण है कि कटुवादी तथा गाली देनेवाला होने पर भी पिता के समय वह पाँच हजारी मंसब तक पहुँच गया था। युद्ध के नियम व कायदों को अच्छी प्रकार जानता था परंतु जब शत्रु के सामने पहुँचता तब युद्ध करने का साहस न कर सकता। इस कारण इसे उस मंसब से हटाकर शिकारखाने का दारोगा बना दिया और उसे दो सदी का मंसब दिया।

मालवेश को परास्त किया तब रामपुरा महाराणा के अधीन हो गया और इस वंश वाले भी मेवाड़ के सर्दार हो गए। देखिए मुगल दरबार भाग १ पृ० २११-९।

१—इस समय इसकी अवस्था ८२ वर्ष की थी।

अन्य मंसबदारों में पाँच सदी, चार सदी, दो सदी, एक सदी, बीस्ती और अहदी तक, जिन में अहदी चार घोड़ेवाले कहलाते हैं, सब सैनिकों को, जो बाईस सहस्र अहदी थे, शनीचर और बुध को तैनात किया। इस कारण कि अपनी शाहजादगी के समय अमीरुल् उमरा पर पूरा विश्वास रखता था इसलिये फर्मानों के मुहर व सिक्का[1] को उसीको सौंप दिया था पर उसको बिहार प्रांत को बिदा करने के अनंतर मुहर को अपने पुत्र योग्य पर्वेज को दे दिया। जब पर्वेज राणा पर चढ़ाई करने गया तब पुनः अमीरुल् उमरा को सौंप दिया।

बदख्शाँ के शासक मिर्जा शाहरुख को, जो मिर्जा सुलेमान का पौत्र तथा हमारा दामाद है, हमारे पिता की सेवा में पाँच हजारी मंसब मिला था। यद्यपि राजनियम के अनुसार किसी को पाँच हजारी मंसब से अधिक देने की प्रथा नहीं है पर इसे सात हजारी मंसबदार बना दिया। मिर्जा शाहरुख बड़े सरल हृदय का था और हमारे पिता उसकी प्रतिष्ठा करते थे। मजलिस में जब अपने पुत्रों को बैठने का आदेश देते थे तब इसको भी बैठने की आज्ञा दे देते थे। मिर्जा शाहरुख को हिंद में आये हुए बीस साल के लगभग हो गए थे पर वह हिंदी कुछ भी नहीं जानता था।[2] यह पक्का तुर्क तथा सादे स्वभाव का था। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि बदख्शी से बढ़कर कोई झूठा नहीं होता पर यह प्रगट में बदख्शी नहीं ज्ञात होता तथा न बदख्शियों से मिलता है।[3]

---

१. आ० बी० भा० १पृ० १८ पर यह अंश है और उसमें मुहर औजक लिखा है।

२. यह अंश आर० बी० भा० १ पृ० २७ पर नहीं दिया गया है।

३. बदख्शियों पर असत्य बोलने का आक्षेप आर० बी० में नहीं है और उस में शाहरुख को मालवा प्रांत पर नियत करने का जैसा वह अकबर के समय में था उल्लेख है।

मिर्जा अलाउद्दीन बदख्शी से कुछ विचित्र काम हो गया था। हमारे पिता ने उस को ख्वाजा अब्दुला काबुली के साथ काबुल भेजा, जहाँ उस समय चार सौ आदमी बंद थे, कि उन सब से उपदेश देकर सौगंध लिया जाय कि वे फिर कोई दुष्टता अपने स्वामीके साथ न करेंगे और तब उस झुंड को छोड़कर दरबार लावें। इस अभागे ने वहाँ पहुँच-कर उस झुंड को कैदखाने से बाहर निकालकर और ख्वाजा अब्दुला की उपस्थिति को कुछ न समझकर, जिसके साथ वह भेजा गया था, वहाँ के शासक से हमारी इच्छा के विरुद्ध यह कहा कि बादशाह की यह आज्ञा हुई है कि इस कैदी-झुंड को घोड़े, शस्त्र व खिलअत देकर हमारे दरबार में भेज दो। काबुल के शासक ने उसी के अनुसार इन चार सौ मनुष्यों को शस्त्रादि दे दिए। उन दुष्टों ने मिर्जा अलाउद्दीन बदख्शी का साथ दिया और काबुल के शासक के सावधान होने के पहले ही नगर के बीच पहुँचकर बजाजी तथा सराफे की दूकानों को लूटना आरंभ कर दिया। जो कुछ हाथ लगा उस सब को बटोरकर वे नगर के फाटक से निकल बदख्शाँ की ओर चल दिए। यद्यपि यह दुष्ट मनुष्य इस दरबार में दो हजारी मंसब तक पहुँच गया था और बिना किसी प्रकार का कष्ट पाए तथा अत्याचार सहे हमारे यहाँ से भागकर दूर देश चला गया था परंतु कुछ ही वर्ष बाद भूख से कष्ट पाकर वही मिर्जा अलाउद्दीन बदख्शी पुनः इसी दरबार में उपस्थित हुआ। हमने उससे पूछा कि वह कैसी 'हरामजदगी' तूने पिता के साथ किया था और फिर आ गया तथा इसी दरबार में क्या आया? उसने नम्रता से सिर झुका लिया और कुछ उत्तर नहीं दिया। यहाँ तक कि उसके जो सब दोष प्रगट हो चुके थे उन सबपर दृष्टि न डालकर हमने उसे पिता के समय मिली हुई जागीर तथा मंसब दे दिया और पाँच सदी मंसब बढ़ाकर उसे ढाई हजारी मंसबदार बना दिया। अमीरुल् उमरा ने भी उसकी ओर से प्रार्थना करते हुए कहा कि यह साहसी तथा अनुभवी है इसलिये एक दोष पर

इसे दृष्टि से गिरा न दिया जाय। यदि इससे ऐसे दोष न हुए होते
इसे इतना कष्ट न मिलता।

उजबकों को ढाई हजारी से दो सदी तक मंसब दिए। यद्यपि
उजबक युद्ध में साहस दिखलाते हैं पर अपने स्वामी से ये शीघ्र मुख
फेर लेते हैं। शेख मनिया[1] के पुत्र शेख हसन को अपनी शाहजादगी के
समय मुकर्रबखाँ[2] की पदवी दी थी। उसे दक्षिण खान-खानाँ के पास
भेजा कि हमारे मृत भाई दानियाल के लड़कों को सेवा में भेजे। हमने
कुछ लाभदायक उपदेश भी उससे कहे कि खानखानाँ तक पहुँचा दे।
मुकरब खाँ कुल सामान को लेकर आया।[3] यह हमारा कर्मठ सेवक है
और सभी सेवाएँ उससे पूरी हो जाती हैं। यह सर्वत्र हमारी सेवा में
बराबर तैयार रहता है। जर्राही विद्या में यह अपने समय का अद्वितीय
है और कह सकते हैं कि इस विद्या में यह निपुण है। इसके समान
सेवक कम आदमी के पास होंगे। इसको पाँच हजारी मंसब, डंका,

---

१. मनिया का पाठांतर शेख फातिमा तथा शेख भनिया भी मिलता
है। यह पानीपत का निवासी तथा हकीम था। इसके पहले अब्दुलनबी
या वली उजबक का आर. बी. में भा. १ पृ. २७ पर उल्लेख है जिसे
डेढ़ हजारी मंसब दिया गया था।

२. इसकी जीवनी के लिए मुगल दरबार हिंदी भाग ४ पृ. सं.
३५२-५ देखिए।

३. आर. बी. भाग १ पृ. २८ पर लाहौर में आना लिखा है।
प्राइस ने अपने अनुवाद में मनमानी तौर पर पाँच करोड़ अशरफी
के रत्न तथा दो करोड़ अशरफी नगद तथा अन्य समान लिखा है, जो
कल्पनातीत है।

झंडा, जड़ाऊ कमरबंद तथा जड़ाऊ जीन सहित घोड़ा देकर सम्मानित किया और इसे गुजरात का शासक बनाने की इच्छा है।[1]

नकीब खाँ[2] को डेढ़ हजारी मंसब प्रदान किया। इसका नाम गेयासुद्दीन अली था और हमारे पिता ने इसको नकीबखाँ की पदवी दी थी। यह कजवीन के सैयदों तथा नकीबों में से है और इतिहास-ज्ञान में इतना दक्ष है कि जिस किसी स्थान के विषय में उससे पूछा जाय वह इस प्रकार बतलाता है कि मानों उससे उस विषय में सम्मति ली गई थी। तात्पर्य यह कि उसकी स्मरणशक्ति बहुत अच्छी थी। इसने सात जिल्दों में इतिहास लिखा है[3] और इस विद्या में अनुपम है। इसकी धारणाशक्ति इतनी आश्चर्यजनक है कि जो समाचार एक बार सुन लेता है उसे कभी नहीं भूलता। कह सकते हैं कि ईश्वर ने वैसा दूसरा आदमी नहीं पैदा किया है। हमने भी उससे बाल्यकाल में कुछ पढ़ा था इसलिए उसे गुरु कहकर बात करता था।

---

१. मुकर्रब खाँ रत्नों का अच्छा पारखी था और जहाँगीर स्वयं रत्नों का शौकीन था। उसने इसीलिये इसे गुजरातका प्रांताध्यक्ष बनाकर भेजा कि बाहर से आते हुए माल में से चुनकर अच्छी वस्तुएँ बादशाह के लिए ले लिया करे। यह शासन-कार्य ठीक तौर पर न कर सकने के कारण शीघ्र वहाँ से बुला लिया गया।

२. इसकी जीवनी मुगल दरबार हिंदी भाग ३ पृ० ४८५-८ पर दी गई है। जहाँगीर ने इसके इतिहास-ज्ञान में जो कुछ लिखा है उसका उल्लेख इसमें नहीं है।

३. मूल का यह पाठ त्रुटिपूर्ण है। यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसने कोई इतिहास लिखा है या इसे कोई ग्रंथ सातो भाग याद हैं। मुगल दरबार में लिखा है कि इसे 'रौजतुस्सफा के सातो भाग कंठाग्र थे'। यही ठीक ज्ञात होता है।

शुजाअतखाँ[1] को हमने दो हजारी मंसब दिया। इसका नाम शेख कबीर था और यह फतहपुर के शेखजादों में से है। यह हजरत शेख चिश्ती के संबंधियों में से है और इसे शाहजादगी के समय शुजाअतखाँ की पदवी दी थी। यह जवाँमर्द है और सीकरी के शेखजादों में इसने बहुत उन्नति की। गुजरात में खानखानाँ के साथ रहकर इसने अच्छी वीरता दिखलाई थी।

शाबान महीने की ७ वीं को राजा मानसिंह के पितृव्य राजा भगवान दास के लड़कों[2] और अभय रामजी,[3] विजय राम[4] और श्यामराम ने अपने कुकर्मों का फल पाया। इन सब को भयानक मस्त हाथियों के पैरों के नीचे डलवा दिया और नर्क को भेज दिया। इनमें अभयराम चुगली खाने, बकने तथा आलस्य में सबसे बढ़कर था। राजा मानसिंह का पुत्र भाऊ सिंह[5] जब इलाहाबाद में दोहजारी मंसब पाकर सम्मानित हुआ तब रामजी ने दुष्टतापूर्ण साहस के साथ उस अभागे को इ

---

१. प्राइस ने इसका विवरण नहीं दिया है। आर. बी. में हैं।

२. मूल प्रति में 'व पिसरान राजा भगवानदास' लिखा है जिससे इन तीनों के सिवा भगवान दास के लड़कों का भी विद्रोह में सम्मिलित होना ज्ञात होता है। आर० बी० भा० १ पृ० २९ पर भगवान दास के पुत्र अखैराज के ये तीनों पुत्र लिखे गए है।

३. मुगल दरबार में अखैराज नाम दिया है। मूल प्रति में रामजी के पहिले 'अल्हे' लिखा है जिस पर का 'मर्कज़' छूट गया ज्ञात होता है पर आगे भी केवल रामजी आया है। मुगल दरबार भा० ३ पृ० ४४८ पर अभैराज तथा अखैराज दोनों नाम उपद्रवियों के दिए हैं।

४. मुगल दरबार में बिजैराज नाम दिया है।

५. प्राइस ने अपने अनुवाद में भूल से पहार सिंह लिख दिया है।

संबंध में कुसम्मति देकर अपना मुख काला किया और कुकार्य आरंभ किया जिससे इस दंड को पहुँचा। इन लोगों के मारे जाने से एक अन्य आदमी इच्छा राम[1] (एलिज़ा या एलिचा राम) क्रुद्ध होकर कुछ अनुचित कार्य कर बैठा तथा अपनी जाति में भ्रम फैलाने लगा जिससे उसको बंगाल के एक करोड़ी मुहम्मद अमीन के पुत्र को सौंपा। मुहम्मद अमीन का पुत्र तर्मिज़ के सैयदों में से था और इसे आज्ञा दी कि बंगाल में पहुँचकर राजा मानसिंह को सौंप दे। मुहम्मद अमीन ने सिधाई कर उसको हथकड़ी बेड़ी न डालकर उसे भाई की चाल पर साथ रखा। एक अर्द्धरात्रि को सराय ताल तथा गाजीपुर के बीच मार्ग से सबको सोता हुआ छोड़कर इसने भागने की इच्छा की कि राणा के पास चला जाय और वहाँ बलवा करे। परंतु मुहम्मद अमीन ने सावधान होकर उसके पीछे धावा किया। दैवात् वह यमुना नदी के किनारे, जो आगरा की ओर से आती है, पहुँचा परंतु नाव के न होने से तथा घोड़े सहित नदी में कूद कर पार जाने का साहस न पड़ने से वहीं ठहर गया। वहाँ वालों ने उसे तब तक रक्षा में रखा जब कि मुहम्मद अमीन वहाँ पहुँच गया और उसे पकड़ लिया। मुहम्मद अमीन ने इस घटना का प्रार्थनापत्र हमारे पास भेजा कि उसको पकड़ लिया है, जो राणा की ओर जाने की इच्छा रखता था और सेवा में लाया हूँ, अब क्या आज्ञा है। हमने आदेश दिया कि यदि हिंदुओं या राजपूतों में से कोई उसकी जमानत

---

१. इसका उल्लेख आर० बी० में नहीं है और इससे अभैराम आदि के मारे जाने पर उक्त घटना का होना ज्ञात होता है पर अभैराम के युद्ध में योग देने का उल्लेख है। संभव है कि वह दूसरा अभैराम हो या प्रतिलिपिकार ने इच्छाराम को भ्रम से अभैराम लिख दिया हो। यही ठीक ज्ञात होता है और इससे घटना-क्रम की संगति बैठ जाती है।

पड़े तो उसे जागीर दी जाय और उस के सब दोष क्षमा कर दिए जायँ पर उस के दुष्ट स्वभाव के कारण कोई भी उसका जामिन नहीं हुआ। हमने अमीरुल्उमरा से राय की कि कोई उसका जामिन नहीं होता और उसके भागने से कहीं कुछ उपद्रव न खड़ा हो जाय क्योंकि राजपूतों की सेना कुत्ते-बिल्ली से भी अधिक है, इसलिये क्या करना चाहिए। अमीरुल् उमरा ने हमसे कहा कि किसी एक ऐसे सेवक को सौंपना चाहिए जो दिन-रात्रि उसकी रक्षा में सतर्क रहे। अमीरुल् उमरा ने इब्राहीम काफिर[1] को, जिसे हमने दिलावर खाँ की पदवी दी थी और हाशिम पुत्र मंगली को जो शाहनवाज़ खाँ की पदवी से सम्मानित है, तीनों भाइयों को उनके शस्त्र आदि ले लेने के अनंतर सौंपकर कहा कि उन पर दृष्टि रखें। अमैराम से भारी दोष हो चुका था और उसने एक सैयद को अकारण मार डाला था। ऐसे दोष के कर डालने के कारण उसकी इच्छा थी कि अपने नौकरों के साथ, जो संख्या में दो सौ शस्त्रधारी थे, युद्ध करे और लोगों के बीच से अपनी सेना के साथ युद्ध करते हुए बाहर निकल जाय। शाहनवाज खाँ ने आकर अमीरुल् उमरा से कहा कि ये सब मूर्खता तथा युद्ध के लिये सन्नद्ध हैं। अमीरुल् उमरा ने धीरे से यह बात हमें सुना दी। इसी समय आगरा दुर्ग के शाह बुर्ज के नीचे बड़ा शोर मचा। तब मैंने अमीरुल् उमरा से कहा कि इन सब का काम बिगड़ गया, हमने गफ़लत की अब तुम स्वयं जाकर इन अभागों को उचित दंड दो। जब अमीरुल्उमरा इस कार्य पर चला गया तब हमने शेख फरीद बख्शी से कहा कि स्यात् राजपूत जाति इन दुष्टों का साथ

---

१. प्राइस ने मूल को न समझकर दिलावर खाँ और हाशिम को विद्रोहियों का पक्षपाती मान लिया और उन्हें छुड़ाने में प्रयत्नशील लिख दिया है।

देकर अमीरुल् उमरा को नष्ट कर दे इससे तू अपनी सेना एकत्र कर उसकी सहायता को इसी समय जा। शेख को जब मैंने बिदा किया तभी युद्ध का शोर मचा। हमने शाह बुर्ज के झरोखे में, जो दरबार आम था, आकर देखा कि वे युद्ध में गुँथ गए हैं। लगभग तीन चार सहस्र राजपूतों ने इन अभागों की सहायता के लिए जमधर तथा तलवार खींचकर अमीरुल् उमरा पर आक्रमण कर दिया। अमीरुल् उमरा ने भी तलवार खींचकर उनका सामना किया। अमीरुल् उमरा का एक साहसी तथा अनुभवी सेवक कुतुब खाँ कुछ अन्य सैनिकों के साथ राजपूतों पर टूट पड़ा पर जमधर की चोट खाकर वह मारा गया। अमीरुल् उमरा के नौकरों में से बहुत से घायल हुए। दिलावर खाँ ने अन्य सैनिक टुकड़ी के साथ कुतुब खाँ की सहायता के लिए उनपर धावा किया। दिलावर खाँ को इन लोगों के बीच से खींचकर जमधर से मार डाला।[१] फिर अमीरुल् उमरा ने एक सहस्र अहदियों के साथ, जिन्हें हमने उसके सहायतार्थ भेजा था, उनपर आक्रमण किया और बहुत से राजपूतों को मार डाला। इसी समय शेख फरीद बख्शी अपनी सेना ठीक कर अमीरुल्-उमरा की सहायता को आ पहुँचा। एक राजपूत तलवार खींचकर शेख फरीद की ओर चला, जो सेना को युद्ध के लिए भेजकर स्वयं अकेले खड़ा था। उस अभागे राजपूत ने चाहा कि उस पर तलवार की चोट करे परंतु शेख ने सावधान होकर उसे पैरों से गिरा दिया।[२] जब सेना

---

१. मुगल दरबार भाग ३ पृ० ४४८–५२ पर इसकी जीवनी दी है। इस घटना में यह केवल घायल हुआ था और इसके बाद अनेक कार्यों पर नियुक्त हुआ था। विशेष घायल होने से भ्रम से ऐसा जहाँगीर ने लिख दिया है।

१. आर० बी० भा० १ पृ० ३० पर एक हब्शी दास द्वारा मारा जाना लिखा है। आर० बी० से इस प्रति में यह घटना विशेष विस्तार से लिखी गई है।

विजयी हुई और उन अभागों में बहुत से मारे गए तथा कुछ बच गए तब घायल सैनिक भागने लगे। इस झुंड को मारे गए हुओं के साथ सब को हमारे सामने लाए। उन सब अभागों को दंड की आज्ञा दी जो मार डाले गए। उस अभागे को ग्वालिअर दुर्ग में बंद रखने की आज्ञा दी। यह सब इस लिए किया कि दूसरे लोग कभी इस प्रकार विद्रोह या उपद्रव करना ध्यान में भी न लावें। अबुस्सलीम उज़्बक[1] ने प्रार्थना की कि यदि ऐसा उपद्रव उज़्बक सुलतानों के सामने कोई जाति करती तो वे उस जाति के सभी आदमियों को मार डालते। इसके उत्तर में हमने कहा कि हमारे पिता इन राजपूतों पर बड़ी कृपा-दृष्टि रखते थे और इनके समान बहुतों की सेना में अच्छी प्रतिष्ठा थी। उन्होंने ऐसी अपनी अंतिम इच्छा भी प्रगट की थी जिससे वे अपने को बहुत बढ़कर समझते हैं। दूसरे यह न्याय-संगत नहीं है कि एक के दोष से उसकी सारी जाति को कुचल डाले। हाँ दोषी को दंड देना चाहिए, जिससे दूसरों को उपदेश मिले।

क़ाजी अब्दुल्ला काबुली को एक हजारी मंसब प्रदान किया।[2] ख्वाजा मुहम्मद यहिया के पुत्र ख्वाजा जिकरिया को, जिसने भारी दोष किया था, शेख हुसेन जामी नामक विद्वान फकीर की प्रार्थना पर, जो उस

---

१. प्राइस ने बहादुर खाँ उजबक नाम लिखा है पर इस मूल प्रति में अबुस्सलीम ही दिया है। मुगल दरबार भाग ४ पृ० ११८–९ पर एक बहादुर खाँ उजबक की जीवनी दी हुई है जो अक़बर तथा जहाँगीर के राज्यकाल में था पर उसका नाम अब्दुन्नबी लिखा गया है। आर० बी० भा० १ पृ० ३० पर अब्दुन्नबो नाम दिया है पर टिप्पणी में अबुल बका तथा अबुल् बे भी लिखा है।

२. आर० बी० भा० १ पृ० ३१ पर इसका उल्लेख नहीं है।

समय विशेष लोकप्रिय था, उसके दोष क्षमाकर पाँच सदी दिया। हमारे बादशाह होने के छ महीने पहले शेख हुसेन ने एक प्रार्थनापत्र हमारे पास भेजा था कि मैं ने स्वप्न में देखा है कि ईश्वर ने तुम्हें बादशाह बनाया है। उस समय मेरी खातिर से महम्मद जिकरिया[1] का दोष क्षमा कर दीजिएगा। इस कारण उसे मंसब देकर क्षमा कर दिया।

ताश खाँ काबुली को, जिसे हमारे पिता ने ताज खाँ की पदवी दी थी और दो हजारी मंसब देने की कृपा की थी, तीन हजारी मंसबदार बना दिया। ताश बेग हमारे वंश के पुराने सेवकों में से है। हमारे पितामह हुमायूँ के समय यकःतानों में यह था और युद्ध में अद्वितीय है। हमारे पितृव्य मुहम्मद हकीम के समय यह एक अमीर हुआ। यह वृद्ध पुरुष है और तोलक खाँ कोरची[2] का पास का संबंधी है। यह सुंदर पुरुष है और यद्यपि इसकी दाढ़ी बहुत कम काली रह गई है परंतु दर्शनीय है।

तर्खना[3] बेग खाँ काबुली को, जो डेढ़ हजारी मंसबदार था, तीन हजारी बनाकर सम्मानित किया। यह बहुत बहुत अनुभवी तथा भला आदमी है। यह मुहम्मद हकीम मिर्जा के अमीरों तथा पार्श्ववर्तियों में

---

१. आर० बी० भा० १ पृ० ३१ पर इसे अहरारिया लिखा है। इस में यह अंश इस प्रकार लिखा गया है कि वह भ्रामक हो गया है तथा टिप्पणी में प्राईस से उद्धरण देकर उसे स्पष्ट किया गया है।

२. आर० बी० भा० १ पृ० ३१ पर ताश बेग फुर्जी लिखा है पर फुर्जी अशुद्ध है। इसे कोरची पढ़ना चाहिये क्योंकि यह तोलक खाँ कोरची का संबंधी था।

३. आर० बी० भा० १ पृ० ३१ पर तुख्ता बेग लिखा है और ढाई हजारी से तीन हजारी बनाना लिखा है।

से था। यह वीर तथा सतत कर्मशील है और निमाज पढ़नेवाला मुसलमान है। कुछ ही दिनों में लगभग सौ मनुष्यों को, जो उसकी जाति के थे, स्वयं मंसब प्रदान किया और उसको घोड़ा, जड़ाऊ जीन, जड़ाऊ कमरबंद, डंका तथा झंडा देकर बड़ा बना दिया।

मिर्जा अबुल्कासिम[1] को, जो एक हजारी था, डेढ़ हजारी मंसबदार बना दिया। यह हमारे पिता के पुराने सेवकों में से है। यह पहले अदहम खाँ का नौकर था। यह सिपाही मर्द तथा अच्छा सेवक है। यद्यपि इसे लगभग तीस पुत्र थे पर एक भी इसके काम न आया। सभी काम के नहीं निकले अर्थात् अयोग्य थे। हजरत शेख सलीम के पौत्र शेख अली[2] को खाँ की पदवी और दो हजारी मंसब प्रदान किया। इसे शेख सलीम के उर्स (मृत्यु तिथि का उत्सव) के लिए चार हजार रुपये दिए। हम शेख अली के साथ बाल्यकाल में एक स्थान में रहकर बड़े हुए। वह हमसे एक वर्ष छोटा है और साहसी युवक है। उसकी जाति में कोई भी उसके समान नहीं है। वह किसी प्रकार की वस्तु नहीं खाता। इससे उसके संबंध में हमें बड़ी आशा है। यहाँ तक कि हम कह सकते हैं कि हम उसे पुत्र के समान मानते हैं।

सैयद अली आसफ[3] को सैफ खाँ की पदवी देकर सम्मानित किया। यह बारहा के सैयदों में से है और सैयद महमूद का पुत्र है, जो पिता

१—आर. बी. भा. १ पृ० ३१ पर इसका अल्ल तमकीन लिखा है और टिप्पणी में उसे 'नमकीन' लिखा है, जो ठीक है।

२—आर. वी. भा. १ पृ० ३१ पर इसका नाम अलाउद्दीन लिखा है और इसे इस्लाम खाँ की पदवी देने का भी उल्लेख है।

३—आर. बी. भा. १ पृ० ३२ पर असगर लिखा है, जो अशुद्ध ज्ञात होता है। सैयद महमूद के दो पुत्र कासिम तथा हाशिम का मुगलदरबार भा. ३ पृ० ५७-८ पर उल्लेख है। आर. बी. में इसे तीन हजारी मंसब देने का उल्लेख है।

के बड़े सर्दारों में से एक था। यह शुद्ध सैयद वंश का है और हम उस पर बड़ी कृपा रखते हैं। यह अहेर खेलने में जंगल-उजाड़ों में सर्वदा हमारे साथ रहा और रहेगा। यह बहुत सुशील युवक है और यह कभी किसी का बुरा-भला जिह्वा पर नहीं लाता। इससे अच्छा कोई गुण मनुष्य में नहीं हो सकता और इसने अपने जीवन भर में कोई कपटाचरण नहीं किया। नशीली वस्तुओं में से यह एक भी नहीं जानता अर्थात् कोई व्यसन इसे नहीं है। हम चाहते हैं कि इसे अपने समय ही में अपने बड़े सर्दारों में स्थान दे दूँ।

मुहम्मद कुली खाँ के पुत्र फरेदूँ[1] को, जो एक हजारी था, दो हजारी मंसब दिया। फरेदूँ शुद्ध वंश का है और साहस, दया तथा उदारता से खाली नहीं है। साहस ऐसा था कि इसने दो बार शेर का सामना किया था। हाथ में नमदा लपेट कर तथा शेर के मुख में डालकर दूसरे हाथ से जमधर से उसे घायलकर उसे पकड़ लिया था। एक परगना है जिसका नाम अज्ञात है और जिसके राजा का नाम ईहम मल है। उससे युद्ध होने पर फरेदूँ ने स्वयं सरदारी दृढ़ता से की और अपने किसी नौकर के साथ न देने पर भी इसने अकेले डटकर मुख और कंधे पर चोट खाई।

अनवर (मिर्जा) खान आजम[2] का पुत्र था, जो हमारे पिता का धाय-भाई था और कोकलताश हमारे पितामह का धाय भाई था।

१—यह मिर्जा मुहम्मद कुली खाँ बर्लास का पुत्र था। मुगल दरबार भाग ४ पृ० ६२ पर इसकी जीवनी दी हुई है पर उसमें यहाँ की वर्णित घटनाएँ नहीं दी गई हैं। आर. बी. में इसे चगत्ताई लिखा है और शेर के अहेर तथा ईहम मल का उल्लेख नहीं है।

२—मिर्जा अजीज की माता जीजी अनगा अकबर की धाय थी और इस नाते यह अकबर का धायभाई था। इसका पिता शम्सुद्दीन मुहम्मद

हमारे पिता खानआजम को सर्वदा पुत्र के समान मानते थे और उसे गहरा मित्र समझते थे एवं उसकी खातिर-जोई बहुत करते थे। उसी अनवर को रक्तपात के अभियोग में जब हमारे सामने उपस्थित किया गया तब हमने आज्ञा दी कि उसको अभियोक्ता के साथ काजी तथा मीर अदल के सामने ले जायँ और मुसल्मानी नियम के अनुसार जो न्याय हो वैसा ही करें

खानआजम नस्ख तथा तालीक लिपियाँ दोनों बड़ी सुंदर लिखता था और उसकी स्मरणशक्ति भी अद्भुत थी। वह पुराना इतिहास बहुत अच्छा जानता था। नकीब खाँ के अनंतर खानआजम ही ऐसी स्मरण शक्ति रखता था। आसफखाँ भी खानआजमके समान स्मरणशक्ति, सजीवता तथा बातचीत में अद्वितीय था और हमारे पिता के समय में उससे बड़ा कोई सरदार नहीं था। हम भी उसकी बहुत प्रतिष्ठा करते थे और करते हैं, यहाँ तक कि उसे पितृव्य कहकर सम्मानित करता हूँ। वास्तव में वह रंगीन स्वभाव का तथा सुंदर है पर उसको एक घाव ऐसा लगा था कि उसका एक हाथ कुछ छोटा हो गया था। इसमें एक ऐसा दुर्गुण था जिससे बुरा दुर्गुण और कोई नहीं हो सकता, विशेष कर धनवानों तथा प्रतिष्ठितों में क्योंकि इनके लिए धन भूमि तथा संसार से जाता है और आकाश से बरसता है। हमने

खाँ अतगा हुमायूँ का धाय भाई था। इस प्रकार का दुहरा संबंध होने से खानआजम अकबर का अंतरंग पार्श्ववर्ती तथा प्रिय मित्र था। जहाँगीर ने यह सब इसीलिए लिखा है कि ऐसे सर्दार के पुत्र को भी उसने न्यायप्रियता के कारण दंड दिया था। (देखिये मुगल दरबार भाग २ पृ० १३-२०) आर. बी. भाग १ पृ० ३२ पर इसका तथा मुइज्जुलमुल्क का उल्लेख नहीं है।

अनुभव किया है कि उदारता से बढ़कर कोई गुण नहीं है। इसमें दूसरा दोष यह था कि निमाज कभी नहीं पढ़ता था और इस दोष के निराकरण में कहता कि उसे शंकाएँ हैं और शंकाओं के कारण निमाज से दूर रहता हूँ।

मुइज्जुल्मुल्क को पाँच सदी से सात सदी मंसबदार बना दिया। इसका नाम मीर मुइज्जुद्दीन हुसेन था और हमारे पिता के समय स्वर्ण-कार-विभाग में अच्छी सेवा पर था। हमने उक्त पदवी को स्थिर रख-कर अपनी जागीरों की दीवानी पर नियुक्त कर सम्मानित किया। इसकी माता बरामका के मंत्रियों के वंश की थी। उसके स्वभाव की सादगी सचाई से खाली नहीं है और यह लेखन शैली का भी ज्ञाता है। शेख सलीम के पौत्र शेख बायजीद को दो हजारी से तीन हजारी मंसबदार बना दिया। जब पहले पहल हमें दूध पिलाया गया तब इसी शेख बायजीद की माता का था पर उसी एक दिन दूध पिया था। शेख बायजीद बुद्धिमान मनुष्य है क्योंकि उसे जिस किसी स्थान पर नियत किया जाता है, उसकी बुद्धि उस पर प्रबल पड़ती है और वह सफल होता है।

एक बार पंडितों से, जिनसे हिंदुओं के विद्वानों से तात्पर्य है, हमने पूछा कि यदि तुम लोगों का विचार है कि ये मूर्तियाँ ईश्वर का पवित्र चिह्न हैं तो यह विचार स्वतः ही कठिन है, जिसे बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकती क्योंकि ईश्वर अविनश्वर है, उसकी लंबाई, चौड़ाई, शरीर तथा आकार नहीं है अतः वह दृष्टि से परे है। यदि तुम लोगों की धारणा है कि इनमें ईश्वर की ज्योति आजाती है तो सभी उपस्थित वस्तुओं में उसकी ज्योति वर्तमान है। इस कारण कि हजरत मूसा ने यही बात एक वृक्ष से सुनी थी। यदि ईश्वर के किसी गुण का इनमें प्रतिष्ठापन समझो तो उस अवस्था में भी यह विचार ठीक नहीं है क्योंकि हर एक मत में

प्रतिष्ठित तथा सिद्ध पुरुष हुए हैं, जो जनसाधारण से विद्वत्ता, शक्ति तथा स्थिति में बहुत बढ़कर हैं। यदि तुम लोग इन्हीं मूर्तियों को अपना पूज्य समझते हो और यह कि हर एक भी तुम्हारे पूज्य को मानें तो यह बहुत बुरा है। क्योंकि पूजन मुख्य कर उसी परमेश्वर की की जानी चाहिए जिसका कोई साझी या समकक्ष नहीं है। पंडितों ने पहले बहुत इधर उधर किया पर अंत में उनमें से विद्वानों ने नम्रता से यह मान लिया कि ईश्वर का कोई साझी या समकक्ष नहीं है। यह भी कहा कि उस पवित्र ईश्वर का ध्यान तथा स्मरण बिना किसी माध्यम के हम लोगों की बुद्धि के परे है, इसीसे ऐसा किया जाता है। इसके उत्तर में हमने कहा कि ये मूर्तियाँ किस प्रकार ध्येयपूर्ति की साधन हो सकती हैं।[1]

हमारे पिता इन पंडितों से हर एक विषय की बात किया करते थे और इनके हर प्रकार के विद्वानों से सत्संग रखते थे। यद्यपि हमारे पिता हजरत अर्श आशियानी जलालुद्दीन अकबर बादशाह को इससे कुछ लाभ नहीं हुआ पर गद्य-पद्य काव्य के मर्म को अच्छी प्रकार समझने लगे। जो आदमी इनका हाल नहीं जानते थे वे समझते थे कि यह हर विषय में अच्छी पहुँच रखते हैं। हमारे पिता लंबे थे और उनका वर्ण गेहुँआ था। उनकी आँखें तथा भौं काली थीं और सब पर लावण्य था या दोनों भवें मिली हुई थीं। इस सौंदर्य के साथ शरीर सिंह सा सुगठित था। वक्षस्थल चौड़ा और हाथ लंबे थे। उनके नाक की बाईं

---

१. आर. बी. भा. १ पृ० ३२-३ पर मूर्तियों के स्थान पर दश अवतार है पर अवतारों की या देवताओं की जो मूर्तियाँ होती हैं उन्हीं पर यह वार्तालाप हुआ है। अंग्रेजी अनुवादक इसका आशय नहीं समझ पाए हैं, ऐसा टिप्पणी में लिखा है।

ओर एक तिल[1] था, जो बहुत ही भला लगता था। सामुद्रिक के ज्ञाताओं का कथन था कि यह तिल अत्यधिक ऐश्वर्य तथा सौभाग्य का चिह्न है। इनका कद ऊँचा था। गुणों में संसार के मनुष्यों में कोई इनके बराबर नहीं था।[2]

जब हमारे पिता बीस वर्ष के हुए तब ईश्वर ने उन्हें पहली संतान दी। यह पहली बीबी रंगराय से हुई, जिसका नाम फातमा बानू बेगम रखा गया। यह एक वर्ष की होकर मर गई। इसके अनंतर बीबी बैरम से दो पुत्र हुए, जिनमें एक का नाम हसन और एक का हुसेन रखा गया। हुसेन को आसफखाँ की माता बेचा बेगम को सौंपा था, जो अठारह दिन जीवित रह कर मर गया। हसन को जैनखाँ कोका की माता को सौंपा, जो दस दिन का होकर मर गया।[3] इसके अनंतर बीबी सलीमा बेगम से एक पुत्री हुई, जिसका नाम शाहजादः खानम रखा गया। इसे अपनी माता मरियम मकानी को सौंपा। हमारी सब बहिनों में यह सचाई तथा हमारी हितैपिता में अद्वितीय है और अपना

---

१. मूल में 'खाल' शब्द है, जिसका अर्थ तिल है।

२. इसके बाद प्राइस ने अपने अनुवाद में अकबर के कोष में कितना सोना था, इसका अनुमान लगाया है और वह इस प्रकार है कि आगरा दुर्ग के कोषागारों में से केवल एक कोषागार के सोने को एक सहस्र मनुष्य चार सौ तुलाओं को लेकर दिनरात पाँच महीने तक तौलते रहे, तब भी वह पूरा नहीं हुआ, इस पर बादशाह ने यह तुलाई रोक दी। इसी प्रकार हाथियों की संख्याएँ भी बहुत बढ़ा बढ़ाकर लिखी गई हैं। न जानें यह अनुवाद किस पुस्तक से किया गया है जिसमें ऐसी असंभाव्य कल्पनाएँ की गई हैं।

३. यहाँ तक का अंश आर० बी० म० १ पृ० ३४ पर नहीं है।

समय ईश्वर के ध्यान तथा पूजन में व्यतीत करती है। इसके बाद बीबी चित्रा से एक पुत्र हुआ,जिसका पहाड़ी नाम रखा गया। जिस समय हमारे पिता ने इसको दक्षिण की चढ़ाई पर नियत किया और इसने उस प्रांत पर अधिकार करना आरंभ किया तब परनाला, गाविल आदि दुर्गों को लेकर तीस वर्ष की अवस्था में जालनापुर के पास मर गया।[1] हमारे पिता ने इसका नाम सुलतान मुराद रखा था परंतु वह फतहपुर के पार्वत्य प्रांत में पैदा हुआ था और हिंदी लोग 'कोह' को पहाड़ कहते हैं इसलिए उस संबंध से इसका नाम पहाड़ी हुआ। हमारे पिता इसको पहाड़ी कहकर ही बातचीत करते थे। पहाड़ी का वर्ण गौर और शरीर दुर्बल था। इसका कद ऊँचाई लिए हुए था और यह सुंदर युवक था। यह सभ्य, धीर, वीर तथा शीलवान था और अपनी जागीर तथा कारखानों का प्रबंध स्वयं निरीक्षण कर ठीक रखता था।

इसके अनतर बीबी प्राणसीमा से आठ महीने गर्भ वाली (अष्टमासी) एक पुत्री हुई, जिसका नाम मीठी बेगम रखा गया। हिंदी भाषा के मीठी शब्द का अर्थ 'शीरीं' है। यह बीस महीने की होकर मर गई। बीबी बैरम से इसके बाद एक पुत्र हुआ, जिसे राजा भारमल को सौंपा पर वह भी मर गया[2]।

---

१. आर० बी० भा० १ पृ० ३४ पर अधिक मदिरापान के कारण मृत्यु लिखी है और उसमें उसकी माता का नाम नहीं दिया है।

२. इन दोनों का उल्लेख आर० बी० में नहीं है। इसीके अनंतर दानियाल के जन्म के संबंध में इस प्रकार लिखा गया है—१० जमादिउल् अव्वल सन् ९७९ हि० (सितं० १५७२ ई०) की रात्रि में एक अन्य पुत्र किसी रखनी से हुआ। इसका जन्म अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के एक सेवक शेख दानियाल के गृह में हुआ था इसलिए इसका नाम दानियाल रखा।

सुल्तान मुराद की मृत्यु के अनंतर शाहजादा दानियाल को दक्षिण विजय करने भेजा और स्वयं भी उस ओर गए। जब ये बुर्हानपुर पहुँचे तब बैरम खाँ के पुत्र खानखानाँ, अन्य सर्दारगण[1] तथा स्वामिभक्त सेवकगण को, जो हर धर्म के थे, सेनाओं सहित दानियाल के साथ किया और आगे भेजा। अहमदनगर दुर्ग विजय हुआ और इसके बाद बादशाह बुर्हानपुर लौट आए तथा वहाँ से आगरे चले आए। दक्षिण का प्रांत दानियाल को सौंपा गया। दानियाल भी तीस[2] वर्ष की अवस्था में मदिरा अधिक पीने के कारण बुर्हानपुर में मर गया। उसकी मृत्यु इस प्रकार हुई कि उसे बंदूक से अहेर खेलने में विशेष रुचि थी। उसने एक बंदूक का नाम जनाज़ः रखा था और एक शैर स्वयं बनाकर उस पर खुदवा दिया था। शैर

अज शौके शिकार तू शवद जाँ तरो ताजः।
बर हर कि खुरद तीर तु उफ्तद ब जनाज़ः॥

उर्दू रूपांतर

शौके शिकार तुझसे हुई जाँ तरो ताजः।
जो तीर तेरा खाय गिरे जा बजनाजः॥

अर्थ—तुझ से अहेर खेलने से प्राण तर व ताज़ा हो जाता है परंतु जो तेरा तीर खाता है वह जनाजे में गिरता है।

इसके बाद खानखानाँ ने हमारे पिता की आज्ञा से उसको मदिरा पीने से रोका और सबको आज्ञा दी कि जो उसके पास मदिरा ले

---

१. आर. बी. भा. १ पृ० २४ पर अकबर का आसीरगढ़ घेरना तथा खानखानाँ, उनके पुत्रों और मिर्जा यूसुफखाँ को अहमदनगर भेजना लिखा है। अहमदनगर तथा आसीरगढ़ का साथ ही विजय होने का भी उल्लेख है।

२. आर, बी. में तेंतीस वर्ष लिखा है।

जायगा वह प्राणदंड पावेगा। इस भय से कुछ दिन तक कोई उसके पास मदिरा नहीं ले गया पर जब दो तीन दिन व्यतीत हो गए और दानियाल मदिरा बिना घबड़ाने लगा तब उसने अपने बंदूकची मुर्शिद कुली से बहुत रोकर कहा कि थोड़ी मदिरा भी ला दो तो तुम्हारा मंसब बढ़ा दूँगा। जब मुर्शिद कुली ने देखा कि यह मदिरा के लिए बहुत गिड़गिड़ा रहे हैं तब कहा कि किस प्रकार लाऊँ कि कोई न जाने और मैं मारा भी न जाऊँ। दानियाल ने मुर्शिद कुली से कहा कि उसी बंदूक में, जिसका नाम जनाज़ः है, मदिरा भरकर मेरे पास लाओ और प्रति दिन दो तीन बार इसी प्रकार लाया करोगे तो मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। मुर्शिद कुली उस बंदूक को मदिरा से भरकर दानियाल के पास ले गया। उसने उस नाम के बंदूक में मुख लगाया इस लिए खुदा ने वैसा ही किया। उस बंदूक की शराब पीकर जनाजे के बिछावनपर सोना और मरना एक ही हुआ अर्थात् मर गया। दानियाल अच्छे डीलडौल का पुरुष था। इसे हाथियों[1] का इतना शौक़ था कि अपने सर्दारों तक में से, जिनके पास नामी हाथी होते और इसको पसंद आ जाते तो वह उस हाथी को ले लेता। वह किसी के पास अच्छा हाथी नहीं रहने देता था। दानियाल को 'हिंदवी' संगीत बहुत पसंद थी और वह स्वयं भी 'हिंदवी' कविता करता था, जो बुरे नहीं होते थे।

दानियाल के बाद नान्ही बेगम से एक पुत्री हुई, जिसका नाम मामी बेगम रखा गया और वह मरियम मकानी को सौंपी गई। मरियम मकानी ने उसे अपनी रक्षा में रखा पर वह ढाई वर्ष की होकर

---

१. आर. बी. भा. १ पृ० ३६ पर हाथी के साथ घोड़ा भी लिखा है।

मर गई ।[1] बीबी दौलतशाद से एक पुत्री हुई, जिसका नाम आरामबानू बेगम रखा गया । हमारे पिता का इस पर अत्यंत स्नेह था और उन्होंने हम से कई बार कहा था कि बाबा, मेरी खातिर से तुम्हें चाहिए कि मेरे न रहने पर इसी प्रकार इस पर स्नेह रखना और इसको सुख से रखना[2] । मेरी यह बात तुम्हें सदा स्मरण रहेगी ।

हमारे पिता यौवनकाल में बहुत भोजन करते थे और उनकी पाचन शक्ति अच्छी थी, जिसके लिए वह ईश्वर को धन्यवाद दिया करते थे। सैनिकों की अधिकता, सेनाओं का आधिक्य, मस्त हाथियों के असंख्य दल, साम्राज्य का विस्तार, शक्ति तथा वैभव के रहते हुए वह अपने स्रष्टा के स्मरण को एक पलके लिए नहीं भूलते थे। यह शैर हर समय उनके मुख में रहता था । शैर का अर्थ—

सर्वदा हर एक स्थान में सब मनुष्यों के साथ तथा प्रत्येक अवस्था में अपनी आँखों तथा हृदय को निरंतर उस मित्र की ओर रखो ।

हमारे पिता सभी धर्मवालों से मेल रखते थे और हर जाति तथा धर्म के भले और अच्छे पुरुषों से सत्संग करते थे। आवश्यकतानुसार वह हर एक आदमी से मिलते थे और यहाँ तक कि कभी कभी इस प्रकार के सत्संग में सारी रात्रि बीत जाती थी। यहाँ यह

---

१. आर. बी. भा. १ पृ. ३६ पर इसका उल्लेख नहीं है । यह इसके बदले में दौलतशाद बीबी से शकरुन्निसा के होने का तथा किस प्रकार सलीम को उसका दूध पिलाया गया इस विचित्र घटना या रीति का वर्णन है, जो इसमें नहीं दिया है और ठीक भी ज्ञात नहीं होता । इसके बाद आराम बानू के होने का उसमें उल्लेख है ।

२. आर. बी. में उसी पृष्ठ पर लिखा है कि अकबर ने इसे अपनी 'लाडिली' पुत्री कहा था ।

कह देना चाहिये कि वह दिन रात में जितना सोते थे वह सब मिलाकर पूरा एक प्रहर भी नहीं होता था।

हमारे पिता का निजी साहस ऐसा था कि मस्त बिगड़ैल हाथियों को, जिन्होंने दो तीन हाथियों को मार डाला था, हथिनी पर सवार होकर या जब हथिनी भी उसके पास नहीं जा सकती, जैसा कि हाथियों की आदत है कि वे हथिनियों को अपने पास नहीं आने देते तब भी यह किसी प्रकार उस पर सवार हो जाते और उसके बराबर पहुँच कर उस पर कूद जाते थे। जो हाथी हथिनियों को किसी प्रकार अपने पास नहीं आने देते थे तो यह किसी दीवाल या पेड़ पर चढ़ जाते और जब वह उसके नीचे से आगे बढ़ता तब यह उस पर कूद पड़ते। जनसाधारण यह साहस देखकर आश्चर्य-चकित हो जाते थे और ईश्वर की कृपा तथा स्नेह से वह हाथी इनके वश में हो जाता।

बुद्धिमत्ता तथा सिपहगरी में हमारे पिता इतना बढ़े हुए थे कि जब हमारे पितामह जिन्नत आशियानी हुमायूँ बादशाह की मृत्यु हुई तब यह चौदह वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठे और पाँच छ महीना बादशाही किया था कि इन्हें हुमायूँ के अनन्तर संसार-विजयी झंडा अपने हाथ में लेना पड़ा[1]। उसी समय काफिर हेमू अफगानों का बादशाह बनकर और सेना तथा हाथियों के आधिक्य एवं कोष के घमंड में २ मुहर्रम ९६३ हि० गुरुवार को (२० नवम्बर सन् १५५५

१—आर. बी. भा. १ पृ० २८-९ पर बैरम खाँ द्वारा कलानौर में अकबर का गद्दी पर बैठाया जाना तथा दिल्ली के पास तर्दीबेग तथा हेमू के युद्ध का एवं बैरम खाँ द्वारा तर्दी बेग के मारे जाने का उल्लेख भी है।

ई०)[1] युद्धार्थ सेना सामने लाया। हमारे पिता ने भी अपनी विजयी सेना साथ लेकर उससे युद्ध आरंभ कर दिया। उस समय इनकी अवस्था चौदह वर्ष की थी। यह संग्राम नामक मस्त हाथी पर सवार होकर खूब लड़े। काफिर हेमू के पास चालीस सहस्र सवार और एक सहस्र मस्त हाथी थे। उसने दो एक युद्ध किन्हीं भारी राजाओं से किए थे और उनको पराजित करके बड़ा बहादुर बनकर स्वयं मस्त हाथी पर सवार होकर युद्ध के लिए आया था। दैवयोग से दोनों ओर से तीर, गोली और अग्निवर्षा से आकाश अंधकारपूर्ण हो गया।

शैरों का अर्थ—

दो लड़ती हुई सेनाओं के पीछे से प्रलय निकलकर आकाश तक पहुँचा।

तुरहियों के शोर से हाथ और पाँव में कंप-ज्वर आ गया।

उस पर कमानों पर टेढ़ापन आ गया और बहुत शीघ्र चारों ओर अँधेरा छा गया।

भागनेवालों के लिए उस युद्ध में न खड़े रहने का स्थान था और न भागने का मार्ग।

वहाँ सशस्त्र मनुष्यगण भूमि पर गिरे पड़े हैं।

काँटे की नोक के समान तीर पर तीर चलकर ढालों पर ढालः फूलों की तरह शोभित हुईं।

स्वरक्षा में हर एक मारकाट कर रहा है, नहीं तो किसी को दूसरे को मारने से क्या काम!

१—आर. बी. में सन् ९६४ हि० और अंग्रेजी तारीख ५ नवम्बर सन् १५५६ लिखा है।

इसी समय हमारे पिता का सौभाग्य प्रबल हुआ और एकाएक एक तीर उस काफिर की आँख में इस प्रकार लगा कि इस ओर से घुसकर सिर के पीछे से निकल गया, जिससे वह नर्क चला गया। उसकी सेना यह हाल देखकर भाग गई और उसके हाथी, कोष तथा सामान लुट गए। दैवयोग से शाह कुली खाँ महरम कुछ वीरों तथा प्रसिद्ध सैनिकों के साथ उस काफिर हेमूँ के हाथी तक पहुँच गया, जिस पर वह हौदा था, जिसके बनाने में बीस सह स्रतूमान एराकीका सोना तथा रत्न व्यय हुआ था। हर एक उसे अपने लिए ले लेना चाहता था पर उसे लूटने से बचाकर युद्ध करते हुए उसे हाथी सहित हमारे पिता के सामने ले आए। उस अभागे के सिर से टोपी खींचकर उसको भी, जिसमें अस्सी सहस्र तूमान के हीरे, माणिक पन्ने, तथा मोती लगे हुए थे, सामने उपस्थित किया। यह हमारे पिता की प्रथम विजय थी और यह भारी कोष तथा सामान उनको मिला था। इस लिये इसे भाग्योदय का शुभ सगुन समझा और शाहकुली महरम को चार हजारी मंसब, डंका और झंडा दिया। उस काफिर हेमूँ के हाथी[1] को विजय का सगुन समझ कर खास अपनी सवारी में रखा। उसी समय बैरम खाँ ने प्रार्थना की कि हजरत, अपने पवित्र हाथ से एक चोट इस काफिर के शरीर पर कर दें जिससे 'ग़ज़ा' का पुण्य प्राप्त हो। इस पर हमारे पिता ने उत्तर दिया कि एक दिन पुस्तकालय में ख्वाजा अब्दुस्समद के आगे। चित्र का अभ्यास कर रहा था कि उसने एक चित्र मेरे हाथ में दिया हमने पास वालों से पूछा कि यह चित्र किसका है? उत्तर मिला कि यह चित्र हेमूँ काफिर का है। उसी समय मैंने उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला और हवा में उड़ा दिया। तात्पर्य यह कि मैंने इसको उसी दिन मार डाला तथा गजा का पुण्य लूट लिया था। अब यह अपने दंड को पहुँचा। जब गिनती की गई तब ज्ञात हुआ कि काफिरों की सेना के

१—इस हाथी का नाम आर. बी. में हवाई लिखा है।

आठ सहस्र आदमी उस युद्ध में मारे गए। इनके सिवा बहुत से घायल हुए और पिता की ओर चले आए।[1]

मिर्जा इब्राहीम हुसेन और मिर्जा शाह मिर्जा ने कुल गुजरातियों को मिला कर तथा अहमदाबाद दुर्ग आकर उसे घेर लिया और उसके चारों ओर भारी सेनाएँ नियत कीं। यह समाचार हमारे पिता को मिला, जो उस समय फतहपुर में थे और जहाँ से दो महीने के मार्ग पर गुजरात है। खानआजम भी आकर उपस्थित हुआ और उससे सम्मति हुई। [2]खानआजम की माता जीजी बेगम भी उस सम्मति में सम्मिलित था। यह निश्चय हुआ कि यदि विशाल बादशाही सेना ईश्वरीय कृपा के साथ बिना रुके फतहपुर से तुरंत रवाना हो जाय तो उस भारी (शत्रु) सेना का पूरा जवाब दिया जा सकता है। हमारे पिता ने उच्चता की बाग-डोर तथा संसार-विजयी झंडा को उस ओर मोड़ा और दिन-रात कभी घोड़े पर और कभी तीव्रगामी ऊँट पर सवार होकर मारामार चले गए। अंत में दो महीने का मार्ग बीस दिन में समाप्त

१—आर. बी. भा. १ पृ० ३९-४० पर इस युद्ध का विवरण कुछ हेर फेर के साथ दिया गया है पर उसमें जो परिवर्तन हैं वे कुछ ठीक नहीं हैं। जहाँगीर ने इस विजय का सारा श्रेय अपने पिता ही को दिया है और बैरमखाँ के सेनापतित्व का उल्लेख तक नहीं किया है।

२. खानआजम अजीज कोका अहमदाबाद में घिरा हुआ था इसलिए यहाँ इसका उल्लेख प्रतिलिपिकार के भ्रम से होगया है। आगे भी खानआजम का अहमदाबाद से ससैन्य निकलकर युद्ध करने का उल्लेख है।

कर स्वयं शत्रु पर जा पहुँचे। १० जमादिउस्सानी सन् ९८० हि०[1] बुधवार को जब शत्रु की सेना के पास पहुँचे और गुजरात की सेना का कोई चिह्न नहीं दिखलाई पड़ा तब रात्रि-आक्रमण की राय हुई परंतु हजरत बादशाह ने कहा कि रात्रि आक्रमण कायरों तथा कपटियों का कार्य है। आज्ञा दी कि बादशाही डंकों को पूरे लवाजिमे के साथ आगे लाओ और उन सबके आने पर बजाने की आज्ञा दी। इस पर शत्रु की सेना में बड़ा शोर मचा। शत्रु ने उस दिन घेरे को बहुत कड़ा कर दिया था।

ज्योंही प्रभात हुआ त्योंही सब एक साथ साबरमती नदी के किनारे पहुँचे और तब आज्ञा दी कि सब लोग इसी व्यूह से नदी में घोड़े डाल दें और उस पार पहुँच जायँ क्योंकि नदी के इस ओर जंगल बहुत है और युद्ध के लिए स्थान कम है।

मुहम्मद हुसेन मिर्जा ने इस शोर गुल के बीच कुछ वीरों को नदी के किनारे भेजा कि अग्गल सेना के अध्यक्ष सुभानकुली बेग तुर्कमान से

---

१. आर. बी. भा० १ पृ. ४० पर ५ जमादिउल् अव्वल सन् ९८० हि०, १५ सितंबर सन् १५७२ ई० दिया है। ये तिथियाँ ठीक नहीं ज्ञात होतीं। मुग़ल दरबार भाग २ पृ० १४०६ पर लिखा है कि अकबर अपने १७ वें जलूसी वर्ष में गुजरात विजय कर तथा उसे खानआज़म की अधीनता में छोड़कर २ सफर सन् ९८१ हि० (३ जून सन् १५७३ ई०) को फतहपुर पहुँचा। इसके अनंतर अख्तयारुल्मुल्क तथा मिर्जाओं का पुनः उपद्रव हुआ, जिसका समाचार पाकर ४ रबीउल्अव्वल (४ जुलाई) को अकबर पुनः शीघ्रता से गुजरात गया। स्मिथ साहब लिखते हैं कि अकबर २३ अगस्त को रवाना हुआ, २ सितंबर को युद्ध हुआ और ४ अक्तूबर सन् १५७३ ई० को राजधानी लौट कर पहुँच गया। जहाँगीर ने भ्रम से पहली चढ़ाई का सन् लिख दिया है।

शत्रु के वृत्तांत का पता लगावें। उस ओर से शत्रु-सेना ने चिल्लाकर सुभान कुली वेग से इस सेना का हाल पूछा कि यह सेना किसकी है और इसका सर्दार कौन है? सुभान कुली वेग ने उत्तर दिया कि अरे वेखवर अभागो, यह विजयी सेना बादशाही है और स्वयं बादशाह उतरे हुए हैं। यद्यपि उनके हृदय का साहस छूट चुका था परंतु अपने दुर्भाग्य से विश्वास न करके वे कहने लगे कि बादशाही सेना तथा हाथी कहाँ हैं? यह क्या बात है, आज चौदह दिन हुए कि हमारे जासूसों ने बादशाह को फतहपुर में छोड़ा था और दो महीने से कम समय में बादशाही सेना और हाथी यहाँ नहीं पहुँच सकते। तुम्हारी यह बात झूठ है, तुम लोगों को मृत्यु यहाँ तक खींच लाई है।

इस ओर बादशाह ने आज्ञा दी कि मिर्जा को सेना सजाकर तैयार हो जाने दो और उतनी देर तक प्रतीक्षा में ठहरे रहो। इसी बीच करावलों ने समाचार दिया कि शत्रु सशस्त्र होगए हैं तब आज्ञा दी कि सेना को नदी के पार भेजें। बादशाह ने कई बार संदेश भेजा पर खान-कलाँ[1] आगे नहीं बढ़ा और बादशाह के पास प्रार्थनापत्र भेजा कि शत्रु की सेना बहुत है और गुजरात के चार बादशाह मिलकर एक होगए हैं। लगभग बाईस सहस्र युद्धीय सवार तैयार हैं और मैं इनकी सेना से सावधान हूँ। तीन सहस्र ऊँट आतिशबाजी के सामान सहित इनके पास हैं इसलिए जब तक खानखानाँ तथा खानजहाँ के अधीन और अन्य शाही सेना इकट्ठी न हो जाय तब तक यह नीतियुक्त नहीं है कि आप इस थोड़ी सेना के साथ नदी के इस ओर आवें और शत्रु का सामना करें। बादशाह ने उत्तर में कहा कि 'हम सर्वदा, विशेषकर ऐसे ही समय ईश्वरीय कृपा पर दृष्टि तथा ईश्वरीय सहायता पर विश्वास रखते हैं। शैर का अर्थ—

---

१. खानआज़म से तात्पर्य है।

मित्र (ईश्वर) जब सहायक है तो सारा संसार भले ही शत्रु हो जाय।

भाग्य जब साथ नहीं देता तो भूमि शत्रु के अधीन होती है॥

यदि हमारी दृष्टि केवल प्रकट घटनाचक्र पर होती तो इस प्रकार अकेले शत्रु का सामना करने नहीं आते। अब शत्रु युद्ध के लिए तैयार है तब इस समय हमारा रुके रहना योग्य नहीं है क्योंकि शत्रु के हृदय को हमारे रुकने से संतुष्टि होगी।'

यद्यपि अमीरों तथा विशिष्ट सर्दारों ने भी रुकने की सम्मति दी पर बादशाह ने ईश्वर पर पूरा भरोसा कर उन वीरों तथा विशिष्ट सरदारों के साथ, जो उस समय सवारी के पास रहकर प्रतिष्ठित तथा गर्वित हो रहे थे, उस नदी में घोड़ा डाल दिया और ईश्वर की कृपा तथा बादशाही सौभाग्य से सरलता के साथ सब उस पार पहुँचकर जम गए। उस समय तक छोटे बड़े सब मिलाकर दो सहस्र[1] से अधिक सेना एकत्र नहीं हुई थी। बादशाह ने अपना चोगा[2] माँगा कि उसे ओढ लें पर ज्ञात हुआ कि धावे की शीघ्रता में सेवकों ने उसे दैवयोग से मार्ग में गिरा दिया था। इस पर बादशाह ने कहा कि यह शकुन हमारे लिए अच्छा हुआ कि हमारे युद्ध का मैदान विस्तृत हो गया अर्थात् बिना बोझ के अब युद्ध कर सकेंगे। इसके अनंतर एक एक वीर अपने को नदी में डालकर तथा सैनिक प्रथा को छोड़कर इस पार आने और जमा होने लगे। इस प्रकार नदी पार करने के कार्य से सबने छुट्टी पाई।

---

१. प्राईस के अनुवाद में पाँच सहस्र लिखा है।

२. आर० बी० भा० १ पृ० ४२ पर ख़ूद अर्थात् लोहे की टोपी लिखा है और आगे बोझ के स्थान पर मुख खुला रहना लिखा है।

अभागा मिर्जा भारी सेना को व्यूह में सजाकर अपने स्वामी से युद्ध करने को तैयार हुआ। खानआजम, जिसे इसका गुमान भी न था कि बादशाह इतनी फुर्ती तथा शीघ्रता से वहाँ तक पहुँच जायँगे, दुर्ग से बाहर निकलकर अपने को बादशाह के पैरों पर डाल दिया और शपथें खाकर कहने लगा कि हमें अभी तक विश्वास नहीं होता कि श्रीमान् आ पहुँचे हैं। आसफखाँ भी सेना में आ पहुँचा और बहुत से अन्य सर्दार भी एक के अनंतर दूसरे बादशाह के पास आ पहुँचे। इसी समय एकाएक शत्रु-सेना जंगल में से बाहर निकली। बादशाह का पूर्ण विश्वास ईश्वरी सहायता पर था इसलिए साहस के साथ अपना प्रबंध ठीक कर आगे बढ़े। मुहम्मद कुली खाँ तथा तर्खान दीवाना ने बहुत से वीरों के साथ, जो करावल (मध्य) में स्थित थे, आगे बढ़कर शत्रु पर आक्रमण किया पर कुछ ही प्रयत्न कर पीछे हट आए। इस पर बादशाह ने बहुत क्रुद्ध होकर राजा मुकुंद सिंह (भगवानदास) से कहा कि यद्यपि शत्रु असंख्य हैं पर हम ईश्वर पर विश्वास रखकर आए हैं इसलिए चाहिए कि हम सब एक मत तथा एक मुख होकर इस शत्रु-सेना पर आक्रमण करें क्योंकि बँधी हुई मुट्ठी खुले हाथ से अधिक प्रभावशाली होती है। इधर मुहम्मद हुसेन मिर्जा अपनी सेना से अलग होकर शीघ्रता से बढ़ रहा था। शाह कुली महरम तथा हुसेन खाँ तुर्कमान ने प्रार्थना की कि आक्रमण करने का समय आ गया है। बादशाह ने उत्तर दिया कि हाँ, काम करने का समय आ गया और बादशाही सेना के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़कर पास पहुँचे। बादशाह कोहपारः नामक घोड़े पर सवार हुए, जो कई बार हाथी के मुख में घुस पड़ा था और हाथ में भाला लेकर वीरों के साथ धावा करने को तैयार हुए। पैंतालीस जोड़े डंकों पर जो हाथियों पर जमाए गए थे, चोटें पड़ने लगीं और तुरहियाँ जोर से बजने लगीं। तब तलवारें खींचकर तथा 'अल्लाहो अकबर'

एवं 'या मुईन या मुईन' का शोर मचाते हुए सभी युद्ध करने लगे।

शेर का अर्थ—

जब सेना सेना से भिड़ गई तब युद्धस्थल में प्रलय मच गया
समय के जोश ने समय के होश को काट डाला,
और आकाश के कान को शोर ने फाड़ डाला।

शत्रु-सेना के दाएँ भाग को बादशाह के प्रताप ने थोड़े ही प्रयत्न पर अपने आगे से भगा दिया और मुहम्मद हुसेन मिर्जा बादशाही सेना के बाएँ भाग को परास्त कर तथा कुछ आगे बढ़कर ठहर गया। ईश्वरीय शक्ति तथा बादशाही प्रताप से अग्गल के कुछ वीरों ने पहुँचकर बड़ी वीरता दिखलाई। उन अभागे शत्रुओं ने बादशाह के सामने की ओर बोक-बान चलाने की इच्छा की, जो एक प्रकार की अतिशबाजी है और जो शत्रु के पीछे की ओर से आ रही थी परंतु दैवयोग से शत्रु के एक सर्दार के हाथ से, जो आतिशबाजी के कार्य में लगा हुआ था, असावधानी से आग उस पलीते में लग गई जिससे पाँच सौ बान बँधे हुए थे और जिन सब बानों का मुख शत्रु ही की ओर था। जिस समय उस ओर एकाएक आग लगी तब शत्रु की सेना में बड़ा शोर मचा। इस कारण कि शत्रु पक्ष के कुछ प्रसिद्ध सर्दारों के पाँव उखड़ गए शत्रु सेना में भगद्दड़ मच गई। साथ ही हर एक बान जो शत्रु की ओर जाता था वह उन अन्य बानों पर गिरता था जो ऊँट तथा हाथी पर लदे थे और आग लगने से शत्रु की सेना को नष्ट कर डाला।[1] हमारे पिता ने कुछ ही आगे बढ़ कर बाग खींच ली

---

१. इसका उल्लेख आर० बी० में नहीं है। इसमें कौकबाई अतिशबाजी से शत्रु के हाथी के बिगड़ने तथा अपने ही पक्ष के सैनिकों को अस्त-व्यस्त कर देने का उल्लेख है।

और सेनापतित्व के नियम को हाथ से नहीं जाने दिया। वह खड़े रहकर शत्रु-सेना की दुर्दशा देखने लगे। ऐसा ज्ञात होता था कि मानों एक लाख युद्धीय पुरुषों ने उनपर धावा कर दिया है और वे भाग रहे हैं। किंतु हमारे पिता भाग्य की आतिशबाजी के बरसने से असावधान थे और नहीं ध्यान था कि उनके सिर पर क्या आ रहा है। अभी मध्य की सेना नहीं पहुँची थी कि दूसरी सेनाएँ शत्रु की सेना को हटा ले गईं। बादशाह ने उस युद्धस्थल में चारों ओर आँखें दौड़ाईं परंतु कुछ सेवकों तथा स्वामिभक्तों को छोड़ कर कोई दूसरा सेवा में उपस्थित नहीं था। उन्होंने कहा कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा नदी के उस पार अपनी सेना के साथ युद्ध कर रहा है। मानसिंह दरबारी बादशाह की दृष्टि के सामने शत्रु पर विजयी हुए और राघोदास कछवाहा ने बादशाह के सामने अपने प्राण निछावर कर दिए। मुहम्मद हुसेन मिर्जाई [1] वफादार वीरता दिखलाकर और दाहिने हाथ में चोट खा कर घोड़े से गिर पड़ा। फिर भी घोर युद्ध होने लगा और शत्रु के हर एक सर्दार पास पहुँच जाते थे। परंतु इन अभागों को अभी तक बादशाह के आने की सूचना नहीं मिली थी। इसी समय शत्रु के तीन मनुष्य उस स्थान की ओर चले जहाँ बादशाह खड़े थे। इनमें से दो आदमी तो दूसरी ओर निकल गए पर एक अभागा धावा करता इतना पास आ गया कि उसका कंधा बादशाह के कंधे से इस प्रकार भिड़ गया कि उसकी चोट से हमारे पिता को बहुत कष्ट हुआ और उसकी पीड़ा से बहुत दुख उठाया। बादशाह ने पूछा कि यह कौन मनुष्य है, जो ऐसी तीव्रता से इस प्रकार सवार होकर आया तथा निकल गया। पर हमने भी अच्छा साहस कर उसको भगा दिया।

---

१. आर० बी० पृ० ४३ पर मुहम्मद वफा नाम दिया हुआ है।

इसी समय मध्य के सिपाही पास आ पहुँचे और शत्रु-सेना के परास्त होने और उन अभागों के भागने का समाचार बादशाह को सुनाया। बादशाह ने सैनिकों को आज्ञा दी कि जहाँ तक हो सके उनका पीछा कर उनके पास अपने को पहुँचाओ और मारो, जिससे उन अभागों में से एक भी बचकर न निकल जाय। इसके साथ ही शत्रु के सामान को लूटना, मस्त हाथियों को लाना और अच्छी वस्तुओं का संग्रह करना आरंभ हुआ। शुजाअतखाँ ने मुहम्मद हुसेन मिर्जा के साथ आकर पहले हमारे पिता के विजयी रिकाब पर सिर रखकर कहा कि केवल ईश्वर की कृपा और बादशाह के प्रताप से यह विजय हुई नहीं तो किसे यह गुमान था कि इन थोड़े आदमियों के साथ आप इस प्रकार थोड़े समय में असंख्य शत्रु-सेना को परास्त कर देंगे। बादशाह ने ईश्वर की प्रार्थना की और धीरे धीरे अहमदाबाद की ओर चले। इसी समय एक आदमी[1] ने आकर निवेदन किया कि सैफखाँ और कोकल्ताश खाँ बहुत युद्ध कर मारे गए। बादशाह ने कुछ क्षण तक दुखित रहकर अपने को सान्त्वना दी। ज्ञात हुआ कि जहाँ मुहम्मद हुसेन मिर्जा कुछ लुच्चों के साथ था, जिसने मध्य सेना पर आक्रमण किया था, वहीं सैफखाँ उनके बीच में पड़ गया था और कोका के उसके पास पहुँचने पर दोनों साथ ही वीरता दिखाकर मारे गए थे। सैफखाँ जैनखाँ कोका का भाई था। मिर्जा भी मध्य-सेना के पास पहुँचते ही घायल हो गया और भागा। विचित्र बातों में एक यह भी है कि युद्ध के एक दिन पहले बादशाह ने भोज दिया जिसमें बहु से रम्माल भी उपस्थित थे। बादशाह ने उनसे पूछा कि किसकी विजय

१—आर. बी. में एक कलावंत लिखा है और केवल सैफ खाँ कोकल्ताश के मारे जाने का उल्लेख है।

होगी ? उन सबने कहा कि विजय श्रीमान् ही की होगी परंतु एक बड़ा सर्दार मारा जायगा। उसी रात्रि को सैफ खाँ कोका ने प्रार्थना की कि श्रीमान्, कहीं यह सौभाग्य मेरा हो तो मैं आपके काम आ जाऊँ। सैफ खाँ ने जैसा चाहा वैसा ही हुआ।

शेर का अर्थ

उस शकुन से जो कुछ खेल में भी इच्छा की, वैसा ही उस नक्षत्र के बीतते ही ठीक उतरा।

संक्षेप में जब मिर्जा हुसेन भाग रहा था तभी उसके घोड़े को काँटे की चोट पहुँची और घोड़ा गिर पड़ा। बादशाह के पार्श्ववर्तियों में से एक सर्दार[1] उसी समय सिर पर पहुँच गया और उसे पकड़कर दया के साथ उसके हाथ को पीछे बाँध दिया कि कहीं फिर न भाग जाय। इसके अनंतर घोड़े पर सवार कराके बादशाह के सामने लिवा लाया। अन्य दो मनुष्यों ने उसके पकड़ लाने का शोर मचाया तब बादशाह ने मिर्जा से पूछा कि तुम्हें किसने कैद किया है? मिर्जा ने कहा कि मुझे बादशाह के निमक ने पकड़ा है। तब हमारे पिता ने वैसे समय में उसपर कृपा करके कहा कि इसके हाथ पीछे से खोलकर आगे बाँध दो। इसके उपरांत उसे मानसिंह दरबारी को सौंप दिया। इसी समय मिर्जा ने पीने के लिए पानी माँगा पर इस पर पानी तो नहीं मिला प्रत्युत् फर्हाद खाँ[2] अफ़गान ने दोनों हाथों से उसके सिर पर धौल मारी। जब बादशाह ने यह घटना देखी तब इसपर आपत्ति की और अपने निजी पीने का पानी मँगाकर उसे दिलवाया।

१—आ. बी. भा. १ पृ० ४४ पर गदा अली अहदी नाम दिया है।

२—आ. बी. भा. १ पृ० ४४ पर फर्हत खाँ नाम दिया है।

खानआज़म[1] ने बादशाह से कहा कि आप गुजरात की सेना से असतर्क न हों। यद्यपि वह पराजित हो चुकी है और उसका एक सर्दार पकड़ा भी गया है परंतु दूसरे सर्दारगण जंगल में भाग गए हैं और कुल बातें जानकर गए हैं इससे कहीं ऐसा न हो कि दूसरी ओर से आक्रमण कर दें और चोट पहुँचे। बादशाह धीरे धीरे आगे बढ़े और मिर्ज़ा को मानसिंह[2] को सौंपा, जिसकी पुत्री हमारे पिता के हरम में है और जो अच्छी सेना का स्वामी है, जिसमें वह उसे हाथ बाँधकर हाथी पर सवार करके नगर में ले जावे। इसी समय जंगल की ओर से भारी सेना, जो बीस सहस्र के लगभग थी, प्रकट हुई। वह अख्तियारुल् मुल्क गुजराती था, जो अपनी सेना सजाकर बादशाह की सेना में आ रहा था[3] परंतु शाही सेना में उसे देखकर फिर भय तथा घबड़ाहट पैदा हो गई। बादशाह ने भी आज्ञा दे दी कि युद्धीय डंके पीटे जायँ और वीरगण ताज़े घोड़ों पर सवार होकर युद्ध के लिए फिर तैयार हो जायँ। शुजाअत खाँ और राजा भगवानदास ने आगे बढ़कर युद्ध आरंभ कर दिया और तीर तथा गोली चलने लगी। राजा भगवानदास ने बादशाह को कहला भेजा कि अब अवसर नहीं रहा कि आप मिर्ज़ा को जीवित रक्षा में रखें क्योंकि कहीं दूसरे प्रकार की घटना न हो जावे। हमारे पिता इतने दयालु थे कि उसके ऐसे स्वामिद्रोह पर भी उसको मारने के लिए

१—आर. बी. भा. १ पृ० ४४ पर खानआज़म का बादशाह के पास अभी तक नहीं आना लिखा है।

२—आर. बी भा. १ पृ० ४४ पर राय रायसिंह राठौड़ लिखा है।

३—आर. बी. भा. १ पृ० ४४ में पाँच सहस्र सेना लिखा है और बादशाह की सेवा में आने का उल्लेख नहीं है।

तनिक भी राजी नहीं हुए। अंत में शेर मुहम्मद[1] ने बादशाह को बिना सूचित किए मिर्जा को हाथी पर से नीचे डाल दिया और उसका सिर काट डाला।

अख्तियारुल्मुल्क ने इस प्रकार कचाई की थी कि उसने पहले किसी को बादशाह के पास इस संदेश के साथ नहीं भेजा कि मैं सेवा करने के लिए आ रहा हूँ, युद्ध के लिए नहीं। इस कारण जब युद्ध का शोर मच गया और बादशाही सेना ने युद्ध आरंभ कर दिया तथा उसको अपना वृत्तांत कहने का अवसर नही मिला तब वह अपने सगे लोगों के साथ प्राण बचाकर निकल जाना चाहता था पर उसके घोड़े का पैर गढ़े में जा पड़ा जिससे वह गिर पड़ा। उसी समय सुहराब खाँ तुर्कमान उसके ऊपर पहुँच गया और घोड़े से उतरकर उसका सिर काट जंगल से बाहर निकल आया। जब उसके सैनिकों ने यह समाचार सुना तब जिनके पास ताजे घोड़े थे वे सवार होकर भाग निकले। लगभग तीन सहस्र आदमी बिना प्रयत्न के मारे गए और नई दूसरी विजय प्राप्त हो गई। बादशाह पूर्ण वैभव के साथ अहमदाबाद नगर में पहुँच गए और वहाँ सात दिन रहे। इसके अनंतर अहमदाबाद नगर को खानखानाँ[2] को सौंपकर बंगाल की चढ़ाई के लिए चले।

बंगाल की विजय की विशेष प्रसिद्धि हुई। काफिरों के दुर्गों को जैसे

१—आर० बी, भा. १ पृ० ४४ पर राजा भगवान दास की राय से राय रायसिंह के मनुष्यों के द्वारा मारा जाना लिखा गया है।

१—भूल से खानआजम के स्थान पर खानखानाँ लिख गया है। अब्दुर्रहीमखाँ खानखानाँ अकबर के २१ वें जलूसी वर्ष में गुजरात का शासक नियत हुआ और ३३ वें वर्ष में इसे खानखानाँ की पदवी मिली। उस समय मुनइमखाँ खानखानाँ था, जो बिहार-बंगाल के उपद्रवों को शांत करने में लगा हुआ था और जहाँ गुजरात-विजय के अनंतर उसकी सहायता को अकबर स्वयं गया था।

चित्तौड़, रणथंभौर आदि को स्वयं सेना सहित जाकर विजय किया। चित्तौड़ के दुर्गाध्यक्ष जयमल[1] राम को, जो कभी कभी दुर्ग के ऊपर से तमाशा देखने को दुर्ग से सिर बाहर निकालता था, हमारे पिता ने स्वयं गोली मारी थी। इसी प्रकार के कार्य उन्होंने अपने हाथ से किए थे और इनकी वीरता की ख्याति सारे संसार में फैली। अब वह बंदूक हमारे पास है और उसका नाम 'दुरुस्त अंदाज'[2] है। वह अपने समय की उत्तम बंदूकों में से है। हमारे पिता स्यात् इसी बंदूक दुरुस्तअंदाज से तीन चार पशु तथा पक्षी का अहेर करते थे और इसी कारण इस बंदूक को बहुत पसंद करते थे। हमने भी बंदूक चलाने में दक्षता प्राप्त की है और अन्य शस्त्रों से बंदूक से अहेर खेलने में हमें अधिक रुचि है। इससे हम जब अहेर खेलने जाते हैं तब प्रति दिन इस बंदूक से अठारह बीस खरगोश से कम नहीं मारते हैं।

बादशाह में त्याग का भी एक विशेष गुण था कि वह साल भर में तीन महीने मांस की ओर रुचि नहीं करते थे। जिस महीने में वह पैदा हुए थे उसमें जानवरों के मारने की निषेधाज्ञा बराबर के लिए दे दी थी और सूफियों का खाना, जो निरामिष होता था, खाकर कालयापन करते थे। रमजान के ईद के दिन ईदगाह में जाकर दो बार निमाज पढ़ते थे और बहुत सा खैरात करते थे[3]।

१—आर. बी. में जीतमल लिखा है, जो अशुद्ध है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० ४५ पर संग्राम नाम लिखा है। हो सकता है कि जहाँगीर ने इसका नाम बदल दिया हो।

३—आर. बी. भा. १ पृ० ४५ पर यह भी लिखा है कि 'अकबरनामा में उन दिनों तथा महीनों का विस्तार से वर्णन है जब वह मांस नहीं खाते थे।' इसी के अनंतर मुईज्जुलमुल्क के दीवान बयूतात नियत किए जाने का हाल दिया गया है, जो इस प्रति में नहीं है।

मीर जमालुद्दीन हुसेन आँजू हमारी शाहजादगी के समय हमारा पूरा पक्षपाती था और हमारे पिता के काल में हमसे विशेष सुव्यवहार रखता था तथा एक हजारी मंसबदार था। उसको तीन हजारी मंसब, जड़ाऊ तलवार, जड़ाऊ कमरबंद, चारकब, जड़ाऊ जीन, डंका तथा झंडा देकर सम्मानित किया। शेख हुसेन जामी के दरवेशों को पाँच हजार रुपए दिए। सौ लाख दाम (ढाई लाख रुपए) दौलत मुहम्मद[1] को देकर आदेश दिया कि फकीरों में वितरित कर दे। मीर जमालुद्दीन हुसेन, मीरान सदरजहाँ और मीर मुहम्मद रजा हर एक को एक एक लाख रुपए[2] दिए कि दरिद्रों में बाँट दें। इसी प्रकार प्रति दिन एक एक दानाध्यक्ष नियत कर पचास सहस्र दाम फकीरों में बाँटने को दे देते थे।

६ शव्वाल को हमने आज्ञा दी कि उत्तर प्रांत के अधिकारी लोग हर प्रकार के रुपए तथा मोहर को जो तौल में बराबर न हों उन्हें अप्रचलित कर दें और उनके नए सिक्के बनाए जायँ जिससे हमारे राज्यकाल में उनमें तौल की किसी प्रकार की कमी न रहे।

बनारस के शेख को 'शरीअत' के भीतर आज्ञापत्र भेजा कि हिंदू लोग अपने मंदिरों में जाकर एक प्रकार की पूजा करते हैं। इस कारण कि वास्तव में वे भी उसी खुदा की ओर लौ लगाए हैं, उनको कोई उस कार्य में न रोके। इसी प्रकार सदर के अन्य अधिकारी लोग भी

१—आर. बी. भा. १ पृ० ४६ पर दोस्त मुहम्मद नाम दिया है और सौ लाख के स्थान पर कुछ लाख है।

२—आर. बी. में रुपए के स्थान पर दाम है और यही ठीक है क्योंकि इसी प्रति में आगे दाम लिखा गया है

उसमें हस्तक्षेप न करें। इसके सिवा साधारण स्त्री-पुरुषों के लिए मीरान सदरजहाँ को और विधवा स्त्रियों की सहायता के लिए हाजी कोका को नियत किया। मखदूमज़ादा हाजी बरकात को छ सहस्र रुपए और छ लाख दाम कृपा कर दिया। सादिक मुहम्मदखाँ के पुत्र जाहिद खाँ को, जो डेढ़ हजारी था, दो हजारी मंसबदार बना दिया। हमने यह भी आज्ञा दी कि जिस किसीको घोड़ा या हाथी पुरस्कार में मिले, हमारी खास सरकार से उसका जिलवाना ले लिया करें और कोई इस बारे में किसीसे लोभ न करे अर्थात् पुरस्कार-रूपी घूस न ले[1]।

इसी समय शालिवाहन दक्षिण से आया और हमारे भाई दानियाल के हाथियों को हमारे सामने लाया। उन कुल मस्त हाथियों में एक हाथी 'अलूबत' नाम का दिखलाई पड़ा, जिसका हमने इंद्रगज[2] नाम रखा। इस हाथी की विचित्रताओं में से एक यह है कि उसके कानों के दोनों ओर बराबर एक रूप के पुरवे निकले दिखलाई पड़ते थे और उनमें से मस्ती का पानी तथा पसीना निकला करता था। अन्य हाथियों में मस्ती का पानी रानों के बीच से निकलता है[3] ऐसा ऊँचा हाथी देखने में नहीं आया था कि चौदह सीढ़ियाँ चढ़कर ही उस पर सवार हो सकते थे।

---

१. आर० बी० भा० १ पृ० ४६ पर 'जिलवाना' लिखा है, जो नकीब तथा मीर आखोर लोग लेते थे। उसी को न लेने की आज्ञा दी थी। इस पारा का जिलवाना के अंश को छोड़कर और अंश आर० बी० में नहीं दिया है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० ४७ पर नूर गज नाम लिखा है पर वह ठीक नहीं जान पड़ता।

३—इसके बाद का अंश हाथी या दानियाल संबंधी आर. बी. में नहीं है।

उससे अधिक सुंदर कोई दूसरा हाथी नहीं दिखाई दिया। आदमियों ने कहा कि मृत शाहजादा हाथी तथा दूसरे सामान व्यापारियों से उनपर अत्याचार कर बलात् ले लेता था। (यह सुनकर हमने आज्ञा दी कि) यदि उनमें से कोई मनुष्य उपस्थित हो तो उसे जो कुछ हानि पहुँची हो उसे उसको दे दिया जाय क्योंकि अपने मृत भाई के लिए हम कंजूसी करना नहीं चाहते थे।

हमने मिर्जा रुस्तम के पास एक आज्ञापत्र भेजा कि वह उस बंदूक के गुण तथा अच्छाई बतलावे, जिसके बदले में वह उसके स्वामी को बारह सहस्र तथा दस घोड़े देने को तैयार था और तब भी उसके स्वामी ने नहीं स्वीकार किया। इस समय वह बंदूक हमारे पास है और तुम उसके गुणों को विस्तार से बतलाओ तो वह तुम्हें उपहार में दे दें।[1]

१७ शब्वाल शनिवार को रत्नों की एक माला अपने पुत्र खुर्रम को दिया[2]। वह बहुत शिक्षित है और आशा है कि वह योग्यता तथा शिक्षा की सीमा तक पहुँचेगा। तुर्कमान बेग के सेवक मुहम्मद: बेग को योग्य मंसब दिया।[3] उसी दिन काजी अब्दुल्ला काबुली को जिसने एक प्रार्थनापत्र स्वयं लिखकर भेजा था कि यदि साम्राज्य में जकात क्षमा

१—यह बात बिना किसी संबंध के बीच में लिख दिया है और मिर्जा रुस्तम ने कोई उत्तर दिया या नहीं इसका इस प्रति में उल्लेख नहीं है। प्राइस ने अपने अनुवाद में लिखा है कि उसने चार गुण बतलाए—१. सौ गोली चलाने पर भी गर्म नहीं होती २—स्वयं जल उठती है। ३—ठीक निशाना लगाती है। ४—पाँच मिसकाल की गोली लेती है। इस पर उसे वह भेंट में मिल गई।

२—आर. बी. में भी इतना ही है पर प्राइस ने कई वस्तुएँ आठ लाख रुपए मूल्य की देने का उल्लेख किया है।

३—इसका उल्लेख प्राइस के अनुवाद में नहीं है क्योंकि यह बात बहुत साधारण थी।

बेगम को दे दिया। हमारे पिता ने खुर्रम को इसी को सौंपा था और यह अपने शरीर से उत्पन्न संतान से बढ़कर खुर्रम को प्यार करती थी[1]।

मंगलवार ११ वीं तारीख[2] को जब सूर्य मेष में उदय हुआ और हमारी राजगद्दी के बाद के प्रथम नौ रोज़ को हमने वैसी कुल सजावट कराई जैसा हमारे पिता प्रति वर्ष नौ रोज के अवसर पर कराते थे। उस राजसिंहासन को, जिसमें हीरे, पुखराज तथा अन्य प्रकार के बहुत से अच्छे रत्न लगे हुए थे तथा बहुत धन जिस पर व्यय हुआ था, बाहर निकलवाकर दीवान खास में रखवाया। अनेक प्रकार के जड़ाऊ सामान तथा अच्छी तस्वीरों एवं जरबफ़्त की वस्तुओं को निकलवाया जिनसे सारे महल, दीवान खास और दीवान आम सजाए जा सकते थे। हमने अपने पिता के सर्दारों को आज्ञा दी कि वे भी सजावट करें और उन सबने अन्य वर्षों से इस बार बहुत बढ़कर सजावट किया। उन सब अच्छे रत्नों, हाथी-घोड़ों तथा अलभ्य सामान और संसार की दुर्लभ वस्तुओं को हटवा दिया[3] परंतु कुछ सेवकों की उनकी खातिर सहस्र में से एक

---

१. आर० बी० भा० १ पृ० ४८ पर रुकिया सुलतान बेगम नाम लिखा है, जो अकबर की पत्नी थी। शाहकुली के निस्संतान मरने से खालसा हो जाने के कारण बाग के देने का उल्लेख है।

२. आर० वी० भा० १ पृ० ४८ पर '११ जीक़दा सन् १०१४ हि० (११ या १२ मार्च सन् १६०६ ई०) जब सूर्य मीन राशि से मेष में गए लिखा है।

३. जहाँगीर ने इस वर्ष सर्दारों की भेंट नहीं ग्रहण करने का निश्चय किया था और उन सबने जो भेंट उपस्थित किया था उसीके संबंध में यह वाक्य है। इस प्रति में एकाध वाक्य छूट गया है। जिससे भाव स्पष्ट नहीं हुआ है।

की (कुछ भेंट) स्वीकार किया। जैसे अमीरुल् उमरा की सारी भेंट की वस्तुओं में से बहुत थोड़ा हमने स्वीकार किया और इसी प्रकार कुछ दूसरों का।

दिलावर खाँ अफगान को डेढ़ हजारी मंसबदार बना दिया। राजा बासू को, जो डेढ़ हजारी था, तीन हजारी[1] मंसबदार बना दिया। शाही बेग खाँ का मंसब, जो कंधार का शासक तथा तीन हज़ारी था, पाँच हजारी कर दिया। रायसिंह को भी यही मंसब देकर सम्मानित किया। मुल्ला जलालुल्ला फराही[2] को, जो सम्मानित व्यक्ति है, आदेश दिया कि उसकी जो इच्छाएँ हों उन्हें वह हम से कहे। उसने आशीर्वाद तथा प्रशंसा के साथ मुँह खोलकर कहा कि मेरी इच्छाएँ स्वामी की प्रसन्नता है और मुझे जो मौजे जीविका-वृत्ति में मिले हैं उनका लिखित प्रमाण पत्र मिलना चाहिए। इसके लिए आज्ञा देदी और उसे एक सहस्र रुपए पुरस्कार में दिए। बारह सहस्र रुपए हमने राजा सगरा[3] को दिए। राजा बासू ने प्रार्थना की कि राजा गोपाल की इच्छा है कि वह नंतसूर के मार्ग में एक बाग व सराय बनवावे। उसकी प्रार्थना के अनुसार तथा मनुष्यों के सुख व लाभ के विचार से आज्ञा दे दो कि आसपास के करोड़ी तथा जागीरदार लोग आवश्यक वस्तुओं को उस तक पहुँचा दें और इस कार्य में कुछ भी कमी न करें। इस काफिर की हिंदुओं के अग्रगण्य लोग पूजा करते हैं और अपनी जाति का प्रवर्तक समझते हैं। दैवयोग से जब खुसरो को बल्ख की ओर भागने के समय जमुना नदी पार करने में उस स्थान तक जाना पड़ा तब उसने

---

१. आर० बी० भा० १ पृ० ४९ पर साढ़े तीन हजारी लिखा है।

२. आर० बी० में इसका उल्लेख नहीं है।

३. इसका नाम आर० बी० में बराबर शंकर दिया गया है।

इसे टीका लगाया, जिसे हिंदू लोग शुभ शकुन समझते हैं, और उसके लिए प्रार्थना किया। वास्तव में उसने खुसरो का पक्ष ग्रहण कर लिया था और अपने को दंडनीय बनाया था। वह अंत में अपने दंड को पहुँचा। उसके पुत्र को अपने पिता के कार्यों के कारण मुचलका देना पड़ा। इसने अपने पिता के दोष में सहयोग नहीं दिया था इसलिए इसे क्षमा कर छोड़ दिया।

राजः अली बिहिश्ती की मृत्यु के समय बड़ा उपद्रव मचा और आस पास के दुर्ग घेर लिए गए। कुलीज खाँ, कुतुबखाँ कोका, शेख बायजीद और बसंत खाँ की प्रार्थना पर हमने विशाल सेना राजा विक्रमाजीत से बड़े सर्दारों के अधीनकर और मंसबदारों में से छ सात सहस्र सवारों के लगभग राजा विक्रमाजीत को देकर वहाँ भेजा[1]। उस ओर से खानखानाँ ने अपने पुत्र मिर्जा एरिज को नियत किया पर वह युद्ध करने का साहस न कर तथा सेना अस्तव्यस्त कर अपने पिता के पास लौट गया। उसी दिन पर्वेज का प्रार्थनापत्र पहुँचा कि राणा ने मांडल का थाना त्यागकर भागना आरंभ किया है और सेनाएँ उसका पीछा कर रही हैं। उसके संबंध में सबसे बड़ा काम यही था कि यदि वह विद्रोही हमारी सेवा स्वीकार कर ले तो उसे उसके योग्य मंसब देकर सम्मानित कर दें।

१. गुजरात में मुजफ्फर हुसेन मिर्जा के पुत्रों ने जब उपद्रव किया और यतीम बहादुर तथा राजे अली भट्टी मारे गए तब अन्य सर्दारों की प्रार्थना पर राजा विक्रमाजीत भेजे गए। इसे विद्रोह शांति पर एक सदी मंसब तक का अधिकार मिला था और इसे गुजरात का प्रांताध्यक्ष भी नियत किया गया था। आर० बी० भा० १ पृ० ५०।

सूर्यवार को अमीरुल्उमरा का मंसब हमने बढ़ा दिया। लश्कर खाँ मशहदी को हमने दो हजारी मंसबदार बना दिया[1]। नवाजिश खाँ मेहू[2] को एक हजारी कर दिया। इसका नाम सआदत था और यह जिन्नतमकानी शाह तहमास्प का दास था। शाह ने इसको जिन्नत-आशियानी हुमायूँ बादशाह के पास भेज दिया था। यद्यपि यह कठोर हृदय तथा उपद्रवी था परंतु पुरानी सेवाओं का यह स्वत्व रखता था। इसके हाथ में फर्राशी, फर्राशखाना, सजावट तथा पेशखाना के कार्य थे। हमने भी इस पर बहुत कृपा की।

८ जीहिज्जः सन् १०१४ हि०[3] (३१ मार्च सन् १६०६ ई०) को रविवार की दो घड़ी रात्रि बीतने पर खुसरू अभागे तथा स्वार्थी उप-द्रवियों और राजपूतों के झुँड के साथ हमारे पास से भागकर पंजाब

---

१. इन दो का आर० बी० में उल्लेख नहीं है।

२. आर० बी० भा० १ पृ० ५० पर इसका नाम पेशरौ खाँ लिखा है और इसे दो हजारी मंसब देने का उल्लेख है। मुगलदरबार भा० ४ पृ० ११-२ पर इसकी जीवनी दी गई है जिससे आर० बी० का समर्थन होता है। नवाजिशखाँ भी पदवी इसे मिली होगी।

३—अन्य प्रति में २० जीहिज्जा भी लिखा है, जो १२ अप्रेल होगा, पर उसमें दिन नहीं दिया हुआ है। डा० बेनीप्रसाद ने अपने 'जहाँगीर' में ६ अप्रैल की संध्या को भागना लिखा है (पृ० संख्या १४०) और ऐसा आर. बो. के आधार पर लिखा गया है। (भा० १ पृ० ५२) इसके पहले जहाँगीर के कुछ विचार हैं, जो नीचे संक्षेप में दिए जाते हैं।

खुसरो के मस्तिष्क में यौवन के अहंकार से कुछ व्यर्थ की बातें समा गई थीं और पिता की बीमारी के समय कुसंग भी मिला था। ये अयोग्य मित्र अपने दोषों से क्षमा के योग्य न थे अतः उन्होंने खुसरू को

की ओर चल दिया।[1] दो घड़ी रात्रि होने पर खुसरू के चिराग़ची ने, जो वज़ीरुल्मुल्क का परिचित था, आकर समाचार दिया कि आज की रात्रि दो घड़ी बीतने पर शाहजादा खुसरू बाहर गया और एक और घड़ी बीत गई पर अभी वह लौटा नहीं है। ख्वाजा[2] यह समाचार सुनकर मार्ग से लौट फिर दरबार आया और खुसरू के महल के ख्वाजासराओं को बहुत प्रयत्न कर बुलाया तथा उनसे ठीक ठीक पता लगाया कि क्या खुसरू वास्तव में भाग गया है। जब यह समचार निश्चित ज्ञात हो गया और इस कार्य में डेढ़ घड़ी का समय बीत गया तब खुसरू के भागने के समाचार पर विश्वास कर अमीरुल्उमरा हमारे यहाँ आया। हम हरम में थे। इसलिए ख्वाजा इखलास को अपने पास बुलाकर कहा कि हमें कुछ आवश्यक प्रार्थना करना है इससे बादशाह शीघ्र बाहर पधारें। यह सुनकर हमने अनुमान किया कि उपद्रव के घर गुजरातसे या

उभाड़ा। इससे हमने खुसरू को प्रायः अन्यमनस्क तथा उदासीन पाया और हमने इसे दूर करने के लिए प्रयत्न भी किया पर सफल नहीं हुआ। इसी समय इसने अपने साथियों की सम्मति से यह उपद्रव खड़ा किया।

१—सिकन्दरा में अपने पितामह अकबर का मकबरा देखने के बहाने निकला था।

२—चिरागची ने यह संदेश पहले वजीरुल्मुल्क से कहा था, ऐसा ज्ञात होता है पर आगे चलकर लिखा है कि ख्वाजा ने जाँच पड़ताल की और तब अमीरुल् उमरा ने आकर हमसे कुल वृत्तांत कहा। ख्वाजा महम्मद शरीफ ही शरीफ खाँ अमीरुल्उमरा है अतः इसी से संदेश कहा गया था और इसीने जहाँगीर से भी कहा था। उस समय मिर्जाजान बेग वजीरुल्मुल्क था। आर. बी. भा. १ पृ० ५२ पर लिखा है कि वजीर ने चिरागची के साथ अमीरुल्उमरा के पास जाकर उससे कहा था।

दक्षिण की ओर से कुछ समाचार आया होगा। जब हम बाहर आए तब अमीरुल् उमरा[1] ने खुसरू के भागने का पूरा विवरण सुनाया। इसपर हमने उससे पूछा कि क्या करना चाहिए, क्या हम स्वयं सवार हों या अपने पुत्र खुर्रम को उसका पीछा करने भेजें, जिसमें उसको शीघ्र पकड़ लिया जाय? अमीरुल् उमरा ने प्रार्थना की कि यदि इस दास को आज्ञा हो तो ईश्वर की कृपा तथा बादशाह की दया से यह काम इच्छानुसार पूरा हो जाय। साथ ही यह भी प्रार्थना की कि यदि खुसरू युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाय तथा हथियार हाथ में ले तो उस अवसर के लिए क्या आदेश है। हमने उत्तर दिया कि यदि समझ लो कि बिना युद्ध के काम नहीं हो सकता तो कुछ कसर न रखना क्योंकि राजकार्यों में पुत्र होने का संबंध मान्य नहीं है। यदि दूसरा भी राजभक्ति के कार्य में प्रयत्न करता है तो वह सहस्र संबंधियों तथा पुत्रों से अच्छा है।[2]

१—मुहम्मद शरीफ ख्वाजा अब्दुस्समद शीराजी चित्रकार का पुत्र था। यह प्रकृत्या ओछा था और अकबर के समय एक लुच्चे का साथ देने के कारण दंडित हुआ था। यह जहाँगीर का सहपाठी था और उसके विद्रोह के समय इसने उसका साथ दिया था। जहाँगीर का इसपर विशेष स्नेह था, जैसा कि इसी पुस्तक में पहले लिखा जा चुका है पर वह इसकी योग्यता तथा प्रकृति को भली भाँति जानता था। यही कारण है कि इसे खुसरू का पीछा करने की आज्ञा देकर भी पुनः लौटा लिया और शेख फरीद को भेजा। इसने अमीरुल्उमरा होते भी कभी कोई उल्लेखनीय काम नहीं किया।

२—इसके आगे का शेर तथा पूरा पारा आर. बी. में नहीं दिया है। इसमें संबंधियों के स्थान पर दामाद दिया है। देखिए आर. बी. भा. १ पृ० ५२।

शैर का अर्थ

यदि अन्य स्वामिभक्त है तो वह मित्रता में अपनों से बढ़कर है।

जो कोई अपने स्वामी तथा सम्राट् की हितेच्छा में प्रयत्न करता है वह उस बादशाह की विशेष कृपा व दया का पूर्ण स्वत्व के साथ पात्र हो जाता है। वह घमंड़ी तथा काम भूलनेवाला नहीं होता। जो पुत्र अहंकार-वृत्ति के कारण घमंडी होकर पिता के स्वत्व तथा पुत्र के एवं साम्राज्य के कर्तव्य को नहीं मानता और उसपर जो कृपाएँ हमने की है उन्हें भूल जाता है, वह हमारे लिए अनजान है। पुत्र सम्राटों के साम्राज्य की रक्षा के लिए है परंतु जब वह शत्रु बन जाता है तब वह उसके समान है जो प्रासाद की नींव को खोदता है और उसके ऊपर अटारी उठाता है। और भी जो हम पर क्रोध करता है तथा हमसे युद्ध करता है एवं हमारी कृपाओं को भूल जाता है तो हम उसके संबंध तथा निजीपन को नहीं देखते। ऐसा ही शासन के नियमों में है जैसे कि रूम के कैसर के यहाँ की प्रथा है कि राज्य की दृढ़ता के लिए कुल पुत्रों में से एक की रक्षा करते हैं और बाकी को परलोक विजय करने को भेज देते हैं।[1] यदि हमारे सहायकों में से एक सहायक ऐसी अवस्था में साम्राज्य की रक्षा के लिए तथा संसार में उपद्रव न फैलने देने को उसे शांत करने के लिए वैसा करे तो क्यों न करे। दूसरे पुत्र की योग्यता तथा विद्वत्ता का विचार भी है जो अपने उस जीवित पिता के साम्राज्य की इच्छा करता है जिसने उसपर इतना

१—ऐसी प्रथा तुर्की के सुलतानों में कुछ दिनों तक थी। कभी कभी छोटे पुत्र भाग कर अन्य देशों में चले जाते थे। दक्षिण की एक सल्तनत का संस्थापक तुर्की ही का भागा हुआ शाहजादा इतिहास में बतलाया गया है। यह पूरा पारा आर. बी. में नहीं है।

प्रेम दिखलाया है और इसी से वह बड़ा पुत्र होते इस अवस्था को पहुँचा है। यदि अब भी हम असावधानी करें और जान बूझकर साम्राज्य के कार्यों को इस प्रकार के मूर्ख, नासमझ तथा राजद्रोही को सौंप दें तो मानों अपने हाथ से ईश्वरीय साम्राज्य को अवसर पर अनुचित रूप से एक मूर्ख को दे दें, जिसमें उसके उपयुक्त योग्यता तथा शक्ति नहीं है और जिसकी मूर्खता तथा कठोरता से प्रजा नष्ट-भ्रष्ट हो तथा हम ईश्वर के दरबार में प्रार्थना करते समय लज्जित हों। यद्यपि हमने अत्याचार का छोटे कामों में भी पक्ष नहीं लिया है पर ऐसे कार्य में अत्याचार की आवश्यकता है।

इस प्रकार के लाभदायक उपदेशों को अमीरुल्उमरा की सम्मति ही से हम अधिक जानते हैं[1] कि ऐसी घटनाओं में जो सामने आ पड़ी हों वह पूछने का भिखारी हो परंतु उसने सावधानी तथा सतर्कता से अपने मनुष्यों की दृढ़ता के लिए हम से पूछा था। जब वह हमारे सामने से कुछ दूर गया तभी हमारे मन में विचार आया कि यद्यपि अमीरुलउमरा हमारा शुभचिंतक तथा पार्श्ववर्ती है और विशिष्ट पार्श्ववर्ती है पर स्यात् ऐसी घटना में तथा हम से अलग रहने पर और उपद्रवियों में से बहुतों से वैमनस्य होने के कारण स्वयं भागने का ध्यान रखा तो हमारी हितेच्छा नहीं की। साथ ही उसका खुर्रम के साथ जाना हमें उचित नहीं जान पड़ा क्योंकि वह खुसरू से छोटा था[2] और साम्राज्य की प्रथानुसार जनसाधारण की आस्था बड़े पर अधिक होती

१—इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि महम्मद शरीफ इस प्रकार की बातें सदा जहाँगीर से कहता रहता था और इसकी सम्मति भी जहाँगीर बहुत मानता था।

२—मूल फारसी का यही भाव है कि महम्मद शरीफ खुसरू से अवस्था में छोटा है पर यह भूल ज्ञात होती है। खुसरू इस घटना के

है। हम अमीरुल्उमरा को पुत्र के समान मानते थे इसलिए उसके जाने के तीन घड़ी बाद हमने भी इच्छा की कि हमें भी सवार होना चाहिए और इसमें आलस्य करना अनुचित है। ऐसी अवस्था में हमने आदमी पर आदमी भेजे कि अमीरुल्उमरा को लौटा लावें और शेख फरीद बख्शी[1] को कुल आदमियों के साथ, जो उस रात्रि में रक्षा पर नियत थे, तैयार होने की आज्ञा भेज दी। आगरा नगर के कोतवाल एहतमाम खाँ को आज्ञा दी कि जितने सर्दार, मंसबदार उपस्थित हों तथा कुल अहदियों को, हमारे सवार होने का निश्चय करने पर, सवार हो हमारे पीछे आने को कह दे[2]।

दोस्त मुहम्मद और अहमद बेग काबुली, जो पंजाब और काबुल की ओर जाने की आज्ञा पा चुके थे सिकंदरा से कुछ आगे बढ़कर उतरे हुए थे। वे दोनों वहाँ से लौटकर इसी बीच आ गए और प्रार्थना की कि शाहजादा खुसरू पंजाब की ओर शीघ्रता से जा रहा है। इस पर हमने आज्ञा दी कि जितने तीव्रगामी घोड़े तथा ऊँट हमारे यहाँ हों सबको जीन कसकर हमारे सामने लावें और जिन जिन पर हमारा पूरा

समय अठारह वर्ष का था और महम्मद शरीफ पैंतीस छत्तीस का था। अतः यहाँ पदेन छोटा लिखने का तात्पर्य हो ठीक है। खुसरू बड़ा शाहजादा था और यह नया अप्रसिद्ध मंसबदार था। यह भी हो सकता है कि खुर्रम के लिए कम अवस्था होने का उल्लेख हो, जो वास्तव में खुसरू से छोटा था पर खुर्रम भेजा ही नहीं गया था। आर. बी. भा. १ पृ० ५३ पर खुर्रम का यहाँ उल्लेख भी नहीं है।

१—यह अनुभवी सेनापति था। देखिए मुगलदरबार भाग ४ पृ० ५२-६१।

२—आर. बी. भा. १ पृ० ५३ पर लिखा है कि मुइज्जुल्मुल्क बुलाने को भेजा गया था और वह अमीरुल्उमरा को लौटा लाया।

विश्वास था उन्हें एक एक देकर स्वयं सवार हुआ[1]। इसी समय हमारे ध्यान मे आया कि कहीं बाईं ओर के मार्ग से न गया हो[2] इसलिए जो कोई मार्ग में हमें मिलता था उसी से उसका समाचार पूछा जाता था। हर एक यही कहता था कि पंजाब की ओर गया है। प्रभात की सफेदी फैल रही थी[3] कि हम सिकंदरा पहुँचे, जो आगरे से तीन कोस पर है और जहाँ हमारे पिता का पवित्र मकबरा है। यहाँ मिर्जा शाहरुख के पुत्र मिर्जा हुसेन[4] को हमारे सामने उपस्थित किया, जो खुसरू के

१—खुसरू का पीछा करने को जाने के पहले जहाँगीर ने आगरे की रक्षा के लिए एक समिति नियुक्त कर दी थी जिसका प्रधान खुर्रम था। अन्य सभ्य शेख अलाउद्दीन वजीरुलमुल्क, मिर्जा गियास बेग एतमादुद्दौला, राजा राम सिंह भुरटिया तथा दोस्त बेग ख्वाजाजहाँ थे। आर. बी. में ऊँट घोड़े का उल्लेख नहीं है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० ५२ पर लिखा है कि 'राजा मान सिंह उसका मामा बंगाल में था इसलिए कई शाही सेवकों को शंका हुई कि वह उस ओर न गया हो।'

३—आर. बी. में प्रभात होने पर जहाँगीर की यात्रा का आरंभ लिखा है और यहीं दो शैर भी दिए गए हैं।

४—अन्य प्रतियों में मिर्जा हसन लिखा है। मिर्जा शाहरुख को छः पुत्र थे, जिनमें दो का नाम हसन व हुसेन था। मुगल दरबार भाग '५ में मिर्जा शाहरुख की जीवनी दी हुई है और उसमें हसन ही का खुसरू का पक्ष लेना लिखा है। इकबालनामा फारसी पृ० ६ पर यही नाम है। अतः हसन ही नाम ठीक है। इस प्रति में लेखक के प्रमाद से एक शोशा बढ़ जाने से यह भ्रम हुआ है। आर. बी. भा. १ पृ० ५४ पर भी हसन नाम दिया है।

पास जाना चाहता था। हमने जब उससे पूछताछ की तब वह अस्वीकार नहीं कर सका। इस पर हमने आज्ञा दी कि उसके हाथ बाँध कर हाथी पर बैठा दें। यह प्रथम शकुन[1] हुआ जो हमारे पिता अर्श-आशियानी की आत्मा की सहायता से हुआ था। दैवयोग से यह शकुन ठीक वैसा ही शकुन था जैसा हमारे पितामह हजरत जिन्नत आशियानी (हुमायूँ) को हुआ था। जब वह ग्यारह वर्ष की अवस्था में अपने पिता जहीरुद्दीन बाबर बादशाह के पवित्र मकबरे पर जा रहे थे उसी समय एक जानवर दिखलाई पड़ा। उन्होंने कहा कि यदि मेरे भाग्य में बादशाही है तो जो तीर मैं इस पक्षी पर चलाता हूँ वह इसे गिरा देगा। जब तीर चलाया तो उसने पक्षी के सिर में लगकर उसे गिरा दिया। इस पर उन्होंने कहा था कि जो कोई इच्छा, कार्य तथा मुहिम सामने आवेगा तो इच्छानुसार शकुन होने पर ही करना चाहिए क्योंकि उसी के अनुसार उसका फल होगा।

इसी शकुन के अनुसार घोड़े पर सवार होकर अपने पिता के पवित्र रौजे से आगे बढ़ा। अभी एक कोस भी आगे नहीं गया था कि एक मनुष्य हमारे सामने आया और वह हमें नहीं जानता था। हमने उससे उसका नाम पूछा तब उसने कहा कि मेरा नाम मुराद[2] ख्वाजा है। हमने कहा कि ईश्वर को धन्यवाद है कि हमारी इच्छा पूरी होगी। इससे कुछ और आगे बढ़ने पर मृत जहीरुद्दीन बाबर बादशाह के मकबरे के पास पहुँचा था कि देखा कि एक आदमी गधे पर ईंधन लादे उसे हाँकते हुए आगे जा रहा था और अपने पीठ पर काँटों का

१—शकुन शब्द का उच्चारण मुसल्मानगण शगून करते हैं और इसी रूप में यह इस प्रति में लिखा गया है।

२—मुराद का अर्थ इच्छा है।

एक बोझ रखे हुआ था। उससे भी हमने पूछा कि तेरा क्या नाम है ? उसने उत्तर दिया कि दौलत [1] ख्वाजा। हम बहुत प्रसन्न हुए और ईश्वर को धन्यवाद दिया। साथही हमने कहा कि कितना अच्छा होगा कि यदि जो अब आगे मार्ग में मिले उसका नाम सआदत [2] ख्वाजा हो। दैवयोग से कुछ ही आगे बढ़ा था कि दाईं ओर नदी के किनारे एक लड़का गायों को चराता हुआ मिला। उससे भी पूछा कि तेरा नाम क्या है तब उसने कहा कि सआदत ख्वाजा। सभी उपस्थित लोग यह सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और सबने ईश्वर को धन्यवाद दिया तथा उत्सव मनाया गया। इन तीन सफलता देनेवाले शुभ शकुनों के कारण हमने अपने सब राजकार्यों को तीन विभागों में बाँट कर इन तीन आनंददायक नामों पर उनका 'ईमान सुलासः' [3] नाम रखा।

दो पहर दिन चढ़ चुका था और सूर्य मध्य पर पहुँच गया था इसलिए हमने एक वृक्ष की छाया में कुछ देर रुक कर खानआजम [4] से कहा कि यद्यपि हम बादशाह हैं और इतने ऐश्वर्य तथा आराम के साथ जा रहे हैं तब भी इतना कष्ट पा रहे हैं कि हमारी (अफीम की) मोताद तक नहीं आई और सेवकों ने भी हमें याद नहीं दिलाया।

१—दौलत का अर्थ धन, ऐश्वर्य है।

२—सआदत का अर्थ अच्छा, भला है।

३—ईमान का अर्थ विश्वास, निष्ठा है और सुलासा का अर्थ तीन है। आर० बी० में हुमायूँ तथा जहाँगीर के शकुनों का कुछ भी उल्लेख नहीं है।

४—खानआजम मिर्जा अजीज कोका खुसरू का श्वसुर था और कहीं वह खुसरू का पक्ष न ग्रहण कर ले इसलिए जहाँगीर उसे अपने साथ लिवा लाया था।

ऐसी अवस्था में उस अभागे असितमुख की क्या दशा होगी जो डरता भागता मार्ग पर चला जा रहा होगा। निश्चय है कि ऐसी गर्म-वायु में वह हमसे अधिक कष्ट पा रहा होगा। हमारा यह रोष तथा क्रोध साम्राज्य के कारण शत्रु पर हुआ है और हमारा सुख शत्रुता के कारण अस्त व्यस्त हो गया। वास्तव में जिन वीरों तथा कर्मठों ने बहुत वर्षों तक हमारा साथ दिया था वे अब हमारे क्रोध के पात्र होकर दंड को पावेंगे। यदि हम तुरंत न सवार होकर असावधानी करते तो वह कहीं सीमा पर पहुँच जाता और बहुत से स्वार्थी उपद्रवी उसके पास इकट्ठे होकर इस कार्य को बहुत बढ़ा देते इसीलिए आवश्यक समझकर स्वयं सवार हो इस काम पर आए।

संक्षेपतः हम एक ग्राम में पहुँचे, जहाँ तालाब तथा बहुत से सायेदार वृक्ष थे, और वहीं उतर पड़े। यहाँ मथुरा से समाचार मिला जो हिंदुओं का तीर्थ स्थान है कि हुसेन बेग बदख्शी[1] ने अपने एमाकों के झुण्ड के साथ वहाँ बड़ी लूट मार तथा अत्याचार किया है और जो कुछ लूट लोगों के पास से मिली ले लिया है। यहाँ तक कि लोगों की पुत्रियों और बहिनों की रक्षा नहीं रह गई है। मार्ग में जिस व्यापारी को पा गए उसे लूटकर रात्रि के लिए खाने को भी उसके पास न छोड़ा। इन लोगों ने ऐसा अत्याचार और उपद्रव प्रजा में मचा दिया था तथा ऐसी कठोरता का बर्ताव किया था कि खुसरु भी इन लोगों से त्रस्त तथा

१—हुसेन बेग बदख्शी तीन सौ सवारों के साथ बादशाही आज्ञा के अनुसार दरबार की ओर जा रहा था। मथुरा में खुसरू से इसकी भेंट हुई और इसने उसका पक्ष ग्रहण कर लिया। यह खुसरू का प्रधान सम्मतिदाता हो गया। इसी के सैनिकों ने विशेषकर मथुरा में उपद्रव मचाया था। खुसरू की सेना भी क्रमशः बढ़कर बारह सहस्र हो गई थी।

भयभीत हो उठा और अपने कर्म से लज्जित तथा दुखी होकर आश्चर्य के साथ अपने सेवकों से बोला कि मैं कहाँ जा रहा हूँ और किससे अपने को अलग कर रहा हूँ ? मेरा वह सम्मान तथा आदर कहाँ गया कि हर एक पाजी तथा ओछा मनुष्य मुझको मिर्जा कहे और बहुत नम्रता दिखलावे। मेरे पिता के पैतृक देश में ये लोग जो अत्याचार करें उसमें इच्छा या अनिच्छा से मुझे राजी होना पड़ेगा। इस प्रकार के विचारों से अपनी अवस्था पर लज्जायुक्त तथा भर्त्सनापूर्ण बातें कह कर भी, जो उसके दुर्भाग्य के उपयुक्त था और अकल्याणकर था, उसने उसको शांत करने का कुछ प्रयत्न नहीं किया, जिसे अपनी मूर्खता तथा गर्वेपन से कर चुका था और जिस पर दुखी होकर लज्जित हो चुका था। ईश्वर के लिए यदि वह जिस समय दुखी हुआ था उसी समय हमारी सेवा में चला आता तो हम उसके कुल दोषों को क्षमा कर देते प्रत्युत् पहले से उसका विशेष विश्वास हो जाता क्योंकि अकबर की रुग्णावस्था में उसने हमारे साथ जो दुर्व्यवहार किया था उससे हमने उस पर बहुत कुशंका तथा वैमनस्य मान रखा था पर ज्योंही उसने पश्चात्ताप प्रगट किया हमने वह सब शंकाएँ भुला दीं। अकबर की बीमारी के समय की घटना तथा स्वार्थी सर्दारों के झगड़े हमारे सौभाग्य ही से हुए थे और ईश्वरी कृपा से बिना परिश्रम के बादशाही हमें मिल गई। वह घटना भी संसार की एक विचित्रता है, जिसका विवरण इस प्रकार है।[1]

१६ जमादिउल् अव्वल सन् १०१४ हि० सोमवार को रोग के बढ़ जाने पर भी अकबर बादशाह इच्छानुसार महलवालों से भोजन तथा मेवे मँगवा कर खा गए और वार्द्धक्य के कारण वह पचा नहीं। ऐसी

१—आर० बी० भा० १ पृ० ५५ पर ये ही बातें कुछ घटा बढ़ा कर लिखी गई हैं।

अवस्था में जूआ खेलने के कारण अमीनुद्दीन पर वह बहुत बिगड़े और इसी संबंध में उसकी भर्त्सना करते हुए कहा कि तुझ पर ईश्वर की मार है कि इस अवस्था में भी जुआ खेलता है और कौड़ी उठाता है। इस प्रकार क्रोध करने से उनके रोग बढ़ गए और अनपच भी हो गया। मंगलवार २० जमादिउल् अव्वल को दो पहर रात्रि बीतने पर ऐसा हुआ और उन्होंने सारे दिन-रात कुछ नहीं खाया। दूसरे दिन रस लिया। मंगलवार को अभागे हकीम अली से रुष्ट होकर कहा कि आने तथा धन चाहने में तो बहुत प्रयत्नशील पर औषधि करने के समय सिर चुरा लेना। हकीम अली ने उत्तर में कहा कि बिना अच्छी प्रकार समझे हुए काम करना अच्छा नहीं है, औषधि करने में विचार करना उचित है और उपयुक्त औषधि दी जाय तो अवश्य लाभदायक हो। बादशाह ने अपनी राय से और महल के पार्श्ववर्तियों की सहानुभूति से घृतयुक्त खचड़ी लाए जाने पर उसमें से कुछ खाया पर पाचन शक्ति की नर्बलता से वह पच न सका और संग्रहणी हो गई। हकीम मुजफ्फर कहता था कि हकीम अली ने औषधि करने में बड़ी भूल कर दी कि रोग के आरंभ में इन्हें तर्बूज दे दिया था। हमने शुभेच्छा तथा उदारता से मन में निश्चित किया कि हकीम मुजफ्फर ने ईर्ष्या से या स्वार्थ की दृष्टि से ऐसा कह दिया होगा इसलिए हमने हकीम अली को पददलित नहीं किया। यदि ईश्वरीय मृत्यु तथा वैद्यों की भूल न हो तो कोई न मरे और वैद्य लोग स्वयं न मरते। हमने दूरदर्शिता तथा दया से हकीम अली से इतना कह दिया पर उस पर से हमारा विश्वास उठ गया।

उन दिनों आदत के अनुसार दो तीन घड़ी दिन रहते हम पिता की सेवा में पहुँच जाते थे। उनकी निर्बलता बहुत बढ़ गई। १४ जमादिउस्सानी मंगलवार को दवा खिलाने के लिए प्रातः काल ही

वहाँ गया। एक बार पिता ने कुछ स्वस्थ रहने पर हमें उपदेश दिया कि बाबा, यहाँ मत आया करो और यदि आओ तो अपने आदमियों तथा सैनिकों के साथ आया करो। इस आदेश के अनुसार उसी समय से रक्षा का प्रबंध हम रखने लगे। एक दिन हम अपने सैनिकों के साथ दुर्ग के भीतर गए। दूसरे ही दिन बादशाह से बिना पूछे ही दुर्ग के सभी फाटक दृढ़ता से बंद कर दिए गए और बुर्ज आदि पर तोपें चढ़ा दी गईं। १९ जमादिउस्सानी बृहस्पतिवार से उन आदमियों के हमसे वैमनस्य रखने तथा भय मानने से हमने दुर्ग में जाना छोड़ दिया। यही सम्मति राजा मान सिंह की मुकर्रब खाँ द्वारा लिखी हुई हमें मिली। मुकर्रबखाँ ने दुर्ग में बहुत परिश्रम किया तथा स्वामिभक्ति के कारण इस बीच तनिक भी आराम नहीं किया और हमसे बिगड़े हुए सरदारों को पुनः मिला लिया। जिस समय पिता के राज्यकाल में वह दो हजारी मंसबदार था उस समय हमने मुकर्रबखाँ से कितना भी कहा कि वह हमसे कुछ माँग ले पर उसने कुछ नहीं माँगा। जिस दिन हमारे पिता ने हमें दस हजारी मंसब प्रदान किया उस दिन अपने पार्श्ववर्तियों में से जिस प्रथम मनुष्य को हमने मंसबदार बनाया वह हमारे पिता का आदमी मुकर्रबखाँ था और उसे एक हजारी की उन्नति दी। वह हमारा बड़ा हितैषी है। जितने समय तक हमने दुर्ग में जाना छोड़ दिया उतने समय हमारा हृदय पिता को न देख सकने के कारण उद्विग्न रहा परंतु हमने इस बात को किसी पर प्रगट नहीं किया और ईश्वर में मन लगाए रहा। हमने अपने कुल कार्यों को रक्षक ईश्वर के ऊपर छोड़ दिया पर कुछ अनुभवी विद्वानों को, जैसे मीरान सदरजहाँ, मीर जिया-उद्दीन कजवीनी तथा ख्वाजा वैसी हमदानी को, अपने इस कष्ट से अवगत करा दिया था।

इन लोगों ने शाह इस्माइल जिन्नतमकानी और सुलतान हैदर मिर्जा की घटना का स्मरण कराया कि शाह तहमास्प जिन्नत आशियानी

की मृत्यु के समय कुछ सर्दारों ने मिर्जा इस्माइल की बादशाही के लिए प्रयत्न किया, जो दुर्ग में उपस्थित था। संयोग से जिस रात्रि को इन सर्दारों के पहरा देने की पारी थी उसी रात्रि इन सबने मिर्जा इस्माइल की बहिन से सम्मति की और कहा कि बहुत से सर्दार चाहते हैं कि इस बहाने से कि शाह ने बुलाया है दुर्ग के भीतर चले आवें और उन सबको पकड़कर हैदर मिर्जा को बादशाह बनावें। उसी रात्रि में शाह तहमास्प की मृत्यु हो गई और हुसेन बेग तथा अन्य सर्दारगण, जो हैदर मिर्जा के राजत्व के इच्छुक थे, इस घटना को सुनतेही उसके भाई मुस्तफा मिर्जा को साथ ले दुर्ग पर चढ़ आए और घोर युद्ध हुआ। जब दुर्ग वाले इस घेरे से घबड़ा उठे तब सुलतान हैदर मिर्जा का सिर काटकर दुर्ग के नीचे फेंक दिया। मुस्तफा मिर्जा तथा अन्य सर्दारों ने यह घटना देखकर साहस छोड़ दिया और दस सहस्र आदमियों के साथ भागने का निश्चय किया। भागने के अनंतर सेना भी उससे अलग हो गई परंतु हुसेन बेग अपने कुछ भाइयों के साथ नहीं भागा। कुछ समय के अनंतर हुसेनबेग ने मुस्तफा मिर्जा को पकड़कर शाह इस्माइल के सामने उपस्थित किया, जिसने उसे मरवा डाला।

मिसरे का अर्थ

देश में छिद्र करनेवाले को गिरा देना ही उत्तम है।

जब हमने अपने हितैषियों तथा विश्वासपात्रों की सम्मति से दुर्ग में जाना छोड़ दिया तब अपने पुत्र पर्वेज को पिता की सेवा में भेजा और प्रार्थना की कि सिर की पीड़ा इतनी अधिक है कि इतनी दूर भी सेवा में नहीं पहुँच सकता। हमारे पिता ने बड़ी कृपा करके आशीर्वाद का हाथ उठाया और ईश्वर से मेरे अच्छे होने की प्रार्थना की। जब हमारे विरोधी अमीरों ने यह हाल देखा तब मुसल्मानों ने कुरान पर और हिंदुओं ने नमक की शपथ खाई कि हम लोगों की एक ही बात है।

शेख फरीद बुखारी ने कहा कि अपने काम के लिए चिंता न करें। हमारा विचार है कि शेख फरीद ने कुछ दिन इन उपद्रवियों के बीच बिताया था क्योंकि अपने आदमियों के साथ वह सेवा में रहता था। हम जानते हैं कि वह मुकर्रब खाँ के साथ सुव्यवहारपूर्ण पत्रव्यवहार रखता था। खानआज़म मिर्जा कोका ने मुसल्मानों तथा हिंदुओं से वचन तथा प्रतिज्ञा लेली थी और खुसरू से कहला भेजा था कि आपको बादशाही मुबारक हो पर मैं डरता हूँ कि कहीं पिता तथा पुत्र एक हृदय होजायँ और मैं झूठा तथा अविश्वासपात्र हो जाऊँ और दोनों ओर से लज्जित होऊँ। खुसरू ने इसके उत्तर में बेपरवाही से कहलाया कि जब बादशाही हमारे लिए निश्चित होगई है तब यह सब कैसी बातें हैं।

इस प्रकार जब मिर्जा कोका तथा खुसरू दोनों निश्चित होगए तब द्वितीय ने राजा मानसिंह से कहा कि बादशाह में अब शक्ति अधिक नहीं है और सुखपाल के हिलने डोलने को सहन नहीं कर सकते। यदि सुखपाल में बादशाह की मृत्यु हो जायगी तो इसकी कुकीर्ति तुम्हारे माथे होगी। यह भी समझ लिया जाय कि दुर्ग के बाहर इनकी रक्षा नहीं है। राजा मानसिंह को यह सम्मति ठीक जँची। जिस समय बादशाह अकबर कुछ अचेत हुए तब राजा मानसिंह ने उनसे पूछा कि बहुत से लोगों ने शाहजादे के साथ आकर दुर्ग को घेर लिया है। यदि आज्ञा हो तो कुछ दिन नदी के उस पार चलकर व्यतीत करें और जब बादशाह कुछ स्वस्थ हो जायँ तब पुनः इस ओर चले आवें। बादशाह ने कहा कि यह समाचार कैसा है। इसके अनंतर तकिया माथे में लगाकर सेवकों की सहायता से करवट बदलकर वे सोए। मिर्जा अज़ीज़ कोका, जो कुल झगड़े की जड़ था, उस ओर गया जिधर करवट लेकर सोए थे और दोनों हाथों से संकेत करके पूछा कि खुसरू के लिए क्या आज्ञा है? इस पर बादशाह ने कहा कि आज्ञा, आज्ञा ईश्वरीय है,

हमारी है एक हृदय तथा सहस्र आशाएँ। अन्य सर्दारों ने समझा कि बादशाह मस्तिष्क से बात कह रहे हैं इसलिए चुप रहे। फिर बादशाह ने आँखें खोलकर कहा कि हमने इलाहाबाद में सेना पर कृपा रखने, प्रजापालन तथा अन्य गुण, जिनकी साम्राज्य तथा बादशाही में आवश्यकता है, सलीमशाह में देखे हैं और उसके प्रति हमारा स्नेह तथा प्रेम हमारे हृदय से निकल नहीं गया है। हमने खुसरू को बंगाल की बादशाही दी।

इन बातों को सुनकर झुंड के झुंड लोग हमारी सेवा में आए और भीड़ कर दिया। ऐसी भीड़ हुई कि लोगों को साँस लेना कठिन हो गया। मीरान सदरजहाँ, मीर जमालुद्दीन आंजू तथा ईदी ख्वाजा ने उनकी बातें सुनकर जो उचित समझा वह लिखकर भेजा। उसका तात्पर्य यह था कि बादशाह अकबर खुसरू को सदा सम्मान देकर कहा करते थे कि तुम अपने पिता को शाह भाई कहा करो। हिंदी भाषा में भाई बिरादर को कहते हैं। प्रार्थना यही है कि उससे भाई सा व्यवहार कीजिए। हमने उत्तर दिया कि अकबर बादशाह हमें बराबर बाबा कहा करते थे और लिखते थे। पुत्र कभी भाई या पिता नहीं हो सकता। जिस प्रकार बाबा की पदवी रखते हुए भी हम पिता नहीं हुए उसी प्रकार खुसरू भी भाई की पदवी रखने से भाई नहीं हुआ। सभी मनुष्य इस उत्तर को सुनकर विचार में पड़ गए और इस उत्तर का कुछ उपयुक्त प्रत्युत्तर नहीं दे सके। सबने अपने कार्य से लज्जित होकर सेवा में मन लगाया। परंतु मिर्जा ने दूसरा प्रार्थनापत्र दिया और एकांतवास करने के लिए आदेश माँगते हुए हमसे प्रार्थना की। हमने कहा कि पुराने स्वत्वों को ध्यान में रखकर हमने तुम्हारे छोटे बड़े दोषों को इस प्रकार क्षमा कर दिया कि निर्दोष लोग ईर्ष्या करते हैं कि हम भी सदोष क्यों नहीं होते। हमने सदा अपने हृदय का कोना, जो कृपा, क्षमा तथा

प्रसन्नता का आगार है, तुम्हारे लिए खुला रखा है, जिससे अच्छा कोना तुम्हें कहाँ मिलेगा। इतने पर भी ऐसी अपरिमित कृपा तथा आराम के रहते हुए यदि सुव्यवहार छोड़कर एकांतवास करने की बड़ी इच्छा हो तो वह प्रार्थना भी स्वीकार्य है।

१८ जमादिउल् आखिर गुरुवार को शेख फरीद बुखारी ने आकर सेवा की और उसे सेवा में पहले आने के कारण 'साहबुस्सैफ व अल्क़-लम' की पदवी से सम्मानित किया। इसके अनंतर राजा मानसिंह बाद-शाह की आज्ञा से मिलने आए और उन्हें जड़ाऊ खंजर दिया तथा विशेष कृपा दिखलाई। दूसरे दिन खुसरू, मिर्जा कोका और राजा मान-सिंह सेवा में उपस्थित हुए और प्रार्थना की कि खुसरू को बंगाल प्रदान किया जाय और पायंदः मुहम्मद खाँ उसके साथ रहे। यद्यपि हमारी इच्छा नहीं थी कि साम्राज्य के आरंभ ही में खुसरू हम से अलग होवे और हमारे सम्मतिदाताओं की भी यही राय थी पर हमने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और आदेश दिया कि इसी समय नाव से नदी पारकर दुर्ग में चले जायँ। पिता की उस घटना के अनंतर हम छुट्टी दे देंगे।

अकबर बादशाह ने खिलअत और अपनी पगड़ी जैसे सिर पर रखे हुए थे उसी प्रकार उतारकर हमारे पास भेज दिया। आवश्यकता होने के कारण सम्मान के साथ कुछ खिलअत पहिरकर दुर्ग के भीतर गया और पिता की आज्ञा की पूर्ति की। २० जमादिउस्सानी मंगल वार को हमारे पिता अकबर बादशाह को स्वाँस लेने में कष्ट होने लगा तथा मृत्यु पास आगई। जिस छाती में एक संसार गूँजता था उसी में से अब स्वाँस ने निकलने में शीघ्रता की। हमने अपने मन में कहा कि यह अंतिम स्वाँस पिता की पवित्र स्वाँस है और ऐसे ही समय सुयोग्य पुत्र पिता की सेवा करता है। हम रोते हुए पिता की सेवा करने में

लगे थे। हमने जोर से रोना आरंभ कर दिया और पिता के पैरों पर सिर रख दिया तथा तीन बार उनकी प्रदक्षिणा की। उन्होंने शकुन समझकर अपनी निजी तलवार को उठा लेने और बाँध लेने का संकेत किया, जिसका नाम फत्हे मुमालिक था। हमने सम्मान के साथ उसे बाँध लिया और सिजदः, बंदगी तथा तस्लीम किया। रोने की अधिकता के कारण पास था कि स्वाँस लेने में रुकावट पड़ जाय। बुधवार को एक प्रहर घड़ी व्यतीत हुई थी कि पिता की पवित्र आत्मा रूपी बाज़ पक्षी आकाश में उड़ गया।

(यहाँ तीन शैर दिए हुए हैं, जिनका अर्थ नहीं दिया जा रहा है।)

पवित्र शव को, जो सहस्रों जल, गुलाब तथा अंबर से ताजा तथा स्वच्छ पवित्रतर था, उस तख्ते पर रखा. जिस पर भिखारी तथा बादशाह दोनों ही रखे जाते हैं। फिर उसे जल, गुलाब से नहलाया।

शैरों के अर्थ

उस महत् शरीर को जल से पवित्र किया।
कपूर, कस्तूरी तथा गुलाब से सुगंधित किया॥
कफन पहिराया और ताबूत में रखा।
ईश्वर की क्षमा पर उनके शव को सौंपा॥
इस्कंदरिया को उनका घर बनाया।
तख्त (सिंहासन) पर से तख्ते पर डाल दिया॥
संसार के चिह्न से कोई भी जान नहीं बचा सका।
कोई हमारी कहानी उस तक नहीं ले जा सका॥

(इन शैरों के आगे बारह शैर और भी हैं पर उनका अर्थ अनावश्यक समझकर नहीं दिया जाता।)

ताबूत का एक पाया हमने अपने कंधे पर रखा और अन्य तीनों पायों को हमारे तीनों पुत्रों ने अपने कंधों पर रखे। इस प्रकार हम

लोग दुर्ग के फाटक तक पहुँचे। यहाँ से हमारे पुत्रों, पार्श्ववर्तियों, संबंधियों ने अपने अपने कंधों पर पारी-पारी रखते इस्कंदरिया (सिकंदरा) तक पहुँचा दिया और ईश्वरी कृपा तथा स्वर्ग के रक्षकों को अनंतकाल के लिए सौंप दिया।

(यहाँ ग्यारह शेर दिए हुए हैं जिनका अर्थ अनावश्यक समझकर नहीं दिया गया।)

बादशाह अकबर की अवस्था चौहत्तर वर्ष ग्यारह महीने नौ दिन की थी। संक्षेप में यहाँ लिखते हैं कि इस घटना के समय अधिकतर छोटे बड़े सर्दारगण हमारी बादशाही नहीं चाहते थे प्रत्युत् शाहजादा खुसरू को बादशाह बनाना चाहते थे, जिससे वह नाम के लिए बादशाह हो और साम्राज्य का कुल कार्य उनके हाथ में रहे। ईश्वरी कृपा हमारे पक्ष में रही और हमें इस बादशाही के लिए किसी से मिन्नत नहीं करनी पड़ी। क्योंकि साम्राज्य के कुल कार्य ईश्वर ने, जो बिना किसी सहभागी के हैं और अनंत हैं तथा जिसने बिना किसी स्त्री या पुरुष की सहायता के, हमें दे दिया था इसलिए हमने भी उससे प्रतिज्ञा की कि जब उसने बिना प्रार्थना किए सारी बादशाही प्रजा हमें सौंप दी है तब हम भी न्याय के समय स्वत्व की ओर ही दृष्टि रखेंगे। कोई भी मनुष्य चाहे वह हमारा पुत्र ही हो या हमारा विशिष्ट पार्श्ववर्ती ही हो पर न्याय के समय हम उसका विचार नहीं करेंगे।[१]

अब खुसरो की घटना के बचे हुए अंश की ओर आता हूँ। १० ज़ोहिज्जा मंगलवार (२ अप्रैल सन् १६०६ ई०) को हौदल में हमने पड़ाव डाला। शेख फरीद सेना का हरावल होने के कारण हमारे आगे-आगे चलता था। मीर मुइज्जुलमुल्क[१] को विश्वास तथा पुराने संबंध के

१—अकबर की मृत्यु के समय का यह कुल वृत्त आर. बी. की प्रति में नहीं दिया हुआ है और उसमें भाग १ पृ० ५५–७ पर खुसरू की माता का जो वृत्तांत दिया है वह इस प्रति में नहीं है।

कारण दुर्ग आगरा तथा वहाँ के कोषों की रक्षा के लिए ख्वाजःजहाँ के स्थान पर भेज दिया था इससे उसके पास आज्ञापत्र भेजा कि अपने सगे पुत्र को भेज दे क्योंकि हमारा विश्वास अवस्था पर से उठ गया है। इन परिश्रमों से स्नेह बढ़कर नहीं है, तो हमें क्या आवश्यकता थी कि मित्रों से अलग होता। बृहस्पति को हम फरीदाबाद में उतरे[2] और शुक्रवार १३ वीं को दिल्ली पहुँच गए। पहले हुमायूँ बादशाह के पवित्र मकबरे में उतरकर उसकी जियारत की और फकीरों में खैरात बाँटी। बहुतों को अपने हाथ से दिया। इसके अनंतर हजरत शेख निजामुद्दीन औलिया के रौजे में जाकर परिक्रमा की। मीर जमालुद्दीन हुसेन आंजू को तीन सहस्र रुपये और इतना ही हकीम मुजफ्फर को दिए कि फकीरों में बाँट देवें। विक्रमाजीत[3] के नाम आज्ञापत्र भेजा

१—जहाँगीर ने यहीं से आगरे के प्रबंध में कुछ परिवर्तन किए थे। ख्वाजाजहाँ दोस्त मुहम्मद के स्थान पर उसने मीर मुइज्जुलमुल्क को बख्शी नियत किया और इसे एतमादुद्दौला के स्थान पर आगरे भेजा और दोस्त मुहम्मद को मिर्जा मुहम्मद हकीम के पुत्रों पर कड़ी दृष्टि रखने के लिये आदेश दिया। एतमादुद्दौला को जहाँगीर ने अपने पास बुला लिया क्योंकि पंजाब इसकी दीवानी के अंतर्गत था। आर. बी. भा. १ पृ० ५७ पर यही विवरण दिया है और साथ ही यह विचार जहाँगीर का दिया है कि जब अपने पुत्र से ऐसा बर्ताव हो रहा है तब भतीजों और चचेरे भाइयों से क्या आशा की जा सकती है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० ५७ पर इसके पहले बुधवार को पालवाल में उतरने का उल्लेख है।

३—जहाँगीर ही ने इसे गुजरात भेजा था। इस बात का उल्लेख आर. बी. में नहीं है।

गया कि अहमदाबाद गुजरात की जो उचित तहसील हो उसे भेज दे जिसमें यूजबाशी नियत करें और जो सामान आदि अधिक हो गया हो तो उसका विवरण व्योरेवार लिखकर भेज दे।

१४ ज़ीहिज्जा शनिवार को मथुरा[1] की सराय में पड़ाव हुआ, जिसे खुसरू ने जलवा दिया था। यहीं आका मुल्ला[2] को, जिसे एक हजारी १५० सवार का मंसब प्राप्त था, पाँच सौ की उन्नति दी। दस सहस्र रुपए जमीलवेग बदख्शी और मुहम्मद अमीन[3] को दिया कि उन एमाकों के झुंड में बाँट दें जो अभी तक उपद्रव में सम्मिलित नहीं हुए थे और आगे के लिए भी आशा दिलावें। कुछ धन शेख फैजुल्ला तथा राजा हीराराम[4] को दिया कि फकीरों और ब्राह्मणों में वितरित कर दें। तीस सहस्र रुपए रामाशंकर को दिए कि अजमेर में शेख मुईनुद्दीन के रौजा में पहुँचा दे कि वह वहाँ के फकीरों में बाँट दिया जाय।[5]

१—यह सराय नरेला है, जिसे खुसरू ने जलवा दिया था। प्रतिलीपिकार की भूल से मथुरा लिख गया है। दिल्ली से यह स्थान पश्चिम की ओर कुछ आगे बढ़कर है। आर. बी. में भी इसी सराय का उल्लेख है।

२—आर. बी. भा. १ पृ० ५८ पर इसे आसफ खाँ का भाई तथा एक हजारी ३०० सवार का मंसब देना लिखा है।

३—आर. बी. भा. १ पृ० ५८ पर ये एमाकों के सर्दार लिखे गए हैं और दस के बदले दो सहस्र देना लिखा है।

४—आर. बी भा. १ पृ० ५८ में राजा धीरधर नाम दिया है।

५—आर. बी. भा. १ पृ० ५८ में राजा संगरा को उसके व्यय के लिए दिया गया लिखा है पर वह भ्रम है।

१६ जीहिज्जा सोमवार को पानीपत के पड़ाव पर पहुँचे, जो सदा से इस राजवंश के बादशाहों के लिए शुभ रहा। यहीं इसी भूमि पर फिर्दौसमकानी (बाबर) ने दो[1] भारी विजय प्राप्त किए थे और इब्राहीम सुल्तान अफगान पर विजय पाया था। हुमायूँ बादशाह ने भी इसी स्थान पर विजय प्राप्त की थी। सिकन्दर खाँ अफगान बहलोल लोदी का पुत्र था और उसने तातार खाँ के पुत्र दौलत खाँ लोदी को इस प्रांत का शासक नियत किया परंतु जब वह मर गया तब उसका पुत्र इब्राहीम इससे घृणा करने लगा तथा भयभीत होकर इसे पंजाब से दिल्ली बुलवाया। दौलत खाँ ने भी उसके व्यवहार से भय खाकर आने में देर किया था। इसी दौलत खाँ का पुत्र दिलावर खाँ[2] था जो इसी पड़ाव से शीघ्रता से कूच करता हुआ मार्ग में जो कोई मिलता सबको खुसरू के भागने के समाचार से परिचित कराता जाता था। करोड़ियों तथा व्यापारियों में ऐसा कोई नहीं बचा जो खुसरू के सैनिकों के हाथ में पड़कर नष्ट नहीं हुआ। पंजाब प्रांत के दीवान अब्दुर्रहीम[3] ने दिलावर खाँ से खुसरू के आने का समाचार सुनकर अपनी सेना

१—पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर तथा सुलतान इब्राहीम के बीच हुआ था और बाबर ने विजय पाई थी। दूसरा युद्ध अकबर तथा हेमू बक्काल के बीच हुआ था, जिसमें प्रथम विजयी हुआ था।

२—देखिए मुगल दरबार भा. ३ पृ० ४४८-५२।

३—अब्दुर्रहीम भी बादशाही आज्ञानुसार राजधानी की ओर आ रहा था और मार्ग में पानीपत में उसने दिलावर खाँ से खुसरू के विद्रोह का समाचार सुना था। जब इसने खुसरू का पक्ष ग्रहण कर लिया, जो पानीपत उसी समय पहुँचा था, तब दिलावर खाँ लाहौर की रक्षा के लिए वहाँ चला गया। (इलि० डा० भा० ६ पृ० २९५-६)

सुसज्जित की और दुर्ग को दृढ़ कर भारी सेना के साथ खुसरू के मार्ग में जा पहुँचा तथा उसके पाँव पर जा गिरा। खुसरू ने उसको मलिक अनवर की पदवी देकर सम्मानित किया और अपना वकील मुतलक बनाया। अंत में खुसरू पर विजय प्राप्त करने के अनंतर जैसा राज-द्रोह किया था वैसे ही दंड को पहुँचा। इसे काले गधे का चमड़ा पहिराकर नगर में चारों ओर घुमवाया परंतु इस कारण कि इसे छोटे छोटे लड़के और परिवार बहुत थे इस पर दया किया और इसे क्षमा कर प्राणदंड नहीं दिया। यद्यपि इस प्रकार के मनुष्यों पर दया न करना चाहिए परंतु मेरा स्वभाव ऐसा है कि मैंने दया कर उसे क्षमा कर दिया। इस प्रकार के दोषियों को बादशाहगण कभी क्षमा नहीं करते, एक तो साम्राज्य में उपद्रव तथा दूसरे हरम में धोखा।[1]

१७[2] जीहिज्जा मंगलवार को कर्नाल में ख्वाजा के पुत्र आबिद[3] को एक हजारी मंसब दिया और शेख निजामुद्दीन थानेश्वरी[4] को चार

१—जहाँगीर के कहने का यह तात्पर्य ज्ञात होता है कि दो प्रकार के दोषियों को बादशाह नहीं क्षमा करते थे। प्रथम राजद्रोह करनेवालों को और दूसरे उन लोगों को जिन्होंने बादशाही महलों में कपटाचरण किया हो।

२—वाकआते जहाँगीरी में १८ जीहिज्जा लिखा गया है।

३—प्राइस ने ख्वाजा ईदी नाम लिखा है। आर. बी. भा. १ पृ० ६० पर इसे अब्दुल्ला खाँ उजबक का पुत्र ख्वाजा कलाँ जूएबारी का पुत्र आबिदीन लिखा है।

४—आर. बी. में लिखा है कि इसने खुसरू से भी भेंटकर कुसम्मति दी थी इसलिए जहाँगीर ने इसे मार्गव्यय देकर मक्का जाने की आज्ञा दी।

सहस्र रुपए प्रदान किए। इसी समय हमें समाचार मिला कि एक शेख़ दूकानदार लोगों से कहता है कि मैं तुम लोगों को खुदा को इन्हीं आखों से प्रत्यक्ष दिखलाऊँगा और बहुत से लोगों को अपने इस कथन के बहाने बहका रहा है। परंतु वह हमको बहकाने में सफल न हो सका इसलिए उसको हिंदुस्थान से बाहर निकाल दिया और मक्का भेज दिया अर्थात् अपने साम्राज्य से बाहर कर दिया। १९ ज़ीहिज्जा बृहस्पतिवार को शाहाबाद में पड़ाव डाला। वहाँ पानी कम था पर उसी दिन दैवयोग[1] से खूब वर्षा हुई। जल अत्यंत प्रिय वस्तु है, जो हर समय नहीं मिलता और तभी उसका आदर होता है। जब वह मिलता है और अधिक मिलता है तब सब वस्तुओं में हीन समझा जाता है। सेना की बड़ी बड़ी छावनियों में बहुधा सुना गया है कि जो लोग साधारण समय में नदी का जल नहीं पीते वे भी तृषा तथा जल की कमी के समय ऐसे हो जाते हैं कि हाथी के मूत्र को गुलाब मिलाकर पी जाते हैं मानों वह जीवन-जल है। हमने यहाँ तक सुना है कि पूर्व-काल के बादशाहों को ऐसे अवसर पड़ गए हैं कि रत्नों की तौल के बराबर भोजन माँगने पर नहीं मिल सका है।[2]

दैवयोग से पहली बार हमें अपने पिता अकबर बादशाह की सेवा में कश्मीर जाने का अवसर मिला। बर्फ देखने का हमें बड़ा शौक था और हम उसके बड़े प्रेमी थे। कश्मीर जाने के मार्ग में बहुत से पहाड़ थे, उनमें चारों दिशाओं में निकल जाता था और दृश्यों को देखता था। संयोग से पीरपंजाल नामक घाटी में वैसे स्थानों को देखने के

१—प्राइस लिखता है कि 'हमने दुआ माँगने के लिए आकाश की ओर हाथ उठाया और ईश्वरी कृपा से ऐसा हुआ कि उसी दिन खूब वर्षा हुई।'

२—आर. बी. में जल-संबंधी विचार नहीं दिए हैं।

लिए, जैसे हिंदुस्थान में हमने नहीं देखे थे, निकल गया और अपने आदमियों से अलग हो गया। उसी समय भूख मालूम होने लगी। भोजन व मेवा हमने बहुत माँगा पर कोई सेवक, शराबदार तथा गुलाबदार वहाँ नहीं उपस्थित था क्योंकि सैनिकों तथा आदमियों की भीड़ इस घाटी के आगे इतनी अधिक थी कि कोई कारखानेदार आगे नहीं आ सका। जो लोग साथ थे उनमें से भी कोई तोशःदान अपने साथ नहीं लिए था। भूख बढ़ती गई और थोड़ा आगे बढ़ने पर देखा कि आसफ खाँ की कुछ भेड़ें मार्ग में चली जा रही हैं। हम वहीं उतर पड़े और उनमें से एक को पकड़कर आज्ञा दी कि इसका कबाब तुरंत तैयार करें। इस समय हमारी अवस्था चालीस वर्ष की हुई पर वैसी भूख तथा भोजन में वैसा स्वाद कभी अबतक नहीं मिला। उस दिन वह भेड़ हमारे बहुत काम आई और हमने भूख का मूल्य तभी तक समझा जब तक भोजन नहीं मिला। हमने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि अहेर या सैर में जाते समय सभी बराबर तोशःदान अपने साथ रखा करें। जब तक हम कश्मीर में रहे बराबर अपने हाथ से या खान-खानाँ के द्वारा पकाया हुआ भोजन बाँटा करते थे। बहुधा कश्मीर के निवासियों को कहते सुना गया है कि पीर पंजाल की घाटी में जब कोई खून करता है या जानवर को मारता है तब बड़ा उपद्रव होता है परंतु हमें कुछ भी नहीं सत्य ज्ञात हुआ।[1]

इसी पड़ाव पर शाहाबाद में शेख अहमद लाहौरी[2] को मीर अदल का मंसब दिया, जो हमारी शाहजादगी के समय से हमारा मीर अदल

१—आर. बी. में इस घटना का उल्लेख नहीं है।

२—यह सूफी था और अकबर के दीने इलाही का माननेवाला था। (देखिए बदायूनी फा० भा. २ पृ. ४०४) इस प्रति में जहाँगीर के शिष्यों में इसकी गणना हुई है और ऐसा ही आर. बी. में भी है पर उसमें शिष्यों की संख्या नहीं दी है।

था। अधिकतर कार्यों के अवसर पर हम उसे ही सेवा में बुलाते थे। यह हमारा शिष्य था। हमारे वाकआनवीसों तथा शिष्यों की संख्या छाछठ थी। जो हमारे शिष्य होते थे उन्हें कुछ बातें अर्थात् हमारे बनाए हुए नियम पालन करने पड़ते थे। कुछ ये हैं:—

प्रथम यह कि अपने समय को शत्रु के बहकावे में न व्यतीत करे और सर्वदा स्रष्टा पर भरोसा कर अपने को उसी की रक्षा तथा सहायता में छोड़ दे। दूसरे यह कि कभी किसी जानदार को युद्ध या अहेर में छोड़कर अपने हाथ से न मारे, न किसी को कष्ट पहुँचावे और अन्य सब काम करे। तीसरे यह कि विद्वानों का, जो ईश्वर की ज्योति तथा उसकी शक्ति को प्रगट करनेवाले हैं, आदर करे और सब में उसी के चिन्ह देखे। ईश्वर बड़ा है। चौथे यह कि प्रयत्न करें कि देश की चिंता सदा बनी रहे और कोई क्षण ईश्वर के विस्मरण में न बितावें। जिस किसी कार्य में रहें उसे न भूलें।

शैर का अर्थ

लंगड़े, लूँजे, असुंदर तथा उद्दंड को उसकी ओर खींचो और उसे बुलाओ।

हमारे पिता तथा गुरु सम्राट् अकबर इन बातों में इतने पक्के थे कि एकांत में तथा भीड़ में भी ईश्वर को स्मरण किया करते थे[1]। हमारे विचार में भी प्रत्येक क्षण उस पर विश्वास रखने तथा स्मरण करने में व्यतीत करना उचित है। उसके स्मरण में प्रेम रखना दिखावटी सेवा

१—इसके आगे का अंश तथा शैर आदि आर. बी. में नहीं हैं, जो अकबर से संबंध रखता है।

से अच्छा है क्योंकि उसकी उपासना करते हुए भी उपासकों का ध्यान सांसारिक नश्वर बातों में चक्कर काटता रहता है।

शैरों के अर्थ--

जानता है कह रहे क्या चंगी ऊद[1]।
अनत जिस्मे अनत काफिर वावजूद[2] ॥
खिन्न मन में है नहीं सुनने का शौक।
वर्ना लेता खैंच दुनिया यह सरोद ॥

आह! इस गायक के हर एक गान से सृष्टि के कण कण नृत्य करने लगते हैं। उपदेशक शंका तथा कल्पना के तट पर ही है। प्रेमी भक्त[3] का प्राण दर्शन के समुद्र में डूबा हुआ है। पवित्र प्रेम का हिसाब रूपहीन है परंतु प्रत्येक रूप में अपने ही को दिखाता है। लैला के[4] सौंदर्य के वस्त्रों में अपने को सुशोभित किया। मजनूँ के हृदय से संतोष तथा सुख लूट ले गया। अपने को देखकर उज़रा से जो यह पर्दा किया गया है। वामिक के हृदय पर दुःख के सौ मोती खुल गए। वास्तव में अपने आप ही प्रेम उसने उत्पन्न किया। वामिक[5] और उज़रा का सिवा नाम के कुछ न था[6] ॥

---

१. ये दोनों बाजे हैं।

२. तेरा शरीर नहीं है और तू उसकी स्थिति को होते हुए नहीं मानता।

३. भाव-भजन में मुग्ध होने पर शरीर का भान न रहना।

४. लैला प्रेमिका तथा मजनूँ प्रेमी था। इनकी कहानी प्रसिद्ध है।

५. वामिक उजरा का प्रेमी था और यह भी एक प्रेम कहानी का नायक है।

६. प्रेम, प्रेमी तथा प्रेमिका सभी-वह स्वयं है, सभी रूप उसी के हैं, सारी सृष्टि उसी की है, यही भाव इन शेरों का है।

हमारे पिता के समान सूफी अर्थात् ईश्वर का भक्त संसार में और कोई भी था या नहीं, यह हमें नहीं ज्ञात है। बहुधा वह रात्रि से सवेरे तक ईश्वर के स्मरण में लगे रहते थे। वह माला, स्तुति आदि से उसी के ध्यान में समय व्यतीत किया करते थे और हमें भी बराबर यही उपदेश दिया करते थे कि यदि तू चाहता है कि सर्वत्र प्रत्येक अवस्था में संसार के कठिन कार्य तुम्हारे लिए सुगम हो जायँ तो ईश्वर पर भरोसा करने के सिवा किसी अन्य पर विश्वास मत करो तथा प्रसन्न न हो। वह इन शेरों को सदा हमारे सामने पढ़ा करते थे।

(यहाँ तीन शेर दिए हुए हैं, जिनका अर्थ नहीं दिया जा रहा है।)

२१ जिहिज्जा शनिवार को अनवंद[1] पड़ाव पर पहुँचे और एल बेग उजबक[2] को बहादुरखाँ की पदवी से सम्मानित किया। इसे सचावन सर्दारों के साथ, जिनमें दो हजारी, तीन हजारी तथा पाँच हजारी मंसबदार तक थे, शेख फरीद के पास भेजा, जो हरावल होकर हमारे आगे-आगे जा रहा था। दो लाख रुपए, जो एराक के सात सहस्र

---

१. इसका पाठांतर अलोदा, अलवंद भी मिलता है। आर० बी० में अलुआ लिखा है और टिप्पणी में इसे ठीक बतलाते हुए अंबाला से नौ कोस उत्तर-पश्चिम होना कहा गया है।

२. मुगल दरबार भा. ४ पृ० ११८-९ पर इसकी जीवनी दी है और इसका नाम अब्दुन्नबी लिखा है पर इस हस्तलिखित प्रति में एल बेग तथा अबुलनईम दो नाम मिलते हैं। इलि० डाउ० में अबुल्बानी उजबक लिखा है। फारसी अक्षरों की कृपा से इतने पाठ भेद हुए ज्ञात होते हैं। यह निश्चय है कि इसी उजबक को बहादुर खाँ की पदवी देकर शेख फरीद के पास भेजा गया था।

तूमान के बराबर होता है, व्यय के लिए शेख फरीद के पास भेजे। इसके सिवा चार लाख रुपए, जो एराक के चौदह सहस्र तूमान के बराबर होता है, शेख फरीद के पास इसलिए भेजा कि वह उसे बहादुरखाँ उजबक, जमील बेग बदख्शी, शरीफ आमिली तथा अन्य मंसबदारों में पुरस्कार स्वरूप बाँट देवे, जिससे हर एक मंसबदार हमारी इस कृपा से प्रसन्नचित्त होकर एक दूसरे से बढ़कर साहस दिखलाते हुए विजय का समाचार दरबार को भेजने का प्रयत्न करे[1]।

२४ जीहिज्जा मंगलवार को जब खुसरू के कुछ वीर सर्दारों ने देखा[2] कि हमारी विजयिनी सेना के कुछ झंडे उनके पीछे आ पहुँचे तब खुसरू से विदा होकर वे युद्ध के लिए खड़े हो गए। शेख फरीद बुखारी ने भी अपने झंडे के नीचे दृढ़ता से डटकर बहादुरखाँ उजबक को अन्य सर्दारों के साथ अग्गल के रूप में आगे भेजा। बहादुरखाँ उजबक, जिसे बदख्शाँ का राज्य बहुत दिनों से सौंपा हुआ था और जिसने युद्धों में अनुभव तथा योग्यता प्राप्त की थी, अपनी सेना को युद्ध के लिए सुसज्जित करने लगा और उसे तीन भागों में बाँट कर एक के साथ स्वयं सामने पहुँचा। अन्य दो भागों को उन अभागों की सेना पर दो ओर से आक्रमण करने की आज्ञा देकर युद्ध आरंभ कर

१—आर. बी, भा. १ पृ० ६१ चालीस सहस्र इस सेना के व्यय के लिए और सात सहस्र जमील बेग को एमाकों में वितरित करने के लिए तथा दो सहस्र मीर शरीफ आमिली को देना लिखा है।

२—वाकेआते जहाँगीरी में केवल इतना ही लिखा है कि २४ जीहिज्जा को खुसरू के पाँच अनुयायी पकड़े गए जिनमें दो हाथी से कुचलवा दिए गए और अन्य तीन शंका के कारण कैद में रखे गए। इस युद्ध का उल्लेख नहीं है।

दिया। खूब लड़ाई होने के अनंतर खुसरू के चार सर्दारों में से दो सर्दार भाग गए और अन्य दोनों सर्दारों को दो सौ जीवित मनुष्यों समेत पकड़कर दरबार में उपस्थित किया। इन लोगों को दंड दिया गया, कुछ के चमड़े उधेड़ डाले गए, कुछ सूली पर चढ़ा दिए गए, कुछ पानी में उबाल डाले गए और कुछ को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवाकर उनके सिरों की हड्डियों का 'माजून' बना डाला गया। इस युद्ध से घायल हुए तथा भागे हुए सैनिक बचकर खुसरू के पास चले गए।

उसी दिन लाहौर दुर्ग के घेरे[1] का समाचार हमें कई बार मिला कि दुर्ग में जो सैनिक हैं वे तथा नगर के लोग आपस में मिलकर एक दूसरे की सहायता भी कर रहे हैं। इसी पर हसन बदख्शी ने खुसरू से कहा कि लाहौर के निवासीगण कोपागार के द्वार खोलकर हर एक तोपवाले को, जिनकी बंदूक ठीक निशाने पर काम करती है, उचित वेतन के सिवा बहुत धन पुरस्कार में दे रहे हैं। खुसरू से उसके इस कहने का यही तात्पर्य था कि वह उसे लाहौर लूटने के लिए उत्साहित करे क्योंकि उस नगर में बहुत से धनाढ्य लोग हर एक व्यापार के बसे हुए थे। इस बात से उसके कपट तथा धोखे को समझते हुए मन में रखकर भी खुसरू ने उत्तर दिया कि जब लाहौर विजय कर उसे अपने

१—इस घेरे का विवरण वाकेआते जहाँगीरी में बहुत संक्षिप्त में दिया है और बहुत सा विवरण जो इस प्रति में है उसे छोड़ दिया गया है। आर. बी. भा. १ पृ० ६१-२ पर इस युद्ध का उल्लेख नहीं है, केवल पाँच कैदियों के आने, दो के हाथी से कुचले जाने और तीन के कैद किए जाने का वर्णन है।

हाथ में कर लेंगे तब तो हमारे कोष को भी भूमि से आकाश तक पहुँच जाना चाहिए। इसके अनंतर आदेश दिया कि शीघ्र दुर्ग के फाटक को जला दें तथा सात दिन तक नगर को लूटकर इन आदमियों के स्त्री-बच्चों को कैद कर लें।

इस रक्तपिपासु झुंड ने नगर के फाटकों में से एक में आग लगा दी। लाहौर दुर्ग में बारह फाटक थे। दिलावर खाँ तथा अन्य मनुष्य जैसे हुसेन बेग, जो इस समय बयूताती के पद पर नियत है, नूरुद्दीन कुली कोतवाल तथा वे सब जो उनकी सहायता पर नियत थे, भीतर की ओर से दीवाल के फाटक के बराबर छिपे हुए बाहर आ निकले और उस समय तक आग पूरे फाटक को नहीं जला पाई थी इसलिए भीतर से इतना पानी फाटक पर फेंका कि आग उसे शीघ्र नहीं जला सकी। तब भी इन लोगों में बड़ी निराशा फैली। नूरुद्दीन कुली कोतवाल ने लाहौर दुर्ग के बुर्ज पर निकलकर आदेश दिया कि तोप व बानों को भरकर अभागे खुसरू की सेना पर छोड़ो।[1] जब खुसरू के सैनिकों तथा सरदारों ने दुर्ग लेने में अपने को असमर्थ देखा और बादशाही सेना के पीछा करते हुए पास पहुँचने का समाचार पाया तब उन सबने समझा कि उन लोगों ने कैसा काम किया है और जिसे वे अपना दुर्ग बनाना चाहते थे वह भी उनके हाथ नहीं आया। इस कारण सभी ने घबड़ाकर मरने-मारने का निश्चय किया और यह भी निश्चय किया कि बारह सहस्र सवार एकत्र होकर अग्गल की चाल पर एक बार ही हमारी विजयिनी सेना पर रात्रि-आक्रमण कर दें। इसी विचार के अनुसार मंगलवार को संध्या तथा रात्रि के निमाजों के बीच

---

१. आर० बी० भाग १ पृ० ६२ पर इसी समय कश्मीर में नियत सईद खाँ के फुर्ती से लाहौर सहायतार्थ पहुँचने का उल्लेख है।

में लाहौर दुर्ग के घेरे से हाथ उठाकर लौट आए। बृहस्पतिवार की रात्रि में काजी अली[1] की सराय में हमें यह समाचार मिला कि खुसरू लगभग बीस सहस्र राजद्रोही सैनिकों के साथ लाहौर का घेरा उठाकर चला गया। जब यह आशंकापूर्ण समाचार मिला तब हमें यह चिंता हुई कि कहीं वह दूसरा ओर न चला जाय। उस रात्रि को वर्षा अधिक होने पर भी हमने कूच करने की आज्ञा दे दी। उसी दिन गोविंदवाल की नदी पार कर दवाले[2] में पहुँचकर पड़ाव डाला।

बृहस्पतिवार को आधा दिन बीता था कि शेख फरीद बुखारी ने खुसरू को मार्ग में रोका और उसकी सेना का सामना किया। हम सुलतानपुर में बैठे हुए थे और उसी समय मीर मुइज्जुलमुल्क हमारे लिए भुँजा हुआ गेहूँ[3] लाया था। हम उसे खाना चाहते थे कि समाचार आया कि शेख फरीद खुसरू की सेना पर पहुँच गया है और युद्ध हो रहा है। यह सुनते ही शकुन की चाल पर एक कौर खाकर उसी समय घोड़ा मँगवाकर सवार हो गया और सेना के सुसज्जित होने तथा व्यूह रचने का कुछ भी ध्यान न किया। हमने अपने शस्त्रों को बहुत माँगा पर सिवा तलवार और भाले के हमारे पास और कुछ नहीं था।

---

१. अन्य प्रति में आग़ा अली का नाम लिखा है। आर० बी० में काजी अली ही लिखा है।

२. अन्य प्रति में देवल लिखा है और वाकेआते जहाँगीरी में सुलतानपुर में पहुँचना लिखा है। पर सुलतानपुर में उस दिन शेख फरीद का पड़ाव पड़ा हुआ था और जहाँगीर दूसरे दिन वहाँ पहुँचा। आर० बी० में सुलतानपुर ही लिखा है, जैसा कि इस प्रति में आगे लिखा है।

३. आर० बी० भाग १ पृ. ६२ पर भुँजा माँस लिखा है।

हमने अपने को खुदा की कृपा पर छोड़ दिया और फुर्ती से उस ओर चल दिए। लगभग पचास सवार हमारे साथ थे। सैनिकों में किसीको यह पता न था कि आज युद्ध होगा।[१] यद्यपि ईश्वरीय कृपा हमारे साथ थी परंतु कम सेना साथ में रखना सेनापतित्व से दूर था। साथ के सैनिकगण भी सेना की इस कमी से घबड़ाए हुए तथा भयभीत थे इस लिए बख्शियों को आज्ञा दी कि जितनी सेना हो सबको सूचित कर तुरंत सेवा में भेज दें। हम गोविंदवाल की सराय[१] के पास पहुँचे और वहाँ से बीस सहस्र सवार[२] सजाकर शेख फरीद बुखारी की सहायता के लिए भेजा[३]।

साथ ही हमने मीर जमालुद्दीन अंजू को खुसरू के पास भेजा था कि उसे समझावे कि यद्यपि लोगों ने सुलतान को ठीक मार्ग से हटाकर इस अवस्था तक पहुँचा दिया है कि वह हमसे युद्ध तथा मारकाट करने को तैयार हो गया है तब भी हम उसके दोषों को क्षमा कर देते हैं। उसे चाहिए कि वह मीर जमालुद्दीन अंजू के साथ चला आवे और अपने कर्मों पर पश्चात्ताप प्रगट करे। अकारण ही वह क्यों ईश्वर के सहस्रों दासों का रक्त बहाता है। यद्यपि वह पहले हमारे पास आने को उद्यत हुआ पर उसके विद्रोही तथा उपद्रवी साथियों ने उसको उसके विचारों पर न छोड़कर उत्तर भेजवा दिया कि जब यहाँ तक कार्य आ पहुँचा है

---

१. अन्य प्रति में पुल लिखा है।

२. यह संख्या भ्रम से लिखी ज्ञात होती है क्योंकि जहाँगीर के साथ उस समय बहुत थोड़ी सेना थी।

३. आर० बी० भा० १ पृ० ६२ पर इसके आगे लिखा है कि यहीं विजय का समाचार आया। 'शम्सी तोशकची यह सुसमाचार लाया था इसलिए उसे खुशखबर खाँ की पदवी दी।'

तब हमें युद्ध करना ही पड़ेगा। ईश्वर किसे साम्राज्य देता है और किसके सिर को साम्राज्य के ताज के योग्य समझता है, यह वह जाने।

जब मीर जमालुद्दीन हुसेन अंजू खुसरू का यह संदेश हमारे पास ले आया तब हमें उस मूर्ख पर बड़ी दया आई पर निरुपाय होकर हमने शेख फरीद बुखारी के पास आज्ञा भेज दी कि अब किसी बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं रह गई। अब चाहिए कि कुल सेना को एक मत करके शत्रु-सेना के पीछे जा पड़ो। जब शेख को यह समाचार मिला तब बहादुरखाँ उजबक ने दस सहस्र सवारों के साथ एक ओर से धावा किया और दूसरी ओर से शेख फरीद ने कुछ मंसबदारों के साथ[1] शत्रु पर आक्रमण कर युद्ध आरंभ कर दिया[2]। दिन दोपहर बीता था कि युद्ध आरंभ होगया और सूर्य के डूबने तक होता रहा। अंत में बादशाही प्रताप तथा ईश्वरी कृपा इस ओर थी इसलिए अभागे शत्रु के दस सहस्र सवारों के मारे जाने पर वे परास्त हो भागने लगे। बहादुरखाँ उजबक उस स्थान पर पहुँचा जहाँ खुसरू घोड़े पर से उतर कर सुखासन (पालकी) में बैठा हुआ था कि कहीं उसे कोई पहिचान कर पकड़ न लेवे। जब बहादुर खाँ की दृष्टि खुसरू पर पड़ी तब उसने अपनी सेना से उसे घेर लिया। शेख फरीद भी इसी समय वहाँ पहुँच कर बहादुरखाँ से मिल गया। जब खुसरू ने जान लिया कि अब इस

---

१. अन्य प्रति में बीस सहस्र सेना के साथ आक्रमण करना लिखा है। (इलि० डा० भाग ६ पृ० २६९)

२. यह युद्ध भैरोवाल परगने में हुआ था, जिसका फतेहाबाद नाम रखकर जहाँगीर ने शेख फरीद को जागीर में दे दिया था। (मुगल दरबार भा० ४ पृ० ५७)

प्रकार घिर जाने के कारण भागने का मार्ग बंद होगया तब वह सुखा॰ सन से बाहर निकल आया और उसने शेख फरीद से कहा कि तू हमें कैद करने का प्रयत्न कर रहा है और मैं स्वयं तेरे पास पिता की सेवा में चलने के लिए आया हूँ[1]।

हम स्वयं सरील[2] में इसी घटना पर विचार करते हुए आशंका में पड़े हुए थे और मीर जमालुद्दीन अंजू कहता था कि मैंने जो कुछ देखा है उससे ज्ञात होता है कि खुसरू की सेना पचास सहस्र सवार से अधिक है। ऐसी अवस्था में नहीं कहा जा सकता कि शेख फरीद आज रात्रि का विजय प्राप्त कर सकेगा। शेख फरीद तथा अबुल्लईम उजबक[3] की सेना चौदह सहस्र सवार तक नहीं थी। हम मीर जमालुद्दीन हुसेन अंजू से इसी विषय पर बातचीत कर रहे थे कि शेख फरीद के विजय

---

१. इस प्रति में यहीं खुसरू के पकड़े जाने का वृत्तांत दिया गया है पर अन्य इतिहासों में इसके यहाँ से बचकर निकल जाने तथा सोधारा में पकड़े जाने का वृत्त दिया है। खुसरू लाहौर में जहाँगीर के सामने उपस्थित किया गया था। वाकेआते जहाँगीरी में पहले इसी समय खुसरू के पकड़ कर लाए जाने का उल्लेख है पर कुछ ही आगे लिखा है कि महाबतखाँ तथा अली बेग अकबरशाही को खुसरू का पीछा करने भेजा और सोधरा में वह पकड़ा गया। ज्ञात होता है कि यहाँ भ्रम होगया है और केवल खुसरू का सुखासन आया था जैसा आर॰ बी॰ में लिखा है। इकबालनामा में पृ॰ १२-७ पर खुसरू के भागने तथा पकड़े जाने का वृत्तांत दिया हुआ है।

२. अन्य प्रतियों में गोविंदवाल नाम मिलता है।

३. बहादुर खाँ उजबक का यह नाम ज्ञात होता है। एक अन्य प्रति में अबुल् कासिम खाँ भी लिखा मिलता है।

तथा खुसरू के पकड़े जाने का समाचार मिला। मीर जमालुद्दीन हुसेन घोड़े पर से उतरकर हमारे पैरों पर गिर पड़ा और कहा कि प्रताप का यही अर्थ है पर हम अभी भी विश्वास नहीं कर रहे हैं। इसी बीच खुसरू का सुखपाल उसके ख्वाजासराओं के साथ हमारे सामने उपस्थित किया गया और हमारे सामने भूमि पर रखा गया। उस समय उक्त मीर आश्चर्य-चकित होकर पुनः हमारे पैरों पर गिर पड़ा[१] तथा कहने लगा कि वास्तव में यही प्रताप है कि ईश्वर ने आपको इस प्रकार यह विजय दी।

शेख फरीद[२] ने अबुल्क़ईम उजबक के साथ वीरतापूर्ण बहुत प्रयत्न किया था इसलिए इन दोनों को पाँच हजारी मंसब, डका, झंडा, घोड़ा, जड़ाऊ जीन व जड़ाऊ कमरबंद दिए, और बहादुरखाँ उजबक को कंधार के शासन पर नियत किया। शेख फरीद बुखारी का मंसब दो हजारी था। सैयद महमूद के पुत्र सैफुल्लाखाँ ने भी इस कार्य में बहुत परिश्रम किया था और उसके शरीर पर सत्रह घाव लगे थे। सैयद जलाल को भी छाती के ऊपर गहरी चोट लगी थी और इसीसे वह कुछ दिन बाद मर गया।

युद्ध आरंभ होते ही अपने भाई के साथ सैयद कमाल के डंके की आवाज सुनकर शत्रु भय से भाग गए और चार सौ के लगभग एमाक[3]

१. इसने पूरी चापलूसी दिखलाई।

२. शेख फरीद को इसके साथ मुर्तजा खाँ की पदवी तथा गुजरात का शासन भी मिला था।

३—इस शब्द से एक विशिष्ट जाति का बोध होता है पर साथ ही यह शब्द जाति का पर्यायवाची भी है। यह जाति अफगानिस्तान में हजारा जाति के पश्चिम ओर रहती थी।

सैनिक मारे गए तथा तीन सौ के लगभग अभागे स्वामिद्रोही हर ओर से पकड़े गए। खुसरू के रत्नों की पेटी उस युद्ध में न जाने किसके हाथ पड़ गई[1]। उसी महीने की २७ वीं बृहस्पतिवार को हम लाहौर दुर्ग के शाह बुर्ज के बड़े कक्ष मे, जिसमें हमारे पिता बैठते थे और हाथी की लड़ाई देखते थे, जाकर बैठे और आज्ञा दी कि इस राजद्रोही झुंड के लिये जो खुसरू के साथ थे, नदी के किनारे पर शूलियों को शीघ्र करके गाड़ दो और उन तीन सौ मनुष्यों को, जिन्होंने खुसरू का साथ देने की शपथ खाई है, उन शूलियों पर ऊँचे बैठा दो जिसमें लोगों को भय हो तथा उपदेश मिले। इससे कठोरतर दंड और कोई नहीं है क्योंकि इसमें जल्दी से जल्दी नहीं मर जाते, चिल्लाते हैं और खूब फल पाकर प्राण छोड़ते हैं। इससे अन्य लोगों को उपदेश मिलता है कि इस प्रकार स्वामी के विरुद्ध जो विद्रोह करता है उसे इससे भी बढ़कर कष्ट होता है।

इस कारण कि राजकोष आगरे में था और राज्य के आरंभिक काल में लाहौर-से उपद्रव-स्थल में रहना उचित न समझकर हम आगरे को लौट चले। हमने खुसरू को उसी लज्जा की अवस्था में छोड़कर

१—इकबालनामा पृ० १२ पर लिखा है कि खुसरू के रत्नों की पेटी, जो उस समय उसके पास थी, उसके सुखपाल के साथ शाही सेना के हाथ पड़ गई, जिसे शेख फरीद ने बादशाह के पास भेज दिया। इससे स्पष्ट है कि केवल सुखपाल रत्नों की पेटी के साथ आया था और खुसरू बाद में पकड़ा जाकर लाया गया था। आर० बी० भा० १ पृ० ६५ पर जहाँगीर के हाथ में पड़ना लिखा है। इसी के आगे खुसरू के भागने तथा पकड़े जाने का हाल दिया गया है।

दिलावरखाँ को सौंप दिया कि उसे सदा अपनी रक्षा में रखे। पुत्र राज्य की शक्ति है और इसलिए उससे सदा शत्रुता बनाए रखना राजनीति के विरुद्ध है। हमने कभी ओछी बुद्धिवालों की सम्मति से अपना उचित मार्ग नहीं बदला और अपनी बुद्धि तथा ज्ञान में जो कुछ ठीक जान पड़ा वही कार्य हमने किया। हम अपने पिता तथा गुरु की बात स्मरण रखते थे जिन्होंने कहा था कि बादशाह तथा बादशाह-जादा को दो वस्तुओं की आवश्यकता रहती है—बुद्धि तथा प्रताप। बुद्धि इसलिए कि अपने देश की रक्षा कर सके और प्रताप अपने राज-वैभव की रक्षा के लिए क्योंकि बिना प्रताप के वैभव स्थायी रूप से टिक नहीं सकता और थोड़े ही दिनों में चला जाता है।

संक्षेप में २६ सफर को राजधानी आगरा में हम पहुँच गए। खुसरू की माता[1] ने दुःख के कारण, जिस समय से खुसरू भागा था और हम भी आगरे से दूर चले गए थे, न कुछ खाया न पिया और बराबर रोती हुई भूखी उपवास करती रही। यह काम (उपवास, व्रत) फकीरों तथा नबियों का है। तीन दिन तक उसने कुछ भी नहीं खाया न रोटी न पानी और उसके अनंतर कुछ खाकर जीवनयापन करती

१—प्राइस ने भूल से खुसरू के संबंध में इस प्रकार से दुःख करना, उपवास आदि करना लिखा है और इस कारण कि खुसरू इस समय के बहुत बाद मरा था उसकी मृत्यु न लिख सका। वह स्वयं टिप्पणी में लिखता है कि मूल प्रति में कुछ छूट गया है जिससे अनुवाद करने में ठीक अर्थ नहीं बैठ रहा है। ज्ञात होता है कि खुसरू के पहले का शब्द वालदः प्राइस की मूल प्रति में छूट गया था, जिससे इतना भ्रम हो गया।

लज्जा तथा क्रोध के आधिक्य में अंत में उसकी मृत्यु हो
।

केशोराय सेवा करने में अपने पिता से बढ़कर था और आठो
: हमारी सेवा में रहता था। वह सदा स्वाध्याय में अवस्थित रहता
। वर्षा की रात्रि हो या अवर्षा की हो वह रात्रि के आरंभ से अंत
लाठी के सहारे खड़ा पढ़ता रहता था। अहेर में वह सर्वदा पैदल
रे साथ चलता था। उसकी सेवाओं के विचार से राजगद्दी पर
ने के पहले उसे पाँच सदी मंसब दिया था और सम्राट् होने पर
का मंसब एक हजारी कर दिया। इस समय तक बहुत मोटा हो
ने से उसकी सेवा में कुछ सुस्ती आ गई थी। वास्तव में बादशाह
मनुष्यों की आवश्यकता नहीं है, सेवा-कार्य की आवश्यकता है।
कोई जितना अधिक काम में आता है उतना ही अधिक उन्नति
ता है।

१—खुसरू की माता मानबाई को उन्माद रोग पहले ही से था।
. अकबर के समय में जहाँगीर ने विद्रोह किया और खुसरू को युव-
ज बनाने का षड्यंत्र होने लगा तब खुसरू ने भी उसमें सहयोग
या और पिता को बुरा भला कहने लगा। उसने पुत्र को बहुत सम-
या पर कोई फल नहीं निकला। इसका भाई माधो सिंह भी उस
ड्यन्त्र में जा मिला। तब इसका उन्माद रोग बढ़ गया। जिस समय
ाँगीर अहेर खेलने गया उस समय इसने अफीम खा लिया जिससे
६ जीहिज्जा सन् १०१३ हि० (१६ मई सन् १६०४ ई०) को उसकी
यु हो गई। यह घटना इसी प्रकार तकमीलए अकबरनामा तथा
.केआते जहाँगीरी' में लिखी है (इलि० डा० भाग ६ पृ० ११२, २६४)
: इस प्रति, तारीखे सलीमशाही तथा कारनामए जहाँगीरी में खुसरू
विद्रोह के बाद यह घटना होना लिखा है।

हमारे पिता का यह एक नियम था कि वर्ष के प्रथम महीने के पहले दिन बंदूक अपने हाथ में लेकर उसे छोड़ते थे और उसके अनंतर मंसबदार, अहदी, बर्कंदाज, बंदूकची, तथा तोपची लोग छोड़ते थे। इसके सिवा और कभी ऐसा न होता था कि हर महीने के आरंभ में इस प्रकार का शोर हो। हमने भी यही नियम रखा कि अपनी बंदूक 'दुरुस्तअन्दाज' से पहले गोली छोड़ता और तब दूसरे आरंभ करते[1]।

खुसरू के भागने के दिन संध्या को हमने राजा बासू को, जो लाहौर के पार्वत्यस्थान का एक विश्वासपात्र जमींदार था, उस सीमा पर जाने की छुट्टी दे दी और आदेश दिया कि जहाँ कहीं वह खुसरू का समाचार या पता पावे उसे पकड़ने का पूरा प्रयत्न करे। हमने महाब्रत खाँ और मिर्जा अली अकबरशाही को भी भारी सेना के साथ नियत किया कि जिस किसी ओर खुसरू जाय उधर पीछा करें। हमने विचार किया कि यदि खुसरू काबुल की ओर जाय तो हम भी उसका पीछा करें जब तक वह पकड़ा न

१—यह हस्तलिखित प्रति यहीं समाप्त होती है और इसकी पुष्पिका इस प्रकार है—

यह अच्छी महत्वपूर्ण पुस्तक जहाँगीरनामा ५ वीं जमादिउल अव्वल सन् २१२ हि० को शाहजहानाबाद में आसफुलएवाद महम्मद वजीर निवासी बिलीमार की गली के द्वारा लिखी हुई एक प्रहर दि० चढ़े बृहस्पतिवार को समाप्त हुई। ९९९

जोनाथन स्कॉट के पुस्तकालय की प्रति भी जिसे उसने कारनामए जहाँगीरी नाम दिया है और जिसका नाम सर एच० एम० इलियट ने तुजुके जहाँगीरी लिखा है, यहीं समाप्त होती है। इस प्रति के आरंभ तथा अंत के अंश इलियट डाउ० भा० ६ पृ० २६४ पर मूल रूप में दिए हुए हैं जो हमारी इस प्रति से मिलते हैं। दोनों प्रतियों के आकार भी समान हैं।

जाय। यदि वह काबुल में न रुक कर बदख्शाँ तथा उन प्रांतों में चला जाता तो काबुल में महाबतखाँ को छोड़ कर हम लौट आवेंगे। बदख्शाँ न जाने का हमारा विचार इस कारण था कि वह अभागा अवश्य ही उज़बेगों का साथ करेगा और साम्राज्य की अप्रतिष्ठा होगी।

जिस दिन शाही सेना खुसरू का पीछा करने भेजी गई उस दिन पंद्रह सहस्र रुपए महाबतखाँ को, बीस सहस्र अहदियों को और दस सहस्र रुपए सेना के साथ भेजे गए कि मार्ग में उन लोगों को दिया जावे जिन्हें देना आवश्यक हो।

उसी मास की २८वीं तारीख शनिवार को विजयी सेना ने जहान में पड़ाव डाला, जो लाहौर से सात कोस पर है। उसी दिन खुसरू कुछ आदमियों के साथ चिनाब नदी के किनारे पहुँचा। संक्षेप में यह घटना इस प्रकार हुई कि पराजय के अनंतर जो लोग युद्ध से बचकर इसके साथ गए उनके दो विचार हो गए। अफ़गान तथा हिंदुस्तानी, जो अधिकतर उसके पुराने सैनिक थे, का कहना था कि हिंदुस्तान ही की ओर लौट चलें और वहाँ विद्रोह तथा उपद्रव करें। हुसेन बेग ने, जिसके सगे संबंधी, परिवार तथा कोष काबुल की ओर थे, काबुल जाने का प्रस्ताव किया। जब हुसेन बेग के कथनानुसार करने का निश्चय हुआ तब हिंदुस्तानी और अफगानों ने इससे अलग हो जाने का निश्चय किया। चिनाब पहुँचने पर शाहपुर के उतार से पार करने का विचार हुआ पर नाव न मिलने पर सौधरा के उतार की ओर गए, जहाँ इसके आदमियों को बिना केवट के एक नाव तथा एक नाव ईंधन और घास से भरी मिली।

नदियों के उतारों पर रोक लगा दी गई थी क्योंकि खुसरू के पराजय के पहले ही यह आज्ञा पंजाब के सभी जागीरदारों और मार्ग

तथा उतारों के रक्षकों को भेज दी गई थी कि इस प्रकार का उपद्रव उठ खड़ा हुआ है इसलिए वे सतर्क रहें। हुसेन बेग ईंधन तथा घास की नाव से आदमियों को दूसरी नाव पर ले जाना चाहता था कि वे खुसरू को उस पार पहुँचा दें पर इसी समय सौधरा के कमाल चौधरी का बड़ा दामाद वहाँ आ पहुँचा और रात्रि में कुछ लोगों को पार जाते देखा। उसने मल्लाहों से चिल्लाकर कहा कि बादशाह जहाँगीर की आज्ञा है कि अज्ञात मनुष्यों को रात्रि में पार न उतारें, इसलिए सावधान रहो। इस शोर से वहाँ बहुत से आदमी इकट्ठे हो गए और कमाल के दामाद ने मल्लाहों से उनकी बल्ली छीन ली, जिससे वे नाव को आगे बढ़ाते हैं। इससे नाव हाथ के बाहर हो गई। मल्लाहों को धन का लालच दिया गया पर एक भी पार ले जाने को तैयार नहीं हुआ। अबुल्कासिम नमकीन के पास यह समाचार पहुँचा, जो चिनाब के पास गुजरात में था, कि मनुष्यों का एक झुंड रात्रि में नदी पार करना चाहता है और वह तुरंत अपने पुत्रों के साथ कुछ सवारों को लेकर उस उतार पर पहुँचा। बात यहाँ तक बढ़ी कि हुसेन बेग ने मल्लाहों पर तीर छोड़े और कमाल के दामाद ने नदी के किनारे पर से उन पर छोड़ना आरंभ किया। नाव नदी के नीचे की ओर चार कोस तक मनमाना चली पर रात्रि का अंत होते होते भूमि से भिड़ गई और बहुत प्रयत्न करने पर भी वह नहीं हिली। अब दिन निकल आया। अबुल् कासिम और ख्वाजा खिज्र खाँ ने, जो हिलाल खाँ के प्रयत्न से नदी के इस तट पर इकट्ठे हो गए थे पश्चिम तट को घेर लिया और जमींदारों ने पूर्वी तट को।

खुसरू की घटना के पहले हमने हिलाल खाँ के अधीन कश्मीर को भेजी गई सेना का सजावल नियत कर भेजा था और वह संयोग से उसी रात्रि में उस उतार के पास पहुँचा। वह ठीक समय पर पहुँच

गया और उसके प्रयत्नों से अबुल् कासिम नमकीन तथा ख्वाजा खिज्र खाँ खुसरू के पकड़ने के समय इकट्ठे हो गए थे।

उसी महीने की २९वीं तारीख रविवार को सवेरे हाथियों और नावों पर सवार हो लोगों ने खुसरू को पकड़ लिया तथा उस महीने के अंतिम दिन सोमवार को यह समाचार हमें मिर्जा कामराँ के बाग में मिला। हमने तुरंत अमीरुल्उमरा को आज्ञा दी कि गुजरात जाकर खुसरू को हमारे सामने उपस्थित करे।

राज्य तथा शासन कार्यों के संबंध में बहुधा ऐसा ही होता कि हम अपने विचार के अनुसार ही करते थे तथा दूसरों की सम्मति से अपनी ही अच्छी समझते थे। पहला उदाहरण यह है कि जब हमने इलाहाबाद से अपने पूज्य पिता के पास जाना निश्चित किया और अपने विश्वास-पात्र सेवकों की सम्मति के विरुद्ध किया तब हमें ऐसा करने का सुफल मिला और यह हमारी लौकिक तथा पारलौकिक भलाई के लिए था। इस प्रकार के कार्य से हम सम्राट् हो गए। दूसरा उदाहरण खुसरू का पीछा करना था, जिसमें हमने शुभ मुहूर्त निकलवाने की प्रतीक्षा तक न की और हमने तब तक आराम नहीं किया जब तक वह पकड़ा नहीं गया। यह एक विचित्रता है कि पीछा आरंभ करने के अनंतर जब हमने गणितज्ञ ज्योतिषी हकीम अली से पूछा कि जिस समय हमने पीछा आरंभ किया था वह साइत कैसी थी तब उसने उत्तर दिया कि यदि आप अपनी इच्छापूर्ति के लिए इससे अच्छी साइत निकलवाते तो स्यात् कई वर्षों में भी वह न मिलती।

---

३ मुहर्रम सन् १०१५ हि० गुरुवार को कामराँ के बाग में वे खुसरू को हमारे सामने लाए, जिसके हाथ पीछे की ओर बँधे हुए थे और

पैरों में जंजीर पड़ी थी और यह चंगेज खाँ के प्रचलित नियम[1] तथा प्रथा के अनुसार ही किया गया था। उसके दाहिनी ओर हुसेन बेग को और बाईं ओर अब्दुर्रहीम को खड़ा किया था। बीच में खुसरू रोता तथा काँपता हुआ खड़ा था। हुसेन बेग अपना कुछ लाभ समझकर जोर जोर से बकने लगा। हमने उसका तात्पर्य समझकर उसका बकना रोक दिया और खुसरू को उसी प्रकार बँधा हुआ रक्षा में देकर उन दोनों बदमाशों को क्रमशः बैल तथा गधे की खालों में सिलवाकर तथा गधों पर दुम की ओर सवार कराकर नगर में घुमाने की आज्ञा दे दी। बैल का खाल गधे की खाल से जल्दी सूखती है इसलिए हुसेन बेग तो चार घड़ी जीवित रहकर साँस रुकने से मर गया। अब्दुर्रहीम गधे की खाल में था और उसे कुछ बाहर से भोजन मिल गया था इस लिए जीवित रह गया।

जीहिज्जा के अंतिम दिन सोमवार से नौ मुहर्रम तक उसी वर्ष हम कामराँ के बाग में रहे क्योंकि शुभ समय नहीं मिला था। हमने भैरोवाल[2], जहाँ युद्ध हुआ था, शेख फरीद को दे दिया और ऊँची पदवी मुर्तजा खाँ की देकर सम्मानित किया। हमने शासन की अच्छाई के लिए आदेश दिया कि बाग से नगर की सड़क पर दोनों ओर बल्लियाँ खड़ी की जायँ और उनपर एमाक तथा दूसरे, जिन्होंने विद्रोह में योग दिया था, लटका दें या शूली पर चढ़ा दें। इस प्रकार उन सब को असाधारण दंड मिला। उन भूम्याधिकारियों को, जिन्होंने

१—इलिअट भा०-६ पृ० '१०७ पर लिखा है कि सिकड़ी पहले बाएँ हाथ से बाँधकर बाएँ पैर तक बँधी रहती है, जो चंगेजखानी नियम है।

२—भैरोवाल व्यास नदी के बाएँ तट पर जालंधर तथा अमृतसर के बीच में है।

ामिभक्ति दिखलाई थी, मुखिया बना दिया और झेलम तथा चिनाब के बीच के चौधरियों को उनकी सहायता के लिये भूमि दी।

हुसेन बेग की संपत्ति में से मीर मुहम्मद बाकी के गृह से सात लाख रुपया नगद मिले। यह उस धन के सिवा था, जो अन्यत्र तथा उसके पास से मिले थे। इसके अनंतर जहाँ इसका उल्लेख होगा वहाँ 'गावान और खरान' के नाम से होगा। जब यह मिर्जा शाहरुख के साथ इस दरबार में आया था तब इसके पास केवल एक घोड़ा था। क्रमशः यह संपत्तिशाली हुआ और इतना धन प्रत्यक्ष तथा गड़ा हुआ छोड़ा एवं इस प्रकार की बातें उसके मस्तिष्क में घुसीं।

जब खुसरू का उपद्रव ईश्वर की इच्छा पर था और अफगानिस्तान तथा आगरा के बीच कोई कार्यकारी प्रांताध्यक्ष नहीं था, जो उपद्रव तथा राजद्रोह का स्रोत है, और इस आशंका से कि खुसरू के कार्य में अधिक समय लगे, हमने अपने पुत्र पर्वेज को यह आज्ञा भेजी थी कि राणा पर कुछ सर्दारों को नियत कर वह आसफखाँ के साथ उन लोगों को लेकर, जो उसकी सेवा में हैं, आगरे आवे। साथ ही वह उस प्रांत की रक्षा तथा प्रबंध को अपना विशिष्ट कर्तव्य समझे। परंतु ईश्वर की कृपा से पर्वेज़ के वहाँ पहुँचने के पहले खुसरू का कार्य समाप्त हो गया था इसलिए उस पुत्र को अपने पास आने का आदेश भेज दिया।

८ वीं मुहर्रम बुधवार को हम शुभ साइत में लाहौर दुर्ग में गए। बहुत से स्वामिभक्तों ने सम्मति दी कि साम्राज्य के हित में इस समय आगरे लौट चलना चाहिए क्योंकि गुजरात, दक्षिण तथा बंगाल में बहुत कुछ गड़बड़ी है परंतु यह सम्मति हमें ठीक नहीं जँची क्योंकि कंधार के अध्यक्ष शाहबेगखाँ की सूचनाओं से ज्ञात हुआ कि फारस की सीमा पर के सर्दारों की कंधार पर आक्रमण करने की इच्छा है। वे वहाँ इस कारण आ पहुँचे थे कि कंधार की सेना के बचे हुए मिर्जों

ने, जो सदा उपद्रव किया करते थे, उन्हें उभाड़ दिया था। पारसीक सर्दारों ने इन उपद्रवियों को पत्र लिखे थे और इससे गड़बड़ी मचने की विशेष संभावना थी। हमारे ध्यान में यह आया कि सम्राट् अकबर की मृत्यु तथा उसी समय खुसरू के इस उपद्रव से उनके कार्य में तीव्रता आ जाय और वे कंधार पर आक्रमण कर दें। जो हमारे ध्यान में आया वही वास्तविक घटना हो गई। फराह के शासक, सीस्तान के मलिक और आस पास के जागीरदारों ने हिरात के प्रांताध्यक्ष हुसेन खाँ की सहायता से कंधार पर आक्रमण कर दिया। शाह बेग खाँ का साहस तथा वीरता प्रशंसा के योग्य है कि उसने दृढ़ता के साथ दुर्ग को दृढ़ किया और तीसरे भीतरी दुर्ग पर चढ़ कर डँट गया, जहाँ से बाहर वाले भी उसके मजलिसों को देख सकते थे। घेरे के समय यद्यपि इसने कमर नहीं कसी और मजलिसों ही की नंगे माथे तथा पैरों से प्रबंध करता रहा पर कोई दिन नहीं जाता था कि यह शत्रु पर सेना न भेजता रहा हो या बराबर साहसपूर्ण प्रयत्न न करता रहा हो। जब तक यह दुर्ग में रहा तबतक ऐसा निरंतर होता रहा। कज़िलबाश सेना ने दुर्ग को तीन ओर से घेर लिया था। जब इसका समाचार लाहौर पहुँचा तब लाहौर ही में रहना उचित जान पड़ा। तत्काल एक विशाल सेना मिर्जा ग़ाज़ी के अधीन नियत हुई, जिसके साथ बहुत से उच्चपदस्थ सर्दार तथा दरबार के सेवक भी भेजे गए जैसे करा बेग तथा तुख्ता बेग, जिन्हें कराखाँ तथा सर्दारखाँ की पदवियाँ दी गई थीं। हमने मिर्जा गाजी को पाँच हजारी ५००० सवार का मंसब तथा डंका प्रदान किया। ठट्टा के शाह मिर्जा जानी तर्खान[1] का मिर्जा गाजी पुत्र था और अब्दुर्रहीम खानखानाँ के प्रयत्न से वहाँ

१—मुग़ल दरबार भा० ३ पृ० २८५-९५ पर जानी मिर्जा का और पृ० २३०-३ पर मिर्जा गाजी का विवरण है।

प्रांत गत सम्राट् के अधिकार में आया था। उसकी जागीर में ठट्टा भी सम्मिलित था और उसे भी पाँच हजारी ५,००० सवार का मंसब दिया गया था। उसकी मृत्यु पर उसके पुत्र मिर्जा गाजी को वही पद तथा सेवा मिली। इनके पूर्वज खुरासान के शाह सुलतान हुसेन मिर्जा बैकरा के सर्दारों में से थे और तैमूर लंग के सर्दारों के वंशज थे। कंधार जानेवाली सेना का बख्शी ख्वाजा आकिल नियत हुआ। करा खाँ को तैंतालीस सहस्र रुपए मार्ग-व्यय के लिये दिए गए और मिर्जा गाजी के साथ जाने वाले नकदी बेग तथा किलीज बेग को पंद्रह सहस्र रुपए दिए गए।

हमने लाहौर में ठहरना निश्चित किया कि यह कार्य निपट जावे और काबुल की भी यात्रा कर आवें। इसी समय हकीम फतहुल्ला का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। शेख हुसेन जामी को, जिसका हमारे संबंध का स्वप्न ठीक उतर गया था, हमने बीस लाख दाम, जो चालीस सहस्र रुपए होता है, उसके निजी व्यय, दरगाह तथा उसके साथ रहने वाले दरवेशों के लिए दिया। २२ वीं को हमने अब्दुल्लाखाँ का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी ५०० सवार का कर दिया। हमने अहदियों को दो लाख रुपए अग्रिम दिलवाए और क्रमशः उनके वेतन से काटने की आज्ञा दी। हमने छ सहस्र रुपये शाहबेग खाँ के दामाद कासिम बेग खाँ को और तीन सहस्र रुपये सैयद बहादुर खाँ को दिए।

गोविंदवाल में, जो व्यास नदी के तट पर स्थित है, अर्जुन[1] नामक एक हिंदू रहता था, जिसने पवित्रता तथा सिद्धाई का वस्त्र पहिर रखा था। यहाँ तक कि सरल-हृदय हिंदुओं तथा मूर्ख अशिक्षित मुसलमानों को भी उसने अपनी चाल तथा व्यवहार से आकर्षित कर लिया था

१—सिक्खों के पाँचवें गुरू। देखिए कनिंगहम की हिस्ट्री आव सिक्ख पृ० ७५—८।

और उन्होंने उसकी सिद्धाई का ढिंढोरा पीट रखा था। वे उन्हें गुरु कहते थे और सभी ओर से मूर्खगण उसकी पूजा करने और उस पर पूर्ण श्रद्धा दिखलाने एकत्र होते थे। तीन-चार पीढ़ी से इस दूकान को गर्म कर रखा था। कई बार हमारा विचार हुआ कि इस व्यर्थ कार्य को रोक दें या उसे मुसलमान बना लें।

अंतमें जब खुसरू इस मार्गसे गया तब इस अप्रसिद्ध पुरुष ने उसके पास उपस्थित होने का प्रस्ताव किया। खुसरू संयोग से उसीके रहने के स्थान पर उतरा और वह उसके पास आया तथा सेवा की। उसने खुसरू के साथ विशिष्ट व्यवहार किया तथा उसके माथे पर केसर का अंगुलि-चिन्ह लगाया, जिसे हिंदू लोग टीका[1] कहते हैं और शुभ समझते है। जब हमने यह वृत्त सुना और उसकी मूर्खता समझी तब हमने उसे सामने उपस्थित करने की आज्ञा दी और उसके गृह, निवासस्थान तथा संतानों को मुर्तजा खाँ को सौंप दिया। उसकी कुल संपत्ति जब्त करके उसको मार डालने का आदेश दे दिया।

राजू तथा अंबा नाम के दो आदमी थे, जिन्होंने दौलतखाँ ख्वाजासरा की रक्षा में अत्याचार को अपनी जीविका बना रखा था और जिन थोड़े दिनों तक खुसरू लाहौर के सामने था उन दिनों इन दोनों ने बहुत अत्याचार किया था। हमने राजू को फाँसी की आज्ञा दी और अंबा को अमीर होने के कारण धन-दंड दिया। इससे पंद्रह सहस्र रुपये मिले, जिसे दान खाते तथा धर्म में व्यय करने के लिए आदेश दे दिया।

साद खाँ के पुत्र सादुल्ला खाँ को हमने दो हजारी १००० सवार का मंसब दिया। हमारे पास उपस्थित होने की विशेष इच्छा के कारण

---

१. फारसी शब्द कश्कः है।

पर्वेज ने लंबी दूरियों को वर्षा ऋतु तथा बराबर पानी गिरने में थोड़े समय में पार कर २६ वीं तिथि बृहस्पतिवार को जब दो प्रहर तीन घड़ी दिन बीत गया था, वह हमारे पास उपस्थित हुआ। हमने बड़ी कृपा तथा स्नेह से उसे दया के आलिंगन में लिया और उसका सिर चूमा।

जब खुसरू ने इस प्रकार अयोग्य कार्य किया तब हमने निश्चय किया कि जब तक उसे पकड़ न लेंगे तब तक कहीं नहीं रुकेंगे। ऐसी आशंका थी कि कहीं वह हिन्दुस्तान की ओर लौटे इस लिए आगरे को खाली छोड़ देना उचित नहीं था, जो साम्राज्य का केंद्र, हरम-वालियों का निवासस्थान और संसार के कोषों का आगार था। इन कारणों से हमने पर्वेज को आगरा छोड़ने के समय लिखा था कि उसकी राजभक्ति के कारण खुसरू भागा है और सौभाग्य ने उसकी ओर मुख फेरा है। हम खुसरू का पीछा करने जा रहे हैं। इसलिए राणा का कार्य किसी प्रकार अवसर के अनुसार तथा सम्राज्य के हित में निपटा कर वह शीघ्रता से आगरा चला आवे। हमने उसकी रक्षा में राजधानी तथा वह कोष सौंपा, जो कारूँ के कोष के बराबर था और उसे ईश्वर की कृपा पर छोड़ा था। पर्वेज के पास इस पत्र के पहुँचने के पहले राणा इतना दब गया था कि उसने आसफखाँ के पास यह संदेश भेजा कि वह अपने ही कार्यों से लज्जित है और उसे आशा है कि वह उसकी ओर से शाहजादे से प्रार्थना करेगा कि वह हमारे छोटे पुत्र बाघा की उपस्थिति से संतुष्ट हो जाय। पर्वेज ने पहले इसे स्वीकार नहीं किया था और कहलाया था कि राणा स्वयं आवे या अपने बड़े पुत्र कर्ण को भेजे। इसी बीच खुसरू के उपद्रव का समाचार आ पहुँचा और इस कारण आसफ खाँ तथा अन्य राजभक्तों ने बाघा का आना स्वीकार कर लिया, जो मांडलगढ़ में शाहजादे की सेवा में उपस्थित हुआ।

राजा जगन्नाथ तथा सेना के बहुत से सर्दारों को वहीं छोड़ कर परवेज आसफखाँ, पार्श्ववर्तियों तथा निजी सेवकों के साथ आगरे को चला और बाधा को अपने साथ लिवाता आया। जब वह आगरे के पास पहुँचा तब उसे खुसरू पर विजय-प्राप्ति तथा उसके पकड़े जाने का समाचार मिला और उसके दो दिन आराम करने पर उसे आज्ञा मिली कि अब सर्वत्र शांति हो गई है इसलिए हमारे पास आवे, जिसमें निश्चित तिथि को हमारी सेवा में उपस्थित होने का उसे सौभाग्य प्राप्त हो। हमने उसे आफ्ताबगीर दिया, जो बादशाही का एक चिन्ह है और दस हजारी मंसब प्रदान किया। साथ ही कार्याधिकारियों को आदेश दिया कि उसके लिए वेतन-जागीर नियत कर दें। इसी समय हमने मिर्जा अली बेग को कश्मीर भेजा और काजी इज्जतुल्ला को दस सहस्र रुपये काबुल के फकीरों तथा दरिद्रों को देने के लिया सौंपा। अहमद बेग खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १२५० सवार का कर दिया। इसी समय मुकर्रब खाँ छ महीने बाईस दिन पर लौटा, जिसे दानियाल के संतानों को लाने के लिए बुर्हानपुर भेजा था, और सेवा में उपस्थित होकर उसने प्रांत की घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया।

सैफखाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। बुखारा के सैयद अब्दुल्वहाब को, जो गत सम्राट् के समय दिल्ली का शासक था, हमने उस पद से हटा दिया क्योंकि उसके आदमियों ने कुकृत्य किए थे और उसे 'मददेमआश' पाने वालों तथा खैरातियों की सूची में डाल दिया। हमने सारे पैतृक राज्य में, खालसा तथा जागीरों में, बुलगूर खाना (क्षेत्र) बनाने का आदेश दे दिया, जहाँ पका हुआ भोजन दरिद्रों को उनकी अवस्थानुसार दिया जाय और निवासियों तथा यात्रियों दोनों को लाभ पहुँचे।

कश्मीर के राजाओं के परिवार के अंबाखाँ कश्मीरी को एक हजारी ३०० सवारों का मंसब दिया। ६ रबीउलआखिर सोमवार को हमने पर्वेज को एक विशिष्ट तलवार दी और जड़ाऊ तलवारें कुतुबुद्दीन खाँ कोका तथा अमीरुल्उमरा को दीं। हमने दानियाल के संतानों को देखा, जिन्हें मुकर्रबखाँ लाया था, तीन पुत्र तथा चार पुत्रियाँ थीं। पुत्रों का नाम तहमूर्स, बायसंगर तथा होशंग था। हम ने इनके साथ ऐसा प्रेम तथा दया का व्यवहार किया कि किसी को वैसी आशा नहीं थी। हमने निश्चय किया कि सबसे बड़ा तहमूर्स सदा हमारे पास उपस्थित रहा करे और दूसरों को अपनी बहिनों को सौंप दिया।

एक खास खिलअत राजा मानसिंह के लिए बंगाल भेजी गई। मिर्जा गाजी को तीस लाख दाम पुरस्कार देने की हमने आज्ञा दी। कुतुबुद्दीन कोका के पुत्र शेख इब्राहीम को एक हजारी ३०० सवार का मंसब तथा किश्वर खाँ की पदवी दी। खुसरू का पीछा करते समय हमने खुर्रम को महलों तथा कोषों की रक्षा पर छोड़ा था पर जब वह कार्य समाप्त हो गया तब हमने उस पुत्र को आज्ञा दी कि मरियमुज्जमानी तथा स्त्रियों को लिवाकर हमारे पास आवे। जब वे सब लाहौर के पास पहुँच गए तब शुक्रवार को उसी महीने की १२ वीं को हम नाव में सवार होकर दह नामक गाँव में अपनी माता से मिलने पहुँचे और सौभाग्य से उनसे जाकर मिले। अभिवादन तथा दंडवत करने पर जैसी चंगेज खाँ की प्रथा और तैमूर के नियमों के अनुसार तथा साधारण व्यवहार की प्रथा छोटों की बड़ों के प्रति होनी चाहिये और ईश्वर की प्रार्थना तथा इस कार्य के निपटने पर हमने लौटने को आज्ञा पाई और लाहौर लौट अ ।

१७ वीं को राणा के विरुद्ध गई सेना का बख्शी नियत कर हमने मुइज्जुलमुल्क को वहाँ भेज दिया। इस कारण कि हमें यह समाचार

मिला कि नागौर के पास राय रायसिंह तथा उसके पुत्र दिलीप ने विद्रोह कर दिया है, हमने राजा जगन्नाथ को आज्ञा भेजी कि वह साम्राज्य के अन्य सेवकों तथा मुइज्जुलमुल्क के साथ उनके ऊपर जाय और विद्रोह दमन करे। हमने सर्दारखाँ को पचास सहस्र रुपए दिए, जो शाह बेग खाँ के स्थान पर कंधार का अध्यक्ष नियत हुआ था, और उसे तीन हजारी २५०० सवार का मंसब दिया। खानदेश के गत राजा खिज्र खाँ को और उसके भाई अहमद खाँ को तीन तीन सहस्र रुपए दिये, जिनमें अंतिम खानःजाद था। कासिम खाँ का पुत्र हाशिम खाँ भी खानःजाद और उन्नति के योग्य था इसलिये उसे हमने ढाई हजारी १५०० सवार का मंसब दिया। इसे हमने एक अपना खास घोड़ा भी दिया। दक्षिण[१] में नियुक्त सरदारों में से आठ के लिए हमने खिलअत भेजे। कथा-पाठक निजाम शीराजी को पाँच सहस्र रुपए दिए गए। कश्मीर के शासक मिर्जा अली बेग के वकील को वहाँ के बुगलूरखाना के व्यय के लिए तीन सहस्र रुपए भेज दिए कि श्रीनगर भेज देवे। हमने कुतुबुद्दीन खाँ को छ सहस्र रुपए मूल्य का जड़ाऊ खंजर दिया।

हमें समाचार मिला कि शेख इब्राहीम बाबा अफगान ने लाहौर के एक पर्गने में एक धार्मिक स्थान खोल रखा है और उसके कृत्य दुष्टतापूर्ण तथा व्यर्थ हैं एवं बहुत से अफगान उसके पास इकट्ठे हो गए हैं। हमने आज्ञा दी कि उसे सामने लावें और उसे चुनार दुर्ग में बंद रखने के लिए पर्वेज को सौंप दिया, जिससे यह उपद्रव शांत हो गया।

७ वीं जमादिउलअव्वल रविवार को बहुत से मंसबदारों तथा अहदियों को उन्नति मिली। महाब्रतखाँ को दो हजारी १३०० सवार का,

---

१—पाठांतर राणा।

दिलावर खाँ को दो हजारी १४०० सवार का, वजीरुल्मुल्क को तेरह सदी ५५० सवार का, कयाम खाँ को एक हजारी १००० सवार का तथा श्याम सिंह को डेढ़ हजारी १२०० सवार का मंसब दिया और इस प्रकार बयालीस मंसबदारों को उन्नति मिली। अधिकतर दिनों में यही होता है। हमने पर्वेज को पचीस सहस्र रुपए मूल्य का एक लाल दिया। उक्त महीने की नवीं तारीख मंगल वार २१ शहरीवार को तीन प्रहर चार घड़ी के अनंतर सौर तुलादान का समारोह आरंभ हुआ, जो हमारी आयु के अड़तीसवें वर्ष का आरंभ है। प्रथा के अनुसार लोगों ने तुला का प्रबंध मरियमउज्जमानी के गृह पर किया। ठीक साइत में प्रार्थना के अनंतर हम तुला में बैठ गए, जिसकी प्रत्येक डोरी को एक एक मनुष्य पकड़े हुए प्रार्थना कर रहा था। प्रथम बार सोने की तौल तीन हिंदुस्तानी मन और दस सेर हुआ। इसके अनंतर हम अनेक धातुओं, सुगंधि द्रव्यों से बारह बार तौले गए, जिनका विवरण आगे दिया जायगा। वर्ष में दो बार हम अपने को सोना, चाँदी, अन्य धातु, हर प्रकार के रेशमी कपड़ों, विभिन्न अन्नों आदि से तौलते हैं, एक बार सौर वर्ष के आरंभ में और दूसरी बार चांद्रवर्ष के। दोनों तुलादानों का कुल बोझ विभिन्न कोषाध्यक्षों को फकीरों तथा दीनों में बाँटने को दे देते हैं। उसी शुभ दिन हमने कुतुबुद्दीन खाँ कोका पर विभिन्न कृपएँ कीं, जिस दिन के लिए वह आशा लगाए हुआ था। पहले हमने उसे पाँच हजारी ५००० सवार का मंसब दिया और इसके साथ एक विशिष्ट खिलअत, जड़ाऊ तलवार, तथा जड़ाऊ जीन सहित एक अपना खास घोड़ा उसे दिया। इसी समय इसे बंगाल तथा बिहार का प्रांताध्यक्ष नियत कर वहाँ भेजा, जो पचास सहस्र सवारों का स्थान है। सम्मान प्रगट करने के लिए वह भारी सेना के साथ रवाने हुआ और दो लाख रुपये उसे इसी सज्जा के लिए दिए गए। इसकी माता के साथ हमारा संबंध ही ऐसा था

क्योंकि हम बचपन में इसीकी रक्षा तथा अभिभावकता में रहे इस लिए हमारा जितना प्रेम इसके साथ था वैसा अपनी सगी माता से नहीं था। वह हमारे लिए माता रही है इसलिए हम कुतुबुद्दीन को अपने भाइयों तथा संतानों से कम नहीं समझते थे। वह हमारा धाय भाई था और हमारी कृपा का योग्य पात्र था। हमने इसके सहायकों को तीन लाख रुपए दिए। इसी दिन हमने एक लाख तीस सहस्र रुपए का 'साचक' पहाड़ी (शाहजादा मुराद) की पुत्री के लिए भेजा, जो पर्वेज से व्याही जाने वाली थी।

२२ वीं तिथि को बाजबहादुर कलमाक, जो बंगाल में बहुत दिनों से कुकृत्यों का दोषी था, सौभाग्य से हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। हमने उसे जड़ाऊ खंजर, आठ सहस्र रुपए तथा एक हजारी १००० सवार का मंसब बढ़ाकर दिया। एक लाख रुपए नगद तथा रत्न पर्वेज को दिया। केशोदास मारू का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १५०० सवार का कर दिया। हमारे भाई दानियाल का दीवान तथा अभिभावक अबुलहसन उसके पुत्रों के साथ हमारे दरबार में आया था और उसे एक हजारी ५०० सवार का मंसब मिला था। १ जमादिउस्सानी को शेख बायजीद को, जो सीकरी का एक शेखजादा था तथा अपने ज्ञान एवं प्रत्युत्पन्नमति के लिए प्रसिद्ध होते पुराना सेवक था, मुअज्जमखाँ की पदवी देकर सम्मानित किया और उसे दिल्ली का शासन दिया। उसी महीने की इक्कीसवीं को हमने पर्वेज को एक हार दिया, जिसमें चार लाल तथा सौ मोती थे। हकीम मुजफ्फर का मंसब बढ़ा कर तीन हजारी १००० सवार का कर दिया। हमने मँझौली के राजा नाथूमल[1] को पाँच सहस्र रुपए दिए।

---

1. पाठा०—भीममल।

एक विशिष्ट घटना मिर्जा अजीज कोका के एक पत्र का मिलना था, जिसे उसने खानदेश के राजा अली खाँ को लिखा था। हमारी यही धारणा थी कि खुसरू के कारण जो उसका दामाद था यह हमसे विशेष शत्रुता रखता है परंतु इस लेख के मिलने से यह स्पष्ट ज्ञात हो गया कि उसका आंतरिक कपटाचरण सदा बना रहा और हमारे पिता के विरुद्ध भी वह वैसा ही दुर्व्यवहार रखता था। संक्षेप में यह पत्र इसने कभी राजा अली खाँ को लिखा था, जिसमें आरंभ से अंत तक गाली तथा निंदा भरी थी और ऐसी बातें लिखी थीं जो शत्रु भी न लिखता तथा जो किसीके संबंध में नहीं कहा जाता, विशेषकर सम्राट् अकबर से पुरुष के लिए जो उदार सम्राट् तथा उसका बाल्यकाल से पालनकर्ता एवं शिक्षादाता था। इसकी माता की सेवाओं के कारण इस पर ये कृपाएँ कीं और ऐसा विश्वास किया जैसा किसी पर नहीं किया था। राजा अली खाँ के सामान में से यह पत्र बुर्हानपुर में ख्वाजा अबुल्हसन के हाथ पड़ गया, जिसे लाकर उसने हमारे सामने रख दिया। उस पत्र को देख तथा पढ़कर हमें रोमांच हो आया। इस विचार से कि इसकी माता ने हमारे पिता को दूध पिलाया है हमने अपने हाथ से इसका सिर नहीं उड़ा दिया। उसे अपने पास बुलवाकर हमने वह पत्र उसके हाथ में दिया और उसे जोर से सबके सामने पढ़ने के लिए आदेश दिया। जब उसने वह पत्र देखा तब हमने समझा कि उसका प्राण उसके शरीर से अलग हो जायगा परंतु निर्लज्जता तथा मूर्खता से वह उसे पढ़ने लगा मानों उसने लिखा ही नहीं था और आज्ञानुसार पढ़ रहा था। उस स्वर्गोत्तम दरबार में अकबर तथा जहाँगीर के सेवकों में से जो उपस्थित थे उन सबने उसे गाली दी तथा निंदा की। हमने उससे पूछा कि 'हमारे सौभाग्य के सम्बन्ध में अपने तुच्छ व्यक्तित्व के भरोसे तुमने जो कपटाचरण किया था उसे छोड़कर भी हमारे पिता ने तुम्हारे साथ क्या व्यवहार किया था कि

तुमने ऐसी बातें साम्राज्य के शत्रुओं को लिखीं ? जिसने तुम्हें तथा तुम्हारे परिवार को सड़क की धूलि से उठाकर इतने वैभव तथा सम्मान को पहुँचा दिया था कि समकालीनों को ईर्ष्या होती थी। तुमने अपने को दुष्टों तथा राजद्रोहियों में क्यों अपने को गिनाया ? वास्तव में जिसकी जो प्रकृति होती है उसे कोई नहीं बना सकता। तुम्हारी प्रकृति ही कपट के जल से सिंची हुई थी इससे उसमें से और क्या उत्पन्न होता ! हमने अपने प्रति तुम्हारे दुर्व्यवहार का ध्यान न कर तुम्हें वही मंसब दिया जो पहले तुम्हें मिल चुका था क्योंकि तुम्हारा कपट केवल हमारे प्रति था। जब यह ज्ञात हो गया कि ऐसा ही आचरण अपने आश्रयदाता और प्रत्यक्ष देवता के साथ भी किया था तो हम तुम्हें उन्हीं विचारों के साथ जो थे और हैं छोड़ देते हैं।' यह सब बातें सुनकर उसका मुख बंद हो गया और वह कुछ उत्तर न दे सका। ऐसे अपमान के सम्मुख वह कह भी क्या सकता था। हमने उसकी जागीर ज़ब्त कर लेने की आज्ञा दे दी। यद्यपि यह क्षमा करने योग्य नहीं था परंतु अंत में कुछ विचारों के कारण हमने उस पर ध्यान नहीं दिया।

उसी महीने की २६ वीं तिथि सोमवार को पर्वेज तथा शाहजादा मुराद की पुत्री के निकाह का जलसा हुआ। मरियमुज्जमानी के गृह पर निकाह हुआ था। जलसे का प्रबंध पर्वेज के गृह पर हुआ और सभी उपस्थित लोगों को अनेक प्रकार के पद आदि से सम्मानित किया गया। शरीफ आमिली तथा अन्य सर्दारों को नौ सहस्र रुपए दिए गए कि फकीरों और गरीबों में वितरित कर दें।

१० रज्जब रविवार को गिरझाक तथा नंदन में अहेर खेलने के लिए हम नगर में से निकले और रामदास के बाग में चार दिनतक ठहरे। मंगलवार १३ वीं को पर्वेज का तुलादान हुआ, जिसमें वह

बारह बार अनेक धातुओं तथा वस्तुओं से तौला गया। प्रत्येक तौल दो मन अठारह सेर की हुई। हमने सब फकीरों में बाँटने का आदेश दे दिया। इसी समय शुजाअत खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ७०० सवार का कर दिया।

मिर्जा गाजी तथा उसकी सेना के जाने के बाद हमें दूसरी सेना भी उसके पीछे भेजने का ध्यान आया। बहादुर खाँ कोरबेगी का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ८०० सवार का कर दिया और लगभग तीन सहस्र सवार इसके साथ शाह मुहम्मद तथा मुहम्मद अमीन की अध्यक्षता में वहाँ भेजा। इस सेना के व्यय के लिए दो लाख रुपये दिए और एक सहस्र बंदूकची नियत किए।

हमने खुसरू के निरीक्षण तथा लाहौर की रक्षा के लिए आसफखाँ को वहीं छोड़ा। बीमारी के कारण अमीरुल्उमरा की उपस्थिति क्षमा कर दी गई थी इसलिए वह नगर ही में रह गया। अब्दुर्रज्जाक मामूरी को राणा के देश से बुलाकर वहाँ बख्शी नियत किया और आज्ञा दी कि अबुलहसन के साथ स्थायी रूप से यह सेवा करता रहे। अपने पिता के नियमानुसार हम भी दो मनुष्यों को साथ ही बड़े पदों पर नियत करते हैं, इसलिए नहीं कि उनपर विश्वास नहीं होता प्रत्युत् इसलिए कि वे अमर नहीं हैं और कोई भी घटना या रोग से सुरक्षित नहीं है और यदि कोई एक किसी कष्ट या बाधा में पड़ गया तो दूसरा उपस्थित रहेगा जिससे ईश्वरीय प्रजा के कार्य नहीं नष्ट होने पावेंगे।

इसी समय समाचार मिला कि दशहरा पर, जो हिन्दुओं का एक निश्चित विशिष्ट उत्सव है, अब्दुल्ला खाँ ने अपनी जागीर काल्पी से बुंदेलों के राज्य पर चढ़ाई की और बड़ी वीरता दिखलाकर मधुकर के पुत्र रामचन्द्र को कैद कर लिया और उसे काल्पी ले आया है, जिसने

बहुत दिनों से उस दुर्गम प्रांत को उपद्रव का गृह बना रखा था। इस सेवा के लिए उसे झंडा दिया गया और मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया।

बिहार प्रांत के प्रार्थनापत्रों से ज्ञात हुआ कि जहाँगीर कुली का संग्राम[1] से युद्ध हुआ, जो बिहार का एक मुख्य जमींदार है और जिसके पास चार सहस्र सवार तथा अगणित पदाति सेना है। इसका कारण भूमि-सम्बन्धी कुछ उपद्रव तथा विद्रोह था। युद्ध में उक्त खाँ ने बड़ी वीरता दिखलाई। अंत में संग्राम गोली लगने से मारा गया, उसके बहुत से मनुष्य युद्ध में मारे गए और जो बचे वे भाग निकले। इस कारण कि यह अच्छा कार्य जहाँगीर कुली द्वारा हुआ था, उसका मंसब बढ़ाकर साढ़े चार हजारी ३५०० सवार का कर दिया।

तीन महीना छ दिन इस अहेर में लग गए। ५८१ पशु बंदूक, शिकारी चीते, जाल तथा कमूरगाह[2] से पकड़े गए। इनमें से १५८ हमारी बंदूक से मारे गए। कमूरगाह दो बार हुआ, एक बार पहले गिरझाक में, जब महल वालियाँ भी उपस्थित थीं, हुआ जिसमें १५५ पशु मारे गए। द्वितीय बार नंदन में ११० मारे गए। मारे गए पशुओं की तालिका इस प्रकार है—पहाड़ी भेड़ १८०, पहाड़ी बकरे २६, जंगली गधे १०, नीलगाय ६, हरिण आदि ३४८।

१—खड्गपुर का राजा था और अकबर के समय अधीनता स्वीकार कर राजा टोडरमल की सहायता की थी। जहाँगीर कुली लाल बेग काबुली जहाँगीर का प्रिय पात्र था और इसकी ऐंठ न सह सकने से यह युद्ध हुआ। देखिए मुग़ल दरबार भा० ३ पृ० २६६–७।

२—जंगल को कोस दो कोस तक घेर कर उसमें पशु हाँक दिए जाते हैं और तब बहुत से अहेरी उसमें घुस कर उन्हें मार डालते हैं।

१६ शव्वाल बुधवार को हम अहेर से सुरक्षित लौटे और एक प्रहर छ घड़ी दिन चढ़नेपर उसी दिन लाहौर में पहुँचे। इस अहेर में एक विचित्र कार्य देखने में आया। चाँदवाला में, जहाँ एक धरहरा बना हुआ है, हमने एक काले बारहसिंघे को पेट में घायल कर दिया। घायल होने पर एक ऐसा शब्द उसमें से होने लगा जैसा हमने कभी नहीं सुना था और जैसे बारहसिंघों के मस्त होने के समय होता है। यह इसलिए लिखा गया कि यह विचित्रता से खाली नहीं है। हमने सभी जंगली पशुओं के माँस में पहाड़ी बकरे का माँस अधिक सुस्वादु पाया, यद्यपि इसकी खाल बहुत दुर्गंधमय होती है, यहाँ तक कि इसके सुखाने पर भी इसकी गंध नहीं जाती। हमने सबसे बड़े नर बकरे को तौलने का आदेश दिया, जो दो मन चौबीस सेर हुआ और यह २१मन एराकी हुआ। एक बड़े मेढ़े को हमने तौलवाया तो वह दो मन तीन सेर अकबरी हुआ, जो सत्रह एराकी मन होता है। सबसे बड़ा तथा बलवान जंगली गधा नौ मन सोलह सेर हुआ, जो छिहत्तर एराकी मन होता है। हमने बहुधा अहेरियों तथा अहेर के प्रेमियों से सुना है कि किसी निश्चित समय पर पहाड़ी मेढ़ों की सींघोंमें एक कीड़ा पैदा हो जाता है और उसके काटने से खुजलाहट पैदा होने पर मेढ़ा अपनी मेढ़ियों से टक्कर लेता है और जब कुछ नहीं मिलता तब वृक्ष या शिला पर टक्करें लगाता है कि खुजलाहट मिट जाय। पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि भेड़ों की सींघों में भी यह कीड़ा उत्पन्न हो जाता है पर वह टक्कर नहीं मारतीं इस लिए यह कथन स्पष्ट ही झूठ है। यद्यपि पहाड़ी गधे का माँस हलाल है और बहुँतों को पसंद भी है पर हमें यह अच्छा नहीं लगता।

इस समय के पहले राय रायसिंह तथा उसके पुत्र दिलीप को दंड देने की आज्ञा दी जा चुकी थी, और अब समाचार आया कि सादिक खाँ का पुत्र जाहिद खाँ, शेख अबुल् फ़ज़ल का पुत्र अब्दुर्रहीम तथा

राणा सगरा और मुइज्जुल्मुल्क ने अन्य बहुत से मंसबदारों तथा शाही सेवकों के साथ दिलीप का नागौर के पास होना सुना, जो अजमेर प्रांत में है और उसपर चढ़ाई कर वहाँ पहुँच गए। इस कारण कि वह भाग नहीं सकता था उसने दृढ़ता से जमकर शाही सेना से युद्ध किया। थोड़ी देर की लड़ाई में पूर्णतया परास्त होकर और बहुत सी सेना कटाकर अपना सामान ले वह भाग गया।

वृद्ध हो जाने पर भी हमने कुलीज खाँ का मंसब बहाल रखा क्योंकि वह पिता के समय अच्छी सेवा कर चुका था और उसे कालपी में जागीर देने की हमने आज्ञा भी दी।

ज़ीक़दा महीने में कुतुबुद्दीन खाँ कोका की माँ मर गई, जिसने हमें दूध पिलाया था और इसलिए माता के समान थी या हमारी स्नेहमयी माता से बढ़कर स्नेह रखती थी और जिसकी गोद में हम बचपन में बढ़े थे। हमने उसके तावूत के पैरों की ओर कंधा लगाया था और कुछ दूर ले गया था। शोक के कारण कई दिन हमारी खाने की इच्छा नहीं हुई और न हमने कपड़े बदले।

द्वितीय जलूसी वर्ष का उत्सव

२२ जीकदा सन् १०१५ हि० (१० मार्च सन् १६०७ ई०) बुधवार को साढ़े तीन घड़ी दिन चढ़ने पर सूर्य मेष राशि में गया। महल प्रतिवर्ष के समान सजाया गया और मजलिस भी बड़े समारोह के साथ हुई। हम शुभ साइत में राजसिंहासन पर बैठे तथा सर्दारों एवं दरबारियों पर कृपाएँ दिखलाईं। इसी शुभ दिन में कंधार से आई हुई सूचनाओं से ज्ञात हुआ कि मिर्जा जानी के पुत्र मिर्जा गाजी के अधीन शाह वेग के सहायतार्थ भेजी गई सेना कंधार दुर्ग में १२ शव्वाल को पहुँच गई। जब कजिलबाश सेना ने विजयी सेना के कंधार से एक

पड़ाव पर पहुँचने का समाचार सुना तब वह चकित, विनम्र तथा पश्चात्तापयुक्त हो गई और तब तक भागने से बाग नहीं खींची जब तक पचास-साठ कोस दूर हलमंद नदी नहीं पहुँच गई।

इसके साथ ही यह भी ज्ञात हुआ कि फराह का अध्यक्ष तथा आस-पास के अन्य शासकों ने यह विचार किया कि सम्राट् की मृत्यु के अनंतर उत्पन्न गड़बड़ी में कंधार दुर्ग सहज में उनके हाथ में पड़ जायगा इसलिए शाह अब्बास से बिना आज्ञा लिए ही वे एकत्र हो गए और सीस्तान के शासक को भी मिला लिया। किसीको हिरात के अध्यक्ष हुसेन खाँ के पास भेज कर उससे भी सहायता माँगी। उसने भी सेना भेज दी। इसके अनंतर वे कंधार की ओर आक्रमण के लिए चले। कंधार के अध्यक्ष शाह बेगखाँ ने यह समझ कर कि युद्ध के दो सिर होते हैं और यदि वह परास्त हुआ तो कंधार का अधिकार हाथ से निकल जायगा। इसलिए उसने दुर्ग में रह कर घेरा सहना युद्ध से अच्छा समझा। इस कारण उसने दुर्ग को दृढ़ करना निश्चय किया और दरबार को शीघ्रगामी दूत भेज दिए। इसी समय ऐसा हुआ कि खुसरू का पीछा करता हुआ शाही झंडा आगरे से चलकर लाहौर पहुँच गया था। यह समाचार सुनते ही तत्काल मिर्ज़ा गाज़ी के अधीन सर्दारों तथा मंसबदारों की विशाल सेना वहाँ भेज दी गई। मिर्ज़ा के कंधार पहुँचने के पहले ही यह समाचार शाह को मिला कि फराह का शासक कुछ मंसबदारों के साथ कंधार प्रांत की ओर गया है। इसे अनुचित व्यवहार समझकर उसने एक प्रसिद्ध पुरुष तथा अपने जाने हुए विश्वासपात्र मनुष्य हुसेन बेग को जाँच करने के लिए भेजा। उसने उन सर्दारों के नाम आज्ञापत्र भी भेजा कि वे कंधार के पास से तुरंत हट आवें और अपने स्थानों को चले जायँ क्योंकि उसके पूर्वजों की मित्रता तथा सुमनसता जहाँगीर बादशाह के प्रसिद्ध वंश से बहुत

पहले की है। हुसेनवेग तथा आज्ञापत्रों के पहुँचने के पहले उस सेना ने बादशाही सेना का सामना करने में अपने को असमर्थ देखकर लौटने ही में अपना भला समझा। उक्त हुसेन वेग उनकी भर्त्सना कर हमसे मिलने के लिए चला आया और लाहौर में उसे वैश्व करने का सम्मान प्राप्त हुआ। उसने बतलाया कि बिना शाह अव्वास की आज्ञा के उस अभागी सेना ने कंधार पर आक्रमण कर दिया था। ईश्वर न करे कि इस कारण हमारे मन में किसी प्रकार की विमनस्ता बनी रहे। संक्षेपतः विजयी सेना के कधार पहुँचने पर आज्ञानुसार दुर्ग का भार सर्दार खाँ को सौंपकर शाह वेग खाँ सहायक सेना के साथ दरबार चला आया।

२७ जीक़दा को अब्दुला खाँ रामचंद्र बुंदेला को कैद तथा बेड़ी में लाकर हमारे सामने उपस्थित किया। हमने बेड़ी निकाल देने का आदेश दिया और उसे खिलअत देकर राजा बासू को सौंपा कि वह उससे जमानत लेकर उसे तथा उसके संबंधियों को जो साथ में पकड़े गए हैं छोड़ दे। यह हमारी दया तथा कृपा के कारण हुआ और उसने कभी न कल्पना की होगी कि हम ऐसी दया व कृपा उस पर दिखलावेंगे।[1]

२ जीहिज्जा को हमने अपने पुत्र खुर्रम को तूमान व तोग, झंडा व डंका दिया और आठ हजारी ५००० सवार का मंसब प्रदान कर जागीर के लिए भी आदेश दिया। उसी दिन दौलत खाँ लोदी के पुत्र पीर खाँ[2] को, जो खानदेश से दानियाल के संतानों के साथ आया था, सलाबत खाँ की पदवी, तीन हजारी १५०० सवार का मंसब और झंडा तथा डंका देकर सम्मानित किया। साथ ही इसे फर्जंदी (पुत्र का)

---

१. देखिए मुगल दरबार प्रथम भाग पृ० २२० की टिप्पणी।

२. देखिए मुगल दरबार भाग ३ पृ० १३७।

की प्रतिष्ठा देकर उसे समवयस्कों तथा साथियों से ऊँचे उठा दिया। इस सलाबत खाँ के दादा के पूर्वज तथा पितृव्यगण लोदी जाति में गण्य-मान्य समझे जाते थे। सलाबत खाँ के पितामह का पितृव्य बड़े दौलत खाँ ने, जब अपने पिता सिकंदर की मृत्यु पर इब्राहीम लोदी अपने पिता के सर्दारों से कुव्यवहार करने लगा और बहुतों को नष्ट कर दिया तब, सशंकित होकर पुत्र दिलावर खाँ को सम्राट् बाबर के पास काबुल भेजा और भारत पर चढ़ाई करने का प्रस्ताव किया। बाबर के मन में भी यह आकांक्षा थी इसलिए उसने तुरंत इस ओर कूच कर दिया और लाहौर पहुँचने तक नहीं रुका। दौलत खाँ भी अपने अनुगामियों के साथ सेवा में उपस्थित हुआ और राजभक्ति-पूर्ण कार्य किए। यह वृद्ध पुरुष वाह्य तथा आंतरिक गुणों से सुसज्जित था इसलिए अच्छी सेवा की। बाबर उसे बाबा कहता था और उसे पहले ही के समान पंजाब प्रांत का शासन सौंपकर अपने सर्दारों तथा ज़ागीरदारों को उसी के अधीन कर दिया। इसके अनंतर दिलावर खाँ को साथ लेकर बाबर काबुल चला गया। जब वह हिंदुस्तान पर आक्रमण करने की इच्छा से द्वितीय बार पंजाब आया तब दौलत खाँ भी उपस्थित हुआ और इसी समय वह मर भी गया।[1] दिलावर खाँ को खानखानाँ की पदवी दी गई और वह इब्राहीम के युद्ध में भी साथ था। उसी प्रकार यह हुमायूँ के साथ भी बराबर स्थायी रूप से रहा। हुमायूँ के बंगाल से लौटते समय मुंगेर थाने में इसने शेर खाँ अफगान से घोर युद्ध किया और उसी युद्ध स्थल पर पकड़ा गया। यद्यपि शेरखाँ ने उसे बहुत

---

१. अज्ञान से जहाँगीर ने दौलत खाँ के विद्रोह आदि का वर्णन नहीं किया, ऐसा ज्ञात होता है। देखिए लीडन अर्सकाइन का मेमॉयर्स ऑव बाबर भा–२ पृ० १५१–४।

समझाया कि वह उस की सेवा स्वीकार कर ले पर उसने अस्वीकार कर दिया और कहा कि तुम्हारे पूर्वज हमारे पूर्वजों के सेवक थे इसलिए यह कैसे हो सकता है। शेर खाँ ने क्रुद्ध होकर इसे दीवाल में चुनवा दिय।

सलाबत खाँ फर्जंद का पितामह उमर खाँ दिलावर खाँ का चचेरा भाई था और सलीम खाँ के समय इसके साथ सम्मान का व्यवहार होता रहा। सलीम खाँ के मरने तथा उसके पुत्र फ़ीरोज़ के मुहम्मद खाँ के द्वारा मारे जाने पर उमर खाँ और उसके भाई लोग उससे सशंकित होकर गुजरात चले गए, जहाँ उमर खाँ मर गया। उसका पुत्र दौलत खाँ, जो वीर सुंदर युवक था, वैराम खाँ के पुत्र अब्दुर्रहीम के साथ रहने लगा, जिसे अकबर के राज्यकाल में खानखानाँ का पदवी मिली थी, और अच्छी सेवाएँ की। खानखानाँ उसे अपने भाई के समान मानता था या भाई से सहस्र गुणा बढ़कर प्रिय समझता था। खानखानाँ को उसकी विजयों में अधिक तर इसी की साहस तथा वीरता से प्राप्त हुई थीं। जब हमारे पिता खानदेश प्रांत तथा आसीर गढ़ लेने के अनंतर आगरे लौटे तब उस प्रांत को तथा दक्षिण के सुलतानों से प्राप्त अन्य प्रांतों को दानियाल के अधीन छोड़ा था। इसी समय दानियाल ने दौलत खाँ को खानखानाँ से ले लिया और अपनी सेवा में रख लिया। इसे ही उसने अपना कुल राज्यकार्य का भार सौंप दिया। दानियाल ने उस पर बड़ी कृपा तथा पूरा स्नेह दिखलाया और इसीकी सेवा में उसकी मृत्यु हो गई। उस के दो पुत्र मुहम्मद खाँ और पीर खाँ थे। बड़ा पुत्र मुहम्मद खाँ पिता की मृत्यु के थोड़े ही दिन अनंतर मर गया। दानियाल भी पीते-पीते समाप्त हो गया। अपनी राजगद्दी के अनंतर हमने पीर खाँ को दरबार बुला लिया। हम ने उस में अच्छी प्रकृति तथा स्वाभाविक गुण देखे इसलिए हमने ऊँचे चढ़ा दिया, जैसा लिखा जा चुका है। आज हमारे साम्राज्य में ऐसा कोई नहीं है, जिसका

प्रभाव इससे बढ़कर हो, यहाँ तक कि इस के कहने पर हम वह दोष क्षमा कर देते हैं, जो किसी अन्य शाही सेवक की प्रार्थना पर नहीं करते। संक्षेप में यह अच्छे स्वभाव का, वीर, कृपाओं के योग्य युवक था और हमने उसके साथ जो कुछ किया वह ठीक था और यह अन्य कृपाओं से सम्मानित किया जायगा।[१]

हमने अपने पूर्वजों के पैतृक राज्य मावरुन्नहर पर चढ़ाई करने का निश्चय कर लिया था इसलिए हिंदुस्तान के उपद्रव तथा विद्रोह रूपी कूड़े को साफ करने का और अपने एक पुत्र को उस देश में छोड़ कर व्यूह-बद्ध वीर सेना, विशाल मत्त तीव्रगामी हाथियों तथा पूर्ण कोष साथ लेकर पैतृक राज्य पर अधिकार करने का विचार किया। इस विचार के अनुसार हमने पर्वेज़ को राणा को पीछे हटा देने को भेजा और दक्षिण जाने की इच्छा की परंतु ठीक इसी समय खुसरू का उपद्रव उठ खड़ा हुआ और उसका पीछा करना तथा उस उपद्रव को शांत करना आवश्यक हुआ। इसी कारण पर्वेज की चढ़ाई भी विशेष सफल नहीं हुई और अवसर समझकर उसे राणा को छूट देनी पड़ी। राणा के पुत्रों में से एक को लिवाकर उसे हमारी सेवा में आना पड़ा और लाहौर में वह उपस्थित हुआ। जब खुसरू के विद्रोह से शांति मिली और कंधार को घेरने वाले कज़िलबाश भी सुगमता से हटा दिए गए तब हमारी इच्छा काबुल में अहेर खेलने की हुई, जो हमारी जन्मभूमि के समान है। उसके अनंतर हम जब हिंदुस्तान लौट आवेंगे तब हमारी इच्छाएँ कार्य रूप में परिणत होंगी। इसी विचार के अनुसार जीहिज्जा को शुभ साइत में हमने लाहौर दुर्ग छोड़ा

---

१. महम्मद शरीफ अमीरुल् उमरा के संबंध में भी इसी प्रकार का उद्गार पहले आचुका है।

और दिलामेज़ बागमें उतरे, जो रावी नदीके उस पार है और वहाँ चार दिन ठहरे। १९ फरवरदीन रविवार को, जो सूर्य के पूर्ण प्रकाश का दिवस है, हम बाग में गए और कुछ शाही सेवकों को कृपापूर्वक मंसब बढ़ाकर सम्मानित किया। फारस के राजदूत हसन बेग को दस सहस्र रुपए दिये गये। कुलीज खाँ, मीरान सद्रजहाँ और मीर शरीफ आमुली को लाहौर में छोड़कर आज्ञा दी कि जो कार्य आजावे वे उसे आपस में सम्मति कर पूरा करें। सोमवार को हम उक्त बाग से आगे बढ़े और हरहर ग्राम में पड़ाव डाला, जो नगर से साढ़े तीन कोस पर है। मंगलवार को जहाँगीर पुर पहुँचे, जो हमारा एक निश्चित अहेर-स्थान है। इसी के पड़ोस में हमारे आदेश से मनसाराज[1] नामक हरिण के कब्र पर एक मीनार बना था, जिसका जोड़ पालतू हरिणों से लड़ने में तथा जंगलियों का अहेर खेलने में दूसरा नहीं था। उस मीनार के एक पत्थर पर एक गद्य-लेख खुदा था जिसे मुल्ला मुहम्मद हुसेन कश्मीरी ने लिखा और जो अपने समय के सुलिपि-लेखकों का सर्दार था। लेख था 'इस आकर्षक स्थान में एक हरिण ईश्वर के ज्ञाता सम्राट् नूरुद्दीन जहाँगीर के जहाँगीरी जाल में आफँसा। एक महीने में जंगली भीषणता दूर कर वह विशिष्ट हरिणों का सर्दार बन गया।' इस हरिण के अलभ्य गुण के कारण हमने आज्ञा देदी कि इस वन के हरिणों का कोई अहेर न खेले और इनका माँस हिंदुओं तथा मुसलमानों के लिये गाय तथा सूअर के माँस के बराबर होगा। उन्होंने उसकी कब्र का पत्थर हरिण के आकार का बनाया। हमने उक्त परगने के जागीरदार सिकंदर मुईन को आज्ञा दी कि जहाँगीरपुर में एक दृढ़ दुर्ग बनवावे।

---

१. इलि० डाउ०भा० ६ पृ० ३०२ पर केवल 'राज' नाम दिया है।

बृहस्पतिवार १४ वीं को हमने चंडाल[1] परगने में पड़ाव डाला। शनिवार १६ वीं को बीच में एक पड़ाव डालकर हम हाफिजाबाद पहुँचे। वहाँ के करोड़ी मीर कमरुद्दीन के प्रयत्न से बने हुए स्थान में हम ठहरे। दो कूच पर हम बृहस्पति वार २१ जीहिज्जा को चिनाब नदी पहुँचे और एक पुल से पार हुए जो वहाँ बना था और गुजरात परगने के पास पड़ाव डाला। जिस समय सम्राट् अकबर कश्मीर गए थे उस समय एक दुर्ग उस तट पर बना था। गूजरों के एक झुंड को उस दुर्ग में लाकर बसाया, जो अपना समय उसके आस पास में चोरी या डाँके में व्यतीत करते थे। गूजरों का निवासस्थान हो जाने से उन्होंने इसे एक अलग परगना बनाकर गुजरात नाम रख दिया। वे गूजरों को एक जाति बतलाते हैं जो बहुत कम शारीरिक परिश्रम करते हैं और दूध-दही पर कालयापन करते हैं। शुक्रवार को हम खवासपुर पहुँचे, जो गुजरात से पाँच कोस पर है और शेर खाँ अफगान के एक दास खवास खाँ द्वारा बसाया हुआ है। बीच में दो स्थानों पर ठहर कर हम झेलम के किनारे पहुँच कर उतरे। उस रात्रि ऐसी प्रबल आँधी चली और ऐसे काले बादलों ने आकाश को ढँक लिया तथा वर्षा ऐसी मूसलाधार हुई कि बड़े बूढ़े लोगों ने भी वैसी अपने स्मरण में कभी नहीं देखी थी। वर्षा के साथ पत्थर भी पड़े, जो मुर्गी के अंडों के इतने बड़े थे। नदी की बाढ़ तथा प्रबल अंधड़ के कारण पुल टूट गया। हम हरमवालियों के साथ नाव से पार उतरे। नावें बहुत कम थीं, जिससे सब पार हो सकें तब हमने आदेश दिया कि वे रुके रहें जब तक पुल की मरम्मत न हो जाय। यह कार्य एक सप्ताह में हो गया और तब सारा पड़ाव सुखपूर्वक पार हो गया।

---

१. अब इसका नाम चंदिआल है।

झेलम नदी का स्रोत कश्मीर में वीरनाग नामक एक चश्मा है। हिंदी भाषा में नाग सर्प को कहते हैं और ज्ञात होता है कि उस स्थान में पहले सर्प रहा होगा। अपने पिता के जीवन-काल में हम दो बार उस चश्मे तक गए थे, जो कश्मीर नगर से बीस कोस पर है। यह चश्मा चौकोर है और बीस-बीस गज लँबा चौड़ा है। इसके आस-पास में तपस्वियों के बहुत से आश्रमों के अवशेष हैं, पत्थरों के बने हुए तथा असंख्य गुफाएँ। इसका जल अत्यंत निर्मल है। यद्यपि इसकी गहराई का हम अनुमान नहीं कर सके पर यदि पोस्ते का एक दाना उसमें छोड़ा जाय तो वह जब तक तह तक नहीं पहुँचता तब तक दिखलाई पड़ता है। इसमें मछलियाँ भी बहुत हैं। हमने सुना कि इसकी गहराई अगाध है तब पत्थर बाँधकर डोरी डालने की आज्ञा दी और डोरी को नापने पर केवल डेढ़ पुरसा निकला। अपनी राजगद्दी के अनंतर हमने आज्ञा दी कि उस चश्मे के किनारों को पत्थर से बाँध दें और उसके चारों ओर उद्यान लगाकर नहर निकालें। साथ ही उसके आस-पास प्रासाद तथा गृह निर्माण करें और उसे ऐसा स्थान बना दें जैसा यात्रीगण संसार भर घूमने पर कम बतला सकें। जब यह नदी पाम्पुर पहुँचती है, जो नगर से दस कोस पर है तब चौड़ी हो जाती है। इसी ग्राम में सारे कश्मीर का केसर उत्पन्न होता है। संसार में अन्यत्र भी इतना केसर उत्पन्न होता है, यह हम नहीं जानते। प्रति वर्ष हिंदुस्तानी तौल से पाँच सौ मन केसर यहाँ उत्पन्न होता है, जो एराकी चार सहस्र मन होता है। हम एक बार अपने पिता के साथ उस समय गए थे जब केसर फूलता है। संसार के अन्य पौधों में पहले अंकुर आता है और तब पत्ते तथा फूल निकलते हैं। इसके विरुद्ध केसर में जब पौधा चार अँगुल भूमि से निकलता है तभी फूल नीला रंग लिए निकलने लगते हैं, जिनमें चार पत्तियाँ होती हैं और बीच में चार तार संतरी रंग के निकले रहते हैं, जो एक अँगुल लंबे होते हैं। यही केसर

है। केसर के खेतों को जोतने या पानी देने की आवश्यकता नहीं होती और पौधे आपसे आप भूमि से निकलते हैं। कुछ स्थानों में एक-एक कोस तक इसके खेत होते हैं और कहीं आध कोस तक। यह दृश्य दूर से सुन्दर ज्ञात होता है। जिस समय केसर बटोरा जाता है उस समय इतना तीव्र गंध होता है कि हमारे अनुयायियों का सिर दर्द करने लगा। यद्यपि हमने मदिरा एक प्याला पी पर तब भी पीड़ा हुई। पशुवत् कश्मीरियों से, जो फूल तोड़ रहे थे, हमने पूछा कि उन्हें कैसा मालूम होता है तब उनके उत्तर से आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कभी पीड़ा का अनुभव नहीं किया।

वीर नाग से निकली हुई धारा अन्य धाराओं तथा नालों से मिलती हुई, जो दोनों ओर से आकर मिलती हैं, झेलम नदी नगर के बीच से होकर आगे बढ़ती है। अधिकतर स्थानों में इसकी चौड़ाई इतनी नहीं है कि इस पार से ढेला उस पार न पहुँच सके। कोई इसका जल नहीं पीता क्योंकि यह भारी तथा कुपाच्य है। कश्मीर के निवासी एक झील का पानी पीते हैं, जो नगर के पास है तथा जिसे डल कहते हैं। झेलम नदी इस झील में गिरती है और इसमें से होकर बारहमूला, पकली तथा दंतूर होती हुई पंजाब में जाती है। कश्मीर में नदियों तथा चश्मों के कारण जल बहुत है पर इनमें सबसे अच्छी लार घाटी की धारा है, जो शिहाबुद्दीनपुर में झेलम में गिरती है। वह ग्राम कश्मीर के प्रसिद्ध स्थानों में से है और झेलम के तट पर स्थित है। इसमें लगभग सौ चनार के सुंदर वृक्ष इस प्रकार गुँथे हुए कुछ रम्य तथा हरी भरी भूमि को इस प्रकार घेरे हुए हैं कि वह सारी उनकी छाया में आ जाती है। वह भूमि भी इस प्रकार घास तथा दूब से भरी है कि उस पर गलीचा बिछाना व्यर्थ सा ज्ञात होता है। इस ग्राम को सुलतान जैनुल् आबदीन ने बसाया था, जिसने पूर्ण अधिकार के साथ बावन वर्ष तक कश्मीर पर

राज्य किया था। वहाँ के लोग उसे बड़ा बादशाह कहते हैं। वे उसकी विचित्र बातें सुनाते हैं। कश्मीर में उसके बनवाए गृह-प्रासाद के अनेक ध्वंस तथा अवशेष मिलते हैं। इनमें एक वूलर झील के बीच में है, जिसका घेरा तीन-चार कोस में है। इसे जैन लंका कहते हैं और इसके निर्माण में बहुत प्रयत्न करना पड़ा था। इस झील का पानी बहुत गहरा है। पहले नावों पर पत्थर लादकर ले आए और जहाँ प्रासाद बना है वहाँ सब छोड़ दिया पर उसका कोई फल नहीं निकला। तब सहस्रों नावें पत्थरों से लदी हुई वहाँ डुबो दी गईं और तब बड़े परिश्रम से जल के ऊपर सौ गज लंबी तथा सौ गज चौड़ी भूमि निकली। इस पर एक प्रासाद तथा एक मस्जिद बनी, जिससे अच्छी इमारत अन्यत्र नहीं देखने में आई। वह नाव से बहुधा इस स्थान में आता और ईश्वर का ध्यान करता। इसने कितने ही चालीसा (दिन) इस स्थान में व्यतीत किए थे।

एक दिन इसका एक दुष्ट पुत्र इसे मारने के विचार से इस स्थान में आया और इसे अकेला पाकर तलवार खींच भीतर गया परंतु जब इसकी आँखों ने सुलतान को देखा तब उसकी भव्यता तथा उसके पुण्य-प्रताप से वह घबड़ा कर लौट आया। थोड़ी देर में सुलतान भी बाहर आया और उसी पुत्र के साथ नाव में जा बैठा तथा नगर को चल दिया। मार्ग में उसने अपने पुत्र से कहा कि हम अपनी माला वहीं छोड़ आए हैं, छोटी नाव से जाकर उसे ले आओ। पुत्र उस पवित्र स्थान में जाकर देखता है कि उसके पिता उसी स्थान पर हैं और तब वह दुष्ट पिता के पैरों पर गिर पड़ा और क्षमा याचना की। वे इसकी इस प्रकार की बहुत सी विचित्र बातें सुनाते हैं और कहते हैं कि उसे प्राण तथा शरीर को अलग करने की विद्या आती थी। पुत्रों के व्यवहार तथा कार्य से यह समझ कर कि इन्हें राज्य तथा शासन करने की जल्दी

है, वह उनसे कहता कि हमें राज्य छोड़ देना बहुत सहज है यहाँ तक कि प्राण त्याग करना भी परंतु मेरे जाने के अनतर तुम लोग कुछ न कर सकोगे और तुम लोगों का ऐश्वर्य अधिक न टिकेगा तथा तुम लोग थोड़े ही समय में अपने व्यवहारों एवं कार्यों का फल पाओगे। इस प्रकार कहने के अनंतर उसने खाना-पीना त्याग दिया और इस प्रकार चालीस दिन व्यतीत किए। इसने सोना भी त्याग दिया और साधुओं के समान ईश्वर के ध्यान में लगा रहा। चालीसवें दिन इसने अपना प्राण त्याग दिया और ईश्वर के पास जा पहुँचा। इसने तीन पुत्र छोड़े-आदम खाँ, हाजी खाँ और बहराम खाँ। ये तीनों आपस में लड़ने लगे और तीनों ही नष्ट हो गए। कश्मीर का राज्य चक नामक जाति के हाथ में चला गया, जो पहले उस प्रांत के साधारण सैनिक थे। इनके राज्यकाल में तोन ने वूलर झील में जैनुल्आबदीन के बनवाए टापू पर तीन ओर तीन इमारतें बनवाई पर इनमें एक भी वैसी दृढ़ न बन सकी।

वर्षा तथा शरद ऋतुओं में कश्मीर दर्शनीय हो जाता है। हमने शरद ऋतु में कश्मीर देखा और जैसा सुना था उससे कहीं बढ़कर देखा। वर्षा हमने उस प्रांत की अभी नहीं देखी है पर आशा है कि शीघ्र देखेंगे। १ मुहर्रम शनिवार को हम झेलम के किनारे से चले और एक दिन बीच में बिता कर रोहतास पहुँचे। यह दुर्ग शेर खाँ अफगान के बनवाए हुए दुर्गों में से एक है। यह नदी में बना हुआ है और इसकी दृढ़ता कल्पना से परे है। यह स्थान एक उपद्रवी तथा विद्रोही जाति गक्खरों के प्रांत के पास है। इसलिए उसके मन में आया कि यह दुर्ग उनको दमन करने तथा शांत रखने में विशेष काम आएगा। जब यह दुर्ग कुछ ही बना था तभी शेरखाँ की मृत्यु हो गई और यह सलीम खाँ के समय में पूरा हुआ था। फाटक के ऊपर दुर्ग-निर्माण

का व्यय एक पत्थर पर खुदवाकर लगाया गया है, जो सोलह करोड़ दस लाख दाम है। यह चालीस लाख पचीस सहस्र हिंदुस्तानी रुपए, एक लाख बीस हजार एराकी तूमान तथा एक अरब इक्कीस लाख पछत्तर सहस्र वर्तमान प्रचारित तूरानी खानियों के बराबर होता है।

४ मुहर्रम मंगलवार को पौने पाँच कोस यात्रा कर हमने टीला में पड़ाव डाला और वहाँ से भकरा पहुँचे। गक्खर भाषा में भकरा जंगल को कहते हैं। इसमें सुगंधि रहित श्वेत फूलों के पौधे हैं। टीला से भकरा तक हम नदी की तह से ही यात्रा करते रहे जिसमें जल भी बह रहा था और पुष्प खूब फूले हुए थे, जिनका रंग'गाश' की कलियों के समान था। हिंदुस्तान में यह पौधा सदा पुष्पित रहता है। नदी के तटों पर ये खूब खिले हुए थे। घुड़सवारों तथा पदातिकों को आज्ञा दी कि सब फूलों का गुच्छा अपनी पगड़ियों में खोसलें और जिसने ऐसा नहीं किया उसकी पगड़ी उतरवा दी गई। इससे फूलों का एक बड़ा मैदान सा बन गया।

६ मुहर्रम बृहस्पतिवार को हतिया में पड़ाव पड़ा। इस मार्ग में पलाश के वृक्ष फूले हुए थे। यह भी हिंदुस्तान के जंगलों का एक विशेष पुष्प है, जिसमें गंध नहीं होती और रंग चमकता संतरी होता है। फूल के नीचे का अंश काला होता है और वह लाल गुलाब के इतना बड़ा होता है। यह इतना सुंदर होता है कि उस पर से दृष्टि हटाई नहीं जाती। हवा बड़ी मृदु बह रही थी, बादलों ने सूर्य को छिपा लिया था और वर्षा भी धीमी हो रही थी इसलिए हमारी इच्छा मदिरापान करने की हुई। संक्षेप में इस मार्ग की यात्रा बड़े आनंद तथा सुख से कटी। हाथी नामक गक्खर द्वारा बसाए जाने के कारण इस ग्राम का नाम हतिया पड़ा था। मार्गला से हतिया तक का प्रांत पोथूवार कहलाता है। इन

प्रांतों में कौए बहुत कम हैं। रोहतास से हतिया तक भुग्यालों का निवास है, जो गक्खरों से संबंधित हैं और एक ही परिवार के हैं।

७ वीं शुक्रवार को यात्रा आरंभ कर साढ़े चार कोस चले और पक्का में पड़ाव डाला। यह स्थान पक्का इसलिए कहा जाता है कि इसकी सराय पकी हुई ईंट से बनी हुई थी। हिंदी भाषा में पक्का पके हुए को कहते हैं। यहाँ गर्द तथा धूल भरा हुआ था और सड़क के खराब होने से गाड़ियों के चलने में बहुत कष्ट हुआ। काबुल से यहाँ जो 'रिवाज' ले आए थे वह सब नष्ट हो गया था।

शनिवार ८ को साढ़े चार कोस चलकर हम खार ग्राम में पहुँचे। गक्खर भाषा में खार फटी हुई भूमि को कहते हैं। इस प्रांत में पेड़ बहुत कम हैं। रविवार ९ को रावलपिंडी से आगे बढ़कर रुके। यह स्थान रावल नामक हिंदू का बसाया है और गक्खर भाषा में पिंडी ग्राम को कहते हैं। इस स्थान के पास की घाटी में एक धारा बहती है, जिसका पानी एक ताल में भरता है। यह स्थान रमणीकता से खाली नहीं है इसलिए हम यहाँ ठहरे और गक्खरों से उस ताल की गहराई का पता लगाया परंतु वे ठीक उत्तर नहीं दे सके। यह कहा कि उन लोगों ने अपने पूर्वजों से सुना है कि इस ताल में मगर हैं और जो जानवर पानी पीने आता है उसे घायल कर देते हैं, इसलिए कोई उस जल में नहीं उतरता। हमने आज्ञा दी कि एक भेड़ जल में फेंक दी जाय। वह तैरकर दूसरी ओर निकल गई। हमने तब एक फर्राश को जल में उतरने के लिए कहा और वह भी सुरक्षित निकल आया। इससे स्पष्ट हो गया कि गक्खरों का कथन निराधार था। ताल एक तीर के उड़ान की चौड़ाई की थी।

१० सोमवार को हम खरबूज़ा ग्राम में उतरे। पहले गक्खरों ने यहाँ एक गुंबददार इमारत बनवाई थी और यात्रियों से कर उगाहते थे। यह गुंबद खरबूजे के आकार का था इसलिए इसका ऐसा नाम पड़ा।

मंगलवार ११ को हम काला पानी में उतरे, जो 'स्याह आब' का हिंदी अर्थ है। यहाँ एक कोतल है जिसे मारगल्ला कहते हैं। हिंदी में मार का अर्थ मारना-पीटना है और गल्ला का व्यापारी-दल है। नाम का तात्पर्य हुआ कि कारवाँ को लूटने का स्थान। गक्खर देश की यह सीमा है। यह जाति विचित्र रूप से पशुवत् है और सदा आपस में लड़ती झगड़ती रहती है। यद्यपि हमने चाहा कि इस झगड़े को बंद करा दें पर न कर सके।

१२ बुधवार को बाबा हसन अब्दाल में पड़ाव पड़ा। इस स्थान से एक कोस पूर्व एक जल-प्रपात है जिस पर से धारा बड़े वेग से प्रवाहित होती है। काबुल तक के मार्ग में ऐसा दूसरा प्रपात नहीं है। कश्मीर के मार्ग में ऐसे दो तीन प्रपात हैं। इस धारा के स्रोत घाटी के बीच में राजा मानसिंह ने एक छोटी सी इमारत बनवाई है। इसमें कई प्रकार की मछलियाँ हैं, जो आध गज या चौथाई गज लंबी हैं। हम इस रम्यस्थली में तीन दिन ठहरे और अंतरंग मित्रों के साथ मदिरा पीते तथा मछली मारते रहे। अब तक हमने 'सुफरा' जाल नहीं डाला था, जिसे हिंदी में भँवर जाल कहते हैं और यह प्रसिद्ध जाल है। इसे फेंकना सहज नहीं है पर हमने इसे अपने हाथ से फेंका और बारह मछली पकड़ीं। हमने उनके नाकों में मोती पहिराकर फिर जल में छोड़ दिया। हमने उस स्थान के निवासियों तथा इतिहास जाननेवालों से बाबा हसन[1] के संबंध में पूछा पर कोई कुछ विशेष नहीं

---

१. यह मासूम भक्करी का कोई पूर्वज है, जो कंधार में गाड़ा गया है। सिक्ख लोग इस स्थान का बाबा नानक से संबंध बतलाते हैं और इस सोते की मछलियों को चारा खिलाते हैं। यहीं अकबर के एक सर्दार हकीम अबुल् फतह तथा उसके भाई का मकबरा है।

बतला सका। इस स्थान में एक सोता प्रसिद्ध है, जो एक पहाड़ी के नीचे से निकलता है। यह अत्यंत स्वच्छ तथा निर्मल है, जैसा अमीर खुसरू ने एक शैर में कहा है:—

जल की तह में निर्मलता के कारण एक अंधा मनुष्य भी
रात्रि की गंभीरता में बालू के कणों को गिन सकता है।

ख्वाजा शम्सुद्दीन खवाफी ने जो हमारे पिता का बहुत दिनों तक वजीर था, एक चबूतरा तथा तालाब यहाँ बनवाया, जिसमें सोते का जल नहर द्वारा भरता है और यहाँ से खेती तथा उद्यान में सिंचाई के काम आता है। इस चबूतरे के एक ओर इसने एक गुंबद बनवाया था कि उसी में वह गाड़ा जाय। संयोग से उसका भाग्य वहाँ नहीं था और हकीम अबुल्फतह गीलानी तथा उसका भाई हकीम हुमाम के शव अकबर की आज्ञा से उस गुंबद में गाड़े गए, जो हमारे पिता के पार्श्ववर्ती तथा विश्वासपात्र थे।

१५ तारीख को हम अमरोही में उतरे जो बहुत ही हरा-भरा स्थान है और जहाँ ऊँचा-नीचा कहीं नहीं दिखलाई पड़ता। इस ग्राम तथा इसके अड़ोस-पड़ोस में सात-आठ सहस्र घर खतूरों तथा दिलजाकों के बसे हुए हैं, जो हर प्रकार का उपद्रव, अत्याचार तथा डाँकूपन करते रहते हैं। हमने इस स्थान तथा अटक का शासन जैनखाँ कोका के पुत्र ज़फर खाँ को सौंपे जाने की आज्ञा दी और उसे आदेश दिया कि काबुल से लौटने के समय तक कुल दिलजाकों को लाहौर ले जायँ और खतूरों के सर्दारों को पकड़ कर कैद में रख दें।[1]

---

1. यह आज्ञा विशेष रूप से पूरी की गई। अब यहाँ दिलजाक नहीं रह गए हैं पर खतूर हैं, जो अपने को दिल्ली का क्षत्रिय बतलाते हैं और खत्रो या खेती से अपना खतूर नामकरण बतलाते हैं। दिलजाक

सोमवार १७ को, एक दिन की बीच की यात्रा छोड़कर, हम अटक दुर्ग के पास सिंधु नदी के किनारे पहुँचे। इसी पड़ाव पर हमने महाबत खाँ को बढ़ाकर ढाई हजारी मंसबदार कर दिया। यह दुर्ग स्वर्गीय सम्राट् अकबर ने बनवाया था और यह ख्वाजा शम्सुद्दीन खवाफी के प्रयत्नों से पूरा हुआ था। यह दृढ़ दुर्ग है। इस समय बाढ़ उतर गई थी इसलिए अठारह नावों का पुल बाँधा गया और सब लोग सुखपूर्वक पार हो गए। हमने अमीरुल् उमरा को अटक ही में छोड़ दिया क्योंकि वह निर्बल तथा रोगी था। बख्शियों को आज्ञा दी गई थी कि काबुल प्रांत विशाल सेना का भार वहन नहीं कर सकता इसलिए वे दरबार के खास सेवकों ही को पार उतरने दें और बादशाह के लौटने तक कुल सेना तथा शाही पड़ाव अटक ही में रहे। बुधवार १६ को शाहजादों तथा कुछ निजी सेवकों के साथ घंडैल पर सवार होकर तथा नीलाब[1] को पारकर कामा[2] नदी के तट पर उतरे, जो जलालाबाद कस्बे के नीचे बहती है। ये घंडैल यहाँ बाँसों तथा घास से बनाए जाते हैं, जिनके नीचे हवा भरे हुए खाल लगाए जाते हैं। इन्हें यहाँ शाल[3] या साल कहते हैं। जिन नदियों तथा धाराओं में

जाति सिंध नदी के तट पर अब मिलती है। एल्फिन्स्टन, किंगडम आव काबुल भा० २ पृ० १२, ५६।

१. नीलाब नगर अब बहुत गिर गया है और अटक उन्नति पर है इसलिए इस नदी का नाम बदल गया है। हिंदू लोग इसे सिंध कहते है।

२. यह नाम एक दुर्ग के नाम पर पड़ा है, जो जलालाबाद के सामने है और जहाँ कुनेर नदी काबुल से मिली है। कुनेर ही को कामा भी कहते हैं। जहाँगीर काबुल नदी के नीचे भाग को कामा कहता है, जिसे अब लुंडिया कहते हैं।

३. इसे जाल भी कहते हैं।

चट्टानें अधिक हैं उनमें यह नावों से विशेष सुविधाजनक है। हमने बारह सहस्र रुपए मीर शरीफ आमुली तथा अन्य मनुष्यों को, जो लाहौर में सेवा पर नियत थे, दिया कि फकीरों में बाँट दें। अब्दुर्रज्जाक मामूरी तथा अहदियों के बख्शी बिहारीदास को आज्ञा भेजी कि ज़फ़र खाँ के अधीन जो सेना नियत हुई है उसकी आवश्यकताएँ पूरी कर उन्हें कार्य पर भेज दें।

यहाँ से, एक दिन की यात्रा बीच में करके, हम बारा की सराय पहुँचे। कामा नदी के उस पार एक दुर्ग है, जिसे जैन खाँ कोका ने उस समय बनवाया था, जब वह यूसुफ़जई अफगानों को दमन करने के लिए नियत हुआ था और इसे नौ शहर[1] नाम दिया था। इस पर पचास सहस्र रुपए व्यय हुए थे। कहते हैं कि इस स्थान में हुमायूँ बादशाह गैंडे का अहेर खेलते थे। हमने अपने पिता को भी यह कहते सुना है कि उन्होंने दो तीन बार अपने पिता के साथ ऐसा अहेर देखा है। बृहस्पतिवार २५ को हम दौलताबाद की सराय में पहुँचे। पेशावर का जागीरदार अहमद बेग काबुली यूसुफजई खेल तथा गोरिया खेल के मलिकोंके साथ आकर सेवा में उपस्थित हुआ। अहमद बेग की सेवा संतोषप्रद नहीं समझी गई इसलिए उसे उस प्रांत से हटा दिया और शेर खाँ अफगान को उस पद पर नियत किया। बुधवार २६ को हम सरदार खाँ के बाग में उतरे, जिसे उसने पेशावर के पास बनवाया था। यहीं पास में गोरख खत्री नामक जोगियों का एक प्रसिद्ध पूजास्थान है, जहाँ हम इस विचार से घूमने-फिरने गए कि कोई सिद्ध फकीर दिखला जाय जिसके सत्संग से हम कुछ लाभ उठा सकें। परंतु ऐसे संत उसी प्रकार अलभ्य हैं जैसे पारस या उनका। हमने वहाँ एक टोली देखी जिन्हें ईश्वर का कुछ भी ज्ञान

---

१. नौशहर नदी के दोनों पार बसा है। इसी के पास काला पानी काबुल में मिली है।

नहीं था और जिन्हें देखने से केवल अज्ञान मात्र ही प्राप्त हुआ। वृहस्पतिवार २७ को हम जमरुंद में पहुँचे और २८ शुक्रवार को खैबर दर्रे में होते हुए अली मस्जिद में पड़ाव डाला। शनिवार को सर्पाकार दर्रे में होते हुए गरीबखाना पहुँचे। यहीं जलालाबाद का जागीरदार अबुल्कासिम नमकीन एक फल ले आया, जो फर्स्मीरी फल से किसी प्रकार सौंदर्य में हीन नहीं था। डाका के पड़ाव पर वे काबुली गिला ले आए जिसे हमारे पिता शाह आलू कहते थे। इसे खाने की हमारी बड़ी इच्छा थी और अब तक हमें यह नहीं मिला था इसलिए हमने इसे बड़ी रुचि से मदिरा के साथ खाया।

मंगलवार २ सफर महीने को हमने बसावल में पड़ाव डाला, जो नदी के किनारे है। नदी के उस पार एक पर्वत है, जिसपर वृक्ष या घास कुछ नहीं होती और इसी से लोग इसे बेदौलत (अभागा) कहते हैं। हमने अपने पिता से सुना है कि ऐसे पहाड़ों में सोने की खान होती है। जिस समय हमारे पिता काबुल गए थे हमने आल-बुगान पहाड़ पर कमूरगाह अहेर खेला था और सौ (या कुछ) लाल हरिण मारे थे।

हमने शासन के कुल कार्य अमीरुल् उमरा को सौंप दिया था और उसकी बीमारी बहुत बढ़ गई थी। उसकी स्मरणशक्ति इतनी बिगड़ गई थी कि एक घंटे पहले की निश्चय की हुई बात वह भूल जाता था और प्रतिदिन इस शक्ति का ह्रास होता जाता था इसलिए ३ सफर बुधवार को हमने आसफ खाँ[1] को वजीर नियत किया और उसे विशिष्ट खिलअत, दावात तथा जड़ाऊ कलम दिया। यह एक विचित्र संयोग था कि अट्ठाइस वर्ष पहले इसी स्थान में हमारे पिता ने इसको मीर

१—मुगल दरबार भा० २ पृ० ४१४–२०।

बख्शी का पद दिया था। इसके भाई अबुल्कासिम ने एक लाल चालीस सहस्र रुपए का क्रय किया था तथा इसके पास भेजा था उसे इसने इस अवसर पर हमें भेंट दिया। इसने प्रार्थना की कि ख्वाजा अबुल्हसन जो बख्शी तथा कोरवेगी आदि के पद पर नियत है, उसके साथ भेजा जाय। जलालाबाद में अबुल्कासिम नमकीन के स्थान पर अरब खाँ नियत हुआ। नदी की तह में एक सफेद चट्टान थी, जिसे हाथी के आकार में गढ़ने की हमने आज्ञा दी और उसकी छाती पर यह मिसरा खुदवाया, जिससे तारीख निकलती है—जहाँगीर बादशाह का श्वेत प्रस्तर हाथी, (सन् १०१६ हि०)।

उसी दिन राजा विक्रमाजीत का पुत्र कल्याण गुजरात से आया। इस उपद्रवी दुष्ट के संबंध में कुछ विचित्र बात सुनने में आई। उनमें एक यह है कि इसने एक मुसलमान स्त्री को घर में रख लिया था और इस भय से कि कहीं इसका पता सबको न लग जाय इसने उसके माता-पिता को मार कर अपने ही घर में गाड़ रखा है। हमने उसे कैद रखने की आज्ञा दी, जब तक कि इस बात की ठीक जाँच न हो जाय। जाँच में इसके ठीक निकलने पर हमने आज्ञा दी कि पहले उसकी जिह्वा काट ली जाय और उसे आजीवन कारागार में रखा जाय तथा उसे श्वपचों एवं अछूतों के साथ खाना दिया जाय।

बुधवार को हम सुरखाब पहुँचे और उसके अनंतर जगदलक में पड़ाव डाला। यहीं हमने बहुत से बलूत के पेड़ देखे जिसकी लकड़ी ईंधन के लिये सबसे अच्छी होती है। यद्यपि इस स्थान में दर्रे या गड्ढे नहीं थे पर चट्टानें बहुत थीं। शुक्रवार १२ वीं को आबे बारीक में और शनिवार १३ वीं को योरते पादशाह में पड़ाव डाला। रविवार १४ को खुर्द काबुल पहुँचे। यहीं हमने काबुल के सदर तथा काजी का पद मुल्ला सादिक़ हलवाई के पुत्र काजी आरिफ को दिया। यहाँ वे पका शाह आलू गुल बहार ग्राम से ले आए, जिन में से लगभग एक सौ के

हमने बड़ी रुचि से खाए। जिगरी ग्राम का मुखिया दौलत कुछ असाधारण फूल ले आया, जिन्हें हमने कभी नहीं देखा था। इसके बाद हम बिकामी में उतरे। इस स्थान में वे एक जानवर ले आए, जो देखने में उछलते चूहे के समान था, जिसे हिंदी में गिलहरी कहते हैं और बतलाया कि जिस घर में यह जानवर रहता है उसमें चूहे नहीं जाते। इस कारण लोग इसे चूहों का स्वामी कहते हैं। हमने इस जानवर को पहले नहीं देखा था इसलिए हमने अपने चित्रकारों को आदेश दिया कि इसका चित्र बनावें। यह नेवले से बड़ा होता है और बिल्ली के बहुत कुछ समान होता है। हमने अहमद बेग खाँ को बंगश के अफगानों को दंड देने पर नियत किया। हमने अब्दुर्रज्जाक मामूरी को, जो अटक में था, आज्ञा दी कि वह बीस लाख रुपए मोहनदास पुत्र राजा बिक्रमाजीत की रक्षा में अपने साथ ले जावे और उक्त सेना के सहायकों में वितरित कर दे। इस सेना के साथ एक सहस्र बंदूकची भी भेजे गए।

शेख अबुल्फजल का पुत्र शेख अब्दुर्रहमान का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया और अफजल खाँ की पदवी दी। अरब खाँ को पन्द्रह सहस्र रुपए पुरस्कार में और बीस सहस्र रुपए पेश बुलाग[१] दुर्ग की मरम्मत के लिए दिए। हमने दिलावर खाँ अफ़ग़ान को सरकार खानपुर[२] जागीर में दिया। बृहस्पतिवार १७ को मस्तान पुल से शहरआरा बाग तक, जहाँ शाही पड़ाव पड़ा हुआ था, रुपए, अठन्नी, चवन्नी सड़क के दोनों ओर खड़े हुए फकीरों तथा निवासियों को लुटाते हुए हम उस बाग में गए। वह हरा भरा दिखलाई पड़ा। बृहस्पतिवार का दिन था इसलिए हमने अपने मित्रों को मदिरा पान

१—ढाका तथा जलालाबाद के बीच में यह स्थित है।

२—अन्य प्रतियों में पाठा० जौनपुर है।

का भोज दिया और उसी की उन्मत्तता तथा प्रसन्नता में हमने अपने समवयस्कों को तथा खेल के साथियों को उद्यान के बीच में बहनेवाली नहर को, जो चार गज चौड़ी थी, लाँघने का आदेश दिया। बहुतेरे उसे लाँघ नहीं सके और पानी में या तट पर गिर पड़े। यद्यपि हम लाँघ गए पर अवस्था के चालीस वर्ष की हो जाने से उस फुर्ती से नहीं कूद सके, जो हमने तीस वर्ष की अवस्था में अपने पिता के सामने देखलाया था। इसी दिन हम काबुल के सात प्रसिद्ध उद्यानों में घूमे। हम समझते हैं कि कभी हम इतना नहीं घूमे थे।

पहले हम शहर आरा[1] बाग में घूमे फिर महताब[2] बाग में होते हुए बेगा बेगम[3] के बाग़ में घूमे, जिसे हमारे पिता की दादी ने बनवाया था। इसके अनंतर हम ओरता[4] बाग में गए, जिसे हमारी दादी मरियम-मकानी ने बनवाया था। तब हम सूरतखाना बाग में गए, जिसमें एक चनार का विशाल वृक्ष है और जिसके बराबर काबुल के किसी अन्य उद्यान में नहीं है। इसके उपरांत सबसे बड़े नगर-उद्यान चार बाग़ में होते हम अपने पड़ाव पर आए। वृक्षों में फल लदा हुआ था, जो प्रत्येक गोल लाल के समान वृक्षों में लटकनों की तरह झूल रहे थे। शहरआरा उद्यान को मिर्जा अबूसईद की पुत्री शहरबानू बेगम ने बनवाया था, जो स्वर्गीय बाबर बादशाह की बूआ थी। समय पर इसका विस्तार बढ़ता गया और इसके समान मृदुता में काबुल में कोई उद्यान नहीं है। इसमें हर प्रकार के फल तथा अंगूर होते हैं और इसकी भूमि इतनी मुलायम है कि इस पर जूते पहिर कर चलना शालीनता के बाहर है। इस उद्यान के पास ही सुंदर भूमि दिखलाई

१—नागरी की शोभा बढ़ानेवाला।

२—चन्द्रमा।

३—बाबर की एक पत्नी।

४—नगर के बीच का।

पड़ी जिसे हमने उसके स्वामियों से क्रय करने की आज्ञा दी। यह भी आदेश दिया कि गुज़रगाह के पास से बहती हुई धारा मोड़कर उस भूमि के बीच में ले आवें जिससे वह उद्यान सौंदर्य तथा शोभा में ऐसा बन जाय कि उसके समान ज्ञात संसार में दूसरा कोई न हो। हमने इसका नाम जहाँआरा रखा। जब हम काबुल में थे तब शहर-आरा बाग़ में कई जलसे किए, कभी अपने मित्रों तथा दरबारियों के साथ और कभी हरमवालियों के साथ। रात्रि में हमने काबुल के गुरुओं तथा विद्यार्थियों का भोजन का, बुगरा[1] का, जलसा किया और उसके साथ गान तथा नृत्य[2] भी था।

बुग़रा खानेवालों के प्रत्येक झुंड को हमने खिलअत दिया तथा एक सहस्र रुपए आपस में बाँट लेने को दिए। बारह विश्वासपात्र दरबारियों को हमने बारह सहस्र रुपए देने की आज्ञा दी कि प्रत्येक बृहस्पतिवार को जब तक हम काबुल में रहें, गरीबों में बाँट दिया करें। हमने यह आज्ञा दी कि नहरके दोनों ओर जो दो वृक्ष हैं, जिनमें एक को हमने फ़रहबख्श तथा दूसरे को सायाबख्श नाम दिया था, उनके बीच में संगमरमर की एक शिला स्थापित करें, जो एक गज लंबा तथा तीन चौथाई गज चौड़ा हो और उसपर तैमूर से हम तक सबके नाम खोदें। इसके दूसरी ओर खोदा जाय कि हमने काबुल के कुल मार्ग-कर क्षमा कर दिए हैं और हमारे वंशजों तथा उत्तराधिकारियों में से जो कोई इसके विरुद्ध करेगा वह ईश्वर

१—बुग़रा एक प्रकार का रसेदार भोजन है, जिसे बुग़रा खाँ ख्वारिज़्मी ने पहले पहल बनवाया था। इसे बुगराखानी या बुगरा कहने लगे जिसमें चना, घी, मैदा आदि मिलाकर बनाते हैं।

२—यहाँ अर्ग़ुश्तक् शब्द दिया है, जो कजली या गरबा के समान घूम घूम कर नृत्य के साथ गाया जाता है और बीच में एक व्यक्ति बाजा बजाता है।

के कोप तथा अप्रसन्नता में पड़ेगा। हमारी राजगद्दी तक ये कर निश्चित थे और प्रत्येक वर्ष ईश्वर के सेवकों से बहुत धन इस मद में ले लेते थे। हमारे राज्यकाल में यह अत्याचार बंद हो गया। काबुल की इस यात्रा में हमारी प्रजा तथा वहाँ के निवासियों की हालत में पूर्ण सुख तथा संतोष फैल गया। गजनी तथा उसके पड़ोस के अच्छे तथा मान्य लोगों को खिलअत दिए गए, उनसे अच्छा व्यवहार किया गया और उनकी इच्छाएँ पूरी की गईं।

यह विचित्र संयोग था कि हमारे काबुल में पहुँचने की तारीख 'रोजे पंजशंबःहेज़्दहुमे सफर' (१८ सफर बृहस्पतिवार) से हिजरी सन भी निकल आता है। हमने इस तारीख को पत्थर पर खोदने के लिए आज्ञा दी। काबुल नगर के दक्षिण स्थित एक पहाड़ी की ढाल पर एक तख्त बना है, जिसे तख्ते शाह कहते हैं और इसके पास एक पत्थर का चबूतरा है बना जिस पर बाबर बैठा करते थे तथा शराब पीते थे। इस चट्टान के एक कोने में गोल गड्ढा खुदा हुआ था, जिसमें दो हिंदुस्तानी मन शराब अँटती थी। उन्होंने अपना पवित्र नाम तारीख के साथ पहाड़ी से सटे पत्थर की दीवाल पर खुदवाया था, जिसका शब्दार्थ है 'बादशाह, संसार के आश्रय जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पुत्र उमर शेख गुर्गान का राज्य ईश्वर बनाए रखे, ६१४ हि०' (सन् १५०८-६ ई०)। हमने आज्ञा दी कि पत्थर का दूसरा तख्त इसी के बराबर काटकर बनावें और उसके पास उसी प्रकार का दूसरा गड्ढा खोदें तथा हमारा एवं तैमूर का नाम भी उस पर खोदा जाय। प्रति दिन जब हम उस तख्त पर बैठते थे तब दोनों गड्ढों को मदिरा से भरवाकर उपस्थित सेवकों को देते थे। गजनी के एक कवि ने हमारे काबुल आगमन पर एक तारीख कही—सातों देश के नगरों का बादशाह (१०१६ ई०)। हमने उसे खिलअत तथा पुरस्कार दिया और उस तख्त के पास दीवाल में इस तारीख को खोदने की आज्ञा दे दी।

हमने पर्वेज को पचास सहस्र रुपए दिए और वजीरुलमुल्क को मीर बख्शी बना दिया। कुलीज खाँ के नाम आज्ञापत्र गया कि कंधार की सेना के व्यय के लिए लाहौर के कोष से एक लाख सत्तर सहस्र रुपये भेज दे। काबुल के खियाबाँ तथा बीबी माहरू[1] को देखने के अनंतर हमने उस नगर के अध्यक्ष को उन पेड़ों के स्थान पर नए पेड़ लगाने की आज्ञा दी, जिन्हें हुसेन बेग कलमुँहे ने कटवा डाला था। हम चालाक के उलंगयुर्त देखने गए, जो अच्छा स्थान है। चिकरी के रईस ने तीर से एक रंग को मारा और उसे हमारे पास ले आया। अब तक हमने रंग नहीं देखा था। यह पहाड़ी बकरे के समान होता है और केवल सींघ में कुछ भिन्नता होती है। रंग के सींघ झुके होते हैं और बकरे के सीधे तथा मुड़े हुए होते हैं।

काबुल के विवरण के संबंध में बाबर की टीकाएँ हमारे देखने में आईं। ये उन्हीं के हाथ की लिखी हुई थीं, सिवा चार जुजों के जिसे हमने लिखा है। इन चार जुजों के अंत में एक वाक्य हमने तुर्की लिपि में लिखा है जिससे यह ज्ञात होता है कि चारो जुज़ हमारे हाथ का लिखा है। यद्यपि हम हिन्दुस्थान में बढ़े हैं पर हम तुर्की भाषा तथा लिपि से अज्ञान नहीं हैं। २५ सफर को हरम के साथ सुफेद संग के मैदान में गए, जो सुखद तथा प्रकाशित स्थान है। शुक्रवार २६ को हम बाबर के मकबरे को देखने गए। हमने बहुत सा धन, रोटी, भोजन तथा मिठाई मृतों की आत्मा के लिए फकीरों में बँटवाया। मिर्जा हिंदाल की पुत्री रुकिया सुल्तान बेगम ने अपने पिता का मकबरा नहीं देखा था, उसने भी उस दिन उसे देखा। बृहस्पतिवार ३ रबीउल् अव्वल को हमने आज्ञा दी कि द्रुतगामी घोड़े खियाबाँ में लाए जायँ। शाहज़ादों तथा सर्दारों ने उनकी दौड़ की। एक अरबी घोड़ा, जिसे दक्षिण के सुलतान आदिल खाँ ने हमारे पास भेजा था, सबसे अच्छा

१—काबुल के पास एक पर्वत है।

दौड़ा। इसी समय हजारों के मुख्य सर्दार मिर्जा संजर हजारा तथा मिर्जा माशी के पुत्र हमारी सेवा में उपस्थित हुए। मीरदाद ग्राम के हजारों ने दो रंग भेंट किए, जिन्हें तीरों से मारा था। हमने इतना विशाल रंग नहीं देखा था। यह बड़े बकरे से भी बीस प्रतिशत अधिक विशाल था।

समाचार मिला कि कंधार का अध्यक्ष शाहबेग खाँ अपनी जागीर शोर परगना में आ पहुँचा है। हमने निश्चय किया कि उसे काबुल प्रांत देकर हिंदुस्तान लौट जाएँ। राजा वीरसिंह देव का प्रार्थनापत्र आया कि उसने अपने भतीजे को कैद कर लिया है, जिसने उपद्रव मचा रखा था और उसके बहुत से मनुष्यों को मार डाला है। हमने आज्ञा भेजी कि उसे ग्वालियर के दुर्ग में सुरक्षित रखने के लिए भेज दे। हमने पंजाब प्रांत के अंतर्गत गुजरात परगना शेरखाँ अफगान को दिया। हमने कुलीज खाँ के पुत्र चीन कुलीज को आठ सदी ५०० सवार का मंसब बढ़ाकर दिया। १२ को हमने खुसरू को बुला भेजा और उसके पैरों की बेड़ी निकाल देने की आज्ञा दी, जिसमें वह शहरआरा बाग में घूम सके। हमारा अपत्य स्नेह ऐसा नहीं कर सका कि उसे उक्त बाग में घूमने का अवसर न मिले। हमने अटक दुर्ग और उसके आसपास की भूमि अहमद बेग के स्थान पर जफरखाँ को दिया। ताज खाँ को, जो बंगश के अफगानों को मार भगाने के लिए नियत था, पचास सहस्र रुपए दिए। १४ वीं को हमने अली खाँ करोड़ी को, जो हमारे पिता के पुराने सेवकों में से तथा नक्कारखाने का दारोगा था, नौबतखाँ की पदवी दी तथा मंसब बढ़ा कर पाँच सदी २०० सवार का कर दिया। हमने रामदास को राजा मानसिंह के पौत्र महा सिंह का अभिभावक नियत किया, जो बंगश के विद्रोहियों को दमन करने पर नियत था। शुक्रवार १८ वीं को चाँद्र तुलादान हमारे चालीसवें वर्ष का हुआ। इसी दिन जब दो प्रहर दिन चढ़ चुका था तब दरबार लगा। हमने

तुलादान के दस सहस्र रुपए अपने दस विश्वासपात्र सेवकों को दरिद्रों को वितरण करने के लिए दिया। इसी दिन कंधार के अध्यक्ष सर्दारखाँ का प्रार्थनापत्र हजारा तथा गजनी होता हुआ बारह दिन में पहुँचा, जिसका आशय था कि शाह अब्बास का राजदूत जो दरबार जा रहा है हजारा[1] प्रांत में पहुँच गया है। शाह ने अपनी प्रजा को लिखा है—कौन अवसरवादी तथा उपद्रवी बिना हमारी आज्ञा के कंधार के विरुद्ध गया है? स्यात् वह नहीं जानता कि हमारा सुलतान तैमूर तथा विशेष कर हुमायूँ[2] एवं उसके वंशजों से संबंध रहा है। यदि संयोग से उन लोगों ने उस प्रांत को अधिकार में कर भी लिया हो तो हमारे भाई जहाँगीर बादशाह के सेवकों को देकर लौट आवें।' हमने शाह बेगखाँ को आज्ञा देने का निश्चय किया कि वह गजनी के मार्ग का ऐसा प्रबंध करे कि यात्री लोग कंधार से काबुल तक सुखपूर्वक पहुँच जायँ। इसी समय हमने काजी नूरुद्दीन को मालवा तथा उज्जैन प्रांत का सदर नियत किया। हुमायूँ के एक प्रभावशाली सर्दार कराचः खाँ का पौत्र तथा मिर्जा शादमान हजारा का पुत्र हमारी सेवा में आया। कराचाखाँ ने हजारा जाति की एक स्त्री से निकाह किया था और उसी से यह पुत्र हुआ था। शनिवार १९ वीं को राणा उदय सिंह का पुत्र राणा सगराका मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी १००० सवार का कर दिया। राय मनोहर के लिए एक हजारी ६०० सवार का मंसब भेजने की आज्ञा दी। शिनवारी अफगानगण एक पहाड़ी मेढ़ा ले आए, जिसकी सींगें मिलकर एक हो गई थीं, जैसी रंग की होती है। उन्हीं अफगानों ने एक 'मारखोर' को

१—पाठा०—हेरात। यही ठीक ज्ञात होता है।

२—हुमायूँ सहायता की प्रार्थना करने के लिए फारस के शाह के पास गया था। इसमें आक्षेप की ध्वनि है पर जहाँगीर इसे आत्म-प्रशंसा के रूप में लेता है।

मारकर सामने उपस्थित किया, जैसा हमने कभी नहीं देखा था और न कल्पना की थी। हमने उसका चित्र बनाने को चित्रकारों को आज्ञा दी। इसका तौल चार हिंदुस्तानी मन था और सींघों की लम्बाई डेढ़ गज थी।

रविवार २७ वीं को हमने शुजाअत खाँ को डेढ़ हजारी १००० सवार का मंसब दिया और एतबार खाँ को ग्वालिअर हवेली जागीर में दिया। हमने काजी इज्जतुल्लाको उसके भाइयों के साथ बंगश के कार्य पर नियत किया। इसी दिन के अंत में आगरे से इस्लाम खाँ का एक प्रार्थना पत्र आया, जिसके साथ बिहार से जहाँगीर कुली खाँ का लिखा उसके नाम का भी पत्र था। इसका आशय था कि ३ सफर[1] को पहली प्रहर के अनंतर अली कुली इस्ताजलू ने कुतुबुद्दीन खाँ को बंगाल प्रांतके अंतगत बर्दवान में घायल कर दिया और वह रात्रि दो प्रहर बीतते मर गया। इसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है कि उक्त अली कुली ईरान के शाह अब्बास का सफरची था और उसकी मृत्यु पर नैसर्गिक दुष्टता तथा उपद्रवी प्रकृति के कारण यह वहाँ से भागकर कंधार आया और मुलतान में खानखानाँ से मिलकर उसके साथ ठट्टा प्रांत गया, जहाँ के शासन पर यह नियत हुआ था। खानखानाँ ने इसे शाही सेवकों में भर्ती कर लिया और उस चढ़ाई में अच्छी सेवा करने के कारण इसे इसके उपयुक्त मंसब भी मिल गया। यह बहुत दिनों तक हमारे पिता की सेवा में रहा। जिस समय अकबर दक्षिण की चढ़ाई पर गए और हमें राणाकी चढ़ाई पर भेजा गया तब यह हमारे पास आया और हमारा सेवक होगया। हमने इसे शेर अफगन की पदवी दी। जब हम इलाहाबाद से अपने पिता की सेवा में आए और हमारे साथ जो मनोमालिन्य दिखलाया गया उससे हमारे बहुत से अनुयायी तथा सेवक

---

१. ३० मई सन् १६०७ ई०।

इधर उधर होगए और यह भी हमारी सेवा छोड़ चला गया। अपनी राजगद्दी के अनंतर इसके दोषों को उदारता से क्षमा कर इसको बंगाल प्रांत में जागीर दिए जाने की आज्ञा दी। वहाँ से समाचार आया कि ऐसे उपद्रवी मनुष्य को वहाँ छोड़ना उचित नहीं है तब कुतुबुद्दीन के नाम आज्ञा भेजी गई कि उसे दरबार भेज दे और यदि वह राजद्रोहात्मक विचार प्रगट करे तो उसे दंड दे। उक्त खाँ उसके स्वभाव को जानता था इस लिए आज्ञा के पहुँचते ही जितने मनुष्य उपस्थित थे उन्हें वह लेकर बर्दवान गया, जो उसकी जागीर थी। जब उसे ज्ञात हुआ कि कुतुबुद्दीन आगया है तब वह अकेले केवल दो सेवक लेकर मिलने आया। उस के पहुँचते ही तथा सैनिकों के बीच में आते ही उक्त खाँ (के सैनिकों) ने उसे घेर लिया। जब कुतुबुद्दीन खाँ के इस कार्य से उसके मनमें शंका हुई तब उसने इसे कपट में रखने के लिए कहा कि यह कैसा व्यवहार है? इस पर खाँ ने अपने आदमियों को दूर हटने को कहा और उससे अकेले में आज्ञा का तात्पर्य समझाने के लिए बात करने लगा। यह अवसर पाकर उसने तुरंत तलवार खींचली और इसपर दो तीन चोटें कर दीं। अंबा खाँ कश्मीरी, जो कश्मीर के शासकों के वंश का था और कुतुबुद्दीन खाँ का संबंधी था तथा उस पर राजभक्ति एवं वीरता के कारण विशेष आदर-दृष्टि रखता था, दौड़ पड़ा और अली कुली के सिरपर भारी चोट पहुँचाई परंतु उस दुष्ट ने भी तलवार की नोक से अंबाखाँ पर भी भारी घाव कर दिया। कुतुबुद्दीन के सैनिकों ने भी यह हाल देखकर उसपर आक्रमण कर दिया और टुकड़े टुकड़े कर उसे नर्क भेज दिया। आशा की जाती है कि इस कलमुँहे नीच का वही स्थान सदा रहेगा। अंबाखाँ उसी स्थान पर शहीद होगया और कुतुबुद्दीन खाँ कोका चार प्रहर के अनंतर ईश्वर के पास पहुँचा। हम इस घटना पर क्या लिखें? हम कितने शोकान्वित तथा दुखी हुए। कुतुबुद्दीन खाँ हमारे प्रिय पुत्र, कृपालु भाई तथा अंतरंग मित्र के समान

था। ईश्वरीय आज्ञा पर कौन क्या कर सकता है ? कर्म-फल समझ कर हम शांत हो रहे। विगत सम्राट् के जाने तथा उनकी मृत्यु के अनंतर ऐसी अन्य दो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ नहीं हुईं जैसी कुतुबुद्दीन खाँ की माता की मृत्यु तथा उसका मारा जाना हुआ।

शुक्रवार ६ रबीउल् आखिर को हम खुर्रम के स्थान पर गए, जो ओरता बाग में बना था। वास्तव में प्रासाद सुंदर तथा सुगठित था। हमारे पिता का यह नियम था कि वर्ष में दोबार अपना तुलादान करते थे, एक बार सौर वर्ष तथा दूसरी बार चांद्र वर्ष के अनुसार करते थे और शाहजादों का केवल सौर वर्ष के अनुसार करते थे। इस वर्ष में जब खुर्रम के सोलहवें चांद्र वर्ष का आरंभ था तभी ज्योतिषियों तथा रम्मालोंने प्रार्थना की थी कि खुर्रम की जन्मपत्री के अनुसार यह वर्ष विशेष महत्वपूर्ण है और शाहजादे का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं था इस लिए हमने आज्ञा दी कि वे नियमानुसार सोना, चाँदी तथा अन्य धातु से इसका तुलादान करावें और सब फकीरों में बाँट दिया जाय। वह पूरा दिन खुर्रम के निवासस्थान पर आनंद तथा सुख के साथ बीता और उसकी कई भेंटें स्वीकृत हुईं।

इस कारण कि काबुल का सुख ले चुके थे और वहाँ के सभी फलों का स्वाद भी ले चुके थे इसलिए शासन के महत्वपूर्ण विचारों से तथा राजधानी से इतनी दूर रहने से सूर्यवार ४ जमादिउल्अव्वल को हमने आज्ञा दी कि हिंदुस्तान की ओर आगे का पड़ाव पहले से भेज दें। कुछ दिन के अनंतर हमने नगर छोड़ा और सफेद संग में शाही झंडे पहुँच गए। यद्यपि अभी तक अंगूर अच्छी प्रकार पके नहीं थे पर हम काबुली अंगूर बहुत खा चुके थे। कई प्रकार के अंगूर अच्छे होते हैं, विशेष कर साहिबी तथा किशमिशी। गिला भी सुगंधित फल होता है और इस फलको अन्य फलों से लोग अधिक खा सकते है। एक दिन में हमने डेढ़ सौ तक खाया था। शाह आलू गिला ही को कहते हैं.

जो इस देश के बहुत भागों में होता है। गिला का एक अर्थ छिप-किली भी होता है इस लिए हमारे पिता ने इसका शाह आलू नाम रख दिया था। जर्द आलू भी अच्छा और बहुत होता है। शहरआरा बाग में एक वृक्ष विशेष है, जिसे हमारे पितृव्य मुहम्मद हकीम ने लगवाया था और उसे मिर्जाई कहते हैं। इस वृक्ष के फल अन्य वृक्षों के फल से भिन्न होते हैं। ये भी बड़े स्वादिष्ट तथा बहुत होते हैं। लोग इस्तालीफ से भी कुछ फल लाए थे। हमने उन्हें अपने सामने तौल वाया तो पच्चीस भरी निकले, जो अड़सठ मिस्काल होता है। काबुल के फलों की मिठास के होते भी उनमें एक भी हमारी रुचि के अनुसार आम के समान स्वादिष्ट नहीं होता।

महावन परगना महाबत खाँ को जागीर में दिया गया था। अहदियों के बख्शी अब्दुर्रहीम का मंसब बढ़ाकर सात सदी २०० सवार का कर दिया। मुबारक खाँ शरवानी को हिसार सरकार का फौजदार नियत किया। हमने मिर्जा फरेदूँ बर्लास को इलाहाबाद प्रांत में जागीर देने की आज्ञा दी। उक्त महीने की १४वीं को हमने आसफ खाँ के भाई इरादत खाँ को एक हजारी ४०० सवार का मंसब दिया और खास खिलअत तथा घोड़ा देकर उसे पटना तथा हाजीपुर प्रांत का बख्शी नियत दिया। यह हमारा कोरबेगी था इसलिए हमने इसके हाथ एक जड़ाऊ तलवार उक्त प्रांत के अध्यक्ष अपने फर्जंद इस्लाम खाँ के लिए भेजा। जब हमलोग कूच कर रहे थे तभी अलीमस्जिद तथा गरीबखाना के पास केकड़े के इतनी बड़ी मकड़ी देखा, जिसने एक साँप को जो डेढ़ गज लंबा था, गले से पकड़े तथा उसे घोंटे हुए देखा। हम इसे देखने के लिए रुक गए और थोड़ी देर बाद वह मर गया।

हमने काबुल में सुना था कि महमूद गजनवी के समय ख्वाजा ताबूत नामक एक मनुष्य जुहाक तथा बामियान के पास मर गया था और एक गुफा में रख दिया गया था, जिसका शव अब तक नहीं सड़ा

है। यह विचित्र ज्ञात हुआ और हमने अपने एक विश्वासपात्र वाके-आनवीस को एक हकीम के साथ भेजा कि गुफा तक जाकर देखें और जैसा वृत्तांत हो उसे लिखकर सूचित करें। उसने सूचित किया कि आधा शव जो भूमि के पास है वह तो गल गया है पर दूसरा आधा भाग जो भूमि से नहीं सटा है वह ज्यों का त्यों है। हाथ-पैर के नख तथा सिर के बाल नहीं झड़े हैं और डाढ़ी तथा मोछ के बाल नाक की एक ओर के झड़ गए हैं। गुफा के द्वार पर जो तारीख खुदी हुई है उससे ज्ञात होता है कि वह सुलतान महमूद के पहले मर चुका था। कोई ठीक वृत्तांत नहीं जानता।

बृहस्पतिवार १५वीं को कहमर्द दुर्ग का अध्यक्ष अर्सलाँ बे, जो तूरान के शासक वली मुहम्मद खाँ का साधारण सेवक था, सेवा में उपस्थित हुआ। हमने कई बार सुना था कि शाहरुख मिर्जा का पुत्र मिर्जा हुसेन उजबेगों द्वारा मारा गया। इसी समय कोई मनुष्य आया और उसकी ओर से एक प्रार्थनापत्र दिया। इसी के साथ उसने सौ रुपए मूल्य का एक लाल जो प्याजी रंग का था, भेंट में दिया। उसने प्रार्थना की थी कि उसकी सहायता के लिए सेना भेजी जाय, जिससे वह उजबेगों के अधिकार से बदख्शाँ को निकाल ले। एक जड़ाऊ कमरबंद उसके लिए भेजा गया और आज्ञा दी कि शाही झंडे इस प्रांत में आए हुए हैं और यदि वह वास्तव में मिर्जा शाहरुख का पुत्र मिर्जा हुसेन है तो वह शीघ्र हमारे सामने आवे तब उसके प्रार्थनापत्रपर विचार कर उसे बदख्शाँ भेजा जाय। उस सेना के लिए जो महासिंह तथा रामदास के अधीन बंगश के विद्रोहियों पर भेजी गई थी दो लाख रुपए भेजे गए।

बृहस्पतिवार २२वीं को हम बाला हिसार पहुँचे और वहाँ की इमारतों का निरीक्षण किया। यह स्थान हमारे योग्य नहीं था इसलिये हमने उन्हें गिरा देने की तथा उनके स्थान पर महल और दरबारे

आम बनाने की आज्ञा दी। इसीदिन इस्तालीफ का एक सेब ले आए, जो उल्लू के सिर के बराबर था। हमने इतना बड़ा नहीं देखा था इसलिए इसे तौलवाया तो यह तिरसठ अकबरी रुपए अर्थात् साठ तोले हुआ। हमने जब इसके दो टुकड़े किए तो गुठली भी दो टुकड़े हो गई। यह स्वाद में अच्छा था। हमने काबुल में इससे अच्छा फल किसी वृक्ष का नहीं खाया था। २५वीं को मालवा से समाचार आया कि मिर्जा शाहरुख ने इस नश्वर संसार को त्याग दिया और ईश्वर की कृपा में डूब गए। जब से यह पिता की सेवा में आया तब से अंत तक इसने कोई ऐसा कार्य नहीं किया कि बादशाह के मनमें मालिन्य आवे। इसने सचाई से अपना कर्तव्य निभाया। उक्त मिर्जा के चार पुत्र ज्ञात हैं। हसन तथा हुसेन जोड़ुआ पुत्र थे। हुसेन बुर्हानपुर से भाग कर एराक गया और वहाँ से बदख्शाँ। लोग कहते हैं कि वह वहीं है और जैसा उसके पत्र का ऊपर उल्लेख हुआ है और एक आदमी के भेजने से ज्ञात होता है। कोई ठीक नहीं कह सकता कि यह वही मिर्जा हुसेन है या बदख्शियों के अन्य झूठे मिर्जाओं की तरह इसे भी खड़ा कर मिर्जा हुसेन नाम दे दिया है। जिस समय से मिर्जा शाहरुख बदख्शाँ से आया और सौभाग्य से हमारे पिता की सेवा में पहुँचा तब से अब तक पचीस वर्ष बीत गए। कुछ दिनों से बदख्शियों ने उजबेगों द्वारा अत्याचार-पीड़ित होने तथा हानि सहने से एक बदख्शी लड़के को प्रसिद्ध कर रखा है, जिसके मुख पर उच्चता के चिन्ह हैं, कि यह मिर्जा शाहरुख का पुत्र तथा मिर्जा सुलेमान के वंश का है। अस्तव्यस्त ऐमाक तथा बदख्शाँ के पहाड़ी मनुष्य जिन्हें गरचक कहते हैं, इकट्ठे हो गए और उसके साथ उजबेगों से शत्रुता दिखला कर तथा युद्ध कर बदख्शाँ के कुछ जिलों पर अधिकार कर लिया। उजबेगों ने उस झूठे मिर्जा पर आक्रमण कर उसे पकड़ लिया और उसका सिर भाले पर रखकर सारे बदख्शाँ प्रांत में घुमाया। बदख्शाँ

के उपद्रवियों ने शीघ्र ही दूसरे मिर्जा को उत्पन्न कर लिया। अब तक इस प्रकार कितने मिर्जे मारे गए। ऐसा ज्ञात होता है कि जब तक बदख्शियों का चिन्ह रहेगा तब तक वे इसी प्रकार उपद्रव करते रहेंगे। मिर्जा शाहरुख का तीसरा पुत्र मिर्जा सुलतान है, जो मिर्जा के सब पुत्रों में सौंदर्य तथा स्वभाव में बढ़कर है। हमने उसे उसके पिता से माँग लिया है और अपनी सेवा में रखा है तथा उस पर बहुत परिश्रम करने के कारण उसे अपनी संतान समझते हैं। प्रकृति तथा व्यवहार में वह अपने भाइयों से भिन्न है। राजगद्दी के अनंतर हमने उसे दो हजारी १००० सवार का मंसब दिया और उसे मालवा भेज दिया, जो उसके पिता का स्थान है। चौथा पुत्र बदीउज्जमाँ था जिसे वह सदा अपने साथ रखता था और इसे हमने एक हजारी ५०० सवार का मंसब दिया।

जब तक हम काबुल में रहे, कमूरगाह अहेर नहीं खेला था और हिन्दुस्तान लौटने का समय आगया था तथा लाल मृग के अहेर की बड़ी इच्छा थी इसलिए लोगों को आज्ञा दी कि वे आगे जाकर काबुल से सात कोस पर फराक जंगल को शीघ्रता से घेर दें। मंगलवार ४ जमादिउल् अव्वल को हम अहेर खेलने गए। उस घेरे में एक सौ लाल मृग आगए थे, जिनमें से आधे पकड़े गए और खूब दौड़ हुई। अहेर में जो प्रजा उपस्थित थी उसे बाँटने के लिए पाँच सहस्र रुपए दिए। उसी शेख अबुल्फजल के पुत्र शेख अब्दुर्रहमान को ५०० सवार की उन्नति दी, जिससे उसका मंसब दो हजारी २००० सवार का हो गया। बृहस्पतिवार ६ को विगत सम्राट् बाबर के तख्त के पास गया। इस कारण कि हम काबुल दूसरे दिन छोड़नेवाले थे, हमने इस दिन उत्सव मनाया और आज्ञा दी कि मदिरा का जलसा उसी स्थान पर होने का प्रबंध करें तथा चट्टान में बने गड्ढों को मदिरा से भर दें। उपस्थित सभी सेवकों तथा दरबारियों को प्याले दिए गए

और ऐसे आनन्द तथा सुख का दिन कम बीता था। शुक्रवार ७ को, जब एक पहर दिन चढ़ चुका था, अच्छे साइत में तथा प्रसन्नता से नगर छोड़कर हम सफेद संग के हरे मैदान में उतरे। शहरआरा बाग़ से इस मैदान तक फकीरों तथा गरीबों को अठन्नी-चवन्नी लुटाते गए। उस दिन जब हम काबुल छोड़ने के लिए हाथी पर सवार हुए तब अमीरुलउमरा तथा शाह बेग खाँ के अच्छे होने का समाचार मिला। इन दो मुख्य सेवकों के स्वस्थ होने का समाचार हमने अपने लिए शुभ शकुन समझा। सफेद संग के मैदान से मंगलवार ११ को एक कोस चलकर हम बिक्राम में रुके। हमने ताश बेग खाँ को काबुल तथा उसके आसपास का प्रबंध शाह बेग खाँ के आने तक के लिए सौंपा। मंगल १८ को ढाई कोस बुतखाक के पड़ाव से तथा दोआबा के मार्ग से चलकर एक चश्मे के किनारे रुके जहाँ चार वृक्ष थे। अब तक किसी ने इस स्थान को पड़ाव बनाने का ध्यान नहीं किया था और इसकी उपयुक्तता तथा अवस्था से अज्ञात थे। वास्तव में यह बहुत सुंदर स्थान है और इस योग्य है कि यहाँ इमारत बनवाई जाय। यहीं दूसरा कमूरगाह अहेर खेला गया, जिसमें एक सौ बारह हरिण आदि मिले। चौबीस रंग हरिण, पचास लाल हरिण तथा सोलह पहाड़ी बकरे पकड़े गए। हमने अब तक जीवित रंग हरिण नहीं देखा था। वास्तव में यह सुंदर शरीर का विचित्र पशु है। यद्यपि हिंदुस्तान का काला मृग बड़ी सुंदर शरीरवाला होता है पर इसका स्वरूप, चाल तथा गठन उससे बिलकुल विभिन्न है। उन्होंने एक मेढ़े तथा रंग को तौला, मेढ़ा एक मन तेंतीस सेर और रंग दो मन दस सेर निकला। यद्यपि रंग इतना भारी था पर वह इतनी तीव्रता से दौड़ता था कि दस बारह शीघ्रगामी कुत्ते थक गए और बड़ी कठिनाइयों से उसे पकड़ सके। बर्बर बकरे व भेड़ का माँस भी रंग के माँस से अधिक स्वादिष्ट नहीं होता। इसी ग्राम में कुलंग भी पकड़े गए।

यद्यपि खुसरू ने बार बार दुष्ट कार्य किए थे और हजारों प्रकार के
ंड के योग्य था परंतु हमारे पितृ-स्नेह ने उसे प्राणदंड देना नहीं
वीकार किया। यद्यपि शासन कार्य के नियम तथा साम्राज्य की नीति
ं अनुसार ऐसे दुष्ट कार्य की सूचना लेनी चाहिए परंतु हमने उसके
ोषों पर ध्यान नहीं दिया और बड़े आराम तथा सुख से उसे रखा।
ब भी पता लगा कि वह दुष्टों के पास, जो फलाफल पर विचार नहीं
खते, आदमी भेजा करता है और उन्हें उपद्रव करने तथा
मारा प्राण लेने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है तथा प्रतिज्ञाएँ
र उन्हें आशान्वित करता है। ऐसे अदूरदर्शी अभागों के एक झुंड ने
कत्र होकर काबुल तथा उसके आसपास अहेर करते समय हम पर
ाक्रमण करने का निश्चय किया। शक्तिमान् ईश्वर की कृपा तथा
ाया इस सन्मानित वंश की सदा रक्षक रही है इसलिए वे सफल नहीं
ो सके। जिस दिन सुर्खाब में पड़ाव पड़ा हुआ था उसी दिन उस झुंड
ा एक मनुष्य प्राण भय रहते हुए हमारे पुत्र खुर्रम के दीवान ख्वाजा
ैसी के पास पहुँचा और यह रहस्य खोला कि पाँच सौ मनुष्यों ने
ुसरू के संकेत पर हकीम अबुल् फत्ह के पुत्र फतहुल्ला, गियासुद्दीन
अली आसफ खाँ का पुत्र नूरुद्दीन तथा एतमादुद्दौला का पुत्र महम्मद
ारीफ से मिलकर यह षड्चक्र किया है और बादशाह के शत्रुओं
था बुरा चाहनेवालों के कार्य को पूरा करने के अवसर की प्रतीक्षा
र रहे हैं। ख्वाजा वैसी ने यह रहस्य खुर्रम से कह दिया और उसने
ुरंत घबड़ाए हुए आकर हम से कह डाला। हमने खुर्रम को बहुत
धन्यवाद दिया और उन सब अदूरदर्शियों के झुंड को पकड़ने तथा
अनेक प्रकार के दंड देने को तैयार हो गया। फिर हमारे मन में आया
कि हम कूच कर रहे हैं और इन सब मनुष्यों के पकड़ने से कंप में बड़ा
उपद्रव तथा गड़बड़ी मचेगी इसलिए उपद्रवियों के मुखियों को पकड़ने
के लिये आज्ञा दी। हमने फतहुल्ला को विश्वासपात्र मनुष्यों की रक्षा

में कैद कर दिया और दो दुष्टों को अन्य तीन चार अभागे मुखियों के साथ प्राणदंड की आज्ञा दे दी।

हमने स्वर्गीय सम्राट् अकबर के एक सेवक कासिम अली को अपनी राजगद्दी के अनंतर दियानत खाँ की पदवी देकर सम्मानित किया था। वह सदा फतहुल्ला में राजभक्ति का अभाव बतलाता और उसके संबंध में अन्य बातें भी कहता। एक दिन इसने फतहुल्ला से कहा कि जब खुसरू भागा था तथा बादशाह ने पीछा किया था उस समय तुमने कहा था कि पंजाब खुसरू को देकर इस झगड़े को समाप्त कर दिया जाय। उसने अस्वीकार कर दिया और दोनों शपथ खाने तथा एक दूसरे को कोसने लगे। दस पंद्रह दिन भी नहीं बीते थे कि वह झूठा दुष्ट पकड़ा गया और उसके झूठे शपथ ने अपना काम किया।

शनिवार २२ जमादिउल् अव्वल को हकीम जलालुद्दीन मुजफ्फर अर्दिस्तानी के मरने का समाचार मिला, जो हकीमों के परिवार का था और अपने को जालीनोस का वंशज बतलाता था। जो कुछ हो, वह अच्छा चिकित्सक था। उसके अनुभव ने उसके ज्ञान को बढ़ा दिया था। यह यौवन में बहुत ही सुंदर तथा सुगठित शरीर का था और शाह तहमास्प के दरबार में बहुधा जाया करता था। शाह इसके संबंध में शैर कहता था। अर्थ—
हमें एक आनंददायक हकीम मिला है, आओ हम सब बीमार हो जायँ।

हकीम अली इसका समकालीन था तथा योग्यता में बढ़ा हुआ था। संक्षेप में वह चिकित्सा की योग्यता, यश, सत्यता तथा कार्य एवं स्वभाव की स्वच्छता में पूर्ण था। उस समय के दूसरे हकीम उसकी तुलना में नहीं थे। चिकित्सा की योग्यता के सिवा उस में और भी गुण थे। हमारे प्रति उसकी पूर्ण राजभक्ति थी। उसने लाहौर में

एक अच्छा सुंदर गृह बनवाया था और हम से बारबार उसे सम्मानित करने को कहता था। हम उसे प्रसन्न रखना चाहते थे इसलिए स्वीकार किया था। संक्षेप में उक्त हकीम हमारे संबंध से तथा हमारा हकीम होने से सांसारिक कार्यों के प्रबंध में बहुत दक्ष हो गया था इसलिए जब हम इलाहाबाद में थे तब कुछ दिनों के लिए इसे अपने कार्यों का दीवान बना दिया था। अपनी ईमानदारी के कारण महत्वपूर्ण कार्यों में बड़ी कड़ाई रखता था और इस प्रकार की कार्यवाही से लोग क्षुब्ध रहते थे। बीस वर्ष से इसके फेफड़ों में घाव हो गए थे पर अपनी बुद्धिमानी से इसने अपना स्वास्थ्य बना रखा था। जब यह बात करता तब बहुत खाँसता था यहाँ तक कि इसके गाल तथा आँखें लाल हो जाती थीं और क्रमशः वे नीली हो गईं। हम बहुधा उससे कहते कि तू विद्वान् चिकित्सक है तब भी अपने घावों को क्यों नहीं अच्छा करता। वह कहता कि फेफड़े के घाव ऐसे होते ही नहीं कि वे अच्छे हो जायँ। इसकी बीमारी में इसके एक विश्वास-पात्र नौकर ने इसकी उस दवा में विष मिला दिया, जिसे यह नित्य पीता था और इसे दे दिया। जब इसे इसका भान हुआ तब उसकी दवा इसने की। इसने रक्त निकलवाने में आपत्ति की यद्यपि वह आवश्यक था। ऐसा हुआ कि पाखाना जा रहा था कि खाँसी आ गई और फेफड़े के घाव खुल गए। मुख से तथा मस्तिष्क से इतना रक्त निकला कि यह अचेतन हो गिर पड़ा तथा डरावनी चीख निकल गई। एक आफ्ताबची यह जान कर दौड़ा हुआ वहाँ गया और उसे रक्त से सना हुआ देखकर चिल्लाया कि हकाम को लोगों ने मार डाला। जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि उसके शरीर पर घाव के चिन्ह भी नहीं हैं और उसके फेफड़े के घाव ही हैं जो रक्त दे रहे हैं। उन सब ने कुलीज खाँ को, जो पंजाब का प्रांताध्यक्ष था, सूचना दी और उसने भी सच्ची बात का निश्चय कर उसे दफन करा दिया। इसे कोई योग्य पुत्र नहीं था।

२४ को वफा के बाग तथा नीमला के बीच में अहेर खेला गया और उसमें चालीस लाल मृग मारे गए। इसी अहेर में एक मादा बाघ पकड़ी गई। उस स्थान के जमींदारों, लगमानियों, शाली तथा अफगानों ने आकर कहा कि उन्हें न स्मरण है और न अपने पूर्वजों से सुना है कि इस ओर एक सौ बीस वर्ष के भीतर कभी बाघ दिखाई पड़ा है। २ जमादिउल् आखिर को वफा बाग में पड़ाव पड़ा और सौर तुलादान का जलसा हुआ। इसी दिन अर्सलाँ बेग उजबेग, जो पहले अब्दुल्मोमिन खाँ का एक सर्दार तथा अमीर था और अब कहमर्द का अध्यक्ष था, दुर्ग को छोड़कर हमारी सेवा में आया। इस कारण कि वह सचाई तथा मित्रता के कारण आया था हमने उसे एक विशिष्ट खिलअत देकर सम्मानित किया। यह एक सीधा उजबेग था तथा उन्नति दिए जाने तथा सम्मानित किए जाने योग्य था। इसी महीने की ४ को आज्ञा भेजी गई कि जलालाबाद का अध्यक्ष अर्जीना मैदान को कमूरगाह अहेर के लिए ठीक करे। लगभग तीन सौ पशुओं के पकडे गए, जिनमें पैंतीस मेढ़े, पच्चीस रंग, नव्वे पहाड़ी भेड़, पचपन पहाड़ी बकरे तथा पंचानवे मृग थे।

जब हम अहेर-स्थल में पहुँचे तब दो प्रहर हो गया, हवा गर्म हो गई तथा ताजी कुत्ते थक गए थे। कुत्तों के दौड़ने का समय प्रातःकाल या संध्याकाल है। शनिवार १२ को अकूरा सराय में पड़ाव हुआ। इसी पड़ाव में शाहबेग खाँ अच्छी सेना के साथ आया तथा सेवा में उपस्थित हुआ। यह हमारे पिता अकबर का बढ़ाया हुआ था। स्वतः यह बहुत वीर तथा कर्मशील है और हमारे पिता के राज्यकाल में अनेक बार द्वंद्व युद्ध लड़ चुका था। इसने हमारे राज्यकाल में ईरान के शासक की सेनाओं से कंधार दुर्ग की रक्षा की थी। सहायतार्थ बादशाही सेना के पहुँचने के पहले एक वर्ष तक वह दुर्ग घिरा हुआ

। अपने सैनिकों के साथ इसका व्यवहार रईसी ढंग का था, शासन के अनुसार नहीं, विशेष कर उन लोगों के साथ जिन्होंने में इसका सहयोग किया था या चढ़ाइयों में इसके साथ रहते हैं। अपने नौकरों के साथ हँसी भी करता था, जिससे इसकी प्रतिष्ठा नहीं रहती थी। हमने कई बार इसे इस बात पर चेतावनी दी पर गत होनेसे हमारे कथन का विशेष प्रभाव इस पर नहीं पड़ा।

सोमवार १४ वीं को हमने हाशिमखाँ का, जो खानःजाद था, बढ़ा कर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया और उड़ीसा का ध्यक्ष नियत किया। इसी दिन समाचार मिला कि मिर्जा शाहरुख पुत्र बदीउज्जमाँ, जो मालवा प्रांत में था, मूर्खता तथा यौवन के ण कुछ विद्रोहियों के साथ राणा के राज्य की ओर उसका पक्ष के लिए जा रहा है। उस स्थान के प्रांताध्यक्ष अब्दुल्लाखाँ ने पता पाकर उसका पीछा किया और उसे पकड़ कर उसके कई थयों को मार डाला। आज्ञा भेजी गई कि एहतमामखाँ आगरे से ाँ जाकर मिर्जा को दरबार लिवा लावे। उक्त महीने की २५ वीं समाचार मिला कि मावरुन्नहर के शासक वलीखाँ का भ्रातुष्पुत्र ामकुलीखाँ ने उस मनुष्य को मार डाला, जो मिर्जा हुसेन कहलाता और मिर्जा शाहरुख का पुत्र कहा जाता था। वास्तव में मिर्जा शाहरुख पुत्रों का मारा जाना उन असुरों के मारे जाने के समान था, नके संबंध में कहा जाता है कि उनके प्रत्येक रक्त-बिंदु से असुर पैदा जाते थे। ढाका पड़ाव पर शेरखाँ, जिसे हमने पेशावर आते समय र दर्रे की रक्षा के लिए नियत किया था, आकर सेवा में उपस्थित ा। इसने उस मार्ग की रक्षा तथा प्रबंध में कोई कमी नहीं की थी। खाँ कोका का पुत्र जफरखाँ दलाजाक अफगानों तथा खतूर जाति भेजा गया था, जिन्होंने अटक तथा व्यास और उसके अड़ोस-पड़ोस

में हर प्रकार का उपद्रव मचा रखा था। उस कार्य को पूरा कर तथा उन उपद्रवियों को, जो संख्या में एक लाख घर के लगभग थे, शांत कर लाहौर की ओर भेज कर वह इसी पड़ाव पर आकर सेवा में उपस्थित हुआ। यह भी ज्ञात हो गया कि इसने इस कार्य को जिस प्रकार होना चाहिए था उसी प्रकार पूरा किया है। रज्जब का महीना जो इलाही महीने आबान के बराबर होता है, आ पहुँचा था और यह ज्ञात था कि यह महीना हमारे पिता के चांद्र तुलादान के लिए निश्चित था इसलिए हमने निश्चय किया कि जिन सब वस्तुओं से वह अपने को सौर तथा चांद्र तुलाओं के समय तौलवाते थे उनका मूल्य आँका जाय और जो मूल्य निकले वह बड़े नागरों में उनकी आत्मा के तुष्टयर्थ फकीरों तथा दरिद्रों में बाँटने के लिए भेज दिया जाय। कुल जोड़ एक लाख रुपए हुए, जो एराक के तीन सौ तूमान तथा मावरुन्नहर के तीन लाख प्रचलित सिक्के के बराबर होता था।

विश्वासपात्र मनुष्यों ने इस धन को आगरा, दिल्ली, लाहौर, गुजरात (अहमदाबाद) आदि बारह बड़े नगरों में बाँट दिया। बृहस्पतिवार २ रज्जब को हमने अपने 'फर्जंद' सलाबतखाँ को खानजहाँ की पदवी दी, जिसे हम अपने पुत्रों से कम नहीं समझते थे और आज्ञा दी कि सभी फर्मानों तथा आज्ञापत्रों में इसे लोग खानजहाँ लिखा करें। विशिष्ट खिलअत तथा जड़ाऊ तलवार भी हमने उसे दी। साथ ही शाह बेग खाँ को खानदौराँ की पदवी देकर उसे भी जड़ाऊ खंजर, एक हाथी तथा एक खास घोड़ा दिया। तीरा, काबुल, बंगश के सरकार तथा स्वात् बजौर का प्रांत और उन प्रांतों के अफ़गानों को दमन करने का कार्य एवं जागीर तथा फौजदारी उसे बहाल की। बाबा हसन से उसने जाने की छुट्टी ली। हमने रामदास कछवाहा को भी इसी प्रांत

में जागीर देने तथा वहीं के सहायकों में नियत रहने का आदेश दिया। हमने मोटाराजा के पुत्र किशनचंद को एक हजारी ५०० सवार का मंसब दिया। गुजरात के प्रांताध्यक्ष मुर्तजाखाँ (सैयद फरीद) को आज्ञापत्र भेजा गया कि मियाँ वजीहुद्दीन के पुत्र की सच्चरित्रता, सुव्यवहार तथा तपस्विता की सूचना मिली है इसलिए हमारी ओर से उसे इतना धन दे दो और ईश्वर के उन नामों की सूची भेजवाओ, जो सिद्ध हो गए हों। यदि ईश्वर की कृपा होगी तो हम बराबर उस का जप किया करेंगे। इसके पहले हमने जफरखाँ को बाबा हसन अब्दाल जाने की आज्ञा दे दी थी कि अहेर के लिए पशु एकत्र करे। उसने शाखबंद बना रखा था, जिसमें सत्ताइस लाल तथा अड़सठ सफेद हरिण आ गए थे। हमने तीर से उन्तीस हरिण मारे और पर्वेज तथा खुर्रम ने भी तीरों से कुछ को मारा। इसके अनंतर सेवकों तथा दरबारियों को तीर चलाने की आज्ञा हुई। खानजहाँ अच्छा निशानेबाज था और जिस हरिण को उसने मारा उसका तीर भीतर घुस गया था। १४ रजब को जफर खाँ ने रावलपिंडी में कमूरगाह अहेर का प्रबंध किया था। हमने एक दूर के लाल हरिण पर तीर चलाई और उसके लगने तथा गिरने पर बड़ी प्रसन्नता हुई। चौंतीस लाल मृग, पैंतीस काली दुमवाले हरिण, जिन्हें हिंदी में चिकारा कहते हैं, तथा दो सूअर मारे गए। रोहतास दुर्ग से तीन कोस पर २१ वीं को दूसरे कमूरगाह अहेर का प्रबंध हिलालखाँ के प्रबंध तथा प्रयत्न से हुआ। इस अहेर में हमने हरमवालियों को भी साथ ले लिया था। यह अहेर अच्छा हुआ और बड़े धूमधाम से हुआ। दो सौ लाल तथा सफेद मृग मारे गए। रोहतास के पहाड़ों ही में ये लाल मृग होते हैं और सारे हिंदुस्तान में गिरझाक तथा नंदन को छोड़कर और कहीं इस प्रकार के मृग नहीं होते। हमने आज्ञा दी कि कुछ जीवित पकड़ लिए जायँ, जिसमें वे हिंदुस्तान में उत्पन्न करने के काम में आवें। २५ वीं

को रोहतास के पास दूसरा अहेर हुआ, जिसमें भी हमारी बहनें तथा दूसरी स्त्रियाँ साथ थीं और लगभग सौ लाल मृग मारे गए।

हमसे कहा गया कि जलाल खाँ गक्खर का चाचा शम्सखाँ, जो पास ही में रहता है, अधिक अवस्था हो जाने पर भी बहुत प्रसन्नता से अहेर खेलता है, यहाँ तक कि युवकों को भी इतनी प्रसन्नता नहीं होती। जब हमने यह भी सुना कि वह फकीरों तथा दरवेशों से सुव्यवहार (सत्संग) भी रखता है तब हम उसके गृह पर गए और उसके ढग तथा व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए। हमने उसे दो सहस्त्र रुपए तथा इतना ही उसकी स्त्रियों तथा संतानों को दिया और अच्छी आय के पाँच दूसरे ग्राम उसे मददेमआश में दिए, जिसमें वे सुख से तथा संतोषपूर्वक कालयापन करें। ६ शाबान को चंदाला पड़ाव पर अमीरुल्उमरा आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसका संग पुनः पाकर हम बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि हिंदू तथा मुसल्मान सभी हकीमों ने निश्चय कर दिया था कि वह मर जायगा। शक्तिमान ईश्वर ने अपनी कृपा तथा दया से उसे स्वस्थ कर दिया, जिसमें वे लोग जो उसकी इच्छा को नहीं मानते समझें कि कठिन रोग के लिए भी, जिसके बाहरी उपकरणों को देखकर लोग निराश हो जाते हैं, एक शक्तिमान है जो अपनी कृपा तथा समवेदना मात्र से उसकी औषधि बतला देता है। उसी दिन बड़े राजपूत सर्दारों में से एक राय रायसिंह, जो खुसरू की घटना में दोष करने के कारण लज्जित होकर अपने गृह पर ही रहता था, आया और अमीरुल्उमरा के आश्रय में हमारे सामने उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया और उसके दोष क्षमा कर दिए गए। जिस समय हमने खुसरू का पीछा करने के लिए आगरा छोड़ा उस समय इसे हम पूर्ण विश्वास के साथ आगरा में नियत कर गए थे कि जब महलों को बुलवाया जायगा तब यह उनके साथ आवेगा। जब हरम

की स्त्रियों को बुलवाया गया तब यह दो तीन पड़ाव तक साथ गया पर मथुरा में झूठी गप्प सुनकर यह उनसे अलग हो देश चला गया था। इसने सोचा कि यह उपद्रव खड़ा हो गया है इस लिए समझकर उचित मार्ग ग्रहण करना चाहिए। कृपालु ईश्वर अपने सेवकों पर रक्षा-दृष्टि रखता है इसलिए थोड़े ही समय में सुप्रबंध कर विद्रोहियों के संगठन को तोड़ दिया और इस प्रकार स्वामिद्रोह कर हट जाना इसकी गर्दन पर भार हो गया था। अमीरुल्‌उमरा को प्रसन्न करने के लिए हमने उसका मंसब तथा जागीर ज्यों की त्यों बहाल रखी।

हमने सुलेमान बेग को, जो हमारी शाहज़ादगी के समय से हमारा सेवक था, फिदाई खाँ की पदवी दी। सोमवार १९ वीं को दिलामेज बाग में पड़ाव पड़ा, जो रावी नदी के किनारे है। इसी बाग़ में हम अपनी माता के पास उपस्थित हुए। मिर्ज़ा ग़ाज़ी, जिसने कंधार की सेना की अध्यक्षता के समय अच्छी सेवा की थी, सेवा में आया और हमने उस पर बहुत कृपा की। मंगलवार १३ वीं को हम लाहौर में पहुँचे। दूसरे दिन गियासुद्दीन मुहम्मद मीरमीरान का पुत्र मीर खलीलुल्ला, जो शाह नेअमतुल्ला वली के वंशजों में से था, सेवा में आया। शाह तहमास्प के राज्यकाल में सारे देश में कोई परिवार इतना उच्च नहीं था क्योंकि शाह की बहिन जानिश बेगम का निकाह मीरमीरान के पिता मीर नेअमतुल्ला के साथ हुआ था। इनसे जो पुत्री हुई थी उसका शाह ने अपने पुत्र इस्माइल मिर्जा से निकाह पढ़ाया था और उस मीरमीरान के पुत्रों को दामाद बनाकर अपनी छोटी पुत्री उसके सबसे बड़े पुत्रको दिया और शाह की भांजी से इस्माइल मिर्जा द्वारा हुई पुत्री का दूसरे पुत्र मीर खलीलुल्ला से संबंध कर दिया। शाह की मृत्यु पर यह वंश अवनत होने लगा। यहाँ तक कि शाह अब्बास के राज्यकाल में प्रायः सब समाप्त हो गए और कुल संपत्ति तथा सामान खोकर अपने देश में रहने योग्य

नहीं रह गए। मीर खलीलुल्ला हमारे पास उपस्थित हुआ। मार्ग में इसने बहुत कष्ट उठाया था और उसकी हालत में सचाई थी इसलिए, अपनी संपत्ति का भागीदार बनाकर उसे बारह सहस्र रुपए नगद, एक हजारी २०० सवार का मंसब तथा जागीर की आज्ञा देदी।

दीवानी विभाग को आज्ञा दी गई कि हमारे पुत्र खुर्रम को आठ हजारी ५००० सवार का मंसब दिया जाय तथा उज्जैन के पास जागीर दी जाय एवं हिसार फीरोजा सरकार उसके नाम कर दिया जाय। वृहस्पतिवार २२ को आसफखाँ के निमंत्रण पर हम स्त्रियों के साथ उसके गृह पर गए और वहीं रात्रि व्यतीत किया। दूसरे दिन उसने अपनी भेंट हमारे सामने उपस्थित की, जिसका मूल्य दस लाख रुपए था और जिनमें रत्न, जड़ाऊ वस्तुएँ, वस्त्र, हाथी तथा घोड़े थे। कुछ लाल तथा गोमेदक एवं मोती रत्नों में, रेशमी वस्त्र तथा कुछ चीना एवं तातारी बर्तन स्वीकार किए गए और बचा हुआ सब उसे पुरस्कार में दे दिया। गुजरात से मुर्तजा खाँ ने भेंट के रूप में एक अंगुठी भेजी जो एक ही अच्छे रंग, तत्त्व तथा पानी के लाल को काटकर छल्ला, रत्न तथा जड़ाव सभी बनाया गया था। यह डेढ़ टंक तथा एक सुर्ख तौल में था, जो एक मिस्काल तथा पंद्रह सुर्ख के बराबर होता है। यह मेरे पास आया और हमने इसे पसंद किया। उस दिन तक ऐसी अँगूटी किसी बादशाह के पास होना किसी ने नहीं सुना था। एक लाल भी, जिसके छ काट थे और जो दो टंक तथा पंद्रह सुर्ख तौल में तथा मूल्य में ढाई लाख आँका गया था, हमारे पास भेजा गया। अंगूठी का भी यही मूल्य आँका गया।

उसी दिन मक्का के शरीफ का एलची भी एक पत्र तथा काबा के द्वार का पर्दा लेकर आया। इसने हमारे प्रति बड़ी मित्रता दिखलाई।

उक्त एलची ने उसे पाँच लाख दाम, जो सात आठ सहस्र रुपए होता है, दिया था इसलिए हमने शरीफ के लिए एक लाख रुपए की बहुमूल्य हिंदुस्तानी वस्तुएँ भेजने का निश्चय किया। बृहस्पतिवार १० वीं को मुलतान प्रांत का कुछ अंश मिर्ज़ा ग़ाज़ी[1] की जागीर में जोड़ दिया गया यद्यपि पूरा ठट्टा प्रांत उसके जागीर में दे दिया गया था। इसका मंसब भी बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया गया। कंधार का शासन और उस प्रांत की रक्षा, जो हिन्दुस्तान की सीमा पर है, उसके सुप्रबंध में दिया गया। उसे खिलअत तथा जड़ाऊ तलवार देकर जाने की छुट्टी दे दी। मिर्जा गाजी बड़ा सुयोग्य था और अच्छे शेर भी कहता था। यह उपनाम 'वक़ारी' रखता था। इसके एक शेर का अर्थ—

यदि हमारे रोने से उसके मुख पर मुस्किराहट आजाती है, तो क्या आश्चर्य!
यद्यपि बादल रोता है पर गुलाब की क्यारी के कपोल मुस्किराते हैं।

१९ वीं को खानखानाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। चालीस हाथी, कुछ जड़ाऊ मीने के बर्तन, फारस के वस्त्र तथा पोशाक जो दक्षिण की ओर ही विशेष बनते हैं और जिनका मूल्य डेढ़ लाख रुपए होता था उसने भेजा था। इसके साथ मिर्जा रुस्तम तथा उस प्रांत के अन्य पदाधिकारियों ने अच्छी भेंटें भेजी थीं। कुछ हाथी पसंद आए। १८ वीं को राय दुर्गा की मृत्यु का समाचार मिला, जो हमारे पिता के बढ़ाए हुए लोगों में से एक था। यह चालीस वर्ष से अधिक हमारे पिता की सेवा में एक सर्दार रहा और चार हजारी मंसब तक पहुँचा था। हमारे पिता की सेवा का सौभाग्य

१—मुग़ल दरबार भा० २ पृ० २३०-२२।

प्राप्त करने के पहले यह राणा उदयसिंह के विश्वासी सेवकों में से था। यह २६ वीं को मरा था और अच्छा सैनिक था।

सुलतान शाह अफगान, जो स्वभावतः उपद्रवी तथा विद्रोही था, खुसरू की सेवा में रहता था और उसका अंतरंग मित्र था, यहाँ तक कि उस अभागे पुत्र के भागने का यही विद्रोही कारण था। खुसरू के पराजित होने तथा पकड़े जाने पर यह अकेला खिज्राबाद के पहाड़ों में भाग गया। अंत में वहाँ के करोड़ी मीर मुगल के हाथ पकड़ा गया। यह ऐसे पुत्र के विनाश का कारण था इसलिए हमने आज्ञा दे दी कि लाहौर के मैदान में तीरों का निशाना बनाकर मार डालें। उक्त करोड़ी को ऊँचा पद तथा खास खिलअत पुरस्कार में दिया। २६ वीं को हमारा एक पुराना सेवक शेर खाँ अफगान मर गया। कहा जा सकता है कि इसने स्वयं आत्महत्या कर ली क्योंकि यह निरंतर मदिरापान किया करता था यहाँ तक कि एक प्रहर में यह चार प्याला दुबारा खिंचा हुआ अर्क पिया करता था। विगत वर्ष में रमज़ान महीने का उपवास इसने तोड़ दिया था और इसका विचार था कि इस वर्ष उसके बदले में शाबान महीने में उपवास करे और दो महीने तक साथ करता रहे। साधारण प्रथा को छोड़ना उसका स्वभाव हो गया था। यह निर्बल होता गया तथा भूख बंद हो गई, जिससे अत्यंत शक्तिहीन हो जाने से सत्तावनवें वर्ष में यह मर गया। इसके संतानों तथा भाइयों को आश्रय देकर उनकी अवस्थानुसार उन्हें इसके मंसब तथा जागीर में से कुछ अंश दे दिया।

१ म शव्वाल को हम मौलाना मुहम्मद अमीन से मिलने गए, जो शेख महमूद कमानगर के शिष्यों में से एक था। शेख महमूद अपने समय के बड़े आदमियों में से एक था और बादशाह हुमायूँ

का उस पर पूरा विश्वास था, यहाँ तक कि एक बार स्वयं उसका हाथ धुलाया था। पूर्वोक्त मौलाना अच्छी प्रकृति का मनुष्य है और सांसारिक माया तथा मोह के होते भी निर्लिप्त है। यह प्रकृति तथा कर्म से फकीर है और आत्मा के अलग हो जाने से भी परिचित है। उसके सत्संग से हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। हमने उससे अपने वे दुःख कहे जो हमारे मस्तिष्क में उलझ रहे थे और उससे भी हमने उपदेश तथा सम्मति सुनी जिससे हमें बहुत कुछ हार्दिक संतोष हुआ। हमने उसे एक सहस्र बीघा भूमि तथा एक सहस्र रुपए भेंट कर छुट्टी ली। सूर्य वार को एक पहर दिन बीतने पर हमने राजधानी आगरा जाने के लिए लाहौर से प्रस्थान किया। कुलीजखाँ को प्रांताध्यक्ष, मीर कवामुद्दीन को दीवान, शेख यूसुफ को बख्शी तथा जमालुद्दीन को कोतवाल नियत कर उन सब को उनके अनुसार खिलअत दिया और अपने मार्ग पर चला। २५ वीं को सुलतानपुर में नदी पार कर दो कोस आगे बढ़कर नकोदर में पड़ाव डाला। हमारे पिता ने शेख अबुल्फ़जल को बीस सहस्र रुपए का सोना दिया था कि दोनों पर्गनों के बीच में बाँध बनाकर जल प्रपात तैयार कर दे और हमने भी इस ठहरने के स्थान को बहुत आकर्षक तथा नया पाया। हमने नकोदर के जागीरदार मुइज्जुलमुल्क को आज्ञा दी कि बाँध के एक ओर एक इमारत तथा उद्यान बनवावे जिसमें यात्री लोग उसे देख कर प्रसन्न हों। शनिवार १० ज़ीकदा को वजीरुल्मुल्क, जो हमारी राजगद्दी के पहले से हमारी सेवा में था और हमारा दीवान था, पेचिश से मर गया। इसकी अवस्था के अंत में इसे एक कुग्रही पुत्र उत्पन्न हुआ, जो चालीस दिन के भीतर अपने माँ - बाप को खा गया और आप भी दो-तीन वर्ष का होते-होते मर गया। यह विचार कर कि वजीरुल्मुल्क का परिवार एक बार ही नष्ट न हो जाय हमने उसके भतीजे मंसूर को मंसब दे दिया। वास्तव में उसकी ओर से हमारे प्रति प्रेम नहीं था।

सोमवार १४ वीं को हमने मार्ग में सुना कि पानीपत और कर्नाल के बीच में दो चीते यात्रियों को बहुत कष्ट दे रहे हैं। हमने हाथियों को एकत्र कर आगे भेजा। जब हम चीतों के स्थान पर पहुँचे तब एक हथिनी पर सवार हुए और उस स्थान को कमूरगाह की चाल पर हाथियों से घिरवा दिया तथा ईश्वर की कृपा से दोनों चीतों को बंदूक से मारकर उनके भय से बंद हुए मार्ग को यात्रियों के लिए खोल दिया। वृहस्पतिवार १८ वीं को हम दिल्ली में ठहर गए और जमुना नदी के बीच में सलीमखाँ अफगान द्वारा अपने राज्यकाल में बनवाए हुए सलीमगढ़ में उतरे। हमारे पिता ने इसे मुर्तजाखाँ को दिया था, जो मूलतः दिल्ली का निवासी था। उक्त खाँ ने नदी के किनारे पत्थर का बनवाया था जो बहुत ही आनंददायक तथा खुलता हुआ था। इस इमारत के नीचे पानी के पास एक चौकोर चौखंडी बादशाह हुमायूँ के आदेश से बनी थी, जिस पर चमकते हुए खपरैल लगे थे और ऐसे हवादार स्थान बहुत कम हैं। जब विगत सम्राट् हुमायूँ दिल्ली में रहते थे तो इस स्थान में बहुधा अपने मित्रों के साथ बैठते तथा अपने दरबारियों के साथ बातचीत करते। हमने यहाँ चार दिन व्यतीत किए और अपने दरबारियों तथा मित्रों के साथ मदिरापान करते रहे। दिल्ली के शासक मुअज्जमखाँ ने अपनी भेंट दी। जागीरदारों तथा दिल्लीवासियों ने भी अपनी शक्ति के अनुसार भेंट दी। हमारी इच्छा थी कि कुछ दिन पालम पर्गना में कमूरगाह अहेर खेलें, जो उक्त नगर के पास के स्थानों में से एक है और निश्चित अहेर-स्थानों में से एक है। परंतु हम से कहा गया कि आगरा पहुँचने की शुभ साइत बहुत पास आ गई है और वैसी दूसरी साइत इधर शीघ्र नहीं मिल सकती इसलिए इस इच्छा को छोड़कर नाव पर सवार हो जल से उस ओर चले। २० जीकदा को मिर्जा शाहरुख के चार लड़के तथा तीन लड़कियाँ हमारे पास लाए गए, जिनका उल्लेख उसने हमारे

पिता से नहीं किया था। हमने लड़कों को अपने विश्वासपात्र सेवकों की रक्षा में दे दिया और लड़कियों को हरम की सेवकाओं को सौंपा कि वे उनकी देख भाल करें। उसी महीने की २१ वीं को राजा मानसिंह रोहतासगढ़ से आकर सेवा में उपस्थित हुआ, जो विहार-पटना प्रांत में है। यह छ-सात बार आज्ञा जाने पर आया था और खानआजम के समान साम्राज्य का एक कपटी तथा पुराना भेड़िया है। इन लोगों ने हमारे साथ क्या किया और हमने उनके साथ कैसा व्यवहार किया उसे अंतर्यामी ईश्वर ही जानता है। संभवतः कोई भी ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं बतला सकता। उक्त राजा ने भेंट में एक सौ हाथी तथा हथिनी दिए पर इनमें एक भी इस योग्य न था कि हमारे निजी हाथियों में रखा जा सके। हमारे पिता के कृपापात्रों में यह था इसलिए हमने इसके दोषों को इसके मुख पर नहीं कहा और शाही कृपा से इसे उन्नति ही दी।

इसी दिन लोग एक बोलता हुआ जाल या लवा लाए, जो स्पष्ट रूप से 'मियाँ तूती' कहता था। यह विचित्र तथा आश्चर्यजनक है। तुर्की में इस पक्षी को तुर्गई कहते हैं।

तीसरा जलूसी वर्ष

बृहस्पतिवार २ जीहिज्जा, प्रथम फरवरदीन (१६ मार्च सन् १६०८ ई०) को सूर्य, जो संसार को प्रकाशमान करता तथा अपने तेज से गर्म रखता है, मीन राशि से निकलकर मेष के आनंद-पूर्ण राशि में गया, जो सुख तथा आनंद का घर है। इसने संसार को नया प्रकाश दिया और वसंत ऋतु की सहायता से उनको, जिन्हें शिशिर ने लूट लिया था और हेमंत ने अत्याचार कर रखा था, नव वर्ष के खिलअतों और

पन्ने की हरीतिमा के वस्त्रों से अच्छादित कर दिया तथा उन्हें घटी की पूर्ति एवं बदला दिया।

पुनः संसार के स्वामी का आदेश अनस्तित्व को आया।

कि जिसे तू निगल गया है उसे उगल दे।

नव वर्ष का जलसा रंगटा ग्राम में हुआ, जो आगरे से पाँच कोस पर है और सूर्य के संक्रमण के समय हम राजसिंहासन पर वैभव तथा ऐश्वर्य के साथ बैठे। सर्दारगण, दरबारी लोग तथा सभी सेवकगण मुबारकबादी देने आए। इसी जलसे में हमने खानजहाँ को पाँच हजारी ५,००० सवार का मंसब दिया। हमने ख्वाजा जहाँ को बख्शी का पद दिया। वजीर खाँ को बंगाल प्रांत की दीवानी से हटाकर उसके स्थान पर अबुलहसन शिहाबखानी को भेजा। नूरुद्दीन कुली आगरे का कोतवाल हुआ। गत सम्राट् अकबर का मकबरा मार्ग में पड़ता था इसलिए उसके पास से जाते हुए यदि हम उसकी 'ज़ियारत' का सौभाग्य प्राप्त करें तो जो लोग अदूरदर्शी हैं वे यही समझेंगे कि हमने ऐसा इसीलिए किया कि हमारे मार्ग में पड़ता था। इसलिए हमने निश्चय किया कि आगरे पहुँचने पर फिर वहाँ से पैदल हम उस मकबरे तक की यात्रा करें, जो ढाई कोस पर है, जिस प्रकार हमारे पिता ने हमारे जन्म पर आगरे से अजमेर तक की की थी। क्या ही अच्छा होता यदि हम ऐसा सिर के बल कर सकते। शनिवार ५ वीं को जब दिन दो प्रहर चढ़ चुका था तब अच्छे समय में हम आगरा चले और मार्ग में पाँच सहस्र रुपयों के छोटे सिक्कों को लुटाते हुए दुर्ग के भीतर महल में पहुँचे। इसी दिन राजा वीरसिंह देव एक सफेद चीता हमें दिखलाने को लाए। यद्यपि अन्य प्रकार के जंतु, पशु तथा पक्षी, सफेद रंग के भी होते हैं जिन्हें तूयगाँ कहते हैं पर सफेद चीता हमने

कभी नहीं देखा था। इसके धब्बे, जो साधारणतः काले होते हैं, नीले रंग के थे और शरीर की सफेदी भी हलका नीला रंग लिए थी। सूरजमुखी जीवों में हमने बाज़, शाहीन, शिकारा, गौरैया, कौआ, तीतर, मोर आदि बहुत देखे हैं। चिड़ियाघरों में सफेद बाजों को बहुत देखा है। सफेद गिलहरी भी मिलती हैं तथा सफेद मृग भी देखे गए हैं, जो हिंदुस्तान ही में केवल मिलते हैं। चिकारों में, जिन्हें फारस में सफेदा कहते हैं, बहुधा सफेद मिलते हैं।

भोज हाड़ा का पुत्र रत्न, जो एक मुख्य राजपूत सर्दार है, इसी समय पड़ाव पर आया और सेवा में उपस्थित होकर तीन हाथी भेंट दिए। इनमें से एक बहुत पसंद आया, जिसका मूल्य पंद्रह सहस्र रुपए आँका गया। यह हमारे निजी हाथियों में रखा गया और इसका नाम हमने रतनगज रखा। हिंदुस्तान के पहले के राजाओं के पास पचीस सहस्र रुपयों के मूल्य से अधिक के हाथी नहीं थे पर अब वे बहुत महँगे भी हो गए हैं। हमने रत्न को सर बुलंद राय की पदवी दी। हमने मीरान सद्र-जहाँ को बढ़ाकर पाँच हजारी १५०० सवार का मंसब तथा मुअज्जम खाँ को चार हजारी २००० सवार का मंसब दिया। अब्दुल्ला खाँ को मंसब बढ़ाकर तीन हजारी ४०० सवार का दिया। मुजफ्फर खाँ तथा भाऊ सिंह दोनों को दो हजारी १००० सवार का मंसब प्रदान किया। अबुल्हसन दीवान का मंसब एक हजारी ५०० सवार का और एत-मादुद्दौला का एक हजारी २५० सवार का था। २४ वीं को राजा सूरजसिंह हमारे पुत्र खुर्रम का मामा सेवा में उपस्थित हुआ। यह अपने साथ उपद्रवी अमरा के चचेरे भाई श्याम को साथ ले आया। वास्तव में इसमें कुछ कौशल है और हाथियों पर सवार होना जानता है। राजा सूरजसिंह हिंदी भाषा का एक कवि अपने साथ लाया था। इसने हमारी प्रशंसा में एक कविता उपस्थित की जिसका आशय था

कि यदि सूर्य को पुत्र होता तो निरंतर दिन रहता तथा रात्रि कभी न होती क्योंकि जब सूर्य अस्त हो जाता तो पुत्र उसके स्थान पर बैठ जाता तथा संसार को प्रकाशित करता। ईश्वर प्रशंसा तथा धन्यवाद का पात्र है कि उसने आपके पिता को ऐसा पुत्र दिया कि उनकी मृत्यु पर भी प्रजा ने शोक का वस्त्र नहीं पहिरा, जो रात्रि के समान है। सूर्य को इससे ईर्ष्या हुई तथा कहा कि यदि हमें भी एक पुत्र हो तो वह हमारा स्थान ग्रहण कर रात्रि को संसार पर न आने दे क्योंकि आपके उदय के प्रकाश तथा न्याय की ज्योति से ऐसी दुर्घटना पर भी विश्व इतना प्रकाशमान है कि कह सकते हैं कि रात्रि का न नाम है न चिन्ह है। भाव की नव्यता के साथ ऐसी कम कविता हमारे सुनने में आई है। इस प्रशंसात्मक कविता के लिए हमने उसे एक हाथी दिया। राजपूत गण कवि को चारण कहते हैं। उस समय के एक कवि ने इन भावों को फारसी शैरों में कहा है:—(वही भाव है जो ऊपर लिखा गया है)

बृहस्पतिवार ८ मुहर्रम सन् १०१७ हि० (२४ अप्रैल सन् १६०८ ई०) को जलालुद्दीन मसऊद जिसे चार सदी मंसब मिला था और साहस में कम न होने के कारण अनेक युद्धों में जिसने अच्छे कार्य किए थे, पचास या साठ वर्ष की अवस्था में पेट चली रोग से मर गया। वह अफीमची था और अफीम को कूट कर मलाई के साथ खाता था। यह भी कुप्रसिद्ध है कि यह अपनी माता के हाथों से अफीम खाया करता था। जब इसकी बीमारी बढ़ गई तथा इसकी मृत्यु की संभावना हो गई तब उसने पुत्र के प्रति विशेष स्नेह के कारण उस मोताद से अधिक अफीम खा लिया जो अपने पुत्र को दिया करती थी और दो तीन घंटे बाद वह भी मर गई। हमने पुत्र के प्रति माँ का ऐसा स्नेह कभी नहीं सुना था। हिंदुओं में यह प्रथा है कि पतियों की मृत्यु पर

ानियाँ सती हो जाती हैं, चाहे वह प्रेम के कारण हो या अपने पिताओं की सम्मान-रक्षा के लिए हो या अपनी संतानों के सामने लज्जित न होने के लिए हो परंतु माताओं के द्वारा हिन्दू या मुसलमान किसी में ऐसा नेह नहीं देखा गया।

उसी महीने की १५वीं को हमने एक अपना सर्वश्रेष्ठ घोड़ा राजा मानसिंह को कृपा कर भेंट दिया। इस घोड़े को शाह अब्बास ने अन्य घोड़ों तथा योग्य भेंटों के साथ अपने एक विश्वासपात्र दास मनोचेहर के द्वारा गत सम्राट् अकबर के पास भेजा था। इस घोड़े की भेंट मिलने से राजा इतना प्रसन्न हुआ जितनी एक राज्य मिलने से वह प्रसन्नता न प्रगट करता। जिस समय वह घोड़ा आया था उस समय वह तीन-चार वर्ष का था। वह हिन्दुस्तान में बड़ा था। दरबार के सभी सेवकों मुगल तथा राजपूत ने मिलकर कहा था कि एराक से ऐसा घोड़ा हिन्दुस्तान में अब तक नहीं आया है। जब हमारे पिता खानदेश तथा दक्षिण के प्रांत हमारे भाई दानियाल को देकर आगरे लौट रहे थे तब उन्होंने कृपा कर दानियाल से कहा था कि जो इच्छा हो वह माँग लो। अवसर पाकर दानियाल ने इस घोड़े को माँग लिया और वह उसे दे दिया गया। मंगलवार २० को इस्लाम खाँ के पास सूचना आई कि जहाँगीर कुली खाँ मर गया, जो बंगाल प्रांत का शासक तथा हमारा विशिष्ट दास था। यह अपने स्वाभाविक गुणों तथा आंतरिक योग्यता से बड़े सर्दारों की सूची में परिगणित कर लिया गया था। इसकी मृत्यु से हमें बड़ा दुःख हुआ। हमने बंगाल की प्रांताध्यक्षता तथा जहाँदार की अभिभावकता अपने फर्जंद इस्लामखाँ को दिया और उसके स्थान पर बिहार प्रांत का शासन अफजलखाँ को दिया।

हकीम अली का पुत्र जिसे हमने कुछ कार्य के लिए बुर्हानपुर भेजा था, आया और अपने साथ कुछ कर्णाटकी नटों को लिवा लाया,

जो अद्वितीय थे। जैसे उनमें से एक दस गेंदों के साथ खेलता था, जिनमें सब नारंगी के इतनी बड़ी थीं और एक निबुए के समान तथा एक बीज के इतनी बड़ी थीं अर्थात् किसी के बड़े तथा छोटे होने पर भी वह कभी नहीं चूका और इतने प्रकार के खेल दिखलाए कि लोग चकित हो गए। इसी समय सिंहल से एक साधु आया और एक विचित्र पशु देवनाक नामक ले आया। इस का मुख ठीक चमगीदड़ सा तथा शरीर बंदर सा था पर पूँछ नहीं थी। इसकी चालें ठीक पुच्छहीन काले बंदरों सी थी, जिन्हें हिन्दी भाषा में बनमानुस कहते हैं। इसका शरीर दो तीन महीने के बंदर के बच्चे के ऐसा था। यह दर्वेश के साथ पाँच वर्ष से था। ऐसा ज्ञात होता था कि वह कभी नहीं बढ़ेगा। यह केवल दूध पीता है और केला भी खाता है। यह एक विचित्र जंतु ज्ञात हुआ इसलिए चित्रकारों को आज्ञा दी कि इसको कई चालों की चित्र बनावें। यह बड़ा भद्दा था।

उसी दिन मिर्जा फरेदूँ बर्लास का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १३०० सवार का कर दिया। हमने आज्ञा दी कि पायंदा खाँ मुगल सैनिक-सेवा में प्रयत्न करता हुआ बूढ़ा हो गया है इसलिए उसे दो हजारी मंसब की जागीर दी जाय। इल्फखाँ का मंसब बढ़ाकर सात सदी ५०० सवार का कर दिया। हमारे फर्जंद इस्लामखाँ का मंसब, जो बंगाल प्रांत का अध्यक्ष था, बढ़ाकर चार हजारी ३००० सवार का कर दिया। रोहतास दुर्ग की अध्यक्षता कुतुबुद्दीनखाँ कोका के पुत्र किशवरखाँ को दिया। एहतमामखाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया और मीरबहर नियत कर बंगाल का बेड़ा उसे सौंपा। १ सफर को खानआजम के पुत्र शमशुद्दीनखाँ ने दस हाथी भेंट किए और दो हजारी १५०० सवार का मंसब पाकर जहाँगीर कुलीखाँ की पदवी के लिए चुना गया। जफरखाँ ने दो हजारी १००० सवार का

मंसब पाया। हमने राजा मानसिंह के सबसे बड़े पुत्र जगतसिंह की पुत्री अपने निकाह के लिए माँगी थी इसलिए १६वीं को अस्सी सहस्र रुपए साचक के लिए उक्त राजा के पास उसे सम्मानित करने के लिए भेजा। मुकर्रबखाँ ने खंभात के बंदर से एक यूरोपीय पर्दा भेजा, जिसके सौंदर्य के समान दूसरा फिरंगी चित्रकारों का पर्दा देखने में नहीं आया था। उसी दिन हमारी बूआ बख्तुन्निसा बेगम एकसौ वर्ष की अवस्था में क्षय तथा ज्वर रोगों से मर गई। उसके पुत्र मिर्जा वली को हमने एक हजारी २०० सवार का मंसब दिया।

आकम हाजी नामक मावरुन्नहर का एक आदमी, जो बहुत दिनों तक तुर्की में रह चुका था तथा बुद्धिमानी एवं धार्मिक ज्ञान से रहित भी नहीं था और अपने को तुर्की के बादशाह का एलची बतलाता था, हमारे सामने आगरे में उपस्थित हुआ। इसके पास कोई अज्ञात लेख था। उसकी अवस्था तथा कार्यवाही देखकर दरबार का कोई भी सेवक उसके एलची होने पर विश्वास नहीं करता था। जब तैमूर ने तुर्की विजय किया और वहाँ का शासक यिलद्रीम बायजीद जीवित पकड़ा गया तब कर लगाकर तथा एक वर्ष का कर लेकर उसे सारा तुर्की देश का अधिकार देने का निश्चय किया परंतु उसी समय यिलद्रीम बायजीद मर गया इससे तैमूर उसके पुत्र मूसा चेलेबी को राज्य देकर लौट आया। उस समय से अब तक इतनी कृपाओं के होते वहाँ के बादशाहों की ओर से कोई नहीं आया और न कोई एलची भेजा गया तब कैसे विश्वास किया जा सकता है कि यह मावरुन्नहर का आदमी वहाँ के बादशाह द्वारा भेजा गया होगा। हम इस कार्य को किसी प्रकार नहीं समझ पाए और न कोई उसकी बातों पर विश्वास कर सका इसलिए हमने उसे जहाँ चाहे जाने की आज्ञा देदी। ४रबीउल् अव्वल को जगत सिंह की पुत्री हरम में आई और मरियमुज्जमानी

के महलमें निकाह पढ़ाया गया। इसके साथ राजा मान सिंह ने जो वस्तुएँ भेजी थीं उनमें साठ हाथी भी थे।

हमने राणा को विजय करने का निश्चय कर लिया था इसलिए माहाबतखाँ को उस कार्य पर भेजने का ध्यान हुआ। हमनें बारह सहस्र सुसज्जित सवार योग्य अफसरों की अधीनता में उसके साथ नियुक्त किया तथा पाँच सौ अहदी और दो सहस्र पैदल बंदूकची दिए। तोपखाने में सत्तर-अस्सी तोपें हाथियों तथा ऊँटों पर सजी थीं और इसके साथ साठ हाथी गए। इस सेना के साथ बीस लाख रुपयों का कोष भी भेजा गया। उक्त महीने की १६वीं को मीर नेअमतुल्ला का पौत्र मीर खलीलुल्ला, जिसका तथा जिसके परिवार का कुल वृत्तांत ऊपर लिखा जा चुका है, पेट चली रोग से मर गया। इसके मुख पर सचाई तथा दर्वेशपन झलकता था। यदि यह कुछ दिन जीता तथा हमारी सेवा में रहता तो उच्च पद तक पहुँचता। बुर्हानपुर के बख्शी ने कुछ आम भेजे थे, जिसमें से एक हमने तौलवाया जो साढ़े बावन तोले का निकला। बुधवार १८ वीं को मरियमुज्जमानी के गृह में हमारे चालीसवें वर्ष का चांद्र तुलादान का जलसा हुआ। हमने तुला के रुपए को स्त्रियों तथा दरिद्रों में बाँटने के लिए आदेश दिया। बृहस्पतिवार ४ रबीउल् आखिर को अहदियों के बख्शी ताहिर बेग को मुखलिस खाँ की पदवी दी। मुल्ला तक्रिया शुस्तरी को, जो गुणों तथा योग्यता से भूषित था और इतिहास तथा वंशानुक्रम के ज्ञान का विद्वान था, मुवर्रिख खाँ की पदवी दी। उसी महीने की १० वीं को अब्दुल्लाखाँ के भाई बरखुरदार को बहादुर खाँ की पदवी देकर उसे उसके लोगों में सम्मानित किया। मेहतर खाँ के पुत्र मूनिस खाँ ने यशब पत्थर की एक सुराही भेंट की, जो मिर्जा उलुग बेग गुर्गान के राज्यकाल में उसीके लिए बनी थी। यह सुंदर अलभ्य वस्तु थी और सुंदर बनी हुई थी।

इसका पत्थर श्वेत तथा स्वच्छ था। इसके गले के चारों ओर मिर्जा का शुभ नाम तथा हिजरी वर्ष 'रिका' लिपि में खुदा हुआ था। हमने आदेश दिया कि उसके ओष्ठ के किनारे पर हमारा तथा अकबर का शुभ नाम खोदा जाय। मेहतर खाँ इस राज्य का एक पुराना सेवक था। इसने बादशाह हुमायूँ की सेवा की थी और हमारे पिता के राज्य-काल में इसने मंसब प्राप्त किया था। वह इसे विश्वासपात्र सेवक समझते थे। १६ वीं को एक फर्मान भेजा गया कि संग्राम का प्रांत, जिसे एक वर्ष के लिए पुरस्कार के रूप में अपने फर्जंद इस्लाम खाँ को दिया था, उसी कार्य को एक वर्ष के लिए बिहार प्रांत के अध्यक्ष अफजल खाँ को दिया गया। इसी दिन हमने महाबतखाँ का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २५०० सवार का और हुसेन खाँ टुकरिया के पुत्र यूसुफ खाँ को दो हजारी ८०० सवार का मंसब दिया।

२४ वीं को हमने महाबत खाँ को अमीरों तथा आदमियों के साथ, जो राणा को दमन करने के लिए नियत हुए थे, जाने की छुट्टी दी। उक्त खाँ को हमने खिलअत, घोड़ा, एक खास हाथी और एक जड़ाऊ तलवार देकर सम्मानित किया। जफर खाँ को एक झंडा देकर सम्मानित किया और निजी खिलअत तथा जड़ाऊ खंजर दिए। शुजाअत खाँ को भी झंडा देकर खिलअत तथा खास हाथी पुरस्कार में दिया। राजा वीरसिंह देव को खिलअत तथा खास घोड़ा और मंगली खाँ को एक घोड़ा तथा जड़ाऊ खंजर दिया। नारायणदास कछवाहा, अलीकुली दरमन तथा हिजब्र खाँ तहमतन को छुट्टी दी गई। बहादुर खाँ तथा मुइज्जुलमुल्क बख्शी को जड़ाऊ खंजर दिए गए और इसी प्रकार सभी अमीर तथा सर्दार को उनके पदानुसार बादशाही भेंटें दी गईं। एक प्रहर दिन चढ़ चुका था जब खानखानाँ, जो हमारे अभिभावक होने के उच्च पद पर चुना गया था, बुर्हानपुर से आकर सेवा में

उपस्थित हुआ। प्रसन्नता तथा आनंद ने उसे ऐसा दबोच लिया था कि वह यह नहीं समझ सका कि वह सिर के बल आया है या पैरों पर। वह घबड़ाकर हमारे पैरों पर गिर पड़ा। हमने दया तथा कृपा कर उसके सिर को उठाया और प्रेम के साथ आलिंगन कर उसके मुख को चूम लिया। वह हमारे लिए भेंट में मोतियों की दो माला, कुछ लाल तथा पन्ने लाया था, जिन सब रत्नों का मूल्य तीन लाख रुपए था। इनके सिवा भी बहुत सी बहुमूल्य वस्तुएँ हमारे सामने रखीं। १७ जमादिउल् अव्वल को बंगाल का दीवान वज़ीर खाँ आकर सेवा में उपस्थित हुआ और साठ हाथी हथिनी तथा एक मिली लाल भेंट किया। यह हमारा एक पुराना सेवक था और हर एक कार्य करता था इसलिए इसे अपने पास उपस्थित रहने की आज्ञा दी। कासिम खाँ तथा उसका बड़ा भाई इस्लाम खाँ शांतिपूर्वक साथ नहीं रह सकते थे। हमने प्रथम को अपने पास बुला लिया और वह कल आकर सेवा में उपस्थित हुआ। २२ वीं को आसफ खाँ ने हमको सात टंक की तौल का एक लाल भेंट दिया, जिसे उसके भाई अबुल् कासिम ने खंभात में पछत्तर हजार रुपए में क्रय किया था। यह बड़े अच्छे रंग का तथा सुडौल है पर हमारे विचार से साठ सहस्र रुपए से अधिक का नहीं है। यद्यपि राय रायसिंह के पुत्र राय दिलीप ने बड़े दोष किए थे पर उसने हमारे फ़र्जंद खानआजम की शरण ले ली थी इसलिए उसके दोष क्षमा कर दिए गए और हमने जानकर तथा स्वार्थ से उसके दोषों का विचार नहीं किया। २४ वीं को खानखानाँ के पुत्रगण जो उसके पीछे पीछे आरहे थे, सेवा में उपस्थित हुए और पच्चीस सहस्र रुपयों की भेंट दिया। उसी दिन उक्त खाँ ने नव्वे हाथी भेंट किए। बृहस्पति वार १ जमादिउस्सानी को मरियमुज्जमानी के गृह पर हमारा सौर मास का तुलादान हुआ। कुछ धन तो हमने स्त्रियों में वितरित कर दिया और बचे हुए के लिए आदेश दिया कि पैतृक

राज्यों के गरीबों में बाँट दिया जाय। इसी महीने की ४ थी को हमने दीवानों को आज्ञा दी कि खानआजम को सात सहस्र रुपयों की जागीर दें।

इसी दिन एक दुधार हरिणी लाई गई, जो सुगमता से दूध दुह लेने देती थी और चार सेर दूध देती थी। हमने ऐसा कभी पहले देखा-सुना नहीं था। हरिणी, गाय तथा भैंस के दूध किसी प्रकार भिन्न नहीं होते। कहते हैं कि क्षय रोग में यह दूध लाभदायक होता है। इसी महीने की ११ वीं को राजा मानसिंह ने दक्षिण की सेना ठीक करने जहाँ वह नियुक्त हुआ था और स्वदेश आमेर जाने के लिए छुट्टी माँगी। हमने उसे हुशियार मस्त नामक हाथी तथा छुट्टी दे दी। सोमवार १२ वीं को विगत सम्राट् अकबर की वार्षिक मृत्यु-तिथि थी और उस अवसर के साधारण व्यय के सिवा, जो अलग अलग निश्चित थे, हमने चार सहस्र रुपए उक्त पवित्रात्मा के मकबरे के फकीरों तथा दरवेशों में वितरित करने के लिए भेजे। उसी दिन हमने खानआजम के पुत्र अब्दुल्ला को सर्फराज खाँ की पदवी तथा कासिम खाँ के पुत्र अब्दुर्रहीम को तरबियत खाँ की पदवी दी। मंगलवार १३ वीं को हमने खुसरू की पुत्री को बुलाया और उसे अपने पिता के समान इस प्रकार पाया जैसा किसी ने भी नहीं देखा था। ज्योतिषियों ने कहा था कि इसका जन्म अपने पिता के लिए शुभ नहीं है पर हमारे लिए शुभ था। अंत में ज्ञात हुआ कि उन लोगों ने जो भविष्य बतलाया था वह ठीक निकला। उन्होंने कहा था कि तीन वर्ष के अनंतर उसे देखिएगा। उस अवस्था के पार करने पर हमने उसे देखा।

इसी महीने की २१ वीं को खानखानाँ ने निजामुल्मुल्क के प्रांत को साफ करने का निश्चय किया जिसमें सम्राट् अकबर की मृत्यु पर

कुछ उपद्रव उठ खड़े हुए थे और उसने हमें लिखा कि 'यदि हम दो वर्ष के भीतर इस सेवा को पूरा न कर दें तो हम दोषी समझे जायँ पर इसी अनुबंध के साथ कि जो सेना इस प्रांत में नियत है उसके सिवा बारह सहस्र सवार दस लाख रुपए के साथ भेजे जायँ।' हमने सेना का सामान तथा धन शीघ्र एकत्र कर वहाँ भेजने का आदेश दे दिया। २६ वीं को अहदियों का बख्शी मुखलिस खाँ दक्षिण प्रांत का बख्शी नियत हुआ और उसका पद मीर बहर इब्राहीम हुसेन खाँ को दिया गया। १८ रजब को पेशरौखाँ तथा कमाल खाँ मर गए, जो निरंतर हमारी सेवा में उपस्थित रहते थे। शाह तहमास्प ने पेशरौ खाँ को हमारे दादा को दास रूप में दिया था और इसका नाम सआदत था। जब इसे अकबर के समय उन्नति मिली तथा फर्राशखाने का दारोगा तथा निरीक्षक नियत हुआ तब इसने पेशरौ खाँ की पदवी पाई। यह इस कार्य से इतना परिचित था कि कहा जा सकता है कि यह उसके शरीर पर सिला हुआ है। जब यह नव्वे वर्ष का था तब भी चौदह वर्ष के लड़के से तेज था। यह उसका सौभाग्य था कि उसने हमारे दादा, हमारे पिता तथा हमारी सेवा की। जब तक इसने अंतिम स्वाँस नहीं लिया यह एक क्षण भी बिना मदिरा के नशे के नहीं रहा। शैर—

'फ़ुग़ानी' मदिरा से लिपटा हुआ धूल में मिल गया।

शोक! यदि फरिश्ते ने उसके नए कफन को सूँघा होता॥

इसने पंद्रह लाख रुपए छोड़े। इसे रिआयत नाम का एक मूर्ख पुत्र था। इसके पिता की पुरानी सेवाओं का विचार करके हमने इसे आधे फर्राशखाने का कार्य सौंपा और आधे का तुखयाक खाँ को। कमालखाँ एक दास था जो हमारी सेवा में बहुत सच्चा था और जाति से दिल्ली का एक कलाल था। इसने जो ईमानदारी तथा विश्वासपात्रता

दिखलाई थी उससे हमने इसे वकावलवेगी नियत कर दिया। ऐसे नौकर कम मिलते हैं। इसे दो पुत्र थे, जिन पर हमने बड़ी कृपा दिखलाई पर उसके समान दूसरे कहाँ मिलते हैं। उसी महीने की दूसरी को लाल कलावंत, जो हमारे पिता की सेवा में बचपन से बड़ा हुआ था और जिसे उन्होंने हिंदी भाषा का सब कुछ उच्चारण आदि सिखलाया था, पैंसठवें या सत्तरवें वर्ष में मर गया। इस पर इसकी एक रखेली ने अफीम खाकर जान दी। मुसलमानों में स्त्रियाँ ऐसा पातिव्रत्य बहुत कम दिखलाती हैं।

हिंदुस्तान में, विशेषकर सिलहट में; जो बंगाल के अधीनस्थ है, यह प्रथा उधर के लोगों में थी कि वे अपने कुछ पुत्रों को हिंजड़ा बना देते थे और कर के बदले में उन्हें दे देते थे। यह प्रथा क्रमशः अन्य प्रांतों में चल निकली और प्रति वर्ष कितने लड़के नष्ट तथा सृजन-शक्ति से हीन हो जाते हैं। यह प्रथा साधारण हो रही थी इसलिए हमने आज्ञा निकाली कि यह प्रथा बंद कर दी जाय और युवा हिंजड़ों का व्यापार छोड़ दिया जाय। इस्लामखाँ तथा बंगाल प्रांत के अन्य शासकों को फर्मान भेजा गया कि जो लोग ऐसा काम करें उन्हें प्राणदंड दिया जाय और अल्पावस्था के हिंजड़े जिस किसी के अधिकार में हों छीन लिए जायँ। पहले के किसी बादशाह ने ऐसी सफलता नहीं प्राप्त की थी। ईश्वर की कृपा है कि थोड़े ही समय में यह अनुचित प्रथा पूर्ण रूप से बंद हो जायगी और इस कारण कि यह व्यापार रोक दिया गया है कोई भी ऐसा अनुचित तथा लाभ हीन कार्य नहीं करेगा।

हमने खानखानाँ को एक लाल-भूरा घोड़ा उपहार में दिया, जो शाह अब्बास के भेजे हुए घोड़ों में से था और हमारे घुड़साल का

सिरमौर था। वह इसे पाकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसका वर्णन करना कठिन है। वास्तव में इतना बड़ा तथा सुंदर घोड़ा हिंदुस्तान में बहुत ही कम आया है। हमने फुतूह हाथी भी, जो लड़ने में अद्वितीय था, बीस अन्य हाथियों के साथ उसे दिया। किशनसिंह[1] (कृष्णसिंह) ने, जो महाबतखाँ के साथ गया था, अच्छी सेवाएँ की थीं और राणा के युद्ध में भाले से उसके पैर में चोट लगी थी तथा जिसमें शत्रु के बीस सर्दार मारे गए और तीन सहस्र मनुष्य पकड़े गए थे इसलिए उसे दो हजारी १००० सवार का मंसब दिया। उसी महीने की १४ वीं को हमने मिर्जा गाजी को कंधार जाने की आज्ञा दी। यह एक विचित्र घटना हुई कि ज्योंही उक्त मिर्जा बक्खर से उस प्रांत की ओर चला उसी समय कंधार के अध्यक्ष सर्दार खाँ की मृत्यु का समाचार आया। सर्दार खाँ हमारे पितृव्य मुहम्मद हकीम के स्थायी तथा अंतरंग सेवकों में से था और तुख्तः बेग के नाम से प्रसिद्ध था। हमने उसके पुत्रों को उसका आधा मंसब दिया।

मंगलवार १७ वीं को हम पैदल अपने पिता के मकबरे को देखने गए। यदि संभव होता तो हम उतना मार्ग अपने भवों से या सिर से जाते। हमारे पिता हमारा जन्म होने पर पैदल ही ख्वाजा मुईनुद्दीन संजरी चिश्ती के मकबरे की जियारत को फतेहपुर से अजमेर तक, जो एक सौ बीस कोस दूरी पर है, गए थे। यदि हम इतने दूर सिर-आँखों से जाते तो क्या था? जब हमें इस पवित्र यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ तब हमने कब्रिस्तान पर बनी इमारत देखा परंतु हमें वह हमारी इच्छा के अनुकूल नहीं ज्ञात हुई। हमारी इच्छा थी कि मार्ग चलनेवाले

---

१. खुर्रम का सब से छोटा मामा (इलि० डा० भा० ६ पृ० ३१६)

उसे देखकर यह कहें कि ऐसी इमारत हमने अन्यत्र संसार में कहीं नहीं देखी है। इसका कारण यह हुआ कि जिस समय यह बन रहा था उस समय अभागे खुसरू की घटना घटी और हम लाहौर चले गए तथा कारीगरों ने उसे अपने मनके अनुसार बना डाला। फलतः सारा धन व्यय भी होगया और तीन-चार वर्ष बनने में लग गए। हमने आज्ञा दी कि अनुभवी कारीगर अन्य अनुभवी लोगों की सम्मति से निश्चित ढंग पर कई स्थानों में नींव डालें। क्रमशः एक बड़ी ऊँची इमारत बनी और उस मकबरे के चारों ओर खुलता हुआ उद्यान लग गया तथा एक बड़ा एवं ऊँचा फाटक श्वेत प्रस्तर के मीनारों के साथ बन गया। कुल ऊँची इमारतों पर पंद्रह लाख रुपए, कहते हैं कि, व्यय हुए, जो एराक के पचास सहस्र तूमान तथा तूरान के पैंतालीस लाख खानी के बराबर होता है।

रविवार २३ वीं को हम दरबारियों के एक झुंड के साथ हकीम अली के गृह पर उस बावली को देखने गए, जिसे नहीं देखा था और जैसा हमारे पिता के समय लाहौर में बना था। यह छ गज लंबी तथा छ गज़ चौड़ी थी। इसके पास एक खूब प्रकाशित कमरा बना था, जिसका मार्ग जल में से था पर जल भीतर नहीं जाता था। उसके भीतर दस-बारह मनुष्य बैठ सकते थे। हकीम अली के पास जो धन या रत्न एकत्र हुआ था उसी में से उसने भेंट दिया। उस कमरे को देखकर और बहुत से दरबारियों के उसमें जाने पर हमने उसे दो हजारी मंसब प्रदान किया और महल लौट आए। रविवार १४ वीं शाबान को खानखानाँ को कमर के लिए जड़ाऊ तलवार, खिलअत तथा खास हाथी देकर दक्षिण जाने की आज्ञा दी। राजा सूरजसिंह भी उसी कार्य पर जा रहा था इसलिए उसका मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया।

हमें फिर समाचार मिला कि मुर्तजाखाँ के भाईगण तथा अनुयायीगण अहमदाबाद गुजरात की प्रजा तथा मनुष्यों पर अत्याचार कर रहे हैं और वह अपने संबंधियों तथा साथ वालों को रोकने में असमर्थ है तब हमने वह प्रांत उससे लेकर आजमखाँ को दिया तथा यह भी निश्चय हुआ कि आजमखाँ दरबार में रहेगा और उसका पुत्र जहाँगीर कुली खाँ उसका प्रतिनिधि होकर वहाँ जायगा। जहाँगीर कुलीखाँ को तीन हजारी २५०० सवार का मंसब दिया गया। यह भी आदेश हुआ कि वह मोहनदास दीवान तथा मसऊद वेग हमजानी बख्शी के साथ मिलकर प्रांत का शासन-कार्य करेगा। मोहनदास को आठसदी ५०० सवार का तथा मसऊदवेग को तीन सदी १५० सवार का मंसब दिया गया। निजी सेवक तरबियतखाँ को सात सदी ४०० सवार का मंसब दिया और यही नसरुल्ला को भी। मेहतर खाँ, जिसका विवरण दिया जा चुका है, इसी समय मर गया और इसके पुत्र मूनिसखाँ को पाँच सदी १३० सवार का मंसब दिया। बुधवार ४ जीहिजा को खानआजम की लड़की से खुसरू को पुत्र हुआ, जिसका नाम बुलंद अख्तर हमने रखा। उसी महीने की ६ वीं को मुकर्रब खाँ ने एक चित्र भेजा कि यह फिरंगियों के विश्वास में तैमूर का चित्र है। यह बतलाया गया कि विजयी सेना द्वारा यिलदुम बायजीद पकड़ा गया। एक ईसाई ने, जो उस समय कुस्तुन्तुनिया का शासक था, एक एलची भेंटों के साथ अपनी अधीनता तथा सेवा प्रगट करने के लिए भेजा था और उसीके साथ एक चित्रकार भी भेजा गया था, जिसने उसका चित्र बनाया तथा लाया था। यदि यह कहानी सच्ची है तो इससे अच्छी भेंट हमारे लिए कौन हो सकती थी परंतु यह चित्र उसके किसी वंशज से नहीं मिलती थी इसलिए इस विवरण की सचाई पर हमें संतोष नहीं हुआ।

चौथा जलूसी वर्ष

संसार को प्रकाशमान करनेवाले उस विशाल नक्षत्र के मेष राशि में १४ ज़ीहिज्जा सन् १०१७ हि० (२१ मार्च[1] सन् १६०९ ई०) को पहुँचने पर नववर्ष-दिवस, जिसने संसार को उज्ज्वल बनाया, शुभ साइत में तथा आनंद के साथ आरंभ हुआ।

शुक्रवार ५ मुहर्रम सन् १०१८ हि० को हकीम अली मर गया। यह अद्वितीय हकीम था और अरबी विज्ञानों से इसने बहुत लाभ उठाया था। इसने हमारे पिता के समय एक अरबी ग्रंथ पर टीका लिखी थी। इसमें अध्यवसाय बुद्धिमत्ता से अधिक था जिस प्रकार इसका स्वरूप इसकी प्रकृति से अच्छा था तथा इसका अनुशीलन इसकी मेधाशक्ति से बढ़कर था। सब मिलाकर यह दुष्ट हृदय तथा बुरे स्वभाव का था। २० सफर को हमने मिर्ज़ा बरखुरदार को खानआलम की पदवी दी। फतेहपुर के पास से इतना बड़ा तरबूज लाया गया, जैसा हमने नहीं देखा था। हमने उसे तौलने की आज्ञा दी और वह तैंतीस सेर निकला। सोमवार १९ रबीउल् अव्वल को वार्षिक चाँद्र तुलादान हमारी माता के महल में हुआ, जिसका कुछ अंश उन स्त्रियों में बाँटा गया, जो उस जलसे में उपस्थित थीं।

जैसा कि प्रगट में ज्ञात होने लगा कि दक्षिण प्रांत का कार्य चलाने के लिए यह आवश्यक है कि एक शाहजादा वहाँ भेजा जाय तब हमारे मन में आया कि पुत्र पर्वेज को वहाँ भेजें। हमने आज्ञा दी कि उसका सामान भेजें तथा शुभ साइत जाने की निश्चित करें। हमने महाबतखाँ को दरबार बुलाया, जो विद्रोही राणा के विरुद्ध भेजी गई सेना का अध्यक्ष नियत था, कि यहाँ का कुछ कार्य करे और उसके स्थान पर अब्दुल्लाखाँ को फीरोज़जंग की पदवी देकर नियत किया। हमने

१. इलि० डा० भाग ६ पृ० ३२० पर ११ मार्च लिखा है।

अब्दुर्रज्ज़ाक बख्शी को सेना के कुल मंसबदारों के पास इस आज्ञा के साथ भेजा कि वे उक्त खाँ की आज्ञाओं के विरुद्ध कोई कार्य न करें और उसके धन्यवाद तथा दोष देने पर ध्यान दें। ४ जमादिउल्अव्वल को एक गड़ेरिया एक बकरा ले आया, जिसे मादा के समान थन थे और प्रतिदिन इतना दूध देता था कि एक प्याला कहवा बन सकता था। दूध अल्लाह की कृपाओं में से एक है और बहुत से जीवों को यह पालता है इसलिए हमने इस विचित्र बात को शुभ सगुन समझा। उसी महीने की ६ वीं को हमने खानआजम के पुत्र खुर्रम को दो हजारी १५०० सवार का मंसब देकर सोरठ (सौराष्ट्र) प्रांत के शासन पर भेजा, जिसे जूनागढ़ कहते हैं। हमने हकीम सदरा को मसीहुज्ज़माँ की पदवी[1] तथा पाँच सदी ३० सवार का मंसब प्रदान किया। १६ वीं को राजा मानसिंह को जड़ाऊ कमरबंद सहित तलवार भेजी गई। २२ वीं को दक्षिण की सेना के व्यय के लिए बीस लाख रुपये दिए जो पर्वेज के साथ भेजी जा रही थी और दूसरे कोषाध्यक्ष को पाँच लाख रुपये पर्वेज के निजी व्यय के लिए अलग दिए गए। बुधवार २५ वीं को जहाँदार, जो इसके पहले कुतुबुद्दीनखाँ कोका के साथ बंगाल में नियत हुआ था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। हमें ज्ञात हुआ कि वस्तुतः यह जन्मतः मुल्ला है। दक्षिण की तैयारी में हमारा मन लगा हुआ था इसलिए हमने १म जमादिउल् आखिर को अमीरुल्उमरा को भी उसी कार्य पर नियत किया। इसे खिलअत तथा एक घोड़ा देकर सम्मानित किया।[2] जगन्नाथ के पुत्र कर्मचंद का

---

१. इलि० डा० भा० ६ पृ० ४४८ पर लिखा है कि खुसरू की आँख ठीक करने से यह पुरस्कृत हुआ था।

२. आसफ खाँ पर्वेज का अभिभावक बनाकर भेजा गया था, [illegible]

मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया और उसे पर्वेज के साथ भेजा। उसी महीने की ४ थी तारीख को तीन सौ सत्तर सवार अहदी अब्दुल्लाखाँ के साथ नियत किए गए कि राणा के विरुद्ध भेजी गई सेना की सहायता करें। सरकारी घुड़साल से सौ घोड़े भी भेजे गए कि जिन मंसबदारों तथा अहदियों को उपयुक्त समझे दे।

उसी महीने की सत्रहवीं को हमने साठ सहस्र रुपये मूल्य का एक लाल पर्वेज को तथा चालीस सहस्र रुपये मूल्य का एक लाल तथा दो मोती खुर्रम को दिया। सोमवार २८ वीं को जगन्नाथ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ३००० सवार का कर दिया। ८ वीं रज्जब को राय जयसिंह का मंसब बढ़ाकर चार हजारी ३००० सवार का कर दिया और दक्षिण के कार्य पर भेज दिया। बृहस्पतिवार ६ को शाहजादा शहरयार गुजरात से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। मंगलवार १४ को दक्षिण प्रांत विजय करने के लिए हमने पर्वेज को विदा कर दिया। उसे खिलअत, खास घोड़ा, खास हाथी, एक तलवार और एक जड़ाऊ खंजर दिया। दक्षिण की चढ़ाई पर पर्वेज के साथ रहने के लिए एक सहस्र अहदी नियत किए। उसी दिन अब्दुल्लाखाँ के यहाँ से समाचार आया कि विद्रोही राणा का पार्वत्य प्रांत तथा बीहड़ स्थानों में पीछा करते हुए उसके बहुत से हाथी तथा घोड़े पकड़े गए। रात्रि होने पर वह कठिनाई के साथ अपना प्राण बचाकर भाग गया। उस पर कोई कार्य करना कठिन हो पड़ा है इसलिए आशा है कि वह शीघ्र ही पकड़ा या मारा जायगा। हमने उक्त खाँ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी कर दिया। दस सहस्र रुपए मूल्य की मोती की एक माला हमने पर्वेज को दी। उक्त पुत्र को हमने खानदेश तथा बरार का प्रांत दे दिया था इसलिए असीरगढ़ भी उसे दे दिया और तीन सौ घोड़े उसके साथ भेजे कि वह उन्हें जिन अहदियों तथा मंसबदारों को

अपने कृपा के योग्य समझे देवे। २६ को सैफखाँ बारहा को ढाई हजारी १३५० सवार का मंसब देकर हिसार सरकार का फौजदार नियत किया।

सोमवार ४ शाबान को वजीरखाँ को एक हाथी दिया। शुक्रवार २२ को हमने आदेश दिया कि भाँग तथा बूजा (चावल की मदिरा) अस्वास्थ्यकर है इसलिए बाजार में न बेंची जाय और जूआ बंद कर दिया जाय। इस संबंध में हमने कठोर आज्ञा प्रचलित की। २५ को हमारी निजी जंतुशाला से एक शेर एक साँड़ से लड़ने के लिए लाया गया। बहुत से लोग यह तमाशा देखने को इकट्ठे हो गए, जिनमें एक झुंड जोगियों का भी था। एक जोगी नंगा था और शेर खिलवाड़ में क्रोध में नहीं उसकी ओर घूमा तथा उसे भूमि पर गिराकर उसके साथ वही करने लगा जो मादा के साथ किया जाता है। उस दिन और अन्य कई अवसरों पर यही बात हुई। ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गई थी और बड़ी विचित्र थी इसलिए यह लिख दी गई[1]। २ रमजान को इस्लामखाँ की प्रार्थना पर गियास खाँ[2] का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ८०० सवार का कर दिया। फरेदूँ खाँ का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी २००० सवार का कर दिया। जिस दिन सूर्य वृश्चिक राशि में गए और हिंदुओं के विचार में जिसे संक्रांति कहते हैं उस दिन एक सहस्र तोला सोना तथा चांदी और एक सहस्र रुपए दान में दिए गए। उस महीने की १० वीं को हमने एक एक हाथी शाह बेग यूज़ी

१—इकबाला नामा पृ० ३७ पर यह बात लिखी गई है और लिखा है कि यह लालखाँ नामक पालतू शेर था जिसे किसी कलंदर ने भेंट में दिया था।

तथा सलामुल्ला अरब को, जो दारफुल के शासक मुबारक का संबंधी तथा योग्य युवक था, दिया। किसी शंका के कारण, जो शाह अब्बास को इसके प्रति थी, यह हमारी सेवा में चला आया। हमने इसे शरण दी और चार सदी २०० सवार का मंसब दिया। पुनः हमने एक सौ तिरानबे मंसबदार तथा छिआलीस अहदी पर्वेज के पीछे दक्षिण के कार्य के लिए भेजे। पचास घोड़े भी दरबार के एक सेवक की रक्षा में पर्वेज के पास भेजे गए।

शुक्रवार १३ वीं को कुछ भावना मस्तिष्क में आई और यह गजल बन गई—अर्थ—

हम क्या करें तेरे वियोग के तीर ने कलेजे को चीर डाला है।
तेरा कटाक्ष हम तक न पहुँचकर पुनः दूसरे तक पहुँचे॥
तू घबड़ाया हुआ घूमता है और संसार तेरे लिए घबड़ाया हुआ है।
हम तीव्र सुगंधि जलाते हैं कि तेरी आँखों को आकृष्ट करें॥
हम मित्र के मिलन से घबड़ाए हैं और वियोग से निराश हैं।
उस दुःख के लिए शोक है जिसने हमें निमग्न कर रखा है॥
हम पागल हो रहे हैं कि मिलन के मार्ग पर दौड़ पड़ें।
उस समय के लिए शोक जब समाचार मिला॥
जहाँगीर विनय तथा प्रार्थना का समय प्रत्येक प्रभात है।
हम आशा करते हैं कि प्रकाश का कण प्रभाव डाले॥

रविवार १५वीं को हमने पचास सहस्र रुपए साचक के लिए मुजफ्फर हुसेन मिर्जा की पुत्री के घर भेजा, जिससे हमारे पुत्र खुर्रम की मँगनी हो चुकी थी। मुजफ्फर हुसेन शाह इस्माइल सफवी के पुत्र बहराम मिर्जा के पुत्र सुलतान हुसेन मिर्जा का पुत्र था। इसी महीने की १७वीं को मुबारकखाँ सरवानी को एक हजारी ३०० सवार का मंसब

दिया। पाँच सहस्र रुपए इसे दिए गए और चार सहस्र रुपए हाजी वे उजबेग को। २२वीं को एक लाल तथा एक मोती शहरयार को दिए। एक लाख रुपए एमाकों के व्यय के लिए दिए जो दक्षिण में सेवा पर नियत थे। दो सहस्र रुपए चित्रकार फर्रुखबेग को दिए जो अपने समय में अद्वितीय है। बाबा हसन अब्दाल पर व्यय करने के लिए चार सहस्र रुपए भेजे गए। एक सहस्र रुपए मुल्ला अली अहमद मुहकन और मुल्ला रोजबिहानी शीराजी को दिए गए कि शेख सलीम के उर्स पर व्यय करें, जो उनके मकबरे में होता है। एक हाथी मुहम्मद हुसेन लेखक को और एक सहस्र रुपए ख्वाजा अब्दुल् हक अन्सारी को दिए। हमने आज्ञा दी कि मुर्तजाखाँ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया है, इसलिए उसे जागीर दें। हमने सरकार आगरा के कानूनगो बिहारीचंद को आज्ञा दी कि आगरा के जमींदारों से एक सहस्र पैदल सैनिक तथा सामान लेकर तथा वेतन नियत कर पर्वेज के पास दक्षिण भेज दे और पाँच लाख रुपए अधिक पर्वेज के व्यय के लिए निश्चित किए। बृहस्पतिवार ४ शव्वाल को इस्लाम खाँ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का, अबुल्बली बेग उजबेग का डेढ़ हजारी और जफरखाँ का ढाई हजारी कर दिया। मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदीउज्जमाँ को दो सहस्र रुपए तथा पठान मिश्र को एक सहस्र रुपए दिए। हमने आज्ञा दी कि जिनके मंसब तीन हजारी या इससे ऊँचे हों सबको डंका दें। हमारे तुलादान के रुपयों में से पाँच सहस्र रुपए बाबा हसन अब्दाल के पुल बनाने के लिए और दिए गए और जो इमारत वहाँ है उसे हकीम अबुल्फतह के पुत्र अबुल्वफा को दिया, जिसमें वह प्रयत्न करे तथा पुल और उस इमारत को ठीक अवस्था में रखे।

शनिवार १३ वीं को जब दिन चार घड़ी बच रहा था तब चंद्रमा का ग्रास होना आरंभ हुआ और क्रमशः कुल शरीर ग्रस्त हो गया।

यह पाँच घड़ी रात्रि बीतने तक होता रहा। इसके अशुभ फल को दूर करने के लिए हमने तुलादान किया जिसमें चांदी, सोना, कपड़ा तथा अन्न था और दान में हाथी, घोड़े आदि पशु दिए। इन सबका कुल मूल्य पंद्रह सहस्र रुपए था। इसे हमने योग्य पात्रों तथा गरीबों में बाँट देने की आज्ञा दी। २५ वीं को रामचंद बुंदेला की प्रार्थना पर हमने उसकी पुत्री को अपनी सेवा में लिया। हमने मीर शरीफ के भ्रातुष्पुत्र मीर फ़ाज़िल को एक हाथी दिया, जो कबूला तथा आस-पास की भूमि का फौजदार नियत था। इनायतुल्ला को इनायत खाँ की पदवी दी।

बुधवार १ म ज़िल्क़द: को बिहारीचंद को पाँच सदी ३०० सवार का मंसब मिला। एक खपवा;रत्न जड़ा हुआ, हमारे पुत्र बाबा खुर्रम को दिया गया। हमने मुल्ला हयाती द्वारा खानखानाँ के पास पत्र तथा मौखिक संदेश अपनी कृपाओं तथा स्नेह का भेजा था और उसने उसके द्वारा बीस सहस्र रुपए मूल्य का एक लाल तथा मोतियाँ भेजीं। मीर जमालुद्दीन हुसेन, जो बुर्हानपुर में था और जिसे हमने बुला भेजा था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। हमने शुजाअत खाँ दक्खिनी को दो सहस्र रुपए दिए। उसी महीने की ६ को पर्वेज के बुर्हानपुर पहुँचने के पहले खानखानाँ तथा अन्य सर्दारों का प्रार्थनापत्र आया कि दक्खिनी सब इकट्ठे होकर उपद्रव कर रहे हैं। जब हमने देखा कि पर्वेज तथा उसके साथ भेजी गई सेना के उसी कार्य पर नियत होते हुए भी उन्हें अभी और भी सहायता की आवश्यकता है तब हमने सोचा कि हमें स्वयं वहाँ जाना चाहिए और अल्ला की कृपा से उस कार्य से अपना संतोष कर लेना चाहिए। इसी बीच आसफ खाँ का भी एक प्रार्थनापत्र आया कि हमारा वहाँ जाना नित्य बढ़ते हुए साम्राज्य के विस्तार के लिए लाभदायक है। आदिल खाँ के पास बीजापुर से भी एक प्रार्थना-

पत्र आया कि यदि दरबार का कोई विश्वासपात्र सर्दार नियत होकर यहाँ आवे, जिससे वह अपनी इच्छाएँ तथा स्वत्व कह सके और जो उन्हें हमारे तक पहुँचा सके तो बहुत कुछ आशा है कि उससे उन लोगों का लाभ हो। इस पर हमने अमीरों तथा राजभक्त मनुष्यों से सम्मति ली और कहा कि जो उन्हें समझ में आवे उसे कहें। हमारे पुत्र खानजहाँ ने कहा कि जब इतने सरदार दक्षिण की चढ़ाई पर गए हैं तब आप का वहाँ जाना आवश्यक नहीं है। यदि उसे आज्ञा हो तो वह स्वयं वहाँ जाय और शाहजादे की सेवा में रहते हुए यह कार्य पूरा करे। उसकी बात का सभी राजभक्तों ने समर्थन किया। हम उसका वियोग कभी ध्यान में भी नहीं लाए थे परन्तु कार्य महत्वपूर्ण था इसलिए हमने आवश्यकतावश आज्ञा दे दी और आदेश दिया कि ज्योंही कार्य का प्रबंध ठीक हो जाय त्योंही वह बिना देर किए लौट आवे तथा एक वर्ष से अधिक उस ओर न रहे। मंगलवार १७ जिलूकदा को वह जाने को तैयार हो गया और हमने उसे एक खास कार चोबीका खिलअत, जड़ाऊ जीन सहित खास घोड़ा, जड़ाऊ तलवार तथा खास हाथी दिया। हमने उसे तूमान तोग़ भी दिया। हमने अपने एक विश्वासपात्र नौकर फिदाखाँ को, जिसे एक खिलअत, एक घोड़ा तथा व्यय दिया और जिसका मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया था, खानजहाँ के साथ भेजा कि यदि आवश्यकता हो कि किसी को आदिल खाँ के पास उसीकी प्रार्थना पर भेजा जाय तो वह इसे भेजे। लंकू पंडित जो सम्राट् अकबर के समय में आदिल खाँ के यहाँ से भेंट लेकर आया था उसे भी एक घोड़ा, खिलअत तथा धन देकर खानजहाँ के साथ भेजा। राणा की चढ़ाई पर अब्दुल्ला खाँ के साथ गए हुए अमीरों तथा सेनानियों में से कुछ सर्दार जैसे राजा वीरसिंह देव, शुजाअत खाँ, राजा विक्रमाजीत आदि चार-पाँच सहस्र सवारों के साथ खानजहाँ की सहायता को नियत किए गए।

हमने मोतमिद खाँ को सजावल बनाकर भेजा कि वह खानजहाँ के साथ उज्जैन में काम करे। महल के खास मनुष्यों में से हमने छ-सात सहस्र सवार उसके साथ भेजा जैसे सैफ खाँ बारहा, हाजी वे उजवेग, मुबारक अरब का भतीजा सलामुल्ला अरब तथा अन्य मंसबदार एवं दरबारी थे। मुबारक अरब जूत्रा तथा दारफुल प्रांत एवं आसपास की भूमि पर अधिकृत था। इन सबको जाने के समय हमने मंसब में उन्नति, खिलअत तथा व्यय के लिए धन दिए। इस सेना का बख्शी बनाकर मुहम्मद वेग को दस लाख रुपए देकर साथ ले जाने की आज्ञा दी। हमने पर्वेज के लिए एक खास घोड़ा तथा खानखानाँ और अन्य अमीरों एवं अध्यक्षों के लिए, जो उस प्रांत में नियत थे, खिलअत भेजे।

यह सब प्रबंध निपटाकर हम अहेर के लिए नगर से निकले। एक सहस्र रुपए मीर अली अकबर को दिए। रबी की फस्ल आगई थी इसलिए इस भय से कि सेना के चलने से प्रजा की खेती को किसी प्रकार की हानि न पहुँचे और एक कोर-यसावल के नियुक्त किए जाने पर भी, जो अहदियों के झुंड के साथ खेतों की रक्षा करता चलता था, हमने कुछ आदमी नियत किए कि यदि वे प्रजा की हानि हुई पावें तो पड़ाव-पड़ाव पर उन्हें उनकी क्षति दे देवें। हमने खानखानाँ की पुत्री तथा दानियाल की स्त्री को दस सहस्र रुपए, अब्दुर्रहीम खैर को व्यय के लिए एक सहस्र रुपए और ख्वाजा दक्खिनी को एक सहस्र रुपए दिए। १२ वीं को अब्दुल्ला खाँ के भाई खंजर खाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया और दूसरे भाई बहादुरखाँ को छ सदी २०० सवार का मंसबदार बना दिया। इसी दिन सींघोंवाले दो हरिण तथा एक हरिणी पकड़ी गई। १३ वीं को हमने खानजहाँ के लिए एक खास घोड़ा भेजा। हमने मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदीउज्जमाँ का मंसब बढ़ा-

कर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया और उसे खानजहाँ के साथ कार्य करने के लिए दक्षिण भेज दिया। इस दिन दो हरिण तथा तीन हरिणी मारी गईं। बुधवार १० वीं को हमने बंदूक से एक मादा नीलगाय तथा एक काले मृग को मारा और १५ वीं को एक मादा नीलगाय तथा एक चिकारा को। उसी महीने की सत्रहवीं को जहाँगीर कुली खाँ गुजरात से दो लाल तथा एक मोती हमारे पास ले आया और एक जड़ाऊ अफीम का डिब्बा भी, जिसे मुकर्रब खाँ ने खंभात बंदर से भेजा था। २० वीं को हमने बंदूक से एक शेरनी तथा एक नीलगाय मारा। शेरनी के साथ दो बच्चे भी थे पर वे घने जंगल तथा वृक्षों की गहनता के कारण दृष्टि से ओझल हो गए। हमने उन्हें खोजने तथा ढूँढ़कर लाने की आज्ञा दी। जब हम अपने ठहरने के स्थान पर पहुँचे तब खुर्रम एक को ले आया और दूसरे दिन महाबत खाँ दूसरे को पकड़ लाया। २२ वीं को ज्योंही हम नीलगाय पर मार के पास पहुँचे थे कि एकाएक एक जिलौदार तथा दो कहार आ गए और नील गाय निकल गई। हमने बड़े क्रोध में जिलौदर को उसी स्थान पर मार डालने की आज्ञा दे दी और दोनों कहारों को उनके पावों की नसें काटकर तथा गधे पर बिठाकर कंप में घुमाने का आदेश दिया, जिसमें कोई ऐसा करने का साहस न करे। इसके अनंतर हम घोड़े पर सवार हुए और बाज़ तथा शाहीन से शिकार खेलते हुए अपने निवास-स्थान पर गए।

दूसरे दिन इसकंदर मुईन के मार्ग-प्रदर्शन में हमने एक भारी नीलगाय को गोली से मारा और उसका मंसब बढ़ाकर छ सदी ५०० सवार का कर दिया। शुक्रवार २४ वीं को सफदर खाँ बिहार प्रांत से आकर तथा सिज्दा करके सौभाग्यान्वित हुआ। इसने एक सौ मुहर, एक तलवार, पाँच हथिनी तथा एक हाथी भेंट में दिया।

ाथी स्वीकार किया गया। उसी दिन समरकंद का यादगार ख्वाजा लूख से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक चित्र-पुस्तक, कुछ ोड़े तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में दीं और खिलअत पाकर सम्मानित ुआ। बुधवार ६ ज़िल्हिज्जा को मुईज्जुलमुल्क, जो राणा की चढ़ाई र गई हुई सेना के बख्शी के पद से हटा दिया गया था, बीमार तथा ुःखी हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। उसी महीने की १४ वीं को अब्दुर्रहीम खर के दोषों को क्षमा कर उसे यूजबाशी अर्थात् एक सदी २० सवार का मंसबदार बनाकर कश्मीर जाने की आज्ञा दी कि वहाँ े बख्शी से मिलकर कुलीज खाँ तथा सभी जागीरदारों एवं एमाकों की ेना को, जो सरकारी सेवा में हों या न हों, एकत्र कर सूची बना ावे। कुतुबुद्दीन खाँ का पुत्र किश्वर खाँ रोहतास दुर्ग से आया और ेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

पाँचवाँ जलूसी वर्ष

रविवार २४ ज़ीहिज्जा (२० मार्च[1] सन् १६१० ई०) को दो हर तीन घड़ी बीतने पर सूर्य मेष राशि में पहुँचे, जो सम्मान तथा ौभाग्य का स्थान है और इसी शुभ घड़ी में नववर्ष-दिवस के उत्सव का ारी पर्गना के एक ग्राम बाकभल में प्रबंध हुआ। अपने पिता के ्रचलित नियम के अनुसार हम उसी समय सिंहासन पर बैठे। उसी व वर्ष-दिवस को, जब प्रातः काल ने संसार को प्रकाशमान किया

---

१. इलि० डाउ० भा० ६ पृ० ३२१ पर सन् १०१८ हि० तथा तारीख १० मार्च दिया है।

और जो हमारे पाँचवें जलूसी वर्ष की १म फरवरदीन के समान है, हमने साधारण दरबार किया तथा सभी सर्दार एवं दरबारीगण को सम्मान करने का सौभाग्य मिला। कुछ बड़े सर्दारों की भेंटें हमारे सामने उपस्थित की गईं। खानआजम ने चार सहस्र रुपए मूल्य का एक मोती, मीरान सदरजहाँ ने अट्ठाईस बाज़ तथा शाहीन एवं अन्य वस्तुएँ, महाबत खाँ ने दो फिरंगी पेटियाँ जिनकी बगलें शीशे की थीं कि उनमें जो कुछ रखा जाय वे बाहर से इस प्रकार देखी जा सकें कि उन दोनों के बीच में कुछ नहीं है यह कहा जा सके और किशवर खाँ ने बाईस हाथी तथा हथिनी भेंट दी। इसी प्रकार दरबार के प्रत्येक सेवक ने भी अपनी अपनी भेंटें तथा वस्तुएँ हमारे सामने उपस्थित कीं। फतहुल्ला शरबची का पुत्र नसरुल्ला इन भेंटों की रक्षा पर नियत हुआ। हमने सारंग देव के द्वारा, जो दक्षिण की विजयी सेना तक आज्ञाएँ पहुँचाने पर नियत हुआ था, पर्वेज तथा प्रत्येक अध्यक्ष के लिए (तबर्रुक) प्रसाद भेजे। गाजी खाँ बदख्शी के पुत्र हुसामुद्दीन को, जिसने दरवेशों की चाल तथा एकांत-सेवन ग्रहण कर लिया था, एक सहस्र रुपए तथा फर्जी दुशाला दिया।

नव वर्ष दिवस के दूसरे दिन हम शेर के शिकार के लिए घोड़े पर सवार होकर चले। दो शेर तथा एक शेरनी मारी गई। हमने उन अहदियों को पुरस्कृत किया जिन्होंने शेरों के पास तक जाने का साहस किया था और उनका वेतन बढ़ा दिया। उसी महीने की २६ को हम अधिकतर नीलगाय के अहेर में लगे रहे। हवा गर्मी लिए हुए थी और आगरा पहुँचने की साइत पास आ गई थी इसलिए हम रूपवास गए और उसी स्थान के आस-पास कई दिन तक हरिण का अहेर खेलते रहे। शनिवार १म मुहर्रम सन् १०१९ हि० को रूप खवास ने, जिसने रूपबास का स्थापन किया था, अपनी तैयार की हुई भेंट

उपस्थित की। जो वस्तु पसंद आई वह स्वीकार कर ली गई और बची हुई उसे पुरस्कार में लौटा दी गई। इसी समय बंगाल प्रांत से आए हुए बायजीद मंगली तथा उसके भाईगण सेवा में उपस्थित हो सम्मानित हुए। सैयद कासिम बारहा का पुत्र सैयद आदम अहमदाबाद से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक हाथी भेंट दी। मुल्तान प्रांत की फौजदारी ताजखाँ के स्थान पर वली बे उजबेग को दी गई।

९ वें वर्ष के २ मुहर्रम सोमवार को हम मंदाकर उद्यान में उतरे, जो नगर के पास में है। नगर में जाने की शुभ साइत के दिन सवेरे एक प्रहर दो घड़ी बीतने पर हम घोड़े पर सवार हो बस्ती के आरंभ तक गए और जब उस तक पहुँच गए तब हाथी पर सवार हुए, जिसमें सब लोग दूर तथा पास के अच्छी प्रकार देख सकें। मार्ग में दोनों ओर सिक्के लुटाते हुए ज्योतिषियों के बतलाए हुए समय पर दोपहर के बाद स्वागतों तथा मुबारकबादियों के बीच राजमहल में पहुँच गए। नौरोज के साधारण प्रथा के अनुसार हमने आज्ञा दे दी थी कि राजमहल को सजा देंगे, जो आसमानी दरबार के समान है। सजावट देखने के अनंतर ख्वाजाजहाँ ने अपनी प्रस्तुत की हुई भेंट उपस्थित की। आभूषणों, रत्नों, वस्त्रों तथा वस्तुओं में से जो पसंद आई उसे स्वीकार कर लिया और बचा सामान उसे पुरस्कार में दे दिया। अहेर-विभाग के लेखकों को हमने आज्ञा दी कि नगर से जाने और लौटने के बीच जितने पशु अहेर में मारे गए हैं उनका लेखा तैयार करें। उन्होंने बतलाया कि छप्पन दिनों में १३६२ पशु-पक्षी मारे गए जिनमें सात शेर, ७० नर-मादा नीलगाय, ५१ काले मृग, ८२ हरिणी पहाड़ी बकरे हरिण आदि, १२९ कुलंग, मोर, सुर्खाब तथा अन्य पक्षी और १०२३ मछली। शुक्रवार ७ को मुकर्रबखाँ खंभात

तथा सूरत बंदरों से आकर सेवा में उपस्थित हो सम्मानित हुआ। वह रत्नों, जड़ाऊ वस्तुओं, सोने-चाँदी के यूरोप के बने बर्तन तथा अन्य सुंदर असाधारण भेंटों, हब्शी दास-दासियों, अरबी घोड़ों और सब प्रकार की वस्तुओं को जो उसके मन में आया ले आया। इस प्रकार इसकी भेंट की वस्तुएँ ढाई महीने तक हमारे सामने उपस्थित की गईं और हमें बहुत ही पसंद आईं। इसी दिन सफदरखाँ के एक हजारी ५०० सवार के मंसब में पाँच सदी २०० सवार बढ़ाकर तथा एक झंडा प्रदान कर उसे अपनी पहली जागीर पर जाने की छुट्टी दे दी। किशवरखाँ तथा फरेदूँखाँ बर्लास को भी झंडे दिए गए। अफजलखाँ के लिए एक युद्धीय हाथी उसके पुत्र विशूतन को दिया गया कि अपने पिता के पास ले जाय। हमने ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के वंशज ख्वाजा हुसेन को एक सहस्र रुपए दिए, जो हर छमाही को दिया जाता था। खानखानाँ ने भेंट के रूप में 'यूसुफ़ो जुलेखा' (नामक मसनवी पुस्तक) भेजी, जो मुल्ला मीर अली की लिखी हुई, चित्रों सहित सुनहले सुंदर जिल्द में बँधी हुई थी और एक सहस्र मुहर मूल्य की थी। इसे उसके वकील मासूम ने लाकर भेंट की। इस नौ रोज उत्सव के समाप्त होने के दिन तक अमीरों तथा दरबार के सेवकों द्वारा प्रति दिन बहुत सी भेंटें हमारे सामने उपस्थित की जाती रहीं और इनमें जो अलभ्य वस्तुएँ पसंद आती थीं उन्हें ले लेता था और बाकी उन्हीं को लौटा देता था।

बृहस्पतिवार १३ वीं को, जो १९ वीं फरवरदीन है और जिस दिन सूर्य, आनंद तथा प्रसन्नता की समाप्ति होती है, हमने विभिन्न प्रकार के मादक वस्तुओं का जलसा ठीक करने की आज्ञा दी और आदेश दिया कि अमीरगण तथा दरबार के सेवकगण हर एक अपने पसंद का मादक द्रव्य चुन लें। बहुतों ने मदिरा पान किया, कुछ ने ठंढई ली

तथा कुछ ने अफीम की बनी हुई वस्तुओं को खाया। जलसा अच्छी प्रकार हुआ। जहाँगीर कुलीखाँ ने गुजरात से भेंट के रूप में एक चाँदी का सिंहासन भेजा जिस पर मुलम्मा तथा चित्रकारी की हुई थी और नए ढंग तथा रूप का बना हुआ था। एक झंडा महासिंह को भी दिया गया। हमने अपने राज्य के आरंभ में बार बार आज्ञा प्रचारित की थी कि कोई न हिंजड़ा बनावे, न बेंचे व न खरीदे और जो ऐसा करेगा उसे दोषी समझकर दंड दिया जायगा। इसी समय अफजलखाँ ने बिहार प्रांत से कुछ ऐसे दोषियों को दरबार भेजा, जो बराबर यह दुष्ट कार्य किया करते थे। हमने इन नीचों को आजन्म कारावास दिया।

१२ वीं की रात्रि को एक असाधारण तथा विचित्र घटना घटी। दिल्ली के कुछ कव्वाल हमारे सामने गाना गा रहे थे और सैय्यदी शाह विनोद के लिए एक धार्मिक नृत्य कर रहे थे। उस गाने का टेक अमीर खुसरो का यह शेर था—

हर कौम रास्तराहे दीने व किब्लागाहे।
मा किब्ला रास्त करदेम बरतर्फ कज कुलाहे॥

अर्थ—प्रत्येक जाति अपने धर्म तथा पूज्य स्थान के सच्चे मार्ग पर है।
हमने अपना तीर्थ टेढ़ी टोपी वाले की ओर ठीक किया है॥

हमने पूछा कि अंतिम मिसरे का क्या अर्थ है। मुल्ला अली अहमद मोहरकन ने, जो अपने व्यवसाय में अपने समय के अग्रणियों में से था, जिसकी पदवी खलीफा थी, पुराना सेवक था और जिसके पिता से हमने छोटी अवस्था में कुछ सीखा था, आगे बढ़कर कहा कि हमने पिता से सुना है कि एक दिन शेख निजामुद्दीन औलिया तिरछी टोपी पहिरे हुए जमुना नदी के किनारे मुँडेरेदार छत पर बैठे थे और हिंदुओं की उपासना देख रहे थे। उसी समय अमीर खुसरू वहाँ आए

और शेख ने उनकी ओर मुड़कर कहा कि इस झुंड को देख रहे हो और तब यह मिसरा पढ़ा—हर कौम रास्त राहे, दीने व किब्लागाहे।

अमीर ने बिना हिचकिचाहट के विनय के साथ शेख को तस्लीम कर उनसे कहा—

मा किब्ला रास्तकरदेम बरतर्फ कजकुलाहे ॥

उक्त मुल्ला ने जब ये शब्द कहे और दूसरे मिसरे के अंतिम शब्द उसके मुखसे निकले कि वह अचेत होकर गिर पड़ा। उसके गिरने से हम भयग्रस्त होकर उसके सिर के पास गए। उपस्थित लोगों में बहुतों ने शंका की कि उसे लकवे का वेग आगया है। उपस्थित हकीमों ने घबड़ाहट के साथ उसे देखा, नाड़ी देखी और औषधि ले आए। उन्होंने बहुत कुछ हाथ पैर फटकारे तथा प्रयत्न किया पर कुछ नहीं हुआ। वह ज्योंही गिरा त्योंही उसने अपनी आत्मा स्रष्टा को देदी। उसका शरीर गर्म था इसलिए वे सोचते थे कि स्यात् कुछ जीवन अभी हो। थोड़ी ही देर में ज्ञात होगया कि सब कार्य समाप्त है और वह मृत है। वे उस मृत को उसके घर उठा ले गए। हमने ऐसी मृत्यु कभी नहीं देखी थी और उसके पुत्रों के पास उसके कफन आदि के लिए धन भेज दिया। दूसरे दिन उसके शव को वे दिल्ली ले गए तथा उसके पूर्वजों के कब्रिस्तान में गाड़ दिया।

शुक्रवार २१ वीं को किशवर खाँ का मंसब जो डेढ़ हजारी था, दो हजारी २००० सवार का कर दिया और उसे अपने निजी घुड़साल से एक एराकी घोड़ा, एक खिलअत, बख्तजीत नामक निजी हाथी और अच्छ प्रांत की फौजदारी देकर बिदा किया, जिसमें वहाँ के विद्रोहियों को दंड दे। बायजीद मंगली को खिलअत तथा घोड़ा देकर उसके भाइयों सहित किशवर खाँ के साथ कर दिया। हमारे खास हथसाल

का आलमगुमान नामक हाथी हमने हबीबुल्ला को सौंपकर राजा मान-सिंह के लिए भेजा। एक खास घोड़ा केशोदास मारू के लिए बंगाल भेजा और जलालाबाद के जागीरदार अरबखाँ को एक हथिनी दी। इसी समय इफ्तखार खाँ ने एक अलभ्य हाथी भेंट में बंगाल से भेजा। इसे हमने पसंद किया इसलिए यह हमारे निजी हाथियों में ले लिया गया। हमने अहमद बेग खाँ के मंसब दो हजारी १५०० सवार में पाँच सदी बढ़ा दिया, जो अपनी अच्छी सेवाओं तथा पुत्रों के कारण बंगश की सेना की अध्यक्षता पर नियत किया गया था। हमने सोने की एक जड़ाऊ तख्ती पर्वेज के लिए और एक सिरपेच, जो लालों तथा मोतियों की थी और दो सहस्र रुपयों में बनी थी, खानजहाँ के लिए सरबराहखाँ के पुत्र हबीब के हाथ बुर्हानपुर भेजा। इसी समय ज्ञात हुआ कि कमर-खाँ का पुत्र कौकब एक सन्यासी का विशेष परिचित हो गया है, जिस के शब्दों ने, जो सब कुफ्र तथा अपवित्रता से भरे हैं, उस मूर्ख पर प्रभाव डाल रखा है। उसने नकीबखाँ के पुत्र अब्दुल्लतीफ तथा अपने चचेरे भाई शरीफ को भी उस भ्रम में भागीदार बना लिया है। जब यह बात प्रकट हुई तब थोड़ा ही भय दिखलाने पर उन सब ने ऐसी बातें अपने संबंध में बतलाईं जिनका वर्णन करना घृणोत्पादक है। इन्हें दंड देना उचित समझकर हमने कौकब तथा शरीफ को कोड़े मारकर कैद कर दिया और अब्दुल्लतीफ को अपने सामने कोड़े से सौ बार पिटवाया। यह विशेष दंड शरई नियम के पालन में दिया गया कि मूर्ख मनुष्य इस प्रकार का कार्य करने न जायँ।

सोमवार २४ वीं को मुअज्जम खाँ दिल्ली भेजा गया कि उसके आस पास के विद्रोहियों तथा उपद्रवियों को दंड दे। दो सहस्र रुपए शुजाअत खाँ दक्खिनी को दिए गए। हमने शेख हुसेन दर्शनी को कई आज्ञापत्रों के साथ बंगाल भेजा और उस प्रांत के प्रत्येक अमीर

के लिए उपहार भी उसे देने को दिए। अब हमने उसे आदेश देक
विदा कर दिया। उसके कार्यों तथा अच्छी सेवाओं के उपलक्ष में हमने
उसका मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया और
उसे खास खिलअत भी दिया। किशवरखाँ को भी खास खिलअत तथा
राजा कल्याण को एक एराकी घोड़ा दिया और इसी प्रकार अन्य
अमीरों को भी खास खिलअत या घोड़े दिए। फरेदूँ बर्लास को डेढ़
हजारी १३०० सवार के मंसब से बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का
मंसबदार बना दिया।

१ म सफर सोमवार की रात्रि में सेवकों की असावधानी से ख्वाजा
अबुल्हसन के मकान में आग लग गई और लोगों को ज्ञात होने तथा
बुझाने तक बहुत सी संपत्ति जल गई। ख्वाजा को सहानुभूति दिखलाने
तथा उसकी क्षति की कुछ पूर्ति के लिए हमने उसे चालीस सहस्र
रुपए दिए। सैफखाँ बारहा को, जिसका हमने पालन-पोषण किया था,
एक झंडा दिया। हमने मुइज्जुल्मुल्क का मंसब, जो काबुल का दीवान
नियत हुआ था और जिसका मंसब एक हजारी २२५ सवार का था,
दो सदी २७५ सवार से बढ़ा दिया और उसे विदा किया। दूसरे दिन
हमने एक फूल कटारा जिसमें बहुमूल्य रत्न जड़े हुए थे खानजहाँ के
लिए बुर्हानपुर भेजा।

एक विधवा ने मुकर्रबखाँ के विरुद्ध प्रार्थनापत्र दिया कि उसने
उसकी पुत्री को खंभात में बलात् छीन लिया और उसके गृह में कुछ
दिन रहने के अनंतर जब इसने लड़की का पता लगाया तो उसने कहा
कि वह अवर्ज्य मृत्यु के मुख में चली गई। हमने उसकी जाँच
किए जाने की आज्ञा दी। बहुत खोज के बाद पता लगा कि उसके
एक सेवक ने ऐसा कठिन दोष किया था इसलिए उसे प्राणदंड दिया

और मुकर्रबखाँ का मंसब आधा कर दिया तथा उस औरत को, जिसे ऐसा कष्ट पहुँचा था, वृत्ति दी।

रविवार उक्त महीने की ७ वीं को अशुभ संक्रांति थी इससे सोना, चाँदी, अन्य धातु तथा अनेक प्रकार की दाल दान की और फकीरों, गरीबों में बाँटने के लिए साम्राज्य के बहुत से भागों में भेज दिया। सोमवार ८ वीं की रात्रि में हमने शेख हुसेन सरहिंदी तथा शेख मुस्तफा को बुलाया, जो दर्वेशपन तथा धनहीनता की चाल ग्रहण कर लेने से प्रसिद्ध थे, और एक जलसा हुआ। क्रमशः उसमें समा तथा वज्द में सब निमग्न हो गए। प्रसन्नता तथा आनंद कम नहीं था। जलसा के समाप्त होने पर हमने प्रत्येक को धन दिए और बिदा किया। मिर्जा गाजी बेग तरखान ने कंधार के धनाभाव दूर करने के लिए तथा बंदूकचियों की वेतन के संबंध में कई बार लिखा था इसलिए हमने लाहौर के कोष से दो लाख रुपए भेजे जाने की आज्ञा दी।

१६ वीं उर्दिबिहिश्त को ५ वें जलूसी वर्ष में अर्थात् ४ सफर को पटना में एक विचित्र घटना घटी, जो बिहार प्रांत की राजधानी है। वहाँ का प्रांताध्यक्ष अफजलखाँ उस जागीर पर चला गया जो उसे अभी मिली थी और पटना से साठ कोस दूर थी और यहाँ के दुर्ग तथा नगर का प्रबंध शेख बनारसी तथा दीवान ग़ियास जैनखानी और अन्य मंसबदारों पर छोड़ गया था। उस प्रांत में कोई शत्रु नहीं है इस विचार से वह दुर्ग तथा नगर का रक्षा का जैसा उचित था वैसा प्रबन्ध नहीं कर गया। संयोग से उसी समय कुतुब नामक एक अज्ञात मनुष्य, जो अच्छ के निवासियों में था और उपद्रवी तथा राजद्रोही था, प्रताप उज्जैनिया के प्रांत में आया और दर्वेश की तरह भिखमगे सा कपड़ा पहिरे हुए वहाँ के मनुष्यों से मिला, जो सदा के उपद्रवी थे और उनसे कहा कि वह खुसरू है जो कैदखाने से भागकर वहाँ तक

पहुँच गया है। यदि वे लोग उसकी सहायता करेंगे तथा साथ देंगे तो सफलता मिलने पर वे साम्राज्य के मंत्री तथा दीवान बनाए जायँगे। इस प्रकार की झूठी बातें कहकर उसने उन मूर्ख लोगों को बहकाया तथा अपने खुसरू होने का विश्वास दिलाया। उसने उन मूर्खों को अपनी आँखों के पास के वे चिह्न दिखलाए, जिसे उसने कभी बना लिया था और जो साफ दिखलाई पड़ते थे तथा कहा कि कारागार में उसकी आँखों पर कटोरियाँ बाँधी गई थीं जिनके ये चिह्न हैं। इस प्रकार की झूठी तथा कपटपूर्ण बातें कर उसने बहुत से सवार तथा पैदल इकट्ठा कर लिए। उन विद्रोहियों को यह ज्ञात हो गया था कि अफजल खाँ पटना में नहीं है, इसलिए इसे अच्छा अवसर समझकर उसपर चढ़ाई कर दी और दो-तीन घंटे दिन चढ़े रविवार को नगर में घुस आए। किसी प्रकार की रुकावट न पाकर दुर्ग पर चढ़ दौड़े। शेख बनारसी दुर्ग में था और वह यह समाचार पाते ही घब-ड़ाया हुआ दुर्ग के फाटक पर पहुँचा परंतु शत्रु ने शीघ्रता से आकर उसे फाटक बंद करने का अवसर नहीं दिया। तब वह गियास के साथ दूसरे छोटे द्वार से नदी के किनारे पहुँचा और एक नाव लेकर अफजल खाँ के पास जाने को तैयार हुआ। सुगमता के साथ विद्रोही दुर्ग में पहुँच गए और अफजल खाँ की संपत्ति तथा राजकोष पर अधिकार कर लिया। वे दुष्ट मनुष्य जो घटनाओं की प्रतीक्षा में सदा रहते हैं और नगर तथा उसके आसपास थे विद्रोहियों से मिल गए। यह समाचार अफजल खाँ को खड्गपुर में मिला और शेख बनारसी तथा गियास भी नदी के मार्ग से उसके पास पहुँच गए। नगर से बहुत पत्र भी मिले कि जो दुष्ट अपने को खुसरू बतला रहा है वह खुसरू नहीं है। अफ़ज़ल खाँ अल्लाह की कृपा तथा हमारे सौभाग्य पर विश्वास रखकर तत्काल विद्रोहियों पर चढ़ दौड़ा। पाँच दिनों में वह पटना के पास पहुँच गया।

जब उन दुष्टों को अफजल खाँ के पहुँचने का समाचार मिला तब दुर्ग को एक अपने विश्वास के मनुष्य की रक्षा में छोड़कर तथा सवार-पैदल सेना सजाकर अफजल खाँ का सामना करने चार कोस आगे बढ़ आए। पुनपुन नदी के किनारे लड़ाई हुई और थोड़े ही युद्ध के बाद वे अभागे परास्त होकर अस्त-व्यस्त हो गए। वह नीच बची हुई सेना के साथ भागकर दूसरी बार दुर्ग में घुस जाना चाहता था पर अफजल खाँ ने उसका ऐसा पीछा किया कि वह दुर्ग का फाटक बंद न कर सका। इस पर वह अफजल खाँ के मकान में जा बैठा और उसे दृढ़कर तीन पहर तक लड़ता रहा। उन सबने तीरों से तीस मनुष्यों को घायल किया पर जब उसके सब साथी नर्क में चले गए तब वह शरण माँगकर अफजल खाँ के पास आया। अफजल खाँ ने इस कार्य को समाप्त करने के लिए उसे उसी दिन मरवा डाला और उसके जो साथी जीवित पकड़े गए थे उन्हें कैद कर दिया। ये सब समाचार एक के बाद दूसरे हमारे कान तक पहुँचे। हमने शेख बनारसी तथा गियास जैन-खानी और दूसरे मंसबदारों को आगरे बुलवाया, जिन्होंने दुर्ग को सुरक्षित रखने तथा नगर की रक्षा करने में कुछ भी प्रयत्न नहीं किया था और उन सबके बाल तथा दाढ़ी मुँड़वा कर तथा स्त्रियों के वस्त्रों में गधे पर बिठाकर आगरा नगर के चारों ओर तथा बाजार में घुमवाया जिसमें दूसरों को इससे पाठ तथा आदर्श मिले।

इसी समय पर्वेज तथा दक्षिण में नियुक्त अमीरों एवं साम्राज्य के हितैषियों के पास से प्रार्थनापत्र एक के बाद दूसरे आने लगे कि आदिल खाँ ने प्रार्थना की है कि वे मीर जमालुद्दीन हुसेन अँजू को उसके पास भेजें, जिसके वचनों तथा कार्यों पर दक्षिण के शासकों का पूरा विश्वास है और तब वह स्वयं उनसे मिलकर तथा उनके मन से शंका को दूर करे। इस प्रकार वहाँ का कुछ कार्य जैसा कि आदिल खाँ उचित समझे पूरा हो जाय क्योंकि उसने राजभक्ति तथा सेवा का मार्ग

अपना लिया था। कम से कम वह उनके हृदय में जो भय है उसे दूर कर देगा और उन्हें संतुष्ट कर शाही कृपा की आशा दिला देगा। इस विचार से हमने उक्त मीर को दस सहस्र रुपए पुरस्कार देकर उसी महीने की १६ वीं को वहाँ भेज दिया। हमने कासिमखाँ के पहले एक हजारी ५०० सवार के मंसब में पाँच सदी जात तथा सवार बढ़ा दिया जिसमें वह अपने भाई इस्लाम खाँ की सहायता के लिए बंगाल चला जाय। इसी समय बांधव के जमींदार विक्रमाजीत को दंड देने के लिए, जिसने अधीनता तथा सेवा के घेरे के बाहर पैर रखा था, हमने राजा मानसिंह के पौत्र महासिंह को नियत किया कि वहाँ जाकर उस प्रांत के विद्रोह का दमन करे तथा उसके पास ही स्थित राजा की जागीर का भी प्रबंध देखे।

उसी महीने की २० वीं को हमने एक हाथी शुजाअत खाँ दक्खिनी को दिया। जलालबाद के अध्यक्ष ने वहाँ के दुर्ग की गिरी हालत के संबंध में लिखा था तथा प्रार्थना की थी इसलिए हमने आज्ञा भेज दी कि दुर्ग की मरम्मत के लिए जितनी आवश्यकता हो वह लाहौर के कोष से लेले। बंगाल में इफ्तखार खाँ ने अच्छी सेवा की इसलिए उस प्रांत के अध्यक्ष की प्रार्थना पर उसका मंसब पाँच सदी बढ़ा दिया, जो डेढ़ हजारी था। २८ वीं को अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग का एक प्रार्थनापत्र आया जिसमें कुछ उत्साही सेवकों के संबंध में, जो राणा को दमन करने के लिए उसके साथ गए थे, संस्तुति की गई थी। गजनी खाँ जालवरी ने इस सेवा में सब से अधिक उत्साह दिखलाया था इसलिए उसका मंसब, जो डेढ़ हजारी ३०० सवार का था, पाँच सदी ४०० सवार बढ़ा दिया। इसी प्रकार अन्य लोगों का भी उनकी सेवाओं के अनुसार प्रत्येक का मंसब बढ़ाया गया।

दौलत खाँ काले पत्थर के सिंहासन (चौकी) को लाने के लिए इलाहाबाद भेजा गया था। वह बुधवार मेहर महीने की ४थी तिथि

(१५ सितंबर सन् १६१० ई०) को सेवा में उपस्थित हुआ और उस पत्थर को ठीक तथा सुरक्षित ले आया। वास्तव में वह विचित्र पत्थर था, बहुत काला तथा चमकता हुआ। बहुतों ने कहा कि यह कसौटी पत्थर है। यह लंबाई में चार हाथ से एक हाथ का आठवाँ भाग कम था और चौड़ाई में ढाई हाथ एक इंच तथा इसकी मुटाई तीन सूत थी। हमने संगतराशों को योग्य शेरों को उसके बगलों में खोदने का आदेश दिया। उन्होंने उसी प्रकार के पत्थरों का पावा उसमें लगा दिया। हम बहुवा उस पर बैठते थे।

खानआलम के भाइयों के जामिन होने पर हमने अब्दुस्सुभान खाँ को कारागार से निकलवाया, जिसे कई दोषों के कारण कारादंड दिया गया था, और उसे बढ़ा कर एक हजारी ४०० सवार का मंसब देकर इलाहाबाद प्रांत का फौजदार बना दिया तथा इस्लाम खाँ के भाई कासिम खाँ की जागीर उसे दी। हमने तरबियत खाँ को अलवर सरकार की फौजदारी पर भेज दिया। उसी महीने की १२ वीं को खानजहाँ के यहाँ से प्रार्थनापत्र आया कि खानखानाँ आज्ञानुसार महाबत खाँ के साथ दरबार को रवाना हो गया है और मीर जमालुद्दीन हुसेन भी, जो दरबार से बीजापुर जाने के लिए नियुक्त हुआ है, आदिल खाँ के वकीलों के साथ बुर्हानपुर से बीजापुर को गया है। उसी महीने की २१ वीं को हमने मूर्तजा खाँ को पंजाब का प्रांताध्यक्ष नियुक्त किया, जो हमारे साम्राज्य के सबसे बड़े प्रांतों में से एक है और उसे एक खास शाल दिया। मुल्तान प्रांत के अध्यक्ष ताज खाँ को काबुल का प्रांताध्यक्ष नियुक्त कर उसके तीन हजारी १५०० सवार के मंसब में ५०० सवार और बढ़ा दिए। अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग की प्रार्थना पर हमने राणा सगरा के पुत्र का मंसब भी बढ़ा दिया।

जब महाबत खाँ, जो दक्षिण में नियुक्त अमीरों की सेनाओं की संख्या निश्चित रूप से जानने के लिए तथा खानखानाँ को लिवा लाने

के लिए बुर्हानपुर भेजा गया था, आगरा के पास पहुँचा तब वह नगर से कुछ पड़ाव पहले ही खानखानाँ का साथ छोड़ कर स्वयं पहले आया और सेवा में उपस्थित होने तथा देवढ़ी चूमने की सौभाग्य-प्राप्ति से सम्मानित हुआ। कुछ ही दिन बाद १२ आबान को खानखानाँ भी आकर सेवा में उपस्थित हुआ। बहुत से राजभक्तों ने, सच या झूठ, उसके कार्यों के संबंध में अपने अपने विचारानुसार कहा था और हम भी उससे अप्रसन्न थे क्योंकि हमने उस पर जितनी कृपा तथा आदर पहले दिखलाया था और अपने पिता को करते देखा था उसका उसपर प्रभाव नहीं पड़ा। इसलिए हमने उसके संबंध में उचित ही किया। यह पहले कुछ समय के लिए दक्षिण के कार्यों पर नियत किया गया था और यह पर्वेज की सेवा में अन्य अमीरों के साथ वहाँ उस महत्त्वपूर्ण कार्य पर गया था। जब यह बुर्हानपुर पहुँचा तब समय की अनुकूलता पर दृष्टि न देकर चढ़ाई के लिए अनुपयुक्त ऋतु में, जब आवश्यक रसद, घास आदि इकट्ठे नहीं किए जा सके थे, सुलतान पर्वेज तथा उसकी सेनाओं को बालाघाट लिवा गया। क्रमशः सरदारों की आपसी वैमनस्य तथा अनैक्य से, इसके कपट तथा विरोधी सम्मतियों के कारण यह अवस्था हो गई कि अन्न कठिनाई से मिलने लगा और बहुत धन देने पर भी एक मन प्राप्त न होता था। सेना की हालत ऐसी बिगड़ गई कि कुछ भी ठीक से नहीं हो रहा था और घोड़े, ऊँट तथा अन्य चौपाए मरने लगे। समय की कठिनता को देखकर इसने शत्रु से एक प्रकार की संधि कर ली और सुलतान पर्वेज तथा सेना को बुर्हानपुर लौटा लाया। यह कार्य इस प्रकार सफल नहीं हुआ तब सभी साम्राज्य-हितैषियों ने समझा कि यह अनैक्य तथा गड़बड़ी खानखानाँ के कपट तथा कुप्रबंध के कारण हुई है और यही दरबार को भी लिखा। यद्यपि यह बात हमने विश्वास-योग्य नहीं समझा पर इसका प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर बना रहा। इसी समय खानजहाँ का

भी प्रार्थनापत्र आया जिसका आशय था कि यह सब उपद्रव तथा गड़बड़ी खानखानाँ ही के कपटाचरण से हुई है इसलिए या तो इस कार्य का कुल अधिकार उसी पर छोड़ दिया जाय या उसे दरबार बुला कर हमें इस कार्य पर नियत किया जाय, जिसे आपने पालित-पोषित किया है। यदि तीस सहस्र सवार इस दास की सहायता के लिए दिए जायँ तो वह दो वर्ष में शत्रु द्वारा अधिकृत कुल शाही प्रांत छीन लेगा और कंधार तथा सीमा पर के अन्य दुर्गों पर शाही सेवकों का अधिकार करा देगा एवं बीजापुर प्रांत को साम्राज्य में मिला देगा। यदि वह इस कार्य को समय के भीतर पूरा न कर दे तो वह सेवा में उपस्थित होने के सौभाग्य से वंचित कर दिया जाय और वह अपना मुख शाही सेवकों को फिर न दिखलावेगा। जब सर्दारों तथा खानखानाँ के बीच का संबंध इस प्रकार का हो गया तब हमने उसका वहाँ रहना उचित नहीं समझा और खानजहाँ को अधिकार देकर उसे दरबार बुला लिया। वास्तव में उसके प्रति हमारी अप्रसन्नता तथा अकृपा का कारण यही था और भविष्य में उस पर प्रसन्नता या अप्रसन्नता की मात्रा उसीके अनुसार होगी जो स्पष्टतः ज्ञात होगी।

हमने सैयद अली बारहा को कृपा कर उन्नति दी, जो हमारे प्रसिद्ध युवकों में से है और उसके पहले एक हजारी ५०० सवार के मंसब में पाँच सदी २०० सवार बढ़ा दिया। खानखानाँ के पुत्र दाराब खाँ को एक हजारी ५०० सवार का मंसब तथा गाजीपुर सरकार जागीर दी। हमने पहले कंधार के शासक सुलतान हुसेन मिर्जा सफवी के पुत्र मिर्जा मुजफ्फर हुसेन की पुत्री से सुलतान खुर्रम की मँगनी कर ली थी और १७ आबान को निकाह का जलसा निश्चित हुआ इसलिये हम बाबा खुर्रम के गृह पर गए तथा वहीं रात्रि व्यतीत किया। हमने

अधिकतर अमीरों को खिलअत दिया। ग्वालियर दुर्ग में जो लोग कैद थे उनमें से कुछ को हमने छोड़ दिया, विशेषकर हाजी मीरक को। इस्लाम खाँ ने खालसा परगनों से एक लाख रुपए एकत्र किए थे और वह सेना तथा शासन का प्रधान था इसलिए हमने वह धन उसे पुरस्कार में दे दिया। हमने थोड़ा सा सोना, चाँदी, कुछ रत्न तथा अन्न विश्वासपात्र मनुष्यों को दिया कि वे आगरा के गरीबों में बाँट देवें। इसी दिन खानजहाँ के यहाँ से सूचना आई कि खानखानाँ के पुत्र एरिज ने शाहजादा से विदा ले ली है और आज्ञानुसार उसे दरबार भेज दिया है। अबुल्फतह बीजापुरी के संबंध में जो आज्ञा हुई है उस पर यह कथन है कि उक्त मनुष्य अनुभवी है और उसके भेजे जाने पर अन्य दक्खिनी सरदारों को बड़ी निराशा होगी, जिन्हें वचन दिया जा चुका है, इसलिए उसे अपनी संरक्षा में रख लिया है।

एक आज्ञा भेजी गई थी कि राय कल्ला के पुत्र केशोदास को भेज दो पर वह पर्वेज की सेवा में है इसलिए यदि इसको भेजने में कोई रुकावट पड़े तो वह अर्थात् खानजहाँ उसे भेज दे चाहे उसकी इच्छा हो या न हो। इस आज्ञा के ज्ञात होते ही पर्वेज ने तत्काल उसे छुट्टी दे दी और खानजहाँ से कहा कि तुम हमारे इस कथन की सूचना दे देना कि हम अपने प्रत्यक्ष ईश्वर की सेवा में अपना अस्तित्व तथा जीवन निछावर कर सकते हैं तब केशोदास के रहने या न रहने में हमें क्या है कि उसके भेजने में हम रुकावट डालें? जब वे हमारे किसी विश्वासपात्र सेवक को किसी भी कारण से बुला भेजते हैं तो इससे बचे हुओं में एक प्रकार की निराशा तथा असंतोष फैल जाती है और इस प्रांत में इसके ज्ञात होने पर हमारे प्रति हमारे स्वामी तथा किब्ला की दुष्कृपा का भाव समझा जाता है। यों तो सम्राट् की आज्ञा सर्वोपरि है।

हमारे मृत भाई दानियाल के प्रयत्नों से जिस दिन से अहमदनगर दुर्ग विजयी साम्राज्य के सर्दारों के अधिकार में आया तब से अब तक उस स्थान की अध्यक्षता तथा रक्षा ख्वाजा वेग मिर्जा सफवी को सौंपी हुई थी, जो क्षमादाता शाह तह्मास्प का संबंधी था। जब विद्रोही दक्खिनियों का उपद्रव बहुत बढ़ा और उन्होंने उक्त दुर्ग को घेर लिया तब इसने स्वामिभक्ति तथा दुर्ग की रक्षा के कर्तव्यों में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं की। जब खानखानाँ तथा अन्य अमीर एवं सर्दार, जो बुर्हानपुर में पर्वेज की अधीनता में एकत्र हुए थे, विद्रोहियों को भगाने तथा परास्त करने में लगे हुए थे तब अमीरों के आपसी अनैक्य तथा कलह के कारण और घास तथा अन्न के अभाव में जो लोग महत्वपूर्ण कार्यों के प्रदर्शक थे उन्होंने इस विशाल सेना को दुर्गम मार्गों, पहाड़ियों तथा कठिन दर्रों से ले जाकर थोड़े ही समय में उसे पीड़ित तथा अकर्मंठ बना दिया। यहाँ तक हालत पहुँच गई थी और अन्न का ऐसा कष्ट हो गया था कि वे एक रोटी के लिए एक जीवन देने को तैयार हो गए थे। तब वे अपना कार्य अपूर्ण छोड़कर लौट पड़े। दुर्ग की सेना, जो इस सेना से सहायता की आशा रखती थी, यह समाचार सुनकर साहस तथा दृढ़ता खो बैठी और तुरंत दुर्ग छोड़ देने के लिए उपद्रव मचाने लगी। यह सुनकर ख्वाजा वेग मिर्जा ने आदमियों को शांत तथा संतुष्ट करने के लिए बहुत प्रयत्न किया पर कुछ फल न निकला। अंत में अनुबंध कराकर इसने दुर्ग खाली कर दिया और बुर्हानपुर चला गया। उक्त दिवस को वह शाहजादे के पास उपस्थित हुआ। उसके आने का संवाद जब हमें मिला और यह भी स्पष्ट था कि वीरता तथा राजभक्ति में इसने कोई कमी नहीं की थी तब हमने इसका पाँच हजारी ५००० सवार का मंसब बहाल रखकर जागीर देने की आज्ञा दी। ६ को दक्षिण से भेजा हुआ प्रार्थनापत्र आया कि २५ शाबान को मीर जमालुद्दीन हुसेन

बीजापुर चला गया। आदिल खाँ ने अपने वकील को बीस कोस आगे भेजकर और स्वयं तीन कोस आगे बढ़कर इसका स्वागत किया और उसी मार्ग से मीर को अपने निवासस्थान पर लिवा गया।

अहेर खेलने की इच्छा के प्रबल होने से ज्योतिषियों द्वारा निश्चित किए शुभ साइत में जब एक प्रहर छ घड़ी शुक्रवार की रात्रि बीत चुकी थी १५ रमजान को, जो पाँचवें जलूसी वर्ष का १० अजर महीना हुआ, हम अहेर के लिए चले और दहरा बाग़ में उतरे जो नगर से तीन कोस पर है। इसी पड़ाव पर हमने मीर अली अकबर को दो सहस्र रुपए तथा एक खास फर्गुल देकर नगर में जाने की छुट्टी दी। इस कारण कि अन्न तथा खेती हमारे आदमियों द्वारा रौंदी न जाय हमने आज्ञा दी कि सब नगर ही में बने रहें केवल आवश्यक मनुष्य तथा हमारे निजी सेवक साथ चलें। नगर का प्रबंध ख्वाजाजहाँ को सौंपकर हमने उसे जाने की छुट्टी दी। १४ को सईद खाँ के पुत्र सादुल्ला खाँ को एक हाथी दिया गया। २८ को जो २१ रमजान होता है कासिम खाँ के पुत्र हाशिम खाँ के उड़ीसा से भेंट के रूप में भेजे हुए चौआलीस हाथी हमारे सामने उपस्थित किए गए। इनमें से एक अच्छा तथा पालतू था जिसे हमने अपने हथसाल में रखा। २८ को सूर्यग्रहण था और उसके दुर्भाग्य दोष को दूर करने के लिए हमने सोना चाँदी का तुलादान किया। यह अट्ठारह सौ तोला सोना और उंचास सौ रुपए हुए। इसे तथा हाथी घोड़े एवं अन्य पशुओं और कई प्रकार के शाकों के साथ आगरा तथा आस पास के अन्य नगरों में धनहीन सुपात्रों तथा दीन-दरिद्रों में वितरित करने के लिये दे दिया।

दक्षिण को दमन करने के लिए जो सेना पर्वेज की अधीनता में और खानखानाँ तथा अन्य भारी अमीरों जैसे राजा मानसिंह, खानजहाँ,

आसफ खाँ, अमीरुल्उमरा आदि मंसबदारों तथा हर जाति एवं धर्म के सेनानियों के संचालन में नियत हुई थी उसका जब अंत इस प्रकार हुआ कि वह आधे मार्ग से लौटकर बुर्हानपुर चली आई तब सभी विश्वासपात्र सेवकों तथा वाकेआनवीसों ने जो सत्य बोलते थे दरबार को सूचित किया कि इस सेना के अस्तव्यस्त होने के यद्यपि अनेक कारण हैं पर प्रधान कारण अमीरों का अनैक्य तथा विशेषकर खानखानाँ का कपटाचरण है। उस समय हमारे मन में आया कि हमें नई शक्तिशालिनी सेना खानआजम की अधीनता में भेजना चाहिए जो सर्दारों के अनैक्य से हुए कुकार्यों का मार्जन करे तथा ठीक करे॥ ११वीं को खानआजम को यह कार्य सौंपा गया और दीवानों को आज्ञा दी गई कि कुल तैयारी कर उसे शीघ्रता से भेज दें। हमने खान-आलम, फरेदूँ खाँ बर्लास, हुसेन खाँ टुकड़िया के पुत्र यूसुफ खाँ, अली खाँ नियाजी, बाज बहादुर क़लमाक़ तथा अन्य मंसबदारों को दस सहस्र सवारों के साथ जाने के लिए नियत किया। इस कार्य पर नियुक्त अहदियों के सिवा दो सहस्र दूसरे आदमी भी उसके साथ भेजे गए जो कुल मिलाकर बारह सहस्र सवार हुए। तीन लाख रुपए तथा कई हाथी उसके साथ भेज करके हमने उसे जाने की छुट्टी दी और उसे बहुमूल्य खिलअत, जड़ाऊ कमरबंद, जड़ाऊ जीन सहित घोड़ा, खास हाथी तथा व्यय के लिए पाँच लाख रुपए दिए। यह आज्ञा भी दी गई कि दीवानी विभाग के अध्यक्षगण इसे इसकी जागीर से वसूल कर लेवें। इसके अधीनस्थ सर्दारों को भी खिलअत, घोड़े तथा पुरस्कार दिए गए। हमने महाबत खाँ के चार हजारी ३००० सवार के मंसब में ५०० सवार बढ़ाकर उसे आज्ञा दी कि वह खान-आजम तथा इस सेना को बुर्हानपुर लिवा जाय और वहाँ की सेना की दुरवस्था का पता लगाकर खानआजम की नियुक्ति की आज्ञा की उस प्रांत के सरदारों को सूचना दे जिसमें सब उससे एकमत होकर

कार्य करें। उस ओर की सेना की तैयारी की अवस्था को वह देखे और कुल प्रबंध ठीक कर खानखानाँ को दरबार लिवा लावे।

रविवार ४ शव्वाल को दिन का अंत होते-होते हम चीता के अहेर में लग गए। हमने निश्चय किया था कि इस दिन तथा बृहस्पतिवार को कोई पशु न मारे जायँ और न हम माँस खायँ। विशेषकर सूर्य-वार को इसलिए कि हमारे आदरणीय पिता का उस दिन पर इतना सम्मान था कि उस दिन वे माँस खाने में अरुचि रखते थे और उन्होंने किसी जीव की हत्या करने को मना कर दिया था क्योंकि सूर्यवार की रात्रि में उनका जन्म हुआ था। वह कहा करते थे कि वह दिन इतना अच्छा रहता है कि लोगों की हत्याकारिणी प्रकृति से सभी पशुओं को कष्ट से छुटकारा मिल जाता है। बृहस्पतिवार हमारी राजगद्दी का दिवस है, इस दिन के लिए भी हमने आज्ञा दे दी कि जीव-हत्या न की जाय इस कारण अहेर में भी हमें जंगली जीवों पर तीर या गोली नहीं चलाना चाहिए। चीतों से अहेर खेलने में अनूप राय, जो हमारा पास का सेवक है, हमसे कुछ दूरी पर अपने साथवालों के आगे चल रहा था और वह एक पेड़ के पास पहुँचा जिसपर चीलें बैठी हुई थीं। जब उसने इन चीलों को देखा तब उसने धनुष तथा कुछ तुक्के तीर लिए और उनके पास गया। संयोग से इसने उस वृक्ष के पास एक अधखाए बैल को देखा और उसके पास से एक विशाल शक्तिशाली शेर एक झाड़ी में से निकलकर चल दिया। यद्यपि दिन दो घड़ी से अधिक नहीं बचा था पर हमारी शेर के शिकार की इच्छा को जानने के कारण उसने तथा उसके अन्य साथवालों ने शेर को घेर लिया और एक मनुष्य को शीघ्रता से हमारे पास समाचार देने भेजा। ज्योंही वह पहुँचा कि हम सवार होकर उत्साह के साथ पूरी तेजी से वहाँ गए और बाबा खुर्रम, रामदास, एतमादराय, हयात खाँ तथा दो

एक दूसरे भी हमारे साथ आए। वहाँ पहुँचने पर हमने शेर को देखा जो एक वृक्ष की छाया में खड़ा था। हमने घोड़े की पीठ पर से गोली मारना चाहा पर जब देखा कि घोड़ा शांत नहीं रहता तब उस पर से उतरकर निशाना लगा गोली छोड़ दी। हम ऊँचे पर खड़े थे और शेर नीचे था इसलिए समझ नहीं पड़ा कि उसे गोली लगी या नहीं। इसी घबराहट में हमने दूसरी गोली चला दी और इस बार हमारी गोली उसे लगी। शेर ऊँचे उठा और धावा किया पर मुख्य शिकारी को घायल कर, जिसकी कलाई पर बाज था और संयोग से उसके आगे पड़ गया था, पुनः अपने स्थान पर जा बैठा। ऐसी अवस्था में हमने दूसरा बंदूक एक ओट पर रखकर निशाना साधा। अनूपराय सबको रोककर खड़ा था, उसकी कमर में तलवार तथा हाथ में कुतका था। बाबा खुर्रम हमारे बाईं ओर कुछ दूरी पर था और रामदास तथा अन्य सेवक उसके पीछे खड़े थे। कमाल करावल ने बंदूक भरकर हमारे हाथ में दी। जब हम गोली चलाने को थे उसी समय शेर दहाड़ा और हम लोगों की ओर दौड़ा। हमने तत्काल गोली छोड़ दी और वह शेर के मुख में दाँतों को तोड़ती घुस गई। बंदूक के शब्द से शेर बड़ा भयानक हो गया और जो सेवकगण इकट्ठे हो गए थे उसके झपाटे को न सह सके तथा एक दूसरे पर भहरा पड़े यहाँ तक कि उनके धक्के तथा दौड़ से हम दो डग पीछे हट कर गिर पड़े। वास्तव में हमें विश्वास है कि दो तीन मनुष्य हमारे छाती पर पैर रख कर निकल गए। एतमाद राय तथा शिकारी कमाल की सहायता से हम उठ खड़े हुए। इसी समय शेर उनपर झपटा जो बाईं ओर थे। अनूपराय ने औरों को तो जाने दिया पर शेर की ओर स्वयं घूम पड़ा। शेर उतनी शीघ्रता से इसकी ओर झपटा जितने वेग से उसने धावा किया था। पर इसने भी बड़ी वीरता से सामना किया और अपने हाथ के डंडे से

उसके सिर पर दो चोट मारी। शेर ने अनूपराय के दोनों हाथों को मुँह से पकड़ लिया और ऐसा काटा कि उसके हाथ में दांत गड़ गए परंतु डंडे तथा हाथों के कड़ों ने बहुत काम किया कि वे नष्ट नहीं होने पाए। शेर के झपेट तथा धक्के से अनूपराय गिर कर शेर के अगले पैरों के बीच में जा पड़ा जिससे उसका मुख शेर के छाती के जा पड़ा। ठीक इसी समय बाबा खुर्रम तथा रामदास अनूपराय की सहायता को आ गए। शाहजादे ने उसके कमर पर तलवार मारी और रामदास ने तलवार की दो चोटें सिर पर कीं, जिनमें एक कंधे पर पड़ा। यह मार बड़ी गर्म हुई और हयात खाँ ने भी अपनी लाठी से कई चोटें मारीं। अनूपराय ने जोर से अपने हाथ शेर के मुख से खींच लिए और दो तीन मुक्के शेर के गालों पर मारे और लुढ़क कर घुटनों के बल खड़ा हो गया। शेर के मुख से हाथ खींचने के समय उसके गड़े हुए दाँतों के कारण घाव फट गए और शेर के पंजे उसके कंधों पर पहुँच गए। जब वह खड़ा हुआ तब शेर भी खड़ा हो गया और अपने पंजों से उसकी छाती नोच ली। इन घावों से उसे कुछ दिन कष्ट भोगना पड़ा। भूमि वहाँ की ऊँची-नीची थी इसलिए द्वंद्व युद्ध करते पहलवानों के समान एक दूसरे पर लुढ़कने लगे। जहाँ हम खड़े थे वहाँ की भूमि समतल थी। अनूपराय कहता था कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उसे इतनी बुद्धि दी कि उसने शेर को एक ओर ढकेल दिया और उसके बाद उसे होश नहीं रहा। इसी समय शेर इसे छोड़कर भाग रहा था। इसी घबड़ाहट की अवस्था में इसने अपनी तलवार उठा ली और उसका पीछा कर उसके सिर पर मारा। जब शेर ने सिर घूमाया तब इसने उसके मुख पर ऐसी चोट मारी कि उसकी दोनों आँखे कट गईं और भौं के चमड़े तलवार से कटकर उसकी आंखों पर झूल गए। इसी अवस्था में सालिह नामक मशालची मशाल बालने का समय हो जाने से शीघ्रता से आया पर

दैवयोग से शेर के सामने आ पड़ा। शेर ने पंजे से उसे एक झापड़ मारी कि वह गिर पड़ा। गिरना और प्राण छोड़ना एक ही बात थी। अन्य लोगों ने आकर शेर का काम तमाम कर दिया। अनूपराय ने ऐसी सेवा हमारे ही लिए की थी और हमने देखा था कि किस प्रकार उसने अपनी जान जोखिम में डाल दी थी इसलिए जब वह अपने घावों के कष्ट से छूटा और हमारी सेवा में उपस्थित हुआ तब हमने उसे अनीराय सिंहदलन की पदवी दी। सेना के नायक को हिंदी में अनीराय कहते हैं और सिंहदलन सिंह के मारनेवाले को कहते हैं। अपनी एक खास तलवार उसे देकर उसका मंसब बढ़ा दिया। खानआजम के पुत्र खुर्रम को, जो जूनागढ़ प्रांत का अध्यक्ष नियत हुआ था, कासिम खाँ की पदवी दी।

रविवार ३ ज़ीकदा को हमने मछली का शिकार खेला और सात सौ छाछठ मछलियाँ पकड़ी गईं। ये सब अमीरों, सेवकों आदि में बाँट दी गईं। हम बिना चोंई की मछली नहीं खाते और केवल इसलिए नहीं कि शीआमत के मुल्लाओं ने बिना चोंई वाली मछली को हराम कहा है प्रत्युत् हमारी अरुचि का कारण यह है कि हमने सुना है कि बिना चोंई वाली मछली मुर्दा पशु का मांस खाती हैं और चोंई वाली मछली नहीं खातीं। इस कारण इन्हें खाना हमें अरुचिकर है। शीआ लोग उसे क्यों नहीं खाते तथा क्यों उसे हराम कहते हैं यह वे जानें। हमारा एक पालतू ऊँट, जो शिकार में साथ था, पाँच नीलगाय लादे हुए था, जो बयालीस हिंदुस्तानी मन थे। हमने इसके पहले नजीरी नैशापुरी को बुला भेजा था, जो काव्य-रचना में सब से बढ़कर था तथा गुजरात में व्यापार से कालयापन करता था। वह इसी समय हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और अनवरी के इस मिसरे की वजन पर

पुनः संसार के लिए कौन यौवन तथा सौंदर्य यह है

एक ग़ज़ल हमारे ऊपर बनाकर हमें दी। हमने उसे इस कविता पर एक सहस्र रुपए, एक घोड़ा तथा खिलअत पुरस्कार में दिया। हमने हकीम हामिद गुजराती को भी बुला भेजा था, जिसकी मुर्तजा खाँ ने बड़ी प्रशंसा की थी, और वह भी सेवा में उपस्थित हुआ। उसके अच्छे गुण तथा स्वच्छता उसकी चिकित्सा से उत्तम थे। यह कुछ दिन सेवा में रहा। यह ज्ञात हुआ कि इसके सिवा कोई दूसरा हकीम गुजरात में नहीं है और यह स्वयं वहाँ जाना चाहता है तब हमने इसे तथा इसके पुत्रों को एक सहस्र रुपए और कुछ शाल दिए तथा एक पूरा गाँव उसके पालन के लिए अलग कर दिया। इस पर यह अपने देश प्रसन्न होकर चला गया। हुसेन खाँ टुकड़िया का पुत्र यूसुफ खाँ अपनी जागीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। बृहस्पतिवार १० जीहिज्जा को कुर्बान का उत्सव था। बृहस्पतिवार को पशुहत्या का निषेध था इसलिए शुक्रवार को कुर्बानी करने की हमने आज्ञा दी। तीन भेड़ों को अपने हाथ से हलाल कर हम अहेर के लिए सवार हुए और छ घड़ी रात्रि व्यतीत होने पर हम लौटे। इस दिन एक नीलगाय मारी गई, जिसका तौल नौ मन पैंतीस सेर था। इस नीलगाय की कहानी यहाँ लिखी जाती है क्योंकि विचित्रता से वह युक्त है।

विगत दो वर्षों में जब हम यहाँ घूमने तथा अहेर खेलने आए तब हमने प्रत्येक बार इसे गोली मारी पर मर्मस्थान में चोट न लगने से वह नहीं गिरा और भाग गया। इस वर्ष भी हमने उस नीलगाय को शिकारगाह में देखा और पहरेदार ने भी पहिचाना कि पहले दो वर्ष यह घायल होकर भागा था। इस दिन भी हमने उस पर तीन बार गोली छोड़ी पर निष्फल गया। हमने तीन कोस तक उसका तेजी से पैदल पीछा किया और कितना भी प्रयत्न किया पर उसे पकड़ नहीं सका।

अंत में हमने मन्नत मानी कि यदि यह नीलगाय गिरे तो हम इसका माँस पकवाकर ख्वाजा मुईनुद्दीन की आत्मा के लिए गरीबों में बँटवा देंगे और अपने पिता के नाम एक मुहर तथा एक रुपया माना। इसके बाद ही नीलगाय चलते चलते थक गया और हम उसके सिर पर पहुँच गए। हमने आज्ञा दी कि इसे इसी स्थान पर हलाल करो और वहाँ से पड़ाव पर लाकर अपनी मन्नत पूरी की। हमने माँस पकवाकर तथा मुहर एवं रुपए का मीठा मँगाकर अपने सामने गरीबों तथा भूखों को बुलवाकर बँटवा दिया।

दो तीन के दिन अनंतर हमने दूसरी नील गाय देखा। हमने बहुत प्रयत्न किया और चाहा कि वह एक स्थान पर ठहरे तो गोली मारें पर अवसर नहीं मिला। अपनी बंदूक कंधे पर रखे हम उसका पीछा करते रहे, यहाँ तक कि संध्या हो चली और सूर्यास्त हो गया तथा उसे मारने से निराश हो गए। एकाएक हमारे मुख से निकल पड़ा कि ख्वाजा, यह नीलगाय भी आपही की मन्नत में है। हमारा यह कहना तथा उसका बैठना एक ही क्षण में हो गया। हमने उसे गोली मारी और लग भी गई। हमने आज्ञा दे दी कि पहले नीलगाय के समान इसे भी पकाकर बाँट दें। शनिवार १६ जीहिज्जा को हमने मछलियाँ मारीं। इस बार ३३० मछलियाँ पकड़ी गईं। बुधवार की रात्रि में उसी महीने की २८ वीं को हमने रूपबास में पड़ाव डाला। यह हमारा निश्चित अहेर-स्थल था और यहाँ किसी अन्य को अहेर खेलने का निषेध था इसलिए उस वन में बहुत हरिण इकट्ठे हो गए थे यहाँ तक कि वे बस्ती में आजाते थे और कोई उनको कष्ट नहीं देता था। हमने दो तीन दिन तक वहाँ अहेर खेला। गोली से तथा चीतों द्वारा बहुत से हरिण मारे नगर में जाने का समय पास आगया था इसलिए दो पड़ाव करके हम बृहस्पतिवार २ मुहर्रम सन् १०२० हि० (१७ मार्च सन्

१६११ ई०) की रात्रि में अब्दुर्रज्ज़ाक मामूरी के बाग में उतरे, जो नगर के बिलकुल पास है। इस रात्रि में दरबार के बहुत से सेवक जैसे ख्वाजाजहाँ, दौलत खाँ और बहुत से जो नगर में रह गए थे सेवा में उपस्थित हुए। एरिज को भी, जिसे हमने दक्षिण के प्रांत से बुला भेजा था, देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम उस बाग में शुक्रवार को भी रहे। उस दिन अब्दुर्रज्ज़ाक ने अपनी भेंट उपस्थित की। वह अहेर का अंतिम दिन था इसलिए हमने आज्ञा दी कि अहेर कितने दिन हुए और मारे गए पशुओं की संख्याएँ गिन ली जायँ। अहेर का समय ५ वें जलूसी वर्ष के ९ अज़र महीने से १९ वें इस्फंदारमुज़ तक तीन महीने बीस दिन हुए। इस समय में १२ शेर, १ मृग, ४४ चिकारा, १ छोटा हरिण, २ हरिण के बच्चे, ६८ काले हरिण, ३१ हरिणी, ४ लोमड़ी, ८ कुरार हरिण, १ पाटल, ५ भालू, ३ हुँड़ार, ६ खरगोश, १०८ नीलगाय, १०९६ मछली, १ गिद्ध, १ बड़ा बगुला, ५ जल कुक्कुट, ५ बगुला, ५ तीतर, १ सुर्खाब, ५ सारस, १ ढोंक कुल १४१४।

शनिवार २९ इस्फंदारमुज़ को, जो ४ मुहर्रम होता है, हम हाथी पर सवार हुए और नगर में गए। अब्दुर्रज्ज़ाक के उद्यान से महल तक एक कोस बीस तनाब दूरी थी। हमने पंद्रह सौ रुपए मार्ग में बाँटे। निश्चित समय पर महल में गए। बाजार नौरोज़ के उत्सव के समान ही कपड़ों से सजाया गया था। अहेर खेलने के समय ख्वाजाजहाँ को आज्ञा दी गई थी कि महल के भीतर हमारे बैठने के लिए एक इमारत बनवाए और उसने तीन महीने के भीतर इस प्रकार की विशाल इमारत तैयार कर दी तथा उसे इतनी उत्तमता के साथ बढ़ा दी और हाथ जोड़े हुए बहुत ही शीघ्रता से काम किया। मार्ग के धूल से बचकर हमने इस स्वर्गतुल्य इमारत में प्रवेश किया और

घूमकर उसे देखा, जो हमारी रुचि के बहुत अनुकूल था। प्रशंसा तथा संस्तुति से वह सम्मानित हुआ। इसी इमारत में उसने अपनी भेंट प्रदर्शित की। इनमें से कुछ पसंद आईं तथा स्वीकार की गईं और बची उसे पुरस्कार में दे दी गईं।

छठा जलूसी वर्ष

दिन दो घड़ी चालीस पल सोमवार को चढ़ चुका था जब माननीय श्रेष्ठतम नक्षत्र सूर्य सौभाग्य बुर्ज मेष राशि में गया। वह दिन १म फरवरदीन, ६ मुहर्रम (२१ मार्च सन् १६११ ई०) था। नौरोज का जलसा तैयार हो जाने पर हम सौभाग्य रूपी सिंहासन पर बैठे। दरबार के सभी अमीर तथा सेवकों को हमारी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उन्होंने मुबारकबादी दी। दरबार के सेवक मीरान सदरजहाँ, अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग और जहाँगीर कुली खाँ की भेंटें हमारे सामने उपस्थित की गईं। बुधवार मुहर्रम को राजा कल्याण की भेंट, जिसे उसने बंगाल से भेजा था, हमारे सामने उपस्थित हुई। बृहस्पतिवार ६ को शुजाअत खाँ तथा अन्य मंसबदार जो दक्षिण से बुला लिए गए थे सेवा में उपस्थित हुए। हमने अब्दुर्रज्जाक वर्दी उजबेग को एक जड़ाऊ खंजर दिया। उसी दिन मुर्तजा खाँ की नौरोज की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसने सब प्रकार की वस्तुएँ तैयार की थीं। हमने उनका निरीक्षण कर अपने पसंद की वस्तुएँ बहुमूल्य रत्न, अच्छे वस्त्र, हाथी, घोड़े ले लिए और बाकी उसे लौटा दिए। हमने अबुल्फतह दक्खिनी को एक जड़ाऊ खंजर, मीर अब्दुल्ला को तीन सहस्र रुपए और मुकीम खाँ को एक एराकी घोड़ा उपहार में दिया। हमने शुजाअत खाँ के

डेढ़ हजारी १००० सवार मंसब में पाँच सदी ५०० सवार बढ़ा दिए। हमने इसे दक्खिन से इस्लाम खाँ के पास बंगाल भेजने के लिए बुलाया था और वास्तव में वहाँ उसका स्थान स्थायी रूप में लेने के लिए था इससे उस प्रांत का प्रबंध उसे सौंप दिया। ख्वाजा अबुल्हसन ने दो लाल, एक बड़ा मोती तथा दस अँगूठियाँ भेंट कीं। खानखानाँ के पुत्र एरिज को हमने एक जड़ाऊ छुरा दिया। खुर्रम का मंसब आठ हजारी ५००० सवार का था जिसे हमने दो हजारी जात से बढ़ा दिया और ख्वाजाजहाँ का मंसब, जो डेढ़ हजारी १००० सवार का था, पाँच सदी २०० सवार से बढ़ा दिया। २४ मुहर्रम, १८ फरवरदीन को फारस के शासक शाह अब्बास का एलची यादगार अली सुलतान, जो गत सम्राट् की मृत्यु का शोक मनाने तथा हमारी राजगद्दी पर मुबारकबादी देने के लिए आया था, हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और हमारे भाई शाह अब्बास की भेजी हुई भेंट को हमारे सामने उपस्थित किया। वह अच्छे घोड़े, वस्त्र तथा हर प्रकार की योग्य वस्तुएँ लाया था। भेंट देने के अनंतर उसी दिन हमने उसे बहुत ही अच्छी खिलअत तथा तीस सहस्त्र रुपए दिए, जो एक सहस्त्र एराकी तूमान होता है। इसने हमें एक पत्र दिया जिसमें मुबारकबादी तथा पिता की मृत्यु पर शोक-समवेदना दोनों मिली हुई थी। मुबारकबादी के पत्र में परम मित्रता प्रकट की गई थी और किसी सौजन्य तथा शील की त्रुटि नहीं थी इसलिए उसकी पूरी प्रतिलिपि यहाँ दे देने की हमारी इच्छा हुई।

शाह अब्बास के पत्र की प्रतिलिपि

ईश्वरीय कृपा रूपी बादलों की बौछार तथा सर्वशक्तिमान की दया की बिंदुओं से विचित्र मनुष्यों एवं अन्वेषकों के उद्यानों को ताजगी मिलती है। आपके राजत्व तथा शासन के पुष्पोद्यान और

वैभव तथा उच्चतम प्रसन्नता पर, जो स्वर्गीय शोभा से युक्त, सूर्य के समान प्रकाशमान, बाल-सौभाग्य से युक्त सम्राट् शनि के समान प्रभावशाली, सुप्रसिद्ध सम्राट्, मंडलों के अधीश्वर, खदीव,[1] संसार-विजयी,[2] देशों को पराक्रांतकारी, सिकंदर के समान उच्चपदस्थ, दारा के झंडे से युक्त, बड़प्पन तथा ऐश्वर्य के राजसिंहासन पर आसीन, हफ्त इकलीम[3] का अधिकारी, सौभाग्य तथा संपत्ति का वर्द्धक, सुखोद्यान का शोभा वर्द्धक, (वैभव के) गुलाब की क्यारी का सजाने वाला, नक्षत्रों के योग का स्वामी, मुख को प्रसन्न करने वाला, राजत्व में पूर्ण, आकाश के रहस्यों का उद्घाता, विद्या तथा दूरदर्शिता के मुख की शोभा, सृष्टि-ग्रंथ का अनुक्रम, मानव-पूर्णताओं का योग, ईश्वरीय प्रभा का आदर्श,[4] उच्च आत्माओं को उच्चता-प्रदायक, सौभाग्य तथा दयोत्कर्ष का बढ़ाने वाला, आकाशों की भी शोभा का सूर्य, स्रष्टा की शक्ति-छाया, आकाश के नक्षत्रों के बीच जमशेद[5] सा शोभायमान, साहिब किरान[6], संसार का आश्रय, अल्ला की कृपा-नदी, अनंत दया का स्रोत एवं स्वच्छता-स्थल की हरियाली है, उसका साम्राज्य कुदृष्टि के कष्ट से सुरक्षित रहे। उसकी पूर्णता का फुहारा

---

१. फारसी शब्द राजा का द्योतक है।

२. जहाँगीर।

३. मुसलमानों के अनुसार ज्ञात संसार सात देशों में विभक्त है, जिसे हफ्त (सात) इक्लीम (देशों) कहते हैं।

४. आईना से तात्पर्य है।

५. ईरान का एक प्रसिद्ध राजा।

६. जिसके जन्म के समय दो नक्षत्रों का योग रहता है। तैमूरलंग की पदवी।

स्थायी बना रहें, वास्तव में उसकी इच्छाएँ तथा प्रेम। उसके अच्छे गुणों तथा दया की कहानी नहीं लिखी जा सकती। मिसरा का अर्थ—

लेखनी को ऐसी जिह्वा नहीं है कि प्रेम के रहस्य को व्यक्त करे।

यद्यपि देखने में दूरी हमारी इच्छा के काबा तक पहुँचने में रोक है तब भी वह आत्मिक संसर्ग की तीव्र इच्छा का हमारे लिए किबला[1] है। ईश्वर को धन्यवाद है कि अनिवार्य ऐक्य के कारण यह विनम्र प्रार्थी और वह ऐश्वर्य का शुद्ध पोषक वास्तव में एक दूसरे से मिल गए हैं। दोनों के बीच का दूरी और शरीरों के बाह्य अलगाव ने आत्माओं के सामीप्य तथा आध्यात्मिक मिलने में बाधा नहीं डाली जिससे हमारा मुख मित्रता की ओर है तथा दुःख की धूलि हमारे मस्तिष्क के आईने पर नहीं जमा है प्रत्युत् उसने पूर्णता के प्रदर्शक के सौंदर्य का ज्योति-प्रत्यावर्तन प्राप्त किया है, हमारी आत्मा की प्राण-शक्ति को सदा मित्रता तथा प्रेम का मीठी सुगंधि से एवं स्नेह तथा सुमनसता की अंबर-सुगंधित समीर से सुवासित किया है और आध्यात्मिक सम्मिलन एवं निरंतर के ऐक्य ने मित्रता के मोर्चा को घिसकर स्वच्छ कर दिया है। शेर का अर्थ—

हम विचारों में तेरे पास बैठते हैं और हमारा हृदय शांत हो जाता है।
क्योंकि यह ऐसा मिलन है जिसका वियोग-कष्ट अनुगमन नहीं करता॥

सर्वशक्तिमान तथा निर्मल ईश्वर की प्रशंसा है कि सच्चे मित्रों की इच्छा रूपी पौधे में सफलता का फल लगा है। इच्छा-पूर्ति, वह सौंदर्य जो वर्षों तक पर्दे में छिपा था परम शक्तिमान ईश्वर के सिंहासन पर विनम्रता तथा प्रार्थना करने से बाहर आया और गुप्त वधू-गृह से

---

१. पूज्य स्थान।

प्रगट हुआ, जिससे आशान्वितों की आशास्थली पर पूर्णता की एक किरण दौड़ गई। वह शुभ राजसिंहासन पर चढ़कर उस बादशाह के पार्श्व में बैठ गए, जो दरबार की शोभा है और शाहन्शाहों के ऐश्वर्य का उत्कर्ष है। खिलाफत तथा शासन का संसार पर खुलने वाला झंडा, आकाशगामी न्याय का छत्र, राजमुकुट तथा राजसिंहासन के निर्माता का संसार-व्यापी अधिकार, ज्ञान तथा बुद्धि की ग्रंथियों के खोलने वाले ने न्याय, शासन तथा दया की छाया संसार की प्रजा पर डाला है। हम आशा करते हैं कि इच्छाओं को मुख्य पूरा करने वाला सौभाग्य के उत्कर्ष के शुभ राजगद्दी प्राप्ति से राजमुकुट को प्रकाशित तथा राजसिंहासन को भासमान करे, उसे शुभ शकुन युक्त तथा सबके लिए ऐश्वर्य-योग्य बनावे और संसार के राजत्व तथा शासन-संबंधी सब वस्तुओं एवं ऐश्वर्य तथा संपत्ति के कारण निरंतर बढ़ते रहें। विगत बहुत काल से मित्रता की प्रथा तथा परस्पर की चाल जो हम लोगों के पूर्वजों में चली आई है और अब नए नए उसके जो मित्रता पर आरूढ़ हैं और उसके जो न्याय पर दृढ़ हैं बीच में पुनः स्थापित हुई है इससे आवश्यक हुआ कि जब उसके राजगद्दी होने का सुसमाचार इस देश में आया जो गुर्गानी सिंहासन पर बैठा है तथा तैमूर के मुकुट का उत्तराधिकारी है तब इस राजमहल का एक विश्वासपात्र सेवक मुबारक-बादी ले जाने के लिए शीघ्र नियत किया जाय परन्तु इस कारण कि उसी समय आजरबईजान का प्रबंध तथा शिरवान प्रांत की चढ़ाई की घटनाएँ घटीं और जब तक हमारा स्नेहशील मन उस प्रांत के प्रबंध से संतुष्ट नहीं होता था तब तक हम राजधानी नहीं लौट सकते थे इसलिए इस महत्त्वपूर्ण कर्तव्य के पूरा करने में कुछ विलम्ब हो गया। यद्यपि बाहरी दिखावट तथा विनम्रता का विद्वानों तथा बुद्धि-मानों के लिए विशेष मूल्य नहीं है परंतु उनका व्यक्तीकरण मित्रता की दृष्टि से आवश्यक है। इसलिए आवश्यकतावश इस शुभ समय

में जब पवित्र फिरिश्तों के सेवकों का ध्यान उस प्रांत के कार्यों से हट गया है और वहाँ का प्रबंध हमारे हितैषियों के इच्छानुसार ठीक हो गया है और हम भी उस ओर से सुचित्त हो गए तब हम अपनी राजधानी इस्फहान में लौटकर आराम से रहने लगे, जो शासन कार्य का स्थायी स्थान है। इस कारण हमने कमालुद्दीन यादगार अली को, जिसमें सर्दारी के गुण वर्तमान हैं, जो सत्यता तथा विश्वास में पूर्ण है, जो हमारे परिवार के सच्चे सेवकों तथा स्वच्छ हृदय के सूफियों में से है, उच्च दरबार में भेजा है जिसमें वह आपको प्रणाम करने का सौभाग्य प्राप्त करने, समवेदना प्रगट करने, प्रतिष्ठा की दरी चूमने, हालचाल पूछने तथा मुबारकबादी देने के अनंतर लौटने की छुट्टी पावे और आपके हितैषी के सच्चे मस्तिष्क तक आपके फिरिश्ता समान शरीर की सुरक्षा तथा मानसिक स्वास्थ्य का शुभ समाचार लावे जो सूर्य सा प्रकाशमान तथा प्रसन्नता का बढ़ानेवाला है। यह आशा की जाती है कि यह पारस्परिक पैतृक मित्रता तथा संबंध का वृक्ष एवं घनिष्टता तथा सौमनस्य का उद्यान, वाह्य तथा आंतरिक, जो प्रेम-नदियों तथा सत्य सुविचार के स्रोतों से सिंचित होने के कारण बहुत अधिक शोभा तथा हरियालीपन से युक्त हैं और पत्ते तक नहीं झड़ते वे सुमनसता के सूत्र को संचालित करें और विमनसता के दुर्भाग्य का पत्र-व्यवहार आने से दूर करें। यह आत्मा का व्यवहार है जो हमारी प्रत्यक्ष मित्रता को आध्यात्मिक शृंखला से बाँधे और कार्य को पूरा होने में प्रगति दे।

सर्वशक्तिमान ईश्वर गुप्त शक्तियों द्वारा ऐश्वर्य तथा प्रभाव के जीवित परिवार का और सौभाग्य तथा वैभव की गृहस्थी को सहायता दे।

यहाँ तक हमारे भाई शाह अब्बास के पत्र की प्रतिलिपि हुई।

हमारे भाई सुलतान मुराद तथा सुलतान दानियाल को, जो हमारे पिता के जीवनकाल ही में गत हो गए थे, प्रजा अनेकों नामों से पुकारती थी। हमने आज्ञा प्रचलित की कि एक को वे शाहजादा मगफूर[1] तथा दूसरे को शाहजादा मरहूम[2] कहा करें। हमने एतमादुद्दौला और अब्दुर्रज्जाक मामूरी के मंसबों को बढ़ाकर डेढ़ हजारी से अठारह सदी कर दिया तथा इस्लाम खाँ खानखानाँ[3] के भाई कासिम खाँ के मंसब में २५० सवार बढ़ा दिए। हमने खानखानाँ के सबसे बड़े पुत्र एरिज को शाहनवाज़ खाँ की पदवी और सईद खाँ के पुत्र सादुल्ला को नवाजिशखाँ की पदवी दी।

अपनी राजगद्दी के समय हमने तौल तथा नाम में मुहर तथा रुपए को बढ़ा दिया था अर्थात् तीन रत्ती तौल बढ़ाई थी परंतु इस समय हमें बतलाया गया कि व्यापारिक व्यवहार में मुहर तथा रुपए का एक ही तौल पहले के समान होने से जनसाधारण को बड़ी सुविधा होगी। प्रजा के संतोष तथा सुविधा का सभी कार्यों में ध्यान रखना आवश्यक है इसलिए हमने आज्ञा दे दी कि आज के दिन से अर्थात् छठे जलूसी वर्ष के ११ उर्दिबिहिश्त से हमारे साम्राज्य की सभी टकसालों में पहले के समान तौल की मुहरें ढाला करें।

१—ईश्वर से क्षमा प्राप्त अर्थात् स्वर्गीय।

२—ईश्वर की कृपा पाया हुआ अर्थात् स्वर्गीय।

३—मुगल दरबार में नियम था कि एक पदवी एक ही सर्दार को दी जाती थी और उसके मरने पर या पदवी बदल दिए जाने पर वह दूसरे को दी जाती थी। एक साथ दो का उसी पदवी से उल्लेख लिपिकारों की भ्रांति ज्ञात होती है।

इसके पहले विद्रोहप्रिय अहदाद ने यह समाचार पाकर कि काबुल का प्रसिद्ध नेता खानदौराँ प्रांत के भीतरी भाग में गया हुआ है और काबुल में केवल मुइज्जुलमुल्क प्रथम के कुछ सेवकों के साथ रह गया है तथा इसे आक्रमण के लिए सुअवसर समझकर शनिवार २ सफर सन् १०२० हि० को बहुत से सवारों तथा पैदल सैनिकों के साथ एकाएक काबुल पर धावा बोल दिया। मुइज्जुलमुल्क ने अपनी योग्यता के अनुसार बड़ी फुर्ती दिखलाई और काबुलियों तथा अन्य निवासियों ने विशेषकर फर्मुली[1] जाति ने मार्गों को रोक दिया एवं अपने घरों को दृढ़ किया। अफ़गानगण बंदूकें लेकर गलियों तथा बाज़ारों में अनेक ओर से आ पहुँचे। निवासियों ने टीलों तथा घरों की ओट से तीरों तथा गोलियों से बहुत से अभागों को मार डाला और इन्हीं में अहदाद के विश्वासपात्र सेनानियों में से एक बर्गी[2] भी मारा गया। ऐसी घटना के हो जाने पर तथा इस भय से कि कहीं हर ओर तथा स्थानों से लोग आकर इकट्ठे हो मार्ग रोक न लें तथा भागने का मार्ग बंद न हो जाय ये सब त्रस्त होकर तथा घबड़ा कर भाग चले। प्रायः आठ सौ ये कुत्ते नर्क में गए और दो सौ घोड़ों को पकड़कर शीघ्रता से उस बध स्थल से भाग गए। नाद अली मैदानी, जो लोहगढ़ में था, उसी दिन अंत होते आ पहुँचा और भगोड़ों का कुछ दूर तक पीछा किया। उसके पास सेना कम थी तथा भगोड़े दूर चले गए थे इसलिए वह लौट आया। शीघ्रता से आने में इसने जो उत्साह दिखलाया था और मुइज्जुलमुल्क ने जो कर्मठता दिखलाई थी इसके लिए दोनों के मंसब बढ़ा दिए, नाद अली के एक हजारी मसब को डेढ़ हजारी कर दिया और मुइज्जुलल्क के डेढ़हजारी मंसब को अठारह सदी का कर दिया।

१—मूल से पाठा० कजिलबाश भी दिया है।

२—पाठा० बर्की।

यह ज्ञात होने पर कि खानदौराँ तथा काबुली गण असावधानी में दिन बिताने के आदी हो गए हैं और अहदाद के उपद्रव को शांत करने में बहुत समय लग चुका है इसलिए हमने विचार किया कि खानखानाँ इस समय किसी काम पर नहीं है इसलिए उसे तथा उसके पुत्रों को उस पर नियुक्त कर दें। ऐसा विचार आने पर कुलीजखाँ, जिसे बुलाने के लिए आज्ञापत्र जा चुका था, पंजाब से आ पहुँचा और सेवा में उपस्थित हुआ। उसके व्यवहार से ज्ञात हुआ कि वह खानखानाँ के उपद्रवी अहदाद के भगाने के कार्य पर नियुक्त किए जाने से व्यथित हो गया है। उसने इस कार्य को उठाने का भार लेने का विश्वास के साथ वचन दिया तब निश्चय हुआ कि पंजाब प्रांत की अध्यक्षता मुर्तजाखाँ को दी जाय, खानखानाँ गृह पर हीं रहे और कुलीजखाँ का मंसब बढ़ाकर छ हजारी ५००० सवार का करके काबुल में नियत किया जाय कि वह अहदाद तथा ऊपरी डाकुओं को भगा दे। हमने खानखानाँ को आगरा प्रांत के कन्नौज तथा कालपी सरकारों में जागीर दी जिससे वह वहाँ के विद्रोहियों को पूरा दंड देकर निर्मूल कर दे।[1] जब हमने इन लोगों को जाने की छुट्टी दी तब प्रत्येक को खास खिलअत, घोड़े तथा हाथी दिए और सभी खिलअत पाकर अपने अपने कार्य पर चले गए।

इसी समय सच्ची मित्रता तथा पुरानी सेवाओं के कारण हमने एतमादुद्दौला को दो हजारी ५०० सवार का मंसब दिया और पाँच सहस्र रुपए पुरस्कार में दिए। महाबतखाँ जिसे हमने दक्षिण की विजयी सेना के युद्धीय प्रबंध को ठीक करने के लिए तथा वहाँ के अमीरों को मतैक्य रखने एवं मिलकर काम करने की आवश्यकता बतलाने को

१—इसी के अनंतर इकबालनामा में नूरजहाँ से विवाह करने का उल्लेख है। इसमें केवल मंसब बढ़ाने की बात लिखी गई है।

भेजा था, तीर महीने की १२ वीं, २१ रबीउस्सानी, को आगरा राजधानी में आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इस्लामखाँ के पत्र से ज्ञात हुआ कि इनायतखाँ ने बंगाल प्रांत में अच्छी सेवा की है और इसलिए उसके दो हजारी मंसब में पाँच सदी बढ़ा दिया। उसी प्रांत के कार्याध्यक्ष राजा कल्याण का मंसब पाँच सदी ३०० सवार बढ़ा दिया, जिससे उसका मंसब डेढ़हजारी ८०० सवार का होगया। हमने हाशिम खाँ को, जो उड़ीसा में था, कश्मीर के शासन पर नियत किया और उसके वहाँ पहुँचने तक उसके चाचा ख्वाजा मुहम्मद हुसेन को उस प्रांत का प्रबंध देखने के लिए भेज दिया। हमारे श्रद्धेय पिता के काल में इसके पिता मुहम्मद कासिम ने कश्मीर विजय किया था। कुलीजखाँ का सबसे बड़ा पुत्र चीनकुलीज काबुल प्रांत से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। यह स्वाभाविक गुणों के साथ साथ खानःजाद भी था इसलिए इसे खाँ की पदवी देकर सम्मानित किया और इसके पिता की प्रार्थना पर तथा इसके तीरा में सेवा करने के अनुबंध पर इसके मंसब में पाँच सदी ३०० सवार की उन्नति दी। १४ वीं अमरदाद को पहले की सेवाओं, विशेष सत्यता तथा योग्यता के कारण एतमादुद्दौला को साम्राज्य के वजीर का उच्च पद दिया। उसी दिन ईरान के राजदूत यादगार अली को जड़ाऊ खंजर सहित कमरबंद दिया। अब्दुल्लाखाँ ने, जो विद्रोही राणा के विरुद्ध भेजी गई सेना की अध्यक्षता पर नियत था, गुजरात की ओर से दक्षिण प्रांत पर आक्रमण करने का वचन दिया इसलिए उसे उस प्रांत का अध्यक्ष बना दिया और उसकी प्रार्थना पर राजा बासू को राणा के विरुद्ध सेना की अध्यक्षता देकर उसके मंसब में ५०० सवार बढ़ा दिए। खानआजम को गुजरात के बदले मालवा प्रांत की अध्यक्षता दी। हमने चार लाख रुपए उस सेना तथा युद्धीय सामान के व्यय के लिए भेजा, जो अब्दुल्लाखाँ की अधीनता में नासिक के मार्ग से; जो दक्षिण प्रांत के पास है, वहाँ जाने को थी।

बिहार प्रांत से सफदरखाँ अपने भाइयों के साथ आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

एक शाहीदास ने, जो खुदाई विभाग में काम करता था, एक बड़ी कारीगरी का नमूना तैयार कर हमारे सामने उपस्थित किया जैसा हमने पहले कभी नहीं देखा तथा सुना था। यह ऐसा विचित्र था कि उसका विवरण यहाँ दे देना समीचीन है। फंदुक के एक छिलके में हाथीदांत की चार मजलिसें काटकर लगाई गई थीं। पहली मजलिस मल्लों की थी, जिसमें दो मनुष्य मल्लयुद्ध कर रहे थे, एक अन्य हाथ में भाला लेकर खड़ा था, दूसरा हाथों में पत्थर तथा रस्सी लिए था और एक दूसरा भूमि पर दोनों हाथ रखकर बैठा था, जिसके आगे एक लाठी, एक कमान तथा एक बर्तन रखा था। दूसरी मजलिस में एक सिंहासन था, जिसके ऊपर शामियाना तना हुआ था और उस पर एक ऐश्वर्यशाली पुरुष एक पैर पर दूसरा पैर रखकर बैठा हुआ था तथा उसके पीछे एक तकिया भी दिखला रही थी। पाँच सेवक उसके चारों ओर तथा आगे खड़े थे और इन सबके ऊपर एक वृक्ष की शाखाओं की छाया पड़ रही थी। तीसरी मजलिस रस्से के खिलाड़ियों की है, जिन्होंने एक बांस खड़ाकर उसमें तीन रस्सियाँ बाँधी थीं। उस पर एक खिलाड़ी अपने दाहिने पैर को अपने सिर के पीछे की ओर से बाएँ हाथ से पकड़े हुए था और उसी प्रकार एक पैर पर खड़े-खड़े एक बकरे को बाँस पर रखे था। एक आदमी ढोल गले में डालकर पीटता था, एक अन्य आदमी खड़ा हुआ हाथ उठाकर खिलाड़ी की ओर देख रहा था और अन्य पाँच आदमी तमाशा देख रहे थे, जिनमें एक के हाथ में छड़ी थी। चौथी मजलिस में एक वृक्ष था, जिसके नीचे हजरत ईसा की सूरत बनी हुई थी। एक मनुष्य इनके पैर पर सिर रखे था, एक वृद्ध पुरुष उनसे बातकर रहा था और चार मनुष्य पास में

खड़े थे। इतनी सुन्दर कारीगरी करने के कारण हमने उसे पुरस्कृत किया और उसका वेतन बढ़ा दिया।

३० शहरवार को मिर्जा सुलतान, जिसे दक्षिण से बुलाया गया था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। सफ़दरखाँ का मंसब बढ़ाकर उसे विद्रोही राणा के विरुद्ध भेजी गई सेना की सहायता के लिए नियत किया। अब्दुल्लाखाँ फ़ीरोजजंग ने नासिक के मार्ग से पड़ोस के दक्षिण प्रांत में जाने का प्रस्ताव किया था इसलिये हमने रामदास कछवाहा को, जो हमारे श्रद्धेय पिता के सच्चे सेवकों में से एक था, उसके साथ जाने के लिए नियत किया कि वह हर एक स्थान में उसको देखता रहे और उसे विशेष साहस तथा जल्दी करने न दे। इस कार्य के लिए हमने उस पर बहुत कृपाएँ कीं और उसे राजा की पदवी दी जिसकी उसने अपने लिए कभी आशा भी नहीं की थी। हमने उसे डंका और रणथंभौर दुर्ग, जो हिंदुस्तान के प्रसिद्ध दुर्गों में से है, दिया। इसके अनंतर उसे बहुमूल्य खिलअत, हाथी तथा घोड़ा देकर जाने की छुट्टी दी। हमने ख्वाजा अबुल्हसन को, मुख्य दीवानी से स्थानांतरित कर दक्षिण की प्रांताध्यक्षता दी क्योंकि वह हमारे मृत भाई दानियाल की सेवा में उस प्रांत में बहुत दिनों तक रहा था। हमने एतमादुद्दौला के पुत्र अबुल्हसन को एतकाद खाँ की पदवी दी। हमने मुअज्जमखाँ के पुत्रों को योग्य मंसब देकर इसलामखाँ के पास बंगाल भेज दिया। इसलाम खाँ की प्रार्थना पर राजा कल्याण उड़ीसा सरकार का शासक नियत हुआ और उसका मंसब दो सदी २०० सवार बढ़ा दिया गया। हमने शुजाअतखाँ दक्खिनी को चार सहस्र रुपए पुरस्कार दिए। ७ आबान को मिर्जा शाहरुख का पुत्र बदीउज्जमाँ दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

इसी समय के लगभग मावरुन्नहर देश में उपद्रव मचने के कारण वहाँ के बहुत से अमीर तथा उजबेग सैनिक जैसे हुसेन बे, पहलवान

बात्रा, नौरस वे दरमान, बैरम वे तथा अन्य दरबार में उपस्थित हुए। उन सबको हमने खिलअत, घोड़े, नगद, मंसब और जागीरें दीं। २ अज़र को हाशिम खाँ बंगाल से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। हमने पाँच लाख रुपए दक्षिण की उस विजयी सेना के व्यय के लिए, जो अब्दुल्ला खाँ की अधीनता में थी, रूपखवास तथा शेख अंबिया के हाथ गुजरात में अहमदाबाद भेजा। पहले दिन हम अहेर खेलने सामूनगर ग्राम गए, जो हमारा एक निश्चित शिकारगाह है। बाईस हरिण मारे गए, जिनमें सोलह हमने तथा छ खुर्रम ने मारे। वहाँ दो दिन तथा रात्रि रहकर रविवार की रात्रि में हम स्वस्थ तथा सुरक्षित नगर में लौट आए।[1] एक रात्रि यह शैर हमारे ध्यान में आया। अर्थ—

जब तक आकाश में सूर्य का प्रकाश रहे।
शाह के छत्र से उस प्रकाश का प्रत्यावर्तन दूर न हो।

हमने आज्ञा दी कि फर्राश तथा किस्साख्वाँ लोग तस्लीम करते या कहानी कहने के समय इसी शैर से आरंभ करें तथा अब तक यह प्रचलित है। तीसरे दिन शनिवार को खानआजम के यहाँ से पत्र आया कि आदिलखाँ बीजापुरी ने अपना कुव्यवहार छोड़ दिया है, पश्चाताप कर रहा है और शाही सेवकों में वह पहले से अधिक राज-भक्त हो गया है। १४ वीं को, जो शव्वाल महीने का अंतिम दिन होता है, हाशिम खाँ को कश्मीर जाने की छुट्टी दी गई। हमने ईरान के एलची यादगार अली को एक खास फर्गु़ल दिया। हमने एतकाद खाँ को 'सर अंदाज' नामक खास तलवार उपहार में दी। खानआजम के

१—इकबालनामा पृ० ५८-९ पर कमूरगाह अहेर तथा हज़ारों जीवों के मारे जाने का उल्लेख है।

पुत्र शादमान को शादमान खाँ की पदवी से सम्मानित कर उसका मंसब बढ़ाकर सत्रह सदी ५०० सवार का कर दिया। उसे झंडा भी दिया। अब्दुल्ला खाँ फीरोज़जंग के भाई सरदार खाँ और असलाँ बे उजबेग को भी, जो सिविस्तान के प्रबंध पर नियत थे, हमने झंडे दिए। हमने आज्ञा दी कि 'जाय निमाज़' उन हरिणों की खाल की बनाई जाय, जिन्हें हमने मारा था और दरबारे आम में रखी जाय कि उसी पर लोग निमाज़ पढ़ें। शरअ की विशेष प्रतिष्ठा के लिए हमने आज्ञा दी कि मीर अदल तथा क़ाज़ी, जो धार्मिक विधान के कार्यों के केंद्र हैं, हमारे सामने भूमि न चूमें, जो एक प्रकार का सिज्दा है।

बृहस्पतिवार २२ वीं को हम पुनः अहेर खेलने सामूनगर गए। इस कारण कि वहाँ बहुत से हरिण इकट्ठे हो गए थे हमने ख्वाजाजहाँ को कमूरगाह अहेर का प्रबंध करने भेजा था कि वह हरिणों को हर ओर से उस में हँकवा दे और उसके चारों ओर कनात तथा गुलाल-बार खिंचवा दे। उन सब ने डेढ़ कोस भूमि कनातों से घिरवाई। जब यह समाचार आ गया कि अहेर का स्थान तैयार हो गया और बहुत से अहेर के पशु उसमें बंद कर दिए गए तब हम वहाँ गए तथा शुक्रवार को अहेर खेलना आरंभ कर दिया। इसके दूसरे बृहस्पतिवार तक हम बराबर हरमवालियों के साथ कमूरगाह में गए और अहेर खेलते रहे। कुछ मृग जीवित ही पकड़े गए और कुछ तीर तथा गोली से मारे गए। रविवार तथा बृहस्पतिवार को, जिन दिनों हम पशुओं पर गोली नहीं चलाते, उन सब ने जाल से उनको जीवित ही पकड़ा। इन सात दिनों में ९१७ पशु नर तथा मादा पकड़े गए, जिनमें ६४१ हरिण थे। चार सौ चार पशु फतहपुर भेजे गए कि वहाँ के मैदानों में छोड़ दिए जायँ। चौरासी के लिए आदेश दिया गया कि इनकी नाकों में चाँदी के छल्ले पहिराकर उसी स्थान में छोड़ दें।

दूसरे दो सौ छिहत्तर मृग जो तीर, गोली तथा चीतों से मारे गए थे दिन प्रति दिन बेगमों तथा महल के दासों, अमीरों एवं शाही सेवकों में वितरित कर दिए गए। अहेर खेलने से हमारा मन ऊब उठा था इसलिए अमीरों को आदेश दे दिया कि शिकारगाह में जाकर बचे हुए पशुओं का शिकार कर डालें और हम सुरक्षित नगर लौट आए। १ म बहमन, १७ जीक़दा को हमने आज्ञा दी कि हमारे साम्राज्य के बड़े बड़े नगरों में जैसे अहमदाबाद, इलाहाबाद, लाहौर, दिल्ली, आगरा आदि में बुलगुरखाने खोलें कि गरीबों को पका हुआ खाना मिले, जिसके लिए तीस महाल नियत किए गए। ऐसे छ स्थापित हो चुके थे और अब चौबीस अन्य नगर निश्चित कर दिए गए।

४ बहमन को हमने राजा वीरसिंह देव का मंसब एक हजारी जात बढ़ा दिया। यह पहले चार हजारी २००० सवार का था। साथ ही हमने इसे एक जड़ाऊ तलवार दिया। हमने अपनी खास तलवारों में से एक जो शाह बच्चा कहलाती थी शाहनवाज खाँ को उपहार में दी। १६ इस्फंदारमुज़ को मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदीउज्जमाँ को विद्रोही राणा के विरुद्ध सेना में नियत किया और राजा बासू के लिए एक तलवार भेजा।

हमने पुनः यह बात सुनी कि सीमा पर के सर्दारगण ऐसे कार्य करते हैं, जिन पर उनका किसी प्रकार का स्वत्व या संबंध नहीं है और नियमों तथा प्रथाओं पर ध्यान नहीं रखते हैं। हमने आज्ञा दी कि बख्शीगण इन लोगों को आज्ञापत्र भेजें कि सीमा पर के सर्दारगण भविष्य में वैसा काम न करें, जो केवल बादशाहों के लिए विशेष रूप से निश्चित है। पहली बात यह है कि वे झरोखा में न बैठा करें, दूसरे शाही सेवकों तथा सहायक सरदारों को चौकी देने या तस्लीम करने का कष्ट न दें, तीसरे हाथी का युद्ध न करावें, चौथे अंधा करने या

नाक-कान काटने का दंड न दें, पाँचवें किसी को बलात् मुसलमान न बनावें, छठे अपने नौकरों को पदवियाँ न दें, सातवें शाही सेवकों को कोर्निश या सिज्दा करने पर वाध्य न करें, आठवें गायकों तथा वादकों को शाही दरबारों की प्रथा के अनुसार चौकी बजाने को वाध्य न करें, नवें वाहर निकलते समय डंका न बजवावें, दसवें जब वे शाही या अपने सेवकों को घोड़ा या हाथी दें तो लगाम तथा अंकुश उन पर रखकर तस्लीम न करावें, जलूस की सवारी में वे शाही सेवकों को पैदल साथ में न लें और बारहवें यदि वे शाही सेवकों को पत्र लिखें तो अपनी मुहर उस पर न दें। ये नियम जो आईने जहाँगीरी कहे गए अब प्रचलित हैं।

सातवाँ जलूसी वर्ष

मंगलवार को हमारी राजगद्दी के सातवें वर्ष के १म फरवरदीन, १६ मुहर्रम सन् १०२१ हि० (१६ मार्च* सन् १६१२ ई०) को नौरोज का उत्सव आगरे में हुआ, जो संसार को प्रकाशमान करता है तथा जिसके जलसे से आनन्द प्राप्त होता है। उक्त महीने की ३ री को बृहस्पतिवार की रात्रि जब चार घड़ी व्यतीत हो चुकी थी तब हम ज्योतिषियों के निश्चित किए समय पर राजसिंहासन पर बैठे। हमने आज्ञा दी थी कि प्रति वर्ष की प्रथा के अनुसार सभी बाजार सजाए जायँ और जलसे अंतिम दिन तक होते रहें। खुसरू बे उजबेग, जो उजबेगों में खुसरू कुरुक्ची के नाम से प्रसिद्ध था, इन्हीं दिनों में आकर सेवा में उपस्थित हुआ। यह मावरुन्नहर के प्रभावशाली मनुष्यों में से था इसलिये

---

* ठीक तारीख १० मार्च है।

हमने इस पर कृपाएँ कीं और इसे अच्छा खिलअत दिया। हमने ईरान के एलची यादगार अली को पंद्रह सहस्र रुपए उसके व्यय के लिए दिए। उसी दिन विहार प्रांत से भेजी गई अफजलखाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसमें तीस हाथी, अठारह टट्टू, बंगाल के कपड़े, चंदन, कस्तूरी के अगर तथा अन्य वस्तुएँ थीं। खानदौराँ की भी भेंट उपस्थित की गई। इसमें ४५ घोड़े, दो ऊँट चीनी बर्तन, काला पोस्तीनें तथा काबुल एवं उसके आस पास में प्राप्य बहुमूल्य वस्तुएँ थीं। महल के सेवकों ने भी अपनी भेंटों के प्रस्तुत करने में कष्ट उठाया था और प्रति वर्ष के समान उनकी भेंटें क्रमशः कई दिनों तक हमारे सामने उपस्थित की गईं। अच्छी प्रकार उनका निरीक्षण कर पसंद की हुई वस्तुएँ लेलीं और बाकी उन्हें लौटा दिया।

१३ फरवरदीन, २९ मुहर्रम को इस्लामखाँ के यहाँ से प्रार्थनापत्र आया कि अल्ला की कृपा से तथा बादशाही इकबाल के प्रभाव से बंगाल उसमान अफगान के उपद्रवों से निश्चित हो गया। इस युद्ध के विवरण देने के पहले बंगाल का कुछ वृत्तांत दे देना उचित है। बंगाल एक विस्तृत प्रांत दूसरे इकलीम में है। चिटगाँव बंदर से गढ़ी तक यह साढ़े चार सौ कोस लंबा और उत्तरी पहाड़ों से मदारन (मेदनी पुर) सरकार की सीमा तक दो सौ बीस कोस चौड़ा है। इसकी आय साठ करोड़ दाम है। यहाँ के पहले शासकगण बीस सहस्र सवार, एक लाख पैदल, एक सहस्र हाथी और चार-पाँच सहस्र युद्धीय नावें रखा करते थे। शेरखाँ तथा उसके पुत्र सलीमखाँ के समय से यह प्रांत अफगानों के अधिकार में था। जब हिंदुस्तान के साम्राज्य के सिंहासन पर हमारे श्रद्धेय पिता आसीन हुए और इससे उसकी शोभा तथा वैभव बढ़ा तब उन्होंने विजयी सेना को इस ओर भेजा। बहुत दिनों तक इस प्रांत को विजय करना उद्देश्य रहने से यह प्रांत विजयी साम्राज्य के सर्दारों

के निरंतर प्रयत्नों से दाऊदखाँ किरानी के अधिकार से निकल आया, जो इसका अंतिम शासक था। वह दुष्ट खानजहाँ के साथ युद्ध करता हुआ मारा गया और उसकी सेना नष्ट भ्रष्ट हो गई। उस दिन से अब तक वह प्रांत साम्राज्य के सेवकों के अधिकार में चला आता है। अंत में कुछ बचे हुए अफ़ग़ान देश के कोनों तथा सीमाओं पर कुछ स्थानों में अधिकार बनाए हुए थे पर उनमें भी अधिकतर क्रमशः घृणित तथा निस्सहाय हो गए, जिसमें वे भी धीरे धीरे शाही सेवकों के अधिकार में चले आए। जब साम्राज्य तथा शासन का कुल प्रबंध ईश्वर की कृपा से ईश्वरीय सिंहासन के इस तुच्छ सेवक को मिला तब राजगद्दी के प्रथम वर्ष में हमने राजा मानसिंह को दरबार में बुला लिया, जो वहाँ के शासन तथा प्रबंध पर नियत था और उसके स्थान पर कुतुबुद्दीन खाँ को, जो हमारा धाय भाई होने से सभी सर्दारों में विशेष प्रसिद्ध था, भेजा। यह उस प्रांत में ज्योंही पहुँचा त्योंहीं एक ऐसे दुष्ट मनुष्य के हाथ मारा गया जो उसी प्रांत में नियुक्त किया गया था और वह मनुष्य भी, जिसने फल पर ध्यान नहीं दिया था, अपने कार्य का समुचित दंड पा गया तथा मारा गया। हमने जहाँगीर कुली खाँ को, जो बिहार प्रांत का अध्यक्ष तथा जागीरदार था और उक्त पड़ोस में होने से पास था, मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया और उसे बंगाल जाकर वहाँ का शासनाधिकार लेने की आज्ञा दी। हमने इस्लाम खाँ को, जो राजधानी आगरा में था, आज्ञा भेजी कि वह बिहार जाय और उसे अपनी जागीर समझे। जहाँगीर कुली खाँ को वहाँ शासन करते कुछ ही दिन बीते थे कि वहाँ के बुरे जलवायु के कारण उसे असाध्य रोग लग गया और उसकी निर्बलता क्रमशः बढ़ती गई जिससे उसका अंत हो गया। जब हमने लाहौर में इसकी मृत्यु का समाचार सुना तब इस्लाम खाँ के नाम आज्ञापत्र भेजा गया कि वह यथा संभव शीघ्र बंगाल जाय। जब हमने इसे इस बड़े कार्य

पर नियत किया तब साम्राज्य के बहुत से सेवकों ने इसके युवापन तथा अननुभवी होने पर आक्षेप किया परन्तु हमने अपनी विचारात्मक दृष्टि से इसके स्वाभाविक गुणों तथा योग्यता को समझकर ही इसे स्वयं इस कार्य के लिये चुना था।

इसका फल यह हुआ कि इस प्रांत का कार्य इस्लाम खाँ ने इस प्रकार किया कि जब से यह प्रांत इस साम्राज्य के सर्दारों के अधिकार में आया उस समय से अब तक दरबार के किसी सेवक से नहीं बन पड़ा था। इसके अच्छे कामों में से एक विद्रोही उसमान अफगान को भगा देना था। विगत सम्राट् के काल में इसने कई बार शाही सेना का सामना किया पर यह परास्त नहीं हुआ। जब इस्लाम खाँ ने ढाका को अपना निवासस्थान बनाया और वहाँ के जमींदारों को दमन करना अपना ध्येय निश्चित किया तब उसने विद्रोही उसमान तथा उसके प्रांत पर सेना भेजने का निश्चय किया। यदि वह राजभक्ति के साथ सेवा करना स्वीकार करले तो ठीक है नहीं तो अन्य विद्रोहियों की तरह उसे दंड देकर नष्ट कर दे। इसी समय शुजाअत खाँ इस्लाम खाँ से आ मिला और यह कार्य इसी के नाम हुआ। अनेक अन्य शाही सर्दार इसके साथ नियत किए गए जैसे किश्वर खाँ, सैयद आदम बारहा, शेख अच्छे, मुकर्रब खाँ का भतीजा मोतमिद खाँ, मुअज्जमखाँ के पुत्रगण, एहतमाम खाँ तथा अन्य। यह अपने साथ कुछ अपने आदमी भी ले गया। जब बृहस्पति शुभ था तब यह सेना चली और मिर्जा मुराद का पुत्र मीर कासिम इस सेना का बख्शी तथा वाकेआनवीस नियत किया गया। इसने कुछ जमींदारों को भी मार्ग दिखलाने के लिए साथ लिया। विजयी सेनाएँ आगे बढ़ीं। जब वे उसमान के दुर्ग तथा भूमि के पास पहुँचे तब कुछ बोलनेवाले मनुष्य उसके पास समझाने के लिए भेजे गए कि उसे राजभक्ति का पाठ पढ़ावें तथा विद्रोह के मार्ग से हटाकर उसे उचित मार्ग पर ले आवें। परंतु उसमान के मस्तिष्क में अहंकार

भरा हुआ था और उसके सिर में उस प्रांत को विजय करने की अभिलाषा थी एवं अन्य विचार भी थे इसलिए उसने इनकी बातों को नहीं सुना तथा युद्ध के लिए तैयारी करने लगा। युद्धस्थल एक नाले के किनारे, जो दलदल तथा चहले से भरा था, हुआ। रविवार ६ मुहर्रम (१२ मार्च सन् १६१२ ई०) को युद्ध का समय निश्चित कर शुजाअत खाँ ने सेना को सजाया जिससे प्रत्येक अपने स्थान पर जा पहुँचे और युद्ध के लिए सन्नद्ध रहे। उसमान ने उस दिन युद्ध करने का निश्चय नहीं किया था परंतु जब उसने सुना कि शाही सेना युद्ध के लिए तैयार होकर आई है तब वह भी निरुपाय हो युद्ध के लिए सवार हुआ और नाले के किनारे आकर विजयी सेना के सामने अपने सवार तथा पैदल सजाए। जब युद्ध जोर पर हुआ तथा दोनों सेनाएँ गुँथ गईं तब उस मूर्ख हठी मनुष्य ने पहले ही आक्रमण में अपना मस्त हाथी हरावल के सामने रेला। घोर युद्ध पर हरावल के कई सर्दार सैयद आदम बारहा, शेख अच्छे आदि मारे गए। दाएँ भाग के सेनाध्यक्ष इफ्तखार खाँ ने आक्रमण करने में कुछ नहीं उठा रखा और अपना प्राण निछावर कर दिया। इसके साथ की सेना भी ऐसा लड़ी कि सबके सब मारे गए। इसी प्रकार किश्वर खाँ भी बाएँ भाग की सेना के साथ वीरता के साथ युद्ध करते हुए अपने स्वामी के काम में निछावर हो गया पर शत्रु के भी बहुत से मनुष्य मारे गए तथा घायल हुए। उसमान दुष्ट ने प्रतिद्वंद्वियों की जाँच की और उसे ज्ञात हुआ कि हरावल, दाएँ तथा बाएँ भागों के सर्दार मारे गए केवल मध्य बच गया है। उसने अपने मरों-कटों का कुछ भी विचार न कर उसी उत्साह के साथ मध्य पर भी धावा कर दिया। इस ओर शुजाअत खाँ के पुत्रों, जामाताओं तथा भाइयों ने एवं अन्य नायकों ने इन दुष्टों के धावे को रोका और उन पर शेरों तथा चीतों के समान पंजों एवं दाँतों से आक्रमण किया। इनमें से कितने मारे गए तथा बचे हुए विशेष घायल हुए।

इसी समय उसमान ने गजपति नामक अपने प्रधान मस्त हाथी को शुजाअत खाँ पर रेला, जिसने अपना भाला उठाकर हाथी को मारा। एक क्रुद्ध हाथी भाले की नोक की क्या परवाह करता है! तब इसने तलवार लेकर एक के बाद दूसरा दो चोट किए। उसने इन्हें भी क्या समझा होगा! इसने तब अपना छुरा खींचकर दो चोट की पर वह इतने पर भी न रुका तथा शुजाअत खाँ को घोड़े सहित गिरा दिया। तुरंत ही वह घोड़े से अलग हो पड़ा परंतु 'जहाँगीर शाह' पुकारता हुआ वह कूद कर उठ खड़ा हुआ और उसके साईस ने हाथी के अगले पैरों पर दोहत्थी तलवार मारी। हाथी घुटनों के बल हो गया तब साईस ने महावत को हाथी पर से खींच लिया। शुजाअत खाँ के हाथ में खंजर था, जिससे उसने हाथी के सूँड़ तथा सिर पर कई चोटें कीं और वह चिंघाड़ता हुआ अपनी ओर चला गया। वह बहुत घायल हो गया था इसलिए अपनी सेना में पहुँच कर वह गिर गया। शुजाअत खाँ का घोड़ा सुरक्षित उठ खड़ा हुआ। जब वह उस पर सवार हो रहा था तभी उन दुष्टों ने दूसरे हाथी को इसके झंडाबरदार की ओर रेला जिससे वह झंडे के सहित गिर पड़ा। शुजाअत खाँ ने चिल्ला कर तथा झंडेबरदार को चैतन्य करते हुए कहा कि साहस करो, हम जीवित हैं और झंडा हमारे पैरों के नीचे है। ऐसे संकट के समय सभी उपस्थित शाही सेवकों ने तीरों, छुरों तथा तलवारों से हाथी को मारा। शुजाअत खाँ स्वयं उसके पास जाकर झंडेबरदार को उठने के लिए कहा और उसके लिए दूसरा घोड़ा मँगवाकर उसे उस पर बैठवाया। झंडाबरदार झंडा फहराकर अपने स्थान पर डट गया। इसी समय एक गोली उस प्रधान विद्रोही के सिर में लगी। बहुत पता लगाया गया पर यह न ज्ञात हो सका कि वह गोली किसने मारी थी। जब उसे गोली लगी तभी उसने समझ लिया कि वह मृत हो गया। तिस पर भी ऐसी घातक चोट के होते वह दो प्रहर तक युद्ध में अपनी सेना को उत्साह

दिलाता रहा और मैदान घोर युद्ध से भरा रहा। इसके अनंतर शत्रु ने मुँह फेरा और विजयी सेना ने उसका पीछा किया तथा बराबर मार-काट करते हुए उन नीचों को भगाते हुए उनके पड़ाव तक पहुँचा दिया। तीरों तथा गोलियों की बौछार से उन दुष्टों ने शाही सेना को उस स्थान में जाने नहीं दिया जिसमें वे थे। जब उसमान का भाई वली तथा उसका पुत्र ममरेज़ एवं उसके अन्य संबंधी तथा अनुयायियों को उसमान के घाव का पता चला तब उन्हें निश्चय हो गया कि वह नहीं बचेगा और यदि वे परास्त होने तथा भगा दिए जाने पर अपने दुर्ग की ओर जाएँगे तो एक भी वहाँ जीवित नहीं पहुँचेगे। उन्होंने इस पर यही ठीक समझा कि रात्रि भर यहीं पड़ाव पर ठहरे रहें और रात्रि बीतते-बीतते अवसर देखकर दुर्ग में चले जायँ। रात्रि के दो प्रहर बीतने पर उसमान नर्क को चला गया। रात्रि के तीसरे प्रहर में वे उसके शव को उठाकर तथा उसके खेमे और वस्तुओं को वहीं छोड़कर दुर्ग की ओर चल दिए। विजयी सेना के चरों ने इसका समाचार पाकर शुजाअत खाँ से जाकर कहा। सोमवार को सुबह शाही सेना इकट्ठी हुई और पीछा करना निश्चय किया जिसमें उन अभागों को साँस लेने का समय न मिले परंतु सैनिकों के विशेष थके होने, मरे हुओं को गाड़ने तथा घायलों के साथ समवेदना के कारण ठहरे रहने या पीछा करने में सभी आगा-पीछा कर रहे थे। इसी समय मुअज्ज़म खाँ का पुत्र अब्दुस्सलाम[1] शाही सेवकों के साथ आ पहुँचा, जिनमें तीन सौ सवार तथा चार सौ तोपची थे। जब यह नई सेना आ पहुँची तब पीछा करना ही निश्चय हुआ और वे आगे बढ़े। जब वली ने, जो

१—इकबालनामा पृ० ६४ पर मोतमिद खाँ (लश्कर खाँ) का भी इसके साथ आना लिखा है।

उसमान के बाद उपद्रव का मूल हुआ, सुना कि शुजाअत खाँ विजयी सेना के साथ आई हुई नई सेना को लेकर आ पहुँचा है तब उसने समझ लिया कि अब सेवा तथा राजभक्ति के सीधे मार्ग पर चलकर शुजाअत खाँ के पास पहुँचने के कोई दूसरा उपाय नहीं है। अंत में उसने संदेश भेजा कि इस उपद्रव का जो मूल कारण था वह तो चला गया और जो बच गए हैं वे सेवक तथा मुसल्मान हैं। यदि वह इन्हें वचन दे तो वे उपस्थित हों और हाथियों को भेंट में देकर साम्राज्य की सेवा करें। शुजाअत खाँ तथा मोतकिद खाँ ने, जो युद्ध के दिन आ पहुँचा था और अच्छी सेवा की थी, और अन्य सभी राजभक्तों ने समय की आवश्यकता समझ कर तथा साम्राज्य की भलाई की दृष्टि से वचन देकर उन्हें प्रोत्साहित किया। दूसरे दिन उसमान के पुत्र, भाई तथा दामादों के साथ वली आया और शुजाअत खाँ तथा अन्य शाही सर्दारों के सामने सभी उपस्थित हुए। वे उंचास हाथी भेंट में लाए। इस कार्य के पूरा होने पर शुजाअत खाँ ने कुछ स्वामिभक्त सेवकों को अघार तथा उसके आसपास के स्थानों में छोड़ा जो उस अभागे के अधिकार में था और वली तथा अन्य अफगानों को साथ लेकर सोमवार ६ सफर, को जहाँगीर नगर (ढाका) में इसलाम खाँ के पास पहुँचा। जब यह आनंददायक समाचार आगरे आया तब अल्ला के तख्त के इस सेवक ने उसे धन्यवाद दिया और समझ लिया कि ऐसे शत्रु को भगा देने का कार्य सर्वशक्तिमान दाता की निस्संकोच उदारता ही से हुआ। ऐसी अच्छी सेवा के उपलक्ष में हमने इस्लाम खाँ का मंसब बढ़ा कर छ हजारी कर दिया और शुजाअत खाँ को रुस्तमेजमाँ की पदवी दी तथा उसका मंसब एक हजारी १००० सवार बढ़ा दिया। हमने अन्य सेवकों का भी उनकी सेवा के अनुसार मंसब बढ़ाया और उनके लिए अन्य पदवियाँ दीं।

जब उसमान के मारे जाने का समाचार पहले-पहल हमें मिला तब यह विनोद समझ में आया। इसकी सचाई तथा झूठ का निश्चय करने के लिए हमने ख्वाजा हाफिज शीराजी के, जो परलोक की जिह्वा है, दीवान से शकुन निकाला तो यह गजल निकली।

मैं अपनी आँखों को लाल बनाता और संतोष को रखता हूँ।
और ऐसी अवस्था में अपना हृदय समुद्र में डाल देता हूँ॥
आकाश के तीर से मैं घायल हुआ हूँ।
मदिरा दो जिससे उन्मत्त हो फरिश्तों के कमर में गाँठ बाँधू॥

ये शेर बहुत समीचीन थे इसलिए इनसे हमने शकुन निकाला। कुछ दिनों पर फिर समाचार आया कि भाग्य के तीर ने या अल्ला के तीर ने उसमान को मारा क्योंकि बहुत पता लगाने पर भी यह ज्ञात न हो सका कि किसने गोली मारी थी। यह विचित्र बात होने से यहाँ लिख दी गई है।

१६ फरवरदीन को मुकर्रब खाँ, जो हमारे मुख्य सेवकों में से है और जहाँगीरी सेवा के पुराने विश्वासपात्रों में से है, खंभात दुर्ग से आया और सेवा में उपस्थित हुआ। हमने उसे आज्ञा दी थी कि वह गोआ बंदर जाकर सरकार के निजी कार्य के लिए वहाँ से प्राप्त कुछ अलभ्य वस्तुएँ ले आवे। आदेशानुसार वह बहुत प्रयत्न कर गोआ गया और वहाँ कुछ दिन रह कर फिरंगियों के मुँह-माँगे मूल्य पर उस बंदर की प्राप्त अलभ्य वस्तुओं को क्रय किया तथा मूल्य पर ध्यान नहीं दिया। जब वह उक्त बंदर से लौट कर दरबार आया तब उसने एक-एक कर अपनी लाई सभी अलभ्य वस्तुओं को हमारे सामने उपस्थित किया। इनमें कुछ पशु थे, जो बड़े ही विचित्र तथा आश्चर्यजनक थे, जैसा हमने कभी देखा नहीं था और अब तक जिनका नाम किसी को ज्ञात नहीं था। यद्यपि बाबरशाह ने अपने आत्मचरित

ं कई पशुओं की सूरत शकल का वर्णन दिया है पर उन्होंने कभी
उनका चित्र बनाने की चित्रकारों को आज्ञा नहीं दी। ये पशु हमें बड़े
वेचित्र जान पड़े इससे हमने उनका वर्णन भी दिया और चित्रकारों
को आज्ञा भी दी कि जहाँगीरनामा में उनका चित्र भी खींचें जिससे
उनका वर्णन पढ़ने के साथ उनका आश्चर्य देख कर बढ़े। इनमें से
एक जीव[1] का शरीर मुर्ग से बड़ा और मोर से छोटा है। जब यह
गर्म होता है और अपना प्रदर्शन कराता है तब मोर के समान
र फैला कर नाचता है। इसके चोंच तथा पैर मुर्ग के समान होते हैं।
इसका सिर, गर्दन तथा गले के नीचे का अंश हर एक मिनट पर रंग
बदलता रहता है। जब यह गर्म होता है तब ये अंश लाल हो उठते
हैं, कहा जा सकता है कि यह लाल मूँगे से सज गया है और थोड़ी
ही देर में वह उन्हीं स्थानों में श्वेत हो जाता है और रूई के समान ज्ञात
होता है। कभी-कभी यह नीलम के रंग का ज्ञात होता है। यह
गिरगिटान के समान बराबर रंग बदलता रहता है। इसके सिर पर
माँस के दो टुकड़े होते हैं जो मुर्ग की चोटी के समान होते हैं। एक
वैचित्र्य यह है कि जब यह गर्म रहता है तब उक्त माँस के टुकड़े
उसके सिर से हाथी की सूड़ की तरह एक बित्ता लटक जाते हैं और
जब वह उन्हें उठा लेता है तो वे गैंडे की सींघ के समान दो अंगुल
उठ जाते हैं। उसकी आँखों के चारों ओर नीला घेरा होता है जो
कभी रंग नहीं बदलता। इसके पर विभिन्न रंगों के ज्ञात होते हैं और
मोर के परों के रंग से भिन्न होते हैं।

मुकर्रब खाँ एक बंदर भी लाया था, जो विचित्र तथा आश्चर्यजनक
था। उसके हाथ, पैर, कान तथा सिर बंदर ही के से होते हैं पर मुख

---

१. इसे पीरू या जिलमुर्ग कहते हैं। अँग्रेजी में टर्की कहा
जाता है।

लोमड़ी सा होता है। उसकी आखों का रंग बाज की आँखों के रंग सा होता है पर बाज से इसकी आँखें बड़ी हैं। सिर से पूँछ की छोर तक यह केवल एक हाथ का है। यह बंदर से छोटा तथा लोमड़ी से बड़ा है। इसके बाल भेड़ की ऊन की तरह हैं और इसका रंग खाकी है। कान की जड से ठुड्ढी तक यह मदिरा के रंग के समान लाल है। इसकी पूँछ अन्य बंदरों से भिन्न आधे हाथ से तीन चार अंगुल अधिक लंबी है। बिल्ली के दुम के समान इसकी पूँछ भी लटकती रहती है। कभी-कभी यह युवा मृग सा शब्द करता है। सब मिला कर यह एक विचित्र जीव है।

जंगली पक्षियों में जिसे तजू कहते हैं, यह कहा जाता है कि बंद किए जाने पर ये कभी अंडे नहीं देते। हमारे पिता के समय बहुत प्रयत्न किया गया कि इसके अंडे तथा बच्चे हों पर वह नहीं हो सका। हमने आज्ञा दी कि कुछ नर तथा मादे एक साथ रखे जायँ और तब क्रमशः अंडे हुए। हमने आदेश दिया कि ये अंडे मुर्गियों के नीचे रखे जायँ और इस प्रकार दो वर्ष में साठ-सत्तर बच्चे हुए जिनमें पचास-साठ बड़े हुए। जिसने यह सुना सभी चकित हो गए। ऐसा कहा जाता है कि विलायत अर्थात् ईरान के लोगों ने बहुत प्रयत्न किया पर अंडे-बच्चे कुछ नहीं हुए।

इन्हीं दिनों हमने महाबत खाँ का मंसब एक हजारी ५०० सवार बढ़ाया, जिससे उसका मंसब चार हजारी ३५०० सवार का हो गया। एतमादुद्दौला का मंसब भी बढ़ाकर चार हजारी १००० सवार का कर दिया। महासिंह के मंसब में भी पाँच सदी ५०० सवार बढ़ाए गए, जो मिलकर तीन हजारी २००० सवार का हो गया। एतकाद खाँ का मंसब भी पाँच सदी २०० सवार बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। इन्हीं दिनों ख्वाजा अबुल्हसन दक्षिण से आकर सेवा में

उपस्थित हुआ। दौलत खाँ, जो इलाहाबाद तथा सरकार जौनपुर का फौजदार नियत था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसके मंसब में पाँच सदी बढ़ाया, जो एक हजारी था। शरफ के दिन जो १९ फरवरदीन है हमने सुलतान खुर्रम का मंसब जो दस हजारी था बारह हजारी कर दिया और एतबार खाँ का मंसब जो तीन हजारी १००० सवार का था चार हजारी कर दिया। हमने मुकर्रब खाँ के दो हजारी १००० सवार के मंसब को पाँच सदी ५०० सवार से बढ़ा दिया। ख्वाजाजहाँ का दो हजारी १२०० सवार का मंसब भी पाँच सदी बढ़ाया गया। नए वर्ष के दिन होने के कारण दरबार के बहुत से सेवकों के मंसब बढ़ाए गए।

उसी दिन दिलीप दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसका पिता राय रायसिंह मर गया था इसलिए इसे राय की पदवी दी तथा खिलअत पहिरवाया। राय रायसिंह को एक और पुत्र सूरजसिंह था। यद्यपि दिलीप उसका टीकायत पुत्र था पर वह सूरज सिंह को उसकी माँ के प्रति विशेष प्रेम के कारण अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। जब उसकी मृत्यु का समाचार हमसे कहा गया उस समय सूरजसिंह ने, बुद्धिमानी के अभाव तथा लड़कपन के कारण, हमसे कहा कि हमारे पिता ने हमें अपना उत्तराधिकारी बनाया है और टीका दिया है। यह बात हमें पसंद नहीं आई और हमने कहा कि यदि तुम्हारे पिता ने तुम्हें टीका दिया है तो हम दिलीप को देंगे। तब हमने अपने हाथ से टीका देकर दिलीप को उसके पिता की जागीर तथा पैतृक संपत्ति दे दी। हमने एतमादुद्दौला को एक दावात तथा जड़ाऊ कलम दी।

कमायूँ का राजा लक्ष्मीचंद पार्वत्य प्रांत के बड़े राजाओं में से एक था। इसका पिता राय रुद्र गत सम्राट् अकबर के समय आया

था और आने के समय उसने प्रार्थना की थी कि राजा टोडरमल के पुत्र को भेजा जाय कि वह उसे लिवाकर दरबार में उपस्थित करे। इस कारण राजा का पुत्र उसे लाने के लिए भेजा गया था। इसी प्रकार लक्ष्मीचंद ने भी प्रार्थना की कि एतमादुद्दौला का पुत्र उसे दरबार लिवा जाने के लिए भेजा जाय। हमने शापूर को उसे लिवा लाने के लिये भेजा। इसने अपने पार्वत्य प्रांत की बहुत सी अलभ्य वस्तुएँ हमारे सामने उपस्थित कीं जैसे पहाड़ी टट्टू, शिकारी पक्षी जैसे बाज़, जुर्रा, आदि, कस्तूरी की नाभि, कस्तूरी मृग की खाल नाभि सहित, खाँडे, कटार तथा सभी प्रकार की वस्तुएँ। इस पार्वत्य प्रांत के राजाओं में यह राजा अपनी सुवर्ण-राशि के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इसके राज्य में सोने की खान है।

लाहौर में महल का निर्माण करने के लिए हमने ख्वाजाजहाँ ख्वाजा दोस्तमुहम्मद को भेजा, जो ऐसे कार्यों में बहुत कुशल है।

सरदारों के आपसी कलह तथा खानआजम की असावधानी के कारण दक्षिण का कार्य ठीक तौर से नहीं चल रहा था और अब्दुल्ला खाँ परास्त हो चुका था इसलिए हमने ख्वाजा अबुल् हसन को इस कलह की ठीक जाँच-पड़ताल करने के लिए वहाँ भेजा। बहुत जाँच करने तथा पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि अब्दुल्ला खाँ की पराजय का कारण उसका अहंकार तथा उग्र प्रकृति थी और साथ ही उसके किसी की सम्मति न मानने तथा सर्दारों के आपसी कलह एवं मनोमालिन्य भी कारण बन गए थे। संक्षेप में, यह निश्चय हुआ था कि गुजरात की सेना तथा उन सर्दारों के साथ जो उसकी सहायता के लिए नियुक्त किए गए थे, अब्दुल्ला खाँ नासिक तथा त्र्यंबक के मार्ग से रवाना हो। यह सेना विश्वासपात्र नेताओं तथा उत्साही अमीरों जैसे राजा रामदास, खानआलम, सैफ खाँ, अली मर्दान बहादुर, जफर खाँ तथा

न्य दरबारी सेवकों द्वारा उचित रूप से सुसज्जित की गई थी। इस सेना
ी संख्या दस सहस्र से अधिक हो गई थी और चौदह सहस्र के लगभग
ी। बरार की ओर से, यह निश्चय हुआ था कि राजा मानसिंह, खानजहाँ,
मीरुल्उमरा तथा अन्य सर्दारगण बढ़ेंगे। ये दोनों सेनाएँ एक
ूसरे की यात्राओं तथा पड़ावों का पता रखेंगी जिससे निश्चित दिन
र वे शत्रु को दोनों ओर से घेर लें। यदि इस निश्चय का पालन किया
ाता तथा उनके हृदय मिले हुए होते और उनके बीच स्वार्थ न
ा जाता तो बहुत संभव था कि सर्वशक्तिमान ईश्वर इन्हें उस दिन
िजय देता। जब अब्दुल्ला खाँ घाटों से उतरा और शत्रु के प्रांत में
हुँचा तब इसने दूसरी सेना के पास दूत भेजने की पर्वाह नहीं की
क जाकर दूसरी सेना से सूचना ले आवें और न निश्चित प्रबंध के
नुसार इसने अपनी प्रगति दूसरी सेना के साथ रखी कि वे निश्चित
िवस पर शत्रु की सेना को घेर लें। प्रत्युत् इसने अपनी ही शक्ति पर
िश्वास किया और यह विचार किया कि यदि वह अकेले विजय प्राप्त कर
ेगा तो अच्छा होगा। इस विचार ने इसके मस्तिष्क में ऐसा अधिकार
माया कि रामदास ने कितना भी समझाकर उससे वचन
ेना चाहा कि वह सम्मति करके ही आगे बढ़ेगा पर सब व्यर्थ हुआ।
ात्रु इसपर बड़ी सावधानी से दृष्टि रखे हुए था और उसने बहुत
ड़ी सेना बर्गियों (मराठा सवारों) को इसके विरुद्ध भेजा, जिससे
्रतिदिन युद्ध चलने लगा। रात्रि में वे बान तथा अन्य आतिशबाज़ी
ोड़ने से नहीं चूकते थे। अन्त में शत्रु पास आ गया और इसे दूसरी
ेना का तब भी कोई समाचार नहीं मिला, यद्यपि यह दौलताबाद के
ास पहुँच चुका था, जो दक्खिनियों के जमावड़े का स्थान था।
लमुँहे अंबर ने एक बच्चे को सुलतान बना दिया था, जो उसकी
म्मति में निज़ामुल्मुल्क के वंश का था। इसलिए कि जनसाधारण
स बालक के राजत्व को पूर्ण रूप से मान ले इसने उसे उठाया और

सहायक हुआ तथा स्वयं पेशवा एवं संचालक बना। यह बराबर सेना पर सेना अब्दुल्ला के विरुद्ध भेजता रहा यहाँ तक कि बड़ी भारी सेना एकत्र हो गई और आक्रमण होने तथा बान एवं आतिशबाज़ी के चलाए जाने से इसकी अवस्था बिगड़ गई। अंत में सभी राजभक्तों ने यही उचित समझा कि इस कारण कि दूसरी सेना से कोई सहायता नहीं आई और कुल दक्खिनी इन्हीं के विरुद्ध आ गए हैं, वे तुरंत पीछे हट चलें और दूसरा कोई प्रबंध करें। सभी ने इसे स्वीकार किया और एक मत होकर प्रातः काल होने के पहले चल दिए। दक्खिनियों ने अपने प्रांत की सीमा तक इनका पीछा किया और दोनों सेनाएँ प्रति दिन लड़ती रहीं। इन्हीं दिनों बहुत से उत्साही यथा साहसी युवक मारे गए। अली मर्दान खाँ बहादुर वीर के समान लड़ता हुआ बहुत घायल हो गया और शत्रु के हाथ पड़ गया[1] पर अपने निमक तथा प्राण निछावर करने का आदर्श अपने साथियों को दिखला गया। ज़ुल्फ़िकारबेग ने भी बड़ी वीरता दिखलाई पर एक बान उसके पैरों में लग गया जिससे दो दिन बाद वह मर गया। जब यह सेना भार जू के देश (बगलाना) में पहुँच गई, जो साम्राज्य के राजभक्तों में से था, तब शत्रु की सेना लौट गई और अब्दुल्ला खाँ गुजरात की ओर चला गया।

वास्तविकता यह है कि यदि अब्दुल्ला धीरे धीरे यात्रा करता और दूसरी सेना को भी पास आ जाने देता तो विजयी साम्राज्य के प्रधानों की इच्छानुसार ही काम होता। ज्यों ही अब्दुल्ला खाँ के लौटने का समाचार बरार की ओर से आती हुई सेना के अध्यक्षों को ज्ञात हुआ

१—इकबालनामा में लिखा है कि यह दौलताबाद में भेजा गया जहाँ अंबर ने इसके उपचार का प्रबंध किया पर यह कुछ दिन बाद मर गया। किसी ने इससे कहा कि विजय आसमानी है तब इसने कहा कि यह ठीक है पर युद्ध हम सैनिकों का है। पृ० ६६।

ो वहाँ अधिक ठहरने से विशेष लाभ न देख कर वे भी लौट गए और बुर्हानपुर के पास आदिलाबाद में पर्वेज की पड़ाव में चले गए। जब यह समाचार हमें आगरे में मिला तो हम बड़े चिंतत हुए और स्वयं वहाँ जाने का विचार किया कि उन लोगों को जो सेवक से स्वामी बन बैठे हैं जड़ मूल से नष्ट कर दें। अमीरों तथा अन्य स्वामिभक्तों ने इसे स्वीकार नहीं किया। ख्वाजा अबुल्हसन ने प्रार्थना की कि उस प्रांत के कार्यों का जितना ज्ञान खानखानाँ को है उतना और किसीको नहीं है इसलिए उन्हीं को भेजिए जिसमें वहाँ जो गड़बड़ी मच गई है उसे वह ठीक करें और अवसर के अनुकूल मतभेद को दूर करें जिसमें वहाँ का कुल कार्य अपने पहले रूप में आ जाय। अन्य स्वामिभक्तों ने सम्मति पूछी जाने पर यही बात ठीक बतलाई कि खानखानाँ को भेजना चाहिए और ख्वाजा अबुल्हसन को भी उनके साथ जाना चाहिए। इस विचार को स्वीकार कर हमने खानखानाँ तथा उसके साथियों एवं उनके कार्यकर्ताओं को ७ वें वर्ष के १७ वीं उर्दिबिहिश्त, रविवार को जाने की छुट्टी दे दी। शाहनवाज खाँ, ख्वाजा अबुल्हसन, रज्जाकवर्दी उजबेग तथा उसके बहुत से अनुयायियों ने उसी दिन विदा होने की सलामी दी। खानखानाँ को छ हजारी मंसब, शाहनवाज खाँ को तीन हजारी ३००० सवार का मंसब, दाराब खाँ का मंसब पाँच सदी ३०० सवार बढ़ा कर दो हजारी १५०० सवार का मंसब और रहमानदाद उसके सबसे छोटे पुत्र को भी उचित मंसब दिया। हमने खानखानाँ को बहुत भारी खिलअत, जड़ाऊ खंजर, साज सहित खास हाथी तथा एराकी घोड़ा दिया। इसी प्रकार उसके पुत्रों तथा साथियों को खिलअत तथा घोड़े दिए। इसी महीने में मुइज्जुल्मुल्क अपने पुत्रों के साथ काबुल से आकर देहली चूमने से सौभाग्यान्वित हुआ। श्यामसिंह तथा राय मंगत भदौरिया बंगश की सेना में नियत थे, और कुलीज खाँ की संस्तुति पर इनके मंसब बढ़ाए

गए। श्यामसिंह का डेढ़ हजारी मंसब पाँच सदी से बढ़ाया गया और राय मंगत को भी उच्च मंसब दिया।

बहुत समय पहले आसफ खाँ[1] के बीमार होने का समाचार मिला था। उसकी बीमारी कभी घट जाती थी और कभी बढ़ जाती थी यहाँ तक कि अंत में वह बुर्हानपुर में तिरसठवें वर्ष में मर गया। उसकी बुद्धि तथा योग्यता अच्छी थी और वह प्रत्युत्पन्नमति था। वह कविता भी करता था। उसने 'खुसरू व शीरीं' काव्य प्रस्तुत कर हमें समर्पित किया था तथा उसे नूरनामा कहता था। हमारे श्रद्धेय पिता के समय वह एक अमीर बनाया गया तथा वजीर नियत हुआ। हमारी शाहजादगी के समय इसने कई कार्य मूर्खता के किए थे और बहुत से मनुष्य, स्वयं खुसरू भी समझते थे कि राजगद्दी होने पर हम इसके साथ बुरा व्यवहार करेंगे परंतु इसके तथा अन्य लोगों के मन में जो था उसके विरुद्ध हमने इस पर कृपा की तथा इसका मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया। इसके कुछ दिन तक पूर्ण अधिकार के साथ वजीर रहने पर भी हमने इसके प्रति बराबर कृपा बनाए रखा। इसकी मृत्यु पर इसके पुत्रों को मंसब दिया तथा कृपा बनाए रहा। अंत में यह स्पष्ट ज्ञात हुआ कि इसका मन तथा सत्यता जैसी होनी चाहिए थी वैसी नहीं थी और अपने कुकार्यों को ध्यान में रखते हुए यह सदा हमसे सशंकित रहता था। लोग कहते हैं कि काबुल में हुए षड्यंत्र तथा उपद्रव की इसे खबर थी और इसने उन दुष्टों को सहायता भी दी थी। वास्तव में इस पर इतनी कृपा तथा दया रखते हुए भी हमें इस पर विश्वास नहीं था कि यह स्वामिद्रोही तथा अभागा नहीं है।

---

१. मुगल दरबार भा. २ पृ. ४१४-२० पर इसकी जीवनी दी है।

थोड़े ही समय के अनंतर उर्दिबिहिश्त महीने की २५वीं को मिर्जा गाजी[1] की मृत्यु का समाचार मिला। उक्त मिर्जा ठट्टा के शासकों के वंश से तर्खान जाति का था। इसका पिता मिर्जा जानी[2] हमारे श्रद्धेय पिता के राज्यकाल में राजभक्त हुआ था और खानखानाँ के साथ, जो उसके प्रांत पर नियत हुआ था, लाहौर में अकबर की सेवा में उपस्थित होने का इसने सौभाग्य प्राप्त किया था। बादशाही कृपा से इसे इसीका प्रांत मिला और दरबार में रहने की इच्छा से इसने अपने मनुष्यों को ठट्टा के प्रबंध तथा शासन पर भेज दिया तथा जब तक जीवित रहा सेवा में लगा रहा। अंत में यह बुर्हानपुर में मर गया। इसके पुत्र मिर्जा गाजी खाँ को जो ठट्टा में था, विगत सम्राट् के फर्मान के अनुसार उसी प्रांत का शासन मिल गया। सईद खाँ को, जो भक्कर में था, आज्ञा भेजी गई कि इसके यहाँ समवेदना प्रगट करने जाय तथा दरबार लिवा लावे। उक्त खाँ ने आदमी भेजकर उसे राजभक्ति के मार्ग पर दृढ़ रहने के लिए कहलाया। अंत में उसे आगरा लिवा लाकर हमारे श्रद्धेय पिता के चरण चूमने का उसे सौभाग्य प्राप्त कराया। वह आगरे ही में था जब हमारे पिता मरे और हम गद्दी पर बैठे। खुसरू का पीछा करते हुए जब हम लाहौर पहुँचे तब समाचार मिला कि खुरासान की सीमाओं पर सर्दारगण इकट्ठे हुए हैं और कंधार की ओर बढ़ रहे हैं तथा वहाँ का अध्यक्ष शाहबेग दुर्ग में बंद होकर सहायता माँग रहा है। ऐसी आवश्यकता पड़ने पर कंधार का सहायता के लिए एक सेना मिर्जा गाजी तथा अन्य अमीरों एवं सर्दारों के अधीन वहाँ भेजी गई। जब वह सेना कंधार के पास पहुँची तब खुरासानी सेना अपने में ठहरने की सामर्थ्य न देखकर लौट गई। मिर्जा गाजी ने कंधार में पहुँचकर

१—मुगल दरबार भा० ३ पृ० २३०-३३ पर इसकी जीवनी दी है।

२—मुगल दरबार भा० ३ पृ० २८५-९५ पर इसकी जीवनी दी है।

वह प्रांत तथा दुर्ग सर्दार खाँ को सौंप दिया, जो वहाँ के शासन पर नियत किया गया था, और शाह बेग अपनी जागीर पर चला गया। मिर्जा गाजी भक्कर के मार्ग से लाहौर को चला। सरदार खाँ थोड़े ही समय तक कंधार में रहा था कि उसकी मृत्यु हो गई और पुनः कंधार के लिए एक सर्दार तथा स्वामी की आवश्यकता पड़ गई। इस बार हमने ठट्टा में कंधार को मिला दिया और उसे मिर्जा गाजी को सौंप दिया। उस समय से अपनी मृत्यु तक वह निरंतर उसकी रक्षा तथा शासन में लगा रहा और उपद्रवियों के प्रति भी उसका व्यवहार अच्छा था। मिर्जा गाजी के स्थान पर कंधार में एक सर्दार का भेजा जाना आवश्यक हो गया था इसलिए हमने अबुल् बे उजबेग को नियत किया, जो मुलतान में तथा उसके पास था। हमने उसका मंसब डेढ़ हजारी १००० सवार से बढ़ाकर तीन हजारी ३००० सवार का कर दिया और उसे बहादुर खाँ की पदवी तथा झंडा प्रदान किया।

दिल्ली की प्रांताध्यक्षता तथा उस प्रांत की रक्षा एवं शासन का भार हमने मुकर्रब खाँ को दिया। रूप खवास को जो हमारे श्रद्धेय पिता के व्यक्तिगत सेवकों में से था, खवासखाँ की पदवी दी और उसे एक हजारी ५०० सवार का मंसब देकर कन्नौज सरकार का फौजदार नियत किया। एतमादुद्दौला के पुत्र एतकाद खाँ की पुत्री[1] से खुर्रम के विवाह की मँगनी हो चुकी थी और विवाह की मजलिस का प्रबंध

१—मुगल दरबार भा० २ पृ० ४०२ पर एतकादखाँ के स्थान पर एतमादखाँ लिखा है और इसकी पुत्री अर्जुमंदबानू से शाहजहाँ की शादी हुई, जो मुमताज महल नाम से प्रसिद्ध हुई। अन्य इतिहासों से ऐसा ज्ञात होता है कि निकाह के एक महीने बाद यह मजलिस हुई थी।

हो चुका था इसलिए हम गुरुवार १८ खुरदाद को उसके गृह पर गए और वहाँ एक दिन तथा रात्रि ठहरे। खुर्रम ने हमें भेंट दी और उसने बेगमों, अपनी माताओं तथा अन्य हरमवालियों को आभूषण दिए एवं सर्दारों को खिलअत दिए।

हमने महल के बख्शी अब्दुर्रज्जाक को ठट्टा प्रांत शांत रखने के लिए भेजा जब तक कि कोई सरदार वहाँ के सैनिकों तथा कृषकों को शांत करने तथा उस प्रांत को शासित करने के लिए नियुक्त न हो जाय। हमने उसका मंसब बढ़ाकर तथा हाथी और शाल देकर विदा किया। हमने उसके स्थान पर मुइज्जुलमुल्क को बख्शी नियत किया। ख्वाजाजहाँ जो लाहौर की इमारतों का निरीक्षण करने तथा उनका प्रबंध करने भेजा गया था, इस महीने के अंत में आकर सेवा में उपस्थित हुआ। मिर्जा ईसा तरखान[१], जो मिर्जा गाजी का एक संबंधी था, दक्षिण की सेना में नियत था। हमने उसे ठट्टा के प्रबंध के संबंध में बुला भेजा था और वह इसीदिन सेवा में उपस्थित हुआ। यह कृपा के योग्य था इसलिए इसे एक हजारी ५०० सवार का मंसब दिया। इसी समय हमें रक्त की बीमारी हो गई। हकीमों की सम्मति से उसी महीने के बुधवार को हमारे बाएँ हाथ से एक सेर रक्त निकाला गया, जिससे हमें बड़ा हलकापन ज्ञात हुआ और हमने सोचा कि यदि रक्त निकालने को विद्युत् कहें तो अच्छा है। आजकल यही शब्द प्रचलित है। मुकर्रबखाँ को, जिसने रक्त निकाला था, हमने एक जड़ाउ खपवा दिया। हथसाल तथा घुड़साल का दारोगा किशनदास, जो गत सम्राट् के समय से अब तक उन दोनों विभागों का दारोगा चला आ रहा है, निरंतर राजा तथा एक हजारी मंसबदार होने की आशा लगाए हुए

१—मुगल दरबार भा० २ पृ० ५०६–८ पर इसकी जीवनी दी है।

था और इसके पहले उसे पदवी मिल चुकी थी अब एक हजारी मंसबदार बना दिया। मिर्जा रुस्तम सफवी को जो सुलतान हुसेन मिर्जा सफवी का पुत्र था तथा दक्षिण की सेना में नियुक्त था, उसकी प्रार्थना पर हमने बुला लिया। तीर महीने की नवीं तारीख शनिवार को वह पुत्रों के साथ सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक लाल तथा छियालीस बड़ी मोतियाँ भेंट की। हमने भक्कर के अध्यक्ष ताजखाँ का मंसब जो साम्राज्य के पुराने अमीरों में से एक था, पाँच सदी ५०० सवार से बढ़ा दिया।

शुजाअत खाँ की मृत्यु की कहानी बड़ी विचित्र थी। इसके इतनी अच्छी सेवा करने के अनंतर जब इस्लाम खाँ ने इसे सरकार उड़ीसा जाने की छुट्टी दी तब एक रात्रि वह मार्गमें एक हथिनी पर चौखंडीदार अमारी में बैठा हुआ था और उसकी आज्ञा से एक युवा खोजा उसके पीछे बैठा हुआ था। जब इसने पड़ाव छोड़ा तब एक मस्ताया हुआ हाथी मार्ग में सिक्कड़ों से बँधा हुआ था। घोड़ों की टापों तथा घुड़सवारों के चलने के शोर से उसने सिक्कड़ को तोड़ने का प्रयत्न किया। इस पर अत्यधिक शोर मचा और गड़बड़ी हो गई। जब उस खोजे ने यह शोर सुना तो उसने घबड़ाहट में शुजाअत खाँ को जगाया, जो सो गया था या मदिरा से अचेतन हो गया था, और कहा कि एक हाथी मस्ता गया तथा छूट गया है और इसी ओर आ रहा है। ज्यों ही उसने यह सुना त्यों ही वह ऐसा घबड़ा गया कि चौखंडी के आगे की ओर से वह नीचे कूद पड़ा। कूदने के समय इसके पैर का अँगूठा एक पत्थर से ऐसा टकराया कि वह फट गया और इसी घाव के कारण वह दो तीन दिन में मर गया। संक्षेप में, यह वृत्तांत सुनकर हम पूर्ण रूप से चकरा गए। एक वीर पुरुष एक बालक की चीख या बात सुन कर ऐसा घबड़ा जाय कि हाथी पर से अपने को नीचे गिरा दे, यह वास्तव में एक विचित्र बात है। इस

घटना का समाचार हमें १९ वीं तीर को मिला। हमने उसके पुत्रों को सान्त्वना दी तथा कृपा कर सब को पद दिए। उसके साथ ऐसी घटना न घटी होती तो जिस प्रकार उसने अच्छी सेवाएँ की थीं उससे वह अधिक उच्च मंसब, पद तथा कृपाएँ पाता। मिसरा—

भाग्य के विरुद्ध कोई प्रयत्न नहीं कर सकता।

इस्लाम खाँ ने बंगाल से एक सौ साठ हाथी-हथिनी भेजे थे जो सब हमारे सामने उपस्थित किए तथा निजी हथसाल में रखे गए। कमायूँ के राजा टेकचंद ने विदा होने के लिए प्रार्थना की। हमारे पिता के समय इसके पिता को सौ घोड़े दिए गए थे इसलिए हमने भी इसे एक सौ घोड़े तथा एक हाथी दिया। दरबार में रहते समय इसे हमने खिलअतें तथा एक जड़ाऊ छुरा दिया था। इसके भाइयों को भी हमने खिलअत तथा घोड़े दिए। पहले के प्रबंध के अनुसार हमने उसका राज्य उसे दे दिया और वह प्रसन्नता तथा संतोष के साथ चला गया।

ऐसा हुआ कि एकाएक अमीरुल्उमरा का यह शैर हमारे ध्यान में आ गया—

ए मसीहा, प्रेम के मारे हुओं के सिर पर से मत जाओ।
तेरा एक को जिला देना सैकड़ों खून के बराबर है॥

हमें भी कविता करने की अभिरुचि है इसलिए कभी इच्छा से और कभी स्वतः शैर या किते हम बना लेते हैं। इसी से निम्नलिखित शैर हमारे मन में आया—

अपना कपोल मत फेरो,
क्योंकि तेरे बिना एक क्षण नहीं जीवित रह सकता।
तेरे लिए एक हृदय तोड़ देना सौ खून के बराबर है॥

जब हमने यह शैर पढ़ा तब हर एक कविता करनेवाले ने एक-एक शैर इसी वजन पर पढ़ा। मुल्ला अली अहमद मुहकन ने, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, बुरा नहीं कहा था—

ऐ नासिहा, पुराने कलाल के रोने से भय खा।
तेरा एक कंटर को तोड़ देना सौ खून के बराबर है।

अबुल् फत्ह दक्खिनी, जो आदिल खाँ के बड़े सरदारों में से एक था और जो दो वर्ष पहले राजभक्त होकर विजयी सेना के अध्यक्षों में परिगणित हो चुका था, १० वीं अमूरदाद को हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और हमने उसे एक खास तलवार तथा खिलअत दिया। कुछ दिन बाद हमने उसे एक खास घोड़ा भी दिया। ख्वाजगी मुहम्मद हुसेन, जो अपने भ्रातुष्पुत्र का प्रतिनिधि होकर कश्मीर गया था, जब वहाँ के कार्यों से संतुष्ट होकर लौटा तब उसी दिन सेवा में उपस्थित हुआ। पटना[1] की प्रांताध्यक्षता तथा शासन के लिए एक अमीर को भेजना आवश्यक हो गया था, इसलिए हमने मिर्जा रुस्तम को भेजना निश्चित किया। हमने उसका मंसब पाँच हजारी १५०० सवार से बढ़ा कर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया और २६ जमादि-उस्सानी, २ शहरवार को हमने उसे पटना का प्रांताध्यक्ष नियत कर दिया तथा उसे एक खास हाथी, जड़ाऊ जीन सहित घोड़ा, जड़ाऊ तलवार, एवं बहुमूल्य खिलअत देकर बिदा कर दिया। इसके पुत्रों तथा इसके भाई मुजफ्फर हुसेन खाँ मिर्जाई के पुत्रों को मंसब बढ़ा कर तथा हाथी, घोड़े एवं खिलअत देकर इसी के साथ भेज दिया। हमने राय दिलीप को मिर्जा रुस्तम की सहायता पर नियत किया। इसका निवासस्थान उसके पास ही था। इसलिए इसने इस कार्य के

---

१. इकबालनामा पृ० ६८ पर ठट्टा लिखा है और मुगल-दरबार से भी यही ठीक ज्ञात होता है।

लिए अच्छी सेना एकत्र कर ली। हमने इसका मंसब पाँच सदी ५०० सवार से बढ़ा दिया, जिससे इसका मंसब दो हजारी १००० सवार का हो गया और इसे एक हाथी भी दिया। अबुल् फत्ह दक्खिनी को नागपुर सरकार तथा उसके पड़ोस में जागीर मिली थी इसलिए उसे छुट्टी दी कि वह अपनी जागीर का प्रबंध करे तथा उस प्रांत की रक्षा तथा शासन पर भी दृष्टि रखे। खुसरू बे उजबेग को मेवाड़ सरकार का फौजदार नियत किया और इसके आठ सदी ३०० सवार के मंसब को बढ़ा कर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया और एक घोड़ा उपहार में दिया। हमारी दृष्टि मुकर्रब खाँ की पुरानी सेवाओं पर थी इसलिए हमने उसकी हार्दिक इच्छा पूरी करना चाहा। हमने उसका मंसब बढ़ा दिया था और उसे अच्छी जागीरें भी मिल चुकी थीं पर वह झंडा तथा डंका भी प्राप्त करना चाहता था इसलिए इस समय हमने वह भी दे दिया। ख्वाजा बेग मिर्जा सफवी का पोष्य पुत्र सालिह वीर तथा उत्साहपूर्ण युवक था इसलिए हमने उसे खंजर खाँ की पदवी देकर सेना के लिए उत्साहित किया।

गुरुवार २२ शहरिवार, १७ रज्जब सन् १०२१ हि० को हमारा सौर तुलादान मरियमुज्जमानी के गृह पर हुआ। इस प्रकार तुलादान करना हमारा निश्चित नियम था। गत सम्राट् अकबर, जो दया तथा उदारता के प्रकट करने के स्रोत थे, इस प्रथा के समर्थक थे। वर्ष में दो बार अनेक प्रकार के धातु सोना-चाँदी तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं से तुलादान करते थे, एक बार सौर तथा एक बार चांद्र के अनुसार, और कुल मूल्य को जो एक लाख रुपए होता था फकीरों तथा दीनों में बँटवा दिया करते थे। हम भी यह वार्षिक प्रथा पालन करते हैं और उसी प्रकार तौलवाते तथा फकीरों में बँटवा देते हैं।

बंगाल का दीवान मोतकिद खाँ, जिसे उस पद से छुट्टी मिल गई थी, उसमान के पुत्रों, भाइओं तथा कुछ सेवकों को हमारे सामने

उपस्थित किया, जिन्हें इस्लाम खाँ ने इसके साथ दरबार भेजा था। प्रत्येक अफगान एक एक विश्वासपात्र सेवक को सौंपा गया। उसने अपनी भेंट हमारे सामने उपस्थित की, जिसमें पच्चीस हाथी, दो लाल, जड़ाऊ फूल कटार, विश्वसनीय हिंजड़े, बंगाल के वस्त्र आदि थे। सुलतान ख्वाजा का पुत्र मीर मीरान, जो दक्षिण की सेना में नियत था, सेवा में उपस्थित हुआ और एक लाल उसने भेंट किया। काबुल की सीमा पर बंगश की सेना का अध्यक्ष कुलीज खाँ तथा उस प्रांत के अमीरों में, जो उसकी अधीनता में सहायक रूप में भेजे गए थे, कलह हो गया था, विशेष कर खानदौराँ से इसलिए हमने ख्वाजाजहाँ को भेजा कि वह जाँच करे कि कौन पक्ष दोषी है। मेह्र महीने की १२ वीं को मोतकिद खाँ बख्शी के उच्च पद पर नियुक्त किया गया और उसका मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया गया। मुकर्रब खाँ के मंसब को दूसरी बार थोड़ा बढ़ाकर अर्थात् पाँच सदी बढ़ाकर ढाई हजारी १५०० सवार का कर दिया। खानखानाँ की प्रार्थना पर फरेंदूँ खाँ बर्लास का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी २००० सवार का कर दिया। राय मनोहर को एक हजारी ८०० सवार का और राजा वीरसिंह देव को चार हजारी २२०० सवार का मंसब दिया। रामचद्र बुंदेला के पौत्र भारत को उसकी मृत्यु पर राजा की पदवी दी। २८ आबान को जफर खाँ आज्ञा पाने पर गुजरात प्रांत से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। भेंट में यह एक लाल तथा तीन मोती ले आया।

६ अज़र, ३ शव्वाल को बुर्हानपुर से समाचार आया कि अमीरुल् उमरा निहालपुर परगना में रविवार २७ आबान को मर गया। लाहौर में अत्यधिक बीमार हो जाने के बाद उसकी ज्ञानशक्ति कम हो गई और स्मरणशक्ति भी निर्बल हो गई। यह बहुत सच्चा आदमी था। शोक का विषय है कि इसने ऐसा पुत्र नहीं छोड़ा जो आश्रय

तथा कृपा के योग्य हो। चीन कुलीज खाँ अपने पिता के यहाँ से, जो पेशावर में था, २० अजर को आया और पिता की ओर से एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपये भेंट किए। इसने अपनी ओर से भी एक घोड़ा, वस्त्र तथा अन्य वस्तुएँ भेंट की। हमने जफर खाँ को, जो विश्वासपात्र खानःजाद तथा धाय पुत्रों में था, विहार का शासन दिया और पाँच सदी ४०० सवार से उसका मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया और उसके भाइओं को भी खिलअत तथा घोड़े देकर उन्हें उसी प्रांत में जाने की आज्ञा दे दी। वह बराबर यह आशा लगाए था कि उसे स्वतंत्र सेवा-कार्य मिले, जिससे वह अपनी योग्यता दिखला सके। हमने उसे जाँचना चाहा और इस सेवा के द्वारा उसे कसौटी पर कसे जाने का अवसर दिया।

यह ऋतु यात्रा करने तथा अहेर खेलने के योग्य था इसलिए २ जीकदः, ४ दे (२५ दिसं० सन् १६१२ ई०) को हम आगरा से निकले और दहरः बाग में पहुँचे, जहाँ चार दिन रहे। उसी महीने की १० वीं को सलीमा सुलतान बेगम की मृत्यु का समाचार मिला, जो नगर ही में बीमार थीं। इसकी माँ गुलरुख बेगम बाबर शाह की पुत्री थी और इसका पिता मिर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद नक्शबंदी ख्वाजा था। यह हर प्रकार के अच्छे गुणों से विभूषित थी। स्त्रियों में इतना कौशल तथा योग्यता कम दिखलाई पड़ती है। बादशाह हुमायूँ ने कृपा करके अपनी बहिन की इस पुत्री की बैराम खाँ से मँगनी कर दी थी। उनकी मृत्यु पर गत सम्राट् अकबर के राज्य के आरंभ में निकाह हुआ था। उक्त खाँ के मारे जाने पर हमारे श्रद्धेय पिता ने इससे शादी कर ली थी। यह साठ वर्ष की अवस्था में मरी[1]। उसी दिन

१—सलीमा सुलतान बेगम का जन्म ४ शव्वाल सन् ९४५ हि० को हुआ था और मृत्यु के समय वह ७६ चांद्र वर्ष और ७३ सौर वर्ष

दहरः बाग से हमने कूच किया और एतमादुद्दौला को उसको दफ़न कराने भेजा तथा आज्ञा दी कि आँदकर बाग में उस इमारत में जिसे उसने स्वयं बनवाया था, वह गाड़ा जाय। दे महीने को १७ वीं को मिर्जा अली बेग अकबर शाही दक्षिण की सेना से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। ख्वाजाजहाँ, जिसे हमने काबुल प्रांत में भेजा था, इसी महीने की २१ वीं को लौटकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। उसके जाने तथा आने में तीन महीने ग्यारह दिन लगे थे। इसने बारह मुहर तथा बारह रुपए भेंट किए। इसी दिन राना रामदास भी दक्षिण की विजयी सेना से लौटकर सेवा में आया और एक सौ एक मुहरें भेंट कीं। जाड़े की खिलअत दक्षिण के अमीरों के लिए नहीं भेजी गई थीं इसलिए वे हयात खाँ के हाथ भेजी गईं। इस कारण कि सूरत बंदर कुलीजखाँ को जागीर में दिया गया था, उसने प्रार्थना की कि उसका पुत्र चीन कुलीज उसकी रक्षा तथा शासन के लिए भेज दिया जाय। २७ वीं को उसे खिलअत दी जा चुकी थी तब भी उसे खिलअत, खाँ की पदवी तथा झंडा देकर जाने की छुट्टी दे दी। काबुल के अमीरों को समझाने के लिए, जिनमें तथा कुलीज खाँ में कुछ मनोमालिन्य आ गया था, हमने राना रामदास को वहाँ भेजा और उसे एक घोड़ा, खिलअत तथा व्यय के लिए तीस सहस्र रुपए दिए।

६ बहमन को, जब हमारा पड़ाव बारी पर्गना में पड़ा हुआ था, ख्वाजगी मुहम्मद हुसेन की मृत्यु का समाचार मिला, जो साम्राज्य का पुराना सेवक था। इसका बड़ा भाई मुहम्मद कासिम खाँ हमारे

की थी। यह मखफी उपनाम से कविता करती थी। इकबालनामा में इसका एक शैर दिया है—तेरे काकुल को मैंने मस्ती से प्राण-सूत्र कहा है। इसी कारण मस्त होने से ऐसा अस्त व्यस्त शब्द कहा है॥

श्रद्धेय पिता के समय विशेष कृपापात्र था और ख्वाजा मुहम्मद हुसेन भी विश्वासपात्र सेवकों में से था तथा बकावल वेगी आदि से पद पर काम करता था। इसे कोई पुत्र नहीं था और इसे डाढ़ी मूँछ आदि के एक बाल भी नहीं थे। बोलने के समय बड़ा कर्कश शब्द करता था और लोग इसे हिजड़ा समझते थे। शाहनवाज खाँ, जिसे खानखानाँ ने कुछ बातें कहने के लिये बुर्हानपुर से भेजा था, उसी महीने की १५ वीं को आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए भेंट किए। अब्दुल्ला खाँ की शीघ्रता तथा अमीरों के कपटाचरण से दक्षिण के कार्य विशेष आशाजनक नहीं थे इसलिए दक्खिनियों को कुछ कहने का अवसर मिल गया और वे वहाँ के सर्दारों तथा साम्राज्य के हितैषियों से संधि की बातचीत करने लगे। आदिल खाँ ने अधीनता स्वीकार कर ली और प्रार्थना की कि यदि दक्षिण के कार्य उसे सौंपे जायँ तो वह ऐसा प्रबंध करेगा कि बादशाही पदाधिकारियों के हाथ से जो जिले निकल गए हैं उनमें से कुछ लौट आवें। राजभक्तों ने समयानुकूल आवश्यकता समझ कर वैसी प्रार्थना की और कुछ बातें निश्चित भी हुईं तथा खानखानाँ ने इन सब को तै करने का भार लिया। खानआजम ने विद्रोही राणा को दमन करने की इच्छा प्रगट की और ग़ज़ा का पुण्य लूटने के लिए इस सेवा के लिए प्रार्थना की। उसे मालवा जाने की आज्ञा दी, जो उसकी जागीर थी, कि वहाँ कुल प्रबंध ठीक कर उस कार्य पर जाय। अबुल् बे उजबेग का मंसब एक हजारी ५०० सवार बढ़ा कर ३५०० सवार का कर दिया। अहेर खेलना दो महीना बीस दिन तक चलता रहा और इस बीच हम रोज अहेर खेलने जाते रहे। नौ रोज को पचास-साठ दिन बच रहे थे इसलिए हम लौटे और २४ अस्फंदियार को दहरः बाग में उतरे। दरबारी तथा कुछ मंसबदार, जो आज्ञानुसार नगर में रह गए थे, उसी दिन सेवा में उपस्थित हुए। मुकर्रब खाँ ने एक अलंकृत कलश, फिरंगी टोपियाँ

तथा जड़ाऊ गौरैया पक्षी भेंट किया। हम तीन दिन बाग में रहे और २७ अस्फंदियार को नगर में पहुँचे। अहेर के इस काल में २२३ मृग आदि, ९५ नीलगाय, २ सूअर, ३६ सारस बगुला आदि और १४५७ मछलियाँ मारी गईं।

आठवाँ जलूसी वर्ष

हमारी राजगद्दी का आठवाँ वर्ष मुहर्रम सन् १०२२ हि० में आरंभ हुआ। बृहस्पतिवार २७ मुहर्रम[1] की रात्रि में, जो आठवें जलूसी वर्ष के १म फरवरदीन को पड़ता है, साढ़े तीन घड़ी दिन व्यतीत होने पर सूर्य मीन राशि से मेष राशि में गए, जो प्रसन्नता तथा विजय का स्थान है। नौरोज को प्रातःकाल ही से उत्सव की तैयारी हुई और हर साल की चाल पर सजावट हुई। यह दिन बीतने पर हम राजसिंहासन पर बैठे और अमीर गण, साम्राज्य के मंत्रिगण तथा राजमहल के दरबारीगण सभी तस्लीम करने तथा मुबारकबादी देने के लिए उपस्थित हुए। आनंद के इन दिनों में हम दरबार आम में दिन भर बैठते थे। जिन लोगों की कुछ इच्छा थी या कोई वाद उपस्थित करना था वे प्रार्थनापत्र देते थे और राजमहल के सेवकों की भेंट हमारे सामने उपस्थित की जाती थी। कंधार के शासक अबुल बे ने एराकी घोड़े तथा शिकारी कुत्ते भेजे थे, जो हमारे सामने

---

१. इलि० डा० भा० ६ पृ० ३३४ पर २६ मुहर्रम है और इक़बालनामा पृ० ६८ पर २८ मुहर्रम दिया है। श्री गौरी शंकर हीराचंद ओझा ने भी २८ मुहर्रम ही लिखा है। यह ११ मार्च सन् १६१३ ई० को पड़ता है।

लाए गए। उसी महीने की ६ वीं को अफजल खाँ बिहार प्रांत से आया और हमारी सेवा में उपस्थित होकर उसने एक सौ मुहरें, एक सौ रुपए तथा एक हाथी भेंट किया। १२ वीं को एतमादुद्दौला की भेंट हमारे सामने सामने लाई गई, जिसमें रत्न, कपड़े तथा अन्य वस्तुएँ थीं। जो हमें पसंद आईं वे स्वीकृत की गईं। अफजल खाँ के हाथी के सिवा दस दूसरे हाथी इसी दिन हमारी दृष्टि में लाए गए। १३ वीं को तरबियत खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई।

मोतकिद खाँ ने आगरे में एक मकान क्रय किया और कुछ दिन उसमें रहा। इस पर दुर्घटनाएँ एक के बाद दूसरी घटती रहीं। हमने सुना है कि सौभाग्य तथा दुर्भाग्य चार वस्तुओं पर अवलंबित होती है पहली पत्नी, दूसरा दास, तीसरा गृह तथा चौथा घोड़ा। किसी मकान के शुभाशुभ के विचार से जाँच के लिए कुछ नियम बने हुए हैं और वे वास्तव में निर्भ्रांत हैं। जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसके एक छोटे टुकड़े की मिट्टी खोद ले और उसी मिट्टी को उसमें भरे। यदि वह उस मिटी से बराबर भर जाय तो वह साधारण शुभ है, न विशेष शुभ और न अशुभ। यदि न भरे अर्थात् कम हो जाय तो अशुभ और यदि भरने पर कुछ बढ़ जाय ता विशेप शुभ है। १४ वीं को एतबार खाँ का मंसब एक हजारी ३०० सवार बढ़ा कर दो हजारी ५०० सवार का कर दिया। इस्लाम खाँ का पुत्र होशंग, जो अपने पिता के साथ बंगाल में था, इसी समय आकर सेवा में उपस्थित हुआ। यह अपने साथ कुछ मघ लोगों को लिवा लाया, जिनका देश पीगू तथा रखंग है और उन्हीं के अधिकार में अब तक है। हमने उनकी प्रथाओं तथा धर्म पर पूछताछ की। वास्तव में वे मनुष्य रूप में पशु हैं। वे जल तथा स्थल के सभी जीवों को खा जाते हैं और उनके धर्म में किसी के लिए निषेध नहीं है। वे हर एक के साथ खा लेते हैं। ये विमाता से हुई बहिन से विवाह कर

लेते हैं। इनका मुख कराकलमाकों सा होता है पर इनकी भाषा तिब्बत की है और तुर्की से पूर्णतः भिन्न है। एक पर्वत-शृंखला ऐसी है जिसका एक छोर काशगर प्रांत को छूता है तथा दूसरा पीगू देश को। इनका कोई विशेष धर्म नहीं है और न ऐसे नियम हैं जो धर्म की कोटि में आते हैं। वे मुसल्मान धर्म से दूर हैं तथा हिंदुओं से भिन्न हैं।

शरफ के (उन्नीसवीं फरवर्दीन) दो तीन दिन पहले हमारे पुत्र खुर्रम ने हमें अपने गृह पर लिवा जाने की प्रार्थना की कि वह नौरोज़ की अपनी भेंट वहीं उपस्थित करे। हमने इसे स्वीकार किया और एक दिन तथा एक रात्रि उसके यहाँ रहा। उसने भेंट दी और हमने पसंद की कुछ वस्तुएँ लेकर बाकी लौटा दीं। इसके दूसरे दिन मुर्तजा खाँ ने अपनी भेंट हमारे सामने उपस्थित की। शरफ के दिन तक प्रति दिन एक या दो या तीन अमीरों की नजरें हमारे सामने रखी गईं। सोमवार १९ वीं फरवर्दीन को शरफ का उत्सव हुआ। उस शुभ दिन हम राजसिंहासन पर बैठे और आज्ञा दी कि हर प्रकार के मादक द्रव्य मदिरा आदि लाई जायँ जिससे हर एक अपनी रुचि के अनुसार उनमें से ले। बहुतों ने मदिरा लिया। इसी दिन महाबत खाँ की भेंट हमारे सामने लाई गई। सौ तोले की एक मुहर, जिसे कौकबेतालअ अर्थात् भाग्य-नक्षत्र कहते हैं, हमने ईरान के शासक के राजदूत यादगार अली खाँ को दी। उत्सव अच्छी प्रकार बीत गया। जलसा के टूटने पर हमने आज्ञा दे दी कि साज-सज्जा तथा सजावट सब लोग ले जायँ।

मुकर्रब खाँ की भेंट नौरोज के दिनों में तैयार नहीं हुई थी अब उसके द्वारा संचित सभी प्रकार की अलभ्य वस्तुएँ तथा अच्छी भेंटें हमारे सामने उपस्थित की गईं। अन्य वस्तुओं में बारह एराकी तथा अरबी घोड़े थे जो जहाज पर लाए गए थे और फिरंगी कारीगरी की जड़ाऊ जीनें थीं। नवाजिश खाँ के मंसब में ५०० सवार बढ़ा कर उसका मंसब दो हजारी २००० सवार का कर दिया। बंगाल से

इस्लाम खाँ द्वारा भेजा गया वंशी वदन नामक एक हाथी हमारे पास लाया गया और हमारे खास हाथियों में रखा गया। २ उर्दिविहिश्त को अब्दुल्ला खाँ का भाई ख्वाजा यादगार गुजरात से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने एक सौ जहाँगीरी मुहरें भेंट कीं। कुछ दिन सेवा में रहने के अनंतर इसे सरदार खाँ की पदवी मिली। वंगश तथा उस प्रांत की सेना का योग्य बख्शी नियुक्त कर वहाँ भेजना था इसलिए हमने मोतकिद खाँ को इस कार्य के लिए चुना और उसके मंसब में तीन सदी ५० सवार बढ़ा कर उसे डेढ़ हजारी ३५० सवार का कर दिया तथा जाने की आज्ञा दी। यह निश्चित कर दिया गया था कि वह शीघ्रता से जावे। हमने मुहम्मद हुसेन चेलेबी को, जो रत्नों के क्रय करने तथा विचित्र वस्तुओं के संग्रह करने में कुशल था, धन देकर एराक़ के मार्ग से कुस्तुनतुनिया भेजा कि वहाँ से अलभ्य वस्तुएँ क्रय कर सरकार के लिए ले आवे। इस कार्य के लिए आवश्यक था कि वह ईरान के शासक की भी अभ्यर्थना करे इस लिए हमने उसे एक पत्र दिया। साथ ही इसके एक सूची भी दी। संक्षेप में, इसने हमारे भाई शाह अब्बास से मशहद में भेंट की। शाह ने इससे पूछा कि किस प्रकार की वस्तुएँ उसके सरकार के लिए ले जाना है। उसके पूछने में तीव्रता थी इसलिए चेलेबी ने वही सूची दिखला दी जो साथ में ले गया था। उस सूची में इस्फहान की खानों से प्राप्त नीला हरा खनिज तथा मोमिया भी लिखा हुआ था। शाह ने कहा कि ये दोनों न क्रय किए जायँ क्योंकि वह इन्हें हमारे लिए भेज देगा। उसने उवैसीतोपची को, जो उसका एक निजी सेवक था, आदेश दिया कि उक्त खनिज के छ बोरे, जिनमें प्रत्येक में तीस सेर थे, तथा चौदह तोले मोमिया एवं चार घोड़े, जिनमें एक पंच कल्याण था, उसे देवे। साथ ही उसने एक पत्र भी हमें लिखा, जिसमें मित्रता की बहुत सी बातें थीं। उक्त खनिज के अच्छी न होने तथा मोमिया के कम होने के संबंध में उसने

क्षमा याचना की। खनिज वास्तव में बहुत साधारण था। यद्यपि रत्नकारों तथा सुवर्णकारों ने बहुत प्रयत्न किया पर उसमें एक भी पत्थर ऐसा नहीं निकला कि उसकी अँगूठी बन सके। संभव है कि शाह तहमास्प के समय जैसा खनिज प्राप्त होता था वैसा आजकल खानों से नहीं प्राप्त होता। उसने यह सब पत्र में लिखा था। मोमिया के प्रभाव के संबंध में हमने हकीमों से बहुत कुछ सुना है पर प्रयोग करने पर कुछ फल नहीं ज्ञात हुआ। हम नहीं कह सकते कि हकीमों ने इसका प्रभाव बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहा था या पुराना हो जाने से इसका असर कम हो गया है। जो कुछ हो हमने एक मुर्गी को जिसकी टाँग टूट गई थी इसे पीने के लिए दिलवाया और उनकी बतलाई या हकीमों द्वारा निश्चित की गई मात्रा से बहुत अधिक दिया तथा टूटे हुए स्थान पर भी इसे मलवाया एवं उसे इसी प्रकार तीन दिन रखा। लोगों ने यद्यपि कहा था कि एक दिन रात्रि रखना काफी होगा किंतु जब हमने उसकी परीक्षा की तो इसका कोई असर नहीं पाया और टूटा हुआ अंश ज्यों का त्यों बना रहा। अलग एक पत्र में शाह ने सलामुल्लाह अरब के लिए संस्तुति की थी इसलिए हमने उसका मंसब तथा जागीर बढ़ा दी।

हमने अपना एक खास हाथी साज़ सहित अब्दुल्ला खाँ को भेजा और दूसरा कुलीज खाँ को। हमने आज्ञा दी कि अब्दुल्ला खाँ को प्रत्येक सवार पीछे तीन या दो घोड़े के हिसाब से बारह सहस्र घोड़ों का वेतन दिया जाय। पहले हमने जूनागढ़ में सेवाकार्य लेने के विचार से इसके भाई सरदार खाँ के मंसब में पाँच सदी ३०० सवार बढ़ा दिया था पर बाद में वह कार्य कामिल खाँ को दे दिया था इसलिए अब हमने आदेश दिया कि वह उन्नति बनी रहे और उसके मंसब में स्थायी कर दी जाय। हमने सरफराज खाँ के डेढ़ हजारी ५०० सवार के मंसब में २०० सवार बढ़ा दिए। २७ उर्दिबिहिश्त, २६ रबीउल् अव्वल सन् १०२२ हि० गुरुवार को,

हमारे आठवें जलूसी वर्ष में, चांद्र वर्ष का तुलादान मरियमुज्जमानी के गृह पर हुआ। इस तुलादान का कुछ धन हमने उन स्त्रियों तथा योग्य पात्रों को देने के लिए आदेश दिया जो हमारी माता के गृह पर इकट्ठी हो गई थीं। उसी दिन हमने मुर्तजा खाँ का मंसब एक हजारी से बढ़ा दिया, जिससे उसका मंसब छ हजारी ५००० सवार का हो गया। मिर्जा खाँ का एक दास खुसरू बेग पटना से अब्दुर्रज्जाक मामूरी के साथ आकर सेवा में उपस्थित हुआ और अब्दुल्ला खाँ के भाई सरदार खाँ को अहमदाबाद जाने की छुट्टी मिली। एक अफ़ग़ान कर्णाटक से बकरे का एक जोड़ा लाया, जिनमें निर्विष के पत्थर थे। हमने यही सदा सुना था कि जिस बकरे में ऐसे पत्थर होते हैं वह बहुत दुर्बल तथा दीन होता है पर ये दोनों खूब मोटे ताजे थे। हमने उन्हें आज्ञा दी कि इनमें से एक मादा को मार डालें। इसमें चार वैसे पत्थर दिखलाई पड़े, जिससे बड़ा आश्चर्य हुआ।

यह एक निश्चित बात है कि चीते अज्ञात स्थान में रहने पर मादा के साथ जोड़ा नहीं खाते। हमारे श्रद्धेय पिता ने एक बार एक सहस्त्र चीते संग्रह कर लिए थे। वे बहुत चाहते थे कि ये आपस में जोड़ा खायँ पर वैसा नहीं हुआ। उन्होंने कई बार उद्यान में इनके जोड़ों को एकत्र रखवाया पर वहाँ भी कुछ नहीं हुआ। इसी समय एक नर चीता अपने गले की डोरी को छटकाकर एक मादा के पास गया और उससे जोड़ा खाया। इसके ढाई महीने बाद तीन बच्चे हुए, जो बड़े भी हुए। यह इसलिए लिखा गया कि यह विचित्र ज्ञात हुआ। जब चीतों के नर-मादा ऐसा नहीं करते तब कभी पहले समय में ऐसा नहीं सुना गया कि शेर कैद हो जाने पर ऐसा करते हैं। हमारे राज्यकाल में हिंसक पशुओं ने अपना जंगलीपन छोड़ दिया था, शेर इतने पालतू हो गए थे कि उनके झुंड के झुंड बिना किसी प्रकार के सिकड़ या रस्से आदि के मनुष्यों में घूमा करते थे और न किसी को हानि पहुँचाते और न

किसी को डराते या किसी से भय खाते थे। एक शेरनी गर्भ से हो गई और उसने तीन महीने बाद तीन बच्चे दिए। ऐसा कभी नहीं हुआ था कि पकड़े जाने पर शेर जोड़ा खाय। हकीमों से सुना गया है कि शेरनी का दूध आँखों की रोशनी के लिए बड़ा लाभदायक है। यद्यपि बहुत प्रयत्न किया गया कि उसके थन से दूध निकाला जाय पर एक बूँद भी न प्राप्त हुआ। समझ में यह आता है कि यह अत्यंत क्रोधी पशु है और माताओं के स्तन में बच्चों के स्नेह के कारण दूध उत्पन्न होता है। जब बच्चे दूध पीते हैं तभी स्तनों में दूध उतरता है और उनके चूसने से क्रोधित होने पर दूध सूख जाता है।

उर्दिबिहिश्त महीने के अंत में ख्वाजा अब्दुल्अज़ीज़ का भाई ख्वाजा कासिम, जो नक्शबन्दी ख्वाजों में से है, मावरुन्नहर से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। थोड़े दिनों के बाद उसे बारह सहस्र रुपए उपहार में दिया। ख्वाजाजहाँ ने नगर के पास खरबूजों की क्यारी लगाई थी इसलिए १० खुरदाद गुरुवार को दो प्रहर दिन बीतने पर हम नाव में बैठे और उस क्यारी को देखने गए तथा बेगमों को भी लिवाते गए। हम जब वहाँ पहुँचे तब दो तीन घड़ी दिन बच गया था और वहाँ घूमने में संध्या व्यतीत की। हवा बड़े वेग से चलने लगी और घूमता अंधड़ आ गया, जिससे खेमें तथा कनातें गिर गईं। हम नाव पर सवार हो गए और उसीमें रात्रि व्यतीत किया। शुक्रवार को भी उन क्यारियों में कुछ देर घूम फिर कर हम नगर में लौट आए। अफजल खाँ जो बहुत दिनों से फोड़े तथा घावों से पीड़ित था, १० खुरदाद को मर गया। हमने राजा जगमन की जागीर तथा पैतृक भूमि महाबत खाँ को दे दी, क्योंकि वह दक्षिण में अपनी सेवा में असफल रहा। शेख पीर ने, जो उन विरक्त लोगों में से था, जो संसार की माया से अलग रहते हैं और जो हमारे प्रति शुद्ध मित्रता के कारण हमारा साथी तथा सेवक हो गया था, इसके पहले अपने निवास-

स्थान मेड़ता में एक मस्जिद की नींव डाली थी। इस समय उसने अवसर पाकर हम से यह बात कही। जब हमने देखा कि उस इमारत के निर्माण का इसका पक्का विचार है तब हमने उसे चार सहस्र रुपए दिए कि वह स्वयं जाकर उसे व्यय करे और उसे एक बहुमूल्य शाल देकर छुट्टी देदी। दरबारे आम में लकड़ी के दो महजर (घेरे) थे। प्रथम में अमीर, राजदूत तथा सम्मानित व्यक्ति बैठते थे और बिना आज्ञा के कोई इसके भीतर नहीं आता था। दूसरे घेरे में, जो पहले से चौड़ा था, छोटे मंसबदार, अहदी तथा काम करनेवाले रहते थे। इसके बाहर अमीरों के सेवक गण तथा अन्य लोग, जो दीवानखाने में आ सकते हैं, रहते थे। प्रथम तथा द्वितीय घेरे में कोई भेद नहीं था इसलिए हमारे मन में आया कि प्रथम घेरे को चाँदी से सजवा दें। हमने आज्ञा देदी कि पहला घेरा तथा वह सीढ़ी जो इस घेरे से झरोखे के बालाखाना तक गई है उसे और उन दो हाथियों को, जो झरोखे की बैठक के दोनों ओर खड़े थे तथा जिन्हें कुशल कारीगरों ने लकड़ी का बनाया था, चाँदी से मढ़ दिए जायँ। इसके पूरा होने पर हमें सूचना दी गई कि सवासौ हिंदुस्तानी मन चाँदी, जो पारसीक आठ सौ अस्सी मन के बराबर हुआ, इस कार्य में व्यय हो गया। वास्तव में अब यह देखने योग्य हो गया।

तीर महीने की ३री को मुजफ्फर खाँ ठट्टा से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और इसने बारह मुहरें, जड़ाऊ जिल्द की कुरान तथा दो जड़ाऊ फूल भेंट किए। उसी महीने की १४ वीं को सफदर खाँ बिहार प्रांत से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ एक मुहरें भेंट कीं। मुजफ्फर खाँ के कुछ दिन सेवा में रहने के अनंतर हमने उसके मंसब में पाँच सदी बढ़ा दिया और उसे झंडा तथा खास शाल देकर ठट्टा बिदा कर दिया।

हम जानते थे कि पागल कुत्ते के काटने से हर एक पशु या जीव

मर जाते हैं परंतु यह निश्चय नहीं हुआ था कि हाथी पर ऐसा प्रभाव पड़ता है। हमारे समय में ऐसा हुआ कि एक रात्रि एक पागल कुत्ता उस स्थान में पहुँच गया जहाँ हमारे खास हाथियों में से एक गजपति नामक हाथी बँधा हुआ था और उसके पास बँधी हुई हथिनी के पैर में काट लिया। जब वह चिल्लाने लगी तब हथसाल के रक्षक दौड़े और कुत्ता भाग कर पास की काँटेदार झाड़ी में घुस गया। कुछ देर बाद वह फिर आया और हमारे हाथी के अगले पैर में काट लिया। हाथी ने उसे कुचल कर मार डाला। इस बात के एक महीना पाँच दिन के अनंतर एक दिन जब बादल छाया हुआ था तब बादल की गरज सुनकर वह हथिनी जो खा रही थी एकाएक चिल्लाने लगी और उसका सारा शरीर काँपने लगा। वह भूमि पर गिर पड़ी पर पुनः कष्ट से उठ खड़ी हुई। सात दिन तक उसके मुख से पानी बहता रहा जिसके अनंतर वह चिल्लाई तथा बड़े कष्ट में मालूम हुई। महावतों ने बहुत दवा की पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। आठवें दिन वह गिरी और मर गई। हथिनी के मरने के एक महीने बाद बड़े हाथी को वे मैदान में नदी के किनारे ले गए। उस दिन भी उसी प्रकार बादल गरज रहे थे। वह हाथी भी बहुत घबड़ा कर काँपने लगा और भूमि पर बैठ गया। बड़ी कठिनाइयों से महावत लोग उसे अपने स्थान पर लिवा लाए। उतने ही समय के अनंतर और उसी प्रकार जैसे हथिनी मरी थी यह हाथी भी मर गया। इस घटना से सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ और वास्तव में यह चकित होने की बात भी है कि इतना भारी डील वाला पशु एक छोटे निर्बल जीव के द्वारा किए गए छोटे से घाव के कारण इस अवस्था को पहुँचे।

खानखानाँ ने कई बार प्रार्थना की कि उसके पुत्र शाहनवाज खाँ को छुट्टी दी जाय इसलिए हमने उसे ४ अमुरदाद को एक घोड़ा तथा खिलअत देकर दक्षिण जाने की छुट्टी दे दी। हमने याकूब बदख्शी को,

जिसका मंसब डेढ़ सदी था, उसके वीरता प्रदर्शन करने पर डेढ़ हजारी १००० सवार का मंसब खाँ की पदवी तथा झंडा प्रदान किया।

हिंदुओं में चार वर्ण होते हैं और प्रत्येक अपने अपने नियमों तथा प्रथाओं के अनुसार कार्य करता है। प्रत्येक वर्ष में उनके एक-एक दिन निश्चित हैं। प्रथम वर्ण ब्राह्मणों का है अर्थात् वे जो ब्रह्म को जानते हैं। इनके कर्तव्य छ प्रकार के हैं—१. धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना २. दूसरों को शिक्षा देना ३. अग्नि का पूजन करना ४. दूसरों से अग्नि का पूजन कराना ५. दीनों को दान देना ६. दान ग्रहण करना। इस वर्ण के लिए एक निश्चित दिन है और वह सावन महीने का अंतिम दिन है, जो वर्षा ऋतु का दूसरा महीना है। वे इसे शुभ दिवस समझते हैं और उस दिन पूजक लोग नदी के तट पर या तालाब पर जाकर मंत्र पढ़ते हैं तथा डोरों एवं रँगे हुए तागों पर फूँकते हैं। दूसरे दिन, जो नव वर्ष का प्रथम दिन है, उसे वे अपने समय के राजाओं तथा बड़े लोगों के हाथ में बाँधते हैं और इसे शुभ सूचक समझते हैं। इस डोरे को वे राखी कहते हैं अर्थात् रक्षा करने वाला। यह दिन तीर महीने में पड़ता है, जब संसार को गर्म करने वाला सूर्य कर्क राशि में रहता है। दूसरा वर्ण क्षत्रिय है, जो खत्री कहलाता है। इनका कर्तव्य अत्याचारियों से पीड़ितों की रक्षा करना है। इस वर्ण के कर्तव्य तीन हैं—१. ये धार्मिक शास्त्र स्वयं पढ़ते हैं पर दूसरों को पढ़ाते नहीं २. ये अग्नि का पूजन करते हैं पर दूसरों को पूजा नहीं कराते ३. वे दान देते हैं पर आवश्यकता पड़ने पर भी दान नहीं लेते। इस वर्ण का दिन विजय-दशमी है। इस दिन ये घोड़े पर सवार होना तथा अपने शत्रु पर ससैन्य चढ़ाई करना शुभ समझते हैं। रामचंद्र, जिन्हें ये देवता के समान पूजते हैं, इसी दिन शत्रु पर सेना ले जाकर विजयी हुए थे इसलिए इस दिन को ये बहुत मानते हैं और अपने हाथियों तथा घोड़ों को सजाकर पूजा करते हैं। यह दिन शहरिवार के

महीने में पड़ता है, जब सूर्य कन्या राशि में होता है और इस त्योहार पर ये कोचवानों तथा महावतों को उपहार देते हैं। तीसरा वर्ण वैश्य है। इनकी प्रथा है कि ये प्रथम दो वर्ण की सेवा करते हैं जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। ये कृषि-कार्य करते हैं, क्रय-विक्रय करते हैं तथा लाभ एवं सूद के लिए व्यापार करते हैं। इस वर्ण का भी एक निश्चित दिन है, जिसे दिवाली कहते हैं। यह दिन मेह के महीने में पड़ता है, जब सूर्य तुला राशि में रहता है, चांद्र महीने की २८ वीं को। उस दिन रात्रि में दीपक बालते हैं और मित्र गण तथा प्रियजन एकत्र होकर जूआ खेलते हैं। इस वर्ण का विशेष ध्यान लाभ तथा सूद पर होता है इसलिए इस दिन नया खाता करने तथा पुराने को आगे ले जाने को शुभ समझते हैं। चतुर्थ वर्ण शूद्र है, जो हिंदुओं में सबसे छोटी जाति है। ये सबके सेवक हैं और उन वस्तुओं का वे लाभ नहीं उठा सकते जो अन्य वर्गों की विशेषताएँ हैं। इनका दिन होली है, जो इनके विश्वास में वर्ष का अंतिम दिन है। यह दिन इस्फंदारमुज महीने में पड़ता है जब सूर्य मीन राशि में रहता है। इस दिन रात्रि में ये सड़कों तथा गलियों में आग बालते हैं और दिन होने पर एक प्रहर तक ये एक दूसरे के कंधों तथा मुख पर राख फेंकते हैं और विचित्र प्रकार का शोर एवं उपद्रव करते हैं। इसके अनंतर नहा धोकर कपड़ा पहिरते और उद्यानों तथा मैदानों में घूमते हैं। हिंदुओं में मृतकों को जला देने की निश्चित प्रथा है, इसलिए इस रात्रि में आग बालने से, जो उस गत वर्ष की अंतिम रात्रि होती है, यह तात्पर्य होता है कि विगत वर्ष को जला दिया गया, जो मृतकों के स्थान को चला गया।

हमारे पिता के समय हिंदू अमीर और उनकी नकल करनेवाले अन्य लोग राखी की प्रथा के अनुसार उन्हें बाँधते थे। लाल, बड़ी मोती तथा रत्नों से सजे फूलों की बहुमूल्य राखियाँ बनवाकर उनके

हाथों में बाँधते थे। कुछ वर्षों तक यह प्रथा चलती रही। यह अपव्यय बहुत बढ़ गया था और इसे वह पसंद नहीं करते थे इसलिए इसका निषेध कर दिया। लोग शुभ कामना की दृष्टि से सूत तथा रेशम की राखी अपनी प्रथा के अनुसार बाँधा करते थे। हमने भी इस वर्ष यह अच्छी धार्मिक प्रथा चलाया और आदेश दिया कि हिंदू अमीर तथा जातियों के अग्रणी लोग हमारे हाथ में राखी बाँधा करें। रक्षाबंधन के दिन, जो ६ अमुरदाद था, यह कार्य हुआ और अन्य जातिवालों ने भी इस धार्मिक प्रथा को नहीं छोड़ा। इस वर्ष हमने इसे स्वीकार कर लिया और आज्ञा दी कि ब्राह्मण लोग प्राचीन प्रथानुसार सूत तथा रेशम की राखी बाँधें। संयोग से इसी दिन गत सम्राट् की मृत्यु-तिथि पड़ गई। ऐसी वार्षिकी को इसे मनाना हिंदुस्तान की निश्चित विधि तथा प्रथा है। हर वर्ष अपने पूर्वजों तथा प्रिय संबंधियों की मृत्यु-तिथियों पर ये अपनी परिस्थिति के अनुकूल तथा योग्यता के अनुसार भोजन एवं सुगंधि-द्रव्य तैयार करते हैं और विद्वान्, संभ्रांत तथा अन्य मनुष्य एकत्र होते हैं। यह जलसा एक सप्ताह तक चलता है। इस दिन हमने बाबा खुर्रम को पवित्र मकबरे में भेजा कि वहाँ ऐसा जलसा करे और दस विश्वासपात्र सेवकों को दस सहस्र रुपए दिए कि फकीरों तथा दरिद्रों में बाँट दें।

१५ वीं अमुरदाद को इस्लामखाँ की भेंट हमारे सामने लाई गई। इसने अट्ठाइस हाथी, उस प्रांत के चालीस घोड़े, जो टाँघन कहलाते हैं, पचास खोजे और पाँच सौ अच्छे शीशे सचारखानी भेजे थे।

यह एक नियम बना दिया गया था कि प्रांतों की घटनाएँ उनकी सीमाओं के अनुसार ही लिखकर सूचित किए जायँ और इसके लिए दरबार ही से वाकेआनवीस नियत किए गए थे। यह नियम हमारे पिता का चलाया हुआ था और हमने भी इसे ही प्रचलित रखा।

इससे बहुत लाभ होता है और संसार तथा उसके निवासियों के संबंध में बहुत कुछ सूचना मिलती है। यदि इसके लाभ लिखे जायँ तो बहुत विस्तार हो। इसी समय लाहौर के वाकेआनवीस ने सूचित किया कि तीर महीने के अंत में दस आदमी इस नगर से अमनाबाद को गए, जो बारह कोस पर पड़ता है। हवा बहुत गर्म थी इसलिए वे एक वृक्ष की छाया में ठहर गए। शीघ्र ही वायु तीव्र हो गया और चक्करदार आँधी आई। जब वह उन मनुष्यों पर से होकर गई तब वे घबड़ा गए जिससे नौ आदमी मर गए और केवल एक जीवित रहा। यह भी बहुत दिनों तक बीमार रहा और बड़ी कठिनाई से अच्छा हुआ। उसके आसपास की हवा ऐसी बिगड़ गई कि जिन पक्षियों के घोंसले उस वृक्ष पर थे वे सब बहुत से गिर पड़े तथा मर गए। उस स्थान के जंगली पशु भी भागकर खेतों में आ गिरे और घास पर लोट लोट कर मर गए। संक्षेप में बहुत से जीव मरे।

गुरुवार १३ अमुरदाद को प्रार्थना समाप्त कर सामूनगर में अहेर खेलने के लिए हम नाव पर सवार हुए जो हमारा निश्चित अहेर-स्थान है। ३ शहरिवार को खानआलम आकर सेवा में उपस्थित हुआ, जिसे हमने ईरान के एलची के साथ एराक भेजने के लिए दक्षिण से बुला भेजा था। इसने एक सौ मुहरें भेंट दीं। सामूनगर महाबत खाँ की जागीर में था इसलिए उसने नदी के किनारे पर ठहरने के लिए एक सुंदर स्थान बनवाया था, जो हमें बहुत पसंद आया। इसने एक हाथी तथा एक पन्ने की अँगूठी भेंट की। हाथी हमारे खास हथसाल में रखा गया। ६ शहरिवार तक हम अहेर खेलते रहे। इन्हीं थोड़े दिनों में सैंतालीस नर-मादा मृग तथा अन्य पशु मारे गए। इसी समय दिलावर खाँ ने एक लाल भेंट में भेजा, जो स्वीकृत हुआ। हमने एक खास तलवार इस्लाम खाँ के लिए भेजा। हमने हसन अली तुर्कमान का मंसब, जो एक हजारी ७०० सवार का था, पाँच सदी

१०० सवार से बढ़ा दिया। उसी महीने की २० वीं गुरुवार की रात्रि
में मरियमुज्जमानी के गृह पर हमारा सौर तुलदान हुआ। साधारण
यथानुसार हम धातुओं तथा अन्य वस्तुओं से तौले गए। इस वर्ष में
हम चौआलीस सौर वर्ष के हुए। उसी दिन ईरान के शाह के राजदूत
तथा खानआलम को जो इस ओर से उसके साथ जाने के लिए नियुक्त
हुआ था, जाने की छुट्टी मिली। यादगार अली को जड़ाऊ जीन
सहित एक घोड़ा, एक जड़ाऊ तलवार, कारचोबी की बिना बाँह की
कुर्ती, परों सहित एक कलगी, एक जीगा तथा तीस सहस्र रुपए नगद,
कुल चालीस सहस्र मूल्य का, दिया और खानआलम को एक जड़ाऊ
फूल कटार: मोतियों की माला सहित दिया। उसी महीने की २२ वीं
को हम बिहिश्ताबाद (सिकंदरा) में अपने श्रद्धेय पिता के मकबरे को
देखने हाथी पर सवार। होकर गए मार्ग में पाँच सहस्र रुपए के छोटे
सिक्के लुटाए गए और पाँच सहस्र रुपए हमने ख्वाजाजहाँ को दर्वेशों
को बाँटने के लिए दिया। वहाँ संध्या की निमाज़ पढ़कर हम नाव से
नगर में गए। एतमादुद्दौला का मकान जमुना नदी के किनारे पर था
इसलिए हम उसी में उतरे और दूसरे दिन तक रहे। उसकी भेंटों में
जो पसंद आया उसे स्वीकार कर हम महल की ओर चले। एत-
काद खाँ का घर भी जमुना नदी के किनारे पर था और उसकी प्रार्थना
पर हम बेगमों के साथ वहाँ उतरे तथा उसके बनवाए नए गृहों को घूम
कर देखा। यह आकर्षक स्थान हमें बहुत पसंद आया। इसने वस्त्र,
आभूषण तथा अन्य वस्तुएँ भेंट कीं और हमारे सामने उपस्थित की
गईं एवं अधिकतर स्वीकृत हुईं। संध्या होते होते हम महल में
पहुँच गए।

इसी रात्रि में अजमेर की यात्रा के लिए ज्योतिषियों ने शुभ साइत
निकाली थी इसलिए सोमवार की रात्रि में सात घड़ी बीतने पर दो शाबान
को, जो २४ शहरिवार होता है, हम प्रसन्नता तथा सुख के साथ उस

ओर जाने के लिए आगरे से निकले। इस यात्रा में हमें दो कार्य विशेष रूप से करने थे। प्रथम तो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के विशाल मकबरे का दर्शन करना था जिनकी प्रसिद्ध आत्मा की दुआ से इस प्रभावशाली परिवार को बहुत लाभ पहुँचा था और जिनकी दरगाह की हमने अपनी राजगद्दी के बाद जियारत नहीं की थी। दूसरा कार्य विद्रोही राणा अमरसिंह को परास्त कर भगाना था, जो हिंदुस्तान के राजाओं तथा जमींदारों में सब से बड़ा था और उस प्रांत के सभी रायों तथा राजाओं ने जिसके और जिसके पूर्वजों के नेतृत्व एवं प्राधान्य को अंगीकार कर लिया था। बहुत दिनों से यहाँ का शासन इसी परिवार के हाथों चला आ रहा था और बहुत दिनों तक ये इसके पहले पूर्व की ओर राज्य करते रहे। उस समय में ये लोग राजाओं की पदवी से पुकारे जाते थे। इसके अनंतर ये दक्षिण की ओर गए और वहाँ के कुछ प्रांतों पर अधिकार कर लिया। अब ये राजा के स्थान पर रावल कहे जाने लगे। इसके उपरांत ये मेवाड़ के पार्वत्य देश में चले आए और क्रमशः चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया। उस समय से आज तक, जो हमारा जलूसी ८ वाँ वर्ष है, १४७१ वर्ष व्यतीत हो गए।

इनमें से इस वर्ग के छब्बीस अन्य राजाओं ने १०१० वर्ष तक राज्य किया था। इनकी पदवी रावल थी और पहले रावल से, जिसका नाम भी रावल था, राणा अमरसिंह तक छब्बीस व्यक्तियों ने ४६१ वर्ष तक राज्य किया। इतने विस्तृत काल में इस वंश ने हिंदुस्तान के किसी भी नरेश को अधीनता से सिर नहीं झुकाया था और बराबर उपद्रव तथा विद्रोह करते रहे। विगत बादशाह बाबर के राज्य काल में राणा साँगा ने इस प्रांत के सभी राजाओं, रायों तथा भूम्याधिकारियों को एकत्र कर और एक लाख अस्सी सहस्र सवार तथा लाखों पदातिकों के साथ बियाना के पास युद्ध किया था। सर्वशक्तिमान

ईश्वर की कृपा तथा सौभाग्य की सहायता से इस्लाम की विजयी सेना काफिरों को परास्त कर सकी और वे पूर्णतया विजित हो गए। इस युद्ध का विस्तृत वर्णन बाबर बादशाह के आत्मचरित में दिया हुआ है। हमारे श्रद्धेय पिता ने इन विद्रोहियों को दमन करने के लिए बहुत प्रयत्न किया और इनके विरुद्ध कई बार सेनाएँ भेजीं। अपने बारहवें वर्ष जलूसी में चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार करने के लिए, जो संसार के दृढ़तम दुर्गों में से एक है, और राणा के राज्य को समाप्त करने के लिये यात्रा की तथा चार महीने दस दिन के घेरे एवं बहुत युद्ध के अनंतर उस दुर्ग को राणा अमरसिंह के पिता के सैनिकों से ले लिया और दुर्ग को नष्ट कर लौट आए। प्रत्येक बार जब विजयी सेना ने उसे पकड़ने के लिए या भगा देने के लिए प्रयत्न किया तब ऐसा हुआ कि वह कार्य नहीं हो सका। उनके राज्य के अंत में जिस दिन तथा जिस घड़ी वह दक्षिण की चढ़ाई पर गए उन्होंने हमें विशाल सेना तथा विश्वसनीय सर्दारों के साथ राणा के विरुद्ध भेजा। संयोग से ये दोनों कार्य कुछ ऐसे कारणों से असफल हो गए, जिनका विवरण देने में बहुत समय लगेगा। अंत में हम गद्दी पर बैठे और इस कारण कि यह कार्य आधा हुआ था हमने पहली सेना इसी सीमा पर भेजी। अपने पुत्र पर्वेज को सेनाध्यक्ष बनाकर राजधानी में उपस्थित बड़े सरदारों को इस कार्य पर नियत किया। हमने धन तथा तोपखाना बहुत अधिक भेजा। हर एक कार्य समय सापेक्ष होता है और संयोग से इसी समय खुसरू की दुखद घटना घटी, जिससे हमें उसका पंजाब तक पीछा करना पड़ा। आगरा का प्रांत तथा राजधानी सूनी पड़ी थी इसलिए हमें आवश्यकतावश पर्वेज को लिखना पड़ा कि वह कुछ अमीरों के साथ लौटकर आगरा तथा उसके पड़ोस की रक्षा का भार अपने ऊपर ले। संक्षेप में इस बार भी राणा का कार्य जैसा चाहिए था वैसा नहीं हो सका। जब ईश्वर की कृपा से खुसरू के उपद्रव से हमारा

मन शांत हुआ और शाही झंडे आगरे में स्थित हुए तब विजयी सेना महाबत खाँ, अब्दुल्ला खाँ तथा अन्य सर्दारों की अधीनता में नियत की गई और उस समय से शाही झंडों के अजमेर की ओर प्रस्थान करने के समय तक उसका प्रांत विजयी सेना द्वारा रौंदा जाता रहा। पर उस कार्य के पूर्ण होने का कोई ढंग नहीं बैठा तब हमने विचार किया कि आगरे में हमें कुछ करना नहीं है और हमारे बिना वहाँ गए इस कार्य के पूरा होने की संभावना नहीं है इसलिए हमने आगरा दुर्ग छोड़ा और दहरा बाग में जाकर उतरे। इसके दूसरे दिन दशहरे का उत्सव हुआ। साधारण प्रथानुसार लोगों ने हाथियों तथा घोड़ों को सजाया और वे हमारे सामने उपस्थित किए गए।

खुसरू की माताओं तथा बहनों ने बार बार हमसे कहा कि वह अपने कार्यों के लिए पश्चात्ताप कर रहा है, हमारे पितृ-स्नेह की भावना उद्वेलित हो उठी और हमने उसे बुला भेजा तथा निश्चय किया कि वह प्रति दिन हमारा सम्मान करने आया करे। हम उस उद्यान में आठ दिन रहे २८ वीं को समाचार मिला कि राजा रामदास, जो बंगश तथा काबुल के आस पास कुलीज खाँ के साथ सेवा कार्य कर रहा था, मर गया। मेह्र महीने की १६ को हमने बाग से कूच किया और ख्वाजाजहाँ को आगरा राजधानी के प्रबंध तथा कोष एवं महल की रक्षा के लिए विदा किया, जिसे एक हाथी तथा खास फ़ंगुल दिया। २ मेह्र को समाचार मिला कि राजा बासू शाहाबाद के थाने में मर गया, जो अमर की राज्य-सीमा पर है। उसी महीने की १० वीं को हम रूपबास में ठहरे, जिसे अब अमनाबाद नाम दिया गया था। पहले यह स्थान रूप खवास को जागीर में दे दिया गया था। इसके अनंतर इसे महाबत खाँ के पुत्र अमानुल्ला को देकर हमने आज्ञा दी कि उसका नाम इसके नाम पर कर दिया जाय। इस पड़ाव पर हम ग्यारह दिन रहे। यह एक नियत शिकारगाह था और हम नित्य

अहेर खेलने जाते थे। इन्हीं थोड़े दिनों में १४८ नर-मादा हरिण तथा अन्य पशुओं को मारा। २४ वीं को हम अमनाबाद से आगे बढ़े। ३१ वीं को, जो रमजान था, ख्वाजा अबुल्हसन, जिसे हमने बुर्हानपुर से बुला भेजा था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और ४० मुहर, १४ जड़ाऊ बर्तन तथा एक हाथी भेंट किया, जिसे हमने अपने हथसाल में भेज दिया। २ आबान को, जो १० रमजान होता है, कुलीज खाँ की मृत्यु का समाचार मिला। यह साम्राज्य के पुराने सेवकों में से था और अस्सी वर्ष की अवस्था में मरा। यह तारीकी[1] अफगानों को शांत रखने के लिए पेशावर में नियत था। इसका मंसब छ हजारी ५००० सवार का था।

मुर्तजा खाँ दक्खिनी पटेबाजी में अद्वितीय था, जिसे दक्षिण की भाषा में यगानगी कहते हैं और मुग़ल लोग शम्शीर बाज़ी कहते हैं। हमने भी इससे यह कुछ दिन सीखा था। इस समय हमने इसे वर्जिश खाँ की पदवी दी। हमने यह प्रथा चलाई थी कि योग्य पात्र तथा दर्वेश लोग प्रत्येक रात्रि हमारे सामने उपस्थित किए जायँ जिनसे हम उनकी अवस्था की पूछ ताछ कर उन्हें भूमि, धन या वस्त्र दें। इनमें एक आदमी था, जिसने बतलाया कि जहाँगीर नाम 'अब्जद'[2] की गणना से अल्लाहो अकबर के दिव्य नाम के बराबर होता है। इसे

१—रोशानी अफगानों को घृणा से तारीकी (अंधकार) कहा जाता था।

२—अक्षरों की निश्चित संख्याओं को जोड़कर घटना आदि का समय निकालने की गणना को अबजद की गणना कहते हैं। जहाँगीर तथा अल्ला हो अकबर दोनों के अक्षरों की संख्याओं का जोड़ २८८ होता है।

शुभ शकुन समझकर हमने उस बतलानेवाले को भूमि, घोड़ा, धन तथा वस्त्र दिए।

सोमवार ५ शव्वाल, २६ आबान को अजमेर में जाने की साइत निश्चित हुई थी इसलिए उस दिन सवेरे ही हम उस ओर चले। श्रद्धेय ख्वाजा के दरगाह की इमारत तथा दुर्ग दिखलाई पड़ने पर हम पैदल चलने लगे और बचा मार्ग प्रायः एक कोस इसी प्रकार गए। हमने विश्वसनीय मनुष्यों को सड़क के दोनों ओर नियत किया कि वे फकीरों तथा गरीबों को धन देते हुए चलें। चार घड़ी दिन चढ़ चुका था जब हम नगर में उसकी बस्ती में पहुँचे और पाँच घड़ी पर मकबरे को देखने गए। यहाँ से हम शुभ महल में गए। दूसरे दिन हमने आज्ञा दी कि पवित्र मकबरे के सभी रहनेवाले, छोटे-बड़े, नगर-निवासी तथा यात्री लोग हमारे सामने लाए जायँ जिसमें वे अवस्थानुसार बहुत सी भेंटें पाकर प्रसन्न होकर जायँ। ७ अज़र को हम पुष्कर तालाब को देखने तथा निशाना लगाने गए, जो हिंदुओं का पुराना तीर्थ स्थान है और जिसके संबंध में वे ऐसी बातें बतलाते हैं, जो बुद्धि से परे है। यह अजमेर से तीन कोस पर है। दो तीन दिन तक यहाँ जल-पक्षियों को मारकर हम अजमेर लौट गए। नए-पुराने मंदिर, जिन्हें काफिरों की भाषा में देवरा कहते हैं, तालाब के चारों ओर बने हैं। इन्हीं में विद्रोही अमर के चाचा राणा सगरा का, जो हमारे दरबार के बड़े सर्दारों में से एक है, बनवाया हुआ एक विशाल भव्य देवरा है, जिस पर एक लाख रुपए व्यय हुए हैं। हम उस मंदिर को देखने गए। हमने उसमें एक मूर्ति काले पत्थर से काट कर बनाई हुई देखी, जिसका गले से ऊपर का भाग सूअर के मुख सा था और नीचे का कुल भाग मनुष्यों का था। हिंदुओं का मूल्यहीन धर्म बतलाता है कि किसी समय किसी विशेष उद्देश्य से परमेश्वर ने ऐसे

रूप में अवतार ग्रहण करना आवश्यक समझा था और इसी से वे इस रूप को प्रिय तथा पूज्य मानते हैं। हमने आज्ञा दे दी कि इस वीभत्स मूर्ति को तोड़ कर तालाब में फेंक दो। इस इमारत के देखने के अनंतर हमारी दृष्टि पहाड़ी पर बने हुए एक श्वेत गुंबद पर पड़ी, जहाँ हर ओर से लोग आया करते थे। जब हमने उसके संबंध में पूछा तो लोगों ने कहा कि वहाँ एक जोगी रहता है और जब मूर्खगण वहाँ उसे देखने आते हैं तो वह उनके हाथों पर एक मुट्ठी आटा रख देता है, जिसे वे अपने मुख में रख लेते हैं और किसी ऐसे पशु के शब्द की नकल में चिल्लाते हैं, जिसे कभी इन मूर्खों ने चोट पहुँचाई है। ऐसा करने से उनके उस पाप का प्रायश्चित्त हो जाता है। हमने आज्ञा दी कि उस स्थान को तोड़ डालें तथा जोगी को वहाँ से निकाल दें और उस गुंबद में जो मूर्ति है उसे भी नष्ट कर दें। इन सब का यह भी विश्वास था कि इस तालाब की थाह नहीं है पर जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि यह कहीं भी बारह हाथ से अधिक गहरा नहीं है। इसका घेरा भी नापा गया, जो डेढ़ कोस था।

१६ अज़र को समाचार मिला कि हँकवाहों ने एक शेरनी का पता लगाया है। हम तुरंत वहाँ गए और उसे गोली से मारकर लौट आए। कुछ दिन बाद हमने एक नील गाय मारा और हमारी आज्ञा से उसकी खाल हमारे सामने उतारी गई और उसका माँस गरीबों में बाँटने के लिए पकाया गया। दो सौ से अधिक मनुष्य इकट्ठे हुए और उसे खाया तथा हमने हर एक को अपने हाथ से धन दिए। उसी महीने में समाचार आया कि गोआ के फिरंगियों ने संधि के विरुद्ध चार व्यापारी जलपोतों को लूट लिया है, जो उक्त बंदर के पास सूरत बंदर में आया करते थे, और बहुत से मुसलमानों को कैद कर उनके कुल सामान तथा वस्तुएँ छीन ली हैं, जो उन

जलपोतों में थे। यह हमें अच्छा नहीं लगा इसलिए हमने १८ अज़र को मुकर्रब खाँ को, जो उस बंदर का अध्यक्ष था, एक घोड़ा, एक हाथी तथा खिलअत देकर वहाँ भेजा कि इस घटना का बदला लेवे। यूसुफ खाँ तथा बहादुरुल् मुल्क की दक्षिण प्रांत में अच्छी सेवाओं तथा ठीक कार्यों के पुरस्कार में उनके लिए हमने झंडे भेजे।

ऊपर लिखा जा चुका है कि ख्वाजा की जियारत के बाद हमारा मुख्य उद्देश्य विद्रोही राणा को दमन करना था। इसलिए हमने अजमेर में ठहरना और सौभाग्यशाली पुत्र बाबा खुर्रम को उस पर भेजना निश्चय किया। यह विचार बहुत अच्छा था इसलिए हमने ६ दै महीने को निश्चित साइत में उसे प्रसन्नता तथा उत्साह के साथ भेजा। हमने उसे जाते समय एक सोने के कारचोबी का कबा, जिसमें जड़ाऊ फूल मोतियों के घेरे सहित टँके हुए थे, मोतियों की माला सहित जरदोजी की पगड़ी, मोतियों की लड़ियों से युक्त जरबफ्त का साज सहित फत्ह गज नामक अपना खास हाथी, एक खास घोड़ा, जड़ाऊ तलवार तथा फूल कटार सहित जड़ाऊ खपवा दिया। खानआजम की अधीनता में इस कार्य पर पहले से नियुक्त सेना के सिवा हमने बारह सहस्र सवार अपने पुत्र के साथ भेजा और इसके सेनानायकों को उनके पदानुसार खास घोड़े, हाथी तथा खिलअत देकर विदा किया। इस सेना के बख्शी के पद पर फिदाई खाँ को नियुक्त किया। इसी समय हमने हाशिम खाँ के स्थान पर सफदर खाँ को कश्मीर के शासन कार्य पर नियत किया तथा इसे घोड़ा और खिलअत दिया।

बुधवार ११ वीं को ख्वाजा अबुल्हसन बख्शी-कुल नियत हुआ और उसे खास खिलअत मिला। हमने आदेश दिया था कि ख्वाजा की दरगाह के लिए आगरे में बहुत बड़ा देग बनाया जाय। इसी दिन

वह वहाँ लाया गया और हमने आज्ञा दी कि इसमें गरीबों के लिए भोजन तैयार किया जाय और अजमेर के भिखमंगों को एकत्र कर, जब तक हम वहाँ रहें, खिलाया जाय। पाँच सहस्र मनुष्य इकट्ठे हुए और इच्छा भर भोजन किया। भोजन के अनंतर हमने अपने हाथ से दरवेशों में से प्रत्येक को धन दिया। इसी समय बंगाल के प्रांताध्यक्ष इस्लाम खाँ को उन्नति देकर ६ हजारी ६००० सवार का मंसबदार बना दिया और मुअज्जम खाँ के पुत्र मुकर्रम खाँ को झंडा प्रदान किया।

१ इस्फंदारमुज, १० मुहर्रम सन् १०२३ हि० (२० फरवरी सन् १६१४ ई०) को हम नील गाय का अहेर खेलने अजमेर से निकले और ९ को लौटे। नगर से दो कोस पर हाफिज जमाल के सोते के पास हम ठहरे और वहीं शुक्रवार की रात्रि व्यतीत किया। दिन के अंत में हम नगर में पहुँचे। इन बीस दिनों में हमने दस नीलगाय मारा। ख्वाजाजहाँ की अच्छी सेवाएँ तथा आगरा एवं उसके आस-पास की रक्षा तथा शासन के लिए उसकी सेना की कमी जब हमें सूचित की गई तब हमने उसका मंसब पाँच सदी १०० सवार से बढ़ा दिया। उसी दिन अबुल्फ़त्ह दक्खिनी अपनी जागीर पर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसी महीने की ३री को इस्लाम खाँ की मृत्यु का समाचार आया। वह ५ रजब सन् १०२२ हि० गुरुवार को मरा था। बिना किसी पहले की बीमारी के एक दिन यह अनिवार्य घटना हो गई। यह खानःजादों में से एक था। यह प्रकृति ही से ऐसे अच्छे स्वभाव का तथा अनुभवी था जैसा कोई दूसरा नहीं था। इसने पूर्ण अधिकार के साथ बंगाल का शासन किया और बहुत से देश उस प्रांत के अधिकार के अंतर्गत ले आया जो कभी पहले किसी जागीरदार के प्रभुत्व में नहीं आया था या साम्राज्य के किसी सरदार ने अधिकार प्राप्त किया था। यदि मृत्यु उसे ग्रास न लेती तो वह पूरी सेवा करता।

यद्यपि खानआज़म ने स्वयं प्रार्थना की थी कि राणा की चढ़ाई के लिए प्रसिद्ध शाहज़ादा नियत किया जाय तब भी हमारे पुत्र द्वारा अनेक प्रकार से प्रोत्साहित तथा संतुष्ट किए जाने पर भी वह इस कार्य पर दत्तचित्त नहीं हुआ प्रत्युत् अनुचित ढंग से काम करने लगा। जब यह सुना तब हमने अपने परम विश्वसनीय सेवकों में से एक इब्राहीम हुसेन को उसके पास भेजा और यह प्रेमपूर्ण संदेश कहलाया कि जब वह बुर्हानपुर में था तब उसने बार बार प्रार्थना की कि यह कार्य उसे सौंपा जाय क्योंकि इसे वह दोनों लोकों की प्रसन्नता के समान समझता था। उसने जलसों तथा महफिलों में कई बार कहा था कि यदि वह इस युद्ध में मारा जायगा तो शहीद होगा और यदि विजय प्राप्त करेगा तो ग़ाज़ी होगा। उसने जो जो सहायता, तोपखाना आदि इस कार्य के लिए माँगा वह सब हमने उसे दिया। इसके अनंतर उसने लिखा कि बिना शाही झंडों के उस ओर आए इस कार्य का पूरा होना अत्यंत कठिन है और उसीकी सम्मति से हम अजमेर आए तथा यह देश इससे सम्मानित एवं सौभाग्यान्वित हुआ। अब उसीकी प्रार्थना पर शाहज़ादा गया है और उसीकी सम्मति के अनुसार सब कार्य किया गया है तब उसने क्यों युद्ध से पैर पीछे हटाया है तथा कलह में पड़ गया है? बाबा खुर्रम को हमने अब तक कभी अपने से अलग नहीं किया था और उसकी अनुभवशीलता के विश्वास पर हमने उसे वहाँ भेजा है इसलिए उसे चाहिए कि हमारे पुत्र के प्रति राजभक्ति तथा पूर्ण आस्था दिखलाते हुए दिन रात कभी अपने कर्तव्य में कमी न करे। यदि वह इसके विरुद्ध अपने वचन से पीछे हटेगा तो वह जान रखे कि फिर उपद्रव होगा। इब्राहीम हुसेन उसके पास गया और विस्तार के साथ उसे यह सब बातें समझाईं पर इसका कोई फल नहीं निकला क्योंकि वह अपनी मूर्खता तथा हठ पर अड़ा रहा। जब बाबा खुर्रम ने देखा कि उसका इस कार्य में रहना उपद्रव का कारण होगा

तब उसे निरीक्षण में रखा और सूचित किया कि उसका वहाँ रहना उचित नहीं है और केवल खुसरू के संबंध के कारण वह ऐसा कर रहा है तथा कार्य बिगाड़ रहा है। तब हमने महाबत खाँ को आज्ञा दी कि वह उदयपुर जाकर उसे लिवा लावे और बयूतात के दीवान मुहम्मद तकी को मंदसोर भेजा कि वहाँ से उसके परिवार तथा सेवकों को अजमेर लिवा लावे।

उसी महीने की ११ वीं को समाचार मिला कि रायसिंह का पुत्र दिलीप,[1] जो विद्रोही तथा राजद्रोही हो गया था, अपने छोटे भाई राव सूरजसिंह से पूर्णतया पराजित हो गया है, जो उसके विरुद्ध भेजा गया था, तथा हिसार सरकार के एक जिले में जाकर उपद्रव कर रहा है। इसी समय के लगभग वहाँ के फौजदार हाशिम खोस्ती तथा आस पास के जागीरदारों ने उसे पकड़ कर दरबार भेज दिया। इसने बार बार उपद्रव किया था इसलिए इसे प्राणदंड दिया गया जिसमें विद्रोहियों को इससे उपदेश मिले। इस सेवा के उपलक्ष में राव सूरजसिंह को मंसब में पाँच सदी २०० सवार की उन्नति मिली। इसी महीने की १४ वीं को हमारे पुत्र बाबा खुर्रम के यहाँ से सूचना आई कि राणा का प्रिय हाथी आलमगुमान अन्य सत्रह हाथियों सहित विजयी सेना के वीरों के हाथ में पड़ गया है और उसका स्वामी भी शीघ्र पकड़ा जायगा।

———

१—देखिए मुगल दरबार भाग १ पृ० सं० ३५९–६२। इसका नाम दलपतिसिंह था।

नवाँ जलूसी वर्ष

हमारी राजगद्दी से नवें वर्ष का आरंभ सन् १०२३ हि० में पड़ा। ६ सफर (२१ मार्च सन् १६१४ ई०) शुक्रवार की रात्रि में दो प्रहर एक घड़ी बीतने पर संसार को तप्त करनेवाला सूर्य मेष राशि में गया, जो सौभाग्य तथा सम्मान का घर है। फरवरदीन महीने का वह प्रथम दिन था। नौरोज़ का उत्सव अजमेर से आनंददायक स्थान में हुआ। संक्रांति काल ही में, जो शुभ घड़ी बतलाई गई थी, हम सौभाग्य की राजगद्दी पर बैठे। साधारण नियमानुसार महल अलभ्य वस्त्रों, रत्नों तथा जड़ाऊ वस्तुओं से सजाया गया था। शुभ साइत में आलम गुमान नामक हाथी, जो हमारे खास हथसाल में रखने योग्य था, अन्य सत्रह हाथी-हथिनियों के साथ, जिन्हें हमारे पुत्र बाबा खुर्रम ने राणा के हाथियों में से भेजा था, हमारे सामने उपस्थित किया गया, जिससे राजभक्तों को बड़ी प्रसन्नता हुई। नौरोज़ के दूसरे दिन सवार होना शुभ समझकर हम इस पर चढ़कर घूमने गए तथा बहुत सा धन लुटाया। ३ को हमने एतकाद खाँ का मंसब तीन हजारी १००० सवार का कर दिया और उसके पहले के दो हजारी ५०० सवार के मंसब को इस प्रकार बढ़ा दिया। साथ ही उसे आसफ खाँ की पदवी दी, जो उसके परिवार के दो आदमियों को पहले मिल चुकी थी। हमने दियानत खाँ का भी मंसब पाँच सदी २०० सवार से बढ़ा दिया। इसी समय एतमादुद्दौला का भी मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी २००० सवार का कर दिया। बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर हमने सैफखाँ बारहा का मंसब पाँच सदी २०० सवार से, दिलावर खाँ का इसी परिमाण से, कृष्णसिंह का ५०० सवार से और सरफराज़ खाँ का पाँच सदी ३०० सवार से बढ़ा दिया।

रविवार १०वीं को आसफखाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई और १४वीं को एतमादुद्दौला की। इन दोनों भेंटों में से हमें जो

पसंद आई वह ले ली और बची लौटा दी। चीन कुलीज खाँ अपने भाइयों संबंधियों तथा सेना एवं अपने पिता के सेवकों के साथ काबुल से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इब्राहीम खाँ के सात सदी ३०० सवार के मंसब को बढ़ाकर डेढ़ हजारी ६०० सवार का कर दिया और इसे ख्वाजा अबुल्हसन के साथ बख्शी के उच्च पद पर नियत कर दिया। इसी महीने की १४वीं को महाबत खाँ, जो खानआजम तथा उसके पुत्र अब्दुल्ला को लिवा लाने के लिए भेजा गया था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। १६ को दरबार हुआ। इसी दिन महाबत खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई और हमने रूप सुंदर नामक एक निर्जी हाथी अपने पुत्र पर्वेज के लिए भेजा। वह दिन व्यतीत होने पर हमने आज्ञा दी कि खानआजम आसफ खाँ को सौंप दिया जाय जिससे वह उसे ग्वालिअर दुर्ग में सुरक्षित रखे। इसे दुर्ग में भेजने का हमारा उद्देश्य केवल यह था कि खुसरू के प्रति स्नेह रखने के कारण राणा के कार्य में कोई उपद्रव या अशांति उत्पन्न न हो इसलिए हमने आदेश दिया कि वह कैदी के समान न रखा जाय प्रत्युत् उसके खानपान के संबंध में हर प्रकार से उसकी सुविधा तथा आराम का ध्यान रखते हुए सभी वस्तुएँ उसे दी जायँ। उसी दिन हमने चीनकुलीज खाँ का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी ७०० सवार का कर दिया। ताजखाँ के मंसब में, जो भक्कर प्रांत के शासन पर नियत हुआ था, पाँच सदी ४०० सवार बढ़ा दिए।

१८ उर्दिबिहिश्त को हमने खुसरू को सेवा में आने की मनाही कर दी। कारण यह था कि हमने अपने पितृ-स्नेह तथा प्रेम और उसकी माता तथा बहिनों की प्रार्थनाओं के कारण पुनः उसे प्रतिदिन कोर्निश करने के लिए अपने पास आने की आज्ञा दे दी थी परंतु उसके मुख से स्वच्छता तथा प्रसन्नता प्रगट नहीं होती थी और वह सदा

उदास तथा अन्यमनस्क बना रहता था इसलिए हमने उसे आज्ञा दे दी कि वह कोर्निश करने न आया करे। हमारे श्रद्धेय पिता के समय सुलतान हुसेन मिर्जा के पुत्र तथा शाह तहमास्प सफवी के भतीजे मुजफ्फर हुसेन मिर्जा तथा रुस्तम मिर्जा ने जो कंधार, जमींदावर तथा उसके आस पास के स्थानों पर अधिकृत थे, इस आशय का प्रार्थना पत्र भेजा कि खुरासान के सामीप्य तथा अब्दुल्ला खाँ उजबेग के उस ओर आने के कारण वे न उस प्रांत की रक्षा का भार छोड़ सकते और न सेवा में उपस्थित हो सकते हैं इसलिए यदि वह अपने किसी सेवक को भेज दें तो वे उसे इस प्रांत को सौंप कर सेवा में उपस्थित हों। उनके कई बार प्रार्थना करने पर उन्होंने शाहबेग खाँ को जो अब खानदौराँ की पदवी से विभूषित है, कंधार जमींदावर तथा आस पास के प्रांत का अध्यक्ष नियुक्त कर भेजा और मिर्जाओं को बुलाने के लिए कृपापूर्ण फर्मान भेजे। उनके आने पर प्रत्येक पर उनके योग्य कृपा की गई और कंधार की आय की दुगुनी-तिगुनी आय की भूमि जागीर में दी गई। अंत में आशा के अनुकूल वे प्रबंध न कर सके और उस प्रांत का शासन क्रमशः बिगड़ने लगा। हमारे श्रद्धेय पिता के समय ही मुजफ्फर हुसेन मिर्जा मर गया और रुस्तम मिर्जा खानखानाँ के साथ दक्षिण प्रांत में भेजा गया, जहाँ उसकी छोटी जागीर थी। जब हम गद्दी पर बैठे तब हमने उसे दक्षिण से इस विचार से बुला भेजा कि उस पर कृपा करें तथा किसी सीमास्थित प्रांत पर भेजें। जिस समय वह आया उसी समय मिर्जा गाजी तर्खान जो ठट्टा, कंधार तथा उसके आस पास के प्रांत का अध्यक्ष था, मर गया। हमारे विचार में आया कि इसे ठट्टा भेजें जिसमें यह वहाँ अपनी स्वाभाविक योग्यता प्रगट कर सके तथा उस प्रांत का उचित शासन करे। हमने उसका मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया, दो लाख रुपए व्यय के लिए दिए और ठट्टा प्रांत को भेज दिया। हमारा विश्वास था कि यह उस सीमा

पर अच्छा कार्य करेगा। परंतु हमारी आशा के विरुद्ध उसने कुछ भी सेवा नहीं की और ऐसा अत्याचार किया कि बहुतों ने उसकी दुष्टता के संबंध में प्रार्थनाएँ कीं। उसके बारे में ऐसी बातें सुनी गईं कि उसे बुला लेना आवश्यक हो गया। एक दरबारी सेवक उसे बुलाने पर नियत हुआ कि उसे दरबार में उपस्थित करे। २६ उर्दिबिहिश्त को उसे सामने लाए। इसने खुदा की प्रजा पर बहुत अत्याचार किया था और न्याय की दृष्टि में इसका विचार करना उचित था इसलिए यह अनीराय सिंहदलन को सौंपा गया कि वह इसके कार्यों की जाँच करे और यदि इसके दोष सिद्ध हो जाँय तो इसे तुरंत दंड दिया जाय जिससे दूसरों को उपदेश मिले।

उन्हीं दिनों अहदाद अफगान के परास्त होने का समाचार आया। इसकी घटनाएँ इस प्रकार हैं कि मोतक़िद खाँ पूलम उतार से पेशावर में आया और अफगानिस्तान में दूसरी सेना के साथ खानदौराँ पहुँच गया तथा इस दुष्ट के मार्ग को रोक लिया। इसी बीच मोतक़िद खाँ को एक पत्र पिशबुलाग़ से मिला कि अहदाद बहुत सी पैदल तथा सवार सेना के साथ कोटतीराह चला गया है, जो जलालाबाद से आठ कोस पर है और वहाँ के बहुत से राजभक्तों तथा आज्ञाकारियों में से कुछ को मार डाला है एवं दूसरों को कैद कर लिया है, जिन्हें तीराह भेजना चाहता है और स्वयं जलालाबाद तथा पिशबुलाग पर आक्रमण करना चाहता है। यह समाचार मिलते ही मोतक़िद खाँ बड़ी फुर्ती के साथ जो सेना उस समय तैयार थी लेकर उस ओर चल पड़ा। जब यह पिशबुलाग़ पहुँचा तब इसने शत्रु का पता लगाने के लिए चर भेजे। ६ बुधवार को सवेरे पता लगा कि अहदाद उसी स्थान में है। ईश्वर की कृपा पर विश्वास रखकर जो सर्वदा इस प्रार्थी के पक्ष में रही है, उसने शाही सेना के दो भाग किए और शत्रु की ओर चल

पड़ा। शत्रु चार-पाँच सहस्र अनुभवी सैनिकों के साथ उद्दंडता तथा असावधानी से बैठा हुआ था और उसे खानदौराँ के सिवा यह शंका भी नहीं थी कि दूसरी सेना भी पास में है जो उसका सामना कर सकती है। जब उसने सुना कि शाही सेना उस दुष्ट पर आ रही है और सेना के चिन्ह प्रगट होने लगे तब उसने घबड़ाकर अपने आदमियों को चार झुण्ड में बाँट दिया और स्वयं एक गोली की दूरी पर एक उच्च स्थान में बैठकर, जहाँ तक पहुँचना कठिन था, अपने आदमियों को युद्ध करने भेजा। विजयी सेना के बंदूकचियों ने विद्रोहियों पर गोलियों की बौछार की और बहुतों को नर्क भेज दिया। मोतक़िद खाँ ने अपने मध्य के साथ शत्रु के अग्गल पर धावा कर दिया और उसे दो-तीन बार तीर छोड़ने से अधिक समय न देकर उसका सफाया कर दिया तथा तीन-चार कोस पीछा कर प्रायः डेढ़ सहस्र सवार-पैदल मार डाले। बचे हुए घायल होकर तथा शस्त्रों को फेंककर भाग गए। विजयी सेना उसी युद्ध स्थल में रात्रि भर रही और दूसरे दिन सवेरे छ सौ सिर लेकर पेशावर की ओर गई, जहाँ उन सिरों का मीनार बनाया गया। पाँच सौ घोड़े, असंख्य अन्य पशु, संपत्ति तथा बहुत से शस्त्र लूट में मिले। ताराह के कैदी सब छूट गए और इस पक्ष के कोई प्रसिद्ध मनुष्य नहीं मारे गए।

१ म खुरदाद गुरुवार की रात्रि में हम शेर का अहेर खेलने पुष्कर की ओर गए और शुक्रवार को दो को गोली से मारा। इसी दिन हमें समाचार मिला कि नकीब खाँ मर गया। उक्त खाँ सैफी सैयदों में से था और मूलतः कजवीन का निवासी था। इसके पिता अब्दुल्-लतीफ का मकबरा अजमेर में था। इसकी मृत्यु के दो महीने पहले इसकी स्त्री, जिन दोनों में अत्यधिक प्रेम था और जो बारह दिनों तक बहुत बीमार रही, मृत्यु के मुख में जा चुकी थी। हमने आज्ञा

दी कि इसे भी इसकी स्त्री के कब्र के पास गाड़ें, जिसे ख्वाजा के पवित्र मकबरे में गाड़ा गया था।

मोतकिद खाँ ने अहदाद के विरुद्ध सफल युद्ध करने की अच्छी सेवा की थी इसलिए उसे लश्कर खाँ की उच्च पदवी दी। दियानत खाँ, जो बाबा खुर्रम की सेवा में तथा कुछ आज्ञाएँ ले जाने के लिए उदयपुर भेजा गया था, ७खुरदाद को लौटकर आया और बाबा खुर्रम के चलाए हुए नियम-उपनियम आदि का अच्छा वर्णन किया। फिदाई खाँ जो हमारी शाहजादगी में हमारा सेवक था और जिसे हमने राजगद्दी पर बैठने पर इस सेना का बख्शी नियत किया था तथा जिसने कृपा प्राप्त की थी, इसी महीने की १२ वीं को मर गया। मिर्जा रुस्तम ने अपने कुकर्मों के लिए पश्चात्ताप तथा शोक प्रगट किया और उदारता ने उसके दोषों को क्षमा कर देने का जोर दिया इस लिए इस महीने के अंत में हमने उसे अपने सामने बुलवाया और उसे सान्त्वना तथा खिलअत देकर कोर्निश करने की आज्ञा दी। ११ वीं तीर रविवार की रात्रि में हमारी खास हथसाल की एक हथिनी ने हमारे सामने एक बच्चा दिया। हमने बार-बार आदेश दिया था कि हाथियों के बच्चे कितने दिनों में होते हैं इसका पता लगावें। अंत में ज्ञात हुआ कि मादा बच्चों में अठारह महीने तथा नर बच्चे में उन्नीस महीने लगते हैं। मनुष्यों के बच्चों का जन्म अधिकतर सिर की ओर से होता है पर इसके विरुद्ध हाथियों के बच्चे पैरों के बल पैदा होते हैं। जब बच्चा पैदा हुआ तब उसकी माँ ने उसपर पैरों से गर्दा उड़ाया और तब उसपर कृपा कर प्यार करने लगी। बच्चा कुछ देर तक पड़ा रहा और तब उठकर माँ के थन की ओर चला।

१४ वीं मिती को गुलाब पाशी का जलसा हुआ और इसे पहले आबपाशी कहते थे, जो पूर्वकाल की प्रचलित प्रथाओं में से एक था।

५ अमूरदाद को राजा मानसिंह की मृत्यु का समाचार मिला। उक्त राजा हमारे श्रद्धेय पिता के मुख्य सर्दारों में से एक था। हमने साम्राज्य के बहुत से सेवकों को दक्षिण के कार्य पर भेजा था, इसलिए इसे भी वहीं नियत किया था। उसी सेवा में इसकी मृत्यु होने पर हमने मिर्जा भाऊसिंह को बुला भेजा, जो उसका वैधानिक उत्तराधिकारी था।[1] जब हम शाहजादा थे तभी से इसने हमारी बहुत सेवा की थी। उस वंश की सर्दारी तथा नेतृत्व हिंदू विधानानुसार महासिंह को मिलना चाहिए था। यह राजा के बड़े पुत्र जगतसिंह का पुत्र था, जो अपने पिता के जीवनकाल ही में मर गया था। परंतु हमने इसे नहीं माना और भाऊसिंह को मिर्जाराजा की पदवी देकर उसका मंसब चार हजारी ३००० सवार का कर दिया। इसे हमने आमेर दे दिया, जो इसके पूर्वजों का निवासस्थान था। महासिंह को सान्त्वना तथा संतोष दिलाने के लिए उसका मंसब पाँच सदी से बढ़ा दिया और गढ़ा[2] प्रांत पुरस्कार में दिया। हमने उसके लिए एक जड़ाऊ खंजर, कमरबंद, एक घोड़ा तथा खिलअत भेजा।

अमुर्दाद महीने की ८ वीं को हमें अपने स्वास्थ्य में कुछ भिन्नता जान पड़ी और क्रमशः हमें ज्वर तथा सिर की पीड़ा हो गई। इस भय से कि देश को तथा ईश्वर की प्रजा को कुछ हानि न पहुँचे, हमने इसे अपने परिचितों तथा पार्श्ववर्तियों से छिपा रखा और वैद्यों तथा हकीमों को भी सूचित नहीं किया। इसी प्रकार कई दिन बीत गए और हमने केवल नूरजहाँ बेगम से बतलाया, जिससे अधिक हमारे विचार में कोई भी हम पर प्रेम नहीं रखता था। हमने गरिष्ठ

१—देखिए मुगल दरबार पृ० २३२ और २८०।

२—यह भट्टा होना चाहिए। महासिंह को बाँधव मिला था, जो भट्टा में है।

भोजन त्याग दिया और हलका भोजन कर नित्यप्रति हम नियमानुसार दीवानखाने में जाते और झरोखा तथा गुसलखाने में बैठते थे, यहाँ तक कि निर्बलता के चिन्ह शरीर पर दिखलाई पड़ने लगे। कुछ बड़े लोगों को जब यह ज्ञात हुआ तब उन्होंने हमारे दो एक विश्वसनीय हकीमों को इसकी सूचना दे दी जैसे हकीम मसीहुज्जमाँ, हकीम अबुल्कासिम तथा हकीम अब्दुश्शकूर। ज्वर कुछ भी घटा बढ़ा नहीं था और हमने तीन रात बराबर यथानियम मदिरापान किया, जिससे निर्बलता और भी बढ़ गई। ऐसे अशांति के समय और जब निर्बलता अधिक बढ़ गई तब हम ख्वाजा के दरगाह में गए और उस पवित्र स्थान में ईश्वर से अपने आरोग्य के लिए प्रार्थना की तथा दान करने का वचन लिया। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने अपनी कृपा तथा शुद्ध दयालुता से हमें आरोग्य का खिलअत दिया और हम क्रमशः अच्छे होने लगे। सिर की पीड़ा जो असह्य हो गई थी हकीम अब्दुश्शकूर की औषधि से कम हो गई और बाईस दिन में हमारा स्वास्थ्य पहले के समान हो गया। महल के सेवकगण और वास्तव में सभी लोगों ने इस विशेष कृपा के लिए भेंट दिए पर हमने इसे स्वीकार नहीं किया तथा लोगों को आज्ञा दी कि हर एक मनुष्य अपने अपने गृहों पर इच्छानुसार गरीबों को दान दे। १० शहरिवर को समाचार मिला कि ठट्टा का प्रांताध्यक्ष ताजखाँ[1] अफगान मर गया। यह साम्राज्य के पुराने सर्दारों में से एक था।

बीमारी की अवस्था में हमारे मन में यह आया था कि जब हम पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायँगे तब इस कारण कि हम ख्वाजा के आंतरिक रूप में कान-छिदे सेवक हैं तथा हमारा अस्तित्व ही उन का ऋणी

१—तारावेग ताजखाँ नाम था। देखिए मुगल दरबार भा० २ पृ० २८४-५।

है, हमें प्रगट रूप में कान छिदवाना चाहिए और उनके कान-छिदे अनुयायियों में परिगणित हो जाना चाहिये। बृहस्पतिवार १२ शहरिवर को, जो रजब महीना होता है, हमने कान छिदवाए और दोनों में आबदार मोती पहिरे। जब महल के सेवकों तथा हमारे राजभक्त मित्रों ने यह देखा तब जो हमारी सेवा में उपस्थित थे तथा जो दूर सीमा प्रांतों में थे दोनों ने बड़े लगन एवं रुचि से अपने कान छिदवाए और सत्यता के सौंदर्य को मोतियों तथा लालों से सजाया, जो हमारे निजी राजकोष के थे एवं उन्हें दिए गए थे। यहाँ तक कि क्रमशः यह छूत के समान अहदियों तथा दूसरों को अच्छा लगा।

उसी महीने की २२ वीं को बृहस्पतिवार को, जो १० शाबान होता है, सौर तुलादान का जलसा हमारे दीवान खास में हुआ और कुल साधारण कृत्य किए गए। उसी दिन मिर्जाराजा भाऊ सिंह संतुष्ट तथा प्रसन्न होकर अपने देश लौट गया तथा वचन दे गया कि वह दो तीन महीने से अधिक नहीं रुकेगा। मेह्न महीने की २७ वीं को समाचार मिला कि फरेदूँ खाँ बर्लास उदयपुर में मर गया। बर्लास जातिवालों में केवल एक यही सर्दार बच गया था। इस जाति का साम्राज्य पर कुछ स्वत्व था और बराबर संबंध रहा इसलिए हमने इसके पुत्र मेह्र अली पर कृपा कर उसे एक हजारी १००० सवार का मंसब दिया। खानदौराँ की अच्छी सेवाओं के कारण उसका मंसब एक हजारी बढ़ा दिया जिससे उसका मंसब बढ़कर छ हजारी ५,००० सवार का हो गया।

६ आबान को करावलों ने सूचना दी कि यहाँ से छ कोस पर तीन शेर पाए गए हैं। दोपहर को रवाना होकर हमने उन तीनों को गोली से मार डाला। इसी महीने की ८ वीं को दीवाली का त्योहार आया। हमने महल के निवासियों को दो तीन रात्रि तक हमारे सामने आपस

में खेलने की आज्ञा दे दी जिसमें हार जीत खूब हुई। इसी महीने की ८ को लोग सिकंदर मुईन करावल के शव को उदयपुर से अजमेर लाए, जो हमारे पुराने सेवकों में से था और हमारी शाहजादगी के समय हमारी अच्छी सेवा की थी। हमारा पुत्र सुलतान खुर्रम उदयपुर ही में ठहरा हुआ था। हमने करावलों तथा उसकी जातिवालों को आदेश दिया कि उसके शव को राणा सगरा के तालाब के किनारे गाड़ दें। यह हमारा अच्छा सेवक था। १२ आजर को कूच (बिहार) के भूम्याधिकारी की, जिसका देश पूर्वीय प्रांतों की सीमा पर था, दो पुत्रियाँ, जिन्हें इस्लामखाँ ने अपने जीवनकाल ही में छीन लिया था, उसके पुत्र तथा चौरानबे हाथियों के साथ हमारे सामने उपस्थित की गईं। इसमें से कुछ हाथी हमारे खास हथसाल में रखे गए। उसी दिन इस्लामखाँ का पुत्र होशंग बंगाल से आया और सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त कर दो हाथी, सौ मुहर तथा सौ रुपए भेंट दिए। दै महीने की एक रात्रि में हमने स्वप्न देखा कि गत सम्राट् हमसे कह रहे हैं कि बाबा, हमारे विचार से अजीज खाँ को क्षमा कर दो, जो खान-आजम है। इस स्वप्न के अनंतर हमने उसे दुर्ग में से बुलाने का निश्चय किया।

अजमेर के पास एक घाटी है, जो अत्यंत रमणीक है। इस घाटी के अंत में एक सोता फूटता है जिसका जल एक लंबे चौड़े तालाब में इकट्ठा होता है और यह अजमेर में सबसे अच्छा जल है। यह घाटी तथा सोता हाफिज जमाल के नाम से प्रसिद्ध है। जब हम उस स्थान को गए तब हमने एक अच्छी इमारत वहाँ बनाने की आज्ञा दी क्योंकि वह स्थान बसाने योग्य था। एक वर्ष के भीतर एक प्रासाद तथा भूमि वहाँ बन गई जिसके समान संसार-भ्रमणकारी भी दूसरा स्थान नहीं बतला सकता था। उन्होंने चालीस गज लंबी तथा चालीस

गज चौड़ी एक बावली बनाई और उसमें सोते का पानी नल के द्वारा उठकर आता था। सोता दस-बारह गज ऊँचा उठता था। इस बावली के किनारे पर इमारतें थीं और इसी प्रकार ऊपर तालाब तथा सोते के पास भी कई सुंदर स्थान, आकर्षक बड़े कमरे तथा कोष्ठ बनाए गए थे, जो बड़े आनंददायक थे। ये निर्मित होने पर कुशल चित्रकारों तथा निपुण कलाकारों द्वारा सुन्दर ढंग से सजा दिए गए थे। हमारी इच्छा थी कि इसका नाम ऐसा रखा जाय कि वह हमारे नाम से संबंध रखे, इसलिए इसे 'चश्मए नूर' (प्रकाश का स्रोत) नाम दिया। संक्षेप में इसमें केवल एक दोष था और वह यह था कि इसे किसी बड़े नगर में होना चाहिए था या ऐसे स्थान में जिधर से बहुत से लोग आया जाया करते थे। जिस दिन से कि यह तैयार हुआ हम बहुधा गुरुवार तथा शुक्रवार यहीं व्यतीत करते थे। हमने आज्ञा दी कि इसके पूरे होने की तारीख लोग कहें। सुवर्णकारों के अध्यक्ष सईदा गीलानी ने एक मिसरे में यह तारीख कही—महले शाह नूरुद्दीन जहाँगीर (सन् १०२४ हि०)। हमने आज्ञा दी कि एक पत्थर पर इसे खोदकर इमारत के द्वार पर लगा दें।

दै महीने के आरंभ में ईरान से कुछ व्यापारी आए और यज्द के अनार तथा कारिज के खरबूजे, जो खुरासान के खरबूजों में सब से अच्छे होते हैं, ले आए। ये इतने थे कि दरबार के सेवकों तथा सीमाओं पर के सर्दारों सभी को कुछ न कुछ मिले और सभी ने उस महान दाता को धन्यवाद दिया। हमने ऐसे खरबूजे तथा अनार नहीं देखे थे। ऐसा ज्ञात होता था कि मानों हमने कभी पहले अनार या खरबूजे खाए ही नहीं थे। प्रत्येक वर्ष हम बदख्शाँ से खरबूजे तथा काबुल से अनार मँगवाते थे परंतु वे यज्द के अनार तथा कारिज के खरबूजे के समान नहीं थे। हमारे श्रद्धेय पिता को फलों से बड़ी रुचि थी और हमें बड़ा

दुःख है कि उनके विजयी समय में ईरान से ऐसे फल हिंदुस्थान में नहीं आए कि वे भी इन्हें चखते तथा आनंद लेते। वैसा ही दुःख हमें जहाँगीरी इत्र के लिए भी है कि ऐसे इत्र को सूँघ कर वे संतुष्ट न हो सके। नूरजहाँ बेगम की माता के प्रयत्नों से हमारे राज्यकाल में यह इत्र प्रस्तुत हुआ था। वह जब गुलाब उतरवा रही थी तब करावे में से गर्म गुलाब जब बर्तनों में उलेंड़ा गया तब जल के ऊपर चिकनाहट उतरा आई। थोड़ा थोड़ा कर इसे उसने संग्रह कर लिया और जब अधिक गुलाब उतारा गया तब यह इत्र काफी इकट्ठा हो गया। इसकी सुगंधि इतनी तीव्र थी कि एक बूंद भी हाथ में मल लेने पर वह सारे जलसे को महका देती थी मानों बहुत सी गुलाब की कलियाँ एक बार ही खिल उठी हों। इसके समान कोई दूसरी सुगंधि अच्छी नहीं है। यह मुर्झाए हृदयों को हरा कर देती है और सूखे प्राणों में जान डालती है। इस आविष्कार के लिए हमने आविष्कर्त्री को मोतियों की एक माला भेंट दी। सलीमा सुलतान बेगम वहाँ उपस्थित थीं और उन्हीं ने इसका इत्रे जहाँगीरी नाम रखा।

भारत की जलवायु में बड़ी विभिन्नता है। इस दै महीने में लाहौर में, जो फारस तथा हिंदुस्थान के बीच में पड़ता है, एक वृक्ष में ऐसे मीठे तथा स्वादु फल लगे थे जैसे उसके ऋतु में होते हैं। कुछ दिन लोग इसे खाकर बड़े प्रसन्न हुए। उस स्थान के वाकेआनवीसों ने यह लिखा था। इन्हीं दिनों बख्तर खाँ कलावंत, जो आदिल खाँ का सगा संबंधी था और जिससे उसने अपने भाई की पुत्री का निकाह कर दिया एवं जिसे गायन तथा ध्रुपद में अपना गुरु बनाया था, दरवेश के रूप में दिखलाई पड़ा। उसे बुलवा कर तथा उसकी अवस्था का पता लेकर हमने उसे सम्मानित करने का प्रयत्न किया। पहले ही दरबार में हमने उसे दस सहस्र रुपए नगद, सभी प्रकार के पचास वस्त्र तथा

मोती की एक माला देकर आसफ खाँ का अतिथि बनाया और उसकी परिस्थिति जानने की आज्ञा दी। यह ज्ञात नहीं हो सका कि वह आदिल खाँ की बिना आज्ञा के आया है या आदिल खाँ ने उसे इस वेश में इस दरबार की उसके प्रति नीति जानने के लिए भेजा है कि यहाँ से पता लगा लावे। आदिल खाँ से इसका जो सबंध था उससे यही विशेष संभव था कि यह उसके अज्ञान में नहीं आया है। मीर जमालुद्दीन हुसेन की सूचना से, जो बीजापुर में हमारी ओर से इस समय राजदूत था, हमारे विचार की पुष्टि होती है क्योंकि वह लिखता है कि आदिल खाँ ने बख्तर खाँ पर हमारे कृपा के कारण उस पर भी कृपा की है। प्रति दिन वह उस पर अधिक-अधिक कृपा करता है, अपने पास रात्रि में रखता है और उसे ध्रुपद सुनाता है, जिन्हें उसने बनाया है और नौरस कहता है। 'और सब बातें तब लिखी जायँगी जब यहाँ से बिदाई हो जायगी।'

इन्हीं दिनों वे जीरबाद देश से एक पक्षी लाए, जो सुग्गे के रंग का होते भी उससे छोटा होता है। उसकी एक विशेषता यह है कि वह अपने पैरों से शाखा को या जिस पर वह बैठाई जाती है उसको अपने पैरों से पकड़ लेती है और उलट जाती है तथा इसी प्रकार सारी रात्रि लटकी रहती है एवं अपने से गुनगुनाती रहती है। जब दिन होता है तब शाखा के ऊपर बैठ जाती है। यद्यपि लोग कहते हैं कि पशुगण भी पूजा करते हैं तब भी यह हो सकता है कि यह कार्य स्वाभाविक हो। यह पानी नहीं पीती और इस पर जल विष सा प्रभाव करता है यद्यपि अन्य पक्षी पानी पर ही जीवित रहते हैं।

बहमन महीने में एक के बाद दूसरे शुभ समाचार बराबर आने लगे। प्रथम यह था कि राणा अमरसिंह ने दरबार की अधीनता तथा सेवा स्वीकार कर ली थी। इस कार्य की घटनावली इस प्रकार है।

हमारे भाग्यवान पुत्र सुलतान खुर्रम ने बहुत से थाने बिठा कर, विशेष कर उन स्थानों में जहाँ अधिकतर लोग खराब जलवायु तथा भयानक जंगलीपन के कारण थाने बिठाना असंभव बतलाते थे, और शाही सेनाओं को, एक के बाद दूसरी को, बिना गर्मी या घोर वर्षा का विचार किए पीछा करने के लिए भेज कर एवं उस प्रांत के निवासियों के परिवारों को कैद कर राणा को ऐसा दबा दिया कि उसे स्पष्ट हो गया कि अब यदि पुनः ऐसा होगा तो उसे अपना देश छोड़ कर भागना पड़ेगा या कैद होना होगा। निरुपाय होकर उसने अधीनता तथा राजभक्ति स्वीकार करना उचित समझा और अपने मामा शुभ-करण को अपने विश्वसनीय अनुयायी हरिदास झाला के साथ हमारे भाग्यवान पुत्र के पास भेजा तथा प्रार्थना की कि यदि वह उसके दोषों की क्षमा दिला दे एवं उसके मन को शांत कर शुभ क्षमापत्र मँगा दे तो वह स्वयं हमारे पुत्र के पास उपस्थित होवे और अपने पुत्र तथा उत्तराधिकारी कर्ण को दरबार भेजे या अन्य राजाओं के समान वह अपने को दरबारी सेवकों में गिना कर सेवा करे। उसने यह भी प्रार्थना की कि उसे वृद्धावस्था के कारण दरबार में उपस्थित होने से क्षमा किया जाय। इस पर हमारे पुत्र ने उनको अपने दीवान मुल्ला शुक्रुल्ला, जिसे इस कार्य के पूरे होने पर अफजल खाँ की पदवी दी गई थी, और सुंदरदास के साथ, जिसे इस कार्य की समाप्ति पर रायरायान पदवी दी गई, दरबार भेज दिया तथा सब बातें कहला दीं। हमारे उच्च विचार सदा इस बात के इच्छुक थे कि यथासंभव पुराने वंश नष्ट न किए जायँ। वास्तविक बात तो यह थी कि राणा अमरसिंह तथा उसके पूर्वजों ने अपने पार्वत्य देश तथा निवासस्थानों की दुर्गमता के घमंड में हिंदुस्थान के किसी राजा की अधीनता नहीं स्वीकार की और न उनसे मिले थे परंतु हमारे राज्यकाल में वैसा होना संभव हो गया। अपने पुत्र की प्रार्थना पर हमने राणा के दोषों को क्षमा कर दिया

और एक कृपापूर्ण आज्ञापत्र उसके संतोषार्थ भेजा, जिस पर हमारे पंजे का चिन्ह बना हुआ था। हमने अपने पुत्र को भी एक आदेशपत्र भेजा कि वह इस कार्य को सुलझा लेगा तो हम बहुत प्रसन्न होंगे। हमारे पुत्र ने उन दोनों को मुल्ला शुकुल्ला तथा सुंदरदास के साथ राणा के पास भेजा कि वे उसे सान्त्वना दें तथा शाही कृपा प्राप्त करने की आशा दिलावें। उन सब ने पंजे के चिन्ह से युक्त आज्ञापत्र उसे दिया और यह निश्चय हुआ कि रविवार २६ बहमन को वह तथा उसके पुत्र आवेंगे तथा हमारे पुत्र की सेवा में उपस्थित होंगे।

दूसरा शुभ समाचार यह था कि बहादुर मर गया, जो गुजरात के शासकों के वंश का था और उपद्रव तथा अशांति का जड़ था। सर्व शक्तिमान् परमेश्वर ने कृपा कर उसे नष्ट कर दिया और वह स्वाभाविक रोग से मरा। तीसरा शुभ समाचार वर्जा के पराजय का था जिसने सूरत के दुर्ग तथा बंदर का लेने का बहुत प्रयत्न किया था। सूरत बंदर की खाड़ी में अंग्रेजों से, जिन्होंने वहाँ शरण लिया था, और वर्जा से युद्ध हुआ था। अंग्रेजों की अग्निवर्षा से अधिकांश जहाज जल गए। इस प्रकार निराश्रय होने से युद्ध की शक्ति न रहने पर वह भाग गया। उसने गुजरात के बंदरों के अध्यक्ष मुकर्रबखाँ के पास किसी को भेजा, संधि करने का प्रयत्न किया और कहलाया कि वह शांति के लिए आया है, युद्ध के लिए नहीं। ये अंग्रेज ही थे जिन्होंने युद्ध ठान दिया था। एक अन्य समाचार यह भी था कि कुछ राजपूत, जिन्होंने अंबर पर आक्रमण कर उसे मार डालने का निश्चय किया था और जो घात में बैठे थे, अवसर पाकर उसके पास पहुँच गए तथा उनमें से एक ने उसे घायल कर दिया। अंबर के साथवालों ने राजपूतों को मार डाला और उसे उसके निवासस्थान पर लिवा गए। थोड़ा अधिक और प्रयत्न उसे समाप्त कर देता।

इसी महीने के अंत में जब हम अजमेर के पास अहेर खेलने में लगे थे तब हमारे भाग्यवान पुत्र का एक सेवक मुहम्मद वेग आया और हमारे पुत्र के पास से यह सूचना लाया कि राणा अपने पुत्रों के साथ आकर शाहजादे की सेवा में उपस्थित हुआ है। इसका विवरण सूचना से ज्ञात होगा। हमने तत्काल किब्ले की ओर मुख फेरा और धन्यवाद में सिज्दा किया। हमने एक घोड़ा, एक हाथी तथा एक जड़ाऊ खंजर उक्त मुहम्मद वेग को दिया और उसे जुल्फिकारखाँ की पदवी दी। सूचना से ज्ञात हुआ कि रविवार २६ बहमन को राणा ने हमारे भाग्यवान् पुत्र की नम्रता के साथ तथा सेवकों के नियमानुसार सेवा की और अपने गृह का प्रसिद्ध बड़ा लाल अन्य जड़ाऊ वस्तुओं तथा सात हाथियों के साथ भेंट दिया, जिनमें कई निजी हयसाल के योग्य थे, जो हमलोगों के हाथ में नहीं पड़े थे और केवल इतने ही उसके पास बच गए थे। भेंट में इन सबके साथ नौ घोड़े भी थे।

हमारे पुत्र ने भी उसके साथ बड़े कृपापूर्वक बर्ताव किया। जब राणा ने उसके पैर पकड़े तथा अपने दोषों के लिए क्षमा माँगी तब उसे उठाकर छाती से लगा लिया और उसे शांत करने के लिए बहुत समझाया। उसने एक बहुत अच्छा खिलअत, एक जड़ाऊ तलवार, जड़ाऊ जीन सहित एक घोड़ा तथा चाँदी के साज सहित एक निजी हाथी उसे दिया। उसके साथ खिलअत पाने योग्य एक सौ से अधिक मनुष्य नहीं थे इसलिए खुर्रम ने एक सौ सरोपा खिलअत, पचास घोड़े तथा बारह जड़ाऊ खपवे दिए। भूम्याधिकारियों में यह प्रथा है कि टीकायत पुत्र अपने पिता के साथ दूसरे राजा या राजकुमार का अभिवादन करने नहीं जाता इसलिए राणा भी इसी प्रथा का विचार कर कर्ण को अपने साथ नहीं लाया, जिसे यौवराज्य का टीका हो चुका था। इस कारण कि उसी दिन के अंत में ज्योतिषियों ने हमारे सौभाग्यवान

पुत्र के यात्रा आरंभ करने की साइत दी थी उसने राणा को जाने की छुट्टी दे दी, जिसमें वह स्वयं लौटकर कर्ण को भेज दे। उसके जाने के बाद कर्ण भी सेवा में उपस्थित हुआ। इसे भी एक बहुत अच्छा खिल-अत, जड़ाऊ तलवार तथा खंजर, सुनहली जीन सहित एक घोड़ा तथा एक खास हाथी दिया। उसी दिन कर्ण को साथ लेकर वह इस प्रसिद्ध दरबार की ओर चला।

३ इसफंदारमुज को हम अहेरस्थान से अजमेर को लौटे। १७ बहमन से इस दिन तक अहेर खेलने में हमने एक शेरनी, तीन बच्चे तथा तेरह नील गायें मारीं। सौभाग्यवान शाहजादा ने उसी महीने १०वीं मिती शनिवार को अजमेर नगर के पास देवरानी गाँव में पहुँचकर पड़ाव डाला। हमने आज्ञा निकाली कि सभी सर्दार जाकर उससे मिलें और हर एक अपनी अपनी स्थिति तथा दशा के अनुकूल भेंट दें। साथ ही आदेश था कि दूसरे दिन रविवार ११वीं को शाहजादा हमारी सेवा में उपस्थित हो। दूसरे दिन शाहजादा बड़े वैभव के साथ उस सारी सेना सहित जो इस कार्य पर उसके साथ नियुक्त हुई थी, दीवान आम में उपस्थित हुआ। हमारी सेवा में उपस्थित होने की साइत दो प्रहर दो घड़ी दिन के व्यतीत होने पर थी और उसने आकर सेवा में उपस्थित होने, अभिवादन करने तथा कदम्बोसी करने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसने एक सहस्र अशर्फी तथा एक सहस्र रुपये भेंट में और एक सहस्र मुहर तथा एक सहस्र रुपए निछावर के दिए। हमने उस पुत्र को पास बुलाया तथा गले लगाया और उसके सिर तथा मुख को चूम कर उसका विशिष्ट कृपाओं से स्वागत किया। जब उसने अभिवादन, भेंट, निछावर आदि से छुट्टी पाई तब उसने प्रार्थना की कि कर्ण को भी सेवा में उपस्थित होने तथा अभिवादन करने का सौभाग्य प्राप्त कर सम्मानित होने का अवसर दिया जाय। हमने उसे लाने की आज्ञा दी और

बख्शियों ने राजनियमानुसार उसे हमारे सामने उपस्थित किया। अभिवादन आदि करने के अनंतर पुत्र खुर्रम की प्रार्थना पर हमने आज्ञा दी कि उसे सामने सत्र के आगे के घेरे के दाहिनी ओर खड़ा करें। इसके अनंतर हमने खुर्रम को अपनी माताओं के पास जाने के लिए कहा और उसे एक खास खिलअत दिया, जिसमें जड़ाऊ चारकब, सुनहले कारचोब का अबा तथा मोतियों की माला थी। अभिवादन करने के अनंतर उसे खास खिलअत, जड़ाऊ काठी सहित एक खास घोड़ा तथा एक खास हाथी भी दिया। हमने कर्ण को भी एक बहुत अच्छी खिलअत तथा एक जड़ाऊ तलवार दिया। अमीरों तथा मंसबदारों को भी सिज्दा करने, अभिवादन करने एवं भेंट देने का सौभाग्य मिला। इनमें से हर एक अपनी सेवा तथा पद के अनुसार कृपा पाकर सम्मानित हुआ। यह आवश्यक था कि कर्ण के हृदय को आकर्षित किया जाय, जो वन्य प्रकृति का था, जिसने कभी जलसों को नहीं देखा था एवं पहाड़ों ही का रहने वाला था, इस लिए हम प्रति दिन उस पर नई कृपाएँ करते रहे। उसकी उपस्थिति के दूसरे दिन एक जड़ाऊ खंजर तथा तीसरे दिन जड़ाऊ जीन सहित एक खास घोड़ा उसे दिया गया। जिस दिन वह जनाने महल के दरबार में गया उस दिन नूरजहाँ बेगम की ओर से एक बहुमूल्य खिलअत, एक जड़ाऊ तलवार, जीन सहित घोड़ा तथा एक हाथी दिया गया। इसके अनंतर हमने इसे मूल्यवान मोती की माला उपहार में दिया। दूसरे दिन साज सहित हमने एक खास हाथी दिया। हमारा विचार था कि उसे हर प्रकार की वस्तु दी जाय। हमने उसे तीन बाज तथा शाहीन, एक खास तलवार, एक कवच, एक खास आभूषण तथा दो अँगूठियाँ दीं, जिनमें एक में लाल एवं एक में पन्ना जड़ा हुआ था। महीने के अंत में हमने आज्ञा दी कि सभी प्रकार के कपड़े, मसनद तथा तकिए, हर प्रकार के इत्र, सोने के

बर्तन, दो गुजराती वस्त्र तथा कपड़े सभी एक सौ थालियों में सजाए जायँ। अहदियों ने इन सब को हाथों में तथा कंधों पर लेकर दरबार में पहुँचा दिया, जो सब उसे उपहार में दिए गए।

साबित खाँ[1] स्वर्ग-तुल्य जलसों में सदा एतमादुद्दौला तथा उसके पुत्र आसफ खाँ के संबंध में अयोग्य बातें तथा अनुचित संकेत किया करता था। दो एक बार इससे अपनी अप्रसन्नता प्रगट करते हुए हमने उसे ऐसा करने से मना किया पर इतना उसके लिए काफी नहीं था। इस कारण कि हम एतमादुद्दौला की अपने प्रति अच्छी सम्मति बनाए रखना चाहते थे और उसके परिवार से हमारा पास का संबंध था, यह बात हमें बहुत खटकती थी। एक रात्रि वह अकारण तथा निरुद्देश्य उससे कठोर बातें कहने लगा और इतना अधिक कह गया कि एतमादुद्दौला के मुख पर दुःख तथा क्रोध के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे इससे हमने दूसरे दिन सवेरे ही दरबार के एक सेवक की सुरक्षा में उसे आसफ खाँ के पास भेज कर कहला दिया कि इसने पहली रात्रि में उसके पिता को कठोर बातें कही हैं इस लिए वह जैसा चाहे इसे अपने कैद में रखे या ग्वालियर दुर्ग में भेज दे और जब तक यह उसके पिता को प्रसन्न न कर लेगा तब तक हम इसे क्षमा न करेंगे। आज्ञा के अनुसार आसफ खाँ ने इसे ग्वालिअर दुर्ग में भेज दिया।

इसी महीने में जहाँगीर कुली खाँ का मंसब बढ़ाया गया और उसे ढाई हजारी २००० सवार का मंसब दिया गया। अहमद बेग खाँ ने, जो सम्राज्य के पुराने सेवकों में से है, काबुल प्रांत को जाते समय कुछ दोष किए थे और कुलीज खाँ ने, जो सेनाध्यक्ष था, बार-बार इसके कुव्यवहार के संबंध में लिखा था। इस पर आवश्यक समझ कर

---

१. पाठा०—दियानत खाँ।

हमने उसे दरबार बुला लिया और उसे दंड देने के लिए महाबत खाँ को सौंपा कि रणथंभौर दुर्ग में कैद कर दे। बंगाल के प्रांताध्यक्ष कासिम खाँ ने दो लाल भेंट में भेजे थे, जो हमारे सामने उपस्थित किए गए। हमने एक नियम बना रखा था कि दो घड़ी रात्रि बीतने पर वे उन दर्वेशों तथा याचकों को, जो हमारे प्रसिद्ध महल में एकत्र हुए हों, हमारे सामने उपस्थित करें, इससे इस वर्ष भी उसी प्रकार हमने अपने हाथ से तथा अपने सामने दर्वेशों को पचपन सहस्र रुपये, एक लाख नब्बे सहस्र बीघा भूमि चौदह पूरे गाँवों सहित, छब्बीस हल तथा ग्यारह सहस्र खरवार चावल बाँटे। हमने अपने सेवकों को, जिन्होंने राजभक्ति से अपने अपने कान छिदवा लिए थे, छत्तीस सहस्र रुपए मूल्य के सात सौ बत्तीस मोती उपहार में दिए।

उक्त महीने के अंत में समाचार मिला कि ११ वीं मिती रविवार की रात्रि जब साढ़े चार घड़ी बीत चुकी थी तब बुर्हानपुर नगर में सुलतान पर्वेज को सुलतान मुराद की पुत्री से सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने एक पुत्र दिया है। हमने उसका सुलतान दूरअंदेश नाम रखा।

दसवाँ जलूसी वर्ष

दसवें जलूसी वर्ष के १ फ़रवरदीन, ८ वीं[1] सफर सन् १०२४ हि० (१० मार्च सन् १६१५ ई०) शनिवार को पचपन पल व्यतीत होने

---

1. पाठा० १८ भी मिलता है, इलि० भा० ६ पृ० ३४१। इकबालनामा पृ० ७९ पर हश्तुम अर्थात् ८ है। परंतु यह बीस होना चाहिए जो बीस्तम तथा हश्तुम के प्रायः एक रूप के होने के कारण प्रतिलिपिकार के भ्रम से हो गया है।

पर सूर्य मीन राशि से सम्मान की राशि मेष में गया। जब रविवार की रात्रि तीन घड़ी व्यतीत हो चुकी थी तब हम राजसिंहासन पर बैठे। नव वर्ष के उत्सव तथा कार्य साधारण प्रथानुसार मनाए गए। प्रसिद्ध शाहजादों, बड़े खानों, मुख्य पदाधिकारियों तथा साम्राज्य के मंत्रियों ने मुबारकबादी के अभिवादन किए। महीने के पहले ही दिन एतमादुद्दौला के मंसब पाँच हजारी २००० सवार में एक हजारी १००० सवार बढ़ाए गए। कुँअर कर्ण, जहाँगीर कुली खाँ तथा राजा वीर सिंह देव को खास घोड़े दिए गए। दूसरे दिन आसफ खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसमें सभा रत्न, जड़ाऊ आभूषण तथा सोने की वस्तुएँ अच्छी थीं और अनेक प्रकार तथा ढग के कपड़े थे, जिन सबका हमने भली प्रकार निरीक्षण किया। हमने जो वस्तुएँ पसंद की वह सब पचासों सहस्र रुपयों के मूल्य की थीं। इसी दिन एक जड़ाऊ तलवार कमरपेटी के सहित कर्ण को तथा जहाँगीर कुलीखाँ को एक हाथी दिए गए। हमने दक्षिण जाने का विचार निश्चित कर लिया था इस लिए अब्दुल् करीम मामूरी को हमने आज्ञा दी कि वह मांडू जाय और हमारे निवास के लिए एक नया प्रासाद निर्मित करावे तथा पुराने सुलतानों की इमारतों का जीर्णोद्धार करे। ३ री को राजा वीरसिंह देव की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई, जिसमें से एक लाल, कुछ मोती तथा एक हाथी हमने पसंद किया। ४ थे दिन मुस्तफाखाँ का मंसब पाँच सदी २०० सवार से बढ़ाकर दो हजारी २५० सवार का कर दिया। ५ वीं को हमने एतमादुद्दौला को एक झंडा तथा डंका दिए और आज्ञा दी कि वह दुर्ग तक डंका पीटता आ सकता है। आसफखाँ का मंसब एक हजारी १००० सवार बढ़ाकर चार हजारी २००० सवार का कर दिया। राजा वीरसिंह देवके मंसब में ७०० सवार बढ़ाकर हमने उसे अपने देश जाने की छुट्टी दी और आदेश दिया कि निश्चित समयों पर वह दरबार में उपस्थित होता

रहे। उसी दिन इब्राहीम खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई, जिसमें सभी प्रकार की वस्तुओं में से हमें कुछ पसंद आई। नगर कोट के राजा के पुत्रों में से कृष्णचंद्र को राजा की पदवी देकर सम्मानित किया।

बृहस्पतिवार को एतमादुद्दौला की भेंट चश्मए नूर में हमारे सामने उपस्थित की गई। भारी जलसा इसके लिए हुआ और हमने भी कृपा कर उसकी सारी भेंट का निरीक्षण किया। हमने एक लाख रुपए मूल्य के रत्न, जड़ाऊ वस्तुएँ तथा मूल्यवान वस्त्र पसंद किए और बचे हुए उसीको दे दिए। ७ वीं को हमने कृष्णसिंह के मंसब में एक हजारी बढ़ा दिया, जो दो हजारी १५०० सवार का था। इसी दिन चश्मएनूर के पास हमने एक शेर मारा। ८ वीं को हमने कर्ण को पाँच हजारी ५००० सवार का मंसब प्रदान किया और एक छोटी माला मोतियों तथा पन्नों की दी, जिसके मध्य में एक लाल लगा था और जिसे हिंदुओं की भाषा में सुमिरिनी कहते हैं। हमने इब्राहीम का मंसब एक हजारी ४०० सवार से बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। हाजी बे उजबेग का मंसब ३०० सवार से बढ़ा दिया और राजा श्यामसिंह को पाँच सदी की उन्नति देकर उसका मंसब ढाई हजारी ४०० सवार का कर दिया।

रविवार ९ को सूर्यग्रहण था, जब दिन बारह घड़ी बीत चुका था। यह पश्चिम से आरंभ हुआ और पाँच भाग में से चार भाग राहु द्वारा ग्रास कर लिया गया। ग्रहण के आरंभ से उग्रह तक पूर्ण प्रकाश होने में आठ घड़ी व्यतीत हुआ। अनेक प्रकार के धातु, पशु तथा शाक आदि बहुत सी वस्तुएँ दान में फकीरों तथा दीन दरिद्रों को दिए गए। इसी दिन राजा सूरजसिंह को भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई, जिसमें से तैंतालीस सहस्र रुपए मूल्य की वस्तु हमने स्वीकृत की। इसी

दिन कंधार के प्रांताध्यक्ष बहादुरखाँ की भी भेंट सामने लाई गई, जिसका मूल्य सब मिलाकर चौदह सहस्र रुपए था। २६ सफर सोमवार की रात्रि जब एक प्रहर बीत चुकी थी तब मेष राशि में बाबा खुर्रम को आसफखाँ की पुत्री से एक पुत्र हुआ, जिसका नाम हमने दाराशिकोह रखा। हम आशा करते हैं कि इसका आगमन साम्राज्य के लिए अनंत कालतक शुभ होगा तथा उसके भाग्यवान पिता को भी होगा। सैयद अली बारहा का मंसब पाँच सदी ३०० सवार से बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया गया। १० वीं को एतबार खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई, जिसमें से चालीस सहस्र रुपए मूल्य की वस्तु स्वीकृत हुई। इसी दिन खुसरू वे उजबेग का मंसब ३०० सवार से और मंगली खाँ का पाँच सदी २०० सवार से बढ़ाया गया। ११ वीं को मुर्तजा खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसमें सात लाल, मोतियों की एक माला तथा दो सौ सत्तर अन्य मोतियाँ स्वीकृत की गईं, जिनका मूल्य एक लाख पैंतालीस सहस्र रुपए था। १२ वीं को मिर्जाराजा भाऊसिंह तथा रावत शंकर की भेंटें हमारे सामने उपस्थित की गईं। १३ वीं को अबुल्हसन की भेंट में से एक कुत्बीलाल, एक हीरा, मोतियों की एक लड़ी, पाँच अँगूठियाँ, चार मोती तथा कुछ कपड़े स्वीकृत हुए, जिनका मूल्य बत्तीस सहस्र रुपए था। १४ वीं को ख्वाजा अबुल्हसन का मंसब, जो तीन हजारी ७०० सवार का था, एक हजारी ५०० सवार से बढ़ाया गया और वफादारखाँ का मंसब साढ़े सात सदी २०० सवार से दो हजारी १२०० सवार का कर दिया। उसी दिन ईरान के शाह का राजदूत मुस्तफा वेग सेवा में आकर उपस्थित हुआ। गुर्जिस्तान के कार्य को निपटाकर हमारे उच्चपदस्थ भाई ने इसे पत्र के साथ भेजा था, जिसमें मित्रता तथा सत्यता के बहुत से पद थे। इसके साथ बहुत से घोड़े, ऊँट तथा हलब नगर के कुछ सामान थे, जो रूम की ओर से हमारे

भाग्यवान भाई के लिए आए थे। नौ यूरोपीय अहेरी कुत्ते भी साथ आए थे, जिनके लिए लिखा गया था।

इसी दिन मुर्तजाखाँ को काँगड़ा दुर्ग पर अधिकार करने के लिए जाने की आज्ञा दी, जिसके समान दृढ़ता में अन्य कोई दुर्ग पंजाब के उस पार्वत्य-प्रांत में नहीं था या सारे संसार में। जब से हिंदुस्तान में इस्लाम का नाम गूंजा तब से अब तक हमारे शुभ काल तक जब यह खुदा के तख्त का प्रार्थी यहाँ के राजगद्दी पर सुशोभित हुआ, कोई राजा या सुलतान उस पर अधिकार नहीं कर सका था। हमारे श्रद्धेय पिता के राज्यकाल में पंजाब की सेना इस दुर्ग के विरुद्ध भेजी गई थी, जिसने इसे बहुत दिनों तक घेरा था। अंत में उन्होंने समझ लिया कि यह दुर्ग नहीं लिया जा सकता तब सेना अन्य अधिक आवश्यक कार्य पर भेज दी गई। हमने मुर्तज़ा खाँ को विदा करते समय एक खास हाथी साज सहित दिया। राजा बासू का पुत्र राजा सूरजमल भी, जिसका स्थान इसी दुर्ग के पास था, इस कार्य पर नियत किया गया और इसका मंसब पाँच सदी ५०० सवार से बढ़ाया गया। राजा सूरज-सिंह अपने देश तथा जागीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ अशर्फी भेंट की। १७ वीं को मिर्जा रुस्तम की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। दो जड़ाऊ छुरे, मोतियों की एक माला, कुछ थान कपड़े के, एक हाथी तथा चार एराकी घोड़े पसंद किए गए जिनका मूल्य पंद्रह सहस्र रुपए था। उसी दिन एतक़ाद खाँ की अठारह सहस्र रुपए की भेंट हमारे सामने रखी गई। १८ वीं को जहाँगीर कुली खाँ की भेंट का निरीक्षण किया। पंद्रह सहस्र रुपए के मूल्य के रत्न तथा कपड़े स्वीकृत हुए। एतकाद खाँ का मंसब जो सात सदी २०० सवार का था उसमें आठ सदी ३०० सवार बढ़ाकर डेढ़ हजारी ५०० सवार का कर दिया। खुसरू बे उजबेग, जो एक प्रसिद्ध सैनिक था, पेटचली रोग से मर गया।

१८वें दिन बृहस्पतिवार को दो प्रहर साढ़े चार घड़ी बीतने पर शरफ आरंभ हुआ। इस शुभ दिन में हम प्रसन्नता तथा ऐश्वर्य के साथ राजसिंहासन पर बैठे और लोगों ने हमें अभिवादन किया तथा मुबारकबादी दी। जब एक प्रहर दिन बच रहा था तब हम चश्मए नूर गए। निश्चय के अनुसार यहीं महाबतखाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसने सुंदर रत्न तथा आभूषण अच्छे वस्त्र तथा अनेक प्रकार की वस्तुएँ संग्रह की थीं जो हमें बहुत पसंद आईं। इनमें एक जड़ाऊ खपवा था, जिसे शाही कारीगरों ने इसके कहने पर बनाया था और जिसके समान मूल्य में हमारे निजी कोषागार में भी नहीं था तथा जिसका मूल्य एक लाख रुपए था। इसके सिवा एक लाख अड़तीस सहस्र के मूल्य के अन्य रत्न तथा वस्तुएँ स्वीकृत की गईं। वास्तव में यह अच्छी भेंट थी। ईरान के शाह के एलची मुस्तफा बेग को हमने बीस सहस्र दर्ब अर्थात् दस सहस्र रुपए दिए। २१वीं को हमने अब्दुल्गफूर के हाथ दक्षिण के पंद्रह अमीरों के लिए खिलअत भेजे। राजा विक्रमाजीत को जागीर पर जाने की छुट्टी मिली और उसे एक अच्छा शाल दिया गया। उसी दिन हमने एक जड़ाऊ छुरा मुस्तफा बेग एलची को दिया। हमने इस्लामखाँ के पुत्र होशंग का मंसब जो एक हजारी ५०० सवार का था, पाँच सदी २०० सवार से बढ़ा दिया। २३वीं को इब्राहीमखाँ बिहार प्रांत का अध्यक्ष नियत हुआ। जफरखाँ को दरबार आने का आदेश दिया गया। इब्राहीमखाँ के दो हजारी १००० सवार के मंसब में पाँच स-ी १००० सवार बढ़ाए गए। सैफखाँ को उसी दिन जागीर पर जाने की छुट्टी मिली और हाजी वे उजबेग को उजबेगखाँ की पदवी दी गई। बहादुरुल्मुल्क को, जो दक्षिण की सेना में नियत था और जिसका मंसब ढाई हजारी २१०० सवार का था, पाँच सदी २०० सवार की उन्नति मिली। ख्वाजा तकी के मंसब में दो सदी की उन्नति दी, जो आठ सदी १८० सवार का था। २५वीं को

सलामुल्ला अरब के मंसब में २०० सवार बढ़ाए गए, जिससे वह डेढ़ हजारी १००० सवार का हो गया। इनमें महाबत खाँ को काला कई रंगों का वह घोड़ा दिया जो हमारे खास घोड़ों में से था तथा जिसे ईरान के शाह ने भेजा था। बृहस्पतिवार दिन के अंत में हम बाबा खुर्रम के गृह पर गए और वहाँ एक प्रहर रात्रि बीतने तक रहे। इसकी दूसरी भेंट इसी दिन हमारे सामने उपस्थित की गई। पहले दिन जब उसने आकर अभिवादन किया था तब उसने राणा का एक प्रसिद्ध लाल हमारे सामने भेंट में उपस्थित किया था, जिसे राणा ने हमारे पुत्र के पास आने पर भेंट में दिया था और जिसका मूल्य जौहरियों ने साठ सहस्र लगाया था। इसकी जितनी प्रशंसा थी वैसा यह नहीं था। इस लाल की तौल आठ टंक थी और यह पहले रायमालदेव के पास था, जो राठौड़ों का राजा तथा हिंदुस्थान के मुख्य नरेशों में से एक था। उससे उसके पुत्र चंद्रसेन को मिला, जिसने अपनी हीनावस्था तथा निराशा में इसे राणा उदयसिंह के हाथ बेंच दिया। इनसे राणा प्रताप को मिला तथा इनसे राणा अमरसिंह को। इस परिवार में इससे अधिक मूल्य की कोई वस्तु नहीं बची थी इसलिए हमारे भाग्यवान पुत्र बाबा खुर्रम से जब वह मिलने आया तब इसे अपने कुल हाथियों सहित भेंट कर दिया, जो भारतीय मुहावरे में वेटाचार[1] कहा जाता है। हमने आज्ञा दी कि इस लाल पर खोदा जाय कि राणा अमरसिंह ने सुलतान खुर्रम को अभिवादन करते समय भेंट दिया। उस दिन बाबा खुर्रम की भेंट में से अन्य कई वस्तुएँ स्वीकृत हुईं। इनमें एक छोटी शीशे की पेटी फिरंग की बनी हुई थी, जो बड़ी सुन्दर थी तथा कुछ पन्ने, तीन अँगूठियाँ, चार एराकी घोड़े एवं अन्य वस्तुएँ थीं, जिनका मूल्य सब मिलाकर अस्सी सहस्र रुपए था। जिस दिन हम

---

१. पाठां०—सेत: चार या खत्ता या घर्प।

उसके गृह पर गए थे उस दिन उसने भारी भेंट की तैयारी की थी, वास्तव में चार पाँच लाख रुपए मूल्य की अलभ्य वस्तुएँ हमारे सामने उपस्थित की गई थीं। इनमें से हमने एक लाख रुपए की वस्तुएँ लीं और बची हुई उसे दे दी गईं।

२८ वीं को ख्वाजाजहाँ का मंसब, जो तीन हजारी १८०० सवार का था, पाँच सदी ४०० सवार से बढ़ाया गया। महीने के अंत में हमने इब्राहीम खाँ को एक घोड़ा, खिलअत, एक जड़ाऊ छुरा, एक झंडा तथा डंका देकर विहार प्रांत जाने की छुट्टी देदी हमने मुखलिस खाँ को, जो हमारा विश्वासपात्र था, ख्वाजगी हाजी मुहम्मद के स्थान पर, जो मर गया था, अर्ज मुकर्रर नियत किया। दिलावरखाँ के मंसब में ३०० सवार बढ़ाए गए, जिससे वह एक हजारी १००० सवार का होगया। कुँअर कर्ण के विदा होने का समय पास आगया था और हमारा विचार उसे गोली चलाने की अपनी दक्षता दिखलाने का था। इसी समय करावलों ने एक शेरनी की सूचना दी। यद्यपि हमारा निश्चित मत नर शेरों का अहेर खेलने ही का रहता था पर इस ध्यान से कि कहीं उसके जाने के समय तक कोई शेर न मिले हम उस शेरनी ही के अहेर को चल दिए। हम कर्ण को साथ लिवा गए और उससे कह दिया कि जहाँ वह कहेगा वहीं हम गोली का निशाना लगावेंगे। यह प्रबंध कर हम उस स्थान पर गए जहाँ वह शेरनी मिली थी। संयोग से उस समय हवा थी और उसमें तीव्रता भी थी तथा जिस हथिनी पर हम सवार थे वह शेरनी के भय से शांत खड़ी नहीं रहती थी। निशाना लगाने की इन दो बड़ी बाधाओं के रहते भी हमने उसकी आँख पर सीधे गोली चला दी। सर्व शक्तिमान् ईश्वर ने हमें उस राजकुमार के सामने लज्जित होने से बचा लिया और जैसा हमने स्वीकार किया था वैसे ही आँख में गोली लगी। उसी दिन कर्ण ने एक विशिष्ट बंदूक के लिए प्रार्थना की और हमने उसे एक खास तुर्की बंदूक दी।

विदाई के दिन हमने इब्राहीम खाँ को हाथी नहीं दिया था इसलिए अब हमने एक खास हाथी दिया और एक एक हाथी बहादुरुमुल्क तथा वफ़ादार खाँ के लिए भेजा। ८ उर्दिबिहिश्त को चांद्र तुलादान का जलसा हुआ और हमने अपने को चांदी तथा अन्य वस्तुओं से तौलवाया, जिसे दीन-दरिद्रों तथा याचकों में वितरित करा दिया। नवाजिशखाँ ने अपनी जागीर पर जाने की छुट्टी ली, जो मालवा में थी। उसी दिन हमने एक हाथी ख्वाजा अबुल् हसन को दिया। ९ वीं को वे खानआजम को हमारे सामने लाए, जो ग्वालिअर दुर्ग से आगरा बुलाए जाने पर आया था। यद्यपि इसने बहुत से दोष किए थे और हमने उसके साथ जो व्यवहार किया था वह सब उचित था पर जब वे उसे हमारे सामने लाए और हमारी दृष्टि उस पर पड़ी तब हमने उससे अधिक लज्जा का भान किया। उसके सभी दोषों को क्षमा कर हमने उसे एक शाल दिया, जो हम कमर में लपेटे हुए थे। हमने कुँअर कर्ण को दस सहस्र दर्ब दिए। उसी दिन राजा सूरजसिंह रण-रावत नामक एक भारी हाथी भेंट में लाया, जो उसका एक प्रसिद्ध हाथी था। वास्तव में वह ऐसा अलभ्य हाथी था कि उसे हमने अपने हथसाल में रखा। १० वीं को ख्वाजाजहाँ की भेंट, जिसे उसने अपने पुत्र के हाथ आगरे से भेजा था, हमारे सामने उपस्थित की गई। इसमें हर प्रकार की वस्तुएँ थीं, जिसका मूल्य चालीस सहस्र रुपए था। १२ वीं को खानदौराँ की भेंट, जिस में पैंतालीस घोड़े, दो ऊँट, अरबी कुत्ते तथा अहेरी पशु थे, हमारे सामने लाए गए। इसी दिन राजा सूरजसिंह के अन्य सात हाथी भी भेंट में आए, जो हमारे निजी हथसाल में रखे गए। तहौव्वरखाँ को चार महीने सेवा में उपस्थित रहने पर जाने की छुट्टी मिली। हमने आदिलखाँ को एक संदेश भेजा जिसमें मित्रता तथा शत्रुता का लाभ तथा हानि अच्छी प्रकार समझा दिया। हमने तहौव्वरखाँ से वचन ले लिया था कि वह हमारे प्रत्येक शब्द को आदिलखाँ के सामने

दुहरावेगा और उसे राजभक्ति तथा अधीनता के मार्ग पर ले आवेगा। उसके विदा होते समय हमने कई वस्तुएँ उसे दीं। संक्षेप में इस थोड़े समय में जो उपहार हमने अपनी ओर से उसे दिए थे तथा शाहजादों एवं अमीरों ने उसे आदेशानुसार भेंट किए थे सब मिलाकर एक लाख रुपए के मूल्य के होगए।

१४ वीं को हमारे पुत्र खुर्रम का पद तथा पुरस्कार निश्चित हुआ। उसका मंसब बारह हजारी ६००० सवार का था और उसके भाई पर्वेज का पंद्रह हजारी ८००० सवार का था। हमने आज्ञा दी कि उसका मंसब पर्वेज के बराबर कर दिया जाय तथा अन्य पुरस्कार भी दिए। हमने उसे खास हाथी पंची गंज नामक दिया, जिसका साज सामान बारह सहस्र रुपए मूल्य का था। १६ वीं को एक हाथी महाबतखाँ को दिया। १७ वीं को राजा सूरजसिंह का मंसब, जो चार हजारी ३००० सवार का था, एक हजारी बढ़ाकर पाँच हजारी कर दिया। अब्दुल्लाखाँ की प्रार्थना पर ख्वाजा अब्दुल्लतीफ का मंसब, जो पाँच सदी २०० सवार का था, पाँच सदी २०० सवार बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। खानआजम का पुत्र अब्दुल्ला, जो रणथंभौर दुर्ग में कैद था, पिता की प्रार्थना पर बुला भेजा गया। वह दरबार में उपस्थित किया गया और हमने उसकी बेड़ियाँ खुलवाकर उसे उसके पिता के पास भेज दिया। २४ वीं को राजा सूरजसिंह ने एक दूसरा हाथी फौजसिंगार नामक भेंट में दिया। यद्यपि यह भी अच्छा हाथी है और हमारे निजी हथसाल में रखा गया पर पहले हाथी के समान यह नहीं है, जो अपने समय का एक आश्चर्य है तथा बीस सहस्र रुपए मूल्य का है। २६ वीं को मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदीउज्जमाँ के मंसब में २०० सवार बढ़ाए गए, जो सातसदी ५०० सवार का था। उसी दिन नक्शबंदी ख्वाजाओं में से एक ख्वाजा जैनुद्दीन मावरुन्नहर से आकर हमारी सेवा

में उपस्थित हुआ और अठारह घोड़े भेंट में ले आया। कजिलबाशखाँ, जो गुजरात प्रांत के सहायकों में से एक था, बिना प्रांताध्यक्ष की आज्ञा लिए दरबार चला आया था। हमने आज्ञा दी कि एक अहदी जाकर उसे कैद कर ले, जिससे वह गुजरात के प्रांताध्यक्ष के पास भेज दिया जाय और दूसरे ऐसा कार्य न करें। हमने मुबारक खाँ सजावल के मंसब में पाँच सदी बढ़ा दिया, जिससे वह पंद्रह सदी ७०० सवार का हो गया। २६ वीं को हमने खानआज़म को एक लाख रुपए दिए और दासना तथा कासना परगने उसकी जागीर नियत करने की आज्ञा दी, जो पाँच हजारी के बराबर थी। उसी महीने के अंत में हमने जहाँगीर कुली खाँ को अपने भाइयों तथा संबंधियों के साथ इलाहाबाद जाने की छुट्टी दी, जो उसकी जागीर नियत हुई थी। इसी दरबार में कर्ण को पशमीने का कबा, बारह हरिण तथा दस अरबी कुत्ते दिए गए। दूसरे दिन १८ खुर्दाद को चालीस, इसके दूसरे दिन इकतालीस तथा तीसरे दिन बीस, तीन दिनों में कुल मिलाकर एक सौ एक घोड़े कुँअर कर्ण को दिए गए। फ़ौज सिंगार हाथी के बदले में हमने अपने खास हथसाल से दस सहस्र रुपए मूल्य का एक हाथी राजा सूरजसिंह को उपहार में दिया। उसी महीने की ५वीं को दस चीरा, दस कबा तथा दस कमरपेटी दी गईं। २०वीं को एक दूसरा हाथी उसे दिया।

इन्हीं दिनों कश्मीर के वाकेआनवीस ने लिखा कि एक शिक्षित दर्वेश गदाई नामक मुल्ला ने, जो नगर के एक दरगाह में चालीस वर्ष से रहता था, उस दरगाह के उत्तराधिकारियों से अपनी मृत्यु के दो वर्ष पहले प्रार्थना की थी कि वह उसी दरगाह में एक कोना खोज ले जहाँ वह गाड़ा जाय। उन्होंने कह दिया कि ऐसा ही हो। संक्षेप में उसने एक स्थान चुन लिया। जब उसका समय आ गया तब उसने अपने मित्रों संबंधियों तथा प्रियजनों को सूचना दी कि उसे आज्ञा मिल गई है कि वह अपना शरीर छोड़कर अंतिम लोक में आ जाय।

जो लोग वहाँ उपस्थित थे वे यह सुनकर आश्चर्यान्वित हो गए और कहा कि पैगंबरों को भी ऐसी सूचना नहीं मिली थी तब ऐसी बात का कैसे विश्वास किया जाय ? उसने कहा कि ऐसी आज्ञा हमें मिल गई है। तब उसने अपने एक विश्वासपात्र की ओर घूमकर कहा, जो उस प्रांत के काजियों में से एक का पुत्र था, कि तुम हमारे कुरान का मूल्य हमारे गाड़ने में व्यय करना, जो सात सौ तनका मूल्य का है। शुक्रवार के निमाज की पुकार जब तुम सुनना तब हमारा पता लगा लेना। यह सब बातचीत गुरुवार को हुई थी और उसी दिन उसने अपनी कोठरी का कुल सामान अपने परिचितों तथा शिष्यों में बाँट दिया और दिन के अंत में उसने स्नान किया। काजी का उक्त पुत्र निमाज की पुकार के पहले ही आया और मुल्ला के स्वास्थ्य के संबंध में पूछताछ की। जब वह उसकी कोठरी के द्वार पर पहुँचा तब वह बंद मिला और एक नौकर वहाँ बैठा था। इसने उस सेवक से पूछा कि क्या हुआ तब उसने कहा कि मुल्ला ने आदेश दिया है कि जबतक कोठरी का द्वार आपसे न खुल जाय तब तक हम भीतर न जायँ। इन बातों के थोड़ी ही देर बाद कोठरी का द्वार आप ही आप खुल गया। काजी का पुत्र उस सेवक के साथ भीतर गया और देखा कि मुल्ला घुटनों के बल किबले की ओर मुख किए बैठा है पर उसके प्राण ईश्वर के पास पहुँच गए हैं। ऐसे मुक्त पुरुष ही अच्छे हैं जो इतनी सुगमता से इस जंजाल भरे लोक से प्रयाण कर जाते हैं।

कर्मसेन राठौड़ के मंसब में दो सदी ५० सवार बढ़ाकर हमने उसका मंसब एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। इस महीने की ११वीं को लश्कर खाँ की भेंट हमारे सामने लाई गई, जिसमें तीन ऊँट, बीस प्याले-तश्तरियाँ चीन की और बीस अरबी कुत्ते थे। १२ वीं को एक जड़ाऊ खंजर एतबार खाँ को दिया और कर्ण को दो सहस्र रुपए

मूल्य की एक कलगी दी। १४वीं को हमने सरबुलंदराय को खिलअत दिया और दक्षिण जाने की आज्ञा दी।

शुक्रवार १५वीं रात्रि में एक विचित्र घटना घटी। संयोग से उस रात्रि हम पुष्कर में थे। संक्षेप में सूरजसिंह का सगा भाई कृष्ण अत्यंत व्यस्त था क्योंकि उसके भतीजे एक युवक गोपालदास को उक्त राजा के वकील गोविंददास ने कुछ दिन पहले मार डाला था। इस झगड़े का कारण लिखने में बहुत समय लग जायगा। कृष्ण को आशा थी कि गोपालदास राजा सूरजसिंह का भी भतीजा है इसलिये वह गोविंददास को प्राणदंड देगा परंतु राजा ने उसके अनुभव तथा योग्यता के कारण अपने भतीजे का बदला लेने का विचार त्याग दिया। जब कृष्ण ने राजा की ओर से यह उपेक्षा देखी तब उसने स्वयं भतीजे का बदला लेने का निश्चय किया तथा उसके खून को अज्ञात छूट जाने नहीं दिया। बहुत दिनों तक उसने यह बात अपने मन में रखी पर उस रात्रि उसने अपने भाइयों, मित्रों तथा सेवकों को एकत्र कर कहा कि वह उस रात्रि गोविंददास को मारने जायगा चाहे जो भी हो और वह इस बात का ध्यान न करेगा कि राजा को क्या हानि होगी। राजा को इस बात का पता भी नहीं था कि क्या हो रहा है और जब उषाकाल था तभी कृष्ण अपने भतीजे कर्ण तथा अन्य साथियों के साथ निकला। जब वह राजा के निवासस्थान की ड्योढ़ी पर पहुँचा तब उसने कुछ अनुभवी मनुष्यों को पैदल गोविंददास के घर पर भेजा, जो पास ही था। वह स्वयं घोड़े पर सवार हो ड्योढ़ी के पास खड़ा रहा। पैदल सैनिक गोविंददास के घर में घुस गए और वहाँ के कुछ रक्षकों को मार डाला। जब यह लड़ाई हो रही थी तब गोविंददास जाग पड़ा और तलवार हाथ में लेकर घबड़ाहट में गृह के एक ओर से निकलकर रक्षकों से मिलने चला आया। वे पैदल सैनिक जब कुछ लोगों को मारकर गोविंददास को

खोजने के लिए गृह से बाहर निकले तब इसे पाकर इसका काम समाप्त कर दिया। गोविंददास के मारे जाने का समाचार कृष्ण के पास नहीं पहुँचा था कि वह प्रतीक्षा करते घबड़ाकर घोड़े पर से उतर पड़ा और घर में घुस पड़ा। यद्यपि इसके आदमियों ने बहुत मना किया कि ऐसे उपद्रव के समय पैदल होना उचित नहीं परंतु इसने कुछ नहीं सुना। यदि यह कुछ देर और प्रतीक्षा करता तथा अपने शत्रु के मारे जाने का समाचार पा जाता तो बहुत संभव था कि घोड़ेपर सवार होने के कारण यह बचकर निकल जाता। किंतु कर्म का लेख कुछ और ही था इससे ज्योंही यह घोड़े से उतर कर भीतर गया त्योंही अपने महल में आदमियों के कोलाहल के कारण राजा जाग पड़ा और तलवार खींचकर अपने महल के फाटक पर आ खड़ा हुआ। सभी ओर से लोग जाग कर इकट्ठे हो गए और उन पैदल सैनिकों की ओर दौड़ पड़े। उन सबने पैदल शत्रुओं की संख्या देख ली और भारी संख्या में आकर कृष्णसिंह के मनुष्यों को घेर लिया, जो गिनती में दस के लगभग थे। संक्षेप में जब कृष्णसिंह तथा उसका भतीजा कर्ण राजा के गृह में पहुँचे तब इन मनुष्यों ने उनपर आक्रमण कर दिया और दोनों को मार डाला। कृष्णसिंह को सात तथा कर्ण को नौ घाव लगे थे। सब मिलाकर इस लड़ाई में छाछठ आदमी मारे गए, जिनमें राजा की ओर के तीस तथा कृष्ण सिंह के छत्तीस मनुष्य थे। जब सूर्य उदय हो गया और संसार उसके तेज से प्रकाशमान हो गया तब सब बातें प्रगट हुईं और राजा ने देखा कि उसके भाई, भतीजा तथा उसके सेवक मारे गए, जिन्हें वह अपने से अधिक प्रिय समझता था। अन्य सभी लोग अपने अपने स्थानों पर चले गए। यह समाचार हमें पुष्कर में मिला और हमने आज्ञा दी कि मरे लोगों को अपनी प्रथानुसार जला दें और कुल घटना की सच्ची सूचना हमें दें। अंत में ज्ञात हुआ कि यह घटना

जिस प्रकार लिखी गई थी उसी प्रकार घटित हुई थी और विशेष जाँच की आवश्यकता नहीं रह गई।[1]

८ वीं को मीरान सदरजहाँ अपने देश से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहरें भेंट दीं। राय सूरज सिंह को अपने कार्य पर दक्षिण जाने की छुट्टी दी गई। हमने इन्हें एक जोड़ी मोती कान के लिए तथा एक खास काश्मीरी शाल दिया। एक जोड़ी मोती खानजहाँ के लिए भी भेजा। २५ वीं को हमने एतबार खाँ के मंसब में ६०० सवार बढ़ाए जिससे वह पाँच हजारी १००० सवार का हो गया। उसी दिन कर्ण को अपनी जागीर पर जाने की छुट्टी मिली और उसे एक घोड़ा, एक खास हाथी, एक खिलअत, पचास सहस्र रुपए मूल्य की मोतियों की एक लड़ी तथा दो सहस्र रुपए का एक जड़ाऊ खंजर मिला। हमारी सेवा में उपस्थित होने के समय से छुट्टी पाने तक नगद, आभूषण, रत्न तथा जड़ाऊ वस्तुएँ इसे दो लाख रुपये मूल्य की दी गई थीं, जिसके सिवा एक सौ दस घोड़े तथा पाँच हाथियाँ भी थीं। हमारे पुत्र खुर्रम ने भी अनेक बार इसे बहुत कुछ उपहार दिया था। हमने मुबारक खाँ सजावल को एक घोड़ा तथा एक हाथी देकर साथ भेजा और राणा के पास कई मौखिक संदेश भी कहलाए। राजा सूरज सिंह को भी अपने देश जाने के लिए छुट्टी मिली और उसने दो महीने में लौटने का वचन दिया। २७ वीं को पायंदः खाँ मुगल, जो साम्राज्य के पुराने अमीरों में से था, मर गया।

इस महीने के अंत में समाचार मिला कि ईरान के शाह[2] ने अपने सब से बड़े पुत्र सफी मिर्जा को मरवा डाला, यह विशेष

---

१. देखिए मुगल दरबार भा० १ पृ० ९९-१०१।

२. शाह अब्बास सफवी।

आश्चर्य का कारण बन गया। जब हमने पता लगाया तब ज्ञात हुआ कि गीलान के एक प्रसिद्ध नगर दरश[1] में उसने बिहबूद नामक दास को आज्ञा दी कि मिर्ज़ा सफी को मार डालो। दास ने अवसर पाकर ५ मुहर्रम सन् १०१४ हि० को प्रातःकाल, जब मिर्ज़ा स्नानगृह से अपने गृह आ रहा था, छोटी तलवार से दो चोट देकर उसका कार्य समाप्त कर दिया। उसका शरीर पानी तथा कीचड़ में बहुत दिन व्यतीत हो जाने तक पड़ा रहा जब शेख बहाउद्दीन मुहम्मद ने, जो विद्वत्ता तथा पवित्रता के लिए उस देश में बहुत प्रसिद्ध था और जिस पर शाह का बहुत विश्वास था, इसकी सूचना दी और उसे उठाने की आज्ञा मिलने पर उसके शव को अर्दबेल भेज दिया, जो उसके पूर्वजों का कब्रगाह था। यद्यपि ईरान से आए हुए यात्रियों से बहुत पूछा गया पर किसी ने कोई ऐसी बात नहीं बतलाई जिससे हमारी इस संबंध में तुष्टि होती। पुत्र को मरवा डालने में बहुत भारी उद्देश्य रहा होगा जिससे किसी विशेष अप्रतिष्ठा का मार्जन किया गया था।

तीर महीने की १ली को हमने रंजीत नामक हाथी साज सहित मिर्ज़ा रुस्तम को और एक हाथी सैयद अली बारहा को दिया। ख्वाजा शम्सुद्दीन का एक संबंधी मीरक हुसेन बिहार प्रांत का बख्शी तथा वाकेआनवीस नियुक्त हुआ और उसने जाने की छुट्टी ली। हमने ख्वाजा अब्दुल्लतीफ कौशबेगी को एक हाथी तथा खिलअत देकर जागीर पर जाने की छुट्टी दी। उसी महीने की ९ वीं को हमने खानदौराँ को एक जड़ाऊ तलवार दिया और जलाला अफगान के पुत्र अलल्हदाद के लिए, जो राजभक्त हो गया था, एक जड़ाऊ खंजर भेजा। १३ वीं को 'आब-पाशाँ' (जल छिड़कना) का उत्सव हुआ

---

१. इकबालनामा में रश्त दिया है।

और दरबार के सेवकों ने आपस में गुलाब जल छिड़क कर खूब खुशी मनाई। १७ वीं को अमानत खाँ खंभात के बंदर में नियत हुआ। मुकर्रब खाँ ने दरबार आने की प्रार्थना की थी इसलिए यह परिवर्तन किया गया था। इसी दिन हमने अपने पुत्र पर्वेज के लिए कमरपेटी का जड़ाऊ खंजर भेजा। १८ वीं को खानखानाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसमें बहुत प्रकार के आभूषण तथा अन्य वस्तु थी। जड़ाऊ वस्तुओं के साथ रत्न भी थे जैसे तीन लाल, एक सौ तीन मोती, एक सौ लाल याकूत, दो जड़ाऊ छुरे, लाल तथा मोतियों की एक कलगी, एक जड़ाऊ जल-कलश, एक जड़ाऊ तलवार, मखमल से बँधी तूणीर, तथा हीरे की एक अँगूठी, जो सब मिलाकर लगभग एक लाख रुपए मूल्य के थे। इन रत्नों तथा जड़ाऊ वस्तुओं के सिवा दक्षिण तथा कर्णाटक के वस्त्र, बहुत प्रकार के सुनहले मुलम्मे की तथा सादी वस्तुएँ, पंद्रह हाथियाँ तथा एक घोड़ा था, जिसके बाल भूमि तक लटकते थे। शाहनवाज खाँ की भी भेंट, जिसमें पाँच हाथी तथा सभी प्रकार के कपड़ों के तीन सौ टुकड़े थे, हमारे सामने लाई गई। ८ वीं को हमने होशंग को इकराम खाँ की पदवी दी। रोजअफजूँ ने, जो बिहार प्रांत के राजाओं में से एक था तथा युवावस्था से दरबार के स्थायी सेवकों में परिगणित था, इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और वह अपने पिता राजा संग्राम के देश का राजा बना दिया गया। यद्यपि संग्राम साम्राज्य के सेनानियों से युद्ध करते हुए मारा गया था तब भी हमने इसे एक हाथी देकर देश जाने की छुट्टी दे दी। जहाँगीर कुली खाँ को भी एक हाथी दिया।

२४ वीं को कुँवर कर्ण का पुत्र जगतसिंह, जो बारह वर्ष का था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और अपने पितामह राणा अमरसिंह तथा अपने पिता की ओर से प्रार्थनापत्र दिए। इसके मुख पर उच्च वंश तथा सर्दारी के चिन्ह प्रगट हो रहे थे। हमने इसे कृपा तथा

खिलअत से प्रसन्न किया। मिर्ज़ा ईसा तर्खान के मंसब में दो सदी बढ़ा कर उसे बारह सदी ३०० सवार का कर दिया। महीने के अंत में शेख हुसेन रुहेला को मुबारिज खाँ की पदवी से सम्मानित कर जागीर जाने की छुट्टी दी। मिर्ज़ा शरफुद्दीन हुसेन काशगरी को, जो इसी समय आकर सेवा में उपस्थित हुआ था, दस सहस्र दरब (पाँच सहस्र रुपए) दिए। ५ अमुर्दाद को राजा नाथमल के मंसब में, जो डेढ़ हजारी ११०० सवार का था, पाँच सदी १०० सवार बढ़ा दिया। ७ वीं को केशोदास मारू, जिसे उड़ीसा सरकार में जागीर मिली थी और जो दरबार इसलिए बुला लिया गया था कि वहाँ के प्रांताध्यक्ष के विरुद्ध इसने प्रार्थना की थी, आकर अभिवादन किया और चार हाथी भेंट किए। अपने फर्जंद खानजहाँ को देखने को हमारी बड़ी इच्छा थी और दक्षिण के संबंध में बहुत सी महत्वपूर्ण बातें पूछनी थीं इसलिए उसका तुरंत आना आवश्यक समझ कर उसे बुला भेजा। मंगलवार उसी महीने की ८ वीं को वह आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सहस्र मुहर, एक सहस्र रुपए, चार लाल, बीस मोती, एक पन्ना तथा एक जड़ाऊ फूल कटार भेंट किया, जिस सब का मूल्य पचास सहस्र रुपए था।

रविवार की रात्रि में जिस दिन बड़े ख्वाजा (मुईनुद्दीन) का वार्षिक उर्स था, हम उनके मक़बरे में गए और वहाँ अर्द्धरात्रि तक रहे। वहाँ के रहनेवाले सेवकों तथा सूफियों ने आध्यात्मिक तन्मयता प्रदर्शित की और हमने अपने हाथ से फकीरों तथा सेवकों को धन दिया। कुल मिलाकर छ सहस्र रुपए नगद, एक सौ लंबी कफनी, मोती, मूँगे, अंबर आदि की सत्तर मालाएँ वितरित किया। राजा मानसिंह के पौत्र महासिंह को राजा की पदवी देकर सम्मानित किया तथा एक झंडा और डंका दिया। १६वीं को अपने खास तवेले का एक घोड़ा तथा एक अन्य घोड़ा महाबतखाँ को उपहार दिया। १९वीं को

एक हाथी खानआजम को दिया। २०वीं को केशोदास मारू के मंसब में २०० सवार बढ़ाए गए, जो दो हजारी १००० सवार का था और उसे खिलअत भी दिया। ख्वाजा आकिल के मंसब में दो सदी २०० सवार बढ़ाए गए, जो बारह सदी ६०० सवार का था। २२वीं को मिर्जाराजा भाऊसिंह ने अंबर जाने की छुट्टी ली, जो उसका पुराना जन्मस्थान है और उसे एक खास कश्मीरी फूप कपड़ा दिया। २५वीं को अहमद बेगखाँ, जो रणथंभौर दुर्ग में कैद था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और पुरानी सेवाओं के विचार से उसके दोष क्षमा कर दिए गए। २८वीं को मुकर्रबखाँ गुजरात प्रांत से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक कलगी तथा एक तख्ती भेंट की। सलामुल्ला अरब को पाँच सदी ५०० सवार की उन्नति दी जिससे उसका मंसब बढ़ कर दो हजारी ११०० सवार का हो गया।

शहरिवर महीने की १ली को दक्षिण के कार्य पर जानेवाले बहुत से मनुष्यों के मंसब में निम्नलिखित प्रकार से उन्नति दी गई। मुबारिज़ खाँ को ३०० सवार बढ़ाकर एक हजारी १००० सवार का मंसब दिया। नाहरखाँ भी एक हजारी १००० सवार का मंसबदार हो गया। दिलावरखाँ का मंसब ३०० सवार बढ़ाकर ढाई हजारी २५०० सवार का कर दिया। मंगलीखाँ का मंसब २०० सवार से बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया। रायसाल के पुत्र गिरिधर को आठ सदी ८०० सवार का मंसब दिया और यही मंसब इल्फखाँ कयामखाँ का बढ़ाकर कर दिया। यादगार हुसेन का मंसब सात सदी ५०० सवार का कर दिया और इतना ही शेरखाँ के पुत्र कमालुद्दीन का भी। सैयद अब्दुल्ला बारहा के मंसब में १५० सवार बढ़ाए गए, जिससे वह बढ़कर सात सदी २०० सवार का हो गया। उसी महीने की ८वीं को हमने एक नूरजहानी मुहर, जो छ सहस्र चार सौ रुपए के बराबर होती है, ईरान के शाह के एलची मुस्तफा बेग को दिया और बंगाले के प्रांता-

मीर सामान के, मोतमिदखाँ को अहदियों के बख्शी के और मुहम्मदरजा जाबिरी को पंजाब प्रांत के बख्शी तथा वहीं के वाकेआनवीस के पदों पर नियुक्त किया। सैयद कबीर जो आदिलखाँ की ओर से दक्षिण के शासकों के दोप क्षमा कराने तथा कुछ विद्रोहियों के उपद्रव से विजयी साम्राज्य के सर्दारों के अधिकार से निकल गए अहमद नगर दुर्ग एवं बादशाही भूमि को लौटा देने का वचन देने आया था, सेवा में उपस्थित हुआ और उसे उसी दिन जाने की छुट्टी मिल गई। खिलअत, एक हाथी तथा एक घोड़ा पाकर वह चला गया।

राजा राजसिंह कछवाहा की दक्षिण में मृत्यु हो गई थी इसलिए उसके पुत्र रामदास का मंसब एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। ४ आबाँ को सैफखाँ बारहा को डंका दिया तथा उसके मंसब में ३०० सवार बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया। उसी दिन राजा मान को, जो ग्वालिअर दुर्ग में कैद था, मुर्तजाखाँ की जमानत पर छुटकारा दिया और उसका मंसब बहाल कर उसे उक्त खाँ के साथ काँगड़ा के कार्य पर भेजा। खानदौराँ की संस्तुति पर सादिकखाँ के मंसब में ३०० सवार बढ़ाए गए, जिससे वह एक हजारी १००० सवार का हो गया। मिर्जा ईसाखाँ तर्खान संभल प्रांत से आकर, जो उसकी जागीर थी, सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहरें भेंट दीं। १६वीं को राजा सूरजसिंह को दक्षिण में अपने कार्य पर जाने की छुट्टी मिल गई और हमने उसके मंसब में ३०० सवार बढ़ाकर उसे पाँच हजारी ३३०० सवार का कर दिया। इसके साथ खिलअत तथा एक घोड़ा पाकर वह चला गया। १८वीं को हमने मिर्जा ईसा का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ८०० सवार का निश्चित कर दिया और एक हाथी तथा खिलअत देकर दक्षिण जाने को उसे छुट्टी दे दी। उसी दिन दुष्ट चीन कुलीज की मृत्यु का समाचार जहाँगीर कुली खाँ के पत्र से ज्ञात हुआ। साम्राज्य के एक पुराने सेवक कुलीज खाँ की मृत्यु

पर हमने इस अभागे मनुष्य को एक अमीर बना दिया तथा विशेष कृपा दिखलाकर जौनपुर ऐसा स्थान इसे जागीर में दिया। हमने इसके भाइयों तथा संबंधियों को इसके साथ भेज दिया और उन्हें इसका प्रतिनिधि बना दिया। इसका एक भाई लाहौरी नाम का अत्यंत दुष्ट प्रकृति का था। हमें सूचना मिली कि इसके व्यवहार से प्रजा को बहुत कष्ट होता था। हमने एक अहदी को उसे जौनपुर से लाने के लिए भेजा। अहदी के पहुँचने पर बिना कारण ही चीनकुलीज सशंकित हो गया और अपने ओछे भाई को साथ लेकर उसने भागने का विचार किया। अपना मंसब, शासन-कार्य, स्थान, जागीर, धन-संपत्ति तथा संतान-परिवार सबको छोड़कर और कुछ धन-सुवर्ण-रत्न तथा एक झुंड आदमियों का लेकर भूम्याधिकारियों के पास चला गया। कुछ दिन हुए कि यह समाचार मिला, जिससे बड़ा आश्चर्य हुआ। संक्षेप में यह जिस भूम्याधिकारी के पास गया उसने उससे कुछ धन ऐंठ लिया तथा इसे चले जाने दिया। अंत में समाचार मिला कि यह जोहाट प्रांत में पहुँच गया है जब जहाँगीर कुलीखाँ को यह पता लगा तब उसने कुछ आदमी उस दुष्ट को पकड़ लाने के लिए भेजा। इन्होंने पहुँचते ही उसे पकड़ लिया और जहाँगीर कुलीखाँ के पास ले जाने का विचार कर ही रहे थे कि वह मर गया। उसके साथ में गए हुए लोगों में से कुछ ने कहा कि कुछ दिन पहले इसे बीमारी हो गई थी, जिससे यह समाप्त हो गया। परंतु इसके संबंध में यह भी सुना गया कि इसने इस कारण आत्महत्या करली कि वह इस स्थिति में जहाँगीर कुलीखाँ के पास न ले जाया जाय। जो भी हो वे उसके शव को उसके संतानों तथा सेवकों के सहित जो साथ में थे इलाहाबाद ले आए। उसके पास जो धन था उसका अधिकांश इन लोगों ने ले लिया और भूम्याधिकारियों ने इससे ले लिया था। शोक कि निमक ने ऐसे कलमुँहे दुष्टों को समुचित दंड तक नहीं पहुँचाया।

सभी मनुष्यों के कर्तव्यों के पहले सम्राट् तथा आश्रयदाता के प्रति कर्तव्य होता है।

२२ वीं को खानदौराँ की प्रार्थना पर बंगश में नियुक्त अफसरों में से एक नाद अली मैदानी के मंसब में २०० सवार बढ़ाए गए, जिससे उसका मसब डेढ़ हजारी १००० सवार का हो गया। लश्करखाँ के मंसब में भी १०० सवार बढ़ाए गए, जो दो हजारी ६०० सवार का था। २४ वीं को हमने मुकर्रबखाँ का मंसब निश्चित किया, जो तीन हजारी २००० सवार का था और उसे बढ़ाकर पाँच हजारी २५०० सवार का कर दिया। उसी दिन हमने शाह मुहम्मद कंधारी के पुत्र कियाम को खाँ की पदवी दी, जो अमीरजादा तथा अहेरी के रूप में सेवा में था। आज़र महीने की ५ वीं को दाराबखाँ को एक जड़ाऊ खंजर दिया गया और राजा सारंगदेव के हाथ दक्षिण के अमीरों को खिलअत दिलवाए। कश्मीर के प्रांताध्यक्ष सफदर खाँ के संबंध में कुछ ऐसे समाचार सुने गए कि हमने उसे वहाँ के शासन से हटा दिया और पुरानी सेवाओं के विचार से अहमद बेग खाँ पर कृपा कर उसे कश्मीर का प्रांताध्यक्ष नियत कर दिया। इसका मंसब ढाई हजारी १५०० सवार का करके कमर में लगाने का एक जड़ाऊ छुरा तथा खिलअत देकर जाने की छुट्टी दी। एहतमामखाँ के हाथ हमने बंगाल के प्रांताध्यक्ष कासिमखाँ तथा उस प्रांत में नियुक्त सर्दारों के लिए जाड़े के खिलअत भेजे। उसी महीने की १५ वीं को इफ्तखारखाँ के पुत्र मकाई की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई, एक हाथी, गुंठ घोड़े तथा वस्त्र थे। वह मुरौव्वतखाँ की पदवी पाकर सम्मानित हुआ। एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर हमने दियानतखाँ को बुला भेजा था, जो ग्वालिअर दुर्ग में था और वह आकर अभिवादन कर सम्मानित हुआ। इसकी जब्त की हुई संपत्ति इसे लौटा दी गई।

इसी समय देहबिद के ख्वाजा हाशिम ने, जो अब तक मावरुन्नहर में दर्वेश है और जिस पर उस देशके लोगों का बड़ा विश्वास है, अपने एक शिष्य के हाथ एक पत्र भेजा जिसमें इस शाही वंश के प्रति अपनी भक्ति तथा इस उच्च परिवार के साथ अपने पूर्वजों के संबंध एवं मित्रता का उल्लेख था। इसके साथ एक फरजी, एक कमान तथा विगत सम्राट् बाबर का बनाया एक शैर भेजा, जो ख्वाजगी नामक सिद्ध पुरुष के लिए, जो इसी संप्रदाय के दरवेशों में से था, बनाया गया था। अंतिम मिसरा इस प्रकार है—

हम ख्वाजगी से बँधे हैं और ख्वाजगी के सेवक हैं।

हमने भी अपनी लेखनी से उसी शैर की बहर में कुछ पंक्तियाँ लिखीं और इस तत्काल रची रुबाई के साथ एक सहस्र जहाँगीरी मुहर उक्त ख्वाजा के पास भेज दिया—

ऐ आप जिसकी कृपा हम पर निरंतर अधिकाधिक होती रहती है।
ऐ दर्वेश, यह साम्राज्य आपको स्मरण रखता है।
शुभ समाचार से हमारा हृदय प्रसन्न हो रहा है।
आपकी कृपा सामाओं के बाहर चली गई है, इससे हम प्रसन्न हैं।

हमने आज्ञा दी कि जिसमें कविता करने की रुचि हो वह इसी प्रकार की रुबाई लिखे। हकीम मसीहुज्जमाँ ने कहा और खूब कहा—

यद्यपि बादशाही के कार्य हमारे सामने बराबर रहते हैं।
पर प्रत्येक क्षण हम दर्वेशों पर अधिकाधिक चिंतन करते हैं॥
यदि हमारे दर्वेश का हृदय हमसे प्रसन्न होता है।
तो हम उसे अपनी बादशाही का लाभ समझते हैं।

हमने हकीम को एक सहस्र मुहर इस रुबाई के उपलक्ष में पुरस्कार दिया। दै महीने की ७वीं को जब हम पुष्कर से लौटते हुए अजमेर आ रहे थे तब बयालीस जंगली सुअर पकड़े गए।

२०वीं को मीर मीरान आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। उसके तथा उसके परिवार के संबंध में कुछ वृत्तांत यहाँ लिखा जाता है। पिता की ओर से यह मीर गियासुद्दीन मुहम्मद मीर मीरान का पौत्र था, जो शाह नेअमतुल्ला वली का पुत्र था। सफवी शाहों के राज्यकाल में इस परिवार का बहुत सम्मान था, यहाँ तक कि शाह तहमास्प ने अपनी सगी बहिन जानिश खानम का शाह नेअमतुल्ला से निकाह कर दिया। बड़ा शेख तथा उपदेशक होने के कारण यह (शाहों का) संबंधी तथा दामाद बना लिया गया। माता की ओर से वह शाह इस्माइल खूनी का दौहित्र था। शाह नेअमतुल्ला की मृत्यु पर उसके पुत्र गियासुद्दीन मुहम्मद मीर मीरान पर बड़ी कृपा हुई और विगत शाह (तहमास्प) ने इसके बड़े पुत्र को शाही घराने की एक पुत्री निकाह में दी। उसने पूर्वोक्त शाह इस्माइल की पुत्री का निकाह दूसरे पुत्र खलीलुल्ला से कर दिया, जिससे मीर मीरान उत्पन्न हुआ। उक्त मीर खलीलुल्ला इससे सात आठ वर्ष पहले ईरान से आकर लाहौर में हमारी सेवा में उपस्थित हुआ था। यह उच्च तथा साधु वंश का था इसलिए हमारी इसके प्रति विशेष आस्था हुई और हमने इसे मंसब तथा जागीर देकर सम्मानित किया। जब हम आगरे में चले आए थे तब उसके कुछ ही दिन बाद आम अधिक खा लेने से इसे अजीर्ण रोग हो गया और यह दस-बारह दिनों तक रुग्ण रह कर स्वर्ग सिधारा। हमें इसकी मृत्यु से बहुत शोक हुआ और हमने आज्ञा दी कि इसके पास जो कुछ धन-रत्न है वह इसके पुत्रों के पास ईरान भेज दिया जाय। इसी बीच मीर मीरान कलंदर तथा दर्वेश हो गया और हमारे पास अजमेर में इस प्रकार आया कि मार्ग में इसे कोई पहिचान न सका। हमने उसकी मानसिक व्यथाओं तथा उसकी स्थिति के आंतरिक तथा वाह्य कष्टों को सांत्वना देकर शांत किया और उसे एक हजारी ४०० सवार का मंसब एवं तीस सहस्र

दरब नगद दिया । यह अब हमारी सेवा में उपस्थित रहता है।

१२वीं को जफरखाँ, जो बिहार प्रांत से हटा दिया गया था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर तथा तीन हाथी भेंट दी। दै महीने की १५वीं को बंगाल के प्रांताध्यक्ष कासिम खाँ का मंसब एक हजारी १००० सवार से बढ़ाकर चार हजारी ४००० सवार का कर दिया। बंगाल के दीवान तथा बख्शी हुसेन बेग एवं ताहिर ने अच्छी सेवा नहीं की थी इसलिए दरबार का एक विश्वासपात्र सेवक मुखलिस खाँ उन पदों के कार्य पर नियुक्त किया गया। हमने उसे दो हजारी ७०० सवार का मंसब तथा एक झंडा देकर सम्मानित किया। दियानत खाँ को अर्ज मुकर्रर का पद दिए जाने की आज्ञा दी। शुक्रवार २५वीं को हमारे पुत्र खुर्रम का तुलादान हुआ। वर्तमान वर्ष तक जब वह चौबीस वर्ष का हुआ और इसका निकाह भी हो चुका तथा संतानें भी हुईं तब भी इसने मदिरापान से अपने को अपवित्र नहीं किया था। इसके तुलादान के इस उत्सव पर हमने उससे कहा कि बाबा तुम संतानों के पिता हो चुके हो और बादशाहों तथा शाहजादों ने मदिरा पान किया ही है। आज तुम्हारे तुलादान के दिन हम तुम्हें मदिरा पीने के लिए देंगे और तुम्हें आदेश देते हैं कि जलसों में नौरोज के उत्सव में तथा सभी बड़े त्योहारों पर तुम मदिरापान किया करो। परंतु तुम मदिरापान में अति न करने का मार्ग ग्रहण करना क्योंकि बुद्धिमानगण इतना पान करने को उचित नहीं मानते जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाय और यह आवश्यक है कि उसके पान से केवल लाभ हो। बू अली सिना ने जो हकीमों तथा वैद्यों में सबसे बड़ा विद्वान है, यह रुबाई लिखी है—

मदिरा क्रोधी शत्रु एवं समझदार मित्र है।
थोड़ी विष की औषधि है पर अधिक सर्प विष है॥

अधिक में थोड़ी हानि नहीं है।
पर थोड़ी में अधिक लाभ है॥

बड़ी कठिनाई से उसे मदिरा दी गई। हमने भी पंद्रह वर्ष की अवस्था तक इसे नहीं पिया था, सिवा इसके कि बचपन में हमारी माता तथा धात्रों ने दो-तीन बार बालकों के दवा के रूप में दिया था। हमारे श्रद्धेय पिता से उन्होंने थोड़ी मदिरा माँग ली और एक तोले के लगभग जल तथा गुलाब में मिलाकर दवा के नाम से खाँसी दूर करने के लिए पिलाई थी। जिस समय हमारे पिता का पड़ाव यूसुफजई अफगानों को दमन करने के लिए अटक दुर्ग में पड़ा था, जो नीलाब नदी (सिंधु) के तट पर है तब एकदिन हम अहेर खेलने के लिए घोड़े पर सवार हुए। जब हम बहुत घूम चुके और थकावट के चिन्ह प्रकट होने लगे तब उस्ताद शाह कुली नामक बंदूकची ने जो हमारे श्रद्धेय चाचा मिर्जा मुहम्मद हकीम के बंदूकचियों में विलक्षण था, हमसे कहा कि यदि हम एक प्याला मदिरा पीलें तो थकावट तथा सुस्ती का भाव दूर हो जायगा। यह हमारे यौवनकाल की बात थी और इस ओर हमारी रुचि भी हुई इसलिए हमने महमूद आबदार को आज्ञा दी कि हकीम अली के घर जाय तथा मदिरा ले आवे। उसने एक छोटी शीशी में डेढ़ प्याला मीठी पीली मदिरा भेजी। हमने इसे पी लिया तथा हमें बहुत पसंद आई। इसके अनंतर हम मदिरा पीने लगे और प्रतिदिन इसे यहाँ तक बढ़ाया कि अंगूरी शराब ने नशा लाने का प्रभाव हम पर छोड़ दिया तब हम अर्क पीने लगे। क्रमशः नौ वर्ष में हमारे पीने की मात्रा दुहराकर खिंचे हुए अर्क के बीस प्याले तक पहुँच गई। इनमें चौदह प्याले दिन में तथा बाकी रात्रि में लेता था। इसकी तौल छ सेर हिंदुस्तानी या डेढ़ मन ईरानी होती थी। उन दिनों हमारा भोजन पक्षी का मांस, रोटी तथा तरकारी

थी। वैसा हालत में किसी में हमें मना करने की शक्ति नहीं थी और हमारी अवस्था ऐसी हो गई कि हमारे हाथ के बहुत काँपने से हम स्वयं अपना प्याला उठाकर नहीं पी सकते थे प्रत्युत् अन्य लोग उठाकर पिला देते थे। अंत में हमने हकीम अबुल्फत्ह के भाई हकीम हुमाम को बुला भेजा, जो हमारे श्रद्धेय पिता के अंतरंग परिचितों में से था और उससे अपना हाल कहा। उसने बड़ी ही सचाई तथा हृदय के प्रच्छन्न कष्ट के साथ बिना घबड़ाए कह दिया कि ईश्वर न करे, जिस प्रकार आप अर्क पी रहे हैं वैसी ही हालत में छ महीने और बीतने पर वह अवस्था आ जायगी, जिसकी कोई औषधि नहीं है। उसकी बातें शुभेच्छा के कारण कही गई थीं और हमें भी जीवन प्रिय था इसलिए हम पर बहुत प्रभाव पड़ा तथा उसी दिन से हमने अपनी मात्रा कम करना आरंभ किया और फिलूनिया लेने लगा। जितनी ही हम मदिरा की मात्रा कम करते उतनी फिलूनिया की बढ़ाते जाते थे।

साथ ही हमने यह भी आदेश दिया कि अर्क में अंगूरी मदिरा मिला कर उसे हलका कर दिया करें अर्थात् दो भाग मदिरा तथा एक भाग अर्क रखें। प्रति दिन इसी प्रकार मात्रा कम करते करते सात वर्ष में हमने इसे छ प्याले तक पहुँचा दिया। प्रत्येक प्याले भर मदिरा की तौल सवा अठारह मिस्काल थी। पंद्रह वर्ष अब तक हो गए कि हमने इसी मात्रा के अनुसार पिया न कम न अधिक। हमारे पीने का समय रात्रि है सिवा गुरुवार के, जो कि हमारी राजगद्दी का दिन है। शुक्रवार की संध्या को भी जो सब वारों की संध्याओं से अधिक पवित्र है और शुभ दिन की पूर्व पीठिका है, (हम नहीं पीते)। इन दोनों दिनों को छोड़कर हम प्रति दिन संध्या को पीते हैं। क्योंकि यह ठीक नहीं ज्ञात होता कि यह (बृहस्पतिवार की) संध्या अविचार में व्यतीत हो और वह (शुक्रवार की) परमेश्वर की दुआ माँगने में

कहीं भूल न हो जाय। बृहस्पतिवार तथा रविवार को हम माँस नहीं खाते। बृहस्पतिवार को इसलिए कि वह हमारी शुभ राजगद्दी का दिन है और रविवार को इसलिए कि वह हमारे श्रद्धेय पिता का जन्म दिवस है तथा उस दिन को वह प्रिय तथा अत्यंत प्रतिष्ठित समझते थे। कुछ दिन बाद हम फिलूनिया के स्थान पर अफीम लेने लगे। अब हमारी अवस्था छिआलीस सौर वर्ष तथा चार महीने की हुई तथा हम आठ सुर्ख अफीम पाँच घड़ी दिन बीतने पर और छ सुर्ख रात्रि एक प्रहर बीतने पर लेते हैं।

हमने मकसूद अली के द्वारा अब्दुला खाँ को एक जड़ाऊ खंजर दिया। कासिम खाँ के एक संबंधी शेख मूसा को हमने खाँ की पदवी दी और उसके मंसब को बढ़ाकर आठ सदी ४०० सवार का कर के बंगाल जाने की छुट्टी दी। जफर खाँ के मंसब को बढ़ाकर पाँच सदी ५०० सवार का कर दिया तथा उसे बंगश में नियुक्त किया। उसी दिन ख्वाजाजहाँ के भाई मुहम्मद हुसेन को हिसार सरकार का फौजदार नियत कर जाने की छुट्टी दी और उसके मंसब में २०० सवार बढ़ाकर पाँच सदी ४०० सवार का कर दिया तथा एक हाथी उपहार दिया। ५ बहमन को एक हाथी मीर मीरान को दिया। जब अब्दुल् करीम व्यापारी ईरान से हिंदुस्तान की ओर चला तब हमारे उच्च पदस्थ भाई शाह अब्बास ने उसके हाथ से यमनके लालों की एक माला तथा वेनिस का बना एक प्याला भेजा, जो बहुत सुंदर तथा अलभ्य था। ६ को ये हमारे सामने उपस्थित किए गए। १८ वीं को सुलतान पर्वेज की भेजी हुई भेंट, जिसमें बहुत प्रकार के जड़ाऊ आभूषण आदि थे, हमारे सामने उपस्थित की गई। ७ इस्फंदारमुज़ को एतमादुद्दौला का भतीजा सादिक,जो स्थायी रूप से बख्शी का कार्य करता था,खाँ की पदवी पाकर सम्मानित हुआ। ख्वाजा अब्दुल् अज़ीज़ को भी यही

पदवी दी गई। जैसा कि उचित था हमने इसे अब्दुल् अजीज खाँ की पदवी से और सादिक को सादिक खाँ की पदवी से पुकारा। १० वीं को कुँवर कर्ण के पुत्र जगत सिंह ने, जिसने अपने देश जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली थी, जाने की छुट्टी ली और उस समय उसे बीस सहस्र रुपए, एक घोड़ा, एक हाथी, एक खिलअत और एक अच्छा शाल दिया गया। हरिदास झाला को भी पाँच सहस्र रुपए, एक घोड़ा तथा खिलअत दिया, जो राणा का एक विश्वासपात्र तथा कर्ण के पुत्र का अभिभावक था। इसी के हाथ राणा के लिए हमने सोने का एक चोब (शशपरी) भेजा।

उसी महीने की २० वीं को राजा बासू का पुत्र राजा सूरज सिंह, जो मुर्तजा खाँ के साथ काँगड़ा दुर्ग पर अधिकार करने के लिए इस कारण भेजा गया था कि उसका निवासस्थान उसके पास है, हमारे बुलाने पर आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उक्त खाँ को इसके संबंध में कुछ शंका उत्पन्न हो गई थी और इस कारण उसे अयोग्य साथी समझकर उसने कई बार दरबार को प्रार्थनापत्र भेजे तथा उसके विषय में बातें लिखता रहा जब तक उसे बुलाने की आज्ञा नहीं पहुँच गई।

२६ वीं को निजामुद्दीन खाँ मुलतान से आया और सेवा में उपस्थित हुआ। इस वर्ष के अंत में हमारे साम्राज्य के सभी ओर से विजय तथा संपन्नता के समाचार आने लगे। इसमें से पहला समाचार अहदाद अफ़गान के उपद्रव के संबंध में था, जो बहुत दिनों से काबुल के पार्वत्य स्थान में विद्रोह मचाए हुए था और आस पास के बहुत से अफ़गान जिसके यहाँ इकट्ठे हो गए थे। इसके विरुद्ध हमारे श्रद्धेय पिता के समय से अब तक अर्थात् हमारी राज्यगद्दी से १० वें वर्ष तक बराबर सेनाएँ नियुक्त रहीं। क्रमशः वह परास्त होता गया, उसकी सेना का एक भाग अस्त व्यस्त हो गया और एक भाग मारा गया तथा वह दुरवस्था को प्राप्त हो गया। उसने चरख में कुछ दिन

शरण ली, जिस पर उसका बहुत विश्वास था परंतु खानदौराँ ने उसे घेर लिया और आने जाने का मार्ग बंद कर दिया। जब दुर्ग में पशुओं के लिए घास तथा मनुष्यों के लिए अन्न नहीं रह गया तब वह रात्रि में पशुओं को पहाड़ियों से नीचे उतार लाया और वहीं आसपास में चराने लगा। वह भी पशुओं के साथ चला आया जिसमें वह अपने आदमियों के लिए उदाहरण हो जाय। अंत में इसकी सूचना खानदौराँ को मिली। तब उसने अपने सेनानायकों तथा अनुभवी मनुष्यों को एक निश्चित रात्रि को चर्ख के पास में घात में बैठने का आदेश दिया। वह झुंड रात्रि में वहाँ पहुँच कर घात के स्थानों में छिप बैठे और खानदौराँ उसी दिन उस ओर सवार होकर चला। जब वे अभागे अपने पशु लेकर आए और उन्हें चरने छोड़ दिया तथा निकृष्ट अवस्था में पड़ा हुआ अहदाद अपने झुंड के साथ छिपे हुए लोगों के स्थान से आगे बढ़ा तब उसे एकाएक सामने धूलि उड़ती दिखलाई दी। जब पता लगाया तब ज्ञात हुआ कि खानदौराँ हैं। वह घबड़ाकर लौटना चाहता था कि चरों ने उक्त खाँ को समाचार दिया कि यह अहदाद है। खाँ ने घोड़े को एँड़ मारी और अहदाद पर धावा किया। छिपे हुए मनुष्यों ने भी निकल कर मार्ग रोक लिया और धावा किया। भूमि के ऊबड़ खाबड़ होने तथा घने जगल के कारण दोपहर तक युद्ध होता रहा। अंत में अफगान हारे और पहाड़ों में भाग गए, तीन सौ मारे गए तथा एक सौ पकड़े गए। अहदाद दुर्ग तक न पहुँच सका कि वहाँ कुछ दिन ठहर सके। निरुपाय होकर वह कंधार की ओर चला गया। विजयी सेना चर्ख में पहुँच गई और उन अभागों के कुल स्थानों तथा गृहों को जला दिया एवं उन्हें जड़ मूल से नष्ट कर दिया।

दूसरा शुभ समाचार अंबर की पराजय तथा उसकी अभागी सेना का नाश था। संक्षेप में वृत्तांत इस प्रकार है कि प्रभावशाली नेताओं

का एक झुंड तथा बर्गियों की एक सेना, जो बड़े धैर्यवाले तथा उस प्रांत की बाधाओं के केंद्र थे, अंबर से रुष्ट हो गई और राजभक्त हो जाने की इच्छा प्रकट की। शाहनवाज खाँ से, जो बालापुर में शाही सेना के साथ उपस्थित था, क्षमा की प्रार्थना कर उससे मिलना स्वीकार किया और सान्त्वना मिलने पर आदम खाँ, याकूत खाँ आदि नेतागण तथा जादो राय एवं बापू काँतिया बर्गीगण आकर मिले। शाहनवाज खाँ ने प्रत्येक को एक घोड़ा, एक हाथी, धन और खिलअत उनकी स्थिति तथा गुण के अनुसार दिए और उन्हें कार्यशील तथा राजभक्त होने में प्रोत्साहित किया। इसके अनंतर उनको साथ लेकर बालापुर से कूच कर अंबर की ओर चला। मार्ग में दक्खिनियों की एक सेना से इसकी मुठभेड़ हो गई, जिसके नेता महलदार, दानिश,[1] दिलावर, बिजली, फीरोज आदि थे और इसने उसे परास्त कर दिया।

टूटे हुए शस्त्रों और खुली हुई कमरों के साथ,
पैरों के निश्शक्त हो जाने तथा सिरों के अचेतन होने से।

यह सेना उस अभागे के पड़ाव पर पहुँच गई और उसने बड़े घमंड के साथ विजयी सेना से युद्ध करने का निश्चय किया। उन विद्रोहियों को एकत्र कर जो उसके साथ थे तथा आदिल खाँ की सेना एवं कुतुबुल्मुल्क की सेना को लेकर और उन सब का तोपखाना ठीक कर वह शाही सेना की ओर युद्ध के लिए चला, यहाँ तक कि दोनों के बीच पाँच-कोस की दूरी रह गई। रविवार २५ बहमन को प्रकाश तथा अंधकार की सेनाएँ पास पहुँच गईं और अग्गल के सैनिक दिखलाई पड़ने लगे। दिन तीन प्रहर बीत चुका था, जब तोप तथा बान चलने लगे। अंत में हरावल के सेनाध्यक्ष दाराब खाँ ने अन्य नेताओं तथा उत्साही मनुष्यों के साथ, जैसे राजा बीरसिंह देव,

रायचंद, अली खाँ तातार, जहाँगीर कुली वेग तुर्कमान तथा वीरता के वन के सिंहों के साथ, तलवार खींचकर शत्रु के हरावल पर आक्रमण कर दिया। इसने अच्छी प्रकार वीरता तथा साहस दिखला कर इस सेना को नष्ट कर दिया और वहाँ न रुक कर शत्रु के मध्य पर धावा कर दिया। सेनाओं का सामना होते ही ऐसा घोर द्वंद्व युद्ध होने लगा कि देखनेवाले चकित रह गए। दो घड़ी तक युद्ध होता रहा। मृतकों के ढेर लग गए और अभागा अंबर अधिक युद्ध करने में असमर्थ होकर भागा। यदि उन अभागों की चिल्लाहट पर अँधेरा तथा रात्रि न हो जाती तो उनमें से एक भी वच कर न निकल जाता। युद्ध रूपी प्रवाह के मगरों ने दो-तीन कोस तक भगैलों का पीछा किया। जब घोड़े तथा मनुष्य हिलने योग्य न रह गए और पराजित भाग गए तब वे रुक गए और अपने स्थान को लौट आए। शत्रु का सारा तोपखाना, बानों से लदे हुए तीन सौ ऊँट, युद्धीय हाथी, अरबी तथा फारसी घोड़े एवं असंख्य शस्त्र तथा कवच साम्राज्य के सेवकों को मिले और मृतकों तथा गिरे हुओं की संख्या अगणित थी। बहुत से सरदार जीवित ही पकड़े गए। दूसरे दिन विजयी सेना विजय-स्थल से कूचकर खिरकी की ओर चली, जो उन उल्लुओं का घोंसला था और उनका वहाँ कोई चिन्ह न देख कर पड़ाव डाल दिया। समाचार मिला कि उस रात्रि तथा दिन भर में वे यहाँ-वहाँ भिन्न स्थानों को चले गए हैं। कुछ दिन तक विजयी सेना खिरकी में रुकी रही, शत्रु के गृहों तथा स्थानों को गिराकर मिट्टी में मिला दिया और उस बसे हुए स्थान को उजाड़ डाला। कुछ घटनाओं के घटित हो जाने के कारण, जिनका विस्तृत वर्णन करने में बहुत समय लग जायगा, वे उस स्थान से लौटे और रोहरखेड़ा दर्रे से उतर आए। इस सेवा के उपलक्ष में हमने बहुत से लोगो के मंसब में उनके उत्साह तथा साहस के लिए उन्नति दी।

तीसरा शुभ समाचार था कि खोखर प्रांत पर अधिकार तथा हीरे की खान की प्राप्ति हो गई थी, जो इब्राहीम खाँ के सुप्रयत्नों का फल था। बिहार तथा पटना प्रांत के अंतर्गत यह स्थान था। यहाँ एक नदी है जिसमें से वे हीरे निकलते है। जिस ऋतु में पानी बहुत कम रह जाता है तब उसकी तल में छोटे-छोटे पानी भरे गड्ढे तथा छेद हो जाते है और जो लोग यह कार्य करते हैं उन्हें अनुभव से यह ज्ञात हो जाता है कि जिन गड्ढों में हीरे होते हैं उन पर फतिंगों का झुंड उड़ता रहता है, जिन्हें भारतीय भाषा में झींगा कहते हैं। नदी के तल का ध्यान रखते हुए जहाँ तक पहुँच सकते हैं वे उन गड्ढों के चारों ओर पत्थर चुन देते हैं। इसके अनंतर फावड़े आदि से एक या डेढ़ गज के घेरे में खाली करके उसे खोद डालते हैं। इन्हीं में पत्थरों तथा बालू में छोटे बड़े हीरे मिलते हैं, जिन्हें वे निकाल लेते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि वे इतना बड़ा हीरा पा जाते हैं जो एक लाख रुपये के मूल्य का होता है। यह देश तथा नदी दुर्जनसाल नामक एक हिंदू भूम्याधिकारी के अधिकार में था और यद्यपि उस प्रांत के अध्यक्षगण बहुधा उस पर सेनाएँ भेजते थे और स्वयं भी जाते थे परंतु दुर्गम मार्गों तथा घोर वनों के कारण वे दो-तीन हीरे पाकर संतोष कर लेते थे और उसे उसी अवस्था में छोड़ देते थे। जब वह प्रांत जफर खाँ से ले लिया गया और इब्राहीम खाँ उसके स्थान पर नियत हुआ तब छुट्टी लेकर जाते समय हमने आज्ञा दी थी कि वह वहाँ जाकर उस देश को उस अज्ञात तथा साधारण व्यक्ति से ले ले। ज्योंही वह बिहार प्रांत में पहुँचा उसने एक सेना एकत्र की और उस भूम्याधिकारी के विरुद्ध चल दिया। पहले की प्रथा के अनुसार उसने कुछ आदमियों को भेजा कि वह कुछ हीरे तथा हाथी भेंट में देगा परंतु खाँ ने इसे स्वीकार नहीं किया और उस देश में बड़े साहस के साथ

घुस गया। उस व्यक्ति के अपनी सेना एकत्र करने के पहले मार्ग-प्रदर्शक मिल जाने से इसने आक्रमण कर दिया। उस भूम्याधिकारी ने जब यह समाचार पाया तब तक उसके निवास की पहाड़ी तथा घाटी घेर ली गई। इब्राहीम ने उसे पकड़ने को आदमी सब ओर भेजे और वह एक गुफा में कई स्त्रियों के साथ पकड़ा गया, जिनमें एक उसकी माता तथा अन्य विमाताएँ थीं। इन्हों ने उसे एक भाई के साथ कैद कर लिया। उन्हें ढूँढ कर जितने हीरे उनके पास थे सब ले लिए। तेईस हाथी-हथिनी भी इब्राहीम के हाथ में पड़े। इस सेवा के उपलक्ष में इब्राहीम खाँ का मंसब बढ़ा कर चार हजारी ४००० सवार का कर दिया और उसे फत्हजंग की उच्च पदवी दी। साथ ही उन लोगों के मंसब में उन्नति करने की आज्ञा दी जो साथ में गए थे और वीरता दिखलाई थी। वह देश अब साम्राज्य के शाही सेवकों के अधिकार में है। नदी के तल में कार्य होता रहता है और जो हीरे मिलते हैं दरबार लाए जाते हैं। एक बड़ा हीरा, जिसका मूल्य पचास सहस्र रुपये आँका गया, इधर ही वहाँ से लाया गया था। यदि थोड़ा अधिक कष्ट उठाया जाय तो संभवतः अच्छे हीरे मिलें और रत्नागार में रखे जायँ।

ग्यारहवाँ जलूसी वर्ष

इस्फंदारमुज महीने के अंतिम दिन रविवार को जो १ म रबीउल् अव्वल (सन् १०२५ हि०) होता है, जब दिन पंद्रह घड़ी बीत गया था तब सूर्य ने मीन राशि से निकल कर अपनी सौभाग्य किरणें मेष राशि में डालीं। ऐसे शुभ समय में ईश्वरी सिंहासन के सम्मुख सेवा

तथा प्रार्थना के कार्य पूरा कर हम दरबार आम में साम्राज्य के सिंहासन पर बैठे। दरबार आम का मैदान खेमों तथा शामियानों से भरा था और फिरंगी पर्दे, मुनहले छपे कमखाब तथा अन्य बहुमूल्य वस्त्रों के पर्दे सब ओर लगे थे। शाहजादों, अमीरों, मुख्य दरबारियों, साम्राज्य के दीवानों तथा दरबार के सभी सेवकों ने मुबारकबादी के सलाम किए। गायक हाफिज नाद अली पुराने सेवकों में से एक था, इसलिए हमने आज्ञा दी कि सोमवार को जो कुछ भेंट नगद या सामान आवे वह सब उसे पुरस्कार में दे दिया जाय। २ फरवर्दीन को कुछ सेवकों की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। चौथे दिन ख्वाजाजहाँ की भेंट, जिसे उसने आगरे से भेजा था और जिसमें बहुत से हीरे-मोती, जड़ाऊ वस्तु, सभी प्रकार के वस्त्र और एक हाथी कुल मिलाकर पचास सहस्र रुपए मूल्य के थे, हमारे सामने उपस्थित की गई। ५वें दिन कुँअर कर्ण, जिसे अपने देश जाने की छुट्टी मिली थी, लौटकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक सौ मुहर, एक सहस्र रुपए, साज सहित एक हाथी और चार घोड़े भेंट किए। आसफखाँ के मंसब में, जो चार हजारी २००० सवार का था, हमने ७वीं को एक हजारी २००० सवार बढ़ा दिए और डंका तथा झंडा भी दिया। इसी दिन मीर जमालुद्दीन हुसेन की भेंट भी हमारे सामने उपस्थित की गई और जो उसने भेंट किया वह पसंद तथा स्वीकृत हुई। इन वस्तुओं में एक जड़ाऊ खंजर था, जिसे उसने अपने निरीक्षण में तैयार कराया था। इसके कब्जे पर एक पीला याकूत स्वच्छ तथा चमकता हुआ मुर्गी के अंडे के आधे के बराबर लगा हुआ था। हमने इसके पहले इतना बड़ा तथा साफ पीला याकूत नहीं देखा था। इसके साथ और भी याकूत अच्छे रंग के तथा पुराने पन्ने जड़े हुए थे। जौहरियों ने इसका मूल्य पचास सहस्र रुपए आँका। हमने उक्त मीर के मंसब में १००० सवार बढ़ा दिए, जिससे उसका मंसब पाँच हजारी ३५०० सवार का हो

गया। ८वीं को हमने सादिक हाजिक का मंसब तीन सदी ३०० सवार से और इरादत खाँ का तीन सदी २०० सवार से बढ़ा कर दोनों का मंसब एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। ९ वीं को ख्वाजा अबुलहसन की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। जड़ाऊ आभूषणों तथा वस्त्रों में चालीस सहस्र रुपए मूल्य का सामान स्वीकृत किया और बचा हुआ उसे उपहार में दे दिया। तातार खाँ बकावलबेगी की भेंट में से एक लाल, एक याकूत, एक जड़ाऊ तख्ती, दो अँगूठियाँ तथा कुछ कपड़े स्वीकृत हुए। १० वीं को दक्षिण से राजा मानसिंह के भेजे तीन हाथी और लाहौर से मुर्तजा खाँ द्वारा भेजे गए सौ से अधिक कमखाब के थान हमारे सामने लाए गए। इसी दिन दियानत खाँ ने भेंट दिया जिसमें मोतियों की दो मालाएँ, दो लाल, छ बड़े मोती तथा सोने की एक थाल कुल अट्ठाइस सहस्र रुपए मूल्य की थी। बृहस्पतिवार ११ वीं को हम एतमादुद्दौला के गृह पर उसका सम्मान बढ़ाने के लिए गए। उस समय उसने अपनी भेंट दी जिसे हमने अच्छी प्रकार निरीक्षण किया। उसमें बहुत सी विशेष अलभ्य थीं। रत्नों में दो मोतियाँ तीस सहस्र रुपए मूल्य की, बाइस सहस्र रुपए में क्रय किया हुआ एक कुत्बी लाल तथा अन्य मोती एवं लाल थे। कुल का मूल्य लगभग एक लाख दस सहस्र रुपयों के था। ये सब स्वीकृत हुए और वस्त्र आदि में भी पंद्रह सहस्र रुपयों के मूल्य के लिए गए। भेंट का जब हमने निरीक्षण कर लिया तब हमने एक प्रहर रात्रि भोजन-पान, खेल में व्यतीत किया। हमने आज्ञा दी कि सर्दारों तथा सेवकों को भी प्याले दिए जायँ। महल की स्त्रियाँ भी हमारे साथ थीं और आनंददायक जलसा जमा। इस जलसे के समाप्त होने पर हमने एतमादुद्दौला से छुट्टी ली और दरबार खास में चले आए। इसी दिन हमने आज्ञा दी कि नूरमहल बेगम को नूरजहाँ बेगम कहा करें।

१२ वीं को एतबार खाँ की भेंट हमारे सामने लाई गई। इसमें एक बर्तन मछली के आकार का बना हुआ था जिसमें सुंदर रत्न जड़े हुए थे, सुंदर बनावट का था और जिसमें हमारी मोताद अँट सकती थी। यह, अन्य रत्न, जड़ाऊ वस्तु तथा वस्त्र सब मिला कर पचास सहस्र रुपए मूल्य के स्वीकृत हुए और बचे लौटा दिए गए। कंधार के अध्यक्ष बहादुर खाँ ने सात एराकी घोड़े तथा इक्यासी वस्त्र भेजे। १३ वीं को इरादत खाँ तथा राजा बासू के पुत्र राजा सूरजमल की भेंटें हमारे सामने उपस्थित की गईं। अब्दुस्सुभान का मंसब बारह सदी ६०० सवार का था उसे बढ़ाकर डेढ़ हजारी ३०० सवार का कर दिया। १५ वीं को ठट्ठा प्रांत की अध्यक्षता शमशेर खाँ उजबेग से लेकर मुजफ्फरखाँ को दी गई। १६ वीं को एतमादुद्दौला के पुत्र एतकादखाँ की भेंट हमारे सामने लाई गई। इसमें से बत्तीस सहस्र मूल्य की वस्तुएँ स्वीकृत हुईं और बची हुई उसे लौटा दी गईं। १७वीं को तरबियतखाँ की भेंट का निरीक्षण किया और सत्रह सहस्र रुपए मूल्य के रत्न तथा वस्त्र स्वीकृत हुए। १८वीं को हम आसफ खाँ के गृह पर गए और उसकी भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। शाही महल से उसके गृह तक की दूरी एक कोस थी। आधी दूरी तक मार्ग में कारचोबी किए मखमल, कमख्वाब तथा सादा मखमल के पाँवड़े बिछे हुए थे, जिसका मूल्य दस सहस्र रुपए हमसे बतलाया गया था। जो भेंट उसने प्रस्तुत किया था वे विस्तार के साथ हमारे सामने उपस्थित की गई। रत्न, जड़ाऊ आभूषण, सोने की वस्तुएँ तथा सुन्दर वस्त्र सब एक लाख चौदह सहस्र रुपए मूल्य के और चार घोड़े एवं एक ऊँट पसंद किए गए।

१९ वीं फरवरदीन को, जो प्रतिष्ठा का दिन है, शाही महल में बड़ा उत्सव हुआ। शुभ साइत का विचार रखते हुए जब उक्त दिन ढाई घड़ी बच रहा था तब हम राजसिंहासन पर बैठे। हमारे पुत्र

बाबा खुर्रम ने इसी शुभ घड़ी में स्वच्छतम पानी का तथा चमकता हुआ लाल भेंट किया, जिसका मूल्य अस्सी सहस्र रुपए कूता गया। हमने इसके पंद्रह हजारी ८००० मंसब को बढ़ाकर बीस हजारी १०००० सवार का कर दिया। उसी दिन हमारे चांद्र तुलादान का उत्सव हुआ। हमने एतमादुद्दौला के मंसब को, जो छ हजारी ३००० सवार का था, बढ़ाकर सात हजारी ५००० सवार का कर दिया और उसे तूमान तोग दिया तथा यह भी सम्मान प्रदान किया कि हमारे पुत्र खुर्रम के पीछे उसका भी डंका बजता रहे। हमने तरबियत खाँ का मंसब एक हजारी ४०० सवार से बढ़ा दिया, जिससे उसका मंसब साढ़े तीन हजारी १५०० सवार का हो गया। एतकादखाँ का मंसब एक हजारी ४०० सवार से बढ़ा दिया। निजामुद्दीन खाँ का मंसब बढ़ाकर सात सदी ३०० सवार का कर दिया और उसे बिहार प्रांत में नियत किया। सलामुल्ला अरब को शुजाअतखाँ की पदवी दी और मोतियों का एक हार देकर एक शाही सेवक बना दिया। हमने मीर जमालुद्दीन अंजू को अजदुद्दौला की पदवी दी। २१ वीं को सर्व-शक्तिमान् परमेश्वर ने खुसरू को मेहतर फाजिल रिकाबदार के पुत्र मुकीम की पुत्री से एक पुत्री दी। अल्लहदाद अफगान को, जो अपने पिता कुविचारी अहदाद से अलग होकर हमारी सेवा में दरबार चला आया था, हमने बीस सहस्र दरब दिया। २५ वीं को राय मनोहर की मृत्यु का समाचार आया, जो दक्षिण की सेना में नियत था। हमने उसके पुत्र को पाँच सदी ३०० सवार का मंसब तथा उसके पिता का स्थान एवं संपत्ति दी। २६ वीं को नाद अली मैदानी की भेंट, जिसमें नौ घोड़े, कई दहानाकश और चार ईरानी ऊँट थे, हमारे सामने उपस्थित की गई। हमने कंधार के अध्यक्ष बहादुर खाँ खलीलुल्ला के पुत्र मीर मीरान तथा भक्कर के शासक सैयद बायजीद को एक एक हाथी दिए।

१ म उर्दिबिहिश्त को अब्दुल्लाखाँ की प्रार्थना पर उसके भाई सरदारखाँ को हमनें डंका दिया। ३ री को हमने अल्लहदाद अफगान को एक जड़ाऊ खपवा दिया। उसी दिन समाचार आया कि अफरीदी अफगानों में से एक कदम ने, जो राजभक्त तथा अज्ञाकारी था तथा जिसे खैबर दर्रें की राहदारी कर मिला था, कुछ शका के कारण आज्ञा-कारिता से पैर हटा लिया है और विद्रोह कर रहा है। इसने हर थानों पर सेनाएँ भेजी हैं और जहाँ जहाँ यह या इसकी सेनाएँ पहुँची वहाँ वहाँ के मनुष्यों की असावधानी से वे थानें लुट गए तथा बहुत से आदमी मारे गए। संक्षेप में इस मूर्ख अफगान के लज्जाजनक कार्यों से काबुल के पार्वत्य प्रांत में उपद्रव उठ खड़ा हुआ। जब यह समाचार हमें मिला तो हमने आज्ञा दी कि उसके भाई हारून तथा पुत्र जलाल को, जो दरबार में उपस्थित थे, कैद कर लें तथा आसफखाँ को सौंप दें कि उन्हें ग्वालियर दुर्ग में कारागार में रखे।

ईश्वरीय क्षमा तथा दया के कारण एवं ईश्वर की कृपा के चिह्न रूप में एक ऐसा कार्य इस समय हुआ, जो विचित्रता से खाली नहीं है। राणा पर विजय प्राप्त करने के अनंतर हमारे पुत्र ने अजमेर में एक लाल भेंट किया था, जो बहुत ही सुंदर तथा स्वच्छ जल का था एवं जिसका मूल्य साठ सहस्र रुपए था। हमारा विचार हुआ कि इस लाल को अपने बाँह में बाँधें। हम बहुत चाहते थे कि एक ही रूप के दो अलभ्य अच्छे पानी के मोती मिलें, जो इस लाल के अनुरूप हों। मुकर्रब खाँ ने एक बहुत अच्छा मोती बीस सहस्र रुपए मूल्य का नौरोज की भेंट में दिया था। हमारा विचार हुआ कि यदि इसी के जोड़ का एक और मोती मिल जाय तो एक अच्छा भुज बन जायगा। खुर्रम बचपन ही से हमारे श्रद्धेय पिता के पास रहा करता था तथा दिन-रात उनके समीप उपस्थित रहता था। उसने एक दिन

हमसे कहा कि उसने एक पुरानी पगड़ी में एक मोती देखा है जो इस मोती के आकार-तौल में बराबर है। वे एक पुराना सिरपेच ले आए, जिस में एक बड़ा मोती ठीक उसी प्रकार, आकार तथा तौल का था, यहाँ तक कि तौल में तनिक भी कम अधिक नहीं था और जौहरी गण भी आश्चर्य चकित रह गए। मूल्य, रूप, चमक तथा पानी सभी में समान था और ऐसा ज्ञात होता था कि दोनों एक ही साँचे में ढले हैं। लाल के दोनों ओर मोतियों को रख कर हमने उसे बाँह पर बाँध लिया और नम्रता तथा सिज्दे में भूमि पर सिर रखकर हमने 'खुदा' को धन्यवाद दिया जो अपने बंदे पर दया करता है तथा हमारी जिह्वा से अपनी स्तुति कराता है—

कौन हाथ और जिह्वा से सफल होता है ?
वह जो धन्यवाद का स्वत्व चुकाता है।

५ उर्दिबिहिश्त को लाहौर से मुर्तजा खाँ द्वारा भेजे गए तीस एराकी तथा तुर्की घोड़े हमारे सामने लाए गए। साथ ही काबुल से खानदौराँ के भेजे हुए तिरसठ घोड़े, पंद्रह ऊँट तथा ऊँटनी, एक गट्ठर कुलंग के पर, नौ आकिरी, नौ पानीदार मत्स्य-दंत, तातार के नौ चीना बर्तन, तीन बंदूक आदि स्वीकृत हुए। मुकर्रब खाँ ने हब्श देश का एक छोटा हाथी भेंट किया, जो जहाज पर समुद्र से लाया गया था। हिंदुस्थान के हाथियों की तुलना में इस में कुछ विशेषता है। यहाँ के हाथियों से इस के कान बड़े हैं और इस की सूँड़ तथा पुच्छ भी अधिक लंबी हैं। हमारे श्रद्धेय पिता के समय एतमाद खाँ गुजराती ने एक बच्चा हाथी भेंट में भेजा था, जो क्रमशः बड़ा हुआ पर वह बड़ा क्रोधी तथा बिगड़ैल था। ७ वीं को एक जड़ाऊ खंजर ठट्टा के प्रांताध्यक्ष मुजफ्फर खाँ को दिया गया। उसी दिन समाचार आया कि अफगानों के झुंड ने खान आलम के भाई अब्दुस्सुबहान पर आक्र-

मण किया है, जो एक थाने में नियत था और उसे घेर लिया है। अब्दु-स्सुब्हान ने अन्य मंसबदारों तथा सेवकों के सहित, जो उसके साथ जाने के लिए नियत थे, बड़ी वीरता दिखलाई पर अंत में इस कहावत के अनुसार कि—

जब चींटियों के पर निकल आते हैं तब वे हाथियों को काटती हैं।

उन कुचों ने इन्हें परास्त कर दिया और उस थाने के बहुत से आदमियों के साथ अब्दुस्सुब्हान मारा गया। इस घटना के कारण शोक-सान्त्वना के लिए खानआलम के पास, जो ईरान में एलची नियत था, कृपापूर्ण फर्मान तथा विशिष्ट खिलअत भेजा गया। १४ वीं को मुअज्जम खाँ के पुत्र मुकर्रम खाँ की भेंट बंगाल से आई। इस में उस प्रांत में प्राप्त रत्न तथा वस्तुएँ थीं, जो हमारे सामने उपस्थित की गई। हमने गुजरात के कुछ जागीरदारों का मंसब बढ़ाया। इन में सर्दार खाँ का मंसब एक हजारी ५०० सवार से बढ़कर डेढ़ हजारी ५०० सवार का कर दिया और एक झंडा भी दिया। सैयद दिलावर बारहा के पुत्र सैयद कासिम का मंसब बढ़ाकर आठ सदी ४५० सवार का और अहमद कासिम कोका के भतीजा यार बेग का छ सदी २५० सवार का कर दिया। १७ वीं को रज्जाक मर्वी उजबेग की मृत्यु का समाचार आया, जो दक्षिण की सेना में था। यह युद्ध-कला में प्रवीण था और मावरुन्नहर के प्रसिद्ध अमीरों में से एक था। २१ वीं को अल्लहदाद अफगान को खाँ की पदवी दी और उसके एक हजारी ६०० सवार के मंसब को बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। लाहौर के कोष से तीन लाख रुपए खानदौराँ को पुरस्कार में तथा व्यय के लिए दिया, जिसने अफगानों के उपद्रव में बहुत प्रयत्न किया था। २८ वीं को कुँअर कर्ण को विवाह के लिए घर जाने की छुट्टी मिली। हमने उसे खिलअत, जीन सहित एक खास एराकी घोड़ा, एक हाथी तथा एक जड़ाऊ खंजर दिया।

इस (खुरदाद) महीने की ३ री को मुर्तज़ा खाँ की मृत्यु का समाचार आया। यह साम्राज्य के पुराने सेवकों में से था। हमारे श्रद्धेय पिता ने इसका पालन कर इसे उच्च विश्वस्त पद पर पहुँचाया था। हमारे राज्यकाल में भी खुसरू के पराजय में इसने अच्छी सेवा करने का सम्मान प्राप्त किया था। इसका मंसब छ हजारी ५००० सवार तक पहुँच गया था। इस समय यह पंजाब का प्रांताध्यक्ष था और इस कारण काँगड़ा दुर्ग विजय करने का इसने बीड़ा उठाया था, जिस के समान दृढ़ता में कोई अन्य दुर्ग पार्वत्य प्रांत में नहीं था प्रत्युत् सारे संसार में नहीं था। इस कार्य पर जाने की इसने आज्ञा ली थी। यह समाचार सुनकर हमें बहुत दुःख हुआ और वास्तव में ऐसे राजभक्त अनुगामी की मृत्यु पर ऐसा होना उचित ही है। राजभक्ति ही में कार्य करते हुए इसकी मृत्यु हुई थी इसलिए हमने इसके लिए खुदा से दुआ माँगी थी कि इसे क्षमा करे। ४ खुर्दाद को सैयद निजाम का मंसब बढ़ाकर नौ सदी ६५० सवार का कर दिया। हमने नूरुद्दीन कुली को बाहर से आये एलचियों का सत्कार करने का पद दिया। ७ वीं को सैफ खाँ बारहा की मृत्यु का समाचार आया। यह वीर तथा उत्साही युवक था। खुसरू के साथ के युद्ध में इसने बहुत प्रयत्न किया था। दक्षिण में विशूचिका से इसने इस अनित्य संसार को त्याग दिया। हमने उस के पुत्रों पर कृपा की। सब से बड़े पुत्र अली मुहम्मद को, जो उसकी संतानों में सबसे योग्य है, छ सदी ४०० सवार का और इस के (अली मुहम्मद) भाई बहादुर को चार सदी २०० सवार का मंसब दिया। उस के (सैफ खाँ) भतीजे सैयद अली को मंसब में पाँच सदी ५०० सवार की उन्नति दी। उसी दिन शहबाज खाँ कंबू के पुत्र खबुल्ला को रणबाज खाँ की पदवी दी। ८ वीं को हाशिम खाँ का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी १८०० सवार का कर दिया। इसी दिन हमने अलहदाद खाँ अफग़ान को बीस सहस्र दरब दिए। बांधव प्रांत के राजा विक्रमा-

जीत को, जिस के पूर्वज हिंदुस्थान के बड़े राजाओं में से थे, हमारे भाग्यवान पुत्र बाबा खुर्रम के आश्रय में हमारी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उस के दोष क्षमा किए गए। ६ वीं को जैसलमेर का कल्याण, जिसे बुलाने के लिए राजा कृष्णदास गया था, आकर सेवा उपस्थित हुआ। इसने एक सौ मुहर तथा एक सहस्र रुपए भेंट किए। इस का बड़ा भाई रावल भीम प्रसिद्ध व्यक्ति था। जब वह मरा तब दो महीने का एक पुत्र छोड़ गया और वह भी बहुत दिन तक जीवित न रहा। जब हम शाहजादे थे तब हमने इस की पुत्री से निकाह किया था और उसे मलिकए जहाँ कहते थे। इस जाति के पूर्वजगण प्राचीन राजभक्त लोगों में से थे इस से यह संबंध हुआ था। उक्त कल्याण को बुला कर, जो रावल भीम का भाई था, हमने उसे राज का टीका तथा रावल की पदवी दी।

समाचार मिला कि मुर्तजा खाँ की मृत्यु के अनंतर राजा मान ने राजभक्ति प्रगट की और काँगड़ा दुर्ग के मनुष्यों को साहस दिलाकर यह प्रबंध किया गया कि राजा के पुत्र को वह दरबार में लिवा जावे, जिस की अवस्था उन्नीस वर्ष की थी। इस सेवा में विशेष उत्साह दिखलाने के कारण हम ने उस का मंसब, जो एक हजारी ८०० सवार का था, बढ़ा कर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया। ख्वाजा-जहाँ का मंसब बढ़ा कर चार हजारी २५०० सवार का कर दिया। इसी दिन (९ वीं) एक ऐसी घटना घटी जिसे कि हम ने स्वयं बहुत लिखना चाहा पर हमारे हाथ तथा हृदय ने साहस छोड़ दिया। जब कभी हम लेखनी उठाते तभी हम घबड़ा जाते थे इस लिए निरुपाय होकर एतमादुद्दौला को लिखने की आज्ञा दी।

'एक पुराना सच्चा सेवक एतमादुद्दौला आज्ञानुसार इस शुभ ग्रंथ में लिखता है कि ११ वीं खुरदाद को उच्च सौभाग्य वाले शाह खुर्रम

की शुद्ध पुत्री में ज्वर के लक्षण दिखलाई पड़े, जिस पर सम्राट् का मंगल-रूपी उद्यान के प्रथम फल होने के कारण अत्यंत स्नेह था। तीन दिनों के अनंतर दाने दिखलाई पड़े और उसी महीने की २६ वीं को अर्थात् २६ वीं जमादिउल् अव्वल सन् १०२५ हि० को उसका प्राणपक्षी पंचतत्व के बने पिंजड़े को छोड़ कर स्वर्ग-रूपी उद्यान को उड़ गया। इसी दिन आज्ञा हुई कि चहार शंबः को गुम शंबः कहा जाया करे। इस हृदयद्रावक घटना तथा शोकवर्द्धक दुःख के कारण उस ईश्वरीय-छाया के शुभ-व्यक्तित्व पर क्या बीता, उसे हम क्या लिखें? संसार की इस आत्मा पर जब ऐसा बीता तब उन सेवकों की क्या दशा हुई होगी, जिनका जीवन उस शुद्ध व्यक्तित्व से संबद्ध था! दो दिनों तक दरबार में सेवकगण उपस्थित न हो सके। आज्ञा दी गई कि उस गृह के सामने एक दीवाल खींच दी जाय, जो उस स्वर्ग-पक्षी का निवासस्थान था, जिससे वह दिखलाई न पड़े। इस के साथ ही वह दो दिनों तक दरबार गृहों के द्वार तक नहीं गए। तीसरे दिन वह दुखी अवस्था में प्रसिद्ध शाहजादे के गृह पर गए और सेवकों को अभिवादन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा नया जीवन मिला। मार्ग में हज़रत ने शांत रहने का बहुत प्रयत्न किया पर आँसू शुभ नेत्रों से बहने लगे और बहुत देर तक ऐसा रहा, यहाँ तक कि शोक की धीमी स्वाँस भी सुनकर हजरत की अवस्था बिगड़ जाती थी। यह कुछ दिन तक संसार के निवासियों के शाहजादे के गृह पर रहे और इलाही महीने तीर (६ वीं) के सोमवार को आसफ खाँ के गृह पर गए। वहाँ से वह चश्मए नूर गए तथा दो या तीन दिनों तक रहे। किंतु वह जब तक अजमेर में रहे अपने को शांत न कर सके। जब कभी स्नेह शब्द उन के कानों तक पहुँचता तभी उन के नेत्रों से आँसू बहने लगते थे और उनके सच्चे सेवकों के हृदय टुकड़े टुकड़े हो जाते थे। जब सौभाग्य की सेना दक्षिण प्रांत की ओर चली तब उन्हें कुछ शांति मिली।"

इसी दिन राय मनोहर के पुत्र पृथीचंद को राय की पदवी, पाँच सदी ४०० सवार का मंसब और उसके देश में जागीर मिली। शनिवार ११ वीं को हम चश्मएनूर से अजमेर में अपने महल लौट आए। रविवार १२ वीं को संध्या को हिंदू ज्योतिषियों के गणनानुसार धन राशि के २७ अक्षांश पर पहुँचने के ३७ पल के अनंतर तथा यूनानी गणनानुसार मकर के १५ वीं अक्षांश पर पहुँचने पर आसफ खाँ की पुत्री के गर्भ से एक बहुमूल्य मुक्ता संसार में आया। ऐसे बड़े सुयोग के आनंद तथा प्रसन्नता में डंके बड़े धूम से पीटे जाने लगे और प्रजा के लिए सुख तथा आनंद का द्वार खोल दिया गया। बिना किसी विचार या देरी के एकाएक हमारी जिह्वा से शाह शुजाअ नाम निकल पड़ा। हम आशा करते हैं कि इसका आगमन हमारे लिए तथा अपने पिता के लिए शुभ होगा। १२ वीं को जैसलमेर के रावल कल्याण को एक जड़ाऊ खंजर तथा एक हाथी दिया गया। उसी दिन खवास खाँ की मृत्यु का समाचार आया, जिसकी जागीर कन्नौज सरकार में थी। हमने गुजरात के दीवान राय कुँअर को एक हाथी दिया। उसी महीने तीर की २२ वीं को हमने राजा मानसिंह के मंसब में पाँच सदी ५०० सवार बढ़ाए, जिससे उसका मंसब चार हजारी ३००० सवार का हो गया। अली खाँ तातारी का मंसब, जिसे इसके पहले नसरत खाँ की पदवी मिल चुकी थी, दो हजारी ५०० सवार का कर दिया और उसे एक झंडा भी दिया। कुछ इच्छाओं की पूर्ति के विचार से हमने मन्नत मानी थी कि श्रद्धेय ख्वाजा के प्रकाशमान दरगाह के घेरे में जाली सहित सोने की रेलिंग लगा दी जाय। इस महीने की २७ वीं को यह बन कर तैयार हो गई और हमने आज्ञा दी कि उसे ले जाकर लगा दें। एक लाख दस सहस्र रुपए इसे बनाने में लगे। दक्षिण की विजयी सेना की अध्यक्षता तथा संचालकत्व हमारे पुत्र सुलतान पर्वेज के द्वारा हमारे इच्छानुसार नहीं किया जा सका।

इसलिए हमने उसे बुला भेजना तथा विजयी सेना के हरावल के रूप में बाबा खुर्रम को आगे भेजना निश्चित किया, जिसमें विचारशीलता एवं कार्य-संचालन-ज्ञान के चिह्न स्पष्ट ज्ञात होते थे और स्वयं भी उसका अनुगमन करने का विचार किया, जिसमें यह महत्वपूर्ण कार्य एक इसी चढ़ाई में पूरा हो जाय। उसी उद्देश्य से पर्वेज के नाम एक फर्मान भेजा जा चुका था कि वह इलाहाबाद प्रांत जाय, जो हमारे साम्राज्य के मध्य में है। जब तक हम इस चढ़ाई पर रहेंगे तब तक वह उस देश की रक्षा तथा प्रबंध करता रहेगा। उसी महीने की २६ वीं को बुर्हानपुर के वाकेआनवीस बिहारीदास का एक पत्र आया कि २० वीं को शाहजादा सुरक्षित तथा प्रसन्नता से नगर छोड़ कर उस प्रांत की ओर चला गया।

१म अमुरदाद महीने को हमने एक रत्नयुक्त पगड़ी मिर्जा राजा भाऊसिंह को प्रदान किया। कुष्टिगिर के मठ को एक हाथी दिया गया। १८ वीं को लश्कर खाँ के भेजे हुए चार तीव्रगामी घोड़े हमारे सामने उपस्थित किए गए। सरकार संभल की फौजदारी पर मीर मुगल सैयद अब्दुलवारिस के स्थान पर नियुक्त किया गया, जो खवास खाँ के स्थान पर कन्नौज प्रांत का अध्यक्ष नियुक्त हुआ था। उस कार्य के उपयुक्त उसका मंसब पाँच सदी ५००सवार का कर दिया गया। २१ वीं को जैसलमेर के रावल कल्याण की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई, जिसमें तीन सहस्र मुहर, नौ घोड़े, पचीस ऊँट तथा एक हाथी थे। कजिलबाश खाँ का मंसब बढ़ाकर बारह सदी १००० सवार का कर दिया। २३ वीं को शुजाअत खाँ को अपनी जागीर पर जाने की छुट्टी मिली कि वह अपनी जागीर का प्रबंध तथा अपने सेवकों की सुव्यवस्था करके निश्चित समय पर दरबार में उपस्थित हो जाय। इस वर्ष अर्थात् १० वें जलूसी वर्ष में हिंदुस्थान के अनेक स्थानों में भारी महामारी

प्रगट हुई। इस रोग का आरंभ पंजाब के पर्गनों में हुआ और क्रमशः लाहौर नगर में यह छूत का रोग फैल गया। बहुत से मनुष्य, मुसलमान तथा हिंदू, इस रोग से मर गए। इसके अनंतर यह रोग सरहिंद तथा दोआबा होता दिल्ली और उसके चारो ओर के पर्गनों तथा गाँवों में फैल गया एवं सबको निर्जन सा बना दिया। अब इसका प्राबल्य घट गया। वृद्ध पुरुषों तथा पुराने इतिहासों से ज्ञात हुआ है कि यह रोग इस देश में पहले कभी नहीं दिखलाई पड़ा था। हकीमों तथा विद्वानों से इस रोग का कारण पूछा गया तब कुछ ने कहा कि दो वर्ष तक बराबर वर्षा न होने तथा अकाल पड़ने के कारण यह रोग आया है और दूसरों ने कहा कि अनावृष्टि तथा अकाल के कारण वायु के दूषित हो जाने से ऐसा हुआ। कुछ लोगों ने अन्य कारण बतलाए। विद्वत्ता या ज्ञान अल्लाह का है और हम लोगों को उसकी आज्ञा माननी ही है—

आज्ञा को जो शिर नवा कर नहीं मानता वह दास क्या करता है?

५ वीं शहरिवर महीने को शाह इस्माइल द्वितीय की पुत्री तथा मीरमीरान की माता के व्यय के पाँच सहस्र रुपए उन व्यापारियों के द्वारा भेजे गए, जो एराक प्रांत की ओर जा रहे थे। ६ वीं को अहमदाबाद के बख्शी तथा वाकेआनवीस आबिद खाँ के यहाँ से पत्र आया कि अब्दुल्ला खाँ बहादुर फीरोजजंग ने उससे इसलिए झगड़ा किया है कि उसने घटनाओं की सूचना लिखने में कुछ ऐसी बातें लिख दी हैं, जो उसके मन की नहीं थीं और एक दल उसके विरुद्ध भेजकर तथा अपने घर उसे पकड़वा मँगा कर उसकी अप्रतिष्ठा की एवं यह किया और वह किया। यह घटना हमें बड़ी कठोर जान पड़ी और हमारी इच्छा हुई कि उसे तत्काल कृपा-दृष्टि से गिराकर

नष्ट कर दें। अंत में हमने दियानत खाँ को अहमदाबाद भेजने का निश्चय किया कि वह उस स्थान तक जाकर निष्पक्ष लोगों से जांच करे कि वास्तव में ऐसी घटना घटी है या नहीं और यदि घटी हो तो अब्दुल्ला खाँ को दरबार लिवा लावे तथा उस प्रांत का भार एवं प्रबंध उसके भाई सरदार खाँ को सौंप दे। दियानत खाँ के रवाना होने के पहले यह समाचार फीरोजजंग को मिल गया और वह घबड़ाहट में अपने को दोषी कह कर पैदल ही दरबार को चल दिया। दियानत खाँ उसे मार्ग में मिला और पैदल चलने के कारण उसके पैरों में घाव हो गए थे तथा उसकी विचित्र हालत देखकर उसे घोड़े पर बिठाकर अपने साथ दरबार लिवा लाया। मुकर्रब खाँ इस दरबार का पुराना सेवक था और हमारी शाहजादगी के समय से गुजरात का प्रांताध्यक्ष होने की उसकी बड़ी इच्छा थी। इस ध्यान से हमने विचार किया कि अब्दुल्ला खाँ से ऐसा कार्य हो गया है इसलिए इस पुराने सेवक की आशा पूरी कर दी जाय और उक्त खाँ के स्थान पर उसे अहमदाबाद भेज दें। इन्हीं दिनों शुभ घड़ी देखकर हमने उसे उस प्रांत का शासक नियत कर दिया। १० वीं को कंधार के अध्यक्ष बहादुर खाँ का मंसब, जो चार हजारी ३००० सवार का था, पाँच सदी से बढ़ा दिया गया।

एक वाद्य-यंत्र का वादक शौकी अपने समय का एक वैचित्र्य है। हिंदी तथा फारसी गीतों को वह इस प्रकार गाता है कि हृदयों के मालिन्य दूर हो जाते हैं। हमने उसे आनंदखाँ की पदवी दी। हिंदी भाषा में आनंद का अर्थ सुख तथा प्रसन्नता है। तीर महीने के बाद आम की ऋतु हिंदुस्तान देश में नहीं रह जाती परंतु मुकर्रबखाँ ने परगना कैराना में, जो उसके पूर्वजों का स्थान है, आम की बारी लगवाई है और उसका ऐसा सुचारु रूप से प्रबंध कर रखा है कि आम की ऋतु दो महीने आगे

बढ़ा दी है और वह प्रतिदिन ताजा विशिष्ट फल फलघर में भेजता रहता है। यह पूर्ण रूपेण असाधारण बात थी इसलिए यहाँ लिख दी गई है। ८वीं को 'लाल बेबहा' (अमूल्य लाल) नामक एक सुंदर एराकी घोड़ा पर्वेज को उसके एक सेवक शरीफ के द्वारा भेजा गया।

हमने तीव्र शिल्पियों को आज्ञा दी थी कि मर्मर पत्थर को काटकर राणा तथा उसके पुत्र कर्ण की पूरे कद की प्रतिमाएँ तैयार करें। इसीदिन वे तैयार होने पर हमारे सामने उपस्थित की गईं। हमने आदेश दिया कि वे आगरे ले जाई जायँ और झरोखे के नीचे उद्यान में रखी जायँ। २६वीं को हमारा सौर तुलादान प्रथानुसार हुआ। पहली तौल ६५१४ तोले सुवर्ण हुआ। भिन्न-भिन्न वस्तुओं से हम बारह बार तौले गए। दूसरी बार पारे से, तीसरी बार रेशमी वस्त्रों से, चौथी बार अनेक सुगंधित द्रव्य से जैसे अंबर, कस्तूरी, चंदन-काष्ठ, ऊद आदि से यहाँ तक कि बारह तौल पूरी हो गई। हमारी अवस्था के जितने वर्ष बीत चुके थे उतनी संख्या में एक भेंड़, एक बकरा तथा एक मुर्ग फकीरों तथा दर्वेशों को बाँटे गए। हमारे श्रद्धेय पिता के समय से इस समय तक यह नियम इस अक्षय साम्राज्य में बराबर चलता आ रहा है। तुलादान के अनंतर इन सब वस्तुओं को लगभग एक लाख रुपए मूल्य की फकीरों तथा दीन-दरिद्रों में वितरित कर दिया जाता है।

इसी दिन एक लाल, जिसे महाबतखाँ ने बुर्हानपुर में अब्दुल्लाखाँ फीरोजजंग से पैंसठ सहस्र रुपए में क्रय किया था, हमारे सामने लाया गया। यह लाल सुन्दर रूप का था। खानआजम का विशिष्ट मंसब सात हजारी नियत हुआ और यह आज्ञा हुई कि दीवानी विभाग इसी के बराबर वेतन जागीर के रूप में दिया करे। एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर दियानतखाँ के मंसब में से पहले की कार्यवाही के कारण जो कटौती

हुई थी वह बहाल कर दी गई। अजदुद्दौला ने, जिसे मालवा प्रांत जागीर में मिला था, छुट्टी ली और उसे एक घोड़ा तथा खिलअत उपहार देकर सम्मानित किया। जैसलमेर के रावल कल्याण का मंसब दो हजारी १००० सवार का कर दिया और आदेश दिया कि वही प्रांत उसे वेतन में दिया जाय। उसके जाने की शुभ साइत उसी दिन थी इसलिए उसने अपने देश जाने की छुट्टी ली और एक घोड़ा, एक हाथी, एक जड़ाऊ तलवार, एक जड़ाऊ खपवा, एक खिलअत तथा एक विशिष्ट कश्मीरी शाल उपहार में मिलने से प्रसन्न एवं सम्मानित हुआ। २१वीं को मुकर्रबखाँ ने अहमदाबाद जाने की छुट्टी ली। इसका मंसब पाँच हजारी २५०० सवार का था जिसे बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया और इसे एक खिलअत, एक नादिरी, मोतियों का एक तकमा, हमारे निजी घुड़साल के दो घोड़े, एक खास हाथी तथा एक जड़ाऊ तलवार दिए गए। इससे वह बड़ी प्रसन्नता तथा आनंद के साथ उक्त प्रांत को गया।

मेह्र महीने की ११वीं को कुँवर कर्ण का पुत्र जगतसिंह अपने देश से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। १६वीं को मिर्जा अली बेग अकबरशाही अवध प्रांत से आकर सेवा में उपस्थित हुआ, जो उसे जागीर में मिला था। इसने एक सहस्र रुपए भेंट किए और वह हाथी उपस्थित किया, जो उस प्रांत के एक जमींदार का था और जिसे लेलेने के लिए उसे आज्ञा भेज दी गई थी। २१वीं को गोलकुण्डा के शासक कुतुबुलमुल्क की भेंट का हमने निरीक्षण किया, जिसमें कुछ जड़ाऊ आभूषण थे। सैयद कासिम बारहा का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ६०० सवार का कर दिया। २२वीं शुक्रवार की संध्या को मिर्जा अली बेग[1] मर गया, जिसकी अवस्था पचहत्तर वर्ष से अधिक हो गई थी। इस

1—देखिए मुगल दरबार भाग २ पृ० २६६–७।

साम्राज्य के लिए इसने बड़ी सेवाएँ की थीं और इसका मंसब क्रमशः बढ़ते हुए चार हजारी हो गया था। इस वंश का यह एक प्रसिद्ध वीर था और उच्चाशय था। इसे कोई संतान या वंशज नहीं था। यह कविता की ओर भी रुचि रखता था। जिस दिन यह ख्वाजा निजामुद्दीन के पवित्र मकबरे में प्रार्थना करने गया उसीदिन उसकी मृत्यु हो गई थी इसलिए हमने उसे उसी पवित्र स्थान में गाड़ने की आज्ञा दे दी।

जब हमने बीजापुर के आदिलखाँ के राजदूतों को जाने की छुट्टी दी थी उस समय हमने इच्छा प्रगट की थी कि यदि उस प्रांत में कोई अच्छा पहलवान या प्रसिद्ध तलवरिया हो तो वे आदिलखाँ को उसे भेजने के लिये कह देंगे। कुछ समय के अनंतर जब वे राजदूत लौटे तब शेर अली नामक एक मुगल को जो बीजापुर में जन्मा था तथा जो मल्लयुद्ध का व्यवसायी एवं उस कला का विशेषज्ञ था, कुछ तलवरियों के साथ लिवा लाए। तलवरियों के कार्य तो साधारण थे पर शेर अली का हमने अपने दरबार के मल्लों तथा पहलवानों से मल्लयुद्ध कराया और इन में से कोई भी उसके जोड़ में नहीं आया। एक सहस्र रुपए, खिलअत तथा एक हाथी उसे पुरस्कार में दिया गया। इसका शरीर बहुत सुगठित, सुंदर तथा शक्तिमान था। इसे हमने अपनी सेवा में रख लिया और राजधानी का पहलवान पदवी दी। इसे जागीर तथा मंसब दिया और बहुत सी कृपाएँ कीं। २४वीं को दियानतखाँ, जो अब्दु-ल्लाखाँ बहादुर फीरोजजंग को बुलाने भेजा गया था, उसे लिवाकर आया तथा उपस्थित होकर उसने एक सौ मुहर भेंट दिया। उसीदिन रामदास का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। यह राजा राजसिंह का पुत्र था, जो एक राजपूत सर्दार था तथा दक्षिण में कार्य करते हुए मरा था। दोषी होने के कारण अब्दुल्लाखाँ ने बाबा खुर्रम

का अपना मध्यस्थ बनाया था और उसे प्रसन्न करने के लिए २६वीं को हमने अब्दुल्लाखाँ को अभिवादन करने के लिए आने की आज्ञा दे दी। वह हमारे सामने बड़ा लज्जित मुख बनाए उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर तथा एक सहस्र रुपए भेंट किए।

आदिलखाँ के राजदूतों के आने के पहले हमने निश्चय किया था कि बाबा खुर्रम को अग्गल के रूप में भेजकर हम भी दक्षिण जायँगे और इस महत्वपूर्ण कार्य को निपटावेंगे परंतु कुछ कारणों से यह टलता गया। इस कारण हमने आज्ञा दे दी थी कि दक्षिण के शासकों से संबंधित सभी कार्य शाहजादे ही के द्वारा हमारे सामने उपस्थित किए जाया करें। इसीदिन शाहजादा राजदूतों को लिवाकर आया और उनकी बातें हमारे सामने उपस्थित कीं। मुर्तजा खाँ की मृत्यु के अनंतर राजा मान तथा अन्य सहायक सर्दार दरबार चले आए थे। इसी दिन एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर हमने मा न को काँगड़ा दुर्ग की चढ़ाई का प्रधान सेनापति नियत किया। हमने सभी को उसके साथ जाने की आज्ञा दी और प्रत्येक को उसके पद तथा स्थिति के अनुसार पुरस्कार में घोड़ा, हाथी, खिलअत या धन देकर प्रसन्न करते हुए जाने की छुट्टी दी। कुछ दिन के अनंतर बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर हमने अब्दुल्ला खाँ को एक जड़ाऊ खंजर दिया क्योंकि वह अत्यंत दुखी तथा उदास था और आदेश दिया कि उसका मंसब जैसा था वही बहाल रहे तथा वह हमारे पुत्र की सेवा में दक्षिण में नियुक्त लोगों के साथ रहे।

२ री आबाँ को वजीर खाँ के मंसब को, जो बाबा पर्वेज की सेवा में था, बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। ४ थी को कुछ विचारों के कारण खुसरू को, जो अनीराय सिंहदलन की सुरक्षा में रखा गया था, आसफ खाँ को सौंप दिया। हमने उसे एक खास शाल दिया।

७ वीं को, जो १७ शव्वाल था, मुहम्मद रज़ा वेग नामक एक व्यक्ति सेवा में उपस्थित हुआ, जिसे ईरान के शाह ने प्रतिनिधि के रूप में भेजा था। कोर्निश तथा तस्लीम करने के अनंतर उस ने लाए हुए पत्र को उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि वह अपने साथ लाए हुए घोड़ों तथा अन्य भेंटों को हमारे सामने उपस्थित करे। भेजे हुए लिखित तथा मौखिक संदेश सभी मित्रता, भ्रातृत्व तथा सत्यता से भरे हुए थे। हमने इस राजदूत को एक जड़ाऊ ताज तथा खिलअत दिया। पत्र में अत्यधिक मित्रता तथा स्नेह प्रगट किया गया था. इसलिए उसकी पूरी प्रतिलिपि इस ग्रंथ में दे दी जाती है।[1]

रविवार, १८ शव्वाल, ८ वीं आबाँ को हमारे पुत्र बाबा खुर्रम का पड़ाव दक्षिण के प्रांतों की चढ़ाई के लिए अजमेर से आगे बढ़ा और यह निश्चय हुआ कि हमारा उक्त पुत्र अग्गल रूप में आगे चलेगा, जिस के पीछे शाही झंडे अनुगमन करेंगे। सोमवार १९ शव्वाल, ९ वीं आबाँ को तीन घड़ी दिन बीतने पर उसी प्रकार उसी ओर शुभ महल भी रवाना हो गया। १० वीं को राजा सूरजमल का मंसब, जो शाहजादे के साथ जाने को नियुक्त किया गया था, बढ़ाकर दो हजारी २००० सवार का कर दिया। १६ वीं आबाँ की रात्रि में प्रति दिन के अनुसार हम गुसुल खाने में थे। कुछ अमीर गण तथा सेवक और संयोग से फारस के शाह का राजदूत मुहम्मद रज़ा वेग उपस्थित थे। छ घड़ी बीतने पर एक उल्लू आकर महल के एक ऊँचे छत के ऊपर बैठ गया और वह कठिनाई से दिखलाई पड़ता था, यहाँ तक कि बहुत से मनुष्य उसे पहिचान भी न सके। हमने एक बंदूक मँगाकर उस ओर निशाना

---

1. सिवा शब्दाडंबर के कुछ नहीं है, इसलिए अनुवाद नहीं किया गया।

लगाया जिधर लोगों ने हमें बतलाया। अकाश के दंड के समान वह गोली उसे लगी और उस के टुकड़े टुकड़े कर दिए। उपस्थित लोग चिल्ला उठे और सभी के मुखों से आप से आप प्रशंसा के शब्द निकल पड़े। उसी रात्रि में अपने भाई शाह अब्बास के एलची से बातें करते हुए एकाएक वार्तालाप उसके बड़े पुत्र सफी मिर्जा को मरवा डालने के संबंध में चल पड़ा। हमने यह प्रश्न किया ही क्योंकि हमारे मस्तिष्क में यह कठिनाई बनी हुई थी। उसने बतलाया कि यदि उस समय वह न मार डाला गया होता तो वह शाह के जीवन पर अवश्य चोट करता। जब उसके चाल-व्यवहार से यह इच्छा प्रगट हो गई तब शाह ने शीघ्रता की और उसे मार डालने की आज्ञा दे दी। उसी दिन मिर्जा रुस्तम के पुत्र मिर्जा हसन का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। मोतमिद खाँ का मंसब, जो बाबा खुर्रम की सेना का बख्शी नियत किया गया था, एक हजारी २५० सवार का कर दिया। बाबा खुर्रम के बिदाई का दिन शुक्रवार २० वाँ आबाँ था। उस दिन के अंत में उसने अपने चुने हुए सशस्त्र तथा सन्नद्ध सैनिकों का दीवान - आम में प्रदर्शन किया। उक्त पुत्र पर जो विशिष्ट कृपाएँ की गई थीं उन में प्रथम शाह की पदवी थी, जो उस के नाम का अंश बना दिया गया। हमने आज्ञा दे दी कि उस का संबोधन अब से शाह सुलतान खुर्रम के नाम से किया जाय। हमने उसे खिलअत, जड़ाऊ चारकब जिस के किनारे तथा गले पर मोतियाँ टँकी थीं, जड़ाऊ जीन सहित एराकी घोड़ा, एक तुर्की घोड़ा, बंसी बदन नामक एक खास हाथी, अंग्रेजी चाल की एक गाड़ी उस के बैठने तथा यात्रा करने के लिए, खास परतले सहित एक जड़ाऊ तलवार जो अहमद नगर दुर्ग की चढ़ाई के समय ली गई थी तथा बहुत प्रसिद्ध थी और एक जड़ाऊ खंजर। वह बड़े उत्साह के साथ रवानः हुआ। ईश्वर में हमारा विश्वास है कि वह इस चढ़ाई में यश अर्जन करेगा।

साथ के प्रत्येक सर्दार तथा मंसबदार को उन की योग्यता तथा पद के अनुसार घोड़े तथा हाथी दिए। अपनी कमर से खोल कर एक निजी तलवार हमने अब्दुल्ला खाँ फीरोज़जंग को दिया। दियानत खाँ शाहजादे के साथ जाने के नियुक्त किया जा चुका था इस से उस के स्थान पर ख्वाजा कासिम कुलीज खाँ को अर्ज़ मुकर्रर नियत किया।

इसके पहले कातवाली कार्यालय के शाही कोष से चोरों का एक झुंड कुछ रुपए उठा ले गया था। कुछ दिनों के अनंतर उस झुंड के सात मनुष्य पकड़े गए जिस में उनका सर्दार नवल भी था और कुछ रुपए भी मिले। इन सब ने बड़े दुस्साहस का कार्य किया था इसलिए हमने इन्हें विशिष्ट दंड देने का निश्चय किया। इन सब को भिन्न भिन्न प्रकार के खास दंड दिए गए और उन के सर्दार नवल को हाथी के पैरों के नीचे डाल देने के लिए आज्ञा दी। उसने प्रार्थनापत्र दिया कि उसे हाथी से लड़ने की आज्ञा दी जाय। हमने यह आज्ञा दे दी। एक अत्यंत बिगड़ैल हाथी लाया गया। हमने आज्ञा दी कि उसे एक खंजर देकर हाथी के सामने कर दिया जाय। हाथी ने कई बार उसे गिरा दिया पर हर बार वह निडर तथा क्रोधी मनुष्य उठ खड़ा होता और अपने साथियों के दंडों को देख कर भी वह वीरता तथा दृढ़ता के साथ हाथी के सुंड पर खंजर से चोट करता था, जिस से अंत में हाथी उस पर चोट करने से हट गया। जब हमने उस का यह साहस तथा वीरता देखी तब हमने उसका इतिवृत्त जानने की आज्ञा दी। कुछ ही समय के अनंतर अपने ओछे तथा दुष्ट स्वभाव के कारण वह अपने देश तथा स्थान की इच्छा से भाग गया। इस से हमें बड़ा दुःख हुआ और हमने उस स्थान के जागीरदारों को आज्ञा दी कि उसे खोज कर कैद कर लें। संयोग से वह दूसरी बार पकड़ा गया और हमने उस अकृतज्ञ तथा नीचाशय को फाँसी देने की आज्ञा दे

दी। शेख मुस्लिहुद्दीन सादी की यह सूक्ति इस पर चरितार्थ होती है—

अंत में भेड़िया का बच्चा भेड़िया ही होता है। यद्यपि वह मनुष्य के साथ पालित हो।

मंगलवार[1] प्रथम जिल्कद: २१ आबाँ को दो प्रहर पाँच घड़ी दिन व्यतीत होने पर स्वस्थ अवस्था तथा शुद्ध कार्य से हम फिरंगी गाड़ी पर सवार हुए, जिसमें चार घोड़े जुते हुए थे और अजमेर नगर से कूच किया। हमने बहुत से सरदारों को गाड़ियों पर सवार होकर साथ चलने की आज्ञा दी और संध्या होते होते डेढ़ कोस चलकर देवराय ग्राम के पड़ाव पर उतरे। भारतीयों में यह प्रथा है कि यदि राजाओं तथा बड़े मनुष्यों की चढ़ाई पूर्वीय स्थान की ओर हो तो उन्हें दाँतवाले हाथी पर सवार होना चाहिए, यदि पश्चिम की ओर जाना हो तो एक वर्ण के घोड़े पर सवार होना चाहिए, यदि उत्तर की ओर जाना हो तो पालकी या सिंहासन पर सवार होना चाहिए और यदि दक्षिण की ओर जाना हो जैसे दक्खिन प्रांत की दिशा में तो रथ पर सवार होना चाहिए, जिसे बहल भी कहते हैं तथा जो एक प्रकार की गाड़ी है। हम अजमेर में पाँच दिन कम तीन वर्ष रहे। अजमेर नगर को लोग द्वितीय 'इक्लीम' (खंड) में मानते हैं जिसमें श्रद्धेय ख्वाजा मुईनुद्दीन का पवित्र रौजा है। यहाँ की वायु प्रायः सामान्य है। राजधानी आगरा इसके पूर्व ओर है, उत्तर की ओर दिल्ली सरकार है और दक्षिण में गुजरात प्रांत है। मुलतान तथा देपालपुर पश्चिम की ओर पड़ता है। इस प्रांत की भूमि बलुई है। यहाँ पानी कठिनाई से मिलता है और कृषि के लिए भूमि की तरी तथा वर्षा ही का आधार है। जाड़े

१—पाठा० शनिवार। १० नवंबर सन् १६१६ ई०।

की ऋतु एक सी रहती है और गर्मी आगरे से कम पड़ती है। इस प्रांत से युद्धकाल में छिआसी हजार सवार तथा तीन लाख चार हजार पैदल राजपूत सेना प्रस्तुत होती है। इस नगर में दो बड़ी झीलें हैं, जिनमें एक को विशाल तथा दूसरे को आनासागर कहते हैं। विशाल ताल टूटा फूटा है और इसके तट गिर गए हैं। इसी समय हमने इसके मरम्मत करने की आज्ञा दी है। जिस समय शाही झंडे वहाँ थे उस समय आनासागर बराबर जल तथा लहरों से भरा हुआ था। यह ताल डेढ़ कोस पाँच तनाव (के घेरे में) है। जब हम अजमेर में थे तब हम नौ बार श्रद्धेय ख्वाजा के रौजे में गए और पंद्रह बार पुष्कर देखने गए। अड़तीस बार हम चश्मए नूर गए थे। हम शेर का शिकार खेलने पचास बार गए। हमने पंद्रह शेर, एक चीता, एक जंगली बिल्ली, तिरपन नीलगाय, तैंतीस हरिण, नव्वे मृग, अस्सी जंगली सूअर तथा तीन सौ चालीस जल पक्षी मारे।

हमने देवराय में सात बार पड़ाव डाला था। इस बार पाँच नील गाय तथा बारह जल-पक्षी मारे। २९वीं को यहाँ से कूचकर दो तथा डेढ़ चौथाई कोस की दूरी पर दासावली ग्राम में पड़ाव डाला। इसी दिन हमने एक हाथी मातमिदखाँ को दिया। दूसरे दिन भी हम इसी ग्राम में रहे। इसी दिन हमने एक नीलगाय मारा और अपने दो बाज अपने पुत्र खुर्रम को भेजा। इस ग्राम से हमने ३ अजर को कूच किया और सवा दो कोस पर बाघल ग्राम में डेरा डाला। मार्ग में छ जल पक्षी आदि मारे गए। ४ को डेढ़ कोस चलने पर रामसर पहुँचे, जो नूरजहाँ बेगम का था और वहीं पड़ाव डाला गया। यहाँ आठ दिन ठहरे। खिदमतयारखाँ के स्थान पर यहीं हमने हिदायतुल्ला को मीर-तुजुक नियत किया। ५ को सात मृग, एक कुलंग तथा पंद्रह मछली मारी गई। इसके दूसरे दिन कुँअर कर्ण के पुत्र जगतसिंह को एक घोड़ा

तथा एक खिलअत मिला और उसने स्वदेश जाने की छुट्टी पाई। केशोदास लाला को भी एक घोड़ा और अल्लहदादखाँ अफगान को एक हाथी दिया। इसी दिन हमने एक हरिण, तीन मृग, सात मछली और दो जल पक्षी मारा। इसी दिन राजा श्यामसिंह के मरने का समाचार मिला जो बंगश की सेना में नियत था। ७वीं को तीन मृग, पाँच जलपक्षी और एक जलकौआ मारा। बृहस्पतिवार और शुक्रवार की संध्या को रामसर में जलसा तथा महफिल हुई क्योंकि यह नूरजहाँ बेगम की जागीर में था। भेंट में रत्न, जड़ाऊ आभूषण, अच्छे वस्त्र, सिले पर्दे तथा हर प्रकार के जवाहिरात हमारे सामने उपस्थित किए गए। रात्रि में सभी ओर और झील के मध्य में, जो बड़ी चौड़ी है, दीपक जलाए गए थे। बड़ा सुंदर भोज प्रस्तुत किया गया था। उक्त बृहस्पति-वार के अंत में सभी सर्दारों को बुलाकर हमने बहुतों के लिए प्याला देने का आदेश दिया। हम अपनी स्थल यात्राओं में भी कुछ नावें विजयी पड़ाव के साथ लिवा जाते हैं और केवटगण इन्हें गाड़ियों पर ले जाते हैं। इस जलसे के अनंतर हम इन नावों में बैठकर मछली मारने गए और थोड़े समय ही में दो सौ आठ बड़ी मछलियाँ एक जाल में फँस गई। इनमें आधी रोहू जाति की थी। रात्रि में हमने इन्हें अपने सामने सेवकों में वितरित करा दिया।

१३वीं अजर मास को हमने रामसर से कूच किया और मार्ग में चार कोस तक अहेर खेलते हुए बालूदा (नामूदा) ग्राम में पहुँचकर पड़ाव डाला। यहाँ हम दो दिन ठहरे। १६वीं को साढ़े तीन कोस चलकर हम निहाल (सहाल) ग्राम में उतरे। १८वीं को सवा कोस चले। इस दिन हमने एक हाथी ईरान के शाह के एलची मुहम्मद रजा बेग को दिया। बड़प्पन तथा सौभाग्य के खेमों का पड़ाव बौसा ग्राम हुआ। २०वीं को हम देवगाँव पड़ाव पर गए और मार्ग में तीन कोस

तक अहेर खेलते रहे। हम इस स्थान में दो दिन रहे और दिन के अंत में अहेर खेलने गए। इस पड़ाव पर एक विचित्र बात दिखलाई पड़ी। शाही झंडों के इस पड़ाव पर पहुँचने के पहले एक खोजा उस स्थान के एक बड़े तालाब के पास गया और उसने दो बच्चे सारसों को पकड़ा। रात्रि में जब हम उस पड़ाव में आकर ठहरे, दो बड़े सारस इस प्रकार चिल्लाते हुए गुसलखाने के पास आए, जो तालाब के किनारे पर ही था, मानों उनपर कोई अत्याचार कर रहा है। वे निर्भयता के साथ चिल्लाते हुए आगे बढ़ आए। हमारे ध्यान में आया कि अवश्य इन्हें कष्ट दिया गया है और संभव है कि इनके बच्चे पकड़ लिए गए हैं। जाँच किए जाने पर सारस के बच्चों को पकड़नेवाला खोजा उनको हमारे सामने लाया। जब उन सारसों ने बच्चों की चिल्लाहट सुनी तो वे निधड़क उनकी ओर टूट पड़े और उन्हें भूखा समझकर उनमें से हर एक एक-एक बच्चे के मुख में खाना डालने लगा तथा बहुत सा रोते चिल्लाते रहे। उन बच्चों को दोनों ने अपने बीच में रखकर तथा पंख फैलाकर स्नेह प्रदर्शित करते हुए अपने घोसले का मार्ग लिया।

२३वीं को पौने चार कोस चलकर हम बहासू ग्राम के पड़ाव में उतरे। यहाँ दो दिन ठहरे और प्रतिदिन अहेर खेलने गए। २६वीं को शाही झंडे आगे बढ़े और काकल ग्राम के बाहर ठहरे। यह मार्ग दो कोस का था। २७ वीं को मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदीउज्जमाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ७५० सवार का निश्चित किया। २६वीं को पौने तीन कोस चलकर लासा ग्राम में पड़ाव पड़ा, जो बोड़ा परगना के पास है। यह दिन कुर्बान के उत्सव का है। हमने आज्ञा दी कि लोग इसे मनावें। अजमेर से यात्रा आरंभ करने के दिन से उक्त महीने के अंत तक अर्थात् ३० आजर तक सड़सठ नीलगाय, हरिण आदि और सैंतीस जलपक्षी आदि मारे गए। लासा से २री दे को कूचकर तीन कोस दस जरीब

तक चलते तथा अहेर खेलते हुए कानड़ा ग्राम के पास पड़ाव डाला। ४थी को सवा तीन कोस चलकर हम सोरठ ग्राम पहुँचे। ६ वीं को साढ़े चार कोस चलकर बरोरा ग्राम के पास पहुँचे। इस पड़ाव पर ठहर कर ७ वीं को पचास जलपक्षी तथा चौदह जलकौए मारे। दूसरे दिन भी यहीं ठहरे। इस दिन भी सत्ताइस जलपक्षी शिकार हुए। ६ वीं को चार तथा एक अष्टमांश कोस चले और अहेर खेलते तथा शिकार मारते हुए खुशताल के पड़ाव पर उतरे। इसी पड़ाव पर मोतमिद खाँ के यहाँ से सूचना आई कि जब शाह खुर्रम का पड़ाव राणा के राज्य में पड़ा तब यद्यपि पहले से कोई ऐसा निश्चय न होने पर भी विजयी सेना की ख्याति तथा प्रभाव ने उसके धैर्य तथा दृढ़ता के स्तंभों में ऐसा कंपन उत्पन्न कर दिया कि वह दूदपुर के पड़ाव पर आया और अभिवादन किया, जो उसकी जागीर की सीमा पर है। यहाँ तक कि सेवा की सभी प्रथा तथा कर्तव्य को उसने पूरा किया और उनमें से सूक्ष्मतम अंश का भी उल्लंघन नहीं किया। शाह खुर्रम ने भी उसके साथ अच्छा व्यवहार किया और उसे खिलअत, चारकब, जड़ाऊ तलवार, जड़ाऊ खपवा, ईरानी तथा तुर्की घोड़े और हाथी भेंट में देकर प्रसन्न किया तथा आदर के साथ बिदा किया। उसके पुत्रों तथा संबंधियों पर भी खिलअत देकर कृपा की। उसकी भेंट में से, जिसमें पाँच हाथी, सत्ताईस घोड़े और रत्नों तथा जड़ाऊ आभूषणों की एक थाली थी, तीन घोड़े लेकर बाकी सब उसी को लौटा दिया। यह निश्चय हुआ कि उसका पुत्र कर्ण पंद्रह सौ सवारों के साथ इस चढ़ाई पर बाबा खुर्रम के साथ जायगा।

१० वीं को राजा महासिंह के पुत्रगण अपनी जागीर तथा देश से आकर रणथंभौर के पास सेवा में उपस्थित हुए और तीन हाथी तथा नौ घोड़े भेंट किए। उनमें से प्रत्येक को उनकी स्थिति के अनुसार मंसब में उन्नति दी गई। उक्त दुर्ग के पास जब शाही झंडों का पड़ाव

पड़ा तब हमने उस दुर्ग में ँद कुछ कैदियों को छुड़वा दिया। इस स्थान पर हम दो दिन तक ठहरे और दोनों दिन अहेर खेलने गए। अड़तीस जलपक्षी तथा जल-कुक्कुट पकड़े गए। १२ वीं को यहाँ से कूचकर चार कोस चलने के अनंतर कोयलः में ठहरे। मार्ग में चौदह जलपक्षी तथा एक हरिण का शिकार किया। १४ वीं को पौने चार कोस चलकर एकतोरा ग्राम के पास हम ठहर गए। मार्ग में एक नीलगाव तथा बारह बगुले आदि मारे। उसी दिन आगा फाजिल को, जो लाहौर में एतमादुद्दौला का प्रतिनिधि नियत था, फाजिल खाँ की पदवी दी। इस पड़ाव पर लोगों ने एक तालाब के किनारे दौलतखाना खड़ा किया था, जो बहुत ही प्रकाशित तथा आनंददायक था। इस स्थान की रम्यता के कारण हम यहाँ दो दिन तक ठहरे और प्रति दिन संध्या को जल-पक्षियों का अहेर खेलने गए। यहीं महाबत खाँ का छोटा पुत्र बहरवर नामक अपने पिता की जागीर रणथंभौर से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। यह दो हाथी लाया था, जो हमारे निजी हथसाल में रखे गए। हमने अमानत खाँ के पुत्र सर्फा को खाँ की पदवी दी और उसका मंसब बढ़ाकर गुजरात प्रांत का बख्शी तथा वाकेआवनीस नियत किया। १७ वीं को साढ़े चार कोस चलकर लहाया (ल्यासा) ग्राम में ठहरे। यहाँ ठहरने के समय में एक जलपक्षी तथा तेईस दुर्राज मारे। खानदौराँ के साथ लश्कर खाँ का मनोमालिन्य हो जाने के कारण हमने उसे दरबार बुला लिया था इसलिए उसके स्थान पर आबिद खाँ को बख्शी तथा वाकेआनवीस नियुक्त कर वहाँ भेज दिया। १९ वीं को ढाई कोस चलकर हम कुराक ग्राम के पास पड़ाव में उतरे, जो चंबल नदी के तट पर स्थित है। इस स्थान की रमणीकता तथा जल-वायु की उत्तमता के कारण यहाँ तीन दिन ठहरे। प्रति दिन नाव पर सवार होकर नदी की सैर करने तथा जलपक्षी का शिकार खेलने जाते थे। २२ वीं को कूच आरंभ हुआ

और मार्ग में शिकार खेलते हुए साढ़े चार कोस चलकर विजयी पड़ाव सुलतानपुर तथा चीलामाला ग्रामों में पड़ा। इसी ठहरने के दिन हमने मीरान सद्रजहाँ को पाँच सहस्र रुपए दिए और उसे उसकी जागीर पर जाने की छुट्टी दी। शेख पीर को एक सहस्र रुपए दिए। २५ वीं को साढ़े तीन कोस अहेर खेलते हुए चलकर मानपुर (बासूर) ग्राम में पड़ाव डाला। निश्चित नियमों के अनुसार एक दिन की यात्रा तथा टिकान हुआ और २७ वीं को अहेर करते और साढ़े चार कोस चलते हुए चारदूहा ग्राम में ठहरे। यहाँ दो दिन रुके। इस दै के महीने में चार सौ सोलह जीवों की हत्या हुई, जिनमें सत्तानवे दुर्राज, एक सौ बानवे जलकुक्कुट, एक सारस, सात बगुले, एक सौ अठारह जलपक्षी तथा एक खरगोश था।

१ली बहमन, १२मुहर्रम सन् १०२६हि०,(२०-१-१६१७)को महलवालियों के साथ नाव में बैठकर हमने एक मंजिल कूच किया और जब एक घड़ी दिन बच गया था तब हम रुपेहरा पड़ाव पर पहुँचे, जो चार कोस पंद्रह जरीब पर था। हमने पाँच दुर्राज मारे। उसी दिन हमने कैकना के हाथ से इक्कीस अमीरों को जाड़े के खिलअत भेजे, जो दक्षिण के कार्य पर नियत थे और उसे आदेश दिया कि इन खिलअतों की प्राप्ति के धन्यवाद में उनसे दस सहस्र रुपए ले आये। यह पड़ाव हराभरा तथा रमणीक था। ३री को कूच हुआ और पहले दिन की तरह नाव में बैठकर दो तथा एक अष्टमांश कोस चल काखादास ग्राम में पहुँचे जो विजयी पड़ाव के ठहरने का स्थान था। मार्ग में अहेर करते जाते थे कि एक दुर्राज एक झाड़ी में उड़कर गिर पड़ा। बहुत ढूँढने पर वह दिखलाई दिया और हमने एक दल को उस झाड़ी को घेर लेने तथा उसे पकड़ने की आज्ञा दी एवं स्वयं उस ओर चला। इसी बीच दूसरा दुर्राज उड़ा जिसे हमने बाज के द्वारा पकड़वा लिया। इसके बाद ही वह आया और दुर्राज को हमारे सामने रख दिया। हमने आज्ञा

दिया कि इसको बाज को खाने को दो और दूसरे को, जिसे हमने पकड़ा था तथा जो अभी बच्चा था, सुरक्षित रखें। परंतु इस आज्ञा के पहुँचने के पहले प्रधान अहेरी ने उस दुर्राज को बाज को खिला दिया था। कुछ देर के अनंतर अहेरी ने प्रार्थना की कि यदि इसे मार न डाला जायगा तो यह मर जायगा। तब हमने उसे मार डालने की आज्ञा दे दी। ज्यों ही इसने तलवार उसके गर्दन पर रखी त्योंही उसने कुछ हिलकर तलवार से अपने को हटा लिया और उड़ गया। हम ज्योंही नाव से उतर कर घोड़े पर सवार हुए त्योंही एक गौरैया पक्षी हवा के वेग से एक तीर की नोक से जा टकराई जिसे एक अपने हाथ में लिए था और जो हमारी अर्दली में था और तुरंत ही गिरकर मर गई। हम भाग्य की इस चाल को देखकर चकित हो गए। एक ओर उसने दुर्राज की, जिसका काल नहीं आया था, थोड़े ही समय में तीन घातों से रक्षा की और दूसरी ओर गौरैया को, जिसका काल आ गया था, कर्म रूपी तीर पर पटककर नाश के हाथों में दे दिया।

> सांसारिक तलवार अपने स्थान से भले ही चले।
> पर बिना ईश्वरी आदेश के एक नस भी न काटेगी॥

जाड़े के खिलअत क़रा यसावल के हाथ काबुल के अमीरों को भी भेजे गए। स्थान की रमणीकता तथा अच्छे जल-वायु के कारण यहीं ठहर गए। इसी दिन नाद अली मैदानी के काबुल में मर जाने का समाचार मिला। हमने उसके पुत्रों को मंसब दिया और इब्राहीम खाँ फीरोज़ जंग की प्रार्थना पर रावत शंकर का मंसब पाँच सदी १००० सवार से बढ़ा दिया। ६ वीं को कूच आरंभ हुआ और चांदा घाट दर्रे से होते साढ़े चार कोस चलकर अम्हार ग्राम में पड़ाव डाला। यह घाटी हरी भरी तथा रमणीक थी और इसमें अच्छे वृक्ष भी थे। इस

पड़ाव तक, जो अजमेर प्रांत की सीमा पर है, चौरासी कोस चलना पड़ा था। यह स्थान भी बहुत आकर्षक था। यहाँ नूरजहाँ बेगम ने बंदूक से एक 'क़ारशः' मारा, जो डील तथा रंग की सुंदरता में ऐसा था कि उसके समान कभी नहीं देखा गया था। हमने उसे तौलने की आज्ञा दी और वह उन्नास तोले पाँच माशे था। उक्त ग्राम से मालवा प्रांत आरंभ होता है, जो द्वितीय 'इक्लीम' में है। इस प्रांत की लंबाई गढ़ा देश की सीमा से बाँसवाला तक दो सौ पैंतालीस कोस है और इसकी चौड़ाई चंदेरी पर्गने से नंदरबार पर्गने तक दो सौ तीस कोस है। इसके पूर्व में बांधव प्रांत, उत्तर में नरवर दुर्ग, दक्षिण में बगलाना प्रांत और पश्चिम में गुजरात तथा अजमेर प्रांत हैं। मालवा एक बड़ा प्रांत है जिसमें जल बहुत है और जिसकी जलवायु बहुत अच्छी है। इस प्रांत में नालों, नहरों तथा सोतों के सिवा पाँच नदियाँ हैं जिनका नाम गोदावरी, भीमा, काली सिंध, नीरा और नर्मदा* है। यहाँ की वायु में समता है। इस प्रांत की भूमि नीची है पर कुछ अंश ऊँचे हैं। धार के जिले में, जो मालवा के प्रसिद्ध स्थानों में से एक है, अंगूर वर्ष में दो बार उत्पन्न होते हैं, मीन राशि के आरंभ में तथा सिंह राशि के आरंभ में, पर पहले के अधिक मीठे होते हैं। यहाँ के कृषक तथा कारीगर बिना शस्त्र के नहीं रहते। इस प्रांत की आय दो करोड़ सैंतालीस लाख दाम है। आवश्यकता पड़ने पर इस प्रांत से ६३०० सवार, ४७०३०० पैदल सेना और १०० हाथी तैयार हो जाते हैं।

८ वीं को साढ़े तीन कोस चल कर खैराबाद में पड़ाव पड़ा। मार्ग में चौदह दुर्राज तथा तीन बगले मारे गए और तीन कोस अहेर खेलते चल कर सिधारा ग्राम में पड़ाव डाला गया। ११ वीं को

---

* जहाँगीर ने भ्रम से कई नाम अशुद्ध लिख दिए हैं।

पड़ाव पड़ा हुआ था और इस दिन संध्या को सवार होकर अहेर खेलने निकले और एक नील गाय मारा। १२ वीं को साढ़े चार कोस चल कर बछयारी ग्राम में ठहरे। इसी दिन राणा अमर सिंह ने अंजीर के कई टोकरे भेजे। वास्तव में ये फल बड़े अच्छे थे और हिंदुस्थान में ऐसे स्वादिष्ट अंजीर हमने नहीं देखे थे। परंतु इसे थोड़ा ही खाया जा सकता है और बहुत खाने से हानि पहुँचती है। १४ वीं को कूच किया और चार तथा एक अष्टमांश कोस चल कर बलबली ग्राम में ठहरे। जाम्बा राजा ने, जो उस ओर का प्रभावशाली भूम्याधिकारी है, भेंट स्वरूप दो हाथी भेजे जो हमारे सामने उपस्थित किए गए। इसी पड़ाव पर हेरात के पास कारिज़ के बहुत से खरबूजे लाए गए। खानआलम ने भी पचास ऊँट भेजे। पूर्व के वर्षों में कभी इतनी अधिकता से खबूँजे नहीं लाए गए थे। एक थाल में वे बहुत प्रकार के फल लाए। कारिज़, बदख्शाँ तथा काबुल के खबूँजे, समरकंद तथा बदख्शाँ के अंगूर, समरकद, कश्मीर, काबुल तथा जलालाबाद के सेब, अंतिम स्थान काबुल के अधीनस्थ है और यूरोपीय बंदरों से आए हुए फल अनन्नास थे, जिसके पौधे आगरे में लगाए गए थे। प्रति वर्ष उद्यानों से सहस्रों एकत्र किए जाते हैं, जो खालसा-शरीफा के हैं। कँवला संतरे के ऐसा रूप में होता है पर उस से छोटा और अधिक स्वादिष्ट होता है। ये बंगाल प्रांत में खूब होते हैं। ऐसी कृपाओं के लिए किस भाषा में धन्यवाद दिया जा सकता है ? हमारे श्रद्धेय पिता को फल की ओर बहुत रुचि थी विशेष कर खबूँजा, अनार तथा अंगूर पर। उन के समय में कारिज़ के खबूँजे, जो अत्युत्तम प्रकार का होता है, यज्द के अनार, जो संसार भर में प्रसिद्ध हैं और समरकंद के अंगूर भारतवर्ष में नहीं लगाए गए थे। जब कभी हम इन फलों को देखते हैं तब हमें बड़ा दुःख होता है। यदि ये फल उस समय आए होते तो वे भी इनका स्वाद लेते।

१५ वीं को जब पड़ाव पड़ा हुआ था तभी फरेदूँ खाँ बर्लास के पुत्र मीर अली की मृत्यु का समाचार आया, जो इस परिवार का एक विश्वासपात्र अमीरज़ादा था। १६ वीं को कूच हुआ और साढ़े चार कोस चल कर गिरि गाँव के पास पड़ाव डाला गया। मार्ग में चरों ने समाचार दिया कि यहाँ पास में एक शेर है। हम उस का अहेर खेलने गए और एक ही गोली में उसे समाप्त कर दिया। शेर बब्र की वीरता सिद्ध है इसलिए हमने उस की अँतड़ियों को देखना चाहा। उन के निकाले जाने पर देखा गया कि अन्य पशुओं के विरुद्ध, जिनका पित्ताशय यकृत के बाहर होता है, इस शेर का पित्ताशय यकृत के भीतर था। हमने विचार किया कि शेर की वीरता का यह कारण हो सकता है। १८ वीं को दो तथा तीन-चौथाई कोस चलकर अमरोया ग्राम में ठहरे। १६ वीं को ठहरने के दिन हम अहेर खेलने गए। दो कोस चलने पर एक गाँव मिला जो बहुत ही सुंदर तथा आनंददायक था। एक ही उद्यान में एक सौ आम के वृक्ष थे और हमने इतने बड़े, हरे तथा सुंदर वृक्ष बहुत कम देखे थे। इसी बाग़ में हमने एक वट वृक्ष देखा जो बहुत ही बड़ा था। हमने उस की लंबाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई गज़ों में नापने की आज्ञा दी। इस की ऊँचाई भूमि से सबसे ऊँची शाख तक चौहत्तर हाथ थी, तने का घेरा साढ़े चौआलीस हाथ था और उस की छाया का घेरा एक सौ साढ़े पचहत्तर गज़ था। असाधारण होने से इसका यहाँ उल्लेख किया गया है।

२० वीं को कूच हुआ और मार्ग में एक नीलगाव को गोली से मारा। २१वीं को पड़ाव था इससे दिन के अंत में अहेर खेलने निकले। लौटने के अनंतर हम एतमादुद्दौला के स्थान पर गए जहाँ ख्वाजा खिज्र उपनाम खिज्री का उत्सव था। एक प्रहर रात्रि बीतने तक हम वहाँ रहे और भूख मालूम होने पर शाही निवास-स्थान को लौट आए। इस दिन हमने एतमादुद्दौला को अंतरंग बनाकर सम्मानित किया कि

हरमवालियों को उसके सामने मुख न छिपाने का आदेश दिया। इस कृपा से हमने उस पर अक्षय सम्मान प्रदान किया। २२ वीं को यात्रा आरंभ करने की आज्ञा दी और साढ़े तीन कोस चलने पर बूलघरी ग्राम में पड़ाव पड़ा। मार्ग में दो नीलगाव मारे गए। २३ वीं तीर को ठहरने के दिन हमने गोली से एक नीलगाव मारा। २४ वीं को पाँच कोस चलकर कासिमखेड़ा ग्राम में पड़ाव हुआ। मार्ग में एक श्वेत पशु मारा गया, जो 'कोताह पाया' से मिलता जुलता था। इसे चार सींगें थीं, जिनमें दो उसके आँखों के किनारे पर दो अंगुल ऊँची थीं और दो अन्य सींगें चार अंगुल हटकर गर्दन की गाँठ के पास थीं। ये चार अँगुल ऊँची थीं। भारतवासी इसे दुधाधारित कहते हैं। नर को चार सींगें होती हैं पर मादा को एक भी नहीं। यह कहा जाता था कि इस प्रकार के हरिण में पित्ताशय नहीं होता पर जब उसकी अँतड़ियाँ देखी गईं तो पित्ताशय स्पष्टतः दिखलाई पड़ा और इससे ज्ञात हो गया कि वह कथन निराधार है। २४ वीं के ठहरने के दिन संध्या होते हम अहेर खेलने निकले और अपनी बंदूक से एक नीलगाय मारा। कुलीज खाँ का भतीजा बालजू का मंसब एक हजारी ८४० सवार का था और अवध में उसे जागीर मिली थी, उसे बढ़ाकर दो हजारी १२०० सवार का कर दिया तथा कुलीज खाँ की पदवी से सम्मानित कर बंगाल प्रांत में उसे नियत कर दिया। २६ वीं को कूच हुआ और चार तथा तीन चौथाई कोस चलकर दीह काजियान ग्राम में पड़ाव डाला गया, जो उज्जैन के पास है। यहाँ बहुत से आम के पेड़ अंकुरित हो चुके थे। एक झील के किनारे खेमे गाड़े गए थे और बहुत आकर्षक स्थान बनाया गया था। इसी पड़ाव पर गजनी खाँ के पुत्र पहाड़ को प्राणदंड दिया गया था। इसके पिता की मृत्यु पर इस अभागे के पालन की दृष्टि से इसे जालौर देश तथा दुर्ग दिया था, जो इस के पूर्वजों का स्थान था। यह उस समय अल्पावस्था का

था इस से इस की माता इसे कुव्यवहार से रोकती रहती थी। यह सदा का कलमुहाँ अपने कुछ साथियों के साथ एक रात्रि घर में आया और अपनी निजी माँ को अपने हाथ से मार डाला। यह समाचार हमें मिला और हमने उसे पकड़ लाने की आज्ञा दी। इस का दोष सिद्ध हो जाने पर हमने इसे मार डालने की आज्ञा दे दी।

इसी पड़ाव पर एक हरिद्रा वृक्ष देखने में आया, जिसका रूप तथा गुण कुछ विचित्र ज्ञात हुआ। मूलतः इस का एक तना था, जो छ गज़ उठने पर दो शाखों में हो गया, जिन में एक दस गज का और दूसरा साढ़े नौ गज़ का था। दोनों शाखों की दूरी साढ़े चार गज थी। भूमि से शाखों तथा पत्तियों के अंत तक बड़ी शाख सोलह गज़ और दूसरी शाख साढ़े पंद्रह गज़ थी। जहाँ से शाखें तथा पत्तियाँ आरंभ होती थीं वहाँ से वृक्ष के सिरे तक ढाई गज़ था और घेरा पौने तीस गज़ था। हमने आज्ञा दी कि इस पेड़ के चारों ओर तीन गज़ ऊँचा चबूतरा बनावें। इस कारण कि तना बहुत सीधा और सुंदर था हमने अपने चित्रकारों को आदेश दिया कि जहाँगीरनामा के चित्रण में इसे भी स्थान दें। २७ वीं को कूच हुआ और दो तथा एक अष्टमांश कोस चल कर हिंदुवाल ग्राम में ठहरे। मार्ग में एक नीलगाय मारा गया। २८ वीं को दो कोस चलकर कालियादह ग्राम में पड़ाव पड़ा। कालियादह एक प्रासाद है, जिसे मालवा के शासक सुलतान महमूद खिलजी के पुत्र गियासुद्दीन के पुत्र नासिरुद्दीन ने बनवाया था। अपने राज्यकाल में इसने इसे उज्जैन के पास बनवाया था, जो मालवा प्रांत के प्रसिद्धतम नगरों में से एक है। कहते हैं कि गर्मी से यह इतना व्याकुल हो गया था कि वह जल ही में अपना समय व्यतीत करता था। इसने इस प्रासाद को नदी के बीच में बनवाया और उस के जल को नहरों में बाँट कर इसके चारों ओर, भीतर तथा बाहर जल ले आया

सन् १०२६ रक़म गौरधन शबीह
गोसाईं जदरूप

था और यथास्थान छोटे तथा बड़े फव्वारे लगवाए थे। यह बहुत ही सुखद तथा आनंददायक स्थान है और भारत के प्रसिद्ध स्थानों में से एक है। इस स्थान में ठहरने का निश्चय होने पर हमने राजगीरों को इसे साफ करने के लिए भेज दिया था। इसको रमणीकता के कारण हम यहाँ तीन दिन तक ठहरे। यहीं शुजाअत खाँ अपनी जागीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उज्जैन प्राचीन नगरों में से एक है और हिंदुओं के सात तीर्थस्थानों में परिगणित है। राजा विक्रमाजीत, जिसने हिंदुस्थान में आकाश तथा नक्षत्रों के देखने की प्रथा चलाई, इसी नगर तथा देश में रहता था। उसके निरीक्षण के समय से अब तक जब १०२६ हिजरी चल रहा है और हमारे जलूस का ग्यारहवाँ वर्ष है, १६७५ वर्ष बीत चुके हैं। भारत के ज्योतिषियों की गणनाएँ उसी के निरीक्षण के आधार पर होती हैं। यह नगर सिप्रा नदी के किनारे पर स्थित है। हिंदुओं का विश्वास है कि किसी वर्ष में एक बार अनिश्चित समय पर इस नदी का जल दूध हो जाता है। हमारे श्रद्धेय पिता के राज्य काल में जब उन्हों ने अबुलफजल को हमारे भाई शाह मुराद के कार्यों की ठीक व्यवस्था करने के लिए भेजा तब उसने इस नगर से एक सूचना भेजी थी कि बहुत संख्या में हिंदुओं तथा मुसलमानों ने साक्ष्य दिया है कि कुछ दिन पहले रात्रि में यह नदी दूध की हो गई थी, जिससे उस रात्रि में जिन लोगों ने उसमें से जल लिया था उन के बर्तन सवेरे दूध से भरे पाए गए थे। यह बात फैल गई थी इस लिए यहाँ लिख दी गई पर हमारी बुद्धि इसे किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकती। सत्य बात ईश्वर ही जानता है।

२ री इस्फंदार्मुज को हम कालियादह से नाव में सवार हुए और अगले पड़ाव पर गए। हमने अनेक बार सुना था कि एक तपस्वी

सन्यासी जदरूप नामक बहुत वर्ष हुए कि उज्जैन से निकल कर जंगल के एक कोने में रहता है और सच्चे ईश्वर के अर्चन में लगा रहता है। हमें उसके परिचय प्राप्त करने की बड़ी आकांक्षा थी और जब हम राजधानी आगरे में थे उस समय इच्छा थी कि उसे बुला कर देखें। पर अंत में हमने सोचा कि इस से उसे बहुत कष्ट होगा इसलिए उसे नहीं बुला भेजा। जब हम उस नगर के पास पहुँचे तब हम नाव से उतर पड़े और अष्टमांश कोस पैदल चल कर उसे देखने गए। जिस स्थान को उसने निवास के लिए चुना था वह पहाड़ी के एक ओर गुफा सी थी, जिसे खोद कर बनाया था तथा एक द्वार उस में लगाया था। गुफा का द्वार मेहराब सा था, जिस की ऊँचाई एक गज़ तथा चौड़ाई दस गिरह थी और इस द्वार से उस कोठरी तक की दूरी जिसमें वस्तुतः वह रहता था, दो गज़ पाँच गिरह थी तथा चौड़ाई सवा ग्यारह गिरह। भूमि से छत तक ऊँचाई एक गज़ तीन गिरह थी। जिस छिद्र से उस स्थान तक जाना होता है वह साढ़े पाँच गिरह ऊँचा तथा साढ़े तीन गिरह चौड़ा था। केवल कृश मनुष्य सैकड़ों कठिनाई से उस में जा सकता था। छेद की चौड़ाई-लंबाई ऐसी ही थी। इस में कोई चटाई या फूस नहीं था। इसी छोटे तथा अँधेरे छेद में वह एकांत में अपना समय व्यतीत करता था। जाड़े के ठंढे दिनों में भी यह आग नहीं बालता था, यद्यपि यह पूरा नंगा रहता था सिवा वस्त्र के एक टुकड़े के जो आगे पीछे रहते थे। मुल्ला रूमी ने दर्वेश की भाषा को इस प्रकार पद्य में ढाला है—

दिन में हमारा वस्त्र सूर्य है और रात्रि में हमारी चटाई तथा कंबल चंद्र की किरणें हैं।

यह दिन में दो बार एक जलाशय में स्नान करते हैं, जो इन के स्थान के पास है और एक बार उज्जैन नगर में जाते हैं। यह उन

सात ब्राह्मण परिवारों में से प्रति दिन केवल किसी तीन के गृह पर जाते हैं, जिन के घर स्त्री-बच्चे हैं और जिन्हें धार्मिक तथा संतोषी समझते थे। इन के गृह पर जो कुछ भोजन वे अपने लिए प्रस्तुत करते थे उस में से केवल पाँच ग्रास हाथ पर लेकर निगल जाते थे, जिस से उस के स्वाद का आनंद न मिल सके। साथ ही यह भी नियम था कि इन तीन घरों में कोई घटना नहीं घटी हो, कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ हो तथा न कोई रजस्वला स्त्री गृह में हो। इनकी जीविका का यही साधन था, जैसा लिखा गया है। यह मनुष्यों से मिलना नहीं चाहते परंतु ख्याति अधिक हो जाने से लोग इन के दर्शन के लिए आया करते थे। यह ज्ञान से हीन नहीं हैं क्योंकि यह वेदांत शास्त्र के पूर्ण पंडित हैं, जो सूफी शास्त्र ही है। हम छ घड़ी तक इन से बातचीत करते रहे और यह इतनी अच्छी प्रकार बोले कि हमें बहुत प्रभावित किया। हमारा सत्संग भी इन्हें पसंद आया। जिस समय हमारे श्रद्धेय पिता ने खानदेश के अंतर्गत आसीर गढ़ को विजय किया था और वहाँ से आगरे लौट रहे थे तब उन्होंने इन्हें इसी स्थान पर देखा था और सर्वदा इन्हें ध्यान में रखा।

भारतवर्ष के विद्वानों ने ब्राह्मण जाति के लिए, जो हिंदुओं में सबसे अधिक प्रतिष्ठित जाति है, चार प्रकार की जीवन-चर्या रखी है और इनके जीवन को चार कालों में विभाजित किया है। इन चार कालों को वे चार आश्रम कहते हैं। ब्राह्मण के गृह में जो पुत्र होता है उसे वे सात वर्ष तक ब्राह्मण नहीं कहते और उस समय तक कुछ नहीं करते। जब वह आठ वर्ष का होता है तब वे सब ब्राह्मणों को एकत्र करते हैं। वे मूँज की एक डोरी बनाते हैं, जिसे मौंजी कहते हैं और जो ढाई गज़ लंबा होता है, और उस पर प्रार्थना करते तथा मंत्र कई बार पढ़ते हैं। इस के अनंतर इसे तेहरा कर किसी विश्वनीय पुरुष से

बालक की कमर में बँधवाते हैं। सूत का उपवीत बनाकर इस के दाहिने कंधे पर डाल देते हैं। इसके अनंतर उस के हाथ में एक गज से कुछ अधिक ऊँचा दंड देकर कि उस से वह हानिदायक वस्तुओं से अपनी रक्षा कर सके और जल पीने के लिये एक ताम्रपात्र देकर उसे किसी विद्वान ब्राह्मण को सौंप देते हैं, जिसके गृह पर बारह वर्ष तक रह कर वेदों की शिक्षा ग्रहण करे जिन्हें वे ईश्वरी ग्रंथ समझते हैं। इस दिन से वे इसे ब्राह्मण कहने लगते हैं। इस काल में यह आवश्यक है कि यह शारीरिक सुखों से दूर रहे। दोपहर बीत जाने पर वह अन्य ब्राह्मणों के घर भिक्षा ग्रहण करने जाता है और जो कुछ मिलता है वह सब अपने गुरु के पास ले आता है तथा उनकी आज्ञा से उसे खाता है। वस्त्र के संबंध में उस के पास गुप्तेंद्रियों के छिपाने के लिए लँगोटी के सिवा केवल दो-तीन गज सूती वस्त्र कंधे पर रखने को होता है और कुछ भी नहीं। यह काल ब्रह्मचर्य कहलाता है जिस में केवल ईश्वरी ग्रंथों का शिक्षण-मनन होता है। इस काल के बीतने पर अपने गुरु तथा पिता की आज्ञा से यह विवाह करता है और पंचेंद्रियों के कुल सांसारिक सुखों का आनंद लेता रहता है जब तक कि उसका पुत्र सोलह वर्ष की अवस्था का नहीं हो जाता। यदि उसे पुत्र ही नहीं होता तब वह अड़तालीस वर्ष की अवस्था तक सामाजिक जीवन बिताता है। इस काल में यह गृहस्थ कहलाता है। इसके अनंतर वह अपने परिवारवालों, संबंधियों, परिचितों तथा मित्रों से अलग होकर और सुख की सभी सामग्री त्यागकर एकांतवास करने के लिए अपने सांसारिक स्थान को छोड़कर वन में कालयापन करने चला जाता है। इस अवस्था को वानप्रस्थ कहते हैं अर्थात् वन में निवास करना। हिंदुओं का यह विचार है कि कोई शुभ कार्य पत्नी के बिना साथ रहे पूरा नहीं हो सकता और इस काल में भी बहुत कुछ अर्चन-पूजन करना रहता है इसलिए वह स्त्री को भी वन में साथ

ले जाता है। यदि वह गुर्विणी हुई तो प्रसव होने तथा संतान के पाँच वर्ष का होने तक वह वन में जाना रोक देता है। इसके उपरांत वह बालक को बड़े पुत्र को या संबंधी को सौंप देता है और अपनी इच्छा पूरी करता है। इसी प्रकार पत्नी के रजस्वला होने पर उसके शुद्ध होने तक जाना रोक देता है। इसके अनंतर वह अपनी स्त्री से कोई संबंध नहीं रखता और उसके समागम से अपने को दूषित नहीं करता तथा रात्रि में अलग सोता है। यहाँ यह बारह वर्ष व्यतीत करता है और वन में अपसे आप उत्पन्न कद-मूल के आहार से जीवन यापन करता है। यह जनेऊ धारण किए रहता है और अग्निहोत्र करता है। यह अपने नखों को काटने, सिर के बाल बनाने में या डाढ़ी-मोछ को ठीक करने में समय व्यर्थ नहीं बिताता। जब वह यह काल इस प्रकार व्यतीत कर लेता है तब वह अपने गृह लौट आता है और अपनी स्त्री को अपनी संतानों, भाइओं तथा जामाताओं को सौंपकर अपने दीक्षागुरु को प्रणाम करने जाता है। उसके सामने अग्नि में अपना सब कुछ जनेऊ, सिर के बाल आदि डालकर जला देता है और गुरु से कहता है कि हमारा जो कुछ सबध तपस्या, अर्चा-पूजा, इच्छा आदि से था सबका हृदय से उन्मूलन कर दिया है। इसके अनंतर वह हृदय तथा इच्छाओं का मार्ग बंद कर देता है और सदा ईश्वर के ध्यान में रहता है तथा सिवा उस सत्य स्रष्टा के अन्य सब कुछ भूल जाता है। यदि वह किसी शास्त्र की बात करता है तो वेदांत की, जिसके आशय को बाबा फिगानी ने इस प्रकार शेर में बाँधा है—

इस गृह में केवल एक ही दीप है, जिसकी किरणों में
जहाँ कहीं हम देखते हैं वहीं एक झुंड है।

वे इस अवस्था को संन्यास कहते हैं अर्थात् सबका त्याग। जो इस अवस्था को प्राप्त हो जाता है उसे संन्यासी कहते हैं।

जदरूप से बातचीत करने के अनंतर हम हाथी पर सवार हुए और उज्जैन नगर में होकर चले और मार्ग में दोनों ओर छोटे सिक्के साढ़े तीन सहस्र के लुटाए। पौने दो कोस चलकर हम दाऊदखेड़ा में रुके जहाँ शाही खेमे लगे थे। तीसरे दिन जब ठहरे हुए थे हम दोपहर के बाद जदरूप से मिलने की इच्छा से उसके पास गए और छ घड़ी उनका सत्संग किया। इस दिन भी उन्होंने बहुत सी अच्छी बातें कहीं और संध्या होते-होते हम अपने स्थान पर चले आए। ४थी को हमने सवा तीन कोस चलकर जड़ाव ग्राम के पारानिया उद्यान में ठहरे। यह भी बड़ा सुंदर वृक्षों से भरा हुआ ठहरने का स्थान है। ६ वीं को कूच किया और पौने पाँच कोस चलकर देवालपुर भेरिया के झील के किनारे पड़ाव डाला। इस स्थान की रमणीकता और इस झील की सुंदरता से हम चार दिन तक इस पड़ाव पर रुके और प्रति दिन संध्या होते-होते नाव पर बैठ कर मुर्गाबी तथा अन्य जलपक्षियों का अहेर खेलते। इसी पड़ाव पर लोग अहमदनगर से फखरी अँगूर ले आए। यद्यपि ये काबुल के फखरी अंगूर के इतने बड़े नहीं थे पर मधुरता में किसी प्रकार कम नहीं थे।

अपने पुत्र बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदीउज्जमाँ का मंसब डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया। ११ वीं को कूच आरंभ कर तथा सवा तीन कोस चलकर दौलताबाद पर्गना में ठहरे। १२ वीं को, जिस दिन ठहरे हुए थे, हम अहेर खेलने सवार हुए। शेखूपुरा ग्राम में, जो उसी नाम के पर्गना के अंतर्गत है, हमने एक बड़ा भारी तथा विशाल वट वृक्ष देखा, जिसके तने का घेरा साढ़े अठारह गज था और जो ऊँचाई में जड़ से शाखों के सिरे तक एक सौ सवा अठाइस हाथ था। इसकी शाखाओं की छाया दो सौ साढ़े तीन हाथ के घेरे में पड़ती थी। इसकी एक शाखा की

लंबाई, जिसपर हाथी के दाँतों का चिन्ह बनाया गया था, चालीस गज थी। जिस समय हमारे श्रद्धेय पिता इस मार्ग से गए थे उस समय उन्होंने अपने हाथ का चिन्ह भूमि से पौने चार गज ऊँचाई पर स्मारक रूप में बनवाया था। हमने आज्ञा दी कि दूसरी श्रोर पर आठ गज की ऊँचाई पर हमारे हाथ का चिन्ह बना दें। इस कारण कि ये दोनों चिन्ह समय बीतते-बीतते मिट न जायँ, ये संगमर्मर के टुकड़ों पर खोदे गए और वृक्ष के तनों में जड़ दिए गए। हमने उस वृक्ष के चारों ओर चबूतरा तथा स्थान बना देने की आज्ञा दे दी।

हम जब शाहजादा थे उसी समय हमने मीर जियाउद्दीन कजवीनी को, जो सैफी सैयदों में से एक था और जिसे अपने राज्यकाल में मुस्तफा खाँ की पदवी देकर सम्मानित किया था, मालदा पर्गना, जो बंगाल का एक प्रसिद्ध पर्गना है, पुत्र-पौत्रादि तक के लिए अलतमगा में देने का वचन दिया था इसलिए इसी पड़ाव पर हमने वह भारी पुरस्कार इसे प्रदान किया। १३वीं को कूच आरंभ हुआ। पड़ाव का साथ छोड़कर कुछ बेगमों, अंतरंग मित्रों तथा सेवकों के साथ देश देखने एवं अहेर खेलने के विचार से हम हासिलपुर की ओर बढ़े और जब कि पड़ाव नालचा के पास डाला गया तब हम साँगौर ग्राम में ठहरे। इस ग्राम के सौंदर्य तथा माधुर्य का क्या कहना है? यहाँ आम के बहुत से वृक्ष थे और यहाँ की भूमि हरियाली से भी भरी तथा रमणीक थी। यहाँ की हरियाली तथा रमणीकता के कारण हम यहाँ तीन दिन तक ठहरे। हमने यह ग्राम केशवदास मारू से लेकर कमालखाँ शिकारी को दिया और आज्ञा दी कि इसे अब कमालपुर पुकारा करें। यहीं रहते हुए शिवरात्रि पड़ी। बहुत से जोगी इकट्ठे हुए। इस रात्रि में जो उत्सव होते हैं वे पूर्ण रूप से हुए और इस दल के विद्वानों से हमने बातचीत भी किया। इन्हीं दिनों में

हमने तीन नीलगाव गोली से मारे। इसी स्थान में राजा मान के मारे जाने का समाचार मिला। हमने उसे काँगड़ा दुर्ग पर भेजी गई सेना का अध्यक्ष नियत किया था। जब वह लाहौर पहुँचा तब उसने सुना कि पंजाब के पार्वत्य प्रांत के एक भूम्याधिकारी संग्राम ने उसके राज्य पर आक्रमण किया है और उसके कुछ भाग पर अधिकार भी कर लिया है। इसे निकाल बाहर करना विशेष महत्त्व का कार्य समझ कर वह उस ओर गया। संग्राम में इसका सामना करने का सामर्थ्य नहीं था इसलिए वह इसके अधिकृत देश को छोड़कर दुर्गम पहाड़ों तथा स्थानों में चला गया। राजा मान ने उसका वहाँ पीछा किया और भारी घमंड के कारण आगे बढ़ने तथा पीछे लौटने का उपाय विचार न कर उसके पास थोड़ी सेना के साथ पहुँच गया। जब संग्राम ने देख लिया कि उसके भागने का मार्ग नहीं रह गया तब इस शेर के अनुसार

आवश्यकता के समय जब भागना शक्य नहीं है।
तब हाथ तेज तलवार की धार पकड़ लेता है॥

युद्ध हुआ और भाग्य के अनुसार एक गोली राजा मान को लगी तथा वह मृत्यु-मुख में चला गया। इसके सैनिक परास्त हो गए और बहुत से मारे गए। बचे हुए घायल अपने घोड़े शस्त्र आदि छोड़कर सैकड़ों भय के साथ अर्धमृत अवस्था में बच कर निकल आये।

१७वीं को हम साँगौर से चले और तीन कोस चलकर पुनः हासिलपुर ग्राम में आए। मार्ग में एक नीलगाव मारा गया। मालवा प्रांत में यह ग्राम प्रसिद्ध स्थानों में से एक है। यहाँ बहुत से अंगूर तथा असंख्य आम के वृक्ष हैं। इसके चारों ओर नदियाँ बहती हैं। जब हम वहाँ पहुँचे तब विलायत की ऋतु के विरुद्ध यहाँ बहुत अंगूर हुए थे

और इतने अधिक तथा सस्ते थे कि सब से छोटे लोग भी मन चाहा ले सकते थे। पौधों में फूल आ गए थे और अनेक रंग प्रदर्शित कर रहे थे। संक्षेप में ऐसे रमणीक ग्राम कम हैं। तीन दिन हम यहाँ और ठहरे। बंदूक से हमने तीन नीलगाव मारे। २१वीं को हासिलपुर से चलकर दो कूच में हम बड़े पड़ाव में पहुँच कर मिल गए। मार्ग में एक नीलगाव मारा गया। रविवार २२वीं को नालचा के पास से कूचकर हम एक झील के किनारे उतरे जो मांडू दुर्ग के नीचे है। उसी दिन शिकारियों ने समाचार दिया कि तीन कोस के भीतर शेर का चिन्ह मिला है। यद्यपि आदित्यवार का दिन था और रविवार तथा बृहस्पतिवार दो दिन हम गोली नहीं चलाते तब भी हमने विचार किया कि यह हिंसक पशु है इसलिए इसे मार डालना ही चाहिए। हम उसकी ओर चले और जब हम वहाँ पहुँचे तब वह एक वृक्ष की छाया में बैठा हुआ था। हाथी की पीठ पर से उसके आधे खुले मुख को देखकर हमने उसी में गोली मारी। संयोग से वह उसके मुख में घुस गई और उसके गले तथा मस्तिष्क में फँस गई परंतु उसका काम एक ही गोली से समाप्त हो गया। इसके अनंतर हमारे साथ के लोगों ने बहुत देखा कि शेर किस स्थान पर घायल हुआ पर कुछ पता नहीं लगा क्योंकि उसके किसी अंग पर गोली के घाव का चिन्ह नहीं था। अंत में हमने उसके मुख में देखने की आज्ञा दी तब इससे प्रगट हुआ कि गोली उसके मुख में घुस गई थी और उसी से वह मारा गया था। मिर्जा रुस्तम एक नर भेड़िए को मार कर ले आया। हमने देखना चाहा कि इसका पित्ताशय भी शेर के समान यकृत के भीतर है या अन्य पशुओं के समान बाहर ही है। परीक्षा करने पर ज्ञात हुआ कि इसका भी पित्ताशय यकृत के भीतर ही है।

सोमवार २३वीं को जब दिन एक प्रहर व्यतीत हो चुका था तब शुभ नक्षत्र तथा अच्छी साइत में हम हाथी पर सवार होकर मांडू दुर्ग की

ओर चले। जब एक प्रहर तीन घड़ी दिन बीत चुका था तब हम उस प्रासाद में पहुँचे जो शाही निवास के लिए प्रस्तुत किया गया था। मार्ग में हमने पंद्रह सौ रुपए लुटाए। अजमेर से मांडू तक एक सौ उनसठ कोस, छिआलीस कूच तथा अठत्तर पड़ाव करते हुए चार महीने दो दिन में पहुँचे। इन छिआलीस कूचों में हमारे सभी पड़ाव जलाशय, धारा तथा बड़ी नदी के किनारों ही पर पड़े और सभी स्थान ऐसे रमणीक स्थलों में पड़े जो वृक्षों तथा पोस्ता के पुष्पित पौधों से भरे थे तथा कोई दिन ऐसा नहीं गया कि यात्रा करते हुए या ठहरते हुए अहेर न खेला हो। घोड़े या हाथी पर सवार होकर सारा मार्ग हमने चारों ओर देखते हुए तथा अहेर खेलते हुए बिताया और यात्रा की किसी प्रकार की कठिनाई नहीं अनुभव किया। यह कहा जा सकता है कि मानों एक उद्यान से दूसरे उद्यान में परिवर्तन होता रहा। इन अहेरों में हमारे साथ आसफखाँ, मिर्जा रुस्तम, मीरमीरान, अनीराय, हिदायतुल्ला, राजा सारंगदेव, सैयद कासू और खवासखाँ बराबर रहे। इन स्थानों में शाही झंडों के पहुँचने के पहले हमने अब्दुल करीम मेमार को यहाँ भेज दिया था कि मांडू के पुराने शासकों की इमारतों की मरम्मत करा दे। जिस काल तक अजमेर में पड़ाव पड़ा हुआ था उस बीच में उसने मरम्मत के योग्य स्थलों का जीर्णोद्धार करा दिया और बहुतों को पूरा नया बनवाया। संक्षेप में इसने एक प्रासाद ऐसा तैयार कर दिया था जिसके समान सुंदरता तथा रमणीकता में अन्यत्र कहीं नहीं बना होगा। प्रायः तीन लाख रुपए अर्थात् दो सहस्र ईरानी तूमान इस कार्य में व्यय हो गए। इस प्रकार के भव्य प्रासाद सभी बड़े नगरों में होने चाहिएँ जो शाही निवास के योग्य हों। यह दुर्ग एक ऐसी पहाड़ी के ऊपर बना हुआ है जिसका घेरा दस कोस में है। वर्षाकाल में यहाँ की वायु की सुन्दरता तथा दुर्ग की रमणीकता में कोई स्थान इसके समान नहीं है। कल्बुल्असद अर्थात् सिंह राशि के

प्रथम चरण की ऋतु में रात्रि में इतना ठंढा रहता है कि बिना लिहाफ के कोई रह नहीं सकता और दिन में पंखे की आवश्यकता नहीं रहती।

कहते हैं कि राजा विक्रमाजीत के समय के पहले जयसिंह देव नाम के कोई राजा थे, जिनके समय में एक मनुष्य घास लाने के लिए खेतों में गया था। जब वह घास काट रहा था तभी उसके हाथ की खुरपी सोने के समान पीली दिखलाई पड़ने लगी। जब उसने देखा कि उसकी खुरपी बदल गई है तब वह उसे मदन नामक लोहार के पास ठीक कराने के लिए ले गया। लोहार जान गया कि खुरपी सोने की हो गई है। इसके पहले वह सुन चुका था कि इस देश में पारस है जिसके स्पर्श से लोहा तथा ताँबा सोना हो जाता है। उसने घसिआरे को अपने साथ लिया और उस स्थान पर जाकर पारस ले आया। इसके अनंतर वह वैसा अमूल्य रत्न राजा के पास ले गया। राजा ने इस प्रस्तर खंड के द्वारा बहुत सा सोना बनाया और इसके कुछ अंश को व्यय कर यह दुर्ग बीस वर्ष में बनवाया। उस लोहार के इच्छानुसार राजा ने बहुत से पत्थरों को घन के रूप में कटवाकर उस दुर्ग के दीवाल के निर्माण में लगवाया था। अपने जीवन के अंतिम काल में जब उसका हृदय सांसारिक विषयों से विरक्त हो चुका तब राजा ने नर्मदा नदी के तट पर उत्सव किया, जो हिंदुओं में पवित्र पूज्य तीर्थ मानी जाती है। ब्राह्मणों को एकत्र कर राजा ने सबको धन तथा रत्न दिए और एक ब्राह्मण को जो बहुत दिनों से उसके पास रहता था, वही पारस पत्थर दे दिया। अज्ञानता के कारण इसने क्रुद्ध होकर इस पत्थर को नदी में फेंक दिया परंतु जब बाद में इसे इस पत्थर के गुण ज्ञात हुए तब यह जन्म भर के लिए दुखी हो गया। इसने बहुतेरा पत्थर खोजवाया पर पता नहीं चला। ये बातें किसी पुस्तक में नहीं

लिखी हैं केवल सुनी हुई हैं परंतु हमारी बुद्धि इसे ग्राह्य नहीं समझती। यह सब भ्रांति कल्पना मात्र है। मांडू मालवा प्रांत का एक प्रसिद्ध सरकार है, जिसकी आय तेरह लाख नव्वे हजार दाम है। यह बहुत दिनों तक इस देश के राजाओं की राजधानी रही। यहाँ बहुत से प्रासाद हैं जिनमें पहले के राजाओं के चिह्न वर्तमान है और जो अभी तक खंडहर नहीं हुए हैं।

२४वीं को हम पुराने राजाओं के प्रासादों को देखने के लिए निकले और पहले जामेअ मस्जिद गए, जिसे सुलतान होशंग गोरी ने बनवाया था। एक बड़ी ऊँची इमारत देखने में आई जो सब कटे हुए पत्थर की बनी थी और यद्यपि उसे बने एक सौ अस्सी वर्ष बीत चुके थे पर ऐसा ज्ञात होता था कि अभी उसके निर्माताओं ने पूरा कर हाथ हटाया है। इसके अनंतर हम उस इमारत में गए जिसमें खिलजी सुलतानों के मकबरे थे। सुलतान गियासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन की कब्र भी वहाँ थी, जिसका मुख सर्वदा के लिए काला हो चुका था। यह बात प्रसिद्ध है कि इस दुष्ट ने अपने पिता गियासुद्दीन को मारकर राजगद्दी ली थी, जिसकी अवस्था अस्सी वर्ष की थी। इसने दो बार उसे विष दिया; जिसके प्रभाव को जहरमुहरे के द्वारा दूर किया गया था और जो उसके बाँह पर बाँधा हुआ था। तीसरी बार इसने शर्बत के प्याले में विष घोलकर अपने हाथ से अपने पिता को यह कह कर दिया कि इसे पीना ही होगा। उसके पिता ने यह समझ लिया कि वह किसलिए यह प्रयत्न कर रहा है और अपने हाथ के जहरमुहरे को खोलकर उसके आगे फेंक दिया। इसके अनंतर बड़ी नम्रता तथा प्रार्थना के साथ खुदा के सिंहासन की ओर मुख करके, जो कुछ भी नम्रता नहीं चाहता, कहा कि ऐ खुदा, मेरी अवस्था अस्सी वर्ष की हुई और हमने यह काल ऐसी प्रसन्नता

तथा सुख में व्यतीत किया है जैसी किसी बादशाह ने न किया होगा। अब यह हमारा अंतकाल है और हम आशा करते हैं कि तू नसीर को हमारे घात के लिए न पकड़ेगा और हमारी मृत्यु भाग्य-लिखित मानकर इसे दंड न देगा।' इतना कहने के अनंतर उसने शर्बत को एक ही बार में गले के नीचे उतार दिया और थोड़ी ही देर में प्राण छोड़ दिया। उसके इस कथन का तात्पर्य यही था कि उसने अपने राज्यकाल में ऐसा सुख उठाया था जैसा किसी अन्य बादशाह ने नहीं उठाया था। जब वह अड़तालीसवें वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा तब इसने अपने मित्रों तथा पार्श्ववर्तियों से कहा कि हमने अपने पिता की सेवा में तीस वर्ष युद्धक्षेत्र में बिताया है और सैनिक के कर्तव्य में हमने कभी कोई चूक नहीं की है परंतु अब हमारे राज्य करने का अवसर आया है तथा हमें नए देश के जीतने की इच्छा नहीं है इसलिए हम सुख तथा आराम से बचे जीवन को व्यतीत करना चाहते हैं।' कहते हैं कि इसने अपने हरम में पंद्रह सहस्र स्त्रियाँ एकत्र कर ली थीं। इसने इनका एक नगर ही बसा लिया था जिनमें सभी वर्ग, जाति तथा काम की स्त्रियाँ थीं, कारीगर, पदाधिकारी, काजी, कोतवाल तथा अन्य सभी जो एक नगर के शासन के लिए आवश्यक थे। जहाँ कहीं इसने किसी सुंदरी कुमारी का पता पाया कि उसे पूरा प्रयत्न कर प्राप्त किए बिना यह चैन नहीं लेता था। यह उन कुमारियोंको अनेक प्रकार के गुण तथा कला सिखलाता था और इसे अहेर खेलने की भी बड़ी रुचि थी। इसने एक मृग-उद्यान बनवाया था और बहुत प्रकार के जानवर संग्रह किए थे। अपनी स्त्रियों के साथ यह उसमें अहेर खेलता था। संक्षेप में, अपने राज्यकाल के इन बत्तीस वर्षों में अपने विचार के अनुसार यह किसी शत्रु के विरुद्ध नहीं गया और सुख तथा आराम से कालयापन करता रहा। इसी प्रकार इसके राज्य पर भी किसी ने आक्रमण नहीं किया। यह भी कहा जाता है कि

जब शेरखाँ अफगान अपने राज्यकाल में नसीरुद्दीन के कब्र पर आया तो उसने भी अपने हिंसक स्वभाव के होते हुए नसीरुद्दीन के दुष्ट व्यवहार के कारण आज्ञा दी कि उसको कब्र के सिरे को लकड़ियों से पीटें। जब हम भी उसको कब्र पर गए तब हमनें भी उसको कई ठोकरें लगाई और साथ के सेवकों को भी ठोकरें मारने का आदेश दिया। इससे भी संतुष्ट न होकर हमने आज्ञा दी कि इस कब्र को खोदकर तथा इसकी ठठरी को निकाल कर आग में डाल दें। तब ध्यान आया कि अग्नि प्रकाश है और अल्ला के प्रकाश को ऐसी अपवित्र ठठरी को जलाकर अशुद्ध करना उचित नहीं है। साथ ही इस प्रकार जला देने से दूसरे लोक में इसके दंड में कुछ कमी न हो जाय हमने आज्ञा दी कि उसके गले सड़े शव को नर्मदा में फेंक दें। जीवित अवस्था में यह अपने दिन जल ही में व्यतीत किया करता था क्योंकि इसकी प्रकृति पर उष्मा ने बहुत प्रभाव डाल रखा था। यह बात विशेष ज्ञात है कि एक बार मदिरोन्मत्त होने के कारण यह कालियदह के ताल में कूद पड़ा था जो बहुत गहरा है। हरम के कुछ सेवकों ने बचाने का बहुत प्रयत्न किया और इसके बालों को पकड़कर जल से बाहर निकाल लाए। जब इसे चेतना हुई तब इसने कुल घटना सुनी। यह सुनकर कि उसके सिर के बालों को पकड़ कर उसे खींच लाए थे वह अत्यंत क्रुद्ध हुआ और उन सेवकों के हाथ काट डालने की आज्ञा दे दी। दूसरी बार जब ऐसी घटना घटी तब किसी ने भी उसे निकालने का साहस नहीं किया और वह डूब गया। संयोग से मृत्यु के एक सौ दस वर्ष बाद उसकी सड़ी हुई लाश जल में मिल गई।

२८ वीं को मांडू की इमारतों को बहुत प्रयत्न करके पूरा कर देने के उपलक्ष में हमने अब्दुल् करीम का मंसब बढ़ा कर आठ सदी

४०० सवार का कर दिया और उसे मामूर खाँ की पदवी दी। जिस दिन शाही झंडे मांडू के दुर्ग में पहुँचे उसी दिन हमारा पुत्र उच्च भाग्यशाली सुलतान खुर्रम विजयी सेना के साथ बुर्हानपुर नगर में पहुँचा, जो खानदेश प्रांत के सूबेदार का स्थान है।

कुछ दिनों के अनंतर अफजल खाँ तथा रायरायान के यहाँ से प्रर्थनापत्र आया, जिन्हें अजमेर से जाते समय हमारे पुत्र ने आदिल खाँ के राजदूत के साथ जाने की आज्ञा दी थी। जब हम लोगों के आने का समाचार आदिल खाँ को मिला तब वह शाहजादे के आज्ञापत्र तथा नालकी के स्वागत को सात कोस आगे आया और दरबार के प्रथानुसार अभिवादन आदि के कुल कार्य पूरे किए। इस प्रकार के नियमों में उस ने बाल बराबर भी कमी नहीं की। उसी भेंट के समय उस ने बड़ी राजभक्ति प्रगट की तथा वचन दिया कि साम्राज्य के जिन प्रांतों पर अभागे अंबर ने अधिकार कर लिया था वे सब लौटा देंगे और यह भी स्वीकार किया है कि अपने राजदूतों के हाथ योग्य भेंट भी दरबार में भजेंगे। इस प्रकार कहकर वह इन राजदूतों को उन के ठहरने के स्थान पर लिवा गया। उसी दिन उस ने अंबर के पास किसी को भेज कर सब आवश्यक संदेश कहला दिया। हमें यह समाचार अफजल खाँ तथा रायरायान की सूचना से ज्ञात हुआ।

अजमेर से यात्रारंभ से सोमवार उक्त महीने (इसफंदार मुज़) की २३ वीं तक चार महीने में दो शेर, सत्ताईस नील गाय, छ चीतल, साठ हरिण, तेईस खरगोश और लोमड़ी तथा बारह सौ जल-पक्षी एवं अन्य जीव मारे गए। इन्हीं रात्रियों में हमने अपने पहले के अहेरों का और इस कार्य में अपनी विशेष रुचि की कहानियाँ उन लोगों से कहीं जो खिलाफत के सिंहासन के नीचे खड़े थे। हमारा

विचार हुआ कि हम अपनी समझदारी की अवस्था से अब तक का अपने अहेर का लेखा ठीक करावें। इस पर हमने अपने वाकेआनवीसों, प्रधान अहेर लेखकों, शिकारियों तथा अहेर के कार्य में लगे अन्य सेवकों को आज्ञा दी कि जाँच कर बतलावें कि अहेर में कितने जीव मारे गए। हमारे १२ वें वर्ष के आरंभ से अर्थात् सन् ९८८ हि० (१५८० ई०) से इस वर्ष के अंत तक, जो हमारे जुलूस का ११ वाँ वर्ष और अवस्था का ४० वाँ चांद्र वर्ष है, २८५३२ जीव हमारे सामने मारे गए। इन में १७१६७ पशुओं को हमने अपनी बंदूक या अन्य के द्वारा मारा था। इन में ८६ शेर, नौ भालू, चीता लोमड़ी, ऊदबिलाव तथा हुँशार, ८८९ नील गाय, ३४ खाक जो एक प्रकार के मृग नील गाय के इतने बड़े होते हैं, १६७० नर मादा हरिण, चिकारा, चीतल, पहाड़ी बकरे आदि, २१५ मेढ़ा तथा लाल हरिण, ६४ भेड़िए, ३६ जंगली भैंसे, ९० सूअर, २६ राँग, २२ पहाड़ी भेड़, ३२ अर्गली, ६ जंगली गर्दभ तथा २३ खरगोश। पक्षियों की संख्या १३९६२ जिन में १०३४८ कबूतर, १ लग्घड, २ गिद्ध, २३ चील, ३९ उल्लू, १२ गालिबाज, ५ चील, ४१ गौरैया, २५ फाख्ता, ३० उल्लू, १५० बगुला, बत्तक, सारस आदि, ३२७६ कौए। जलजंतुओं में दस मगर-मच्छ थे।

बारहवाँ जलूसी वर्ष

सोमवार उक्त महीने (इसफंदारमुज) को ३० वीं को, १२ रबीउल् अव्वल सन् १०२६ हि० (मार्च सन् १६१७ ई० , जब एक घड़ी दिन बचा था तब सूर्य मीन राशि से सुख के भवन मेष राशि में गया, जो उसके आदर तथा सौभाग्य का स्थान है। उसी संक्रमण काल में, जो

शुभ साइत है, हम राजसिंहासन पर बैठे। हमने आदेश दिया था कि जैसा होता आया है उसी प्रकार दीवान-आम को अच्छे वस्त्र आदि से सजावें। यद्यपि दरबार के बहुत से अमीर तथा सर्दार हमारे पुत्र खुर्रम के साथ गए हुए थे तब भी ऐसा उत्सव हुआ जो पहले वर्षों के उत्सव से घट कर नहीं हुआ। मंगलवार[1] की भेंटों को हमने आनंदखाँ को बख्श दिया। उसी दिन जो १२वें वर्ष के फरवरदीन की पहली तिथि होती है, शाह खुर्रम के यहाँ से प्रार्थनापत्र आया कि नौरोज का उत्सव पहले वर्षों के समान ही समारोह के साथ मनाया गया पर आने जाने तथा सेवा की असुविधा के कारण वार्षिक भेंट बाद में भेजी जायगी। हमारे पुत्र का यह व्यवहार बहुत पसंद किया गया। अपने निमाज के समय अपने प्रिय पुत्र को ध्यान में रखते हुए हमने अल्लाह के तख्त से उसके दोनों लोक की भलाई के लिए प्रार्थना किया और आज्ञा दी कि इस नौरोज को कोई भेंट न दे।

अधिकतर मनुष्यों की प्रकृति तथा शरीर पर तंबाखू कुप्रभाव डालती है इसलिए हमने आदेश निकाला कि कोई धूम्रपान न करे। हमारे भाई शाह अब्बास भी इसके दुर्गुणों को जान गए थे और आज्ञा दी थी कि ईरान में कोई धूम्रपान न करे। ईरान को भेजा गया राजदूत खानआलम निरंतर धूम्रपान करने का आदी हो गया था इसलिए वह प्रायः पिया करता था। ईरान के राजदूत यादगार अली सुलतान ने यह सूचना शाह अब्बास को दी कि खानआलम बिना

१—पाठा० शनिवार। यह ठीक ज्ञात होता है क्योंकि यज्दजुर्दी वर्ष में अंतिम महीना ३५ दिन का होता है और अंतिम पाँच दिन खमसः कहलाते हैं। इस प्रकार सोमवार के छठे दिन १ फरवरदीन को शनिवार होता है।

तंबाखू के एक क्षण भी नहीं रह सकता इस पर शाह ने यह शैर उत्तर में लिख भेजा।

मित्र का एलची तंबाखू का प्रदर्शन करना चाहता है।
राजभक्ति के दीपक से हम तंबाखू का बाजार प्रकाशित करते हैं॥

खानआलम ने उत्तर में यह शैर लिखकर भेजा—

मैं क्षुद्र तंबाखू की सूचना पाकर अत्यंत दुखी था।
न्यायशील शाह की कृपा से तंबाखू का बाजार चालू हो गया॥

उक्त महीने की ३री को बंगाल के दीवान हुसेन बेग ने आकर देहली चूमी और नर-मादा बारह हाथी भेंट किए। बंगाल के बख्शी ताहिर पर, जिस पर कई दोष लगाए गए थे, हमारी सेवा में उपस्थित होने की कृपा हुई और उसने इकीस हाथियों की भेंट हमारे सामने प्रदर्शित की। इनमें से बारह हमने पसंद किए और बाकी उसे लौटा दिए। इसी दिन मदिरा का जलसा हुआ और हमने सेवा-कार्य में उपस्थित अधिकतर सेवकों को स्वयं मदिरा पीने को दिया तथा उन्हें राजभक्ति की मदिरा से उन्मत्त कर दिया। ४थी को अहेरियों ने सूचना दी कि सकर तालाब के पास एक शेर का उन्हें पता मिला है, जो दुर्ग के भीतर है और यह मालवा के शासकों के प्रसिद्ध निर्माण-कार्यों में एक है। हम तुरंत सवार हुए और शिकार की ओर चले। ज्योंही शेर निकला त्योंही उसने अहदियों तथा साथवालों पर आक्रमण कर दिया और उनमें से दस-बारह को घायल कर दिया। अंत में हमने अपनी बंदूक की तीन गोलियों से उसे समाप्त कर दिया और ईश्वर के सेवकों से उसके कष्ट को दूर कर दिया।

८ वीं को मीर मीरान का मंसब, जो एक हजारी ४०० सवार का था, डेढ़ हजारी ५०० सवार का नियत कर दिया। ९वीं को अपने पुत्र खुर्रम की प्रार्थना पर खानजहाँ का मंसब एक हजारी १००० सवार

से बढ़ा दिया, जो छ हजारी ६००० सवार का हो गया, याकूब खाँ का मंसब, जो डेढ हजारी १००० सवार का था, बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया, बहलोल खाँ मियाना के मंसब में पाँच सदी ३०० सवार बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया और मिर्जा शरफुद्दीन काशगरी का मंसब, जिस ने तथा जिस के पुत्र ने दक्षिण में बड़ी वीरता दिखलाई थी, बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया। १० वीं फरवरदीन, २२ रबीउल् अव्वल सन् १०२६ हि० को हमारा चांद्र तुलादान हुआ। इसी दिन हमने अपने निजी तबेले के दो एराकी घोड़े तथा खिलअत अपने पुत्र खुर्रम को दिए और बहराम, बेग के हाथ भेजा। हमने एतबार खाँ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ३००० सवार का कर दिया। ११ वीं को हुसेन बेग तब्रेजी, जिसे ईरान के शासक ने गोलकुंडा के शासक के पास राजदूत के रूप में भेजा था और पारसीकों के साथ फिरंगियों का झगड़ा हो जाने से उस का मार्ग (समुद्री) बंद हो गया था, गोलकुंडा के शासक के राजदूत के साथ सेवा में उपस्थित हुआ। उस ने दो घोड़े तथा गुजरात और दक्षिण के वस्त्रों के कई तौकूज् अर्थात् नौ नौ थान भेंट किए। उसी दिन हमने अपने तबेले से एक एराकी घोड़ा खानजहाँ को उपहार दिया। १५ वीं को राजा भाऊ सिंह के मंसब को एक हजारी जात बढ़ा कर पाँच हजारी ३००० सवार का कर दिया। १७ वीं को मिर्जा रुस्तम के मंसब में ५०० सवार बढ़ाए जिस से उस का मंसब पाँच हजारी १००० सवार का हो गया। सादिक खाँ का मंसब बढ़ा कर डेढ़ हजारी ७०० सवार का कर दिया। इसी प्रकार इरादत खाँ का मंसब बढ़ा कर डेढ़ हजारी ६०० सवार हो गया।

---

१. मेष राशि में जब तक सूर्य रहता है, उस महीने को फरवरदीन कहते हैं और इस की उन्नीसवीं को शरफ का दिन कहते हैं।

अनीराय के मंसब में पाँच सदी १०० सवार बढ़ाए गए, जिस से वह डेढ़ हजारी ४०० सवार का हो गया।

शनिवार १६ वीं को जब तीन घड़ी दिन बाकी था तब शरफ का आरंभ हुआ और हम उसी समय पुनः राजसिंहासन पर बैठे। उ। बत्तीस कैदियों में से, जो विद्रोही अंबर की सेना में से उस युद्ध में विजयी साम्राज्य के सेवकों द्वारा पकड़े गए थे जिसे शाहनवाज़ खाँ ने जीता और वह उपद्रवी मनुष्य परास्त हुआ था, एक मनुष्य को हमने एतकाद खाँ को सौंपा था। जो रक्षकगण इस कार्य पर नियत थे उन्होंने असावधानी की और उसे भाग जाने दिया। हम इस से बड़े क्षुब्ध हुए और तीन महीने के लिए एतकाद खाँ की डेवढ़ी बंद कर दी। उस कैदी का नाम तथा पता अज्ञात था इसलिए वह फिर नहीं पकड़ा गया यद्यपि इस के लिए उन सब ने बहुत प्रयत्न किया। अंत में हमने रक्षकों के नायक को, जिसने उसकी रक्षा में असावधानी की थी, प्राणदंड की आज्ञा दे दी। एतकाद खाँ ने इस दिन एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर हमारी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बहुत दिनों से बंगाल प्रांत के कार्यों का तथा कासिम खाँ के व्यवहार का कुछ पता नहीं लगा था। इसलिए हमने विचार किया कि इब्राहीम खाँ फत्हजंग को, जिस ने बिहार प्रांत का प्रबंध सुचारु रूप से किया था और हीरे को एक खान भी साम्राज्य के अधिकार में लाया था, बंगाल प्रांत में भेजें तथा उस के स्थान पर बिहार में जहाँगीर कुली खाँ को भेजें, जिस की जागीर इलाहाबाद प्रांत में थी। हम ने कासिम खाँ को दरबार बुला लिया। उसी शरफ के दिन शुभ समय में आज्ञा दी कि शाही फर्मान लिखे जाँय कि सज़ावल नियुक्त हो कर जहाँगीर कुली खाँ को बिहार ले जायँ तथा इब्राहीम खाँ फत्हजंग को बंगाल भेज दें। हमने जौहरी सिकंदर पर कृपाकर उसका मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया।

२१ वीं को हमने ईरान के शासक के राजदूत मुहम्मद रिजा को जाने की छुट्टी दी और उसे ६०००० दर्ब अर्थात् ३०००० रुपए तथा खिलअत उपहार दिया। हमारे भाई शाह अब्बास ने जो भेंट हमारे लिए भेजी थी उसी के अनुरूप हमने भी इस राजदूत के हाथ कुछ जड़ाऊ वस्तुएँ, जो दक्षिण के शासकों के यहाँ से आई थीं, वस्त्रों तथा अन्य अलभ्य वस्तुएँ, जो सब मूल्य में एक लाख रुपए की थीं भेंट में भेजा। इनमें एक शीशे का प्याला था जिसे चेलेबी ने एराक से भेजा था। शाह ने इस प्याले को देखा था और एलची से यह कहा था कि यदि उसका भाई इसमें पान करके भेजेगा तो वह विशिष्ट स्नेह का एक चिन्ह होगा। जब एलची ने यह बात हमसे कही तब हमने उसी के सामने इस प्याले में कई बार पान किया और आदेश देकर इसका ढकना तथा तश्तरी बनवाकर इसी भेंट के साथ भेज दिया। ढकने पर मीनाकारी की हुई थी। हमने विशिष्ट सुलेखक मुंशियों को राजदूत द्वारा लाए गए पत्र का उत्तर लिखने की आज्ञा दी।

२२ वीं को अहेरियों ने शेर का समाचार दिया। तुरंत सवार होकर हम शेर का शिकार करने गए और तीन गोलियों में हमने उसकी दुष्टता से प्रजा को तथा उसे उसकी ही दुष्ट प्रकृति से मुक्त कर दिया। मसीहुज्जमाँ ने एक बिल्ली हमारे सामने उपस्थित की और कहा कि यह उभयलिंगी है और इसके बच्चे भी उसके गृह में हैं तथा जब यह दूसरी बिल्ली से समागम करता है तो उसे भी बच्चे होते हैं।

२५वीं को एतमादुद्दौला ने अपनी सेना का झरोखा के नीचे मैदान में निरीक्षण कराया। इसमें दो सहस्र सवार अच्छे घोड़ों सहित, जिनमें अधिकतर मुगल थे, धनुष-तीर-धारी पाँच सौ पैदल तथा

चौदह हाथी थे। बख्शियों ने जाँच कर सूचित किया कि सब नियमानुसार सुसज्जित हैं। २६वीं को एक शेरनी मारी गई। १म उर्दिबिहिश्त को मुकर्रब खाँ द्वारा डाकियों से भेजा गया एक हीरा हमारे सामने उपस्थित किया गया, जिसकी तौल तेईस सुर्ख थी और जिसका मूल्य जौहरियों ने तीस सहस्र रुपए आँका। इस हीरे का पानी प्रथम कोटि का था और बहुत पसंद आया। हमने इसकी अँगूठी बनाने की आज्ञा दी। २री को यूसुफ खाँ का मंसब बाबा खुर्रम की संस्तुति पर एक हजारी १५०० सवार का कर दिया और उसी संस्तुति के अनुसार कई अमीरों तथा मंसबदारों के मंसब बढ़ाए गए।

७वीं को, इस कारण कि अहेरियों ने चार शेरों का पता लगाया था, दो प्रहर तथा तीन घड़ी व्यतीत होने पर हम बेगमों के साथ शिकार खेलने गए। जब शेर दृष्टि में आए तब नूरजहाँ बेगम ने प्रार्थना की कि यदि आज्ञा हो तो वह स्वयं अपनी बंदूक से शेरों को मारे। हमने आज्ञा दे दी कि ऐसा ही हो। उसने दो शेरों को एक-एक गोली से मार डाला और अन्य दो को चार गोलियों से समाप्त कर दिया। एक बार पलक गिरने के समय में उसने चार शेरों का शरीर निर्जीव कर दिया। अब तक इस प्रकार का निशाना मारना नहीं देखा गया कि हाथी के ऊपर तथा अंबारी के भीतर से छ गोलियाँ चलें और एक भी न चूकें, जिन से शेरों को उछलने या हिलने का अवसर तक न मिले।[1] ऐसे अच्छे निशाने लगाने के पुरस्कार में

---

१. एक कवि ने उसी समय तत्काल यह शेर पढ़ा—नूरजहाँ गर्चे बसूरत जन अस्त। दर सफे मर्दां जने शेर अफगन अस्त ॥ अर्थात् यद्यपि नूरजहाँ स्वरूप में स्त्री है पर मर्दों की पंक्ति में शेर अफगन (शेर को मारने वाली या शेर अफगन की) स्त्री है।

हमने एक लाख रुपए की हीरे की पहुँची उसे दी तथा एक सहस्र अशर्फी निछावर की। उसी दिन मेमार खाँ ने लाहौर के महलों को पूरा करने के लिए वहाँ जाने की छुट्टी पाई। १०वीं को अवध प्रांत के फौजदार सैयद वारिस की मृत्यु का समाचार मिला। १२वीं को मीर महमूद के फौजदार का पद माँगने पर हमने उसको तहव्वर खाँ की पदवी के सहित मंसब बढ़ाकर मुल्तान प्रांत के कुछ पर्गनों का फौजदार नियत कर दिया। २२ वीं को बंगाल का बख्शी ताहिर, जिसकी डेवढ़ी बंद थी, सेवा में उपस्थित हुआ और अपनी भेंट दी। इसके साथ ही बंगाल के प्रांताध्यक्ष कासिम खाँ की ओर से आठ और शेख मोधू की ओर से दो हाथी उपस्थित किए गए। २८वीं को खानदौराँ की प्रार्थना पर अब्दुल्अज़ीज खाँ का मंसब पाँच सदी से बढ़ा दिया।

५वीं खुरदाद को केशो के स्थान पर गुजरात की दीवानी मिर्ज़ा हुसेन को दी गई। हमने उसे किफायत खाँ की पदवी दी। ८वीं को बंगश का बख्शी लश्कर खाँ आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर तथा पाँच सौ रुपए भेंट किए। इसके कुछ दिन पहले हमारे आदेश पर हमारे पुत्र खुर्रम ने उस्ताद मुहम्मद नैई[1] को भेजा था, जो अपनी कला में अद्वितीय था। हमने कई मजलिसों में उसका वादन कई बार सुना और हमारे छाप से उसके बनाए हुए एक गजल को भी सुना। १२वीं को हमने उसे रुपयों से तौलने की आज्ञा दी, जो तिरसठ सौ रुपए हुए। हमने उसे हौदा सहित एक हाथी भी दिया और आज्ञा दिया कि इसपर बैठकर तथा रुपयों को अपने चारों ओर रखकर वह अपने निवासस्थान को जाय। कहानी

---

१. फारसी शब्द नै का अर्थ वंशी है और नैई का अर्थ वंशीवाला है।

सुनाने वाला मुल्ला असद, जो मिर्जा के नौकरों में से एक था, उसी दिन ठट्टा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। वह बड़ी मधुरता तथा सजीवता से पद्यों को पढ़ता तथा कहानियाँ सुनाता था इसलिए उसका साथ रहना हमें पसंद था और हमने भी उसे महफूज खाँ की पदवी देकर प्रसन्न किया तथा उसे एक सहस्र रुपए, खिलअत, एक घोड़ा, एक हाथी तथा एक पालकी दिया। कई दिन के अनंतर हमने इसे भी रुपयों से तौलने की आज्ञा दी और इसकी तौल चौआलीस सौ रुपए हुई। इसे दो सदी २० सवार का मंसब दिया और आज्ञा दी कि गप्प मारने के दरबारों में वह सदा उपस्थित रहे। उसी दिन लश्कर खाँ ने अपने सैनिकों का निरीक्षण के लिए झरोखे के सामने प्रदर्शन किया। इसमें पाँच सौ सवार, चौदह हाथी तथा एक सौ बंदूकची थे। २४वीं को समाचार मिला कि राजा मानसिंह का पौत्र महासिंह, जो बड़े पदाधिकारियों में परिगणित हो चुका था, अत्यंत मदिरापान के कारण बरार प्रांत के बालापुर में मर गया। इसका पिता भी बत्तीस वर्ष की अवस्था में मदिरापान की अति कर देने के कारण मर गया था। उसी दिन हमारे निजी फलघर में दक्षिण प्रांत के बुर्हानपुर, गुजरात तथा मालवा के पर्गनों से बहुत प्रकार के बहुत से आम आए। यद्यपि ये प्रांत अपने आमों की मिठास, रेशों के अभाव तथा श्री के लिए विख्यात तथा प्रसिद्ध हैं और अन्य बहुत कम आम हैं जो इनकी समानता कर सकें, यहाँ तक कि हम बहुधा अपने सामने इन्हें तौलने की आज्ञा देते हैं तथा ये एक सेर से सवा सेर तक या अधिक भारी निकलते हैं पर तब भी मधुरता, श्री एवं सुपाच्य होने में आगरा प्रांत के छपरामऊ के आम अन्य सभी प्रांतों क्या भारत के सभी स्थानों के आमों से बढ़कर है।

२८वीं को हमने अपने पुत्र बाबा खुर्रम के लिए एक विशिष्ट

कारचोबी नादिरी भेजी जो इतनी महीन थी जैसी हमारे कारखाने में इसके पहले कभी नहीं बनी थी। हमने वाहक द्वारा यह संदेश भी कहलाया था कि इसमें यह भी विशेषता है कि हमने इसे उस दिन पहिरा था जिस दिन हम अजमेर से दक्षिण की चढ़ाई के लिए निकले थे और इसीलिए इसे भेजा है। उसी दिन हमने अपने सिर पर की पगड़ी ज्यों की त्यों उतार कर एतमादुद्दौला के सिर पर रखकर अपनी कृपा से उसे सम्मानित किया। तीन पन्ने, एक जड़ाऊ उर्बशी और मुहवाली लाल की एक अँगूठी, जिनका मूल्य सात सहस्र रुपए था और जिन्हें महावतखाँ ने भेजा था, हमारे सामने उपस्थित की गई। इसीदिन ईश्वर की कृपा से खूब वर्षा हुई। मांडू में पानी का अकाल पड़ गया था और इस कारण प्रजा में बड़ा असंतोष फैल गया था। यहाँ तक कि हमने बहुत से सेवकों को नर्मदा के किनारे जाने की आज्ञा दे दी थी। उस ऋतु में पानी की कोई आशा नहीं थी। प्रजा के इस असंतोष के कारण हमने अल्लाह के तख्त से दुआ माँगी और उसने भी अपनी कृपा तथा दया से ऐसा पानी गिराया कि एक दिन रात्रि में तालाब, पोखरे तथा नदियाँ भर गईं और प्रजा को पूरा संतोष हो गया। हम किस जिह्वा से उसकी कृपा का धन्यवाद दें।

तीर महीने की पहिली को एक झंडा वजीरखाँ को दिया गया। राणा की भेंट के दो घोड़े, गुजराती वस्त्र का एक थान और अँचार-मुरब्बे के कई कंटर हमारे सामने उपस्थित किए गए। ३री को अब्दुल्-लतीफ के पकड़े जाने का समाचार आया, जो गुजरात के शासकों का वंशज था तथा उस प्रांत में सर्वदा उपद्रव तथा विद्रोह उठाया करता था। प्रजा के संतोष के कारण ही वह पकड़ा गया था इसलिए ईश्वर की दुआ की गई। हमने मुकर्रबखाँ को आज्ञा भेजी कि उसे अपने किसी मंसबदार की रक्षा में दरबार भेज दे। मांडू के आस पास के

अनेक जमींदार सेवा में उपस्थित हुए और अपनी-अपनी भेंट हमारे सामने उपस्थित की। ८वीं को राजा राजसिंह कछवाहा के पुत्र रामदास को राजा का टीका दिया गया और उसे राजा की पदवी भी दी। यादगार वेग, जो मावरुन्नहर में यादगार कोरची के नाम से प्रसिद्ध था और उस प्रांत के शासक से संबंध तथा प्रभाव भी कुछ रखता था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसकी भेंट की वस्तुओं में एक श्वेत चीना का प्याला पैरदार बहुत पसंद आया। कंधार के प्रांताध्यक्ष बहादुरखाँ की भेंट में नौ घोड़े, कपड़ों के नौ नौ थानों के नौ संग्रह अर्थात् इक्यासी थान, काली लोमड़ी के दो चर्म तथा अन्य वस्तुएँ थीं जो सब हमारे सामने उपस्थित किए गए। इसी दिन गढ़ा के राजा प्रेम-नारायण को भी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य मिला और उसने सात नर-मादा हाथी भेंट किया। १०वीं को एक घोड़ा तथा खिलअत यादगार कोरची को दिया गया। १३वीं को गुलाबपाशाँ का जलसा हुआ और उस दिन के सब रस्म पूरे किए गए। बंगाल के अफसरों में से एक शेख मौदूद चिश्ती को चिश्ती खाँ की पदवी दी और एक घोड़ा उपहार में दिया। १४वीं को बाँसवाड़ा के जमींदार रावल उदयसिंह का पुत्र रावल समरसी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने तीस सहस्र रुपए, तीन हाथी, एक जड़ाऊ पानदान और एक जड़ाऊ कमरबंद भेंट दिया। १५वीं को बिहार के प्रांताध्यक्ष इब्राहीमखाँ फत्हजंग ने मुहम्मदबेग के द्वारा नौ हीरे, जो खान से तथा वहाँ के जमींदारों के संग्रहों से लिए गए थे, भेजे और हमारे सामने उपस्थित किए गए। इनमें से एक साढ़े चौदह टंक तौल में था और एक लाख रुपए मूल्य का था। उसी दिन यादगार कोरची को चौदह सहस्र दर्ब बख्शा और पाँच सदी ३०० सवार का मंसब उसे दिया। हमने बकावलबेगी तातारखाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ३०० सवार का कर दिया और उसके हर एक पुत्र के मंसब में तरक्की दी। शाहजादा

सुलतान पर्वेज की संस्तुति पर हमने वजीरखाँ का मंसब पाँच सदी से बढ़ा दिया।

२६वीं को गुरुवार के शुभ दिन सैयद अब्दुल्ला बारहा, जो हमारे भाग्यशाली पुत्र बाबा खुर्रम का राजदूत था, हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और हमारे पुत्र का वह पत्र लाया जिसमें दक्षिण के प्रांतों के विजय का समाचार था। सभी शासकों ने अधीनता के घेरे में सेवा कार्य का सिर डालकर सेवा तथा अधीनता स्वीकार कर लिया और दुर्गों तथा गढ़ों की, विशेषकर अहमद नगर दुर्ग की, तालियाँ सौंप दीं। इस भारी दया तथा कृपा के लिए अल्लाह के तख्त के आगे नम्रता का सिर झुकाकर, जो कुछ भी बदला नहीं चाहता, हमने धन्यवाद की प्रार्थना की और खुशी के डंके पीटने को कहा। अल्लाह को धन्यवाद है कि जो भूमि हाथ से निकल गई थी वह विजयी साम्राज्य के सेवकों के हाथ में पुनः लौट आई। जो उपद्रवीगण विद्रोह तथा घमंड ही का स्वाँस प्रस्वाँस लिया करते थे वे अब अधीनता तथा नम्रता दिखला रहे थे और राज्य लौटानेवाले तथा करद हो रहे थे। यह समाचार हमें नूरजहाँ बेगम के द्वारा मिला था इसलिए हमने उसे टोडा पर्गना दिया, जिसकी आय दो लाख रुपए वार्षिक थी। ईश्व-रेच्छा से जब विजयी सेनाएँ दक्षिण प्रांत तथा दुर्गों में पहुँचेगी और हमारे अच्छे पुत्र का मन उनके अधिकार से तुष्ट हो जायगा तब वह राजदूतों के साथ दक्षिण से ऐसी भेंट लावेगा जैसी इस काल के किसी बादशाह ने न पाया होगा। यह भी आज्ञा दी गई थी कि वह उन अमीरों को साथ लिवाता आवे जिन्हें इस प्रांत में जागीर मिलनी हो जिसमें उन्हें हमारी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य मिल सके। उन्हें उसके अनंतर जाने की छुट्टी मिल जायगी और प्रकाशमान शाही झंडे विजयोल्लास के साथ प्रसन्नता से राजधानी आगरे लौट जायँगे। इस विजय का समाचार पहुँचने के कुछ दिन पहले हमने ख्वाजा

हाफिज के दीवान से शकुन निकाला कि इस कार्य का क्या फल होगा ? यह शैर निकला—

मित्र के विरह के दिन तथा जुदाई की रात्रि बीत गई।
हमने शकुन विचारा, नक्षत्र निकल गया और मिलन आ गया॥

जब हाफिज की गुप्त जिह्वा ने यह बतलाया तब हमें पूरी आशा हो गई और इसीके पचीस दिन बाद विजय का समाचार मिला। अनेक बार विचार करने में हमने ख्वाजा के दीवान का आश्रय लिया और उसमें जो मिला वही प्रायः ठीक निकला। कभी ही उसके विरुद्ध निकला होगा।

उसी दिन हमने आसफखाँ के मंसब में १००० सवार बढ़ाए जिससे उसका मंसब पाँच हजारी ५००० सवार का हो गया। दिन के अंत में बेगमों के साथ हम हफ्त मंजर गृह देखने गए और संध्या के आरंभ में महल को लौट आए। यह मालवा के पहले के एक शासक सुलतान महमूद खिलजी का बनवाया हुआ था। इसमें सात मंजिल हैं और प्रत्येक में चार चार कमरे हैं, जिनमें चार चार खिड़कियाँ हैं। यह मीनार साढ़े चौअन हाथ ऊँचा है और इसका घेरा पचास गज है। भूमि से एक सौ इकहत्तर सीढ़ियाँ सातवीं मंजिल तक हैं। आने जाने में हमने चौदह सौ रुपए लुटाए।

२१वीं को हमने सैयद अब्दुल्ला को सैफखाँ की पदवी दी और खिलअत, एक घोड़ा, एक हाथी तथा एक जड़ाऊ छुरा देकर सम्मानित किया तथा भाग्यवान पुत्र की सेवा में जाने की छुट्टी दी। उसीके द्वारा पुत्र के लिए हमने एक लाल तीस सहस्र रुपए मूल्य का भेजा। हमने उसके मूल्य पर ध्यान नहीं रखा था प्रत्युत् इस विचार से कि उसे बहुत दिनों तक हमने अपने सिर पर बाँधा था और उसे बहुत शुभ समझकर हमने भेजा था। हमने ख्वाजा अबुल् हसन बख्शी के एक

दामाद सुलतान महमूद को बिहार प्रांत का बख्शी तथा वाकेश्रानवीस नियत किया और जब उसे जाने को आज्ञा दी तब उसे एक हाथी दिया।

५ अमूरदाद गुरुवार के दिन के अंत में बेगमों के साथ नीलकुंड देखने गए, जो मांडू में अतीव रम्य स्थानों में एक है। हमारे श्रद्धेय पिता के बहुत बड़े सर्दारों में एक शाह बिदाग खाँ ने, जब उसे यह प्रांत जागीर में मिला था, इस स्थान पर एक बहुत ही सुंदर तथा सुबंद इमारत बनवाई थी। दो तीन घड़ी रात्रि तक वहाँ रहकर हम महल में लौट आए।

बंगाल प्रांत के दीवान तथा बख्शी मुखलिस खाँ के संबंध में कई दोष हम सुन चुके थे, इसलिए हमने उसका मंसब एक हजारी २०० सवार से घटा दिया। आदिल खाँ की भेंट में आए हुए हाथियों में से एक युद्धीय हाथी गजराज नामक को राणा अमरसिंह के यहाँ भेज दिया। ११वीं को हम अहेर खेलने निकले और दुर्ग से एक पड़ाव आगे बढ़े। पानी बहुत बरसा था जिससे भूमि चलने योग्य नहीं रह गई थी। मनुष्यों तथा पशुओं के आराम के विचार से यह कार्य हमने छोड़ दिया और गुरुवार का दिन बाहर व्यतीत कर शुक्रवार की संध्या को लौट आए। उसी दिन हिदायतुल्ला को फिदाई खाँ की उपाधि दी, जो यात्रा काल में शाही पड़ाव के सभी नियमों तथा कार्यों को करने में योग्य था। इस वर्षा काल में इतना पानी बरसा कि वृद्ध पुरुष कहने लगे कि ऐसी वर्षा का उन्हें उस अवस्था भर में चेत नहीं है। चालीस दिनों तक सिवा वर्षा और बादल के कुछ नहीं था और कभी कभी सूर्य दिखला जाते थे। हवा भी इतने वेग से चला करती थी कि कितने नए-पुराने मकान गिर गए। पहली रात्रि को ऐसी वर्षा, गर्ज तथा बिजली थी

जैसी कभी सुनी नहीं गई थी। प्रायः बीस स्त्री पुरुष मर गए और कितनी प्रस्तर-निर्मित इमारतों की नींव तक टूट-फूट गई। इससे अधिक भयावना शोर कोई नहीं है। महीने के मध्य तक वायु और वर्षा बढ़ती ही गई। इस के अनंतर क्रमशः धीमा होता गया। हरियाली तथा आप ही आप उगने वाले सुगंधित पौधों का क्या कहना है? इन सब ने घाटी, मैदान, पहाड़ तथा मरुभूमि सब छा ली था। यह ज्ञात नहीं है कि बसे हुए संसार में मांडू के सिवा और कोई स्थान वायु की मधुरता तथा स्थानीय रमणीकता में, विशेष कर वर्षा ऋतु में, बढ़ कर है। इस ऋतु में, जो कई महीने रहता है और ग्रीष्म ऋतु तक चला चलता है, कोई गृह के भीतर भी बिना ओढ़ने के नहीं सो सकता और दिन में गर्मी इतनी नहीं रहती कि पंखे की या स्थान बदलने की आवश्यता हो। इस स्थान की शोभा जो कुछ लिखी जाय वह कम हो रहेगी। हमने यहाँ दो बातें देखीं जो हिंदुस्थान में अन्यत्र नहीं दिखलाई पड़ीं। पहले तो जंगली केले के पेड़ हैं, जो दुर्ग में बिना जोती हुई भूमि में लगते रहते हैं और दूसरा ममोले के घोंसले हैं, जिन्हें फारस में दुमसिचः (दुम हिलाने वाले) कहते हैं। अब तक किसी शिकारी ने इस के घोंसले को नहीं दिखलाया था। संयोग से जिस इमारत में हम रहते थे उसी में घोंसला था और उस में से दो बच्चे निकले।

गुरुवार १६ वीं को तीन प्रहर दिन बीतने पर हम बेगमों के साथ शक्कर तालाब पर बनी इमारतों को देखने गए, जिन्हें मालवा के पहले शासकों ने बनवाया था। पंजाब के शासन के लिए एतमादुद्दौला को हाथी नहीं दिया गया था इसलिए हमने मार्ग में जगज्योति नामक निजी हाथियों में से एक हाथी उसे दिया। हम इस आकर्षक स्थान में संध्या तक रहे और चारों ओर के खुलते हुए स्थानों की सुंदरता तथा हरियाली से बहुत आनंदित हुए। संध्या की निमाज़

पढ़ कर तथा तसबीह फेर कर हम लोग अपने निश्चित निवासस्थान को लौट आए। शुक्रवार को जहाँगीर कुली खाँ द्वारा भेंट में भेजा गया रण-बादल नामक हाथी हमारे सामने उपस्थित किया गया। हमने अपने लिए कुछ विशिष्ट प्रकार के पहिरावे तथा वस्त्र निश्चित किए और आदेश दिया कि कोई वैसे न पहिरे सिवा उन के जिन्हें हम देवें। एक नादिरी कोट होता है जिसे कबा पर पहिरते हैं। इस को लंबाई कमर से जंघे के नीचे तक होती है और बाहें नहीं होतीं। आगे से बटन से यह बँधता है और पारस के लोग इसे कुर्दी कहते हैं। इसी का हमने नादिरी नाम रखा दूसरा वस्त्र तूस शाल है, जिसे हमारे श्रद्धेय पिता ने पहिरावे के लिए बनवाया था। एक कबा था जिस का कालर दोहरा होता है और बाहों के छोर पर कारचोब किया रहता है। उन्हों ने इसे भी अपने लिए स्वीकृत किया था। एक और कबा था जिस में किनारे थे, जिस के नीचे कटे-हुए कपड़े की झालर कमर, कालर तथा बाहों पर सिली हुई थी। गुजराती साटन का भी एक कबा था, एक चीरा तथा कमरबंद रेशम का बुना हुआ था, जिस में सोने-चाँदी के तार बुने हुए थे।

महाबत खाँ के कुछ घुड़सवारों का मासिक वेतन तीन तथा दो घोड़ों के सवारों के नियमानुसार दक्षिण में कार्य करने के लिए बढ़ा दिया गया था परंतु वैसा कार्य हुआ नहीं इसलिए हमने आज्ञा दी कि दीवानी के अफसरगण इन वेतनों के अंतर को जागीर से काट लेवें। २८वीं को जो १४ शाबान था, गुरुवार के अंत में जिस दिन शबे बरात थी, हमने नूरजहाँ बेगम के महल के एक कमरे में मजलिस की जो बड़े तालाबों के बीच में स्थित था और अमीरों तथा दरबारियों को भोजन के लिए निमंत्रित कर, जिसका प्रबंध बेगम ने किया था, हमने आज्ञा दी कि प्रत्येक को रुचि के अनुसार उन्हें प्याले तथा अन्य सभी प्रकार की नशे की वस्तुएँ दी जायँ। बहुतों ने प्याले लिए और

हमने आदेश दिया कि जो एक प्याला पिएँ वे लोग अपने मंसब तथा स्थिति के अनुसार बैठे। हर प्रकार के भुने हुए मांस तथा फल स्वाद बदलने के लिए हर एक के सामने रखे गए। यह आश्चर्यजनक मजलिस थी। संध्या होते होते बहुत से दीपक तालाबों तथा इमारतों के चारों ओर रख दिए गए और ऐसा प्रकाश हुआ जैसा कभी कहीं अन्यत्र नहीं हुआ होगा। इन दीपकों तथा लंपों के प्रकाश की छाया जल में पड़ती थी जिससे मालूम होता था कि तालाबों के सारे जल अग्नि के मैदान हो गए हैं। बहुत बड़ा जलसा हुआ और पीनेवालों ने इतने प्याले पिए कि पचा न सके।

ऐसे जलसे का प्रबंध हुआ कि हृदय प्रसन्न हो गया।
यह ऐसी सुंदरता से हुआ जैसा हृदय चाहता था ॥
उन्होंने इस हरियाली पर बिछा दिया था।
एक शतरंजी जो बुद्धि के क्षेत्र सी चौड़ी थी ॥
सुगंधि की अधिकता से उत्सव दूर तक फैला।
आकाश कस्तूरिका-नाभि हो गई सुगंधि के जलने से ॥
उद्यान के सुकुमार गण (फूल) खिल उठे।
हर एक का मुख दीपक सा प्रकाशित हो गया ॥

तीन-चार घड़ी रात्रि व्यतीत हो जाने पर हमने पुरुषों को विदा किया और स्त्रियों को बुलाया। एक प्रहर रात्रि तक हम उस आनंददायक स्थान में रहे और आनंद लिया। इस गुरुवार के दिन कई विशिष्ट बातें हुईं। प्रथम तो यह कि यह हमारे राजगद्दी का दिन था, दूसरे यह शबेबरात का तेहवार था और तीसरे यह राखी (रक्षा-बंधन) का दिन था, जिसका वर्णन आ चुका है और हिंदुओं का विशेष दिवस है। इन तीनों शुभ सौभाग्य के मेल से हमने इस दिन को मुबारक शंबः कहा।

२७वीं को सैयद कासू को परवरिशखाँ की पदवी देकर सम्मानित किया। बुधवार मुबारक शंबः के समान ही हमारे लिए सौभाग्य सूचक था पर वह उसका उलटा हुआ। इसलिए इस बुरे दिन को कम-शंबः नाम दिया जिससे यह दिन संसार में सदा कम माना जाय। दूसरे दिन हमने एक जड़ाऊ खंजर यादगार कोरची को दिया और आदेश दिया कि अब से वह यादगार बेग कहा जाय। हमने राजा महासिंह के पुत्र जयसिंह को बुलाया था। इस दिन वह हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और एक हाथी भेंट की। २ शहरयार मुबारक शंबः का एक प्रहर तीन घड़ी बीत चुका था जब हम नीलकुंड के आस पास तथा चारों ओर घूमने के लिए सवार हुए और वहाँ से ईदगाह के मैदान की ओर गए, जो एक टीले पर था और हरा भरा तथा रम्य था। उस मैदान के चंपा फूल तथा अन्य मधुर वन्य पौधे इतने फूले हुए थे कि जिधर दृष्टि जाती थी संसार हरियाली तथा फूलों से भरा दिखलाता था। एक प्रहर रात्रि बीतने पर हम महल लौट आए।

हम से यह कई बार कहा गया था कि जंगली केले से एक प्रकार की मिठाई बनाई जाती है जिसे कि दर्वेश तथा अन्य गरीब आदमी खाते हैं। इसलिए हमने उसकी जाँच करना चाहा। ज्ञात हुआ कि जंगली केले का फल बहुत कड़ा-कड़ा तथा निस्वादु होता है। वास्तविक बात यह है कि तने के नीचे के भाग में एक कोण सी वस्तु होती है जिसमें से केले के फल निकलते हैं।[1] इसी से एक प्रकार की मिठाई बनती है जिसमें फालूदः के समान रस तथा स्वाद होता है। इसे मनुष्य लोग खाते तथा स्वाद लेते हैं।

समाचार-वाहक कबूतरों के संबंध में बातचीत में हमसे कहा गया है कि अब्बासी खलीफों के समय बगदाद के कबूतरों को, जिन्हें

1. केले के तने के भीतरी गूदे से तात्पर्य है, जो बहुत तर होता है और जिसे गरीब लोग तरकारी आदि बना कर खाते हैं।

समाचार-वाहक कहते थे, सिखलाते थे और वे जंगली कबूतरों से डेवढ़े बड़े होते थे। हमने कबूतर पालनेवालों को आज्ञा दी कि वे भी सिखलावें और उन्होंने भी कुछ को इस प्रकार सिखलाया कि हमने उन्हें जब मांडू से प्रातःकाल उड़ाया तब यदि वर्षा अधिक रही तो वे ढाई प्रहर या कभी डेढ़ प्रहर दिन बीतते बुर्हानपुर पहुँच गए। यदि वायु बहुत स्वच्छ रही तो बहुत से एक प्रहर में और कुछ चार घड़ी ही दिन बीतते पहुँच गए।

३री को बाबा खुर्रम के यहाँ से पत्र आया जिससे ज्ञात हुआ कि अफजल खाँ और रायरायान आ गए हैं और उनके साथ आदिल खाँ के राजदूत भी आए हैं। वे योग्य भेंट में रत्न, जड़ाऊ वस्तुएँ, हाथी और घोड़े इत्यादि ऐसे लाए हैं जैसे किसी राज्य या समय में कभी नहीं आए थे। साथ ही उसमें खाँ (आदिल खाँ) की सेवाओं तथा राजभक्ति एवं उसके वचन तथा कर्तव्य की विश्वसनीयता के प्रति विशेष कृतज्ञता भी प्रगट की गई थी। उसने प्रार्थना की थी कि उसे 'फर्जंद' की पदवी तथा अन्य कृपाओं का शाही फर्मान भेजा जावे, जैसा कि उसके सम्मानार्थ अभी तक नहीं किया गया था। अपने पुत्र को प्रसन्न करना हमारा अभीष्ट था और उसकी प्रार्थना भी उचित थी इसलिए हमने सुलिपिलेखक मुंशियों को आदेश दिया कि आदिल खाँ के नाम एक फर्मान प्रस्तुत करें जिसमें उसके प्रति हर प्रकार के स्नेह तथा कृपा का उल्लेख हो और पहले लिखे गए फर्मानों से दस-बारह गुणा बढ़ाकर उसकी प्रशंसा हो। उन्हें यह भी आदेश था कि इन फर्मानों में उसे फर्जंद के नाम से भी संबोधित करें। फर्मान के बीच में हमने अपने हाथ से यह शेर लिख दिया।

शाह खुर्रम की प्रार्थना पर तुम हो गए,
संसार में हमारी 'फरजंदी' से विख्यात।

४थी को यह फर्मान एक प्रतिलिपि के साथ भेज दिया गया, जिससे हमारा पुत्र शाह खुर्रम प्रतिलिपि पढ़ ले और मूल प्रति भेज दे। ९वीं मुबारक शंबः को हम बेगमों के साथ आसफ खाँ के घर पर गए। उसका गृह घाटी में स्थित था और अत्यंत रमणीक तथा खुलता था। इसके चारों ओर घाटियाँ थीं और कई स्थानों में झरने गिर रहे थे। आम के तथा अन्य वृक्ष बहुत से हरे भरे, सुंदर एवं छायादार थे। एक घाटी में दो-तीन सौ केवड़े की झाड़ियाँ थीं। वास्तव में वह दिन बड़े आनंद में बीता। मदिरा का उत्सव हुआ और उसमें अमीरों तथा अंतरंगों को प्याले दिए गए। आसफ खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई जिसमें कितनी ही अलभ्य वस्तुएँ थीं। हमें जो पसंद आया वह हमने ले लिया और बाकी उसे लौटा दिया। उसी दिन सुलतान ख्वाजा का पुत्र ख्वाजा मीर, जो आज्ञा पाकर बंगश से आया था, हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और एक लाल, दो मोती तथा एक हाथी भेंट किया। गढ़ा प्रांत के भूम्याधिकारी राजा भीमनारायण का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। यह भी आज्ञा दी गई कि उसके देश में से उसे जागीर दी जाय। १२वीं को हमारे पुत्र खुर्रम का पत्र आया कि राजा बासू के पुत्र राजा सूरजमल ने, जिसका राज्य काँगड़ा दुर्ग के पास है, वचन दिया है कि एक वर्ष में वह उस दुर्ग को बादशाही साम्राज्य के सेवकों के अधिकार में लादेगा। उसका भी प्रार्थनापत्र इसी के समर्थन में आया। हमने आज्ञा भेजी कि उसके विचारों तथा इच्छाओं को समझकर तथा उनके संबंध में अपना संतोष कर वह राजा को हमारी सेवा में भेज दे जिससे वह अपने कार्य पर जा सके। उसीदिन सोमवार ११वीं को १ रमजान को चार घड़ी सात पल बीतने पर हमारे पुत्र को एक पुत्री उस स्त्री से हुई, जिससे उसकी अन्य संतानें थीं और जो आसफखाँ की पुत्री थी। इसका नाम रौशनआरा बेगम रखा

गया। मांडू के अंतर्गत जैतपुर का जमींदार अपनी दुष्टता के कारण सेवा में उपस्थित नहीं हुआ था इसलिए हमने फिदाईखाँ को आज्ञा दी कि कुछ मंसबदारों तथा चार-पाँच सौ बंदूकचियों को लेकर वह वहाँ जाय तथा उसके राज्य को लूटे। १३वीं को एक एक हाथी फिदाई खाँ तथा सैयद मुराद के पुत्र मीर कासिम को दिए गए। १६वीं को राजा महासिंह के पुत्र जयसिंह का मंसब जो बारह वर्ष का था, बढ़ाकर एक हजारी १००० सवार का कर दिया। मीर खलीलुल्ला के पुत्र मीर मीरान को हमने अपने पसंद का एक हाथी दिया और एक मुल्ला अब्दुस्सत्तार को दिया। राजा विक्रमाजीत भदौरिया का पुत्र भोज अपने पिता की मृत्यु पर दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर भेंट किया। १७वीं को सूचित किया गया कि उड़ीसा प्रांत से राजा कल्याण आया है और सेवा में उपस्थित होना चाहता है। उसके संबंध में अरुचिकर बातें सुनी गई थीं इसलिए आज्ञा दी गई कि उसे उसके पुत्र सहित आसफखाँ को सौंप दें कि उन बातों की सचाई की जाँच करे। १९वीं को एक हाथी जयसिंह को दिया गया। २०वीं को केशोदास मारू के मंसब में २०० सवार बढ़ाए गए जिससे उसका मसब बढ़कर दो हजारी १२०० सवार का हो गया। २३वीं को अल्लहदाद अफगान को रशीदखाँ की पदवी से सम्मानित कर उसे एक परम नर्म शाल दिया। राजा कल्याणसिंह के भेंट के अठारह हाथी हमारे सामने लाए गए, जिनमें से सोलह हमारे हथसाल में रखे गए तथा दो उसे उपहार में दे दिए गए। एराक से समाचार आया कि मीर मीरान की माता की मृत्यु हो गई, जो सफवी राजवंश के शाह इस्माइल द्वितीय की पुत्री थी, इसलिए हमने खिलअत उसके लिए भेजा और उसके शोक का वस्त्र उतरवाया।

२५वीं को फिदाईखाँ ने खिलअत पाया और उसे अपने भाई रूहुल्ला तथा अन्य मंसबदारों के साथ जैतपुरा के जमींदार को दंड

देने के लिए जाने की छुट्टी मिली। २८वीं को नर्मदा को देखने की तथा उसके आस-पास अहेर खेलने की इच्छा से हम दुर्ग से नीचे आए और बेगमों को साथ लेकर दो पड़ाव चलकर नदी के किनारे पहुँच गए। वहाँ मच्छर तथा खटमल बहुत थे अतः वहाँ एक रात्रि से अधिक नहीं ठहरे। दूसरे दिन तारापुर आए और शुक्रवार ३१वीं को लौट आए। मेह महीने की १ली को मुहसिन ख्वाजा को जो इसी समय मावरुन्नहर से आया था, एक खिलअत तथा पाँच सहस्र रुपए मिले। २री को राजा कल्याण के संबंध में जो दोष सुने गए थे और जिसकी जाँच के लिए आसफखाँ नियुक्त किया गया था उसकी जाँच होने पर वह निर्दोष सिद्ध हुआ इसलिए उसे सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसने एक सौ मुहर तथा एक सहस्र रुपए भेंट किए। इसकी अन्य भेंट में एक मोती की माला जिसमें अस्सी मोती तथा दो लाल थे, एक पहुँची जिसमें एक लाल तथा दो मोती लगे थे और सोने का एक घोड़ा जिसमें रत्न जड़े थे हमारे सामने उपस्थित किए गए। फिदाईखाँ के यहाँ से प्रार्थनापत्र आया कि "जब विजयी सेना जैतपुर राज्य में पहुँची तो वहाँ का जमींदार भाग गया। वह फिदाई का सामना नहीं कर सका और उसका देश लूट लिया गया। अब उसने अपने कार्य के लिए पश्चात्ताप कर संसार के शरणस्थल दरबार में आने का तथा सेवा एवं अधीनता स्वीकार करने का निश्चय किया। रूहुल्ला के अधीन एक सेना उसका पीछा करने भेजी गई कि उसे पकड़ कर दरबार लावे या उसके राज्य को नष्ट भ्रष्ट कर और उसकी स्त्रियों तथा संबंधियों को कैद कर ले जो आस पास के जमींदारों के देश में चले गए हैं। ८वीं को ख्वाजा निजाम ने आकर मोखा बंदर के चौदह अनार पेश किया जिन्हें चौदह दिन में मोखा से सूरत तथा आठ दिन में वहाँ से मांडू लाए थे। ये अनार भी ठट्टा के अनारों के समान ही आकार में थे। यद्यपि ठट्टा के अनारों में बीज नहीं होते और इन

में हैं पर ये सुकुमार हैं और ताजगी में उससे बढ़कर हैं। ९वीं को समाचार मिला कि जब रूहुल्ला ग्रामों में होकर जा रहा था तब उसे ज्ञात हुआ कि जैतपुरा के जमींदार की स्त्रियाँ तथा संबंधी एक गाँव में हैं। वह गाँव के बाहर ही रहा और अपने आदमियों को पता लगाने के लिए तथा वहाँ के लोगों को लिवा लाने को भेजा। जब वह पूछताछ कर रहा था तब उस जमींदार के स्वामिभक्त सेवकों में से एक ग्रामीणों के साथ चला आया। जब कि उसके सैनिक बिखरे हुए थे और वह कुछ मनुष्यों के साथ सामान निकलवा कर एक दरी पर बैठा हुआ था तभी उस स्वामिभक्त सेवक ने रूहुल्ला के पीछे आकर उसे ऐसा भाला मारा कि उसकी नोक छाती के पार निकल आई और घातक हो गई। भाले को खींच लेना तथा रूहुल्ला का प्राण निकलना एक साथ ही हुआ। जो लोग वहाँ थे उन्होंने उस दुष्ट को नर्क में पहुँचा दिया। बिखरे हुए सब सैनिकों ने शस्त्र धारण कर ग्राम पर आक्रमण कर दिया। वे रक्तपाती मनुष्यगण विद्रोहियों तथा राजद्रोहियों को शरण देने के कारण दंडनीय हो गए थे और एक घंटे में सब मारे गए। उनकी स्त्रियों तथा पुत्रियों को कैद कर लिया और गाँव में आग लगा दिया कि सिवा राख की ढेरों के और कुछ नहीं बचा। तब वे रूहुल्ला के मुर्दे को उठाकर फिदाईखाँ के पास चले आए। रूहुल्ला की वीरता तथा उत्साह के संबध में कुछ भी विवाद नहीं है, अधिक से अधिक उसकी असतर्कता के कारण उसका भाग्य फिर गया। उस स्थान में बस्ती का कोई चिन्ह शेष नहीं रहा और वहाँ का जमींदार पहाड़ों तथा जंगलों में भाग गया एवं अपने को मिटा दिया। इसके अनंतर उसने किसी को फिदाईखाँ के पास भेजा और अपने दोषों के लिए क्षमा माँगी। आज्ञा दी गई कि उसे शरण दी जाय और दरबार में लाया जाय।

मुरौवत खाँ का मंसब इस शर्त पर बढ़ा कर दो हजारी १५००

सवार का कर दिया गया कि वह चंद्रकोट के जमींदार हरभानु को नष्ट कर दे, जिस के कारण यात्रियों को बहुत कष्ट पहुँचता है। १३ वीं को राजा सूरजमल तथा उस के साथ तकी बख्शी, जो बाबा खुर्रम की सेवा में था, आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुए। उस ने अपनी आवश्यकताएँ बतलाईं। कार्य संपन्न करने की उस की प्रतिज्ञा पंसद की गई और अपने पुत्र की संस्तुति पर उसे झंडा और डंका दिया। तकी को जो उस के साथ नियत हुआ था एक जड़ाऊ खपवा दिया गया और यह निश्चय हुआ कि वह अपना कार्य समाप्त कर शीघ्र जावे। ख्वाजा अली बेग मिर्जा का मंसब जो अहमदनगर की सुरक्षा तथा प्रबंध कार्य पर नियत हुआ था, पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया गया। नूरुद्दीन कुली, ख्वाजगी ताहिर, सैयद खान मुम्मद, मुर्तजा खाँ और वली बेग हर एक को एक-एक हाथी दिए गए। १७ वीं को हाकिम बेग का मंसब बढ़ा कर एक हजारी २०० सवार का कर दिया गया। उसी दिन राजा सूरजमल को खिलअत, एक हाथी तथा जड़ाऊ खपवा और तकी को खिलअत देकर उन्हें कांगड़ा के कार्य पर जाने की छुट्टी दे दी। हमारे उच्च भाग्यशाली पुत्र शाह खुर्रम द्वारा भेजे गए वे लोग जब आदिल खाँ के राजदूतों तथा भेंटों के साथ बुर्हानपुर आगए और हमारे पुत्र का मन दक्षिण के कार्यों के संबंध में पूर्णतया संतुष्ट हो गया तब उस ने प्रार्थना की कि खानखानाँ सिपहसालार को बरार, खानदेश तथा अहमदनगर का प्रांताध्यक्ष नियत किया जाय और इस के पुत्र शाहनवाज खाँ को, जो वास्तव में छोटा खानखानाँ था, बारह सहस्र सवारों के साथ विजित प्रांत पर अधिकार रखने के लिए भेज दिया जाय। हर एक स्थान तथा राज्य विश्वसनीय मनुष्यों के अधिकार में जागीर के रूप में दिया गया और उस प्रान्त के शासन का योग्य प्रबंध कर दिया गया। उस के अधीन जो सेना थी उस में से तीस सहस्र सवार तथा सात सहस्र

बंदूकची पदल वहीं छोड़ कर बाकी पचीस सहस्र सवार तथा दो सहस्र बंदूकचियों के साथ वह हमारी सेवा में आने के लिए चल दिया।

गुरुवार मेह्र महीने की १० वीं[1] को, हमारे १२ वें जलूसी वर्ष में, जो ११ शव्वाल सन् १०२६ हि० होता है, तीन प्रहर एक घड़ी दिन व्यतीत होने पर शुभ मुहूर्त में खुर्रम ने प्रसन्नता के साथ मांडू दुर्ग में प्रवेश किया और हमारी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। हम दोनों ग्यारह[2] महीने ग्यारह दिन एक दूसरे से अलग रहे। अभिवादन तथा सिजदे की कुल प्रथा पूरी होने पर हमने उसे झरोखे के पास बुलाया और अत्यंत कृपा तथा अत्यधिक प्रसन्नता के साथ उठ कर हमने उसे प्रेमालिंगन में ले लिया। जितना ही वह विनय तथा विनम्रता दिखलाने का प्रयत्न करता था उतना ही हमारी उस के प्रति कृपा तथा दया बढ़ती जाती थी और हमने उसे अपने पास बैठने का आदेश दिया। उसने एक सहस्र अशर्फी और एक सहस्र रुपए नज़र दिए तथा इतना ही निछावर के रूप में। समय इतना नहीं था कि वह कुल भेंट हमारे सामने उपस्थित कर सके इसलिए उस ने रत्नों की एक पेटी के साथ आदिल खाँ के यहाँ से आए हुए हाथियों में से मुख्य हाथी को, जिस का नाम 'सरे नाग'[3] था, हमारे सामने पेश किया। इस के अनंतर बख्शियों को आज्ञा हुई कि हमारे पुत्र के साथ आए हुए अमीरों को उन के मंसब के अनुसार अभिवादन

---

१. मूल पाठ में ८ वीं लिखा है पर यही ठीक है।

२. मूल पाठ में पद्रह महीने लिखा है पर यह कार्य एक वर्ष के भीतर ही निपट गया था।

३. इकबाल नामा में वीर नाग दिया है। नाग का अर्थ सर्प तथा हाथी दोनों हैं अतः इस का अर्थ हाथियों का सरदार है।

करने को उपस्थित करें। इन में प्रथम खानजहाँ अभिवादन करने आया। उसे ऊपर आने का आदेश देकर हमने उसे चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त करने का अवसर दिया। इस ने एक हजार मुहर तथा एक हज़ार रुपए नज़र और एक पेटी रत्नों तथा जड़ाऊ वस्तुओं से भरी हुई दी। इस में से जो पसंद कर ली गई उस का मूल्य पैंतालीस सहस्र रुपए था। इस के अनंतर अब्दुल्ला खाँ ने आकर देहली चूमी और एक सौ मुहर नज़र दी। तब महाबत खाँ ने आकर सिज्दा किया और एक सौ मुहर, एक सहस्र रुपए तथा बहुमूल्य रत्नों एवं जड़ाऊ बर्तनों की एक गठरी भेंट की जिस सब का मूल्य एक लाख चौबीस सहस्र रुपए था। इन में से एक लाल ग्यारह मिस्क़ाल का था जिसे एक फिरंगी गत वर्ष बेंचने के लिए अजमेर लाया था और दो लाख रुपए दाम माँगता था पर जौहरियों ने उस का मूल्य अस्सी सहस्र आँका था। इस कारण यह सौदा नहीं पटा और वह उसे लौटा दिया गया, जिसे लेकर वह चला गया। जब वह बुर्हानपुर पहुँचा तब महाबत खाँ ने उसे एक लाख रुपए में खरीद लिया था। इस के अनंतर राजा भाऊ सिंह सेवा में आए और एक सहस्र रुपए नज़र तथा कुछ रत्न एवं जड़ाऊ वस्तुएँ भेंट में दीं। इसी प्रकार खानखानाँ का पुत्र दाराब खाँ, अब्दुल्ला खाँ का भाई सरदार खाँ, शुजाअत खाँ अरब, दियानत खाँ, मोतमिद खाँ बख्शी तथा ऊदाराम क्रमशः सेवा में मसब के अनुसार उपस्थित हुए। अंतिम निज़ामुल्मुल्क के मुख्य सर्दारों में से एक था और जो हमारे पुत्र शाह खुर्रम के वचन पर आकर राजभक्तों में भर्ती हो गया था। इस के उपरांत आदिल खाँ के वकीलों को सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उस का एक पत्र दिया।

इस के पहले राणा के विजय के उपलक्ष में हमारे भाग्यशाली पुत्र को बीस हजारी १०००० सवार का मंसब मिल चुका था। जब

वह दक्षिण की चढ़ाई पर जा रहा था तब उसे शाह की पदवी दी गई थी और अब इस विख्यात सेवा के पुरस्कार में हमने उस का मंसब तीस हज़ारी २०००० सवार का कर दिया तथा उसे शाहजहाँ की पदवी प्रदान की। यह भी आदेश दिया कि अब से आगे स्वर्ग तुल्य दरबार में हमारे राजसिंहासन के बगल में एक जड़ाऊ कुर्सी (संदली) हमारे इस पुत्र के बैठने के लिए रखी जाया करे। यह हमारे पुत्र के लिए विशिष्ट कृपा थी, जैसी प्रथा पहले कभी नहीं थी। एक खास खिलअत सुनहले कारचोबी चारकुब के साथ, जिस के कालर, बाँहों के अंत तथा दामनों में मोती टँके हुए थे तथा जिस का मूल्य पचास सहस्र रुपए था, जड़ाऊ परतले सहित एक जड़ाऊ तलवार तथा एक जड़ाऊ खंजर उसे दिया। उस का सम्मान बढ़ाने को हम स्वयं झरोखे से नीचे उतर आए और एक रिकाबी रत्न तथा एक थाली सुवर्ण उस पर से निछावर किया। सरेनाग हाथी को मँगवाकर हमने देखा कि उसकी प्रशंसा में तथा सौंदर्य के संबंध में जो कुछ कहा गया था वह वास्तव में ठीक है। ऐसे सौंदर्य के कम हाथी देखे जाते हैं। वह हमें बहुत पसंद आया इसलिए हम उस पर सवार हुए और अपने निजी महल में ले गए। बहुत से सोने के सिक्के उसके सिर पर से फेंके और उसे शाही महल में बाँधने की आज्ञा दी। इसे हमने नूर बख्त नाम दिया।

शुक्रवार २४वीं को बगलाना का जमींदार भेरजी आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसका नाम प्रताप है और यहाँ के प्रत्येक जमींदार भेरजी कहे जाते हैं। इसके यहाँ पंद्रहसौ सवार के लगभग वेतनभोगी हैं और यह समय पड़ने पर तीन सहस्र सवार एकत्र कर सकता है। बगलाना प्रांत गुजरात, खानदेश तथा दक्षिण के बीच में स्थित है। इसमें दो दुर्ग दृढ़ हैं, साल्हेर तथा मुल्हेर। मुल्हेर बसे हुए प्रांत के मध्य में है इसलिए यह उसी में रहता है। बगलाने में सुंदर सोते

था नदियाँ हैं। यहाँ के आम बड़े मीठे और बड़े होते हैं। ये वर्ष में
ौ महीने तक मिलते हैं, फल लगने के आरंभ से अंत तक।
हाँ अंगूर भी बहुत होते हैं पर अच्छी प्रकार के नहीं होते।
ुजरात, खानदेश तथा दक्षिण के शासकों के साथ व्यवहार रखने में
भी सतर्कता तथा दूरदर्शिता को हाथ से नहीं जाने देता। वह कभी
िसी के यहाँ स्वयं नहीं गया और यदि कभी किसी ने उसके राज्य
र अधिकार करने को हाथ बढ़ाया तो यह दूसरों की सहायता से
पपरिवर्तित बना रहा। जब विगत सम्राट् के काल में गुजरात,
ानदेश तथा दक्षिण उनके अधिकार में चला आया तब भेरजी
ुर्हानपुर आया और उनका चरण चुंबन कर उनकी सेवा में भर्ती हो
गया और उसे तीन हजारी मंसब मिला। इस समय जब शाहजहाँ
ुर्हानपुर गया तब यह ग्यारह हाथी भेंट लाया था। हमारे पुत्र के
ाथ ही यह दरबार आया था। इसलिए इसकी मित्रता तथा सेवा के
अनुसार इस पर शाही कृपाएँ हुईं और उसे एक जड़ाऊ आभरण,
एक हाथी, एक घोड़ा तथा खिलअत दिया। कुछ दिन बाद हमने उसे
याकूत, हीरा तथा लाल की तीन अँगूठियाँ दीं।

गुरुवार २७वीं को नूरजहाँ बेगम ने हमारे पुत्र शाहजहाँ के
विजय के उपलक्ष में जलसा किया और उसे कारचोबी के फूलों वाली
एक नादिरी सहित जिसमें मोतियाँ टँकी हुई थीं, बहुमूल्य खिलअतें,
अलभ्य रत्न जड़ा हुआ सिरपेंच, मोतियों के तुर्रे से युक्त एक पगड़ी,
मोती जड़ा एक कमरबंद, जड़ाऊ पर्तले सहित एक तलवार, एक
फूलकटार: मोतियों का सादा, दो घोड़े जिनमें एक की जड़ाऊ जीन
थी तथा दो हथिनियों सहित एक खास हाथी दिया। इसी प्रकार
बेगम ने उसकी संतानों तथा स्त्रियों को खिलअत, नौ-नौ थान वस्त्र,
हर प्रकार के सोने के आभूषण दिए और उसके मुख्य सेवकों को
एक घोड़ा, एक खिलअत तथा एक जड़ाऊ खंजर दिया। इस जलसे में

तीन लाख रुपए व्यय हुए। उसी दिन अब्दुल्ला खाँ तथा उसके भाई सरदार खाँ को एक घोड़ा तथा खिलअत देकर उन्हें कालपी जाने की छुट्टी दी, जो उन्हें जागीर में मिली थी। शुजाअत खाँ को भी एक खिलअत तथा एक हाथी देकर गुजरात प्रांत में अपनी जागीर पर जाने का छुट्टी दी। सैयद हाजी को भी एक घोड़ा देकर जाने का आदेश दिया, जो बिहार प्रांत का एक जागीरदार था।

हमें कई बार सूचना मिल चुकी थी कि खानदौराँ वृद्ध तथा निर्बल हो गया है और उसमें सवारी करने की सामर्थ्य नहीं रह गई है। काबुल तथा बंगश प्रांत उपद्रव के देश हैं और अफगानों को शांत रखने के लिए बराबर कर्मठता तथा सवारी की शक्ति अपेक्षित है। सतर्कता शासन का मंत्र है इसलिए हमने महाबत खाँ को काबुल तथा बंगश का सूबेदार नियत किया और उसे इसका खिलअत भी दे दिया। खानदौराँ को टट्टा प्रांत का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। इब्राहीम खाँ फतहजंग ने बिहार से उंचास हाथी भेंट में भेजे थे जो हमारे निरीक्षण के लिए लाए गए। इसी दिन वे सोना-केला हमारे लिए लाए। हमने ऐसे केले पहले कभी नहीं खाए थे। आकार में एक उंगली के बराबर थे पर बहुत मीठे तथा स्वादिष्ट थे। अन्य प्रकार के केलों से इनकी कोई समानता नहीं थी पर ये कुछ अपाच्य हैं क्योंकि हमने केवल दो खाए थे पर उसी से भारीपन मालूम होता था। दूसरे कहते हैं कि वे सात-आठ खा सकते हैं। यद्यपि केले वास्तव में खाने के योग्य नहीं होते पर अन्य सभी प्रकारों में से यह खाने योग्य है। इस वर्ष इस मेह महीने की २३वीं तक मुकर्रब खाँ ने गुजराती आम डाक-चौकी से भेजा।

इसी दिन समाचार मिला कि हमारे भाई शाह अब्बास का राजदूत मुहम्मदरजा आगरे में पेटचली रोग से मर गया। हमने

मुहम्मद क़ासिम सौदागर को, जो हमारे भाई के यहाँ से आया था, उसकी संपत्ति का प्रबंधक बनाया और उसकी इच्छा के अनुसार उसकी कुल संपत्ति तथा सामान शाह के पास ले जाने की आज्ञा दी जिसमें वह अपने सामने मृत के उत्तराधिकारियों को सौंप देवे। आदिल खाँ के वकीलों सैयद कबीर तथा बख्तार खाँ को हाथी और खिलअत दिए गए। गुरुवार १३वीं आबाँ को जहाँगीर कुली बेग तुर्कमान, जिसे जानसिपार खाँ की पदवी मिली थी, दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसका पिता ईरान के अमीरों में से एक था। गत सम्राट् अकबर के समय यह फ़ारस से आया और मंसब पाकर यह दक्षिण भेजा गया। उसी प्रांत में यह पालित हुआ था। यद्यपि यह एक कार्य पर वहाँ नियत था पर हमारे पुत्र शाहजहाँ ने इसी समय सेवा में आने पर इसकी सचाई तथा राजभक्ति प्रगट की थी इसलिए हमने आज्ञा भेजी थी कि वह शीघ्रता से दरबार आवे और हमारी सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर लौट जाय। इसी दिन हमने ऊदाराम का मंसब बढ़ाकर तीनहजारी १५०० सवार का कर दिया। यह जाति से ब्राह्मण है और इसपर अंबर का अधिक विश्वास था। जिस समय शाहनवाज खाँ अंबर के विरुद्ध गया उस समय आदम खाँ हब्शी, जादो राय, बाबू राय कायस्थ, ऊदाराम तथा निजामुल्मुल्क के अन्य कई सर्दारों ने उसका साथ छोड़ दिया और शाहनवाज खाँ के पास चले आए। अंबर के पराजय के अनंतर आदिल खाँ के कहने-सुनने तथा अंबर के कपटाचरण से इन सब ने सीधा मार्ग त्याग दिया और सेवा तथा राजभक्ति से विमुख हो गए। अंबर ने कुरान पर शपथ लेकर आदम खाँ को स्वरक्षा से असावधान कर दिया और उसे धोखे से पकड़कर दौलताबाद दुर्ग में कैद कर दिया तथा अंत में मार डाला। बाबू राय कायस्थ तथा ऊदाराम भागे और आदिल खाँ के राज्य की सीमा पर चले आये पर उसने अपने राज्य

में इन्हें आने नहीं दिया। इसी समय बाबू राय कायस्थ ने अपने मित्रों के धोखे से प्राण खो दिया और अंबर ने एक सेना ऊदाराम पर भेजा। इसने वीरता से लड़कर अंबर की सेना को परास्त कर दिया। परंतु वह उस प्रांत में रह नहीं सकता था इसलिए बादशाही राज्य की सीमा पर चला आया और विश्वास दिलाए जाने पर अपने परिवार तथा सेवकों के साथ आकर शाहजहाँ की सेवा में उपस्थित हुआ। उस पुत्र ने उसे अनेक प्रकार की कृपाओं तथा दयाओं से सम्मानित कर और उसे तीन हजारी १००० सवार का मंसब देकर आशान्वित कराकर दरबार लिवा लाया। यह काम का सेवक था इसलिए ५०० सवार उसके मंसब में बढ़ा दिए।

हमने शहबाज खाँ का मंसब, जो दो हजारी १५०० सवार का था, ५०० सवार से बढ़ा दिया और सारंगपुर सरकार तथा मालवा प्रांत के एक अंश का फौजदार नियत किया। एक खास घोड़ा तथा हाथी खानजहाँ को दिया। गुरुवार १०वीं को हमारे पुत्र शाहजहाँ ने अपनी भेंट उपस्थित की, रत्न, रत्नजटित वस्तुएँ, अच्छे वस्त्र तथा अन्य अलभ्य वस्तुएँ। झरोखे के आँगन में वे सब प्रदर्शित की गई तथा इनके साथ घोड़े और हाथी सोने-चाँदी के साजों के सहित सजाए गए थे। उसे प्रसन्न करने के लिए हम झरोखे से नीचे उतर आए और हर एक वस्तु का विस्तार से निरीक्षण किया। इन सब वस्तुओं में एक सुंदर लाल था जिसे गोआ बंदर में दो लाख रुपए में हमारे पुत्र के लिए खरीदा था। इसकी तौल साढ़े उन्नीस टाँक या सत्रह मिस्काल साढ़े पाँच सुर्ख थी। हमारे पास बारह टाँक से अधिक तौल का कोई लाल नहीं था और जौहरियों ने उसके मूल्य को ठीक बतलाया। इसके सिवा एक नीलम आदिल खाँ की भेंट में से था जिसकी तौल छ टाँक सात सुर्ख थी और जिसका मूल्य एक लाख रुपए था। हमने इसके पहले कभी इतना बड़ा तथा अच्छे रंग का

नीलम नहीं देखा था। एक चमकोड़ा हीरा भी आदिल खाँ के यहाँ का था जिसकी तौल एक टाँक छ सुर्ख थी और मूल्य चालीस सहस्र था। चमकोड़ा नाम की व्युत्पत्ति यों है कि दक्षिण में चमकोड़ा शाक नामक एक पौधा होता है। जब मुर्तजा निजामुल्मुल्क ने बरार विजय किया तब वह एक दिन स्त्रियों के साथ उद्यान में घूमने गया। वहीं एक स्त्री को चमकोड़ा शाक में एक हीरा मिला जिसे उसने निजामुल्मुल्क को लाकर दिया। उस दिन से इस हीरे का नाम चमकोड़ा हीरा पड़ गया और अहमद नगर के उपद्रव के समय यह वर्तमान इब्राहीम आदिलशाह के अधिकार में चला आया था। आदिल खाँ ही के भेंट में एक पन्ना भी था जो नए खान का होने पर भी ऐसे अच्छे रंग का तथा स्वच्छ था जैसा हमने पहले नहीं देखा था। दो मोतियाँ भी थीं जिनमें एक चौंसठ सुर्ख अर्थात् दो मिसकाल और ग्यारह सुर्ख तौल में तथा पचीस सहस्र रुपए मूल्य की थी और दूसरी सोलह सुर्ख की होते गोल तथा पानीदार थी इससे उसका मूल्य बारह सहस्र रुपए आँका गया। कुतुबुल्-मुल्क की भेंट में एक हीरा था, जो तौल में एक टाँक तथा मूल्य में तीस सहस्र का था। डेढ़ सौ हाथी थे जिनमें तीन पर सोने के तथा नौ पर चाँदी के हौदे साज सामान थे। यद्यपि बीस हाथी हमारे निजी हथसाल में रखे गए पर उनमें पाँच बहुत भारी तथा प्रसिद्ध थे। पहिला नूरबख्त जिसे हमारे पुत्र ने मिलने के दिन भेंट किया था सवा लाख रुपए का था। दूसरा महीपति आदिलखाँ की भेंट का था जिसका मूल्य एक लाख था। हमने इसका दुर्जनसाल नाम रखा। उसी की भेंट का एक अन्य हाथी बख्तबुलंद भी एक लाख मूल्य का था जिसका हमने गिरांबार नाम रखा। चौथे का नाम कद्दूसखाँ और पाँचवें का इमामरिजा था। ये कुतुबुल् मुल्क की भेंट में से थे। दोनों के मूल्य एक-एक लाख रखे गए। इनके सिवा एक सौ अरबी

तथा एराकी घोड़े थे जिनमें प्रायः सभी अच्छे थे। इनमें से तीन पर जड़ाऊ जीनें थीं। यदि हमारे पुत्र की निजी भेंट तथा दक्षिण के शासकों की भेंटें विस्तार से लिखी जायँ तो वह भारी कार्य हो जायगा। हमने उसकी भेंटों में से जितना पसंद किया वह कुल बीस लाख रुपए मूल्य का था। इसके सिवा अपनी माता नूरजहाँ बेगम को दो लाख रुपए की और अन्य माताओं तथा बेगमों को साठ सहस्र रुपए मूल्य की भेंटें दीं। हमारे पुत्र की सब भेंट मिलाकर बाईस लाख साठ सहस्र अर्थात् पचहत्तर सहस्र ईरानी तूमान या सड़सठ लाख अस्सी हजार तूरानी खानी के हुई। इस राजवंश के काल में ऐसी भेंट कभी नहीं आई थी। वास्तव में वह इस योग्य है जिससे हमने उस पर इतना ध्यान रखा तथा बड़ी कृपा की। हम उससे बहुत प्रसन्न तथा संतुष्ट हैं। सर्व शक्तिमान् ईश्वर उसे दीर्घजीवी तथा ऐश्वर्यशाली बनावे।

हमने अपने जीवन में हाथी का अहेर नहीं खेला था और गुजरात प्रांत तथा खारे समुद्र को देखने की हमारी भी बड़ी इच्छा थी। हमारे अहेरियों ने बहुधा वहाँ जाकर जंगली हाथी देखे थे और अहेर खेलने योग्य स्थान भी निश्चित किया था इसलिए हमने निश्चय किया कि अहमदाबाद होते हुए समुद्र देखें और लौटते हुए हाथी का शिकार खेलें जब कि गर्मी रहेगी तथा हाथी के अहेर का समय रहेगा। इसके अनंतर आगरे लौट जायँगे। इस विचार से हमने अपनी माता मरियमुज्जमानी तथा अन्य बेगमों एवं हरमवालियों को सामान तथा अधिक कारखानों को आगरे भेज दिया और स्वयं आवश्यक मनुष्यों के साथ गुजरात प्रांत की सैर तथा अहेर के लिए उस ओर चल दिए। शुक्रवार[1] को आबाँ महीने में हम मांडू से शुभ साइत में प्रसन्नता के साथ निकले और नालछा तालाब के किनारे पड़ाव डाला। प्रातःकाल अहेर को निकले और एक नीलगाय बंदूक से मारा। शनिवार को संध्या को महाबतखाँ को एक खास घोड़ा तथा एक हाथी देकर उसे

अपने प्रांत काबुल तथा बंगश जाने की छुट्टी दी गई। उसकी संस्तुति पर हमने रशीदखाँ को एक खिलअत, एक हाथी तथा एक जड़ाऊ खंजर देकर इसे उसकी सहायता पर नियुक्त किया। हमने इब्राहीम हुसेन का दक्षिण के बख्शी पद पर और मीरक हुसेन को उसी प्रांत के वाकेआनवीस के पद पर नियुक्त किया। राजा टोडरमल का पुत्र राजा कल्याण उड़ीसा प्रांत से आया हुआ था पर उसके कुछ दोषों के कारण जो उसपर लगाए गए थे, उसे हमारी सेवा में उपस्थित होने से कई दिनों के लिए रोक दिया गया था। जाँच होने पर उसकी निर्दोषिता स्थापित हो गई तब उसे खिलअत और एक घोड़ा देकर हमने महाबतखाँ के साथ बंगश में काम करने पर नियत कर दिया। सोमवार को आदिलखाँ के वकीलों को दक्षिण की चाल के जड़ाऊ तुर्रे दिए जिसमें एक का मूल्य पाँच सहस्र तथा दूसरे का चार सहस्र रुपए था। अफ़ज़लखाँ तथा रायरायान ने हमारे पुत्र शाहजहाँ के वकील होकर बहुत अच्छी प्रकार वह कार्य किया था इसलिए हमने दोनों के मंसब बढ़ा दिए और रायरायान को विक्रमाजीत की पदवी दी, जो हिन्दुओं में उच्चतम पदवी मानी जाती है। वास्तव में यह उन्नति देने योग्य पुरुष है। शनिवार १२ वीं को हम अहेर खेलने गए और दो नीलगाव मारा। इस कारण कि शिकारगाह पड़ाव से दूर पड़ता था हम सोमवार को साढ़े चार कोस चल कर कैद हसन ग्राम में उतरे। मंगल १५ वीं को हमने तीन नीलगाव मारे जिन में सब से बड़ा बारह मन तौल में था। इसी दिन मिर्जा रुस्तम भारी घटना से बच गया। ऐसा ज्ञात होता है कि इसने किसी पर निशाना लगाया और बंदूक चला दी। इस के अनंतर इसने बंदूक को पुनः भरा परंतु गोली के बड़ी होने से इस ने बंदूक को अपनी छाती के सहारे खड़ा कर गोली को मुख में रखा कि दाँतों से दाब कर उसे ठीक कर ले। संयोग से इसी बीच पलीते की आग बारूद के स्थान में पहुँच गई जिस से एक

हथेली भर उस की छाती जहाँ बंदूक थी जल गई और बारूद के कणों ने इसके चमड़े तथा माँस में पहुँच कर घाव कर दिया जिससे इसे बहुत कष्ट हुआ।

बुधवार १६ वीं को चार नीलगाव मारा जिसमें तीन मादा तथा एक नर था। बृहस्पति वार को हम पड़ाव के पास की एक पहाड़ी की तलहटी देखने गए जहाँ एक जल-प्रपात था। इस ऋतु में पानी बहुत कम होता है परंतु लोगों ने दो तीन दिन में बाँध बना कर पानी रोक दिया था और हमारे वहाँ पहुँचने पर जब उसे खोल दिया तब वह अच्छी प्रकार गिरने लगा। इसकी ऊँचाई बीस गज थी। पहाड़ी के सिरे पर बँट कर नीचे गिरता है। इस प्रकार मार्ग में यह स्थान लाभदायक है। उस सोते के किनारे तथा पहाड़ी की छाया में अपने नित्य के प्यालों का आनंद लेकर हम रात्रि में पड़ाव पर लौट आए। इसी दिन जैतपुर के जमींदार को, जिसे अपने पुत्र शाहजहाँ की प्रार्थना पर क्षमा कर दिया था, देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शुक्रवार १८ वीं को दो नीलगाय तथा नील गाव और शनिवार १९ वीं को दो नील गाय मारी गईं। हमारे शिकारियों ने सूचना दी कि हासिल पुर पर्गने में बहुत से शिकार हैं इसलिए हमने भारी पड़ाव को उसी स्थान पर छोड़ा और रविवार २० वीं को पास के कुछ अनुयायिओं के साथ तीन कोस दूर हासिल पुर चल दिए। मीर जमालुद्दीन अंजू के पुत्र मीर हुसामुद्दीन को, जिसकी पदवी अजुदुद्दौला थी, मंसब बढ़ा कर एक हजारी ४०० सवार का मंसबदार बना दिया। हमने यादगार हुसेन कौशबेगी तथा यादगार कोरची को जो बंगश के काम पर नियत हुए थे एक एक हाथी दिए। इसी दिन काबुल से कुछ हुसेनी अंगूर बिना बीज के आए जो पूर्णतः ताजे थे। अल्लाह मियाँ के तख्त के

इस विनम्र प्रार्थी की जिह्वा उस के कृपाओं के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने में असमर्थ है कि तीन महीने के मार्ग की दूरी पर काबुल से ये अंगूर ताजे दक्षिण में पहुँच गए। सोमवार २१ वीं को तीन छोटे नील गाय, मंगल २२ वीं को एक नील गाय तथा तीन नील गाय और बुधवार २३ वीं का एक नीलगाय मारी गई। गुरुवार २४ वीं को हाथिल पुर के तालाब पर प्यालों का जलसा हुआ। हमारे पुत्र शाहजहाँ, कुछ बड़े अमीरों तथा निजी सेवकों को प्याले वितरित किए गए। हुसेन खाँ टुकरिया के पुत्र यूसुफ खाँ का मंसब, जो खानः ज़ाद तथा आश्रय का सुपात्र था, बढ़ा कर तीन हजारी १५०० सवार का कर दिया और उसे खिलअत तथा एक हाथी देकर सम्मानित कर एवं गोंडवाने की फौजदारी पर नियत कर विदा किया। दक्षिण प्रांत के दीवान राय बिहारी दास ने आकर देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। शुक्रवार को जानसिपार खाँ झंडा पाकर सम्मानित हुआ और उसे एक घोड़ा तथा खिलअत देकर दक्षिण भेज दिया। इसी दिन हमने बंदूक से एक विचित्र निशाना लगाया। संयोग से पड़ाव के भीतर ही खिरनी का एक पेड़ था और एक 'कुरीशा' आकर एक ऊँची शाखा पर बैठ गई। हमने पत्तों के बीच केवल उस की छाती देखी और उस पर गोली चला दी, जो उस की छाती के ठीक बीच में लगी। जहाँ हम खड़े थे वहाँ से उस शाखा तक बाईस गज़ था। शनिवार २६ वीं को दो कोस चल कर हमने कमालपुर में पड़ाव डाला। इसी दिन हमने एक नील (गाय) मारी। हमारे पुत्र शाहजहाँ का एक मुख्य सर्दार रुस्तम खाँ, जिसे बुर्हानपुर से शाही सेना के साथ गोंडवाना के जमींदारों के विरुद्ध भेजा गया था, एक सौ दस हाथियों तथा एक लाख बीस हजार रुपए कर उगाह कर सेवा में उपस्थित हुआ। शुजाअत खाँ के पुत्र जाहिद का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। रविवार २७वीं

को हमने बाज तथा शाहीन से शिकार खेला। सोमवार को एक नीलगाव तथा एक बकरा मारा। नीलगाव साढ़े बारह मन का था। मंगलवार २६वीं को एक नीलगाव मारा। गोंडवाना के कार्य से लौटकर बहलोल मियानः तथा अल्लाहयार खाँ सेवा में उपस्थित हुए। बहलोल खाँ हसन मियानः का पुत्र है और मियानः एक अफगान खेल है। सेवा के आरंभ में हसन सादिक खाँ का एक सेवक था पर ऐसा सेवक था जो बादशाह को पहिचानता था और अंत में शाही सेवा में ले लिया गया तथा दक्षिण में कार्य करते हुए मर गया। इसकी मृत्यु पर इसके पुत्रों को मंसब मिला। इसे आठ पुत्र थे जिनमें दो तलवरिए होने के कारण प्रसिद्ध हुए। बड़ा पुत्र यौवन ही में मर गया। बहलोल क्रमशः उन्नति करता हुआ एक हजारी मंसबदार हो गया। इसी समय हमारा पुत्र शाहजहाँ बुर्हानपुर पहुँचा और इसे आश्रय पाने योग्य समझ कर डेढ़ हजारी १००० सवार का मंसब दिलाने को आशा दी। इस कारण कि यह कभी सेवा में नहीं उपस्थित हुआ था और देहली चूमने की बड़ी इच्छा रखता था हमने इसे दरबार बुला भेजा। यह वास्तव में अच्छा खानःजाद है, इसका हृदय साहस के कार्य से पूर्ण है और इसका बाहरी रूप भी त्रुटिपूर्ण नहीं है। हमारे पुत्र शाहजहाँ ने जिस मंसब के लिए उसे आशा दी थी, उसकी प्रार्थना पर वही दिया और सरबुलंद खाँ की पदवी देकर सम्मानित किया। अल्लाहयार कोका भी वीर युवक था और उन्नति पाने योग्य सेवक था। उसे अपनी सेवा के लिये योग्य तथा उपयुक्त समझ कर दरबार बुला भेजा था।

अज़र महीने की १ली, बुधवार को हम अहेर खेलने निकले और एक नीलगाव को मारा। इसी दिन कश्मीर के समाचार हमारे सामने उपस्थित किए गए। एक समाचार यह था कि किसी रेशम विक्रेता के गृह में दो लड़कियाँ दाँतों के सहित पैदा हुईं और जिनकी पीठें

कमर तक जुड़ी हुई थीं पर सिर, हाथ और पैर अलग-अलग थे। कुछ ही देर तक जीवित रहकर वे मर गईं। गुरुवार २री को एक तालाब के किनारे जहाँ पड़ाव पड़ा था प्यालों का जलसा हुआ। लश्कर खाँ को खिलअत तथा एक हाथी देकर हमने उसे दक्षिण प्रांत के दीवान के पद पर नियुक्त किया और उसका मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी १५०० सवार का कर दिया। आदिल खाँ के वकीलों में से प्रत्येक को दो 'कौकबे तालश्र' मुहर दिया, जिनकी प्रत्येक की तौल पाँच सौ साधारण मुहरों की थी। सरबुलद खाँ को एक घोड़ा तथा खिलअत दिया। अल्लाहयार खाँ में सेवा की योग्यता तथा उचित कार्यशीलता प्रगट थी इसलिए उसे हिम्मत खाँ की पदवी तथा खिलअत दिया। शुक्रवार ३री को साढ़े चार कोस चलकर दिख्तान पर्गना में ठहरे। शनिवार को भी साढ़े चार कोस चलकर धार नगर में पड़ाव डाला।

धार प्राचीन नगरों में से एक है और हिंदुस्तान के बड़े राजाओं में से एक राजा भोज यहाँ रहता था। उसके समय से अब तक एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो चुके। मालवा के सुलतानों के समय में भी यह बहुत दिनों तक राजधानी रही। जिस समय सुलतान मुहम्मद तुगलक दक्षिण की चढ़ाई पर जा रहा था तब उसने एक पहाड़ी पर कटे पत्थरों का एक दुर्ग बनवाया था। बाहरी ओर से यह बहुत ही भव्य तथा सुंदर है पर भीतर इसमें एक भी इमारत नहीं है। हमने इसकी लंबाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई नापने की आज्ञा दी। दुर्ग के भीतरी ओर लंबाई बारह तनाब सात गज, चौड़ाई सत्रह तनाब तेरह गज और दुर्ग प्राचीर की चौड़ाई साढ़े उन्नीस गज थी। इसकी उँचाई मुंडेर तक साढ़े सत्रह गज थी। दुर्ग का बाहरी घेरा पचपन तनाब था। आमिदशाह गोरी ने जो दिलावर खाँ नाम से प्रसिद्ध था, और जो दिल्ली के सुलतान फीरोज के पुत्र सुलतान मुहम्मद के समय में

मालवा प्रांत पर पूर्ण प्रभुत्व रखता था, दुर्ग के बाहर बस्ती के योग्य स्थान में जामअ मस्जिद बनवाया और मस्जिद के फाटक के सामने एक चौकोर लोहे का खंभा खड़ा किया। जब गुजरात के सुलतान बहादुर ने मालवा प्रांत पर अपना अधिकार किया तब उसने इस खंभे को गुजरात ले जाना चाहा। कारीगरों ने इसे गिराने में पूरी सावधानी नहीं रखी इसलिए एकाएक गिरकर यह दो टुकड़े हो गया जिसमें एक साढ़े सात गज का और एक साढ़े चार गज का था। मुटाई में खंभा सवा गज था। वह वहाँ बेकार पड़ा था इसलिए हमने आज्ञा दी कि बड़े टुकड़े को आगरे ले जायँ और बादशाह अकबर के मकबरे के आँगन में खड़ा कर दें तथा उस पर रात्रि में दीपक जलाया करें। उक्त मस्जिद में दो फाटक हैं। एक फाटक के मेहराब के आगे गद्य में कुछ वाक्य एक प्रस्तर शिला पर खुदे हुए हैं जिसका आशय है कि आमिदशाह गोरी ने इस मस्जिद की सन् ८७० हि०[1] में नींव डाली। दूसरे फाटक के मेहराब पर एक कसीदा खुदा है जिसमें के कुछ शैर यहाँ दिए जाते हैं—

समय के स्वामी, ऐश्वर्य-लोक के नक्षत्र,
सांसारिक मनुष्यों के केंद्र, पूर्णता की उच्चता के सूर्य,
मुसलमानी विधान के शरणस्थल तथा रक्षक आमिदशाह दाऊद
जिसके अच्छे गुणों पर गोर को अभिमान है।
पैगंबर के धर्म के सहायक तथा रक्षक दिलावर खाँ
जो सर्वशक्तिमान् द्वारा चुना गया है।
धार के नगर में जामअ मस्जिद का निर्माण किया है
सौभाग्यपूर्ण शुभ साइत तथा शुभ शकुन के दिन में।

---

१. पाठा० ८०७ हि० है और यही ठीक है जैसा कि आगे दिया हुआ है।

आठ सौ सात का सन् व्यतीत हो चुका था
जब सौभाग्य ने आशाओं के आँगन को पूरा किया।

जब दिलावरखाँ की मृत्यु हो गई उस समय ऐसा कोई बादशाह नहीं था जिसका सारे हिंदुस्थान पर प्रभुत्व हो और वह समय उपद्रव का था। दिलावरखाँ का पुत्र होशंग जो न्यायप्रिय तथा साहसी था, अवसर समझकर मालवा की राजगद्दी पर बैठ गया। इसकी मृत्यु पर भाग्य के फेर से यह राज्य महमूद खिलजी के हाथ में चला गया जो होशंग के वजीर खानजहाँ का पुत्र था। महमूद का पुत्र गियासुद्दीन इसके बाद सुलतान हुआ और इसका पुत्र नसीरुद्दीन अपने पिता को विष देकर कुप्रसिद्धि को गद्दी पर बैठा। इसके अनंतर इसका पुत्र महमूद गद्दी पर बैठा, जिससे गुजरात के सुलतान बहादुरशाह ने मालवा प्रांत ले लिया। मालवा के शासकों का वंश महमूद के साथ समाप्त हो गया।

सोमवार ६वीं को हम अहेर खेलने गए और एक नीलगाय मारी। मिर्जा शरफुद्दीन हुसेन काशगरी को हमने एक हाथी देकर बंगश प्रांत के कार्य पर जाने की आज्ञा दी। ऊदाराम को एक जड़ाऊ खंजर, सौ तोले की एक मुहर और बीस सहस्र दर्ब उपहार दिया। मंगलवार ७वीं को हमने धार के तालाब में एक मगर मारा। यद्यपि उसके थूथन का सिरा केवल दिखलाई पड़ता था और सारा शरीर पानी में छिपा हुआ था पर हमने केवल कल्पना से गोली चला दी तथा उसके फेफड़े में गोली मार कर उसे एक ही गोली में समाप्त कर दिया। मगर भी घड़ियाल ही के जाति का होता है, हिंदुस्थान की प्रायः सभी नदियों में रहता है और बड़े भारी भारी होते हैं। यह भी बड़ा भारी था। आठ गज लंबा और एक गज चौड़ा मगर हमने देखा है। रविवार को साढ़े चार कोस चलकर सदलपुर पहुँचे। इस ग्राम में एक नदी है

जिस पर नसीरुद्दीन खिलजी ने एक पुल बनवाया और इमारतें बनवाईं। यह कालियादह के समान स्थान है और दोनों उसी के निर्मित हैं। यद्यपि यह इमारत प्रशंसा के योग्य नहीं है तब भी यह नदी के तल में बनी है और इसमें नहरें तथा बावलियाँ भी बनाई गई हैं इसलिए कुछ विशेषता युक्त है। रात्रि में हमने नहरों तथा सोतों के चारों ओर दीपक बालने की आज्ञा दी। गुरुवार ९वीं को प्याले का जलसा हुआ। इसदिन हमने अपने पुत्र शाहजहाँ को एक लाल जो एक रंग का तथा तौल में ९टाँक ५ सुर्ख का था एवं जिसका मूल्य सवा लाख रुपए था, दो मोतियों सहित दिया। इस लाल को हमारे जन्म के समय हमारे पिता को मरियमुज्जमानी ने दिया था जो अकबर की माता थीं और जो हमारे मुख दिखलाने के समय उपहार रूप में दिया गया था। यह हमारे पिता के सिरपेच में बहुत समय तक रहा। उनके अनंतर यह बहुत दिनों तक हमारे सिरपेच में रहा। इसके मूल्य तथा अच्छाई के सिवा इस साम्राज्य के लिए विशेष शुभ सूचक बहुत दिनों तक रहा इसलिए हमने इसे अपने पुत्र को दिया। मुबारिजखाँ का मंसब डेढ़ हजारी १५०० सवार का करके उसे मेवात प्रांत का फौजदार नियत किया और उसे खिलअत, एक तलवार और एक हाथी उपहार देकर सम्मानित किया। रुस्तमखाँ के पुत्र हिम्मतखाँ का एक तलवार दी गई। हमने कमालखाँ शिकारी को, जो पुराने सेवकों में से एक है और जो अहेर के समय सर्वदा हमारे साथ रहा है, शिकारखाँ की पदवी दी। ऊदाराम को दक्षिण प्रांत की सेवा में नियत कर तथा उसे खिलअत, एक हाथी और तीव्रगामी घोड़े देकर वहाँ भेजा और उसके हाथ से सेनापति खानखानाँ अतालीक को एक विशिष्ट जड़ाऊ खंजर भेजा। शुक्रवार १०वीं को हम ठहरे रहे। शनिवार ११वीं को साढ़े तीन कोस कूचकर हमने हलवात ग्राम में पड़ाव डाला। रविवार १२वीं को पाँच कोस चलकर वेदनोर पर्गना में ठहरे। यह पर्गना

हमारे पिता के समय से केशोदास मारू की जागीर में चला आता है और एक प्रकार से उसका देश हो गया है। उसने यहाँ उद्यान तथा गृह आदि बनवाए हैं। इनमें से एक बावली कुँआ है जो मार्ग पर बना है और बड़ा सुंदर बना है। हमने निश्चय किया कि यदि सड़क के किनारे कहीं भी कुँए बनाए जायँ तो ऐसे ही बनाए जायँ। कम से कम दो ऐसे अवश्य हों।

सोमवार १३वीं को हम शिकार खेलने गए और एक नीलगाव मारा। नूरबख्त हाथी जिस दिन से हमारे खास हथसाल में रखा गया उसी दिन से आज्ञा हुई कि उसे महल के आँगन में बाँधा करें। पशुओं में हाथियों को पानी से सबसे अधिक रुचि होती है। वे जाड़े में ठंढी हवा होते भी पानी में घुस जाने से प्रसन्न होते हैं और यदि इतना पानी कहीं न हो कि वे उसमें उतर सकें तो वे मशकों से सूँड़ में पानी भरकर अपने शरीर पर छोड़ते हैं। हमारे ध्यान में आया कि हाथी कितना भी पानी से प्रसन्न होते हों और उनकी प्रकृति के अनुकूल भी हो पर जाड़े में ठंढे पानी का उनपर अवश्य प्रभाव पड़ता होगा। इसलिए हमने आज्ञा दी कि उनके सूँड में भरकर अपने शरीर पर छोड़ने के पहले पानी को साधारण गर्म कर दिया करें। जब अन्य दिनों ठंढा पानी शरीर पर छोड़ते थे तो स्पष्टतः वे काँपते ज्ञात होते थे और गर्म जल से इसके विरुद्ध वे प्रसन्न होते थे। यह चाल पूर्णरूपेण हमारी थी।

मंगलवार १४वीं को छ कोस कूच कर हम सिलगढ़ में ठहरे। बुधवार १५वीं को माही नदी पारकर हम रामगढ़ में ठहरे। वीफै १६वीं को छ कोस का कूच हुआ और जहाँ पड़ाव डाला उसी के पास एक जल प्रपात् के निकट प्यालों का जलसा किया। सरबुलंदखाँ को झंडा प्रदान कर तथा एक हाथी देकर दक्षिण के कार्य पर बिदा

किया। इसका मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १२०० सवार का कर दिया। राजा भीमनारायण गढ़ा के जमींदार का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का किया जा चुका था और अब उसे जागीर पर जाने की छुट्टी मिली। बगलाना के जमींदार राजा भेरजी को चार हजारी मंसब देकर उसे अपने देश जाने की छुट्टी दी और आज्ञा दी कि वहाँ पहुँचने पर वह अपने बड़े पुत्र युवराज को दरबार भेज दे जिस में हमारी दृष्टि के सामने सेवा कार्य करे। हमने हाजो बलूच को, जो अहेरियों का मुखिया तथा पुराना कर्मठ सेवक था, बलूच खाँ की पदवी दी। शुक्रवार १७ वीं को पाँच कोस चल कर धावला ग्राम में उतरे। शनिवार १८ वीं कुर्बान का त्योहार था और उस के मनाने के अनंतर सवा तीन कोस चल कर हम नागौर ग्राम के तालाब पर ठहरे। रविवार १९ वीं को पाँच कोस कूच कर शाही झंडे समरिया ग्राम के तालाब के किनारे गाड़े गए। सोमवार २० वीं को सवा चार कोस चल कर दोहद परगना के मुख्य स्थान पर उतरे। यह पर्गना मालवा तथा गुजरात प्रांतों की सीमा पर है। वेदनोर पार करने तक सारा देश जंगल था जिस में वृक्षों तथा पथरीली भूमि की अधिकता थी। मंगल २१ वीं को हम रुके रहे। बुधवार २२ वीं को सवा पाँच कोस चल कर हम रनयाद ग्राम में ठहरे। गुरुवार २३ वीं को एक ग्राम के तालाब के किनारे हम ठहरे और प्यालों का जलसा किया। शुक्रवार २४ वीं को ढाई कोस चल कर शाही झंडे जालोत ग्राम में फहराए। इसी पड़ाव पर कर्णाटक के कुछ नट आए और उन्होंने अपने करतब दिखलाए। इन में से एक ने साढ़े पाँच गज लंबी लोहे की सिकड़ी एक सेर दो दाम तौल को गले में रख ली और पानी से धीरे धीरे पेट में उतार लिया। उस के पेट में थोड़ा देर रहने के अनंतर उसने उसे बाहर निकाल लिया। शनिवार २५ वीं को हम यहीं ठहरे रहे और रविवार २६ वीं को यहाँ से पाँच कोस चल कर

नीमदइ ग्राम में उतरे। सोमवार २७ वीं को भी पाँच कोस चल कर एक तालाब के किनारे ठहर गए। मंगल २८ वीं को पौने चार कोस चलने पर शाही झंडे सहरा बस्ती के पास एक तालाब के किनारे ठहर गए। कमल का फूल, जिसे हिंदी भाषा में कुमुदिनी कहते हैं, तीन रंग का होता है—श्वेत, नीला तथा लाल। श्वेत तथा नीला तो हमने देखा था पर लाल कभी नहीं देखा था। इस तालाब में लाल रंग के बहुत फूल खिले हुए थे। बिना किसी प्रकार की शंका के ये फूल बड़े सुंदर तथा आनंददायक होते हैं। कहा है, मिसरा—

लाली तथा नमी से यह गल जायगा।

कमल (कँवल) का फूल कुमुदिनी से बड़ा होता है। इस का फूल लाल होता है। हमने कश्मीर में बहुत कँवल सौ सौ पत्ते के देखे हैं। यह निश्चित है कि यह दिन में खिलता है और रात्रि में मुँद जाता है पर कुमुदिनी इस के विरुद्ध दिन में मुँदी रहती है और रात्रि में खिलती है। काली मक्खी, जिसे हिंदुस्थान के लोग भौंरा कहते हैं, सर्वदा इन फूलों पर मँडराती रहती है और दोनों के भीतर घुस कर उन के पराग रस को पीती है। बहुधा ऐसा हो जाता है कि कँवल का फूल मुँद जाता है और मक्खी उस के भीतर रात्रि भर बंद रह जाती है। इसी प्रकार कुमुदिनी के फूल में भी रह जाती है। भ्रमर इन फूलों पर सदा रहा करता है इसलिए भारत के कवियों ने इसे इस पुष्प का प्रेमी बुलबुल के समान माना है और कविता में इस के बहुत सुंदर वर्णन दिए हैं। इन कवियों में तानसेन कलावत प्रधान है जो हमारे पिता की सेवा में था तथा अद्वितीय था। अपनी एक रचना में इस ने एक युवक के मुख की उपमा सूर्य से दी है और नेत्रों के खुलने को कँवल के खिलने के साथ भ्रमर के निकलने से समता दिखलाई है। दूसरे स्थान पर प्रिय के कटाक्ष को भ्रमर के बैठने से कँवल के हिलने से समता दिया है।

इसी स्थान पर अहमदाबाद से भेजी गई अंजीर पहुँची। यद्यपि बुर्हानपुर की अंजीर मीठी तथा बड़ी होती है पर ये अंजीर उस से अधिक मीठी और कम बीज वाली हैं। यह कहा जा सकता है कि ये पाँच प्रतिशत उस से अच्छी हैं। बुधवार २६ वीं तथा गुरुवार ३० वीं को हम ठहरे रहे। इसी पड़ाव पर अहमदाबाद से आकर सरफराज़ खाँ ने देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस की भेंट में से मोतियों की एक माला, जो ग्यारह सहस्र रुपयों में क्रय की गई थी, दो हाथी, दो घोड़े, दो बैल और एक रथ तथा गुजराती वस्त्र के कुछ थान पसंद किए गए एवं बाकी लौटा दिए गए। सरफ़राज़ खाँ मुसाहिबबेग का पौत्र है और इसी दादा के नाम से अकबर के द्वारा यह पुकारा जाता था, जो हुमायूँ के अमीरों में से एक था। अपने राज्य काल के आरंभ में हमने इस का मंसब बढ़ा कर इसे गुजरात प्रांत में नियत कर दिया था। खानःजाद होने के कारण दरबार से पैतृक संबंध रखने से इसने गुजरात प्रांत में अच्छी योग्यता दिखलाई। आश्रय पाने योग्य समझ कर हमने इसे सरफराज़ खाँ की पदवी दी, ससार में उसे उच्चतर किया और इस का मंसब बढ़ा कर दो हजारी १००० सवार का कर दिया।

शुक्रवार पहली दै महीने को पौने चार कोस कूच कर जसोद के तालाब के किनारे हमने डेरा डाला। इसी पड़ाव पर खिदमतियों के दारोगा राय मान ने एक रोहू मछली पकड़ा और ले आया। इस कारण कि हमें मछली का मांस, विशेष कर रोहू का, बहुत अच्छा लगता है, जो हिंदुस्थान की मछलियों में सबसे अच्छी होती है और बहुत जाँच-खोज करने पर भी घाटी चाँद पार करने के अनंतर अब तक ग्यारह महीने में एक भी नहीं मिली थी, हम बहुत प्रसन्न हुए। हमने राय मान को एक घोड़ा पुरस्कार में दिया। यद्यपि दोहद पर्गना गुजरात प्रांत की सीमा के अंतर्गत माना जाता है पर वास्तव

में इसी पड़ाव से सभी वस्तुएँ भिन्न दिखलाई पड़ने लगती है। खुलते मैदान तथा मिट्टी भिन्न प्रकार की है और मनुष्य भी भिन्न हैं तथा उन की भाषा भी दूसरे प्रकार की है। मार्ग में जो जंगल मिलता था उस में फल वाले वृक्ष जैसे आम, खिरनी और हलदी के बहुत थे और बोए जुते हुए खेतों की रक्षा के लिए जक्कूम के झाड़ लगाए जाते हैं। खेतिहर लोग अपने खेतों को अलग करने के लिए नागफनी लगाते हैं और आने-जाने के लिए बीच में पतला मार्ग छोड़ देते हैं। यह सारा प्रांत बलुई भूमि से भरा है इसलिए जरा भी चलने-फिरने से ऐसा गर्द उड़ता है कि लोगों के मुख कठिनाई से दिखलाई पड़ते हैं इस कारण अहमदाबाद को गर्दाबाद कहना चाहिए। शनिवार २री को पौने चार कोस चलकर हमने माही नदी के किनारे डेरा डाला। रविवार ३री को पुनः पौने चार कोस चलकर बर्दला ग्राम में हम ठहरे। इस पड़ाव पर बहुत से मंसबदार जो गुजरात में सेवा कार्य पर नियत थे देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त करने को उपस्थित हुए। सोमवार ४थी को पाँच कोस चलकर शाही झंडे चित्रसीमा में ठहरे और दूसरे दिन मंगल को भी पाँच कोस चलकर मोंडा पर्गना पहुँचे। इसी दिन तीन नीलगाव मारे गए। इनमें से एक सब से बड़ा था और तौल में तेरह मन दस सेर था। बुधवार ६ठी को छ कोस की यात्रा कर नरयाद में ठहरे। बस्ती में से जाते समय डेढ़ सहस्र रुपये हमने लुटाए। गुरुवार ७वीं को साढ़े छ कोस चलकर हम पितलाद पर्गना में रुके। गुजरात प्रांत में इससे बड़ा कोई पर्गना नहीं है। इसकी आय सात लाख रुपए है, जो तेईस सहस्र एराकी तूमान के बराबर है। यहाँ की बस्ती घनी है। इसके बीच से जाते समय हमने एक सहस्र रुपए लुटाए। हमारा मन सदा इस विचार में रहता है कि किसी बहाने खुदा के मनुष्यों का लाभ पहुँचे। इस प्रांत के लोगों की सवारी विशेष कर रथ है इसलिए हमने भी उसी में यात्रा करना चाहा।

हम दो कोस तक एक रथ में बैठकर गए पर धूल से बड़ा कष्ट हुआ तब इसके अनंतर पड़ाव तक हम घोड़े पर सवार होकर गए। मार्ग में मुकर्रब खाँ अहमदाबाद से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक मोती भेंट किया जिसे उसने तीस सहस्र रुपए में क्रय किया था। शुक्रवार ८वीं को साढ़े छ कोस चलकर खारे समुद्र के किनारे पर हमारा पड़ाव पड़ा।

खंभात पुराने बंदरों में से एक है। ब्राह्मणों के अनुसार कई सहस्र वर्ष पहले इसकी नींव पड़ी थी। आरंभ में इसका नाम त्र्यंबावती था और इस देश का राजा त्र्यंबक कुँअर था। उक्त राजा के संबंध में ब्राह्मणों ने जो बातें बतलाईं उन सब का विस्तार से वर्णन करने में बहुत समय लग जायगा। संक्षेप में यह कि जब उक्त राजा के पौत्र अभयकुमार का शासनकाल आया तब इस नगर पर एक भारी ईश्वरी विपत्ति पड़ी। इस नगर पर इतनी धूलि और मिट्टी गिरी कि सारे घर-मकान भर कर छिप गए और बहुत से मनुष्यों की जीविका के साधन नष्ट हो गए। इस संकट के आने के पहले राजा को उस देवता ने, जिसकी यह नित्य पूजा करता था, स्वप्न में इसे इसकी सूचना दे दी थी। राजा अपने परिवार के साथ एक जहाज में सवार हो गया और इस मूर्ति को भी उस खंभे के साथ लेता गया जो मूर्ति के पीछे सहारे के लिए था। संयोग से वह जहाज भी विपत्ति के अंधड़ में पड़कर डूब गया पर राजा का अभी जीवन था, इसलिए वह उस खंभे के आसरे किनारे पहुँच गया। इसने नगर का पुनः निर्माण करने का निश्चय किया। इसने खंभे को पुनः नगर तथा बस्ती बसाने के स्मारक रूप में लगवा दिया। हिंदी भाषा में इसे स्तंभ या खंभ कहते हैं इसलिए इसका नाम स्तंभनगरी या खंभावती पड़ा और कभी-कभी राजा के नाम पर इसे त्र्यंबावती भी कहते हैं। क्रमशः अधिक प्रयोग से रूप बिगड़ कर खंभात हो गया। यह बंदर हिंदुस्थान के भारी बंदरों

में से एक है और एक खाड़ी के पास है, जो ओमन के समुद्र की अनेक खाड़ियों में से एक है। अनुमान किया गया है कि यह सात कोस चौड़ा और तीस कोस लंबा है। जहाज इस खाड़ी में नहीं आ सकते इसलिए गोगा बंदर में लंगर डालते हैं, जो खंभात के अधीन है और समुद्र के पास स्थित है। वहाँ से गुराबों पर माल लादकर वे खंभात बंदर में लाते हैं। इसी प्रकार जहाज लादने के समय भी वे गुराबों में माल ले जाकर जहाजों पर चढ़ाते हैं। विजयी शाही सेना के पहुँचने के पहले योरोपिअन बंदरों के कुछ गुराब खंभात में क्रय-विक्रय करने आए थे और लौटने को थे। सूर्यवार १०वीं को उन्होंने सब सजाकर हमें निरीक्षण कराया और आज्ञा लेकर अपने काम से चले गए। सोमवार ११वीं को हम स्वयं एक गुराब पर सवार होकर एक कोस तक समुद्र पर गए। मंगलवार १२वीं को चीतों को लेकर अहेर को गए और दो हरिण पकड़कर लाए। बुधवार १३वीं को तरंगसार तालाब देखने गए और मार्ग में बाजारों तथा सड़कों पर जाते समय लगभग पाँच सहस्र रुपए लुटाए। सम्राट् अकबर के समय में बंदर के निरीक्षक कल्याण राव ने बादशाही आज्ञा से ईंट तथा मसाले की एक दीवाल नगर के चारों ओर बनवाया और चारों ओर से बहुत से व्यापारी आकर उसके भीतर बस गए जिन्होंने अच्छे-अच्छे मकान बनवा कर व्यापार आरंभ किया तथा सुविधा से कालयापन करने लगे। यद्यपि बाजार छोटा है पर बहुत स्वच्छ तथा घना बसा है। गुजरात के सुलतानों के समय इस बंदर का आय एक अच्छी रकम थी। अब हमारे राज्यकाल में आज्ञा थी कि चालीस में एक से अधिक न लें। अन्य बंदरों में इस कर को दस या आठ में एक लेते हैं और व्यापारियों तथा यात्रियों को अनेक प्रकार का कष्ट देते हैं। जद्दा में जो मक्का का बंदरगाह है, चार में एक या अधिक लेते हैं। इससे समझा जा सकता है कि गुजरात के पहले शासकों के समय में

यहाँ के बंदरों की कितनी आय रही होगी। अल्लाह की प्रशंसा है कि अल्लाह के तख्त के इस प्रार्थी ने यह पुण्य कार्य किया कि अपने साम्राज्य के कुल इस प्रकार के कर उठा दिए जो बहुत भारी रकम थी और तमगा नाम ही हमारे साम्राज्य से उठ गया। इसी समय हमने आदेश दिया कि सोने-चाँदी के तनगा साधारण मुहर और रुपए के दूने तौल के ढाले जायँ। सोने के सिक्कों पर एक ओर 'जहाँगीर शाही सन् १०२७' और दूसरी ओर 'खंभात में १२वें जलूसी वर्ष' खुदा रहता था। चाँदी के सिक्कों पर एक ओर 'सिक्का जहाँगीर शाही १०२७' और इसके चारों ओर एक मिसरा जिसका अर्थ था 'विजयी किरण शाह जहाँगीर ने ढलवाया' खुदा था और दूसरी ओर '१२वें जलूसी वर्ष में खंभात में' था जिसके चारों ओर दूसरा मिसरा खुदा था तथा इसका अर्थ था 'जब दक्षिण के विजय के अनंतर मांडू से गुजरात आया।' हमारे सिवा किसी अन्य के राज्यकाल में तनका ताँबे को छोड़कर अन्य धातु के नहीं बने थे, सोने-चाँदी के तनका हमी ने बनवाए थे। हमने इन्हें जहाँगीरी सिक्के नाम दिए। गुरुवार १४वीं को खंभात के मुत्सद्दी अमानतखाँ की भेंट जनाने महल में हमारे सामने उपस्थित की गई। इसका मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ४०० सवार का कर दिया। नूरुद्दीन कुली का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी ६०० सवार का कर दिया। शुक्रवार १५वीं को नूरबख्त हाथी पर सवार होकर हमने उसे घोड़े के पीछे दौड़ाया। वह बड़ी अच्छी प्रकार दौड़ा और रोके जाने पर सुंदरता के साथ खड़ा हो गया। तीसरी बार हम इस पर सवार हुए थे। शनिवार १६वीं को जयसिंह के पुत्र रामदास का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ७०० सवार का कर दिया। रविवार १७वीं को दाराबखाँ, अमानतखाँ और सैयद बायजीद बारहा प्रत्येक को एक एक हाथी दिया। इन थोड़े दिनों में जब हम समुद्र के किनारे पर ठहरे हुए थे खंभात के व्यापारियों, व्यवसायिओं, निवासियों तथा अन्य

बसनेवालों को अपने सामने बुलाकर उनकी स्थिति के अनुसार खिलअत, घोड़ा, यात्रा-व्यय या सहायता दिया। इसी दिन अहमदाबाद की शाह आलम मस्जिद के सज्जादनशीन सैयद मुहम्मद, शेख मुहम्मद गौस के पुत्रगण, मियाँ वजीहुद्दीन के पौत्र शेख हैदर तथा वहाँ के अन्य शेखगण हमसे मिलने के लिए अभिवादन करने आए। हमारी इच्छा समुद्र तथा ज्वार-भाटा देखने की थी इसलिए हम दस दिन ठहरे और मंगलवार १९वीं को अहमदाबाद की ओर लौटे।

इस स्थान में जो सब से अच्छे प्रकार की मछली प्राप्त होती है उन्हें अरबीयात कहते हैं और यहाँ के मछुए उन्हें पकड़ कर हमारे लिए लाते थे। निश्चयतः ये मछलियाँ हिंदुस्थान की अन्य प्रकार की मछलियों की तुलना में अधिक स्वादिष्ट तथा अच्छी हैं पर ये रोहू के स्वाद को नहीं पहुँचतीं। ऐसा कहा जा सकता है कि नौ तथा दस का या आठ तथा दस की भिन्नता है। गुजरात के लोगों का विशिष्ट खाद्य बाजरे की खिचड़ी होती है, जिसे लजीजः भी कहते हैं। यह एक प्रकार का फटा अन्न है जो हिंदोस्थान छोड़ कर अन्य देशों में नहीं होता और भारत के अन्य प्रांतों की तुलना में गुजरात में बहुत अधिक होता है। यह अन्य अन्नों से सस्ता होता है। हमने कभी इसे नहीं खाया था इस लिए इसे बनाकर लाने की आज्ञा दी। इसमें अच्छे स्वाद का अभाव नहीं है और हमारे लिए सुपथ्य भी है इसलिए हमने आज्ञा दी कि जिन दिनों हम निरामिष भोजन करते हैं और मांस से विरक्ति रखते हैं उन दिनों कभी कभी यह खिचरी भी लाया करें।

उक्त मंगलवार को हमने सवा छ कोस कूच कर कोसाला ग्राम में पड़ाव डाला। बुधवार २० वीं को बावरा पर्गना पार कर नदी के किनारे ठहरे। यह कूच छ कोस का था। गुरुवार २१ वीं को हम

रुके रहे और नदी के तट पर प्यालों का जलसा किया। इस नदी में बहुत झख मारे और उन सब को जलसे में उपस्थित सेवकों में वितरित कर दिया। शुक्रवार २२ वीं को चार कोस चल कर वारीछा ग्राम में पड़ाव डाला। इस सड़क पर बहुत सी दीवालें ढाई गज से तीन गज लंबी दिखलाई पड़ीं और पूछने पर ज्ञात हुआ कि लोगों ने पुण्य अर्जन करने के लिए बनवाई हैं। जब श्रमिक चलते हुए मार्ग में थक जाता है तब वह अपना बोझ इन्हीं दीवालों पर रख कर साँस लेता है और सुस्ता लेनेपर पुनः सुगमता से बिना किसी दूसरे की सहायता के उठा कर अपने गंतव्य स्थान को चल देता है। यह गुजरात के आदमियों की विचित्र कल्पना है। हमें भी इन दीवालों का बनवाना अच्छा लगा और हमने आज्ञा दिया कि हिंदुस्थान के सभी नगरों में शाही कोष के व्यय से ऐसी दीवालें बनवा दी जायँ। शनिवार २३वीं को पौने पांच कोस चलकर कँकड़िया तालाब पर पड़ाव पड़ा। अहमदाबाद नगर का संस्थापक सुलतान अहमद के पौत्र कुतुबुद्दीन मुहम्मद ने यह तालाब बनवाया तथा इसके चारों ओर पत्थर एवं मसाले से सीढ़ियाँ लगवाईं। इस तालाब के बीच में उसने एक छोटा सा उद्यान तथा गृह बनवाए। तालाब के तट से उन गृहों तक जाने आने के लिए एक मार्ग भी बनवाया था। इस निर्माण कार्य को बहुत दिन हो गए थे इससे अधिकतर इमारतें खँडहर हो गई थीं और बैठने योग्य स्थान नहीं बचा था। जिस समय सौभाग्यवाहिनी सेना अहमदाबाद की ओर चलने को हुई उसी समय गुजरात के बख्शी सफी खाँ ने सरकारी व्यय से टूटे हुए तथा गिरे हुए स्थानों का जीर्णोद्धार कराया तथा छोटे उद्यान को साफ कराकर नई इमारत उसमें बनवाई। निश्चय ही यह स्थान रमणीक तथा आनंददायक है। इसकी बनावट से हम प्रसन्न हुए। जिस ओर आने-जाने के लिए मार्ग बना है उधर निजामुद्दीन अहमद ने, जो हमारे पिता के समय कुछ दिन गुजरात

का बखशी था तालाब के किनारे एक बाग लगवाया है। इसी समय हमें सूचना मिली कि अब्दुल्ला खाँ ने निजामुद्दीन अहमद के पुत्र आबिद के साथ झगड़ा हो जाने के कारण इस उद्यान के वृक्ष कटवा डाले हैं। यह भी हमने सुना कि अपने शासन-काल में मदिरा के एक उत्सव में इसने संकेत करके अपने दास के द्वारा एक अभागे मनुष्य का सिर कटवा लिया, जो हँसी-मसखरेपन में कम नहीं था और जिसने उन्मत्तता की अवस्था में हँसी में कुछ अनुचित बातें कह दी थी। इन दोनों बातों को सुनकर हमारी न्यायप्रियता को चोट पहुँची और हमने दीवानों को आज्ञा दी कि उसके दो अस्पः सेहअस्पः सवारों में से एक सहस्र एक अस्पः कर दें तथा उसकी जागीर में से वेतन की भिन्नता, जो सत्तर लाख दाम होती है, काट लें।

इस पड़ाव के पास मार्ग पर शाहआलम का मकबरा था इस लिए हमने उस में फातिहा पढ़ा। इस मकबरे के बनाने में एक लाख रुपए लगे थे। शाह आलम कुतुब आलम का पुत्र था और इस का वंश मखदूम जहाँनियान तक पहुँचता है। इस देश के मनुष्य छोटे-बड़े इन पर विचित्र श्रद्धा रखते हैं और कहते हैं कि शाह आलम मृतक को जिला देते थे। कई मृतकों को जिला देने के अनंतर इस की सूचना इन के पिता को मिली और तब उन्होंने इन्हें मना किया कि ईश्वरीय सृष्टि रूपी कारखाने में इस प्रकार हस्तक्षेप करना अहंता तथा अधीनता का विरोध है। ऐसा हुआ कि शाह आलम की एक सेविका निस्संतान थी परंतु शाह आलम की प्रार्थना से ईश्वर की कृपा से उसे एक पुत्र हुआ। जब वह २७ वर्ष की अवस्था में मर गया तब वह सेविका रोती-कलपती इन के सामने आकर कहने लगी कि मेरा पुत्र मर गया और वही हमारा एक मात्र संतान था। आप की कृपा से ईश्वर ने उसे हमें दिया था और हमें आशा है कि आप की ही प्रार्थना

से वह जी उठेगा । शाह आलम यह सुन कर विचार में पड़ गए और अपनी कोठरी में चले गए । तब वह सेविका उनके पुत्र के पास गई जो उस से बहुत स्नेह करता था और उस से उस के पुत्र को जिला देने के लिए अपने पिता से कहने को भेजा । वह पुत्र जो बालक था अपने पिता की कोठरी में गया और पिता से प्रार्थना करने लगा। शाह आलम ने कहा कि यदि तुम अपना जीवन देने में संतुष्ट हो तो हमारी प्रार्थना स्वीकृत हो सकती है। बालक ने कहा कि हम आप की इच्छा तथा परमेश्वर की कृपा से संतुष्ट हैं। शाह आलम ने लड़के को हाथ पकड़ कर उठा लिया और आकाश की ओर मुख कर कहा कि इस बालक को तू उस के बदले में ले ले। तत्काल इस बालक का प्राण अल्लाह के पास पहुँच गया और शाह आलम ने उसे अपने बिछावन पर लिटा कर चादर से उस का मुख ढँक दिया। इस के अनंतर बाहर निकल कर सेविका से कहा कि घर जाकर अपने लड़के का समाचार ले, स्यात् वह तंद्रा में रहा हो, मरा न हो। जब वह घर पहुँची तब लड़का उसे जीवित मिला। संक्षेप में गुजरात में शाह आलम के संबंध में ऐसी बहुत सी बातें सुनी जाती हैं। हमने स्वयं सैयद मुहम्मद से, जो वहाँ के सजादनशीन तथा ज्ञान, विचार आदि में किसी प्रकार कम नहीं थे, पूछा कि वास्तविक बातें क्या हैं? उस ने कहा कि हमने भी अपने पिता तथा पितामह से ये बातें सुनी हैं और परंपरा से सुनने में चली आती हैं पर तत्व को ईश्वर ही जानता है। यद्यपि ये बातें विवेक बुद्धि के परे हैं पर मनुष्यों में ये प्रचलित हैं इस लिए विचित्र घटना होने से यहाँ लिख दी गई हैं। इस मृत्यु लोक से उन के अमरलोक जाने की घटना सन् ८८० हि० में सुलतान महमूद बैकुरा के समय हुई थी और यह मकबरा ताज खाँ तरियानी ने बनवाया था, जो महमूद के पुत्र सुलतान मुजफ्फर के अमीरों में से एक था।

हमारे नगर में प्रवेश करने की साइत सोमवार को निकली थी इस लिए रविवार २४ वीं को हम यहीं ठहरे रहे। इसी स्थान पर कारिज़ के कुछ खरबूजे आए, जो हिरात के अंतर्गत एक नगर है, और यह निश्चित है कि खुरासान भर में कारिज़ से खरबूजे अन्यत्र नहीं होते। यद्यपि इसकी दूरी यहाँ से चौदह सौ कोस है और काफ़िलों को पहुँचने में पाँच महीने लगते हैं पर ये पके हुए ताजे पहुँच गए थे। वे इतना लाए थे कि सब नौकरों तक के लिए काफी हो गया। इसी के साथ बंगाल से कमला नीबू भी आए, जो एक हजार कोस की दूरी से आने पर भी बहुत से ताजे थे। यह फल अत्यंत सुकुमार तथा स्वादिष्ट होता है इसलिए ये आवश्यकतानुसार डाक चौकी से आते हैं और हाथों हाथ पहुँच जाते हैं। अल्लाह को धन्यवाद देने में हमारी जिह्वा परास्त हो जाती है। मिसरा—

तेरी कृपाओं के लिए धन्यवाद देना तेरी कृपा है।

इसी दिन अमानत खाँ ने दो हाथियों के दाँत भेंट किए, जो बहुत बड़े थे और जिन में एक तीन हाथ आठ तसू लंबा और सोलह तसू मुटाई में था तथा इस का तौल तीन मन दो सेर अर्थात् साढ़े चौबीस मन एराकी था। सोमवार २५ वीं को छ घड़ी बीतने पर हम प्रसन्नता तथा आनंद के साथ शुभ लग्न में नगर की ओर चले और अपने प्रिय हाथी सूरज गज पर सवार हुए, जो स्वरूप तथा प्रकृति दोनों में पूर्ण है। यद्यपि यह मस्त था पर हमें अपनी सवारी की कुशलता तथा उस के सुंदर चाल पर विश्वास था। स्त्री-पुरुषों के झुंड के झुंड इकट्ठे होकर गलियों तथा बाजारों में और फाटकों तथा दीवालों के पास सवारी देखने की प्रतीक्षा में खड़े थे। अहमदाबाद नगर उस की सुनी हुई प्रशंसा के योग्य नहीं दिखलाई पड़ा। यद्यपि मुख्य बाज़ार की सड़क को चौड़ा तथा खुलासा कर दिया था पर तब भी वह वहाँ के दूकानों के उपयुक्त नहीं हुई थी। यहाँ की इमारतें लकड़ी

की बनी हुई थीं और दूकानों के खंभे पतले तथा छोटे थे। बाजारों की गलियाँ धूलि से भरी थीं और कँकड़ियाँ तालाब से कोट तक धूलि उड़ती रही। कोट को यहाँ की बोली में भादर कहते हैं। हम शीघ्रता से रुपए लुटाते चले गए। भादर का अर्थ धन्य है। भादर के भीतर गुजरात के शासकों के जो प्रासाद थे वे अंतिम पचास-साठ वर्ष के भीतर गिर कर खँडहर हो गए और अब उन का कोई अवशेष नहीं रह गया है। तिस पर भी इस प्रांत के शासन के लिए भेजे गए हमारे सेवकगण ने इमारतें बनवाई हैं। जब हम मांडू से अहमदाबाद की ओर चले तभी मुकर्रब खाँ ने पुराने स्थानों का जीर्णोद्धार कराया और बैठने के लिए आवश्यक स्थानों को जैसे झरोखा, दीवान आम आदि नए बनवाए। आज ही हमारे पुत्र शाहजहाँ के तुलादान का शुभ दिन था इसलिए हमने उसे साधारण प्रथानुसार सोने तथा अन्य वस्तुओं से तौलवाया और उस का जन्म से सत्ताईसवाँ वर्ष सुख तथा आनंद के साथ आरंभ हुआ। हमें आशा है कि वह दाता अपने इस प्रार्थी पर कृपा कर उसे जीवन तथा ऐश्वर्य के सुख भोगने के लिए चिरायु करेगा। उसी दिन हमने उस पुत्र को गुजरात प्रांत जागीर में दिया। मांडू दुर्ग से खंभात दुर्ग तक जिस मार्ग से हम गए थे एक सौ चौबीस कोस है, जिसे हमने अट्ठाईस दिन के कूचों तथा तीस दिन के ठहरने में पूरा किया था। हम दस दिन खंभात में रहे और वहाँ से अहमदाबाद इकीस कोस पर है, जिसे पाँच दिन कूच करते हुए और दो दिन ठहरते हुए हमने पूरा किया। इस प्रकार मांडू से खंभात और वहाँ से अहमदाबाद तक जिस मार्ग का हमने अवलंबन किया उस से एक सौ पैंतालीस कोस हुए, हमने ढाई महीने में पूरा किया। इस में तैंतीस दिन कूच हुए और बयालीस दिन ठहरे रहे।

मंगलवार २६वीं को हम जामअ मस्जिद देखने गए और अपने हाथ से वहाँ उपस्थित फकीरों को पाँच सौ रुपए बाँटे। अहमदाबाद

नगर के संस्थापक सुलतान अहमद का यह मस्जिद एक स्मारक है। इसमें तीन फाटक हैं और इसके हर ओर बाजार है। पूर्व की ओर खुलनेवाले फाटक के सामने सुलतान अहमद का मकबरा है। उस गुंबद में सुलतान अहमद, उसका पुत्र मुहम्मद और पौत्र कुतुबुद्दीन गड़े हुए हैं। मस्जिद के आंगन की लंबाई, मकसूरे को छोड़कर एक सौ तीन हाथ और चौड़ाई नव्यासी हाथ है। इसके चारों ओर पौने पाँच हाथ चौड़ी दालान है। आँगन की फर्श कटे ईंटों की बनी हुई है और दालानों के खंभे लाल पत्थर के हैं। मकसूरे में तीन सौ चौअन खंभे हैं, जिसके ऊपर गुंबद बना है। मकसूरे की लंबाई पछत्तर हाथ और चौड़ाई सैंतीस हाथ है। मकसूरे की फर्श, मेहराब तथा मेम्बर संगमरमर के बने हैं। पेशताक अर्थात् मुख्य मेहराब के दोनों ओर दो मीनारें कटे हुए तथा चिकने पत्थर की बनी हुई हैं जिनमें तीन खंड सुन्दर अलंकृत हैं। मेंबर की दाहिनी ओर मकसूरा के अंत में एक अलग बैठने का स्थान बना हुआ है। खंभों के बीच के स्थान में पत्थर का चबूतरा बना हुआ है और इसके चारों ओर मकसूरे की छत तक पत्थर की जालियाँ लगी हैं। इसका उद्देश्य था कि जब बादशाह शुक्रवार या ईद को निमाज को आवे तो वह अपने मित्रों तथा दरबारियों के साथ वहाँ जाकर निमाज़ पढ़े। उस प्रांत की भाषा में इसे मुलूकखाना कहते हैं। यह प्रथा तथा सावधानी वहाँ बहुत बड़ी भीड़ होने के कारण रखी गई थी। वास्तव में यह मस्जिद बहुत ही सुंदर इमारत है।

बुधवार २७वीं को हम शेख वजीहुद्दीन की दरगाह देखने गए, जो महल के पास थी और मकबरे के सिरे पर फातिहा पढ़ा गया, जो दरगाह के आँगन में है। इसे सादिकखाँ ने बनवाया था, जो हमारे पिता के मुख्य सर्दारों में से था। यह शेख शेख मुहम्मद गौस का

उत्तराधिकारी था पर ऐसा उत्तराधिकारी कि गुरु उसके शिष्यत्व के विरुद्ध कहता था। शेख वजीहुद्दीन की श्रद्धा शेख मुहम्मद गौस के बड़प्पन की द्योतक है। शेख वजीहुद्दीन प्रत्यक्ष गुणों तथा आध्यात्मिक ज्ञानों से पूर्ण थे। वह इसी नगर में तीस वर्ष हुए कि मरे और उनके अनंतर शेख अब्दुल्ला अपने पिता के इच्छापत्र के अनुसार स्थानापन्न हुए। यह बड़े विरक्त दर्वेश थे। जब इनकी मृत्यु हुई तब इनके पुत्र शेख असदुल्ला इनके स्थानापन्न हुए पर शीघ्र ही परलोक सिधार गए। इनके अनंतर इनके भाई शेख हैदर सज्जादनशीन हुए और अभी जीवित हैं। यह अपने पिता तथा पितामह की कबरों पर रहकर दरवेशों की सेवा तथा उनकी भलाई में लगे रहते हैं। साधुता के लक्षण उनके मुख पर चिह्नित हैं। शेख वजीहुद्दीन की वार्षिक उर्स का समय था इसलिए हमने डेढ़ सहस्र रुपए शेख हैदर को उत्सव के व्यय के लिए दिए और डेढ़ सहस्र रुपए उन फकीरों को स्वयं अपने हाथ से दान दिया जो वहाँ इकट्ठे हो गए थे। पाँच सौ रुपए शेख हैदर को भेंट में दिया। इसी प्रकार हमने उसके संबंधियों तथा अनुयायियों को उनकी स्थिति के अनुकूल व्यय के लिए नगद तथा भूमि भी दी। हमने शेख हैदर को आदेश दिया कि हमारे सामने उन सब दर्वेशों तथा सुपात्रों को लावें, जो उनसे संबंधित हों जिसमें वे धन तथा भूमि के लिए याचना कर सकें।

गुरुवार २८वीं को हम रुस्तमखाँ की वारी को देखने गए और मार्ग में डेढ़ सहस्र रुपए लुटाए। हिंदुस्थान की भाषा में उद्यान को वारी कहते हैं। यह उद्यान हमारे भाई शाहमुराद ने अपने पुत्र रुस्तम के नामपर बनवाया था। हमने गुरुवार का जलसा इसी उद्यान में किया और अपने कुछ निजी सेवकों को प्याले दिए। दिन के अंत में हम शेख सिकंदर की हवेली के छोटे बाग को देखने गए जो इस

उद्यान के पास ही स्थित है और जिसमें अच्छे अंजीर के पेड़ हैं। अपने हाथ से फल तोड़ कर लेने में उनमें कुछ विशिष्ट स्वाद आ जाता है और हमने कभी अंजीर अपने हाथ से नहीं तोड़ा था इसलिए इनकी अच्छाई हमें पसंद आई। शेख सिकंदर जन्मतः गुजराती है और समझदारी में कम नहीं है और गुजरात के सुलतानों के संबंध में पूरी जानकारी रखता है। आठ-नौ वर्ष हुए कि यह साम्राज्य के सेवकों में भर्ती हुआ। हमारे पुत्र शाहजहाँ ने रुस्तम खाँ को अहमदाबाद के शासन पर नियत किया था, जो उसका एक मुख्य सर्दार है और उसकी प्रार्थना पर नाम-साम्य के कारण रुस्तम की बारी उसे दे दिया। इसी दिन ईडर प्रांत का जमींदार राजा कल्याण सेवा में उपस्थित हुआ और एक हाथी तथा नौ घोड़े भेंट दिए। हमने वह हाथी उसे लौटा दिया। गुजरात की सीमा के बहुत बड़े जमींदारों में वह एक है और उसका राज्य राणा के पार्वत्य स्थान के पास है। गुजरात के सुलतानगण बराबर उसके विरुद्ध सेना भेजा करते थे। यद्यपि उनमें से कुछ ने अधीनता स्वीकार की और भेंट भी दिए पर उनमें से कोई भी स्वयं मिलने नहीं आया। जब विगत सम्राट् अकबर ने गुजरात विजय किया तब विजयी सेना इस पर आक्रमण करने को भेजी गई। जब इसने समझ लिया कि अधीनता स्वीकार करने ही में रक्षा है तब इसने सेवा तथा राजभक्ति करना स्वीकार किया और शीघ्रता के साथ सेवा में उपस्थित हुआ। उस तिथि से यह सेवकों में भर्ती हो गया। जो कोई भी अहमदाबाद के शासन पर नियत होता है उससे यह मिलने आता है और जब कभी सेवा-कार्य की आवश्यकता पड़ती है तब ससैन्य उपस्थित होता है।

शनिवार १ म बहमन महीने को हमारे १२वें जलूसी वर्ष में इस प्रांत के मुख्य जमींदारों में से एक चंद्रसेन अपने सौभाग्य के उदित

होने से सेवा में उपस्थित हुआ और नौ घोड़े भेंट किए। रविवार ३री को हमने ईडर के जमींदार राजा कल्याण, सैयद मुस्तफा तथा मीर फाजिल को हाथियाँ दिया। सोमवार को हम बाज का अहेर खेलने गए और पाँच सौ रुपए के लगभग मार्ग में लुटाए। इसी दिन बदख्शाँ से नाशपातियाँ आईं। गुरुवार ६वीं को हम सरखेज ग्राम में विजयोद्यान देखने गए और डेढ़ सहस्र रुपए मार्ग में लुटाए। शेख अहमद खत्तू की मजार रास्ते में पड़ती थी इसलिये हम पहले वहाँ गए और फातिहा पढ़ा। नागौर पर्गने में खत्तू एक बस्ती है और वही शेख का जन्म स्थान है। शेख सुलतान अहमद के समय में था, जिसने अहमदाबाद को बसाया है और वह शेख की बहुत प्रतिष्ठा करता था। यहाँ के लोग भी शेख पर बड़ी श्रद्धा रखते थे और उसे बहुत बड़ा फकीर समझते थे। शुक्रवार की रात्रि को छोटे बड़े बहुत से आदमी इस मजार में आते हैं। उक्त सुलतान अहमद के पुत्र सुलतान मुहम्मद ने इस कब्र के सिरहाने मकबरा, मस्जिद और दरगाह के रूप में बहुत सी इमारतें बनवाईं और उसके दक्षिण की ओर एक बड़ा तालाब बनवाया, जिसे पत्थर तथा मसाले से घिरवा दिया। यह इमारत उक्त मुहम्मद के पुत्र कुतुबुद्दीन के समय पूरी हुई। गुजरात के अधिकतर सुलतानों के मकबरे इसी तालाब के किनारे शेख के पायताने की ओर हैं। उस गुंबद के नीचे सुलतान महमूद बैकरा, उसका पुत्र सुलतान मुजफ्फर और सुलतान मुजफ्फर का पौत्र शहीद महमूद जो गुजरात के इस सुलतान वंश का अंतिम शासक था, गाड़े गए हैं। गुजराती भाषा में बैकरा का अर्थ ऐंठी हुई मोछें हैं और सुलतान महमूद की ऐसी ही ऐंठी हुई बड़ी मूछें थीं और इसी कारण इन्हें लोग बैकरा कहते थे। शेख की कब्र के पास एक गुंबद है। निश्चयपूर्वक शेख का मकबरा भव्य इमारत तथा सुंदर स्थान है। अनुमानतः पाँच लाख रुपए इसके निर्माण में लगे होंगे। ईश्वर ही सत्य को जानता है।

यहाँ से होकर हम विजयोद्यान में गए। यह उद्यान उसी स्थान पर बना है जहाँ सिपहसालार खानखानाँ अतालीक ने उसको परास्त किया था, जिसने मुजफ्फरखाँ पदवी धारण की थी। इसी कारण उसने इसका नाम विजय का उद्यान रखा था और गुजरात के लोग इसे फतह बारी कहते हैं। इसका विवरण इस प्रकार है कि जब सम्राट् अकबर के सौभाग्य से गुजरात प्रांत विजय हुआ और नब्बू पकड़ा गया तब एतमादखाँ ने सूचित किया कि यह गाड़ीवान का पुत्र है। सुलतान महमूद ने एक पुत्र भी नहीं छोड़ा था और गुजरात के सुलतानों के वंश में कोई नहीं रह गया था जिसे एतमादखाँ गद्दी पर बैठाता इसलिए उसने इसे ही महमूद का पुत्र कहकर घोषित कर दिया था। इसे सुलतान मुजफ्फर की पदवी देकर उसने गद्दी पर बैठा दिया। लोगों ने आवश्यकता को समझकर इसे मान लिया। हजरत अकबर ने एतमादखाँ की बात को मान्य समझा और नब्बू पर ध्यान नहीं दिया। वह कुछ दिनों तक सेवकों के साथ कार्य करता रहा और इसके मामले पर बादशाह ने विचार भी नहीं किया। इस कारण यह फतहपुर से भागा और गुजरात पहुँचकर वहाँ के जमींदारों की शरण में कई वर्ष तक रहा। जब शहाबुद्दीन अहमदखाँ गुजरात के शासन कार्य से हटाया गया और उसके स्थान पर एतमादखाँ नियत हुआ तब शहाबुद्दीनखाँ के अनुयायियों का एक झुंड, जिनका गुजरात से संबंध था, उसका साथ छोड़कर वहीं इस आशा में रह गया कि एतमाद के यहाँ काम मिल जायगा। जब एतमाद नगर में पहुँचा तब उन सब ने उससे प्रार्थना की पर उसके यहाँ कार्य नहीं मिला। अब शहाबुद्दीन के पास जाने का उनका मुख नहीं रह गया और अहमदाबाद में भी कोई आशा नहीं रह गई। इस प्रकार निराश हो जाने पर उन्होंने यह उपाय सोचा कि नब्बू से मिलकर उसे उपद्रव का कारण बनावें। इस विचार से इनमें से छ-सात सौ सवार नब्बू के पास

गए और उसे लोना काठी के साथ जिसकी शरण में वह रहता था, लिवाकर अहमदाबाद की ओर गए। जब यह नगर के पास पहुँचा तब बहुत से अवसर ढूँढ़नेवाले उपद्रवी इससे आ मिले और लगभग एक सहस्र मुगल तथा गुजराती इकट्ठे हो गए। जब एतमादखाँ को इसकी सूचना मिली तब वह अपने पुत्र शेरखाँ को नगर में छोड़कर शिहाबखाँ की खोज में शीघ्रता से चला जो दरबार की ओर जा रहा था। इसका विचार था कि उसकी सहायता से वह इस उपद्रव को शांत कर सकेगा। बहुत से मनुष्यों ने उसका साथ छोड़ दिया था और बचे हुए लोगों के मुख पर भी वह राजद्रोह के चिन्ह देख रहा था तब भी शहाबुद्दीन एतमादखाँ के साथ लौटा। परंतु उन दोनों के पहुँचने के पहले ही इधर नव्बू अहमदाबाद के दुर्ग में घुस गया था। राजभक्त लोगों ने नगर के पास अपनी सेना सज्जित की और विद्रोही गण दुर्ग से बाहर निकल कर युद्धस्थल में पहुँचे। जब विद्रोही सेना दिखलाई पड़ी तब शिहाबखाँ के बचे हुए सैनिकगण भी राजद्रोही होकर शत्रु से जा मिले। शिहाबखाँ परास्त होकर पत्तन की ओर गया, जो बादशाही सेवकों के अधिकार में था। इसका पड़ाव तथा सामान लुट गया और नव्बू विद्रोहियों को मंसब तथा उपाधि वितरित कर कुतुबुद्दीन मुहम्मदखाँ के विरुद्ध चला, जो बड़ौदा में था। इसके भी सैनिकगण ने शहाबुद्दीन के सेवकों के समान राजद्रोह का मार्ग लिया और अलग हो गए जैसा विस्तार के साथ अकबरनामा में लिखा गया है। अंत में वचन देकर भी उसने कुतुबुद्दीन मुहम्मद को मार डाला और उसका सब सामान तथा संपत्ति जो उसकी योग्यता तथा उच्चता के समान था लूट लिया। इस प्रकार नव्बू के साथ पैंतालीस सहस्र सवार सेना एकत्र हो गई।

जब ये सब घटनाएँ सम्राट् अकबर को सुनाई गईं तब उन्होंने बैरामखाँ के पुत्र मिर्जाखाँ को चुनी हुई वीर सेना के साथ उसके विरुद्ध

भेजा। जिस दिन मिर्जाखाँ नगर के पास पहुँचा उसी दिन युद्ध के लिए तैयारी की। इसके पास आठ-नौ सहस्र सवार थे और नन्बू तीस सहस्र सवार के साथ युद्ध के लिए सामने आ डटा। बहुत देर तक घोर युद्ध के अनंतर शाही झंडे विजय-समीर से हिलने लगे और नन्बू परास्त होकर अस्तव्यस्त भागा। हमारे पिता ने इस विजय के उपलक्ष में मिर्जाखाँ को पाँच हजारी मंसब, खानखानाँ की पदवी और गुजरात प्रांत की अध्यक्षता प्रदान की। खानखानाँ ने युद्धस्थल पर जो उद्यान लगवाया वह साबरमती नदी के किनारे पर स्थित है। इसने नदी के ऊँचे किनारे पर ऊँची इमारतें बनवाईं और पत्थर तथा मसाले की दृढ़ दीवाल उद्यान के चारों ओर निर्मित कराई। उद्यान एक सौ बीस जरीब भूमि पर बना है और अत्यंत रम्यस्थली है। इसमें लगभग दो लाख रुपए लगे होंगे। इसे देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। कहा जा सकता है कि सारे गुजरात में ऐसा दूसरा उद्यान नहीं है। एक गुरुवार को प्याले का उत्सव यहाँ किया और अपने निजी सेवकों को प्याले दिए और रात्रि भर रहे। शुक्रवार के दिनांत के समय मार्ग में एक सहस्र रुपए लुटाते हुए हम नगर में आए। इसी समय मालियों के दारोगा ने सूचित किया कि मुकर्रबखाँ के एक सेवक ने नदी के किनारे मेंड़ के ऊपर के चंपा के पौधों को काट डाला है। यह सुनकर हमें क्रोध आ गया और हमने स्वयं इसकी जाँच की तथा दंड देने का निश्चय किया। जब निश्चित हुआ कि यह अनुचित कार्य उसीने किया है तब हमने आज्ञा दी कि इसके दोनों अँगूठे काट लिए जायँ जिससे दूसरों को उपदेश मिले। यह भी ज्ञात हुआ कि मुकर्रबखाँ को इस घटना का ज्ञान नहीं था नहीं तो वह उसे तुरंत ही दंड देता। मंगलवार ११वीं को नगर के कोतवाल ने एक चोर पकड़ा और सामने ले आया। इसने पहले भी कई बार चोरी की थी और हर बार उसका एक-एक अंग काट लिया गया था। प्रथम बार उसका दाहिना हाथ, दूसरी बार

उसके बाएँ हाथ का अँगूठा, तीसरी बार बायाँ कान, चौथी बार अंडकोष और अंतिम बार नाक काट लिए गए थे। इतने पर भी उसने चोरी करना नहीं छोड़ा था और एक घसियारे के गृह में चोरी करने के लिए वह कल घुसा। संयोग से गृह का स्वामी जाग रहा था और उसे पकड़ लिया। परंतु इसने छुरे की कई चोट मार कर उसका अंत कर दिया। इस शोर तथा उपद्रव से उसके संबंधियों ने पहुँचकर चोर को पकड़ लिया। हमने आज्ञा दे दी कि इसे मृत के संबंधियों को सौंप दें जिसमें वे उसे पूरा दंड दें। मिसरा—

मुख की रेखाएँ तुम्हारे मस्तिष्क का विचार प्रगट कर देती हैं।

बुधवार १२ वीं को अजमत खाँ और मोतकिदखाँ को तीन सहस्र रुपए दिए गए कि वे दूसरे दिन शेख अहमद खत्तू के मकबरे में जाकर वहाँ के फकीरों तथा रहनेवालों को वितरित कर आवें। गुरुवार १३ वीं को हम अपने पुत्र शाहजहाँ के निवासस्थान पर गए और प्यालों का वहीं जलसा किया तथा अपने निजी सेवकों को प्याले दिए। हमने अपने पुत्र को सुन्दर मदन नामक हाथी दिया, जो तीव्र गति, सौंदर्य तथा सुन्दर चाल में हमारे निजी हाथियों में सबसे बढ़कर था और वेग में घोड़ों के समकक्ष था। यह अच्छे हाथियों में था और सम्राट् अकबर इसे बहुत पसंद करते थे। हमारे पुत्र शाहजहाँ को यह बहुत पसंद था और उसे बहुधा माँगा करता था। अतः निरुपाय हो कर हमने उसे सोने के सामान, सिक्कड़ आदि सहित एक हथिनी के साथ दे दिया। आदिलखाँ के वकीलों को हमने एक लाख दर्ब पुरस्कार दिया। इसी समय हमें सूचना मिली कि मुअज्जमखाँ के पुत्र मुकर्रम खाँ ने, जो उड़ीसा का प्रांताध्यक्ष था, खुरदा देश को विजय कर लिया है और वहाँ का राजा भागकर राजमहींद्री चला गया है। यह खानःजाद था और उन्नति पाने के योग्य था इसलिए हमने इसका

मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया और उसे डंका, एक घोड़ा तथा खिलअत देकर सम्मानित किया। खुरदा प्रांत शाही सेवकों के अधिकार में आ गया। इसके अनंतर राजमहेंद्री प्रांत की पारी है। हमारी आशा है कि अल्ला की कृपा से हमारी शक्ति के पैर और आगे बढ़ें। इसी समय कुतुबुल्मुल्क के यहाँ से एक प्रार्थनापत्र हमारे पुत्र साहजहाँ के पास आया कि उसके राज्य की सीमा बादशाही सीमा के पास पहुँच गई और वह दरबार का सेवा कार्य करता है इसलिए वह आशा करता है कि मुकर्रम खाँ को आदेश दिया जायगा कि वह उसके राज्य पर हाथ न बढ़ावे। मुकर्रमखाँ की वीरता तथा शक्ति का यह द्योतक है कि कुतुबुलमुल्क सा व्यक्ति उसके पड़ोसी होने पर आशंका करे।

इसी दिन इस्लामखाँ का पुत्र इकराम खाँ फतहपुर तथा उसके पड़ोस का फौजदार नियत हुआ और उसे खिलअत तथा हाथी दिया गया। हालोज के जमींदार चंद्रसेन को खिलअत, एक हाथी तथा एक घोड़ा दिया। लाचीन काकशाल को भी एक हाथी दिया गया। इसी समय मिर्जा बाकी तर्खान के पुत्र मुजफ्फर को देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसकी माँ कच्छ के जमींदार भारा की पुत्री थी। जब मिर्जा बाकी मर गया और मिर्जा जानी ठट्ठा का शासक हुआ तब मुजफ्फर मिर्जा जानी से सशंकित होकर उक्त जमींदार की शरण में चला गया। यह बचपन से अबतक उसी प्रांत में रहा। इस कारण कि शाही पड़ाव अहमदाबाद में पहुँच गया था इसलिए यह सेवा में उपस्थित हुआ। यद्यपि इसका पालन जंगल में हुआ था और सभ्य संसार के नियम प्रथा आदि से अनभिज्ञ था तब भी इसके परिवार वाले तैमूर के समय इस उच्च वंश की सेवा में रहते आए थे इसलिए हमने भी इसे आश्रय देना उचित समझा। इस समय तो हमने इसे दो सहस्र रुपए व्यय के लिए और खिलअत दिया और बाद में

उचित मंसब दिए जाने का निश्चय किया। स्यात् यह योग्य सिपाही निकले।

गुरुवार २० वीं को हम फतह-बाड़ी गए और लाल गुलाबों को देखा। एक क्यारी खूब फूली हुई थी। इस देश में लाल गुलाब बहुत नहीं होते इसलिए यहाँ इतने अधिक देखकर प्रसन्नता हुई। 'शक़ीक़' की क्यारी भी बुरी नहीं थी और अंजीर भी पक गए थे। हमने अपने हाथ से कुछ अंजीर तोड़े और उन में से सबसे बड़े को तौला। वह साढ़े सात तोले हुआ। इसी दिन कारिज़ से पंद्रह सौ खरबूजे आए। इन्हें खानआलम ने भेंट में भेजे थे। हमने एक सहस्र सेवकों में वितरित कर दिए और पाँच सौ हरमवालियों में। हमने चार दिन उद्यान में आनंद से व्यतीत किए और सोमवार २४ वीं की संध्या को नगर में आए। कुछ खरबूजे अहमदाबाद के शेखों को दिए गए जो गुजरात के खरबूजों को इन से इतना निकृष्ट देखकर चकित हो गए। वे ईश्वर की अच्छाई पर आश्चर्य करने लगे।

गुरुवार २७ वीं को हमने नगीना बाग़ में मदिरा का उत्सव किया, जो राजमहल की भूमि के भीतर था और जिसे गुजरात के एक सुलतान ने लगाया था। हमने अपने सेवकों को भरे हुए प्यालों से प्रसन्न किया। इस उद्यान में अंगूर की एक टट्टी के फल पक गए थे इसलिए हमने आज्ञा दी कि जो जो लोग पान कर रहे हैं वे अंगूर के गुच्छे अपने हाथ से तोड़ लें और खाएँ।

सोमवार १९ वीं इस्फंदारमुज़ को हम अहमदाबाद छोड़ कर मालवा की ओर चले। मार्ग में रुपए लुटाते हुए हम कँकड़िया तालाब के किनारे पहुँचे और वहाँ तीन दिन ठहरे। गुरुवार ४ थी को मुकर्रब खाँ की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। उस में कोई

भी वस्तु अलभ्य नहीं थी और कोई ऐसी वस्तु न थी जिसे हम पसंद करते इस से हमें लज्जा हुई। हमने जो लिया वह सब लड़कों को हरम में ले जाने के लिये दे दिया। हमने रत्न, मीने के बर्तन तथा वस्त्र एक लाख मूल्य के लिए और बाकी उसे लौटा दिया। लगभग एक सौ कच्छी घोड़े लिए गए पर इन में कोई अच्छे नहीं थे।

शुक्रवार ५ वीं को हमने छ कोस कूच किया और अहमदाबाद की नदी के किनारे पड़ाव डाला। हमारा पुत्र शाहजहाँ अपने एक मुख्य सेवक रुस्तम खाँ को गुजरात के शासनकार्य के लिए यहीं छोड़ रहा था इसलिए पुत्र की प्रार्थना पर हमने उसे झंडा, डंका, खिलअत और जड़ाऊ खंजर दिया। अब तक इस वंश में यह प्रथा नहीं थी कि शाहजादों के सेवकों को झंडा तथा डंका दिया जाय। उदाहरणार्थ हमारे पिता अकबर ने हम पर स्नेह तथा कृपा रखते हुए भी कभी हमारे सेवकों को उपाधि तथा डंका देने का नहीं निश्चय किया परंतु हमारा इस पुत्र के लिए इतना निस्सीम स्नेह था कि हम उसे प्रसन्न रखने के लिए सब कुछ कर सकते थे और वास्तव में वह इतना अच्छा तथा योग्य पुत्र था भी एवं युवावस्था ही से जिस कार्य में उसने हाथ लगाया उसे इस प्रकार पूरा किया कि हमें उस से पूर्ण संतोष हो गया। इसी दिन मुकर्रब खाँ ने भी घर जाने की छुट्टी ली।

शाह आलम बुखारी के पिता कुतुबआलम का मकबरा मार्ग में बटोह में पड़ता था इसलिए हम वहाँ गए और उस के मुतवल्लियों को पाँच सौ रुपए दिए। शनिवार ६ वीं को महमूदाबाद के पास की नदी में नाव पर सवार हुए और मछली मारने गए। किनारे पर सैयद मुबारक बुखारी का मकबरा है। यह गुजरात के मुख्य कर्मचारियों में से एक था और उस के पुत्र सैयद मीरान ने यह मकबरा उस के नाम पर बनवाया। यह बड़ा ऊँचा गुबंद है और एक बहुत

दृढ़ दीवाल पत्थर-चूने की इस के चारों ओर बनी है। इस के निर्माण में दो लाख रुपए से अधिक ही लगे होंगे। गुजरात के सुलतानों के एक भी मकबरे इस के दसवें अंश को नहीं पहुँचते, जिन्हें हमने देखा है। तिस पर वे सब राजे थे और सैयद मीरान केवल एक सेवक था। बुद्धि और ईश्वर की सहायता से ऐसा हुआ है। ऐसे पुत्र को सहस्र आशिष है जिस ने अपने पिता की ऐसी कब्र बनवाई। मिसरा—

जिससे पृथ्वी पर उसका स्मारक बना रहे।

रविवार को हम ठहरे रहे, मछली मारी और चार सौ पकड़ीं। इनमें से एक को डैने नहीं थे जिसे संगमाही (पत्थर-मछली) कहते हैं। इसका पेट बहुत बड़ा और फूला हुआ था इसलिए अपने सामने उसे चीरने की आज्ञा दी। पेट में एक मछली थी जिसे उसने इधर ही निगल लिया था और जिसमें अभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। हमने दोनों मछलियों को तौलने की आज्ञा दी। संग माही साढ़े छ सेर की और दूसरी दो सेर की निकली।

सोमवार ८वीं को साढ़े चार कोस चलकर मोडा ग्राम में पड़ाव डाला। यहाँ के निवासियों ने गुजरात के वर्षाऋतु की बड़ी प्रशंसा की। ऐसा हुआ कि विगत रात्रि तथा प्रातःकाल कुछ वर्षा हुई थी। जिससे गर्द बैठ गई थी। यहाँ की भूमि बलुई है। इसलिए वर्षा ऋतु में धूल भी न उड़ेगी और कीचड़ भी न होगा। खेत सभी हरे भरे तथा लहलहाते रहेंगे। जो कुछ हो वर्षाऋतु का एक नमूना हमने देख लिया। मंगलवार को साढ़े पाँच कोस चलकर जरसीमा ग्राम में हमारा पड़ाव पड़ा। यहीं समाचार मिला कि मानसिंह सेवरा ने अपनी आत्मा नर्क के स्वामियों को सौंप दिया। संक्षेप में इसका विवरण इस प्रकार है कि सेवरा काफिर हिंदुओं की एक जाति है, जो सदा नंगे सिर तथा नंगे पैर बाहर जाते हैं। इनमें से एक दल अपने बाल दाढ़ी मोछ के

नोच डालते हैं और दूसरा दल मुँड़वा डालता है। ये सिला हुआ वस्त्र नहीं पहिरते और इनका मुख्य सिद्धांत यह है कि किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए। बनिया लोग इन्हें अपना गुरु तथा उपदेष्टा मानते हैं और इनकी पूजा करते हैं। सेवड़ों की दो शाखाएँ हैं, एक को तपा तथा दूसरे को कंथाल कहते हैं। मानसिंह द्वितीय का मुखिया था और बालचंद तपों का सर्दार था। ये दोनों सम्राट् अकबर के यहाँ उपस्थित होते थे। जब सम्राट् मरे तथा खुसरू भागा और हमने उसका पीछा किया तब बीकानेर के राजा रायसिंह भुरटिया ने, जिसे अकबर की कृपा ने एक अमीर बना दिया था, मानसिंह से पूछा था कि हमारा राज्यकाल कितना है और हमारी सफलता की संभावना कैसी है? उस कलजिह्व ने, जिसने ज्योतिष के ज्ञान की तथा भविष्य-वाणी की अपनी कुशलता का बहाना कर रखा था, कहा था कि हमारा राज्यकाल अधिक से अधिक दो वर्ष रहेगा। मूर्खराज ने इस पर विश्वास कर लिया और बिना आज्ञा लिए अपने घर चला गया। इसके अनंतर जब अल्लाह ने इस प्रार्थी को चुना और हम विजयी होकर राजधानी लौटे तब वह सिर नीचा किए हुए लज्जित होता हमारे दरबार में आया। इसके साथ अंत में क्या बर्ताव हुआ वह उचित स्थान पर लिखा जा चुका है। मानसिंह को भी तीन चार महीने बाद कोढ़ हो गया और इसके अंग गल-गल कर गिरने लगे तथा अंत में इसकी ऐसी अवस्था हुई कि ऐसे जीवन से मृत्यु ही अच्छी है। यह बीकानेर में रहता था और अब जब हमें उसका स्मरण हुआ तब हमने उसे बुला भेजा। मार्ग में अधिक भय के कारण इसने विष खा लिया और नर्क के स्वामियों को अपनी आत्मा समर्पित कर दी। जब तक अल्लाह के दरबार में इस प्रार्थी के विचार सत्य तथा न्यायपूर्ण रहेंगे तब तक यह निश्चय है कि जो भी हमारे विरुद्ध कुचक्र करेगा वह उचित दंड पावेगा।

भारत के अधिकतर नगरों में सेवड़े पाए जाते हैं पर गुजरात में विशेषकर ये बहुत हैं। यहाँ बनिया ही अधिकतर मुख्य व्यापारी हैं इसलिए सेवड़े भी अधिक संख्या में बसे हैं। मंदिरों के बनवाने के सिवा इनके रहने के लिए तथा पूजा करने के लिए बहुत से मकान भी बनवा दिए हैं। वास्तव में ये मकान राजद्रोह के अड्डे हैं। बनिए अपनी स्त्रियों तथा बेटियों को सेवड़े के पास भेजते हैं, जिनमें लज्जा तथा सभ्यता का अभाव है। हर प्रकार के उपद्रव तथा झगड़े ये किया करते हैं। इसलिए हमने आज्ञा दी कि ये सेवड़े निकाल दिए जायँ और हमने फर्मान भी चारों ओर भेज दिए कि सेवड़े जहाँ भी हों वहाँ से हमारे साम्राज्य के बाहर निकाल दिए जायँ।

बुधवार १० वीं को हम शिकार खेलने गए और एक नर तथा एक मादा नीलगाय मारा। इसी दिन दिलावरखाँ का पुत्र पत्तन से आया, जो उसके पिता की जागीर है और अभिवादन किया। इसने एक कच्छी घोड़ा भेंट किया, जो बहुत ही सुन्दर पशु था और जिस पर सवारी करना आनंददायक था। गुजरात आने के समय तक किसी ने भी ऐसा अच्छा घोड़ा नहीं भेंट किया था। इसका मूल्य एक सहस्र रुपए था। गुरुवार ११वीं को हमने तालाब के किनारे मदिरोत्सव मनाया और उन सेवकों पर बहुत सी कृपाएँ कीं जो उस प्रांत में नियत किए गए थे और उन्हें जाने की छुट्टी दे दी। जिन्हें उन्नति दी गई उनमें शुजाअतखाँ अरब था जिसे ढाई हजारी २००० सवार का मंसब दिया गया। हमने इसे एक डंका, एक घोड़ा तथा खिलअत भी दिया। हिम्मतखाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ८०० सवार का कर दिया और खिलअत तथा एक हाथी दिया। किफायतखाँ को, जो इस प्रांत का दीवान नियत किया गया था, बारह सदी ३०० सवार का मंसब मिला। सफीखाँ बख्शी को एक घोड़ा तथा खिलअत दिया। ख्वाजा आकिल का मंसब डेढ़ हजारी ६५० सवार का था और यह अहदियों

का बख्शी नियत किया गया तथा आकिलखाँ की पदवी पाई। कुतुबुल् मुल्क के वकील को, जो कर ले आया था, तीस सहस्र दर्ब दिया।

इसी दिन हमारे पुत्र शाहजहाँ ने अनार तथा मीठे नीबू भेंट किए जो फराह से उसके लिए भेजे गए थे। हमने ये इतने बड़े नहीं देखे थे इसलिए तौलने की आज्ञा दी। नीबू उंतीस तोले नौ माशे और अनार साढ़े चालीस तोले हुआ। शुक्रवार १२वीं को हम शिकार खेलने गए और एक नर तथा एक मादा-नीलगाय मारा। शनिवार १३वीं को हमने दो नर तथा एक मादा नीलगाय गोली से मारा। सूर्यवार १४वीं को शेख मुहम्मद गौस के पुत्र शेख इस्माइल को एक खिलअत और पाँच सौ रुपए दिए। सोमवार १५वीं को शिकार खेलने गए और दो मादा नीलगाय गोली से मारा। मंगलवार १६वीं को गुजरात के उन शेखों को जो साथ में थे पुनः खिलअतें तथा सहायतार्थ भूमि दी। उनमें से प्रत्येक को हमने अपने निजी पुस्तकालय से एक-एक पुस्तक दी जैसे तफसीरे कशफ, तफसीरे हुसेनी तथा रौजतुल् अहवाब। हमने पुस्तकों के पीछे अपने हाथ से गुजरात आने तथा पुस्तक उपहार देने की तिथियाँ लिख दीं।

जिस समय से शाही झंडों के फहराने से अहमदाबाद सुसज्जित हुआ था उसी समय से हमारा काम दिन रात यही रहता था कि जिन लोगों को आवश्यकता हो उन्हें धन तथा भूमि देकर प्रसन्न करें। हमने शेख अहमद सदर को तथा अन्य कुशल सेवकों को आदेश दिया कि हमारे पास दरवेशों तथा याचकों को ले आवें। हमने शेख मुहम्मद गौस के पुत्रों, शेख वजीहुद्दीन के पौत्र तथा अन्य मुख्य शेखों को आदेश दिया कि जिन्हें वे योग्य पात्र समझें सामने उपस्थित करें। इसी प्रकार हमने कुछ स्त्रियों को हरम में भी नियत किया। हमारा एक मात्र प्रयत्न यही था कि हम यहाँ बहुत वर्षों के अनंतर देश के

सम्राट् के रूप में आए हैं इसलिए कोई भी आदमी न छूट जाय ईश्वर हमारा साक्षी है कि हम इस कार्य में किसी प्रकार त्रुटिपूर्ण नहीं रहे और इस कर्तव्य में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं की। यद्यपि हम अहमदाबाद की यात्रा से प्रसन्न नहीं हुए पर यह पूर्ण संतोष है कि हमारा आना बहुत से निर्धन मनुष्यों के लाभ के लिए हुआ।

मंगलवार १६ वीं को कमर खाँ के पुत्र कौकब को लोगों ने पकड़ा। यह बुर्हानपुर से फकीरों का वस्त्र पहिर कर जंगलों में चल गया था। इसका विवरण संक्षेपमें इस प्रकार है—यह मीर अब्दुल्लतीफ का पौत्र था, जो एक सैफी सैयद था और इस दरबार में भर्ती था। कौकब दक्षिण की सेना में नियत हुआ और वहाँ कुछ दिन दरिद्रता तथा कष्ट में बिताया। जब बहुत दिनों तक उसे उन्नति नहीं मिली तब उसे शंका हुई कि हमारी उस पर कृपा नहीं है और वह मूर्खता से फकीरी वस्त्र पहिर कर जंगलों में चला गया। छ महीने के समय में इस ने सारे दक्खिन का भ्रमण किया जिस में दौलताबाद, बीदर, बीजापुर, कर्णाटक तथा गोलकुंडा थे और दाभोल बंदर पहुँचा। वहाँ से जहाज़ द्वारा गोगा बंदर आया और सूरत भड़ोंच आदि बंदरों को देखता हुआ अहमदाबाद पहुँचा। इसी समय शाहजहाँ के एक सेवक जाहिद ने इसे पकड़ा और दरबार लाए। हमने आज्ञा दी कि उसे खूब बाँधकर हमारे सामने उपस्थित करें। जब हमने उसे देखा तब कहा कि अपने पिता तथा पितामह की सेवाओं पर ध्यान रखते हुए और खानः जाद होने की अपनी स्थिति देखते हुए ऐसे अकल्याणकर चाल पर क्यों व्यवहार किया? उसने उत्तर दिया कि हम अपने किब्ला तथा सच्चे गुरु के सामने असत्य नहीं बोल सकते पर वास्तव में बात इतनी ही थी कि हमने बहुत सी कृपा पाने की आशा बना ली थी पर अभाग्य से वैसा न होने पर सांसरिक बंधनों को छोड़कर जंगलों

में विरक्त हो चले गए। उसके उत्तर में सत्यता थी इसलिए उस का प्रभाव हम पर पड़ा और हमने कठोरता त्यागकर पूछा कि वह अपने दुःख के समय आदिलखाँ, कुतुबुलमुल्क या अंबर के यहाँ गया था। उस ने उत्तर दिया कि जब वह इस दरबार में असफल रहा और कृपाओं के इस असीम सागर में प्यासा रह गया तब वह, ईश्वर न करे, अन्य सोतों के पास कभी अपने ओठ नहीं ले गया। यदि इस दरबार में सिर झुकाकर फिर कहीं अन्यत्र सिर झुकाया हो तो यह सिर काटकर फेंक दिया जाय। जिस समय से यह गृहत्यागी हुआ उसी दिन से इसने दैनिकी रखी है जिसमें लिखा है कि प्रति दिन वह क्या करता था और उस की जाँच से ज्ञात हो जायगा कि उस ने कैसा व्यवहार रखा। इन बातों से उस पर हमारी दया बढ़ी और हमने उसके पत्रों को मँगवाया तथा पढ़ा। इस से ज्ञात हुआ कि इस ने बहुत कठिनाइयाँ झेली, बहुत सा मार्ग पैदल ही चलकर समय व्यतीत किया और भोजन का भी बहुत दिन कष्ट उठाया। इस कारण हमें उस पर बहुत दया आई। दूसरे दिन हमने उसे बुलवाकर उस के हाथ-पैर के बंधन खोलने की आज्ञा दे दी और उसे खिलअत, एक घोड़ा तथा व्यय के लिए एक सहस्र रुपए दिए। हमने उसका मंसब भी ड्योढ़ा कर दिया और इतनी कृपा की जिस की उसने कल्पना भी नहीं की थी। उस ने यह शैर पढ़ा—

जो मैं देख रहा हूँ वह हे ईश्वर स्वप्न है या तंद्रा ?

क्या मैं अपने को इतने कष्टों के बाद इतने सुख में पा रहा हूँ ?

बुधवार १७ वीं को छ कोस कूचकर हम बारसिनोर ग्राम में ठहरे। यह पहले लिखा जा चुका है कि कश्मीर में महामारी प्रकट हुई है। इसी दिन वाकेआनवीस की सूचना मिली कि देश में महामारी खूब फैल गई है और बहुत लोग मर गए हैं। इस के लक्षण इस प्रकार

हैं कि पहले दिन सिर में दर्द, ज्वर और नाक से रक्तस्राव होने लगता है और दूसरे दिन रोगी मर जाता है। जिस घर में एक भी मरा उस के सभी निवासी मर जाते हैं। जो भी रोगी या उस के शव के पास जाता है उसे भी वैसा ही हो जाता है। एक बार एक ऐसा शव घास पर फेंक दिया गया था और संयोग से एक गाय ने उस के नीचे की कुछ घास खा ली। वह मर गई और उस के मांस को जिन कुत्तों ने खाया वे सब भी मर गए। ऐसा वातावरण हो गया था कि मृत्यु की डर से पिता अपनी संतानों के पास तथा संतानगण अपने पिताओं के पास नहीं जाते थे। एक विचित्र घटना यह भी थी कि जिस स्थान से इस रोग का आरंभ हुआ वहाँ आग लग गई और तीन सहस्र के लगभग मकान जल गए। जिस समय महामारी पूर्ण उत्कर्ष पर थी, एक प्रातःकाल को जब नगर तथा आसपास के निवासी जगे तब उन्होंने अपने द्वारों पर चक्र बने देखे। तीन बड़े चक्र थे और उन के बीच एक मध्यचक्र तथा उस में एक छोटा चक्र बना था। इनके सिवा और भी चक्र थे पर वे स्पष्ट नहीं थे। वे चिह्न सभी मकानों पर तथा मस्जिदों पर भी बने हुए थे। जिस दिन से यह आग लगी और ये चक्र दिखलाई पड़े उसी दिन से लोग कहते हैं कि महामारी कम होने लगी। यह विवरण अपनी विचित्रता के कारण लिखा गया है। बुद्धि के नियमों से ये बातें अवश्य ही नहीं समझ पड़तीं तथा हमारा मस्तिष्क इन्हें स्वीकार नहीं कर सकता। ज्ञान ईश्वर ही को है। हम विश्वास करते हैं कि सर्वशक्तिमान् अपने पतित दासों पर दया करेगा और इस महान् कष्ट से उन लोगों को मुक्त कर देगा।

गुरुवार १८ वीं को ढाई कोस चलकर माही नदी के किनारे हम ठहरे। इसी दिन जाम जमींदार आकर सेवा में उपस्थित हुआ और पचास घोड़े, एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए भेंट किए। इस का नाम जस्सा तथा पदवी जाम है। जो भी गद्दी पर बैठता है जाम

कहलाता है। यह गुजरात के मुख्य जमींदारों में से एक है और वास्तव में हिंदुस्थान के बड़े राजाओं में से है। इस का देश समुद्र के किनारे है। यह पाँच छ सहस्र सवार सदा सुसज्जित रखता है और युद्ध काल में दस बारह सहस्र एकत्र कर लेता है। इस के देश में घोड़े बहुत हैं और कच्छी घोड़े दो सहस्र रुपयों तक मिलते हैं। हम ने इसे खिलअत दिया। इसी दिन कूच (बिहार) का राजा लक्ष्मीनारायण, जो बंगाल के अंतर्गत है, सेवा में उपस्थित हुआ और पाँच सौ मुहर भेंट की। इसे एक खिलअत तथा मीना का खंजर दिया गया। सईद खाँ का पुत्र नवाजिशखाँ, जो जूनागढ़ में नियत था, सेवा में उपस्थित हुआ।

शुक्रवार १९ वीं को हम ठहरे रहे और शनिवार २० वीं को पौने चार कोस चलकर झनोद के तालाब पर ठहरे। रविवार को साढ़े चार कोस चलकर बदरवाला के तालाब पर पड़ाव डाला। इसी दिन अजमतखाँ गुजराती की मृत्यु का समाचार आया। बीमारी के कारण यह अहमदाबाद में रह गया था। यह ऐसा सेवक था कि वह अन्य की प्रकृति समझ लेता था और अच्छा कार्य किया था। दक्षिण तथा गुजरात का उसे पूरा ज्ञान था इसलिए हमें उस की मृत्यु पर दुःख हुआ। पूर्वोक्त तालाब में हमने एक ऐसा पौधा देखा जिसकी पत्तियाँ उँगली या छड़ी के छोर के पास पहुँचने पर सिकुड़ जाती हैं। थोड़ी देर बाद फिर खुल जाती हैं। इस की पत्तियाँ हलदी की पत्तियों के समान हैं और इसे अरबी में शजरुल् हया कहते हैं, जिसका अर्थ लज्जा का वृक्ष है। हिंदी में इसे लाजवंती कहते हैं और लाज का अर्थ लज्जा है। यह वास्तव में वैचित्र्य से खाली नहीं है। इसे लोग नगज़क भी कहते हैं और यह सूखी भूमि में होती है।

सोमवार २२ वीं को हम ठहरे रहे। हमारे अहेरियों ने सूचना दी कि पास ही में एक शेर है जो यात्रियों को कष्ट देता है। जंगल में

उन्होंने एक खोपड़ी और कुछ हड्डियाँ पाई हैं जहाँ वह शेर दिखलाई पड़ा था। दोपहर के बाद हम उस का शिकार खेलने निकले और एक ही गोली में उसे मार डाला। यद्यपि यह भी बड़ा था पर हमने इस से बड़े कई शेर मारे हैं। इन में एक शेर साढ़े आठ मन का था जिसे हमने मांडू के दुर्ग में मारा था। यह शेर तौल में साढ़े सात मन अर्थात् एक मन कम था।

मंगलवार २३वीं को साढ़े तीन कोस चलकर बायब नदी के किनारे ठहरे। बुधवार को छ कोस की यात्रा कर हमदा तालाब के पास ठहरे। गुरुवार को ठहरने की आज्ञा दी, मदिरोत्सव किया और सभी खास सेवकों को प्याले दिए। हमने नवाजिशखाँ के मंसब में पाँच सदी बढ़ाकर उसे तीन हजारी २००० सवार का कर दिया और खिलअत तथा हाथी देकर अपनी जागीर पर जाने की आज्ञा दे दी। मुहम्मद हुसेन सञ्जक, जिसे घोड़ा खरीदने के लिए बलख भेजा था, आज दरबार में सेवा में उपस्थित हुआ। जिन घोड़ों को वह लाया था उनमें एक अबलक़ था और सुंदर स्वरूप तथा रंग का था। हमने पहले इस रंग का घोड़ा नहीं देखा था। यह और भी अच्छे चलनेवाले घोड़े लाया था इसलिए इसे तिजारतीखाँ पदवी दी।

शुक्रवार २६वीं को सवा पाँच कोस चलकर जालोद ग्राम में हम ठहरे। कूच के राजा के पितृव्य राजा लक्ष्मीनारायण को, जिसे हमने कूच का राज्य दिया था, एक घोड़ा मिला। शनिवार को तीन कोस चलकर बोडा में ठहरे। रविवार को पाँच कोस चले और दोहद में पड़ाव डाला। यह मालवा और गुजरात की सीमा पर है।

पहलवान बहाउद्दीन बंदूकची एक लंगूर के बच्चे को बकरी के साथ ले आया और कहा कि मार्ग में हमारे एक निशानेबाज ने पेड़ पर एक लंगूरनी को बच्चे को गोद में लिए देखा। उस दुष्ट ने माँ को

मार डाला और वह बच्चे को पेड़ पर छोड़ कर गिर पड़ी तथा मर गई। उसके बाद पहलवान बहाउद्दीन वहाँ आया और उस बच्चे को पेड़ पर से उतार कर एक बकरी के पास दूध पीने को छोड़ दिया। ईश्वर ने बकरी में स्नेह संचालित कर दिया और वह लंगूर के बच्चे को चाटने तथा स्नेह करने लगी। जातिगत विरोध होते भी वह ऐसा स्नेह दिखलाती मानों उसी के पेट से वह जन्मा है। हमने उन दोनों को अलग करने की आज्ञा दी पर वह बकरी तुरंत ही चिल्लाने लगी और लंगूर का बच्चा भी बड़ा दुखित मालूम हुआ। लंगूर का स्नेह तो इतना विचित्र न था क्योंकि उसे दूध की आवश्यकता थी पर बकरी का स्नेह उस पर विशिष्ट था। लंगूर बंदर की जाति का पशु है। बंदर का बाल पीला और मुख लाल होता है पर लंगूर के बाल श्वेत तथा मुख काला होता है। बंदर से इसकी पूछ भी दूनी होती है। वैचित्र्य के कारण हमने यह हाल लिखा है। सोमवार २९वीं को हम ठहरे रहे और नीलगाय का अहेर खेलने गए। हमने एक नर तथा एक मादा को मारा। मंगलवार ३०वीं को भी ठहरे रहे।

तेरहवाँ जलूसी वर्ष

बुधवार २३ रबीउल् अव्वल सन् १०२७ हि० (चैत्र कृ० १० सं० १६७४, ११ मार्च सन् १६१८ ई०) की संध्या को साढ़े चौदह घड़ी व्यतीत होने पर महान् प्रकाशपुंज विश्वहितैषी भगवान् भास्कर मेष राशि में पधारे। ईश्वर के राजसिंहासन के इस भिखारी की राजगद्दी के बारह वर्ष सुखपूर्वक पूरे हो गए और नव वर्ष आनंद तथा धन्यवाद देने से आरंभ हुआ। बृहस्पतिवार २ फरवरदीन इलाही महीना को हमारा चांद्र तुलादान हुआ और ईश्वर के इस दास की अवस्था का इक्यावनवाँ[1] वर्ष आरंभ हुआ। हम विश्वास करते हैं कि हमारा जीवन अल्लाह की इच्छा पूरी करने में व्यतीत होगा और एक स्वाँस भी बिना उसके स्मरण के व्यर्थ न जायगा। तुलादान के समाप्त होने पर एक नया आनंद का जलसा हुआ जिसमें हमारे घरेलू सेवकों ने भरे प्यालों के साथ उत्सव मनाया।

इसी दिन आसफखाँ के मंसब को जो पाँच हजारी ३००० सवार का था, बढ़ाकर ४००० सवार दो अस्पा सेह-अस्पा कर दिया। साबितखाँ को अर्ज मुकर्रर के पद पर नियत किया। मोतमिदखाँ को मीर आतिश का पद दिया। दिलावरखाँ का पुत्र एक कच्छी घोड़ा भेंट में लाया था। ऐसा अच्छा घोड़ा गुजरात में आने तक हमारे घुड़साल में नहीं आया था और मिर्जा रुस्तम ने इसके प्रति बड़ी रुचि दिखलाई इसलिए हमने उसे उपहार में दे दिया। जाम को हमने चार अँगूठियाँ, जिनमें हीरा, लाल, पन्ना तथा नीलम की एक एक थी, और दो बाज दिए। हमने राजा लक्ष्मीनारायण को भी चार अँगूठियाँ लाल, लहसुनिया,

---

१—यह चांद्र वर्ष के अनुसार है। सौर वर्ष के अनुसार पचास वर्ष भी नहीं हुए थे।

पन्ना तथा नीलम की दीं। मुरौवतखाँ ने तीन हाथी बंगाल से भेजे थे जिनमें से दो हमारे निजी हथसाल में रखे गए। शुक्रवार की संध्या को हमने तालाब के चारों ओर दीपक बालने की आज्ञा दी, जो देखने में बड़ा सुंदर प्रतीत होता था। रविवार को हाजी रफीक एराक से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और हमारे भाई शाह अब्बास का भेजा हुआ एक पत्र लाकर हमारे सामने रखा। उक्त व्यक्ति मीर मुहम्मद अमीनखाँ का एक दास था, जो कारवाँ का प्रधान था और जिसे मीर ने बचपन से पाल कर बड़ा किया था। वास्तव में यह अच्छा सेवक है। यह कई बार एराक गया और हमारे भाई शाह अब्बास का परिचित हो गया। इस बार यह तुपचाक घोड़े तथा अच्छे वस्त्र लाया था और इसमें से कुछ घोड़े हमारे घुड़साल में रखे गए। यह कुशल दास है और कृपा पाने योग्य सेवक है इसलिए हमने इसे मलिकुत्त-ज्जार की पदवी दी। सोमवार को हमने राजा लक्ष्मीनारायण को एक खास तलवार, मोती की एक माला और चार मोतियाँ बाले के लिए दीं। गुरुवार को हमने मिर्जा रुस्तम के पाँच हजारी १००० सवार के मंसब में ५०० सवार बढ़ा दिए। एतकादखाँ का मंसब बढ़ाकर चार हजारी १००० सवार का कर दिया। सर्फराजखाँ का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी १४०० सवार का और मोतमिदखाँ का एक हजारी ३५० सवार का कर दिया। अनोराय सिंहदलन तथा फिदाईखाँ को सौ सौ मुहर मूल्य के घोड़े दिए। पंजाब प्रांत की रक्षा तथा शासन का कार्य एतमादुद्दौला को सौंपा गया था इसलिए हमने उसकी प्रार्थना पर अहदियों के बख्शी मीर कासिम को उक्त प्रांत के शासन पर नियत किया और उसे एक हजारी ४०० का मंसब तथा कासिमखाँ की पदवी दी। यह एतमादुद्दौला का संबंधी था। इसके पहले हमने राजा लक्ष्मीनारायण को एक एराकी घोड़ा दिया था। इस दिन हमने उसे एक हाथी और एक तुर्की घोड़ा देकर बंगाल जाने की छुट्टी दे दी।

जाम को भी एक जड़ाऊ कमरबंद, जड़ाऊ माला, दो घोड़े जिनमें एक एराकी तथा एक तुर्को था और खिलअत देकर स्वदेश जाने की छुट्टी दे दी। मृत आसफखाँ का भतीजा सालिह का मंसब बढ़ाकर एक हजारी २०० सवार का कर दिया और उसे एक घोड़ा देकर बंगाल जाने की छुट्टी दे दी।

उसी दिन मीर जुमला[1] फारस से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। यह इस्फ़हान के प्रतिष्ठित सैयदों में से एक है और इसका परिवार फ़ारस में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस समय इसका भतीजा मीर रिज़ा हमारे भाई शाह अब्बास की सेवा में सदर के पद पर नियत है और शाह ने उससे अपनी पुत्री का विवाह कर दिया है। इसके चौदह वर्ष पहले फारस त्याग कर मीर जुमला गोलकुंडा मुहम्मद कुली कुतुबुलमुल्क के पास चला आया। इसका नाम मुहम्मद अमीन है और कुतुबुलमुल्क ने इसे मीर जुमला की पदवी दी है। यह दस वर्ष तक उसका मुदारे अलैही तथा साहिबे सामान रहा। कुतुबुलमुल्क की मृत्यु पर जब उसका भतीजा गद्दी पर बैठा तब उस ने इस के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। इसने छुट्टी ले ली और अपने देश चला गया। शाह ने मीर रिज़ा के संबंध से और योग्य व्यक्तियों के प्रति आदर रखने से इस पर बड़ी कृपा दिखलाई और इसका ध्यान रखा। इसने भी योग्य भेटें दीं और तीन-चार वर्ष

---

१. यह मीर जुमला शहरिस्तानी, मीर मुहम्मद अमीन है, जो अन्य मीर जुमला खानखानाँ तथा मीर जुमला मुअज्जमखाँ खानखानाँ से भिन्न है। इस की जीवनी मुग़ल दरबार भाग ४ पृष्ठ० २२३-२७ पर दी हुई है। आर० बी० यह नही समझ पाए और भ्रम में रह गए।

फारस में व्यतीत कर बहुत संपत्ति अर्जित की।[1] इसने कई बार प्रार्थना की कि वह इस दरबार की सेवा में भर्ती होना चाहता है इसलिए हमने इसे बुलाने के लिए आज्ञापत्र भेज दिया। आज्ञापत्र के पहुँचते ही इसने वहाँ का संबंध तोड़ दिया और इस दरबार की ओर चल दिया। इसी दिन इसने आकर सिज्दा किया और बारह घोड़े, रेशमी वस्त्र के नौ नौ थान के नौ संग्रह और दो अंगूठियाँ भेंट कीं। यह बड़ी भक्ति तथा सत्यता के साथ आया था इसलिए हमने उस पर बहुत सी कृपाएँ कीं और उसे बीस सहस्र दर्ब व्यय के लिए तथा खिलअत दिया।

उसी दिन हमने इनायत खाँ को कासिम खाँ के स्थान पर अहदियों का बख्शी नियत किया। हमने ख्वाजा आकिल को, जो एक पुराना सेवक है, आकिल खाँ की पदवी से सम्मानित किया और एक घोड़ा उपहार में दिया। शुक्रवार को दक्षिण से आकर दिलावर खाँ ने देहली चूमी और एक सौ मुहर तथा एक सहस्र रुपए भेंट दिए। मुलतान का फौजदार बाकिर खाँ का मंसब बढ़ाकर आठ सदी ३०० सवार का कर दिया। तिंजारत खाँ और मुलतान के जमींदार बाहू को एक एक हाथी देकर सम्मानित किया। शनिवार ११ वीं को दोहद से कूचकर हमने हाथियों का शिकार करने की इच्छा से करबारा या गरबारा में पड़ाव डाला। रविवार १२ वीं को सजारा ग्राम में ठहरे। यह दोहद से आठ कोस पर है और अहेर-स्थान यहाँ से डेढ़ कोस

---

१. यह कथन अशुद्ध है। शाह केवल मौखिक सहानुभूतिपूर्ण बातें करता रहा और भेंटों के रूप में इसका सर्वस्व अपहरण कर लेना चाहता था। इसी कारण यह भागा था। इकबाल नामा, आलम आरा आदि अनेक फारसी इतिहास-ग्रंथों से इसका समर्थन होता है।

पर है। सोमवार १३ वीं को सवेरे हम निजी सेवकों के साथ हाथी के शिकार को निकले। हाथियों के चरने का स्थान पहाड़ों में है, जहाँ ऊँचाई गहराई आदि बहुत हैं और इसलिए वहाँ पैदल भी जाना बहुत कठिन है। इसके पहले ही बहुत सी पैदल तथा सवार सेना ने कमूरगाह की चाल पर जंगल को घेर लिया था और जंगल के बाहर एक वृक्ष पर हमारे बैठने के लिए लकड़ी की मचान बना दी गई थी। इस के चारों ओर सर्दारों के बैठने के लिए भी वृक्षों पर मचान बनाए गए थे। दो सौ हाथी भी दृढ़ रक्षकों के साथ तथा बहुत सी हथिनियाँ भी तैयार रखी गई थीं। प्रत्येक हाथी पर दो दो महावत थे, जो सब जरगा (झरिया) जाति के थे और हाथी पकड़ना जिनका विशिष्ट व्यवसाय था। यह आदेश दिया जा चुका था कि वे जंगली हाथियों को जगल से हाँककर हमारे सामने लावेंगे जिसमें हम उनके पकड़े जाने का दृश्य देख सकें। ऐसा संयोग हुआ कि जब चारों ओर से मनुष्यगण जंगल में घुसे तब जंगल की गहनता तथा ऊँचाई-गहराई के कारण व्यूह छिन्न हो गया और कमूरगाह का घेरा पूरा नहीं रह गया। जंगली हाथी घबड़ा कर हर ओर भागे और केवल बारह हाथी-हथिनी इस ओर आए। इस आशंका से कि कहीं ये भी भाग न जायँ उन सब ने पालतू हाथियों को उन पर हाँक दिया और उन में से बहुतों को जिन्हें पाया बाँध दिया। यद्यपि बहुत से नहीं पकड़े गए पर उन में दो बहुत अच्छे थे, शारीरिक सौंदर्य में, अन्य अच्छी जाति के तथा शुभ चिन्हों वाले थे। जिस जंगल में हाथी थे उस में एक पहाड़ी थी और उस का नाम राकस पहाड़ था इसलिए हमने इन दो हाथियों का नाम रावन सार तथा पावन सार रखा। ये दोनों राक्षस थे। मंगलवार १४ वीं तथा बुध १५ वीं को हम यहीं ठहरे।

गुरुवार १६ वीं की संध्या को हमने यात्रा आरंभ की और करवारा

में ठहरे। हाकिम वेग[1] एक खानः जाद है इसलिए उसे हाकिम खाँ को पदवी दी और पंजाब के पार्वत्यस्थान के एक जमींदार संग्राम को तीन सहस्र रुपए दिए। गर्मी बहुत अधिक थी और दिन की यात्रा बचाना था इसलिए रात्रि में कूच करना आरंभ किया। शनिवार १८ वीं को दोहद पर्गना में पड़ाव पड़ा। रविवार १९ वीं को सूर्य, जो संसार पर कृपा करता है, मेष राशि में उच्चतम स्थान पर पहुँचा। इस दिन भारी उत्सव मनाया गया और हम तख्त पर बैठे। हमने शाहनवाजखाँ के पाँच हजारी मंसब में २००० सवार दोअस्पा सेह-अस्पा कर दिया। ख्वाजा अबुलहसन मीर बख्शी का मंसब बढ़ाकर चार हजारी २००० सवार का कर दिया। अहमदबेगखाँ काबुली को कश्मीर की प्रांताध्यक्षता मिली थी और उसने प्रतिज्ञा की थी कि दो वर्ष के भीतर वह तिब्बत तथा किश्तवार को विजय कर लेगा पर समय व्यतीत हो जाने पर भी वह यह सेवाकार्य पूरा नहीं कर सका इसलिए हमने उसे उस पद से हटा दिया और दिलावरखाँ काकिर को कश्मीर का शासन सौंपा। हमने उसे एक खिलअत तथा एक हाथी देकर बिदा किया। इसने भी लिखित वचन दिया कि दो वर्ष में वह तिब्बत तथा किश्तवार को विजय कर लेगा। मिर्जा शाहरुख का पुत्र बदीउज्जमाँ अपनी जागीर सुलतानपुर से आया और देहली चूमकर सम्मानित हुआ। इसी समय कासिमखाँ को एक जड़ाऊ खंजर तथा एक हाथी देकर पंजाब के शासन पर बिदा किया।

२१ वीं मंगलवार की रात्रि को हम उक्त पड़ाव से आगे बढ़े और विजयी सेना की बागडोर को अहमदाबाद की ओर फेरा। अधिक गर्मी तथा वायु की खराबी के कारण हमें बहुत कष्ट उठाना पड़ता और आगरा पहुँचने तक बड़ी लंबी यात्रा करनी पड़ती इससे हमने विचार किया कि ऐसे ग्रीष्म ऋतु में राजधानी जाना ठीक नहीं है। हमने गुजरात की वर्षा ऋतु की बड़ी प्रशंसा सुनी थी और अहमदाबाद के संबंध

में कोई कुप्रसिद्धि की बात नहीं सूचित हुई थी इसलिए वहीं ठहरना निश्चित किया। ईश्वर की सहायता तथा छाया सदा तथा सर्वत्र ही हम पर बनी रहती है और इसी समय समाचार भी मिला कि आगरे में महामारी के चिह्न दिखलाई पड़ने लगे हैं तथा बहुत से लोग मर रहे हैं। इस से हमारे आगरे न जाने के निश्चय का समर्थन हुआ जो दैवी अनुज्ञा द्वारा हमारे मस्तिष्क में विकसित हो गया था। गुरुवार २३ वीं का जलसा जलोद पड़ाव पर हुआ।

इस के पहले यह प्रथा थी कि सिक्का ढालने में धातु-खंडों पर एक ओर हमारा नाम तथा दूसरी ओर स्थान, महीना एवं जलूसी वर्ष उभाड़ते थे। हमारे मन में आया कि महीने के स्थान पर वे उस महीने की राशि की मूर्ति उन पर उभाडें, जैसे फरवरदीन के महीने में मेढे की और उर्दिबिहिश्त महीने में बैल की। इसी प्रकार जिस महीने में सिक्का ढाला जाय उसी की राशि का चिन्ह एक ओर इस प्रकार रहे मानों सूर्य उसी में से निकल रहे हों। यह चाल हमारी निजी है और अब तक कहीं प्रचलित नहीं हुई थी।

इसी दिन एतकादखाँ को एक झंडा दिया गया और एक झंडा मुरौवत खाँ को भी दिया जो बंगाल में नियत था। सोमवार २७ वीं की रात्रि को सहरा परगना के बदरवाल ग्राम में पड़ाव पड़ा। इसी पड़ाव पर कोयल का शब्द सुनाई पड़ा। कोयल कौए की जाति का पक्षी है पर छोटा होता है। कौए की आँख काली होती और कोयल की लाल। नर कुल काला होता है पर मादा में सफेद धब्बे होते है। नर का शब्द अत्यंत मधुर होता है और मादे से बिलकुल भिन्न होता है। यह वास्तव में हिंदुस्थान का बुलबुल है। जिस प्रकार बुलबुल बरशकाल ऋतु में उन्मत्त तथा चहचहाने वाली हो जाती है उसी प्रकार कोयल भी वर्षा ऋतु के आगमन काल में बोलने लगती है, जो हिंदुस्थान का वर्षा

ऋतु है। इस की बोली अत्यंत मधुर तथा तीव्र होती है और आम के पकने के समय इस पर पूरी मस्ती छा जाती है। यह प्रायः आम के पेड़ों पर बैठती है और आम के रंग तथा सुगंधि पर प्रसन्न होती है। इस कोयल के संबंध में यह विचित्र बात सुनी जाती है कि वह अपने बच्चों को अंडे से सेकर नहीं निकालती प्रत्युत् वह कौए के घोंसले में अरक्षित काल में चली जाती है और उसके अंडों को फोड़कर फेंक देती है तथा उनके स्थान पर स्वयं अंडे देकर उड़ जाती है। कौए उन्हें अपने अंडे समझ कर सेते तथा बच्चों के निकलने पर पोषण करते हैं। हमने स्वयं इस विचित्र कार्य को इलाहाबाद में देखा था।

बुधवार २६ वीं की रात्रि में पड़ाव माही नदी के किनारे पड़ा था और यहीं गुरुवार का मदिरोत्सव हुआ। माही के किनारे दो सोते इतने निर्मल जल के थे कि यदि पोस्ते के दाने भी उन में गिरें तो सब दिखलाई पड़ते थे। वह पूरा दिन हमने महल में व्यतीत किया। यह स्थान भ्रमण के लिए अत्यंत रम्य था इसलिए हमने दोनों सोतों के चारों ओर बैठने के लिए ऊँचा स्थान बनाने का आदेश दिया। शुक्रवार को माही में मछली मारा और जाल में बड़ी मछलियाँ चोंई सहित आफँसी। हमने अपने पुत्र शाहजहाँ से पहले कहा कि उनपर अपनी तलवार अजमावे। इसके अनंतर हमने अमीरों को आज्ञा दी कि अपनी अपनी तलवार से जो लगाए हुए हैं उन पर चोट करें। हमारे पुत्र की तलवार ने उन सब की तलवारों से अच्छी काट दिखलाई। ये मछलियाँ उपस्थित सेवकों में वितरित कर दी गईं।

शनिवार १ ली उर्दिबिहिश्त की संध्या को पूर्वोक्त पड़ाव से कूच किया और यसावलों[1] तथा तवाचियों[2] को आज्ञा दी कि मार्ग में

---

१. गुर्जबरदारों।

२. छड़ी बरदारों।

पड़ते हुए तथा पास के ग्रामों की विधवाओं तथा गरीबों को एकत्र कर हमारे सामने लावें जिस में हम स्वयं अपने हाथ से उन्हें दान दे सकें। इस प्रकार हमें भी एक काम हो जायगा तथा दीन-दरिद्रों की सहायता भी हो जायगी। इस से अच्छा और क्या कार्य हो सकता है? सोमवार ३ री को शुजाअतखाँ अरब, हिम्मतखाँ तथा अन्य सेवकगण, जो दक्षिण तथा गुजरात में नियुक्त थे, सेवा में उपस्थित हुए। अहमदाबाद में रहनेवाले साधु फकीर यहीं हमारी सेवा में मिलने आए। मंगलवार ४ थी को महमूदाबाद की नदी के किनारे पड़ाव पड़ा। रुस्तम खाँ, जिसे हमारे पुत्र शाहजहाँ ने गुजरात के शासन पर नियत किया था, सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ। गुरुवार ६ वीं को कँकड़िया तालाब पर मदिरोत्सव मनाया गया। नाहरखाँ आज्ञानुसार दक्षिण से आकर तथा हमारी सिज्दा करने का सौभाग्य प्राप्त कर सम्मानित हुआ। हीरे की एक अँगूठी, जो कुतुबुल्-मुल्क के कर की एक अंश थी, हमारे पुत्र शाहजहाँ को दी गई। इसका मूल्य एक सहस्र मुहर था और इस पर तीन अक्षर सुंदर तथा बराबर आकार के बने थे, जो मिलकर लाइल्लाह होते थे। यह हीरा संसार के एक वैचित्र्य के रूप में भेजा गया था। वास्तव में बहुमूल्य रत्नों में धब्बे तथा चिह्न दोष समझे जाते हैं परंतु इस रत्न के संबंध में यही समझा गया कि इस पर के चिह्न बनाए हुए हैं। तिस पर यह रत्न किसी प्रसिद्ध खान से निकला हुआ नहीं था। हमारे पुत्र शाहजहाँ की इच्छा थी कि यह हमारे भाई शाह अब्बास के पास दक्षिण के विजय के स्मारक रूप में भेजा जाय इसलिए यह अन्य भेंट की वस्तुओं के साथ शाह के पास भेज दिया गया।

इसी दिन हमने बूखराय भाट को एक सहस्र रुपए भेंट दिए। यह गुजरात का निवासी है और उस देश की ख्यातों तथा बातों से पूर्ण परिचित है। इसका नाम बूँटा था, अर्थात् उगता पौधा। हमने

एक वृद्ध पुरुष का बूँटा कहलाना ठीक नहीं समझा, विशेष कर जब वह हरा भरा होकर हमारी कृपा से यौवन का फल देनेवाला हो गया था। इसलिए हमने आज्ञा दी कि उसे वृखराय पुकारा जाया करे। हिंदी में वृख पेड़ को कहते हैं। शुक्रवार उक्त महीने की ७ वीं को, जो १८ जमादिउल् अव्वल है, शुभ साइत में हम अहमदाबाद में बड़े आनंद के साथ गए। सवार होते समय हमारा भाग्यवान पुत्र शाहजहाँ बीस सहस्र चरण अर्थात् पाँच सहस्र रुपए निछावर के लिए लाया जिसे लुटाते हुए हम महल में गए। जब वहाँ हम घोड़े पर से उतरे तब उसने पचीस सहस्र रुपए मूल्य का एक जड़ाऊ तुर्रा भेंट में दिया और उसके उन कर्मचारियों ने भी, जिन्हें वह उस प्रांत में छोड़ गया था, भेंटें दीं। उन सब का मूल्य मिलकर चालीस सहस्र रुपए था। हमें बतलाया गया कि ख्वाजा वेग मिर्जा सफवी अहमदनगर में खुदा की कृपा के पास पहुँच गया इससे हमने खंजरखाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी २००० सवार का कर दिया, जिसे उसने दत्तक पुत्र बनाया था और वास्तव में अपने आत्मज पुत्र से बढ़कर प्रिय समझता था। यह भी बुद्धिमान् उच्चाशय युवक था और आश्रय देने योग्य सेवक था अतः इसे अहमदनगर दुर्ग की रक्षा सौंपी गई।

इन्ही दिनों अधिक गर्मी तथा वायु की गड़बड़ी से प्रजा में रोग फैल गया था और नगर तथा पड़ाव में कम आदमी बचे थे जो दो-तीन दिन बीमार न रह चुके हों। सूजन वाला ज्वर या अंगों में पीड़ा पहले आरंभ होती है और दो तीन दिन में वे अत्यधिक रुग्ण हो जाते हैं, इतने अधिक कि अच्छे होने पर भी वे बहुत दिनों तक निर्बल तथा निश्शक्त रहते थे। इन में से बहुत से अच्छे हो गए और कुछ ही को प्राण-भय रह गया। हमने उस प्रांत के रहने वाले वृद्ध पुरुषों से सुना कि तीस वर्ष पहले इसी प्रकार का ज्वर फैला था पर प्रसन्नता से बीत गया था। किसी भी प्रकार हो, गुजरात की जलवायु में किसी

प्रकार की खराबी आगई थी और हमें उस प्रांत में आने का पश्चात्ताप ही हुआ। हमें विश्वास है कि सर्वशक्तिमान् परमेश्वर अपनी कृपा तथा दया से यह रोग प्रजा से दूर कर देगा, जो हमारे मन को उद्विग्न किए है।

गुरुवार १३ वीं को मिर्जा शाहरुख का पुत्र बदीउज्जमाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १५०० सवार का कर दिया और उसे एक झंडा देकर पाटन का फौजदार नियत कर दिया। लखनऊ सरकार के फौजदार सैयद निजाम का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ७०० सवार का कर दिया। कंधार के प्रांताध्यक्ष बहादुरखाँ की प्रार्थना पर अली कुली दर्मान का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ७०० सवार का कर दिया, जो उसी प्रांत में नियुक्त था। सैयद हिज्ब्रखाँ बारहा को एक हजारी ४०० सवार का मंसब प्रदान किया। हमने जबर्दस्तखाँ का मंसब बढ़ाकर आठ सदी ३५० सवार का कर दिया। इसी दिन दिहबीड के ख्वाजा कासिम ने मावरुन्नहर से पाँच श्वेत बाज़ अपने एक स्वजातीय के हाथ भेजे थे, जिस में एक मार्ग में मर गया और चार उज्जैन में कुशलपूर्वक पहुँच गए। हमने उन्हें आज्ञा दी कि पाँच सहस्र रुपए उन में से किसी एक को दे दें जिसमें वह ख्वाजा के पसंद की वस्तुएँ क्रय कर ले तथा साथ में ले जाकर उसे दे दे और उस के लिए एक सहस्र रुपए उसे दिए। इसी समय खान आलम ने जो फारस के शासक के यहाँ राजदूत बनाकर भेजा गया था, एक 'आशियानी' बाज़ भेजा, जिसे फारसी भाषा में उक्ना कहते हैं। देखने में यों इन में तथा दामी बाज़ों में कोई विभिन्नता के चिन्ह नहीं मिलते पर उड़ाए जाने पर दोनों की विभिन्नता स्पष्ट हो जाती है।

गुरुवार २० वीं को मृत मिर्जा यूसुफखाँ का दामाद मीर अबुस्सा-लिह आज्ञानुसार दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक

सौ मुहर तथा एक जड़ाऊ कलगी भेंट दी। मिर्ज़ा यूसुफखाँ मशहद के रिज़वी सैयदों में से एक था और इसका परिवार खुरासान में सम्मानित समझा जाता था। इधर ही हमारे भाई शाह अब्बास ने अपनी पुत्री का विवाह उक्त अबुस्सालिह के छोटे भाई से किया है। इसका पिता मिर्ज़ा अतग़ आठवें इमाम रिज़ा के मक़बरे के अनुयायियों का मुखिया था। सम्राट् अकबर की कृपा से मिर्ज़ा यूसुफखाँ एक अमीर तथा पाँच हजारी मंसबदार हो गया। वास्तव में वह अच्छा मीर था और अपने बहुत से मनुष्यों को अच्छे अनुशासन में रखता था। इसके बहुत से संबंधी इसके पास एकत्र हो गए थे। यह दक्षिण में मरा। यद्यपि इसे बहुत से पुत्र थे और सभी ने पहले की सेवा के कारण कृपाएँ प्राप्त कीं पर इसके सबसे बड़े पुत्र पर विशेष ध्यान रखा गया। थोड़े ही समय में हमने उसे एक अमीर बना दिया। अवश्य ही इस में तथा इसके पिता में बहुत विभिन्नता है।

गुरुवार २७ वीं को हमने हकीम मसीहुज्ज़माँ को बीस सहस्र दर्व तथा हकीम रूहुल्ला को एक सौ मुहर और एक सहस्र रुपए दिए। इसने हमारी प्रकृति का पूर्णरूपेण निदान किया था इस से इसने निश्चय किया कि गुजरात की जलवायु हमारी प्रकृति के विरुद्ध है। इस ने कहा कि ज्यों ही श्रीमान् मदिरा तथा अफीम के मोतादों को कम कर देंगे उसी समय आप के ये कष्ट दूर हो जायँगे। सत्यतः जब हमने एक दिन इन दोनों की मोताद कम कर दी तो पहले ही दिन बहुत लाभ ज्ञात हुआ। गुरुवार ३ खुरदाद को क़ज़िलबाश खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १२०० सवार का कर दिया। हथसाल के दारोगा गजपतिखाँ और क़रावल बेग बल्चखाँ से यह सूचना मिली कि उस समय तक उनहत्तर हाथी नर तथा मादा पकड़े जा चुके हैं। इसके बाद जो मिलेंगे उस की सूचना भेजी जायगी। हमने आज्ञा दे रखी थी कि बूढ़े तथा छोटे हाथियों को छोड़ दें और इनके सिवा

जो दिखलाई दें सभी नर-मादा पकड़ लिए जायँ। सोमवार १४ वीं[1] को शाह आलम के उर्स के लिए दो सहस्र रुपए उसी के प्रतिनिधि सैयद मुहम्मद को दिए गए। एक अच्छा कच्छी घोड़ा, जो जाम के द्वारा भेंट किए गए अच्छे घोड़ों में से एक था, राजा वीरसिंह देव को दिया। हमने एक सहस्र रुपए बलूचखाँ करावलबेग को दिए, जो हाथी पकड़ने में लगा हुआ था। मंगलवार १६ वीं को हमारे सिर में बड़ी पीड़ा होने लगी और अंत में ज्वर आगया। रात्रि में हमने अपने निश्चित संख्या में प्याले नहीं पिए और अर्द्ध रात्रि के अनंतर ज्वर के साथ नशे की कमी से बेचैनी बढ़ गई जिस से हम शैया पर छटपटाते रहे। बुधवार १६ वीं की संध्या को ज्वर कम हुआ और हकीमों से सम्मति लेकर तीसरी रात्रि को हमने अपनी निश्चित मोताद में मदिरा पान किया। यद्यपि उन लोगों ने चावल-दाल की खिचड़ी खाने की राय दी पर हमने उसे खाने का विचार तक न किया। जब से हम समझदारी की अवस्था को पहुँचे तब से अब तक हमें खिचड़ी खाने की याद नहीं है और आशा है कि भविष्य में भी न खाना पड़े। जब वे हमारे लिए खाना उस दिन लाए तो हमारी रुचि ही नहीं थी। संक्षेप में तीन दिन दो रात्रि हमने उपवास किया। यद्यपि ज्वर एक दिन-रात्रि रहा पर हम इतने निर्बल हो गए कि मानों हम बहुत दिनों तक बीमार रहे और हमारी भूख मंद हो गई तथा भोजन की ओर रुचि नहीं रह गई।

हमें यह सोचकर बड़ा आश्चर्य होता है कि इस नगर के संस्थापक को इस स्थान में, जो ईश्वरी कृपा से इतना रिक्त है, क्या अच्छाई तथा रम्यता दिखलाई दी जो यहाँ नगर बसा दिया। उसके अनंतर

---

१. पाठा० २४ वीं।

ूसरों ने भी इस धूल भरे नगर में कष्टों के बीच अपने जीवन बिताए। ;सकी वायु विषैली है और भूमि में बहुत कम जल है तथा बालू-धूल रे भरी है, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है। यहाँ का जल भी ख़राब तथा निस्वादु है और इसके पास की नदी भी सिवा वर्षा ऋतु के सदा सूखी रहता है। इसके कुएँ का जल खारा तथा तीखा है और ागर के पास के तालाब धोबियों के साबुन के कारण सफेद हो रहे हैं। धनाढ्य लोगों ने अपने गृहों में कुंड बनवा रखे हैं जिन्हें वे वर्षा काल ं बरसाती पानी से भर लेते हैं। इसी जल को दूसरे वर्षा काल तक ा पीते हैं। जल में न वायु प्रवेश कर सकता है और न उसका भाफ ाहर निकल पाता है, इसलिए इस जल का दुष्ट हो जाना प्रत्यक्ष है। ागर के बाहर हरियाली तथा फूलों के बदले खाली मैदान पड़ा है, जेसमें काँटेदार पौधे भरे हैं और इन काँटों से लगकर बहती हवा के ुणों का क्या कहना है। शैर—

ऐ तुझ खूबियों के संग्रह को किस नाम से पुकारें।
हम तो अहमदाबाद को गर्दाबाद पुकार चुके॥

अब हमें यह नहीं समझ पड़ता कि इसे सिमूमिस्तान[1] कहें कि ीमारिस्तान कहें या जक़ूमजार[2] कहें या जहन्नुमाबाद[3], क्योंकि इसमें ये सभी गुण हैं। यदि वर्षाऋतु ने बाधा न डाली होती तो हम एक दिन ी इस कष्टों के घर में न ठहरते और सुलेमान के समान हवा के तख़्त र बैठकर शीघ्रता से चल देते और ईश्वर के बंदों को इस कष्ट तथा ीड़ा से मुक्त कर देते। इस नगर के मनुष्य अत्यंत दरिद्र तथा निर्बल

---

१. गर्म बालू के अंधड़ को सिमूम अरबी भाषा में कहते हैं, ऐसे अंधड़ों का घर। २. काँटेदार पौधों से भरा मैदान। ३. जहन्नुम का अर्थ नर्क है।

हृदय के होते हैं इसलिए सैनिक पड़ाव के मनुष्य इनके घरों में अत्याचार करने के लिए न जा सकें या इन दीन दरिद्रों के कार्य में हस्तक्षेप न करें और काजी तथा मीर अदल ऐसे मनुष्यों के कुरुख हुए मुखों के भय से ऐसे अत्याचारपूर्ण कार्यों में बाधा न डाल कर उन्हें सहन कर लें इसलिए जिस दिन से हम इस नगर में पहुँचे उसी दिन से रोज हम ऐसी गर्म हवा में भी मध्याह्न की निमाज़ पढ़कर झरोखे में जा बैठते थे। यह नदी की ओर पड़ता था और बीच में फाटक या दीवाल या गुर्जबरदार या चोबदार कुछ भी न था। न्याय वितरित करने के लिए हम दो तीन घंटे वहाँ बैठते और लोगों की प्रार्थनाएँ सुनकर अत्याचारियों को उनके दोष के अनुसार दंड दिलवाते निर्बलता के समय में भी हम प्रतिदिन नियमानुकूल झरोखे में गए भले ही हमें कष्ट तथा दुःख हुआ हो, और हमने अपने शरीर के आराम को हराम समझा।

> ईश्वर की प्रजा की रक्षा के लिए रात्रि में हमने
> अपने नेत्रों को निद्रा से मिलने नहीं दिया।
> सबके शरीरों के आराम के लिए हमने
> अपने शरीर को कष्ट देना उचित समझा॥

खुदा की दया से हमारा स्वभाव ऐसा हो गया है कि समय के दो तीन घंटों से अधिक हम निद्रा को लूटने के लिए नहीं अवसर देते। इसमें दो लाभ होते हैं, एक तो साम्राज्य का वृत्तांत ज्ञात होता है और दूसरे ईश्वर के ध्यान के लिए हृदय चैतन्य रहता है। ईश्वर न करे कि थोड़े दिनों का यह जीवन असावधानी में बीत जाय। भारी निद्रा तो आगे हुई है इसलिए इस जागरूकता को समय का लाभ समझा क्योंकि वह फिर निद्राकाल में नही प्राप्त हो सकता इसलिए एक क्षण भी ईश्वर के ध्यान में असावधान न रहना चाहिए। 'जागते रहो, महानिद्रा तो

आ रही है।' जिस दिन हमें ज्वर आया उसी दिन हमारे पुत्र शाहजहाँ को भी, जो हमें हृदय से भी अधिक प्रिय है, ज्वर हो आया। इसका ज्वर कई दिन रहा और वह दस दिन तक सेवा में उपस्थित न हो सका। वह गुरुवार २४ वीं को आया और ऐसा निर्बल ज्ञात होता था कि यदि किसी ने न बतलाया होता तो वह महीनों का रोगी समझा जाता। हम धन्यवाद करते हैं कि सबका अंत भले में हुआ।

गुरुवार ३१ वीं को मीरजुमला को, जो ईरान से आया था और जिसके संबंध की घटना संक्षेप में लिखी जा चुकी है, डेढ़ हज़ारी २०० सवार का मंसब देकर सम्मानित किया। इसी दिन निर्बलता के कारण हमने एक हाथी, एक घोड़ा, अनेक प्रकार के अन्य चौपाए तथा सोना-चाँदी बहुमूल्य वस्तुएँ दान कीं। हमारे अधिकतर सेवकगण भी निछावर के लिए यथाशक्ति वस्तुएँ लाए। हमने उनसे कहा कि यदि उन्होंने यह कार्य राजभक्ति दिखलाने के लिए किया है तो यह कार्य हमें पसंद नहीं है और यदि वे वास्तव में दान करना चाहते हों तो इन सबको हमारे सामने लाने की आवश्यकता नहीं थी। वे स्वयं गुप्त रूप से दीन-दरिद्रों में वितरित कर सकते थे। गुरुवार ७ वीं तीर इलाही महीने को सादिक खाँ बख्शी का मंसब बढ़ाकर दो हजारी २००० सवार का कर दिया। मीर सामान इरादत खाँ का मंसब दो हज़ारी १००० सवार का कर दिया। मीर अबूसालिह रिज़वी का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार कर दिया तथा रिज़वी खाँ की पदवी और डंका तथा एक हाथी देकर दक्षिण जाने की छुट्टी दे दी।

इसी समय हमें बतलाया गया कि हमारे अभिभावक सिपहसालार खानखानाँ ने प्रसिद्ध मिसरा[1] पर—मिसरा का अर्थ—

१—मौलाना अब्दुर्रहमान जामी का मिसरा है।

हर एक गुलाब फूल के लिए सौ काँटों का कष्ट उठाना चाहिए। एक ग़ज़ल प्रस्तुत की है। मिर्जा रुस्तम सफवी तथा उसके पुत्र मिर्जा मुराद ने भी उस पर अपनी कवित्वशक्ति आजमाई है। हमारे मस्तिष्क में भी एकाएक निम्नलिखित शैर आ गया—

मदिरा के प्याले को गुलाब की क्यारी के मुख पर उँडेल देना चाहिए।
बादल बहुत हैं इस लिए मदिरा भी बहुत उँडेलना चाहिए॥

जलसे में जो लोग उपस्थित थे और जिनमें कविता करने की अभिरुचि थी उन लोगों ने भी एक एक गजल तैयार कर पेश किया। यह ज्ञात हुआ कि वह मिसरा मौलाना अब्दुर्रहमान जामी का है। हमने उनके कुल ग़ज़ल को देखा और सिवा उक्त मिसरे के, जो सूक्ति के रूप में संसार में प्रसिद्ध हो गया है, अन्य अंश बहुत साधारण तथा सीधे सादे सरल हैं। इसी दिन कश्मीर के प्रांताध्यक्ष अहमदबेग खाँ की मृत्यु का समाचार आया।[1] उसके पुत्रगण को, जो खानःजाद थे और जिनके मुख से बुद्धिमता तथा उत्साह प्रगट था, योग्य मंसब मिला और वे बंगश तथा काबुल प्रांत के कार्यों पर नियत कर भेजे गए। इसका मंसब ढाई हजारी था। इसके सबसे बड़े पुत्र को तीन हजारी तथा तीन अन्य पुत्रों[2] को नौ सदी के मंसब दिए गए। गुरुवार १४ वीं को ख्वाजा बाकी खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया तथा बाकी खाँ की पदवी दी।

---

१. मुगल दरबार भाग २ पृ० ३६३ पर लिखा है कि वह इस पद से हटाए जाने पर दरबार आया और तब मरा।

२. मुहम्मद मसऊद प्रथम पुत्र शीघ्र ही युद्ध में मारा गया। द्वितीय सईद खाँ जफर जंग, तृतीय मुखलिसुल्ला खाँ इफ्तखार खाँ और चौथा अबुल् बका था।

इसमें गौरव, सम्मान, उदारता तथा साहस के उच्च गुण वर्तमान हैं और उसके अधीन बरार प्रांत के अंतर्गत थानों में से एक है। राय कुँवर जो पहले गुजरात का दीवान था अब मालवा का दीवान नियत हुआ।

इसी समय हमने सारसों को जोड़ा खाते देखा, जैसा हमने पहले नहीं देखा था और सुनते हैं कि कभी मनुष्य ने नहीं देखा है। सारस बगुला जाति का होता है पर बहुत बड़ा होता है। इनके सिर पर पर नहीं होते और सिर की हड्डियों पर केवल चमड़ा चढ़ा होता है। इसको आँखों से छ अंगुल नीचे तक गर्दन लाल होती है। ये अधिकतर जोड़े सहित मैदानों में पाए जाते हैं पर कभी कभी झुंडों में भी पाए जाते हैं। लोग बहुधा एक जोड़ा मैदानों से पकड़ लाते हैं और घरों में रखते हैं तथा वे मनुष्यों से हिल मिल जाते हैं। वास्तव में हमारे यहाँ भी एक जोड़ा सारस का है जिसे हमने लैला मजनूँ नाम दे रखा है। एक दिन एक हिंजड़े ने सूचना दी कि सारस ने उसके सामने जोड़ा खाया है। हमने आज्ञा दी कि जब पुनः वे जोड़ा खाने की रुचि प्रगट करें तो हमें सूचना दी जाय। प्रातःकाल वह आया और सूचना दी कि वे समागम की तैयारी में हैं। हम देखने के लिए तत्काल वहाँ पहुँच गए। मादा पैरों को सीधा तानकर नीचे को झुक गई और नर ने एक पैर भूमि से उठा कर उसकी पीठ पर रखा तथा उसके अनंतर दूसरा पैर भी रख कर तुरंत बैठ गया एवं मैथुन करने लगा। इसके उपरांत वह उतर आया और अपनी गर्दन लंबी कर चोंच भूमि पर रख दिया तथा एक बार मादा का फेरा लगा आया। संभव है कि वह अंडा दे और बच्चा हो। सारस के अपनी संगिनी के प्रति प्रेम की कई विचित्र कहानियाँ सुनने में आती हैं। कियाम खाँ इस दरबार का एक खानःजाद है और अहेर खेलने तथा पता लगाने में अत्यंत कुशल है। इसने

हमसे कहा कि एक दिन वह अहेर खेलने गया था तो एक सारस को उसने बैठे हुए देखा। जब वह पहुँचा तो सारस उठ कर चला गया। उसकी चाल से इसने समझा कि उसे पीड़ा है तथा बहुत निर्बल है। जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ वह बैठा था तो वहाँ कुछ हड्डियाँ तथा पर पड़े हुए थे। उसने उसके चारों ओर जाल लगा दिया और एक किनारे जा बैठा। सारस ने उस स्थान तक जाने तथा उसी पर बैठने का प्रयत्न किया। इससे उसका पैर फँस गया तब इसने उसे पकड़ लिया। वह बहुत हल्का हो गया था और जब अच्छी प्रकार देखा तो उसकी छाती तथा पेट पर एक भी पर नहीं था, चमड़ा तथा मांस अलग हो गए थे और कीड़े पड़ गए थे। उसके किसी अंग में मांस नाम को नहीं रह गया था केवल कुछ पर तथा हड्डियाँ बच गई थीं। यह स्पष्ट था कि इसकी संगिनी मर गई थी और उसी दिन से वह उस स्थान पर बैठा रहता था।

हमारे प्रज्वलित हृदय ने विरह कष्ट के कारण शरीर को गला दिया।
दीपक के समान आत्मा नाशकारी आह ने हमें जला दिया॥
हमारे आनंद का दिन शोक-रात्रि सी स्याह हो गई।
तुम्हारे विरह ने हमारे दिन ऐसे कर दिए॥

हिम्मत खाँ ने, जो हमारे योग्यतम सेवकों में से एक है और जिस की बात विश्वास करने योग्य है, हम से कहा कि दोहद पर्गना में उसने सारस के एक जोड़े को एक तालाब पर देखा था। उसके एक बंदूकची ने उनमें से एक को गोली मार दी और उसी स्थान पर उसे हलाल कर साफ कर डाला। संयोग से हम दो तीन दिन उसी स्थान पर ठहर गए और उसके साथी को बराबर उसका फेरा लगाते तथा चिल्लाते-रोते देखा। उसके दुःख को देखकर हमें बड़ा कष्ट हुआ पर सिवा पश्चात्ताप के कोई उपाय नहीं था। दैवयोग से

पच्चीस दिनों के अनंतर हिम्मत खाँ फिर उसी स्थान से होकर गया और वहाँ के निवासियों से उस सारस के संबंध में पूछताछ की। लोगों ने कहा कि वह उसी दिन मर गया और चिह्न रूप में कुछ पर तथा हड्डी अभी वहीं पड़े हैं। वह स्वयं वहाँ गया और जो कुछ कहा गया था उसे देखा। इस प्रकार की बहुत सी कहानियाँ लोग कहते हैं पर उन सब के कहने में बहुत समय लगेगा।

शनिवार १६ वीं को रावत शंकर की मृत्यु का समाचार आया, जो बिहार प्रांत में नियुक्त था। इसके सबसे बड़े पुत्र मानसिंह का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ६०० सवार का कर दिया और अन्य पुत्रों तथा संबंधियों का भी मंसब बढ़ाकर इसकी आज्ञा मानने का आदेश दिया। गुरुवार २१ वीं को बावन नामक हाथी, जो हमारे पकड़े हुए हाथियों में से चुना हुआ था और दोहद पर्गने में पालतू बनाने के लिए छोड़ा गया था, दरबार लाया गया। हमने आज्ञा दी कि झरोखे के सामने नदी की ओर उसे रखें जिसमें वह सदा हमारी आँखों के सामने रहे। सम्राट् अकबर की हथसाल का सबसे भारी हाथी दुर्जन साल था। इसकी ऊँचाई इलाही गज से चार गज चौदह गिरह थी, जो साधारण गज़ से आठ गज़ तीन अंगुल है। इस समय हमारे हथसाल का सब से भारी लड़ाका हाथी आलम-गजराज है, जिसे सम्राट् अकबर ने स्वय पकड़ा था। हमारे खास हाथियों का यह प्रधान है। इसकी ऊँचाई चार गज़ दो गिरह या साधारण सात गज़ सात अंगुल है। साधारण गज चौबीस अंगुल का और इलाही गज़ चालीस अंगुल का होता है।

इसी दिन मुजफ्फरखाँ, जिसे ठट्टा की प्रांताध्यक्षता मिली थी, सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए नगद और एक लाख रुपए मूल्य के रत्न तथा जड़ाऊ वस्तुएँ भेंट कीं। इसी

समय समाचार मिला कि हमारे पुत्र पर्वेज़ को शाह मुराद की पुत्री से एक पुत्र हुआ है। आशा है कि इसका आगमन सम्राज्य के लिए शुभ होगा।

रविवार २८ वीं को राय बहारः सेवा में उपस्थित हुआ, जिससे बड़ा जमींदार गुजरात प्रांत में दूसरा नहीं था। इसका राज्य समुद्र के तट पर है। बहारः तथा जाम एक ही शाखा के हैं। दस पीढ़ी पहले वे एक ही थे। राज्य-विस्तार तथा सेनाओं की दृष्टि से बहारः जाम से बढ़कर है। लोग कहते हैं कि वह गुजरात के किसी सुलतान से कभी मिलने नहीं आया। सुलतान महमूद ने इसके विरुद्ध सेना भेजी थी पर युद्ध में वह हार गई। जिस समय खानआजम सूरत प्रांत में जूनागढ़ विजय करने गया था उस समय नन्हू, जो सुलतान मुजफ्फर कहलाता था और यहाँ के राज्य का अपने को उत्तराधिकारी कहता था, जमींदारों की शरण में अपने दुर्दिन वहीं व्यतीत कर रहा था। इसके अनंतर जाम शाही सेना से परास्त हुआ और तब नन्हू राय बहारः की शरण में चला गया। खानआज़म ने राय बहारः से नन्हू को माँगा और उसने शाही सेना का सामना करने में अपने को असमर्थ पाकर उसे दे दिया, जिस राजभक्ति-पूर्ण कार्य से वह शाही सेना की मार से बच गया। जिस समय पहले शाही सौभाग्य की सेना थोड़े दिनों के लिए अहमदाबाद पहुँची तब वह नहीं आया और उसका राज्य कुछ दूर था इसीलिए उस समय उसके विरुद्ध सेना नहीं भेजी जा सकी। परंतु जब हम लौटकर पुनः वहाँ आए और हमारे पुत्र शाहजहाँ ने राजा विक्रमाजीत को ससैन्य उस पर नियत किया तब वह आने ही में अपनी भलाई समझकर सेवा में उपस्थित हुआ और दो सौ मुहरें, दो सहस्र रुपए तथा एक सौ घोड़े भेंट किए। उसके घोड़ों में से हमने एक भी पसंद नहीं किया। उसकी अवस्था हमें अस्सी

वर्ष से अधिक ज्ञात हुई और वह स्वयं नव्वे बतलाता था। उसके ज्ञान तथा शक्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं आई थी। उसके मनुष्यों में एक वृद्ध पुरुष था, जिसकी दाढ़ी, मोंछ तथा भौं सफेद हो गए थे। उसने कहा कि राय बहारः उसे बचपन से जानते हैं, जिनकी सेवा में बाल्यकाल से वह बराबर रहा है।

इसी दिन अबुल्हसन चित्रकार ने, जिसे नादिरुज्जमाँ की पदवी दी गई थी, हमारी राजगद्दी का चित्र जहाँगीरनामा के लिए प्रस्तुत कर हमारे सामने उपस्थित किया। यह चित्र प्रशंसा के योग्य था इसलिए उस पर कृपाएँ की गईं। उसकी कृति पूर्ण थी और वह चित्र अपने समय की एक प्रमुख वस्तु थी। इस समय वह अद्वितीय है। यदि आज उस्ताद अब्दुलहई तथा बिहजाद जीवित होते तो वे इसकी प्रशंसा करते। इसका पिता आका रिज़ा हिराती हमारी शाहजादगी के समय हमारी सेवा में आया था इसलिए अबुल्हसन खानःजाद है। इसकी तथा इसके पिता की कृतियों में कोई समानता नहीं है (अर्थात् पुत्र बहुत बढ़कर है)। दोनों को कोई भी एक कक्षा में नहीं रख सकता। हमारा संबंध उसके पालन करने में है। हमने उसके बाल्यकाल से वर्तमान काल में इस अवस्था को पहुँचने तक उसको अपने निरीक्षण में रखा था। वास्तव में वह नादिरुज्जमाँ अर्थात् संसार या समय का अप्राप्य है। उस्ताद मंसूर भी चित्रकला में इतना प्रवीण था कि उसे नादिरुल् असर की पदवी मिली थी और अपने काल में चित्रकला में अपना समकक्ष नहीं रखता था। हमारे पिता के तथा हमारे राज्यकाल में इन दो को छोड़कर इनसा कोई तीसरा नहीं था। हमारे लिए चित्रकला की ओर रुचि और चित्रों के गुणदोष-विवेचन की शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि जब कोई कलाकृति, चाहे मृत चित्रकारों की हो या वर्तमान की हो, हमारे सामने बिना कलाकार का नाम बतलाए उपस्थित की जाती तो हम तुरंत बतला देते कि यह

असुक की कृति है और यदि एक ही चित्र में कई शबीहें होतीं और प्रत्येक भिन्न भिन्न कलाकार की होतीं तो भी हम हर एक का पता लगा लेते कि कौन किस की है। यदि एक ही मुख पर किसी अन्य व्यक्ति का नेत्र तथा भौं बनाया होता तब भी हम कह देते कि किसने मुख बनाया है और किसने नेत्र तथा भौं।

रविवार ३१ वीं तीर की संध्या को खूब वर्षा हुई और मंगलवार १ ली असुरदाद तक निरंतर घोर वर्षा होती रही। सोलह दिन तक बराबर बादल बने रहे और वर्षा होती रही। यह बलुआ देश है और यहाँ के गृह निर्बल होते हैं इसलिए बहुत से गिर गए और बहुत से लोग दब कर मर गए। हमने नगर के निवासियों से सुना कि इस वर्षा के समान वर्षा होना उन्हें स्मरण नहीं है। यद्यपि साबरमती की धारा जल से भरी ज्ञात होती है तब भी कई स्थानों पर उतरने योग्य है और हाथी तो बराबर पार कर सकते हैं। यदि एक दिन भी वर्षा न हो तो घोड़े तथा पैदल भी उतर जा सकते हैं। इस नदी का सोत राणा के राज्य की पर्वतस्थली में है। यह कोकरा की घाटी से निकलती है और डेढ़ कोस तक बहकर मीरपुर के नीचे से प्रवाहित होती है, जिसे यहाँ वाकल कहते हैं। मीरपुर से तीन कोस आगे बढ़ने पर इसका नाम साबरमती हो जाता है।

गुरुवार १० वीं को राय बहारः को एक नर तथा एक मादा हाथी, एक जड़ाऊ खंजर तथा चार अंगूठियाँ लाल, पुखराज, पन्ना तथा नीलम की देकर सम्मानित किया। इसके पहले अभिभावक सिपहसालार खानखानाँ ने आदेशानुसार अपने पुत्र अमरुल्ला के अधीन एक सेना गोंडवाना की ओर बराकर की हीरे की खान पर अधिकार करने के लिए भेजा, जो खानदेश के एक जमींदार पंजू के अधीन थी। इसी दिन समाचार मिला कि उक्त जमींदार ने यह

जान कर कि विजयी सेना का सामना करना उसके सामर्थ्य के बाहर है खान ही को भेंट में दे दिया है और एक शाही सेवक उसका प्रबंध करने के लिए नियुक्त कर दिया गया है। यहाँ के हीरे अन्य खानों के हीरों से पानी तथा सुंदरता में बढ़कर होते हैं और जौहरीगण इनको आदर से देखते हैं। ये सुंदर बनावट के बड़े तथा उच्च कोटि के होते हैं। दूसरी कोटि के हीरे काखरा खान के होते हैं जो बिहार की सीमा पर है परंतु इस स्थान के हीरे खान से नहीं निकलते प्रत्युत् एक नदी से निकलते हैं, जो वर्षा ऋतु में पहाड़ों से बाढ़ होने पर आती है। बाढ़ के पहले वे बाँध बाँध देते हैं और जब बाढ़ का पानी उस पर निकल जाता है और थोड़ा जल रह जाता है तब वे लोग जो इस कला में दक्ष हैं पानी में उतर पड़ते हैं और हीरों को निकाल लाते हैं। तीन वर्ष हुए कि यह प्रांत साम्राज्य के अधिकार में आ-गया है। उस स्थान का जमींदार कैद में है। वहाँ की हवा बड़ी विषैली है और बाहरी आदमी वहाँ रह नहीं सकते। तीसरा स्थान कर्णाटक प्रांत में कुतुबुल्मुल्क की सीमा के पास है। पचास कोस के घेरे में चार खानें हैं और वहाँ बहुत अच्छे हीरे मिलते हैं।

गुरुवार १० वीं को नाहरखाँ का मंसब बढ़ा कर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया और उसे एक हाथी दिया। पुस्तकालय के अध्यक्ष मकतूबखाँ को डेढ़ हजारी मंसब दिया। हमने आदेश दे रखा था कि शबेबरात को कँकड़िया तालाब के चारों ओर दीपक जलावें इस से सोमवार १४ वीं शाबान की संध्या को हम उन्हें देखने के लिए गए। तालाब के चारों ओर इमारतें थीं। वहाँ सर्वत्र अनेक रंग की लालटेनें लगाई गई थीं और अनेक प्रकार के दीपक तथा आतिशबाजी की सजावट की गई थी। यद्यपि यह ऋतु बादलों तथा वर्षा का था पर ईश्वर की कृपा से रात्रि के आरंभ से वायु निर्मल हो

गई थी और बादल के चिह्न भी नहीं बच गए थे तथा दीपकों का प्रकाश जैसा चाहिए होता रहा। हमारे निजी सेवकगण आनंद के प्यालों से तुष्ट हो गए थे। हमने आज्ञा दी कि शुक्रवार की संध्या को भी इसी प्रकार का प्रकाश किया जाय और आश्चर्य की बात यह थी कि गुरुवार १७ वीं के दिनांत से बराबर पानी बरसता रहा पर दीपक बालने के समय वर्षा बंद हो गई और दृश्य अच्छी प्रकार देखा गया। इसी दिन एतमादुद्दौला ने एक कुत्बी पन्ना बहुत ही सुंदर रंग का तथा बिना दाँत का एक हाथी चाँदी के साज़ सहित भेंट किया। यह हाथी सुगठित शरीर का तथा सुंदर था इसलिए हमारे निजी हाथियों में रखा गया। कँकड़िया तालाब पर एक संन्यासी ने, जो हिंदुओं में घोरतम तपस्वी होते हैं, साधुओं के समान एक कुटी बना ली थी, और वहीं रहता था। हमारी इच्छा फकीरों से मिलने की बराबर रहती है इसलिए हम बिना दिखावट के उसके पास गए और उसके सत्संग का कुछ देर आनंद लिया। इस में ज्ञान तथा विवेक बुद्धि की कमी नहीं थी और सूफी संप्रदाय के नियमों को अपने मत के अनुसार अच्छी प्रकार जानता था। इसने धार्मिक दीनता तथा तपस्या के मार्ग को अपनाया था और सभी सांसारिक इच्छाओं तथा वासनाओं को त्याग दिया था। यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के लोगों में इस से बढ़कर कोई कभी नहीं देखा गया।

सोमवार २१ वीं अमूरदाद को सारस ने, जिसके जोड़ा खाने का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, कुछ तिनके तथा कतवार छोटे बाग़ के एक कोने में इकट्ठा किया और पहले एक अंडा दिया। तीसरे दिन दूसरा अंडा दिया। सारस का यह जोड़ा जब पकड़ा गया था उस समय वह एक महीने का था और पाँच वर्ष उन्हें पकड़े गए हुआ था। साढ़े पाँच वर्ष के होने पर उन्होंने जोड़ा खाया

और ऐसा वे एक महीने तक करते रहे। २१ वीं अमूरदाद को, जिसे हिंदू सावन कहते हैं, मादा ने अंडे दिए। मादा रात्रि भर अकेले अंडे सेती और नर पास में खड़ा होकर रक्षा करता। यह इतना सतर्क रहता कि कोई भी सजीव वस्तु पास नहीं जा सकती थी। एक बार एक बड़ा नेवला दिखलाई पड़ा जिस पर यह बड़े वेग के साथ टूटा और जब तक वह बिल में घुस नहीं गया तब तक नहीं रुका। जब सूर्य ने संसार को प्रकाशित कर दिया तब नर मादा के पास गया और चोंच से उसकी पीठ ठोकने लगा। तब मादा उठ खड़ी हुई और नर उसके स्थान पर बैठ गया। इसी प्रकार जब वह लौटी तब नर को उठा दिया और स्वयं बैठ गई। संक्षेप में मादा रात्रि भर सेती है और अंडों की रक्षा करती है और दिन में नर तथा मादा दोनों पारी से सेते हैं। वे जब उठते तथा बैठते हैं तब बड़ी सावधानी रखते हैं कि अंडों को किसी प्रकार हानि न पहुँचे।

इस ऋतु में अभी अहेर खेलने का कुछ समय बचा हुआ था इसलिए गजपतिखाँ दारोगा तथा बलूचखाँ मुख्य शिकारी हाथियों के अहेर के लिए छोड़ दिए गए जिसमें वे यथाशक्ति जितने हाथी पकड़े जा सकें पकड़ें। इसी प्रकार शाहजहाँ के शिकारी लोग भी लगे हुए थे। इस दिन वे आकर सेवा में उपस्थित हुए। नर मादा सब मिलाकर एक सौ पचासी हाथी पकड़े गए जिन में तिरासी हाथी तथा एक सौ बारह हथिनी थीं। इनमें से शाही शिकारियों तथा फौजदारों ने सैंतालिस हाथी तथा पछत्तर हथिनी और हमारे पुत्र शाहजहाँ के शिकारियों तथा महावतों ने छब्बीस हाथी तथा सैंतीस हथिनी कुल तिरसठ पकड़ा था।

गुरुवार २४ वीं को हम बागे फतह देखने गए और दो दिन वहाँ आनंद करने में बिताया। शनिवार को दिन के अंत काल में महल में

लौट आए। आसफ खाँ ने प्रार्थना की कि उसका हवेली बाग बहुत हरा भरा तथा रमणीक है और हर प्रकार के पुष्पों तथा सुगंधि के पौधों में फूल खूब खिले हैं। इस लिए उसके निवेदन पर हम गुरुवार ३१ वीं को वहाँ गए। वास्तव में वह उद्यान-गृह बड़ा सुंदर है और हम उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुए। उसकी पैंतीस सहस्र मूल्य की रत्नों, जड़ाऊ वस्तुओं तथा वस्त्रों की भेंट हमने स्वीकार की। मुजफ्फर खाँ को खिलअत तथा एक हाथी देकर पहले के समान ठट्ठा के शासन का कार्य उसे सौंपा। हमारे भाई शाह अब्बास ने कुछ साधारण भेंट के साथ एक पत्र अब्दुल् करीम गीलानी के हाथ भेजा, जो ईरान से व्यापारिक सामान लेकर आया था। इसी दिन हमने उसे खिलअत तथा एक हाथी देकर जाने की छुट्टी दी और शाह के पत्र का उत्तर भी भेज दिया। खानआलम को भी कृपापत्र तथा खास खिलअत द्वारा सम्मानित किया। शुक्रवार को १ ली शहरिवर थी। रविवार ३ री से गुरुवार ७ वीं की संध्या तक पानी खूब बरसा। यह विचित्र बात है कि और दिनों सारस का जोड़ा पारी पारी पाँच छः वार अंडों पर बैठते उठते थे पर इन चौबीस घंटों में जब वर्षा निरंतर होती रही तथा हवा ठंडी थी नर अंडों को गरम रखने के लिए प्रातः काल से दोपहर तक और उस समय से दूसरे दिन प्रातः काल तक मादा बराबर बैठी रही, जिस से बार बार उठने बैठने में अंडों को ठंडी हवा का असर न पहुँचे और वे गीले तथा खराब न हो जायँ। संक्षेप में, मनुष्य विवेक बुद्धि से परिचालित होता है और पशुगण दैवी आज्ञानुसार उन्हें मिली प्रकृति से परिचालित होते हैं। इस से अधिक विचित्र यह है कि पहले वे अंडों को सटाकर पेट के नीचे रखते थे पर चौदह-पंद्रह दिन बीत जाने पर वे अंडों को कुछ दूर रखने लगे जिस से सटे रहने से एक दूसरे की गर्मी कहीं अधिक न हो जाय। अधिक गर्मी से भी अंडे खराब हो जाते हैं।

गुरुवार ७ वीं को बड़ी प्रसन्नता तथा आनंद के साथ अग्गल पड़ाव आगरे की ओर चला। रम्मालों तथा ज्योतिषियों ने यात्रारंभ की शुभ साइत निकाल रखी थी। परंतु पानी इतना बरसा कि मुख्य पड़ाव महमूदाबाद की नदी तथा माही को उस समय पार नहीं कर सका। अतः आवश्यकता वश अग्गल का पड़ाव निश्चित समय पर भेज दिया गया और २१ वीं शहरिवर मुख्य पड़ाव के कूच के लिए निश्चित हुआ।

हमारे पुत्र शाहजहाँ ने काँगड़ा दुर्ग को विजय करने का उत्तर-दायित्व स्वयं अपने ऊपर लिया था जिस पर किसी भी ऐश्वर्यशाली सुलतान ने अब तक विजय प्राप्त नहीं किया था और एक सेना राजा बासू के पुत्र राजा सूरजमल तथा उसके एक विश्वासपात्र सेवक तकी के अधीन उस कार्य पर पहले ही भेजी जा चुकी थी। यह अब स्पष्ट ही ज्ञात हो गया कि पहले की नियुक्त सेना उस कार्य को पूरा करने के योग्य नहीं है। तब राजा विक्रमाजीत, जो उसके मुख्य सर्दारों में से एक है, उसके निजी उपस्थित सेवकों से दो सहस्र सवारों के साथ और जहाँगीरी सेवकों की सेना जैसे शहबाज खाँ लोदी, हृदय नारायण हाड़ा, राय पृथ्वीचंद तथा रामचंद्र के पुत्रगण दो सौ सवार बंदूकचियों एवं पाँच सौ पैदल तोपचियों के साथ उस कार्य पर नियत हुए कि पहले की नियत सेना की सहायता कर कार्य पूरा करें। बिदा होने का समय आज ही का दिन निश्चित था इसलिए उसने (विक्रमाजीत) पन्ने की एक माला दस सहस्र रुपए मूल्य की भेंट की। इसे खिलअत तथा एक तलवार उपहार में दिया और उसने इस कार्य पर जाने की छुट्टी ली। इस कारण कि इस प्रांत में इसे कोई जागीर नहीं मिली थी हमारे पुत्र शाहजहाँ ने बरहानः[1] पर्गना इसके लिए जागीर में

---

1. पाठा० मरहाना या सहराना।

माँगा, जिसकी आय बाईस लाख दाम थी और जो उसे इनाम में मिली थी। दीवान वयूतात ख्वाजा तकी को, जो दक्षिण की दीवानी पर नियत किया गया था, मोतकिद खाँ की पदवी, खिलअत तथा एक हाथी देकर सम्मानित किया। हमने हिम्मत खाँ को भड़ोच सरकार तथा उसके आस पास का फौजदार नियत किया और उसे एक घोड़ा तथा एक खास परम नर्म शाल देकर बिदा किया। भड़ोच परगना उसे जागीर में दिया गया। राय पृथ्वीचंद का, जो काँगड़ा की चढ़ाई पर नियत हुआ था, मंसब बढ़ाकर सात सदी ४५० सवार का कर दिया। शेख मुहम्मद गौस का उर्स आ पहुँचा था इसलिए हमने उसके पुत्रों को एक सहस्र दर्ब व्यय के लिए दिया। बहादुरुलमुल्क के पुत्र मुजफ्फर को, जो दक्षिण में नियत था, एक हजारी ५०० सवार का मंसब दिया।

जहाँगीरनामा के बारह वर्ष का वृत्तांत समाप्त हो चुका था इसलिए हमने अपने निजी पुस्तकालय के लेखकों को आज्ञा दी कि इनकी एक जिल्द बना लें और इसकी अनेक प्रतिलिपियाँ प्रस्तुत करें जिसे हम अपने खास सेवकों को दे सकें और विभिन्न नगरों में भेजी जा सकें जिससे शासकगण तथा अच्छे लोग उसे अपना विधान समझकर अपनावें। शुक्रवार ८ वीं को एक लेखक ने पूरी पुस्तक तैयार कर तथा जिल्द बँधाकर हमारे सामने उपस्थित की। इस कारण कि यह प्रथम प्रति प्रस्तुत हुई थी हमने इसे अपने पुत्र शाहजहाँ को दिया जिसे हम अपने पुत्रों में हर प्रकार से प्रथम समझते हैं। पुस्तक के पीछे हमने अपने हाथ से लिख दिया कि किस दिन और किस स्थान में हमने उसे दिया। हम आशा करते हैं कि इन लेखों की प्राप्ति, जो जीव के संतोषार्थ और स्रष्टा के प्रति दीनता दिखलाने के लिए है, उसके सौभाग्य की वर्द्धक होगी।

मंगलवार १२ वीं को सुभानकुली शिकारी को दंड दिया गया। इसका विवरण इस प्रकार है कि यह हाजी जमाल बलूच का पुत्र है, जो हमारे पिता का सबसे अच्छा शिकारी था और उसके अनंतर यह इस्लाम खाँ की सेवा में जाकर उसके साथ बंगाल गया। इस्लाम खाँ दरबार से इसके संबंध के कारण उस पर विशेष ध्यान रखता तथा विश्वासपात्र समझकर सदा यात्रा या अहेर में साथ रखता। उस्मान अफगान ने, जिसने बहुत वर्ष इस प्रांत में उपद्रव तथा विद्रोह में व्यतीत किया था और जिसके कार्यों के अंत का वर्णन पहले लिखा जा चुका है, इस्लाम खाँ द्वारा बहुत कष्ट पाने पर किसी मनुष्य को इस दुष्ट के पास भेजा कि इस्लाम खाँ को मार डाले। इसने यह कार्य करना स्वीकार कर लिया और दो तीन आदमियों को इसके लिए मिला लिया। संयोग से यह दुष्ट कार्य पूरा होने के पहले उनमें से एक ने आकर इस्लाम खाँ से इसकी सूचना दे दी। इस्लाम खाँ ने तुरंत ही इस नीच को पकड़ लिया और कैद कर दिया। अंतिम की मृत्यु पर यह दरबार आया। इसके भाई तथा संबंधीगण शिकारियों में भर्ती थे इसलिए यह भी उन्हीं में भर्ती कर लिया गया। इसी समय इस्लाम खाँ के पुत्र ने संकेत रूप में प्रार्थना की कि ऐसा आदमी हमारे पास की सेवा में रहने के अयोग्य है। पूछताछ करने पर उसका दोष ज्ञात हो गया। इतने पर उसके भाइयों की प्रार्थना पर कि इसकी केवल शंका मात्र थी और मुख्य अहेरी बलूच खाँ के जमानत पड़ने पर हमने उसे प्राणदंड नहीं दिया और आज्ञा दी कि वह बलूच खाँ के साथ रहा करे। ऐसी कृपा तथा प्राणदान देने पर भी वह अकारण तथा बिना किसी उद्देश्य के दरबार से भागा और आगरा तथा उसके पड़ोस में चला गया। बलूच खाँ उसकी जमानत पड़ा था इसलिए उसे आज्ञा हुई कि उसे दरबार में उपस्थित करे। उसने पता लगाने के लिए आदमी

भेजे। आगरा के एक ग्राम में, जहाँ उपद्रवियों की कमी नहीं है तथा जिसे जहंदा कहते हैं, बल्ख खाँ के भाई ने, जो पता लगाने के लिए भेजा गया था, उसे पाया और उसे दरबार लाने के लिए बहुत समझाया पर उसने नहीं माना तथा उसकी सहायता के लिए वहाँ के लोगों ने विद्रोह कर दिया।

निरुपाय होकर वह ख्वाजाजहाँ के पास आगरा गया और उससे सब बातें बतलाईं। उसने एक सैनिक टुकड़ी उसे पकड़ कर लाने के लिए उस ग्राम पर भेजा। जब गाँववालों ने अपना नाश देखा तब उसे सौंप दिया। आज ही के दिन वह हथकड़ी बेड़ी में जकड़ा हुआ उपस्थित किया गया। हमने उसे प्राणदंड की आज्ञा दी और जल्लाद भी शीघ्रता के साथ उसे वधस्थल पर ले गया। थोड़ी देर बाद एक दरबारी की प्रार्थना पर हमने उसका प्राणदंड क्षमा कर दिया परंतु उसके पैरों को काट लेने की आज्ञा दे दी। किंतु उसके भाग्य से इस आज्ञा के पहुँचने के पहले वह दंड को प्राप्त हो चुका था। यद्यपि वह नीच उस दंड के योग्य ही था पर तब भी हमें इस पर क्षोभ हुआ और हमने आज्ञा निकाली कि जब भी किसी के प्राणदंड की आज्ञा हो और चाहे वह आज्ञा कितनी भी जल्दी की हो तब भी सूर्यास्त तक प्रतीक्षा कर प्राणदंड दिया जाय। यदि उस समय तक कोई छुटकारे की आज्ञा न आवे तब वह अवश्य ही मार डाला जाय।

रविवार को माही नदी में बड़ा हलचल था और ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं। यद्यपि इसके पहले अनेक बार खूब वर्षा हुई थी पर इतना वेग क्या इसका आधा भी नहीं कभी दिखलाई पड़ा था। दिन के आरंभ ही से बाढ़ आना आरंभ हुआ और अंत होने पर घटने लगा। पुराने नगरनिवासियोंका कहना था कि एक बार मुर्तजाखाँ फरीद बुखारी के शासनकाल में इसी प्रकार की बाढ़ आई थी, जिसके सिवा ऐसी बाढ़ का उन्हें स्मरण नहीं है।

इन्हीं दिनों सुलतान संजर के कवि तथा कवि सम्राट् मुइज्जी[1] की एक गज़ल का उल्लेख हुआ था। यह बहुत मधुर तथा सरल प्रवाह युक्त रचना थी। इसका प्रथम शैर इस प्रकार है—

ऐ तू जिसकी आज्ञा आसमान भी मानता है।
तेरे युवा सौभाग्य का दास पुराना शनि है॥

सईदा नामक मुख्य सुवर्णकार भी कविता करने की ओर रुचि रखता था और उसने इसकी नकल पर कविता की और उसे हमारे सामने उपस्थित किया। यह अच्छी रचना है, जिसके कुछ शैर नीचे दिए गये हैं।[2] गुरुवार २४वीं को इसके पुरस्कार में हमने सईदा को धन से तौलने की आज्ञा दी। दिन के अंत में हम रुस्तम बाड़ी उद्यान में भ्रमण करने गए, जो हमें अत्यंत हरा भरा तथा रमणीक ज्ञात हुआ। संध्या को नाव पर बैठकर हम महल को लौट आए।

शुक्रवार १५वीं को अमीरी नामक एक वृद्ध मुल्ला ने मावरुन्नहर से आकर हमारी देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसने बतलाया कि वह अब्दुल्लाखाँ उजबेक के पुराने सेवकों में से है और बाल्य-काल तथा यौवन तक उसी खाँ द्वारा उसकी मृत्यु तक पालित हुआ है। वह उसके पुराने सेवकों में परिगणित था और उसका विश्वासपात्र मित्र था। खाँ की मृत्यु के अनंतर अब तक वह उस देश में संमानित रूप में कालयापन करता रहा। उसने अपना देश मक्का जाने के लिए छोड़ा है और अभिवादन करने के लिए आया है। हमने आज्ञा दी

---

१. पाठांतर मगरिबी भी मिलता है पर यही ठीक है। सुलतान संजर छठी शती हिजरी में हुआ था और मगरिबी आठवीं शती हिजरी में।

२. छ शेर दिए गए हैं जिनका अनुवाद नहीं दिया जाता।

कि वह रहने तथा जाने दोनों के लिए स्वतंत्र है। उसने कुछ दिन सेवा में रहने की आज्ञा ली। एक सहस्र रुपए व्यय के लिए तथा खिलअत उसे मिला। वह सुंदर मुखवाला वृद्ध पुरुष है और बात करने में बहुत पटु है। हमारे पुत्र शाहजहाँ ने भी पाँच सौ रुपए और खिलअत उसे दिया।

शाहजहाँ के गृह के उद्यान के मध्य में एक चबूतरा तथा बावली है। चबूतरे के एक ओर मौलसिरी का वृक्ष है, जिससे पीठ को सहारा मिलता है। इसके तने के एक ओर तीन चौथाई गज का खोखला है, जिससे वह भद्दा मालूम होता हैं। हमने आज्ञा दी कि संगमर्मर की पटिया उसी नाप की काटकर उसमें इस प्रकार दृढ़ता से लगा दें कि लोग तकिया लगाकर चबूतरे पर बैठ सकें। इसी समय एकाएक एक शैर हमारी जिह्वा पर आ गया और हमने आदेश दिया कि संगतराश लोग इसे उस पत्थर पर खोद दें जिससे वह समय के पृष्ठ पर स्मारक रूप बना रहे। शैर इस प्रकार है—

सातों देशों के शाह की बैठक है।
जहाँगीर पुत्र अकबर शाहंशाह॥

मंगलवार १९वीं की संध्या को हरम में एक बाजार लगाया गया। अब तक यह प्रथा रही कि हर एक स्थान के नगर के दूकानदार तथा कलाकार लोग अपनी दूकानें आज्ञानुसार महल के आँगन में लाया करते थे और रत्न, आभूषण, वस्त्र तथा अन्य वस्तुएँ एवं सामान जो बाजार में बिकता है सभी लाते थे। यह बाजार दिन में लगता था। हमने विचार किया कि यदि यह बाजार रात्रि में लगे और दूकानों के आगे दीपक जलाए जायँ तो बड़ा सुंदर लगेगा। वास्तव में ऐसा होने पर बहुत अच्छा लगा और असाधारण ज्ञात हुआ। दूकानों पर चारों ओर घूमकर हमें जो रत्न तथा जड़ाऊ वस्तुएँ पसंद आईं उन्हें

हमने क्रय किया। हमने हर एक दूकान से कुछ भेंट मुल्ला अमीरी को दिया और वह इतना अधिक हो गया कि वह उन सबको सँभाल न सका।

गुरुवार २१ वीं शहरिवर को हमारे जलूस के तेरहवें वर्ष में जो २२ वीं रमजान सन् १०२७ हि० (२ सित० सन् १६१८ ई०) को पड़ता है, जब ढाई घड़ी दिन बीत गया था तब शाही झंडे आनंद तथा प्रसन्नता से लहराते हुए राजधानी आगरे की ओर चले। महल से कँकड़िया तालाब तक, जहाँ पड़ाव था, हम रुपए लुटाते हुए गए। उसी दिन हमारा सौर तुलादान का उत्सव हुआ और सौर गणनानुसार हमारा पचासवाँ वर्ष शुभ साइत में आरंभ हुआ। साधारण प्रथानुसार हमने अपने को सोना तथा मूल्यवान वस्तुओं से तौलवाया। हमने मोती तथा सोने के गुलाब के फूल लुटाए और रात्रि में दीपकों के प्रकाश के दृश्य देखते हुए अंतःपुर में रात्रि सुख से व्यतीत किया। शुक्रवार २२वीं का हमने आज्ञा दी कि नगर में रहनेवाले सभी शेख तथा फकीर लोग हमारे सामने लाए जायँ जिसमें वे रोजा हमारे सामने तोड़ें। इस प्रकार तीन दिन तक होता रहा और प्रत्येक रात्रि जलसा समाप्त होने पर हम खड़े होकर ये शैर उत्साह के साथ पढ़ते।

ए खुदा तू सर्व शक्तिमान है।
तू ही गरीब तथा अमीर का पालनेवाला है॥
मैं न जहाँगीर हूँ और न न्यायदाता।
मैं तेरे फाटक पर का एक याचक हूँ॥

सच्चे तथा भले को पहिचानने में सहायता कर।
नहीं तो हमसे किसी की भलाई न हो सकेगी॥
मैं अपने नौकरों का भले ही स्वामी हूँ।
परंतु अपने स्वामी का मैं राजभक्त सेवक हूँ॥

सभी फकीरों ने जो अब तक हमारे यहाँ नहीं आए थे मदद के लिए प्रार्थना की और हमने भी प्रत्येक को भूमि या धन सहायतार्थ देकर तुष्ट किया।

गुरुवार २१ वीं की संध्या को सारस ने एक अंडा फोड़ा और सोमवार २५ वीं को संध्या को दूसरा अर्थात् एक अंडा चौंतीस दिन के अनंतर तथा दूसरा छत्तीस दिन के अनंतर फोड़ा गया था। ये बच्चे हंस के बच्चे से एक दहाई बड़े थे और मुर्गी के एक महीने के बच्चे के बराबर थे। इनका चमड़ा नीले रंग का था। पहले दिन इन्होंने कुछ नहीं खाया पर दूसरे दिन से उनकी माता छोटे कीड़े मकोड़े लाकर इन्हें कबूतरों के समान खिलाती या कभी मुर्गियों के समान लाकर इनके आगे बिखेर देती कि वे उठाकर खायँ। यदि फतिंगे छोटे हुए तो ठीक है नहीं तो वह एक एक के कई टुकड़े कर देती जिससे बच्चे आराम से खा सकें। हमें उन बच्चों को देखना बड़ा अच्छा लगता था इसलिए हमने उन्हें बड़ी सावधानी से अपने सामने लाने को कहा जिससे उन्हें हानि न पहुँचे। हमने उन्हें देख लेने के बाद उसी बाग में लौटा ले जाने को कहा जो शाही कनातों के भीतर है और आदेश दिया कि सावधानी से उनकी रक्षा करें तथा जब वे चलने लगें तब हमारे सामने ले आवें।

इसी दिन हकीम रूहुल्ला को एक सहस्र रुपए दिया। मिर्जा शाहरुख का पुत्र बदीउज्जमाँ अपनी जागीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। मंगलवार २६ वीं को कँकड़िया तालाब से कूचकर हम कज ग्राम में ठहरे। बुधवार २७ वीं को हमने महमूदाबाद की नदी एजक के किनारे पड़ाव डाला। अहमदाबाद की जलवायु बहुत खराब थी इसलिए महमूद बैकरा ने अपने हकीमों की सम्मति से उक्त नदी के किनारे एक नगर बसाया और वहीं रहने लगा। चंपानेर विजय करने

के अनंतर इसने उसीको अपनी राजधानी बनाया और महमूद शहीद के समय तक गुजरात के शासक गण मुख्यतः यहीं रहते थे। यह महमूद गुजरात का अंतिम सुलतान था और यह महमूदाबाद में रहा था। बिना किसी शंका के महमूदाबाद का जलवायु अहमदाबाद की जलवायु से समानता नहीं रखता। इसकी जाँच करने के लिए हमने आज्ञा दी कि एक भेंड को खाल खींचकर कँकड़िया तालाब के किनारे टाँग दें और उसी समय एक को महमूदाबाद में टाँग दें जिससे वायु की विभिन्नता ज्ञात हो सके। ऐसा हुआ कि सात घड़ी दिन बीतने पर वहाँ भेंडको टाँगा और तीन घड़ी दिन बच गया था तभी वह इतना बदल गया तथा सड़ गया कि उसके पास जाना कठिन हो गया। महमूदाबाद की भेंड को सवेरे टाँगा गया पर संध्या तक उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ था और डेढ़ प्रहर रात्रि बीतने पर सड़ना आरंभ हुआ। संक्षेप में अहमदाबाद के पास आठ घंटे में सड़ गया और महमूदाबाद में चौदह घंटे के अनंतर।

गुरुवार २८ वीं को रुस्तमखाँ को, जिसे हमारे सौभाग्यशाली पुत्र शाहजहाँ ने गुजरात के शासन तथा प्रबंध पर नियत किया था, एक हाथी, खिलअत तथा एक परम नर्म शाल उपहार देकर जाने की छुट्टी दी और उन जहाँगीरी सरदारों को जो उस प्रांत में नियत थे उनके पदानुसार घोड़े तथा खिलअत दिए। शुक्रवार २९ शहरिवर को, १म शव्वाल को, राय बहारः को खिलअत, एक जड़ाऊ तलवार और एक खास घोड़ा देकर उसे स्वदेश जाने की छुट्टी दी। उसके पुत्रों को भी खिलअत तथा घोड़े दिए। शनिवार को शाहआलम के पौत्र सैयद मुहम्मद को आज्ञा दी कि बिना छिपाए वह जो माँगना चाहता हो माँगले और इस आशय के लिए हमने कुरान पर शपथ ली। उसने कहा कि आपने कुरान पर शपथ ली इसलिए हम कुरान ही माँगते हैं जिसे हम सदा अपने पास रख सकें और उसके पढ़ने का पुण्य बाद-

शाह को मिले। इस पर हमने याकूत की लिखी हुई कुरान मीर को दी। यह एक छोटी सुंदर जिल्द थी, जो संसार की एक वैचित्र्य थी। उसकी पीठ पर हमने अपने हाथ से लिखा कि इसे हमने सैयद मुहम्मद को अमुक तिथि को अमुक स्थान में भेंट दिया। इसका वास्तविक कारण यह है कि मीर बहुत ही अच्छे स्वभाव का, व्यक्तिगत उच्चाशयता से विभूषित, आचारवान तथा शीलवान था और सुंदर मुख तथा ऊँचे ललाट का था। इस देश के मनुष्यों में मीर के समान अच्छे स्वभाववाला आदमी नहीं देखा था। हमने उसे आज्ञा दिया कि वह[1] कुरान का अनुवाद सादे[2] अनलंकृत भाषा में बिना अपनी ओर से किसी प्रकार की टीका या व्याख्या के अक्षरशः फारसी में करे। अनुवाद पूरा कर लेने पर वह उसे अपने पुत्र जलालुद्दीन सैयद द्वारा दरबार भेजे। मीर का पुत्र भी वाह्य तथा अंतः बुद्धि से युक्त नवयुवक है। उसके ललाट से निर्मलता तथा धार्मिकता के चिन्ह स्पष्ट हैं। मीर को अपने पुत्र का गर्व है और वास्तव में वह इस योग्य है, जो अच्छा युवा पुरुष है। हमने बारबार गुजरात के पवित्र मनुष्यों पर उनके गुणों के अनुसार कृपा दिखलाई। हमने पुनः हर एक को धन-रत्न देकर घर जाने की छुट्टी दे दी।

इस देशकी जलवायु हमारी प्रकृति के विरुद्ध थी इसलिए हकीमों ने उचित समझा कि हम अपने प्यालों को संख्या कम कर दें। हमने उनकी सम्मति के अनुसार संख्या कम करना आरंभ कर दिया और एक सप्ताह में एक प्याले की तौल कम कर दी। इसके पहले प्रत्येक

---

१. सैयद मुहम्मद का पुत्र शाहजहाँ के समय सदर हुआ। देखिए मुगल दरबार भाग ५।

२. मुगल यहाँ दरबार में लुगते रेख्ता शब्द दिया हुआ है।

संध्या को छ प्याले, प्रत्येक प्याले साढ़े सात तोले अर्थात् कुल पैंतालीस तोले लेते थे। मदिरा में प्रायः जल मिला रहता था। अब हम छ प्याले सवा छ तोले के लेते हैं अर्थात् कुल साढ़े सैंतीस तोले।

सोलह सत्रह वर्ष पहले हमने इलाहाबाद में अपने ईश्वर से मन्नत ली थी कि पचास वर्ष की अवस्था को पहुँचने पर हम बंदूक तथा गोली से अहेर खेलना छोड़ देंगे और अपने हाथ से किसी जीव की हिंसा न करेंगे। मुकर्रब खाँ हमारा एक विश्वासपात्र सेवक था और वह इस मन्नत की बात जानता था। इस तिथि को हम अपने पचासवें वर्ष में पदार्पण कर चुके थे और एक दिन ज्वर की अधिकता से हमारी स्वाँस भारी होगई तथा हमारी हालत खराब होगई। ऐसी अवस्था में हमने ईश्वर को जो वचन दिया था वह दैव योग से हमारे ध्यान में आया और तब हमने पक्का विचार किया कि जिस दिन पचास वर्ष पूरे होंगे और हमारी मन्नत पूरा करने का समय आ जायगा तो हम उसी दिन अपने पिता के मकबरे पर जाकर, ईश्वर इसका साक्षी रहे, ईश्वर की सहायता से अपने पिता के पवित्र तत्व से अपने वचन का समर्थन कराएँगे और उसे त्याग देंगे। ज्योंही हमने ऐसा विचार निश्चित किया वैसे ही हमारा रोग तथा कष्ट दूर हो गया। हम स्वस्थ हो गए और ईश्वर की प्रशंसा में मुख खोला तथा उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया। हमें आशा है कि हमारी रक्षा होगी।[1]

गुरुवार ४थी इलाही महीने (मेह) को आदिल खाँ के वकील सैयद कबीर तथा बख्तर खाँ को, जो उसकी भेंट को लेकर इस उच्च दरबार में आए थे, जाने की छुट्टी मिली। सैयद कबीर को खिलअत, एक घोड़ा तथा एक जड़ाऊ खंजर और बख्तर खाँ को एक घोड़ा,

---

१. इसके अनंतर दो शैर दिए हैं।

खिलअत तथा एक जड़ाऊ उर्बसी, जिसे दक्षिण के लोग गले मे
पहिरते हैं, दिया और छ सहस्र दर्ब दोनों को व्यय के लिए दिए।
आदिल खाँ बराबर हमारे पुत्र शाहजहाँ से हमारा चित्र माँगा करता
था इसलिए हमने एक चित्र एक बहुमूल्य लाल तथा एक खास हाथी
के साथ भेजा। एक फर्मान भी भेजा गया कि यदि वह निजामुलमुल्क
के राज्यों का जो भी अंश अपने अधिकार में कर लेगा वह उसे हम
भेंट कर दिया जायगा और जब कभी वह किसी प्रकार की सहायता
चाहेगा तब शाहनवाज खाँ सेना नियुक्त कर सहायतार्थ भेज देगा
पहले दिनों में निजामुलमुल्क दक्षिण के सुलतानों में सब से बड़ा
था, जिसके बड़प्पन को सभी स्वीकार करते थे और उसे स
बड़ा भाई समझते थे। इस काल में आदिल खाँ ने सब से अच्छा
कार्य किया और हमारे फर्जंद की पदवी से सम्मानित हुआ
हमने सारे दक्षिण प्रांत का उसे प्रधान तथा नेता नियत किया
और उस चित्र की पीठ पर यह किता हमने अपने हाथ से
लिख दिया—

> तुम्हारी ओर हमारी कृपा दृष्टि सदा लगी रहती है।
> हमारे सौभाग्य की छाया में तुम सुख से दिन व्यतीत करो॥
> हमने तुम्हारे पास अपना चित्र भेजा है।
> जिसमें तुम हमें हमारे चित्र में अध्यात्म रूप से देख सको॥

हमारे पुत्र शाहजहाँ ने हकीम हुमाम के पुत्र हकीम खुशहाल को
जो इस दरबार के अच्छे खानःजादों में से है, और जो छोटी अवस्था
ही से हमारे पुत्र की सेवा में रहा है, आदिल खाँ के वकीलों के
साथ भेजा कि उसे जहाँगीरी कृपा की शुभ सूचना दे। उसी दिन
मीरजुम्ला को अर्जमुकर्रर का कार्य दिया गया। गुजरात का दीवान
किफायत खाँ जब बंगाल का दीवान था उसी समय घटनाओं में पड़कर

उसका बहुत सा माल नष्ट हो गया था इसलिए उसे पंद्रह सहस्र रुपये दिए गए।

इसी समय जहाँगीरनामा की दो प्रतियाँ पूरी प्रस्तुत कर हमारे सामने उपस्थित की गई। इनमें से एक मदारुलमुल्क को दे दी गई थी और दूसरी प्रति आज हमने अपने 'फर्जंद' आसफ खाँ को दी। शुक्रवार ५वीं को जहाँगीर कुली खाँ का पुत्र बहराम बिहार प्रांत से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। इसने कोकरा की खान से प्राप्त कुछ हीरे हमारे सामने उपस्थित किए। उस प्रांत में जहाँगीर कुली खाँ द्वारा अच्छी सेवा नहीं की गई थी और यह भी सूचना मिली थी कि उसके भाइयों तथा दामादों ने उस प्रांत में अत्याचार भी किए थे एवं प्रजा को कष्ट दे रहे थे। उनमें से प्रत्येक ने एक-एक फौजदारी अपने लिए अलग कर ली थी और जहाँगीर कुली खाँ के शासन को नहीं मान रहे थे। इस कारण हमने अपने हाथ का लिखा एक फर्मान अपने एक विश्वासपात्र सेवक मुकर्रब खाँ को देकर भेजा कि वह बिहार का प्रांताध्यक्ष नियत किया गया है। हमने आज्ञा दी कि इस फर्मान को पाते ही वह शीघ्रता से उस ओर जाय। इब्राहीम खाँ फतहजंग द्वारा खान पर अधिकार प्राप्त करने के अनंतर भेजे हुए कुछ हीरों को हमने हीरातराशों को काटने के लिए दिया था। इसी समय बहराम एकाएक आगरे आया और वहाँ से दरबार (गुजरात) की ओर जा रहा था। ख्वाजाजहाँ ने उसी के हाथ तैयार हो गए कुछ हीरों को भेज दिया। इनमें से एक नीलापन लिए हुए है, जो नीलम से भिन्न नहीं ज्ञात होता। अब तक हमने इस रंग का हीरा नहीं देखा था। यह तौल में तीस सुर्ख था और जौहरियों ने इसका मूल्य तीन सहस्र रुपए आँका। उनका कथन था कि यदि यह सफेद होता और किसी प्रकार का दोष न रहता तो यह बीस सहस्र रुपए मूल्य का हो जाता।

इस वर्ष छ मेह तक आम हमें मिलता रहा। इस देश में लेमूँ बड़े तथा अधिक मिलते हैं। एक हिंदू काकू उद्यान से कुछ ले आया, जो अच्छे तथा पके हुए थे। हमने उसमें से सबसे बड़े को तौलवाया जो सात तोले था।

शनिवार ६ वीं को दशहरा का त्योहार था। पहले लोग घोड़ों को सजाकर लाए और हमें उनका निरीक्षण कराया। इसके अनंतर हाथियों को उसी प्रकार सजाकर ले आए।

माही नदी अभी तक उतरने योग्य नहीं हुई थी कि शाही पड़ाव उस पार जा सके और महमूदाबाद का जलवायु भी अन्य पड़ावों से अच्छा था इसलिए हम यहाँ दस दिन तक और रहे। सोमवार ८ वीं को हमने कूच किया और मूडा में पड़ाव डाला। हमने ख्वाजा अबुल् हसन बख्शी को कमठ सेवकों जैसे मल्लाहों को डाँडों के साथ आगे भेजा कि माही पर पुल बाँधें और उसके उतरने योग्य होने की प्रतीक्षा न करें जिसमें विजयी पड़ाव आराम से उतर सके। मंगलवार ६ वीं को ठहरे रहे और बुधवार १० वीं को ऐना में पड़ाव पड़ा।

पहले नर सारस बच्चों को पैरों से चोंच में पकड़कर उलटा लटका लेता था और इससे भय था कि वह बच्चों पर दया नहीं करता तथा वे नष्ट हो सकते हैं। इस पर हमने आदेश दिया कि उस नर को अलग रखें तथा बच्चों के पास न जाने दें। अब हमने अनुभव के लिए आज्ञा दी कि उसे पास जाने दें जिससे उसकी कठोरता या स्नेह मालूम पड़े। ऐसा होने पर उसने बड़ी कृपा तथा स्नेह प्रगट किया जो मादा से किसी प्रकार कम नहीं था इससे ज्ञात हुआ कि वह वैसा प्रेम ही के कारण करता था। गुरुवार ११ वीं को हम ठहरे रहे तथा दिन के अंत में चीतों को लेकर अहेर खेलने गए। दो काले मृग, चार हरिणी

तथा एक चिकारा पकड़े गए। रविवार १४ वीं को हम चीतों के साथ अहेर को गए और पंद्रह नर-मादा हरिणों को पकड़ा। हमने रुस्तम तथा उसके पुत्र सुहराब खाँ को अहेर खेलने की आज्ञा दी कि जितने नील गाय हो सके मारें। पिता-पुत्र ने सात नर-मादा नील गाय मारे। हमें सूचित किया गया कि एक शेर आसपास में है जो मनुष्यों को खाता है तथा जिससे प्रजा को बहुत कष्ट है। हमने अपने पुत्र शाहजहाँ को आज्ञा दी कि वह प्रजा के कष्ट को दूर करे। उसने शेर को गोली से मारा और रात्रि में हमारे पास ले आया। हमने अपने सामने उसकी खाल उतरवाई। यद्यपि देखने में यह विशाल था पर दुबला होने कारण इसका तौल उन बड़े शेरों से कम था जिन्हें हमने स्वयं मारा था। सोमवार १५ वीं और मंगलवार १६ वीं को हम नील गाय मारने गए और प्रति दिन दो को मारा। गुरुवार १८ वीं को जिस तालाब पर हम ठहरे थे वहीं मदिरोत्सव हुआ। जल के ऊपर कँवल खिले हुए थे। हमारे निजी सेवकों ने प्यालों का खूब आनंद लिया।

बिहार से जहाँगीर कुली ने बीस और बंगाल से मुरौवतखाँ ने आठ हाथी भेजे थे जो हमारे सामने उपस्थित किए गए। जहाँगीर कुली के हाथियों में से एक और मुरौवत खाँ में से दो हमारे निजी हथसाल में रखे गए तथा बाकी हमारे अनुयायियों में वितरित कर दिए गए। मिर्जा अबुल्क़ासिम नमकीन के पुत्र मीर खाँ का, जो इस दरबार के खानःजादों में से एक है, मंसब बढ़ाकर आठ सदी ६०० सवार का कर दिया। कियाम खाँ को प्रधान शिकारी का कार्य दिया और उसे छ सदी १५० सवार का मंसब प्रदान किया। इज्जतखाँ, जो एक बारहा सैय्यद है और वीरता तथा साहस के लिए प्रसिद्ध है, बंगश प्रांत में नियत है। उस प्रांत के अध्यक्ष महाबतखाँ की प्रार्थना पर उसका मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ८०० सवार का कर दिया। गुजरात के दीवान किफायतखाँ को एक हाथी देकर बिदा कर दिया। हमने उस प्रांत के

बख्शी सफीखाँ को एक तलवार दिया। शुक्रवार १६ वीं को हम शिकार खेलने गए और एक नील गाय मारा। हमें स्मरण, नहीं है कि बड़े नर नील गाय में गोली आर पार होगई हो। मादा नीलगायों में से कितनी आर गोली पार होगई है। आज के दिन पैंतालीस कदम से गोली मारने पर वह पार होगई। शिकारियों की भाषा में दो पैर आगे पीछे रखने पर एक कदम होता है। रविवार २१ वीं को हमने बाज़ से अहेर खेला और मिर्जा रुस्तम, दाराबखाँ, मीर मीरान तथा अन्य सेवकों को आज्ञा दिया कि वे जाकर गोली से जितने नीलगाय मार सकें मारें। उन्होंने उन्नीस नर मादा नीलगाय मारे। दस हरिण चीतों द्वारा पकड़े गए। दक्षिण के बख्शी इब्राहीमखाँ का मंसब सिपह-सालार खानखानाँ की प्रार्थना पर एक हजारी २०० सवार का कर दिया। सोमवार २२ वीं को कूच हुआ और मंगलवार २३ वीं को भी कूच किया। शिकारियों ने सूचना दी कि एक शेरनी तीन बच्चों के साथ पास में दिखलाई दी है। वे मार्ग में पड़ते थे इस लिए हम स्वयं गए और चारों को मार डाला। इसके अनंतर आगे के पड़ाव पर गए। हमने बने हुए पुल से माही पार किया। यद्यपि इस नदी में नावें नहीं थीं जिनसे पुल बाँधा जा सके और पानी भी गहरा तथा तेज था। ख्वाजा अबुल् हसन प्रधान बख्शी ने बड़ा परिश्रम कर दो तीन दिन पहले ही बहुत दृढ़ पुल तैयार कर लिया था। इसकी लंबाई एक सौ चालीस गज तथा चौड़ाई चार गज थी। इसकी दृढ़ता की जाँच के लिए हमने आज्ञा दी कि गुणसुंदर खास हाथी, जो भारी तथा शक्तिमान हाथियों में से एक है, तीन हथिनियों के साथ आगे उस पार भेजा जाय। पुल इतना दृढ़ बना था कि इतने भारी हाथियों के बोझ से उसके स्तंभ हिले तक नहीं।

हमने अपने पिता के श्रीमुख से इस प्रकार सुना है—'हमने अपनी युवावस्था में दो या तीन प्याला मदिरा लिया था और मस्त हाथी

र सवार हुए थे। यद्यपि हम अपनी चैतन्यता में थे और हाथी भी हुत सुशिक्षित था तथा हमारे अधिकार में था पर हमने मत्त होने का हाना किया और हाथी भी बिगड़ैल होकर मानो हमारे संकेत से आदमियों पर दौड़ने लगा। इसके अनंतर हमने दूसरे हाथी को मँगवाकर दोनों को लड़ा दिया। वे दोनों लड़ने लगे और ऐसा करते हुए वे जमुना नदी के ऊपर बने हुए पुल के सिरे पर पहुँच गए। ऐसा हुआ कि दूसरा हाथी भागा और उसे बचने का दूसरा मार्ग न रहने से वह पुल की ओर चला। जिस हाथी पर हम थे उसने पीछा किया और यद्यपि वह हमारे अधीन था और यदि हम चाहते तो उसे संकेत मात्र से रोक लेते पर हमने सोचा कि यदि हम उसे पुल पर से जाने में रोक लेते हैं तो लोग समझ जायँगे कि हमारी उन्मत्तता बनावटी है और विश्वास कर लेंगे कि न हम उन्मत्त हैं और न हाथी ही बिगड़ैल है। इस प्रकार का कपट करना बादशाहों को उचित नहीं है इसलिए ईश्वर की प्रार्थना कर हमने हाथी को नहीं रोका। दोनों ही पुल पर जा रहे जो नावों का बना हुआ था और जब हाथी नावों के एक किनारे पर अगले पैर रखते तो नाव आधी डूब जाती और आधी ऊपर उठ जाती। हर कदम पर विचार उठता कि नावों के रस्से कहीं टूट न जायँ। लोग यह देखकर भय तथा आशंका से त्रस्त हो रहे थे। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की कृपा तथा रक्षा इस प्रार्थी पर सदा सर्वत्र बनी रही इसलिए दोनों हाथी पुल से कुशलपूर्वक पार हो गए।'[1]

गुरुवार २५वीं को माही नदी के तट पर मदिरोत्सव हुआ और हमारे कुछ निजी सेवक, जो ऐसे जलसों में उपस्थित रहते हैं, भरे

---

१. अकबरनामा में यह वृत्तांत दिया है तथा इसके चित्र भी तत्कालीन प्राप्त हैं।

प्यालों तथा कृपाओं से खूब संतुष्ट हो गए। यह पड़ाव अत्यंत रमणीय था। इसलिए हम यहाँ चार दिन तक दो कारणों से रुके रहे—पहले यह कि यह स्थान सुंदर था तथा दूसरे यह कि माही नदी पार करने में लोगों में गड़बड़ी न हो।

रविवार २८वीं को हमने माही के तट से कूच किया और सोमवार को भी कूच जारी रहा। इस दिन एक विचित्र दृश्य दिखलाई पड़ा। सारस का जोड़ा जिन्हें बच्चे हुए थे अहमदाबाद से गुरुवार २५वीं को यहाँ लाए गए थे। शाही कनातों के घेरे के भीतर, जो एक तालाब के किनारे था, वे अपने बच्चों के साथ टहल रहे थे। संयोग से दोनों नर-मादा ने चिल्लाना आरंभ किया जिससे सारस का एक जंगली जोड़ा उनकी चिल्लाहट सुनकर तालाब के दूसरे किनारे से चिल्लाते हुए इनकी ओर उड़कर आया। नर नर के साथ तथा मादा मादा के साथ लड़ने लगीं और कुछ लोगों के यहाँ रहते हुए भी उन्होंने उनपर ध्यान नहीं दिया। जिन खोजों को उनकी रक्षा करने के लिए आज्ञा दी गई उन्होंने शीघ्रता की और एक ने नर को तथा दूसरे ने मादा को पकड़ लिया। जिसने नर को पकड़ा था वह तो बहुत लड़ने भिड़ने पर पकड़े रहा पर दूसरा मादा को न पकड़े रह सका और वह उड़कर निकल गई। हमने अपने हाथ से उसके चोंच तथा पैरों में छल्ले पहिराकर उसे उड़ा दिया। दोनों अपने स्थान को चले गए। जब पालतू सारस बोलते तब वे भी उत्तर देते थे। हमने इसी प्रकार का दृश्य जंगली हरिणों में देखा था जब कर्नाल पर्गना में अहेर खेलने गए थे। लगभग तीस शिकारी तथा सेवक साथ में थे जब एक काला मृग हरिणियों के साथ दिखलाई पड़ा। पालतू हरिण फँसानेवाला छोड़ा गया। दोनों ने दो तीन बार टक्करें लीं और तब पालतू लौट आया। दूसरी बार उसके सींघों में फाँस लगाकर हमने छोड़ना चाहा कि जंगली को वह पकड़ ले पर इसी बीच जंगली हरिण क्रोध की

अधिकता में मनुष्यों के झुंड की परवाह न कर विना कुछ सोचे दौड़ आया और उस पालतू हरिण से टक्करें लेने लगा जिससे वह भाग गया। जंगली मृग इसके अनंतर भाग गया।

इसी दिन इनायत खाँ की मृत्यु का समाचार आया। यह हमारा निजी सेवक था। यह अफीम का व्यसन रखता था और जब अवसर मिलता तो मदिरापान भी करता था। क्रमशः यह मदिरा के लिए पागल हो गया। यह निर्बल मनुष्य था और पाचन करने से अधिक पी गया इससे पेटचली रोग हो गया तथा दो तीन बार वेहोश हो गया। हमारी आज्ञा से हकीम रुकना ने दवा दी पर जितने भी उपाय किए किसी से भी लाभ नहीं हुआ। इसी समय इसे विचित्र भूख ने सताया और यद्यपि हकीम ने इसे चौबीस घंटे में केवल एक बार पथ्य लेने के लिये सम्मति दी पर यह न रुक सका। यह पानी तथा आग पर दौड़ा पड़ता था जिससे बहुत निर्बल हो गया। अंत में यह बहुत रुग्ण हो गया तथा इसकी अवस्था बिगड़ गई। इसके कुछ दिन पहले इसने प्रार्थनापत्र आगरा जाने के लिए दिया था। हमने आज्ञा दी कि हमारे सामने उपस्थित होकर छुट्टी ले। लोग पालकी में डालकर हमारे यहाँ ले आए। यह इतना निश्शक्त हो गया था कि हमें आश्चर्य हुआ।

वह केवल हड्डियों पर चढ़ा हुआ चर्म था।

या कह सकते हैं कि हड्डियाँ तक गल गई थीं। यद्यपि चित्रकारों ने दुर्बल मुख खींचने में बहुत प्रयत्न किए थे पर ऐसा क्या इससे मिलता जुलता भी हमने कभी नहीं देखा था। हे ईश्वर मनुष्य का पुत्र भी क्या ऐसे स्वरूप का हो जाता है? उस्ताद के ये दो शैर हमारे ध्यान में आए—

यदि हमारी छाया हमारे पैरों को न पकड़ रखेगी।
तो कयामत के दिन हम खड़े न हो सकेंगे॥

हमारी-आत्मा निर्बलता के कारण कोई शरण नहीं पाती।
कि हमारी ओठों पर वह कुछ देर ठहर सके॥

यह अति··विचित्र अवस्था थ इसलिए हमने चित्रकारों को उसकी शबीह लेने का आदेश दिया। वास्तव में हमने उसे बहुत बदला हुआ पाया। हमने उससे कहा कि ध्यान रखो, अपनी ऐसी अवस्था में एक क्षण के लिए भी ईश्वर को न भूलो और न उसकी कृपा से निराश हो। यदि मृत्यु तुम्हें छुटकारा दे तो उसे पश्चात्ताप तथा क्षमा प्रार्थना के लिए अवसर समझो। यदि जीवन का अंतकाल ही आ गया हो तो जितने क्षण ईश्वर का स्मरण करोगे वही लाभ है। जिन लोगों को छोड़े जा रहे हो उनकी चिंता मत करो। थोड़ी भी सेवा का हम लोग अधिक ध्यान रखते हैं। लोगों ने उसकी दरिद्रता के संबंध में कहा था इसलिए दो सहस्र रुपए उसे मार्ग-व्यय के लिए देकर विदा किया। इसके दूसरे ही दिन वह महायात्रा कर गया।

मंगलवार ३०वीं को मानव नदी के किनारे पड़ाव पड़ा। इलाही महीने आबाँ की २री को गुरुवार का उत्सव इसी स्थान में मनाया गया। महाबत खाँ के पुत्र अमानुल्ला का मंसब उसी की प्रार्थना पर बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। रायसाल के पुत्र गिरिधर का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ८०० सवार का किया गया। खानआजम के पुत्र अब्दुल्ला को एक हजारी ३०० सवार का मंसब मिला। गुजरात के एक जागीरदार दिलेरखाँ को हमने एक घोड़ा तथा एक हाथी दिया। शहबाज खाँ कंबू का पुत्र रनबाज खाँ आज्ञानुसार दक्षिण से आया और वह बंगश की सेना का बख्शी तथा वाकेआनवीस नियत किया गया। इसे आठ सदी ४०० सवार का मंसब मिला। हमने शुक्रवार ३री को कूच किया। इसी पड़ाव पर हमारे पुत्र शाहजहाँ के प्रिय पुत्र शाह शुजा को, जो नूरजहाँ के पवित्र

ोद में पल रहा था और जिस पर हमारा प्राण से भी बढ़कर स्नेह था, उम्मेसिबियाँ (पूतना) का रोग हो गया और बहुत समय तक अचे- ान रहा। यद्यपि बहुत से लोगों ने अनेक प्रकार का उपचार किया र कुछ लाभ नहीं हुआ और उसकी बेहोशी से हमारे होश उड़ गए। ःय औषधियों से निराशा हो चुकी थी इसलिए हमने विनम्रता तथा ग्रधीनता से उस परम सम्राट् के दरबार में, जो अपने दासों का ालन करता है, प्रार्थना का सिर रगड़ा तथा बच्चे के अच्छे होने के लेए दुआ माँगी। इसी अवस्था में विचार आया कि हमने अपने ईश्वर से मन्नत मानी है कि पचास वर्ष पूरा होने पर यह प्रार्थी बंदूक तथा गोली से शिकार खेलना त्याग देगा तथा अपने हाथ से किसी जीव को हानि न पहुँचावेगा तो यदि बच्चे की रक्षा के लिए हम आज ही की तिथि से गोली चलाना त्याग दें तो उसका जीवन कितने जीवों की प्राणरक्षा का कारण होगा और ईश्वर मुझे उसे दे देगा। अंत में उच्चे उद्देश्य तथा पूर्ण विश्वास से हमने ईश्वर की प्रार्थना की कि आज के दिन से हमारे हाथ से किसी जीव को हानि नहीं पहुँचेगी। अल्ला की कृपा से उसकी बीमारी कम होने लगी। जब हम अपनी माता के गर्भ में थे तब एक दिन हम हिले-डुले नहीं जैसा कि अन्य बच्चे करते हैं। सेविकाओं को बड़ा आश्चर्य हुआ और कारण की जाँचकर हमारे पिता से कहा। उस समय हमारे पिता चीतों के साथ अहेर खेल रहे थे। उस दिन शुक्रवार था और हमारी रक्षा के लिए हमारे पिता ने व्रत लिया कि शुक्रवार के दिन जीवन भर चीतों के साथ अहेर न खेलेंगे। अपने अंत काल तक वह इस व्रत पर दृढ़ रहे और हमने भी उन्हीं की आज्ञानुसार अभीतक शुक्रवार के दिन चीतों से अहेर नहीं खेला। अंत में हम अपने नेत्र के प्रकाश शाह शुजा की निर्बलता के कारण तीन दिन उसी पड़ाव में ठहर गए जिसमें सर्वशक्तिमान् ईश्वर उसे प्रकृतस्थ कर दे।

मगलवार ७ वीं को हमने कूच किया। एक दिन हकीमअली ऊँटनी के दूध की प्रशंसा कर रहा था। हमने सोचा कि यदि हम कुछ दिन तक इसका उपयोग करते रहें तो संभव है कि कुछ लाभ करे और हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो। आसफ खाँ के पास एक दुधार ईरानी उँटनी थी और हमने थोड़ा सा दूध लिया। अन्य ऊँटनियों के दूध के विरुद्ध, जिसमें निमकीनपन का अभाव नहीं था, इसका दूध मीठा तथा स्वादिष्ट था और एक महीने हो गए कि हम नित्य एक प्याला लेते हैं जो जल के प्याले का आधा होता है तथा यह स्पष्ट ही लाभदायक भी है क्योंकि इससे हमारी प्यास बुझ जाती है। यह भी विचित्र है कि आसफ खाँ को इसे क्रय किए दो वर्ष हो गए और तब न इसे बच्चा था और न दूध था। इस समय संयोग से इसे दूध उतर आया था। वे इसे प्रतिदिन गाय का दूध चार सेर, गेहूँ पाँच सेर, एक सेर गुड़ तथा एक सेर सौंफ खाने को देते थे जिससे उसका दूध मीठा, स्वादिष्ट तथा उपयोगी हो जाय। वास्तव में यह हमारे लिए लाभदायक था और हमें अच्छा लगता था। जाँच करने के लिए हमने गाय का तथा भैंस का भी दूध मँगवाया और तीनों का स्वाद लिया। इस ऊँटनो के दूध की मिठास तथा स्वाद के बराबर वे नहीं थे। हमने आज्ञा दी कि अन्य ऊँटनियों को भी इसी प्रकार का खाना दिया जाय जिससे यह ज्ञात हो कि अच्छे भोजन के कारण या उसके प्रकृतस्थ गुणों के कारण यह स्वच्छता है।

बुधवार ८ वीं को हमने कूच किया और नवीं को ठहरे रहे। शाही पड़ाव एक भारी तालाब के किनारे पड़ा था। शाहजहाँ ने एक कश्मीरी चाल की बनी नाव भेंट की, जिसमें बैठने का स्थान चाँदी का बना हुआ था। उसी दिन के अंत में हम उस नाव में बैठकर तालाब के चारों ओर घूमे। इसी दिन बंगश का बख्शी आबिद खाँ आज्ञानुसार आकर सेवा में उपस्थित हुआ और उसे दीवान बयूतात का पद

मिला। गुजरात के एक सहायक सरदार सर्फराज खाँ को एक झंडा, एक तिपचाक घोड़ा तथा एक हाथी मिला और इतने सम्मान के साथ उसे जाने की छुट्टी मिली। बंगश की सेना में नियत इज्जत खाँ को एक झंडा देकर सम्मानित किया। शुक्रवार १० वीं को कूच की आज्ञा दी। मीरमीरान का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ६०० सवार का कर दिया। शनिवार ११ वीं को दोहद में पड़ाव पड़ा। सूर्यवार की संध्या को इलाही महीने आबाँ की १२ वीं को तेरहवें जलूसी वर्ष में, जो १५ वीं जीकदः सन् १०२७ हि० होता है, जब सूर्य तुला राशि के १९ वें अंश में थे तब ईश्वर ने हमारे पुत्र शाहजहाँ को आसफ खाँ की पुत्री से एक पुत्र-रत्न दिया। हम आशा करते हैं कि इसका आगमन इस अक्षय साम्राज्य के लिए शुभ होगा। तीन दिन यहाँ ठहरने पर बुधवार १५ वीं आबाँ को पड़ाव समरना ग्राम में पड़ा। गुरुवार का उत्सव यथासंभव नदी के किनारे और किसी स्वच्छ स्थान में मनाया जाना आवश्यक था इसलिए निरुपाय होकर गुरुवार १६ वीं की अर्ध रात्रि के आजाने पर कूच की आज्ञा दी और जब सूर्योदय हुआ तब पड़ाव बाखर के तालाब के किनारे डाला गया। दिन के अंत समय में मदिरोत्सव हुआ और कुछ निजी सेवकों को हमने प्याले दिए। शुक्रवार १७ वीं को कूच की आज्ञा दी। यहीं पास में केशोदास मारू की जागीर है और वह आज्ञानुसार,आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

शनिवार १८ वीं आबाँ को रामगढ़ में पड़ाव था। इसके पहले कुछ रात्रियों तक सूर्योदय से तीन घड़ी पहले आकाश में प्रकाशमान भाफ स्तंभ रूप में दिखलाई पड़ता था। हर बाद की रात्रि में एक घड़ी पहले यह उदय होता था। जब इसने अपना पूरा रूप ग्रहण किया तब इसका स्वरूप भाले के समान हो गया, दोनों छोरों पर पतला और मध्य में मोटा। यह हँसुए के समान टेढ़ा था, जिसकी पीठ दक्षिण की ओर और सामना उत्तर की ओर था। अब यह सूर्योदय के एक प्रहर

पहले उदय होता। जब ज्योतिषियों ने इस्तरलाब से इसका स्वरूप तथा नाप लिया और निश्चय किया कि स्वरूप की भिन्नता के साथ यह चौबीस अर्द्धांश तक फैला है। यह उच्च आकाश में भ्रमण कर रहा है पर इसकी चाल निजी है जो आकाश की चाल से भिन्न है क्योंकि पहले यह वृश्चिक राशि में था और अब तुला में है। इसकी चाल दक्षिण दिशा की ओर है। ज्योतिषियों ने अपनी पुस्तकों में इस प्रकार की घटना को भल्ल लिखा है और इसका प्रभाव लिखा है कि अरब के शाहों की निर्बलता की यह सूचना देता है और उनके शत्रु की उन पर विजय बतलाता है। ईश्वर ही इसे जाने! इसके सोलह रात्रि अनंतर उसी ओर एक तारा दिखलाई पड़ा। इसका सिर चमक रहा था और इसका पुच्छ दो तीन गज़ लंबा था पर वह चमक नहीं रहा था। आठ रात्रि तक यह दिखलाता रहा और जब वह लुप्त हो जायगा तब उसकी सूचना फल के साथ लिखी जायगी।

रविवार को हम ठहरे रहे और सोमवार को सीतल खेड़ा में उतरे। मंगलवार २१ वीं को भी ठहरे रहे। हमने रशीद खाँ अफगान को खिलअत तथा एक हाथी रनबाजखाँ के द्वारा भेजा। बुधवार २२ वीं को मदनपुर पर्गना में पड़ाव पड़ा। गुरुवार २३ वीं को हम रुके रहे तथा प्यालों का जलसा हुआ। दाराबखाँ को नादिरी खिलअत दिया गया। शुक्रवार को भी रुके रहकर शनिवार को पड़ाव नवारी परगना में पड़ा। रविवार २६ वीं को चंबल नदी के किनारे तथा सोमवार को कहनर नदी के किनारे पड़ाव पड़ा। मंगलवार २८ वीं को शाही झंडे उज्जैन नगर के पास पहुँच गए। अहमदाबाद से उज्जैन अट्ठानबे कोस पर है। यह दूरी अट्ठाइस दिन की यात्रा तथा इकतालीस दिन के ठहरने में पूरी हुई अर्थात् दो महीने दो दिन लगे। बुधवार २६ वीं को हमने जदरूप से भेंट किया, जो हिंदू धर्म का विशिष्ट तपस्वी है और जिसके विषय में पूर्व के पृष्ठों में लिखा जा चुका

है। उसके साथ हम कालियादह देखने गए। अवश्य ही इसका सत्संग महत्वपूर्ण है।

आज के दिन कंधार के प्रांताध्यक्ष बहादुरखाँ की सूचना से ज्ञात हुआ कि सन् १०२६ हि० में अर्थात् गत वर्ष में कंधार तथा आस पास में इतने अधिक चूहे हो गए कि उन्होंने उस प्रांत की कुल फसल, अन्न, खेती तथा वृक्षों के फल नष्ट कर दिए कि कुछ नहीं बचा। उन्होंने बालों को काटकर गिरा दिया तथा अन्न खा गए। जब कृषकों ने फसल काटी तब अन्न अलग करने तक दूसरा आधा भी नष्ट कर दिया। यहाँ तक कि कृषकों के हाथ चौथाई तक भी न बचा। इसी प्रकार खरबूजे या अन्य फलों का भी नाश कर दिया। कुछ दिन बाद चूहे गायब हो गए।

हमारे पुत्र शाहजहाँ ने अपने पुत्र होने का उत्सव अब तक नहीं मनाया था इसलिए उज्जैन में, जो उसकी जागीर में है, प्रार्थना की कि गुरुवार का उत्सव ३० वीं को उसके निवास स्थान पर मनाया जाय। उसकी इच्छा पूरी करने का निश्चय कर लेने पर उसी के स्थान में दिन खुशी में व्यतीत किया। हमारे निजी व्यक्तिगत सेवकों ने, जो ऐसे जलसों में उपस्थित रह सकते हैं, भरे हुए प्यालों से खूब आनंद मनाया। हमारे पुत्र शाहजहाँ ने उस शुभ बच्चे को हमारे सामने उपस्थित किया और एक थाली रत्न, जड़ाऊ आभूषण और पचास हाथी भेंट किए, जिसमें ३० नर तथा २० मादा थे। साथ ही उसने बच्चे का नामकरण करने के लिए भी प्रार्थना की। ईश्वर प्रसन्न हो, शुभ साइत में नाम रखा जायगा। उन हाथियों में से सात हमारी हथसाल में रखे गए और अन्य फौजदारों में वितरित कर दिए गए। स्वीकृत भेंट का मूल्य दो लाख रुपए था।

इस दिन अजदुद्दौला (जमालुद्दीन हुसेन आंजू) अपनी जागीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और इक्यासी मुहर नजर तथा

एक हाथी भेंट में दिया। कासिम खाँ जिसे हमने बंगाल के शासन से हटा दिया था तथा बुला भेजा था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सहस्र मुहर भेंट की। शुक्रवार १६ वीं आजर को हम बाजों से अहेर खेलते रहे। सवारी जब जा रही थी तब मार्ग में ज्वार का खेत मिला। साधारणतः एक पौधे में एक बाल होती है पर इसमें सबमें बारह बारह थीं। हम यह देख कर चकित हुए और इसी समय 'शाह तथा माली' का किस्सा हमें याद आया।

शाह और माली का किस्सा

दिन की गर्मी में एक शाह एक उद्यान के फाटक पर आया। उसने एक वृद्ध माली को फाटक पर खड़े देखा और उससे पूछा कि उद्यान में अनार हैं। उसने कहा कि हाँ हैं। शाह ने उससे एक गिलास अनार का रस लाने के लिए कहा। माली की एक सुन्दरी अच्छे स्वभाव की लड़की थी, जिसे उसने अनार का रस लाने के संकेत किया। लड़की गई और तुरंत एक प्याला अनार के रस से भरा हुआ ले आई, जिस पर कुछ पत्तियाँ रखी हुई थीं। शाह ने उससे प्याला लेकर पी लिया और फिर उस लड़की से पूछा कि इस के ऊपर पत्तियों के रखने का क्या कारण है ? उसने मधुर तथा स्पष्ट भाषा में उत्तर दिया कि गर्म हवा में पसीने से तर होते हुए एक साथ अधिक रस पी जाना उचित नहीं होता इसीलिए, उसने सावधानी की दृष्टि से पत्तियाँ डाल दी थीं जिसमें वह धीरे धीरे पिए। शाह साहब उसके मधुर व्यवहार पर प्रसन्न हो गए और उसे अपने हृदय में डालने का विचार करने लगे। इसके अनंतर माली से उन्होंने पूछा कि प्रति वर्ष इस उद्यान से तुम्हें कितना लाभ होता है। उसने उत्तर दिया कि तीन सौ दीनार। शाह ने पुनः पूछा कि दीवान को तुम क्या देते हो ? उत्तर दिया कि बादशाह वृक्षों की आय से कुछ नहीं

ऐते केवल खेती से दशांश लेते हैं। शाह के मन में आया कि हमारे राज्य में बहुत से उद्यान तथा असंख्य वृक्ष होंगे। यदि इन पर दशांश लेया जाय तो बहुत आय हो और मालियों की भी अधिक हानि न हो। अवश्य ही उद्यानों की आय पर कर लगाना चाहिए। इसके अनंतर उसने पुनः कहा कि थोड़ा अनार का रस और लाओ। इस बार लड़की गई तो बहुत देर में थोड़ा सा रस लेकर आई। शाह ने कहा कि पहली बार तू बड़ी जल्दी आई और अधिक लाई पर इस बार तूने बहुत देर लगाई और थोड़ा लाई। लड़की ने उत्तर दिया कि पहली बार उसने एक अनार निचोड़ कर प्याला भर लिया था इससे शीघ्र आई पर इस बार पाँच छ अनारों का रस निचोड़ने पर भी उतना रस नहीं मिला। शाह का आश्चर्य बढ़ा। माली ने प्रार्थना की कि पैदावार का आधिक्य बादशाह के शुभ विचार पर आधारित है। हमें समझ पड़ता है कि आप बादशाह हैं। जब आपने उद्यान की आय की पूछताछ की तभी आपके विचार बदले और इससे फलों में से वह आशीर्वाद निकल गया। सुलतान पर इसका प्रभाव पड़ा और उसने कर का विचार त्याग दिया। उसने पुनः कहा कि फिर एक प्याला रस लाओ। लड़की गई और तुरंत एक प्याला भर कर रस ले आई और प्रसन्नता के साथ हँसते हुए सुलतान के हाथ में दिया। सुलतान ने माली की बुद्धि की प्रशंसा की, कुल बातें उसे समझाईं और लड़की को निकाह में माँगकर निकाह कर लिया।

. . . .

उस सत्यव्रती बादशाह की सच्ची कहानी समय रूपी पृष्ठ पर स्मारक बनी हुई है। वास्तव में ऐसे दैवी फल अच्छे विचारों के चिह्न तथा न्याय के फल हैं। जब तक न्यायप्रिय बादशाहों के कार्य तथा विचार प्रजा के सुख के लिए और मनुष्य की संतुष्टि के लिए होते हैं तब तक भलाई के लक्षण तथा खेतों एवं उद्यानों की पैदावार अच्छी

होती है। ईश्वर की प्रशंसा है कि इस दृढ़ साम्राज्य में फलों पर कोई कर कभी नहीं लगा और न लगता है। इस संबंध में सारे साम्राज्य में एक दाम या एक फल भी शाही खजाने में जमा नहीं होता और न उगाहा जाता है। इसके ऊपर यह भी आज्ञा है कि जो कृषि-योग्य खेत में वृक्ष लगावे तो उसके फल पर भी कर नहीं लगे। हमें विश्वास है कि ईश्वर इस विनम्र को सदा भला करने ही की ओर प्रेरित करेगा।

जब हमारे विचार भले हैं तो तू हमें भलाई दे।

शनिवार को दूसरी बार हमारी इच्छा जदरूप से मिलने की हुई। दोपहर की निमाज के अनंतर हम नाव पर बैठे और उससे मिलने चले। दिन के अंत में हम उसके आश्रम में पहुँचे और उस एकांत-स्थल में उसके सत्संग का सुख उठाया। हमने उसके मुख से धर्म संबंधी कर्तव्य के बहुत से सदुपदेश सुने और दैवी ज्ञान से पूर्ण बातें सुनीं। वास्तविक प्रशंसा उसकी है कि अच्छे सूफी सिद्धांतों की वह स्पष्ट व्याख्या करता है और उसके सत्संग से आनंद मिलता है। इसकी अवस्था साठ वर्ष की है और बाईस वर्ष की अवस्था में सभी सांसारिक संबंध त्याग कर इसने तपस्या के मार्ग पर पैर रखा तथा अड़तीस वर्ष से नम्रता के आवरण में रहता आया है। जब हमने चलने की छुट्टी ली तब उसने कहा कि हम किस भाषा में उस ईश्वर की कृपा को धन्यवाद दें कि हम ऐसे न्यायप्रिय बादशाह के राज्यकाल में अपने परमेश्वर का सुख तथा संतोष से स्मरण - अर्चन कर रहे हैं और किसी प्रकार की असुविधा किसी कारण से हमारे कार्य में नहीं पड़ती।

रविवार ३री को कालियादह से कूचकर हमने कासिमखेड़ा में पड़ाव डाला। मार्ग में बाज से अहेर खेलते गए। संयोग से एक

सारस उड़ा और उस पर तूयगून बाज जिसके हम बड़े प्रेमी थे, छोड़ा गया। सारस ने भागने का प्रयत्न किया और बाज इतने ऊँचे उड़कर चला गया कि अदृश्य होगया। यद्यपि शिकारी गण तथा हँकवाहे चारों ओर दौड़े पर उसका चिन्ह नहीं मिला और ऐसे मरुस्थान में उस बाज को पकड़ लेना असंभव था। लश्कर मीर कश्मीरी, जो कश्मीरी शिकारियों का प्रधान था तथा जिसकी रक्षा में वह बाज़ था, घबड़ाया हुआ सब ओर जंगल में दौड़ता फिरा पर उसका चिन्ह नहीं मिला। एकाएक उसने एक वृक्ष दूर पर देखा और जब उसके पास पहुँचा तब बाज़ को उसकी एक शाखा के छोर पर बैठे देखा। एक पालतू पक्षी दिखलाकर उसने बाज को बुलाया। तीन घड़ी नहीं बीती थी कि वह उसे लेकर हमारे पास उपस्थित हुआ। गुप्त संसार की यह कृपा जो किसी के विचार में नहीं आई थी हमारी प्रसन्नता की वर्द्धक हुई। इसके पुरस्कार में उसका मंसब बढ़ाकर हमने उसे एक घोड़ा तथा खिलअत दिया।

सोमवार ४ थी, मंगलवार ५ वीं और बुधवार ६ वीं को हम बराबर कूच करते रहे और गुरुवार ७ वीं को एक तालाब के किनारे मदिरोत्सव किया। नूरजहाँ बेगम कुछ दिनों से रुग्ण थी और जिन हकीमों तथा वैद्यों को उसकी औषधि करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उन्होंने उन सब औषधियों से कोई लाभ नहीं देखकर, जिन्हें उन्होंने दिया था, उपचार करने में असमर्थता प्रगट की। इसी समय हकीम रूहुल्ला ने उसका उपचार करना आरंभ किया और एक औषधि उसने निश्चित की। ईश्वरी कृपा से थोड़े ही समय में वह स्वस्थ होगई। इस अच्छी सेवा के पुरस्कार में हमने उसका मंसब बढ़ा दिया और उसके देश में तीन ग्राम उसे उसके निजी स्वामित्व में दिया। यह भी आज्ञा दी कि उसे चाँदी से तौलकर वह चाँदी उसे

पुरस्कार में दिया जाय। शुक्रवार ८ वीं से बुधवार[1] १३ वीं तक हम बराबर कूच करते रहे और प्रति दिन पड़ाव पहुँचने तक बाज़ तथा जुर्रे से अहेर खेलते चले। बहुत से तीतर पकड़े गए। गत रविवार को राणा अमरसिंह का पुत्र कुँअर कर्ण ने सेवा में उपस्थित होकर दक्षिण की विजय पर बधाई दी, एक सौ मुहर तथा एक सहस्र रुपए नजर और इक्कीस सहस्र रुपए मूल्य के जड़ाऊ बर्तन कुछ घोड़ों तथा हाथियों के साथ भेंट दिया। हमने हाथी-घोड़े लौटा दिया और बाकी स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन हमने उसे खिलअत दिया। कुतुबुल्-मुल्क के वकील मीर शरीफ को और इरादत खाँ मीर बकावलबेगी को एक एक हाथी दिए। सैयद हिजब्रखाँ को मेवात की फौजदारी देकर उसका मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। रोहतास दुर्ग की अध्यक्षता पर सैयद मुबारक को नियत कर हमने पाँच सदी २०० सवार का मंसब दिया। गुरुवार १४ वीं को साँघरा ग्राम के तालाब के किनारे पड़ाव पड़ा जहाँ मदिरोत्सव मनाया गया और चुने हुए सेवकगण प्यालों से आनंदित किए गए। अहेरी पक्षी गण जो आगरे में पर बदलने के लिए बंद थे आज के दिन हमारे यहाँ ख्वाजा अब्दुल्लतीफ मुख्य अहेरी के द्वारा लाए गए। उनमें से अपने कार्य के योग्य चुनकर बाकी सर्दारों तथा सेवकों में वितरित कर दिए गए।

इसी दिन राजा बासू के पुत्र राजा सूरजमल के विद्रोह तथा कृपाओं के प्रति कृतघ्नता का समाचार मिला। बासू के कई[2] पुत्र थे। यद्यपि सूरजमल सबसे बड़ा पुत्र था पर इसका पिता इसके दुष्ट विचारों तथा कार्यों के कारण इसे प्रायः कैद में रखता और इससे अप्रसन्न रहता था। उसकी मृत्यु पर इस दुष्ट के बड़े

---

१. भूल से हस्तलिखित प्रति में रविवार लिखा है।

२. इकबालनामा पृ. ११९ पर तीन पुत्र लिखा है।

होने तथा दूसरों के योग्य तथा बुद्धिमान न होने से हमने राजा वासू की सेवाओं के विचार से तथा एक जमींदार के परिवार के पालन तथा उसकी पैत्रिक संपत्ति एवं राज्य की रक्षा के लिए इसी दुष्ट को राजा की पदवी तथा दो हजारी मंसब प्रदान कर उसके पिता का पद तथा जागीर दे दिया, जिसे उसने अपनी अच्छी सेवा एवं राजभक्ति के कारण पाया था। हमने उसके पिता का बहुत वर्षों में संचित किया हुआ कोप तथा संपत्ति भी देदी थी। जब मृत मुर्तजाखाँ काँगड़ा विजय करने के कार्य पर भेजा गया तब यह दुष्ट उस पार्वत्य स्थान का प्रधान जमींदार था। इसलिए इसने प्रकट में इस कार्य में उत्साह तथा राजभक्ति दिखलाई और इससे इस कार्य में सहायक नियत हुआ। उस स्थान पर मुर्तजाखाँ ने दुर्गवालों पर कड़ा घेरा किया। इस दुष्ट ने जब देखा कि वह शीघ्रही विजयी हो जायगा तब इसने उससे विमनस होना तथा झगड़ा करना आरंभ किया। इसके अनतर इसने सम्मान का पर्दा हटा दिया और प्रकट में मुर्तजा खाँ के मनुष्यों से झगड़ना आरंभ कर दिया। मुर्तजाखाँ ने इस दुष्ट के कपाल पर इसके नाश का लेख देखा और दरबार को इसके विरुद्ध लिखा प्रत्युत् यह स्पष्टही लिखा कि इसमें विद्रोह के लक्षण तथा राजभक्ति का अभाव ही पाया जाता है। इस कारण कि मुर्तजाखाँ सा सेनाध्यक्ष विशाल सेना के साथ उस पार्वत्य देश में उपस्थित था, उस दुष्ट ने विद्रोह करने का अवसर नहीं पाया। उसने हमारे पुत्र शाहजहाँ के पास सूचना भेजी कि मुर्तजाखाँ स्वार्थी मनुष्यों के बहकाने से हमारे विरुद्ध होगया है और हमें उखाड़ फेंकने तथा नष्ट करने के लिए हम पर विद्रोह तथा अराजकता का दोप लगा रहा है। वह आशा करता है कि उसे दरबार बुला लिया जाय जिससे उसके प्राण तथा मान की रक्षा हो। यद्यपि हमारा मुर्तजाखाँ पर पूरा विश्वास था पर वह भी दरबार बुला लिये जाने की प्रार्थना करता था इसलिए यह विचार उठा कि हो सकता है कि मुर्तजाखाँ ने उपद्रवियों

के बहकाने से बिना अच्छी प्रकार सोचे उस पर दोष लगा दिया हो और इस कारण कोई उपद्रव न खड़ा हो जाय। संक्षेप में शाहजहाँ की प्रार्थना पर हमने उसके दोषों पर ध्यान न देकर सूरजमल को दरबार बुला लिया। ठीक इसी समय मुर्तजा खाँ की मृत्यु हो गई और काँगड़ा-विजय का कार्य दूसरे सेनाध्यक्ष की नियुक्ति तक के लिए रुक गया। जब यह विद्रोही दरबार आया तब हमने अन्य कार्यों में व्यस्त होने से इस पर कुछ कृपाएँ करके अपने पुत्र शाहजहाँ के साथ कार्य करने के लिए दक्षिण की चढ़ाई पर भेज दिया। इसके अनंतर जब दक्षिण पर इस विजयी साम्राज्य के सेवकों का अधिकार हो गया तब यह हमारे पुत्र की सेवा में प्रभाव प्राप्त कर काँगड़ा दुर्ग के विजय के कार्य पर नियत हो गया। यद्यपि ऐसे कृतघ्न तथा झूठे मनुष्य को उस पार्वत्यस्थान में भेजना दूरदर्शिता तथा सावधानी से दूर था पर हमारे पुत्र ने इस कार्य को पूरा करने का भार अपने ऊपर ले लिया था इसलिए हम उसकी इच्छानुसार कार्य होने देने के लिए वाध्य थे तथा उसी पर यह कार्य छोड़ दिया। हमारे भाग्यवान पुत्र ने इसे ही अपने एक निजी सेवक तकी तथा मंसबदारों, अहदियों एवं शाही बंदूकचियों की योग्य सेना के साथ नियत किया, जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। जब यह वहाँ पहुँचा तब तकी के विरुद्ध भी शत्रुता तथा कपट का व्यवहार करने लगा और अपना स्वभाव प्रकट कर दिया। इसने तकी के विरुद्ध लिखना आरंभ किया और अंत में स्पष्टतः लिखा कि वह तकी के साथ कार्य कर नहीं सकता तथा तकी इस कार्य को कर नहीं सकता। यदि दूसरा सेनाध्यक्ष नियत हो तो दुर्ग शीघ्र विजय हो जाय। अंत में शाहजहाँ ने तकी को दरबार बुला लिया और इस कार्य पर अपने एक खास अनुयायी राजा विक्रमाजीत को नई सेना के साथ भेजा। जब सूरजमल ने देखा कि अब उसका कपट कार्य अधिक नहीं चल सकता

तब इसने विक्रमाजीत के पहुँचने के पहले बहुत से शाही सेवकों को इस बहाने छुट्टी दे दी कि वे बहुत दिनों से सेवा-कार्य में लगे हुए हैं और यहाँ का प्रबंध ठीक नहीं है इसलिए अपनी अपनी जागीरों पर जाकर राजा विक्रमाजीत के आने के पहले अपना प्रबंध ठीक कर लें। एक प्रकार से यह शाही सेना का अस्तव्यस्त हो जाना था और बहुत से अपनी अपनी जागीरों पर चले गए तथा कुछ अनुभवी मनुष्य बच गए। यह अवसर पाकर सूरजमल ने विद्रोह तथा उपद्रव खड़ा कर दिया। सैयद सफी बारहा, जो अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध था, अपने भाइयों तथा संबंधियों के साथ साहस करके लड़ गया और मारा गया तथा वह उन विशेष घायल व्यक्तियों को, जो युद्ध के सिंहों की शोभा है, कैद कर युद्ध स्थल से अपने देश लिवा गया। कुछ प्राण-रक्षा की दृष्टि से शीघ्रता से अलग हट गए। उस दुष्ट ने पार्वत्य-स्थान की तलहटी में लूट मार तथा अधिकार करना आरंभ किया जो एतमा-दुद्दौला की जागीर में था और आक्रमण करने तथा लूटने में तनिक भी कमी नहीं की। यह आशा की जाती है कि इसी शीघ्रता के साथ उसके कुकर्मों तथा दुष्ट कार्यों का उसे बदला तथा पुरस्कार भी मिलेगा और इस साम्राज्य का निमक उसका कार्य समाप्त करेगा, यदि ईश्वर चाहेगा।

रविवार १७ वीं को चांदा घाटी पार किया। सोमवार १८ वीं को अभिभावक खानखानाँ सिपहसालार सेवा में उपस्थित हुआ। यह बहुत दिनों से हमारे पास से दूर रहा था और शाही सेना खानदेश तथा बुर्हानपुर के पास से जा रही थी इसलिए उसने सेवा में आने की आज्ञा माँगी। हमने आज्ञा दी कि यदि वह शरीर-मन से हर प्रकार से स्वस्थ हो तो वह बिना भीड़ भाड़ के चला आवे तथा शीघ्र लौट जावे। इसके अनुसार वह शीघ्रता से आया और इसी दिन सेवा में उपस्थित

हुआ और हर प्रकार की शाही कृपाओं से सम्मानित होकर उसने एक सहस्र मुहर तथा एक सहस्र रुपए भेंट दिए।

घाटी पार करने में पड़ाव वालों को बहुत परिश्रम उठाना पड़ा था इसलिए हमने एक दिन मंगलवार १९ वीं को ठहरने की आज्ञा दे दी जिसमें लोग सुस्ता लें। बुधवार २० वीं को हमने कूच किया और गुरुवार २१ वीं को फिर ठहर गए तथा सिंध नाम की नदी के किनारे मदिरोत्सव मनाया। हमने खानखानाँ को सुमेर नामक एक खास घोड़ा दिया, जो सबसे अच्छे घोड़ों में से एक था। हिंदी भाषा में सोने के एक पहाड़ को सुमेर कहते हैं और इस घोड़े को भी उसके रंग तथा विशालता के कारण यह नाम दिया गया था। शुक्रवार २२ वीं तथा शनिवार २३ वीं को दोनों दिन बराबर कूच हुआ। इस दिन एक विचित्र जल प्रपात् देखने में आया। जल बहुत ही स्वच्छ है और बहुत ऊँचे स्थान से उबलता तथा शोर करता हुआ गिरता है। उसके सब ओर ठहरने के स्थान बने हुए हैं जहाँ बैठकर कोई ईश्वर की स्तुति कर सकता है। हमने इधर ऐसा सुंदर प्रपात् नहीं देखा है और यह अत्यंत आनंदपूर्ण सैर का स्थान है। उस दृश्य को देख कर हम बहुत प्रसन्न हुए। रविवार २४ वीं को हम ठहर गए और पड़ाव के सामने तालाब में नाव पर बैठकर गोली से मुर्गाबियाँ मारीं। सोमवार २५ वीं, मंगलवार २६ वीं तथा बुधवार २७ वीं को हम बराबर कूच करते रहे। हमने अपनी पहिरी पोस्तीन (भेंड़ के चमड़े का वस्त्र) और सात घोड़े अपनी सवारी के खानखानाँ को दिए। रविवार २ री इलाही महीना दै को शाही झंडे रणथंभौर दुर्ग में फहराने लगे। हिंदुस्तानियों के बड़े दुर्गों में से यह एक है। सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के समय राय पितांबर देव के अधिकार में यह दुर्ग था। सुलतान ने इसे घेरा और बहुत दिनों के परिश्रम तथा प्रयत्न पर इसे विजय किया। सम्राट् अकबर

के राज्य के आरंभ में राय सुर्जन हाड़ा[1] इस पर अधिकृत था। इसके पास सात-आठ सहस्र सैनिक बराबर रहते थे। उन श्रद्धेय ने एक महीने बारह दिन के घेरे पर ईश्वर की कृपा से इसे विजय कर लिया और राय सुर्जन भी सौभाग्य से सेवा में उपस्थित हो गया, जिससे राजभक्तों की गिनती में आ गया तथा एक सम्मानित विश्वासपात्र बन गया। इसके अनंतर इसका पुत्र राय भोज भी बड़े अमीरों में परिगणित हो गया। अब इसका पौत्र सर बुलंदराय (राय रत्न) मुख्य अमीरों में से एक है। सोमवार ३ री को हम दुर्ग निरीक्षण करने गए। दो पर्वत पास पास हैं जिसमें से एक को रण तथा दूसरे को थंभौर कहते हैं। दुर्ग थंभौर पर्वत पर बना है पर दोनों नामों को मिलाकर रणथंभौर कहा जाता है। यद्यपि दुर्ग बहुत दृढ़ बना हुआ है और जल भी बहुत है पर रण पर्वत भी विशेष दृढ़ दुर्ग है और इस पर्वत पर अधिकार हो जाने पर दुर्ग पर अधिकार करना सहज हो जाता है। इसी कारण हमारे श्रद्धेय पिता ने आज्ञा दी कि रण पर्वत पर तोपें लगाकर दुर्ग के भीतरी गृहों पर गोले उतारें। पहला गोला राय सुर्जन के महल की चौखंडी पर गिरा। इस गृह के गिरने से उसके साहस के प्रासाद की नींव में कंप आ गया तथा उसके हृदय को डाँवाडोल कर दिया। इसने यह सोचकर कि दुर्ग दे देने ही में उसकी भलाई है शाहन्शाह की अधीनता स्वीकार कर ली, जो दोषों को क्षमा करता है तथा बहानों को स्वीकार कर लेता है।

हमने दुर्ग में रात्रि व्यतीत करने का और दूसरे दिन पड़ाव में लौटने का विचार किया था पर दुर्ग के भीतर की इमारतें हिंदुओं की

---

१ मुगल दरबार हिंदी भाग १ पृ० ४४०—२ पर इसकी जीवनी दी है, भोज की पृ० २७३—४ पर तथा राव रत्न की पृ० ३१७—२० पर दी हुई है।

शैली पर बनी थीं और कमरे छोटे तथा वायु-विहीन थे इससे हमें पसंद नहीं आए तथा हमने वहाँ ठहरना नहीं चाहा। हमने एक हम्मामगृह देखा, जिसे दस्तम खाँ[1] ने दुर्ग की दीवाल के पास बनवाया था। एक छोटा उद्यान तथा एक बैठकखाना जो मैदान की ओर था काफी बड़ा तथा हवादार था और सारे दुर्ग में इससे अच्छी इमारत कोई नहीं थी। स्वर्गीय सम्राट् के अमीरों में यह दस्तम खाँ[1] भी था और जवानी से उन्हीं की सेवा में रहा। इसका उनसे संबंध अंतरंग तथा विश्वास का था। उसके विशेष विश्वास के कारण ही यह दुर्ग उसे सौंपा गया था।

दुर्ग तथा गृहों का निरीक्षण करने के अनंतर हमने आज्ञा दी कि वे दुर्ग के कारागार में बंद कैदियों को हमारे सामने उपस्थित करें जिसमें हम प्रत्येक के वाद को देखकर न्यायानुसार समुचित आदेश दें। संक्षेप में खून के मामले के दोषियों तथा जिनके छूटने से देश में उपद्रव एवं दुःख बढ़ने की आशंका थी उनको छोड़कर सभी बंदियों को मुक्त कर दिया और सबों को उनकी स्थिति के अनुसार व्यय तथा वस्त्र दिए। मंगलवार ४थी की संध्या को एक प्रहर तीन घड़ी बीतने पर हम शाही निवास-स्थान को लौट आए। बुधवार ५वीं को पाँच कोस कूचकर गुरुवार ६ठी को रुके रहे। इसी दिन खानखानाँ ने रत्न, जड़ाऊ बर्तन, वस्त्र तथा एक हाथी भेंट किया। इनमें से जो हमें पसंद आया उसे रख लिया और बाकी लौटा दिया। जो पसंद किया गया था वह सब डेढ़ लाख रुपए मूल्य का था। शुक्रवार ७वीं को हम पाँच कोस चले। हमने इसके पहले बाज के द्वारा एक सारस को पकड़ा था पर अब तक हमने सारस को अहेर करते नहीं देखा था। हमारे पुत्र शाहजहाँ को शाहीन के द्वारा सारसों को पकड़ने में बड़ी

---

१. मुगल दरबार हिंदी भाग ३ पृ० ४०७-८ देखिए।

प्रसन्नता होती थी और उसके शाहीन काफी बड़े हो गए थे इसलिए उसकी प्रार्थना पर हम बहुत सवेरे सवार हुए और एक सारस को पकड़ा। हमारे पुत्र के शाहीन ने भी एक सारस पकड़ा, जो उसके हाथ पर था। वास्तव में अच्छे अहेर के खेलों में यह सर्वोत्तम है। हम इससे बहुत प्रसन्न हुए। यद्यपि सारस बड़ा होता है पर आलसी तथा परों से भारी होता है। दुर्ना का पीछा करना इससे कोई समानता नहीं रखता। हम शाहीन के हृदय तथा साहस की प्रशंसा करते हैं कि वह इतने बड़े शरीर वाले जीव को पकड़ लेता है और अपने पंजों के जोर से उन्हें दबा लेता है। हमने पुत्र के मुख्य अहेरी हसन खाँ को एक हाथी, एक घोड़ा तथा खिलअत उसके इस खेल दिखलाने के पुरस्कार में दिया और उसके पुत्र को भी एक घोड़ा तथा खिलअत दिया।

शनिवार ८वीं को सवा चार कोस कूचकर रविवार ९वीं को ठहरे रहे। इसी दिन खानखानाँ सिपहसालार खास खिलअत, जड़ाऊ तलवार तथा साज सहित एक निजी हाथी पाकर सम्मानित हुआ और खानदेश तथा दक्षिण में फिर नियत हुआ। साम्राज्य के इस स्तंभ का मंसब बढ़ाकर सात हजारी ७००० सवार का कर दिया। इसकी लश्कर खाँ से नहीं बनती थी इससे इसकी प्रार्थना पर आबिद खाँ को दीवान[१] बयूतात नियुक्त किया और उसे एक हजारी ४०० सवार का मंसब एक घोड़ा, एक हाथी तथा खिलअत देकर उस प्रांत

---

१. यहाँ कुछ भ्रम ज्ञात होता है। लश्कर खाँ अबुल्‌हसन मशहदी काबुल का दीवान था और खानदौराँ प्रांताध्यक्ष से न बनने के कारण यह बुला लिया गया था। इसके अनंतर यह दक्षिण से भी ऐसे ही कारण से हटाया गया और उसके स्थान पर आबिद खाँ दक्षिण का दीवान नियुक्त हुआ। बयूतात शब्द भ्रम से लिखा गया है। इकबाल-नामा फारसी पृ० १२२ देखिए।

में भेज दिया। उसी दिन खानदौराँ काबुल से आया और सेवा में उपस्थित होकर एक सहस्र मुहर तथा एक सहस्र रुपए नजर दिए। इसके सिवा मोतियों की एक माला, पचास घोड़े, दस ईरानी ऊँट-ऊँटनी, थोड़े बाज, चीनी बर्तन तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में हमारे सामने उपस्थित किया। सोमवार १०वीं को सवा तीन कोस और मंगल ११वीं को पौने छ कोस चले। इसी दिन खानदौराँ ने अपनी सेना का निरीक्षण कराया जिसमें एक सहस्र मुगल सवार थे। इनमें बहुतों के पास तुर्की घोड़े थे और कुछ के पास एराकी तथा मुजन्नस घोड़े थे। यद्यपि इसके सवारों में से बहुत से इधर-उधर चले गए थे, कुछ महाबत खाँ की सेवा में नियत होकर उसी प्रांत में रह गए और कुछ लाहौर में इसका साथ छोड़कर साम्राज्य के विभिन्न भागों में चले गए तब भी यह इतने अच्छे घुड़सवारों की सेना प्रदर्शित कर सका। वास्तव में खानदौराँ साहस तथा सेनापतित्व में अपने समय का एक ही है पर शोक है कि हमने उसे अशक्त वृद्ध पुरुष पाया, जिसकी दृष्टि भी निर्बल हो गई थी। इसे दो बुद्धिमान पुत्र थे जिनमें समझदारी की कमी नहीं है पर तब भी उनके लिए यह बहुत कठिन तथा भारी कार्य होगा कि अपने को उसके बराबर बना सकें। इसी दिन हमने इसे तथा इसके पुत्रों को खिलअत तथा तलवार दिया। रविवार १२वीं को साढ़े तीन कोस चलकर मांडू[1] के तालाब के किनारे उतरे। तालाब के मध्य में एक प्रस्तर-निर्मित महल है जिसके एक खंभे पर किसी का निम्नलिखित कितः खुदा हुआ है। हमने इसे देखा और चकित हुए। वास्तव में शेर अच्छे हैं—

---

१. यह शब्द या तो अशुद्ध लिखा गया है या प्रसिद्ध मांडू से कोई भिन्न स्थान है क्योंकि मांडू उज्जैन के दक्षिण विंध्य पर्वत के पास है।

हमारे अंतरंग मित्रगण ने हमें त्याग दिया।
एक-एक कर वे मृत्यु के हाथों में चले गए॥
वे जीवन के जलसे में क्षुद्र पीनेवाले थे
कि हम लोगों से पहले ही वे मत्त हो गए॥[१]

इसी समय हमने एक और कितः इसी आशय का सुना जिसे हमने यहाँ इस लिए लिख दिया कि अच्छा कहा गया है।

शोक कि बुद्धिमान तथा विद्वान लोग उठ गए।
वे अपने समकालीनों के मस्तिष्क से भुला दिए गए॥
जो सैकड़ों जिह्वा से बोलते थे।
आह! उन्होंने क्या सुना कि चुप हो गए॥

गुरुवार १३वीं को हम ठहरे रहे। अब्दुल् अज़ीज़ खाँ बंगश से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इकराम खाँ, जो फतहपुर तथा आस-पास की फौजदारी के पद पर नियत था आकर सेवा में उपस्थित हुआ। दक्षिण का बख्शी ख्वाजा इब्राहीम खाँ अक़ीदत खाँ की पदवी पाकर सम्मानित हुआ। मीर हज्ज को जो इस प्रांत के सहायकों में नियत है और एक वीर नवयुवक है, शरजा खाँ की पदवी तथा झंडा देकर सम्मानित किया। शुक्रवार १४वीं को सवा पाँच कोस कूच किया। शनिवार १५वीं को तीन कोस चलकर बयाना में ठहरे। हम बेगमों के साथ दुर्ग पर से दृश्य देखने गए। हुमायूँ के बख्शी मुहम्मद ने, जो दुर्ग की रक्षा पर नियत था, एक बड़ा प्रासाद मैदान की ओर बनवाया था, जो बहुत ऊँचा तथा हवादार था। शेख बहलोल का मकबरा

---

१. यह कितः किसका है यह इस पुस्तक में नहीं बतलाया गया है। रागर्स बेवरिज इसे उमर खैयाम का बतलाते हैं पर उसने केवल रुबाइआँ लिखी हैं। भाव बहुत कुछ एक होते भी शब्दावली तथा अभिव्यंजन भिन्न हैं।

इसी के पास है और अच्छा है। बहलोल शेख मुहम्मद गौस का बड़ा भाई था और खुदा के इस्म आजम का जप करने तथा फूँकने में दक्ष था। हुमायूँ का इस पर बड़ा प्रेम था और बहुत विश्वास भी इस पर रखता था। जब इसने बंगाल विजय किया तब यह बहुत दिन वहीं रह गया। इसी की आज्ञा से मिर्जा हिंदाल आगरे में रहता था। कुछ लोभी सेवक, जो स्वभावतः उपद्रवी तथा विद्रोही थे, राजद्रोह कर बंगाल से मिर्जा के पास चले आये और इसके कुप्रकृति पर प्रभाव डालकर मिर्जा को विद्रोह, कृपाओं के प्रति कृतघ्नता तथा कर्तव्य के अनादर के मार्ग पर ले गए। मूर्ख मिर्जा ने अपने नाम खुतबा पढ़वाकर विद्रोह तथा झगड़े का झंडा फहरा दिया। जब यह समाचार राजभक्तों की सूचना के द्वारा शाही कानों तक पहुँचा तब उसने शेख बहलोल को मिर्जा को समझाने के लिए भेजा जिससे वह अपसे व्यर्थ के विचार से पलटे और सचाई तथा सौमनस्य के मार्ग पर लौट आवे। इन दुष्टों ने बादशाही का ऐसा स्वाद मिर्जा को दिला दिया था कि वह दुष्ट विचारों से भर उठा था और राजभक्त नहीं हो सका। इन उपद्रवियों के बहकाने पर इसने शेख बहलोल को चार बाग में, जिसे बादशाह बाबर ने जमुना नदी के किनारे बनवाया था, दुस्साहस की तलवार के घाट उतार दिया। शेख के शिष्य मुहम्मद बख्शी ने इसका शव ले जाकर बयाना दुर्ग में गाड़ दिया।[1]

रविवार १६वीं को साढ़े चार कोस चलकर हम बरह के पड़ाव पर पहुँचे। मरियमुज्जमानी (जहाँगीर की माता) का जूसत् पर्गने में बनवाया हुआ उद्यान तथा कूँआ मार्ग में पड़ता था इसलिए हम उसे देखने गए। वास्तव में बावली अच्छी भव्य इमारत है और बड़ी दृढ़

---

१. इसका विशेष विवरण गुलबदन बेगम के हुमायूँ नामा हिंदी पृ० पर देखिए।

बनी हुई है। हमने कर्मचारियों से सुना कि इस कूँए के बनवाने में बीस सहस्र रुपए लगे थे। आसपास में बहुत अहेर थे इसलिए हम सोमवार १७वीं को रुक गए।

मंगलवार १८वीं को तीन तथा एक आठवाँ कोस चलकर हम दायरमऊ ग्राम में ठहरे। बुधवार १९वीं को ढाई कोस चलकर विजयी झंडे फतहपुर की झील के किनारे खड़े किए गए। जिस समय दक्षिण के विजय का विचार किया जा रहा था उस समय रणथंभौर तथा उज्जैन के बीच के पड़ावों तथा दूरियों का उल्लेख किया जा चुका है इसलिए दुहराने की आवश्यकता नहीं है। रणथंभौर से फतहपुर तक जिस मार्ग से हम आए उससे दो सौ चौंतीस कोस की दूरी है और एक सौ उन्नीस दिनों में तिरसठ पड़ावों तथा छप्पन रुकावों में पहुँचे। सौर गणना से एक दिन कम चार महीने में तथा चांद्र गणना से पूरे चार महीने लगे। जिस दिन से सौभाग्यशाली सेना राजधानी से राणा को विजय करने तथा दक्षिण पर अधिकार करने के लिए निकली उस समय से अब तक, जब शाही विजयी तथा समृद्धिशाली झंडे पुनः साम्राज्य के केंद्र में स्थापित हुए, पाँच वर्ष चार महीने बीत गए। ज्योतिषियों तथा गणकों ने गुरुवार २८वीं दै को हमारे १३वें जलूसी वर्ष में, जो सन् १०२८ हि० के मुहर्रम महीने के अंतिम दिन पड़ता है, राजधानी आगरा में प्रवेश करने की शुभ साइत निकाली।

इसी समय राजभक्तों की सूचनाओं से ज्ञात हुआ कि आगरा में पुनः महामारी का प्रकोप हुआ है, जिससे लगभग एक सौ मनुष्य प्रतिदिन मर रहे हैं। बगल, पट्ठे या गले में गिलटियाँ उभड़ आती हैं और लोग मर जाते हैं। यह तीसरा वर्ष है कि यह रोग जाड़े में जोर पकड़ता है और गर्मी के आरंभ में समाप्त हो जाता है। यह एक

विचित्रता है कि इन तीन वर्षों में इसकी छूत आगरे के आसपास के ग्रामों तथा बस्तियों में फैल गई है पर फत्हपुर में इसका चिह्न भी नहीं है। यह रोग अमनाबाद तक आ गया है, जो फतहपुर से ढाई कोस पर है। असनावाद के लोग अपने गृहों को त्यागकर दूसरे ग्रामों में चले गए हैं। कोई उपाय न रहने पर और सतर्कता को आवश्यक समझकर यही निश्चय किया कि इस शुभ साइत में विजयी सेना फतहपुर के बसे हुए भाग में प्रसन्नता तथा आनंद के साथ प्रवेश करे और रोग तथा अकाल के शांत होने पर दूसरे शुभ साइत में हम राजधानी में प्रवेश करें। आगे ईश्वर की इच्छा सर्वोपरि है।

गुरुवार का उत्सव फतहपुर की झील के किनारे हुआ। नगर में जाने की साइत २८ वीं को निश्चित हुई थी इसलिए हम यहीं आठ दिन तक ठहरे रहे। हमने झील का घेरा नापने की आज्ञा दी जो सात कोस थी। इस स्थान में सिवा श्रद्धेया मरियमुज्जमानी के सब बेगमें, हरमवालियाँ तथा दासियाँ हमारे स्वागत के लिए आईं। मृत आसफ-खाँ की पुत्री ने जो खानआजम के पुत्र अब्दुल्लाखाँ के गृह में है हमसे एक विचित्र तथा आश्चर्यजनक कहानी कही और इसकी सच्चाई का विशेष रूप से समर्थन किया। इसकी विचित्रता के कारण हम उसे यहाँ लिखते हैं। उसने कहा कि 'एक दिन हमने अपने घरके आँगन में एक मूसे को घबड़ाए हुए उठते गिरते देखा। वह हर ओर उन्मत्तों की तरह दौड़ता फिरता था मानों उसे समझ नहीं पड़ता था कि कहाँ जाय। हमने एक दासी से कहा कि इसे पूँछ से पकड़कर बिल्ली के आगे डाल दे। बिल्ली प्रसन्न होकर उस पर कूद पड़ी और उसे मुँह से पकड़ लिया पर तुरंत ही उसे छोड़ दिया तथा घृणा से हट गई। क्रमशः उसके मुख पर कष्ट झलकने लगा। दूसरे दिन वह प्रायः मरी ही थी जब हमने उसे तिरयाक़ देने का विचार किया। जब उसका मुँह

खोला गया तब तालू जीभ काली पड़ गई थी। तीन दिन कष्ट से बिताकर चौथे दिन वह होश में आई। इसके अनंतर उस दासी को भी गिलटियाँ निकलीं और ज्वर के ताप तथा कष्ट से उसे आराम नहीं मिलता था। उसका रंग बदल गया तथा पीलापन पर स्याही आ गई। ताप बढ़ गया। दूसरे दिन उसे कै दस्त हुई और वह मर गई। घर के सात-आठ आदमी इसी प्रकार मर गए और इतने आदमी बीमार पड़ गए कि हम उस गृह से बाग में चले गए। जो बीमार थे वे बाग में भी मर गए पर वहाँ गिलटियाँ नहीं थीं। संक्षेप में आठ-नौ दिन के भीतर सत्रह आदमी मर गए।' उसने यह भी कहा कि जिन रोगियों में गिलटियाँ दिखलाई पड़ीं वे यदि पीने या धोने के लिए जल माँगते और जो उनके पास जाता तो उसे भी छूत लग जाती और अंत में ऐसा हुआ कि भय के कारण कोई रोगियों के पास नहीं जाता था ?

शनिवार २२ वीं को आगरा के अध्यक्ष ख्वाजःजहाँ ने सेवा में उपस्थित होकर पाँच सौ मुहर नज़र तथा चार सौ रुपए निछावर भेंट किया। सोमवार २४ वीं को उसे खास खिलअत दिया। गुरुवार[१] २८ वीं को चार घड़ी या दो साएत बीतने पर शुभ साइत में शाही झंडे प्रसन्नता के साथ नगर में गए। उसी समय में हमारे भाग्यवान तथा ऐश्वर्यशाली पुत्र शाहजहाँ का तुलादान हुआ। हमने आज्ञा दी कि सोने तथा अन्य वस्तुओं से तौला जाय और सौर गणना से उसका अट्ठाइसवाँ वर्ष आरंभ हुआ। आशा है कि वह अपनी परमायु प्राप्त करे। उसी दिन मरियमुज्जमानी आगरे से आईं और हमने उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनके आशीर्वाद से अक्षय सौभाग्य प्राप्त

१. जहाँगीर पहले लिख चुका है कि २८ वीं को नगर-प्रवेश की साइत है अतः गुरुवार न होकर शुक्रवार होना चाहिए।

किया। हम आशा करते हैं कि उसके पालन तथा स्नेह की छाया इस विनम्र के सिर पर बनी रहे। इसलामखाँ के पुत्र इकरामखाँ ने इस ओर की फौजदारी अच्छी प्रकार की थी इसलिए हमने उसे डेढ़ हजारी १००० सवार का मंसब बढ़ाकर दिया। मिर्जा रुस्तम सफवी का पुत्र सुहराबखाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया।

इसी दिन विगत सम्राट् के महल की इमारतों को घूमकर हमने अपने पुत्र शाहजहाँ को दिखलाया। इनके भीतर कटे हुए प्रस्तर का एक बड़ा तथा स्वच्छ जलाशय था, जिसे कपूर तालाब कहते हैं। यह छत्तीस गज चौड़ा तथा लंबा और साढ़े चार गज गहरा है। उन श्रद्धेय की आज्ञा से राजकोष के कर्मचारियों ने इसे पैसों तथा रुपयों से भर दिया था। उसमें चौंतीस करोड़ अड़तालीस लाख छिआलीस सहस्र दाम और सोलह लाख उन्यासी सहस्र चार सौ रुपए कुल एक करोड़ तीन लाख रुपए उसमें भरे गए, जो ईरानी सिक्के में तीन लाख तेंतालीस सहस्र तूमान होते हैं। बहुत दिनों तक रेगिस्तान के प्यासे लोगों की उस दान से तृप्ति होती रही।

रविवार १ ली बहमन को एक सहस्र दर्ब हाफिज़ नाद अली (पाठक) को पुरस्कार दिया। बहुत दिनों से बिदागखाँ चिकनी का पुत्र मुहिब्बअली और अबुल्कासिम गीलानी ने, जिन्हें ईरान के शासक ने अंधाकर देश से निकलवा दिया था, इस साम्राज्य की शरण में जीवन व्यतीत किया था। इनमें प्रत्येक के लिए उनकी स्थिति के अनुकूल वृत्ति बाँध दी गई थी। इसी दिन वे आगरे से आए और देहली चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रत्येक को एक एक सहस्र रुपए दिए। गुरुवार का उत्सव राजमहल ही में हुआ और हमारे व्यक्तिगत सेवकगण प्याले पाकर प्रसन्न हुए। नसरुल्ला वे, जिसे हमारे पुत्र सुलतान

पर्वेज़ ने कोहे दामन नामक हाथी के साथ भेजा था, छुट्टी ली और लौट गया। जहाँगीरनामा की एक प्रति तथा एक तिपचाक घोड़ा हमने इसके हाथ पुत्र के लिए भेजा। रविवार ८ वीं को राणा अमरसिंह के पुत्र कुँअर कर्ण को एक घोड़ा, एक हाथी, खिलअत, एक जड़ाऊ खपवा और एक फूलकटार: उपहार दिया। हमने उसे अपनी जागीर पर जाने की छुट्टो दी और एक घोड़ा उसके साथ राणा के लिए भेजा। उसी दिन हम अहेर खेलने अमनाबाद गए। इस कारण कि हमने आज्ञा दे रखी थी कि इस प्रांत के हरिणों को कोई न मारे इसलिए छ वर्ष में यहाँ बहुत हरिण इकठ्ठे होगए तथा पालतू से होगए। गुरुवार १२ वीं को हम महल लौट आए और उस दिन का उत्सव यहीं प्रथानुसार हुआ।

शुक्रवार १३ वीं को हम शेख सलीम चिश्ती के मकबरे में गए, जिसके शुभ गुणों का कुछ उल्लेख इस सौभाग्य के ग्रंथ की भूमिका में लिखा जा चुका है। वहाँ फातिहा पढ़ा गया। यद्यपि ईश्वरी सिंहासन के चुने हुए लोग चमत्कार दिखलाना पसंद नहीं करते और निजी विनम्रता के कारण भी ऐसे प्रदर्शन से दूर रहते हैं पर तब भी कभी कभी अनिच्छा ही से तथा आपही आप भक्ति के उत्साह में कुछ प्रकट हो जाता है या किसी को सिखलाने के लिए वैसा प्रदर्शन हो जाता है। इन्हीं में यह भी है कि हमारे जन्म के पहले इन्होंने हमारे पिता को हमारे तथा हमारे दो भाइयों के आने की सूचना दे दी थी। इसी प्रकार एक दिन हमारे पिता ने यों ही पूछा कि वे कितनी अवस्था के हैं और कब परलोक सिधारेंगे। इन्होंने उत्तर दिया कि गुप्त तथा रहस्य की बातें ईश्वर जानता है। बहुत कुछ कहने सुनने पर उन्होंने हमारी ओर संकेत करते हुए कहा कि जब यह शाहजादा किसी शिक्षक द्वारा या किसी अन्य प्रकार से कुछ याद करके दुहरावेगा वही हमारे ईश्वर से मिलने का समय होगा। इस कारण बादशाह ने कड़ी

आज्ञा दी कि कोई भी हमें गद्य या पद्य में कुछ न सिखलावे। अंत में जब हम दो वर्ष तथा सात महीने के हुए तब एक दिन एक स्वत्वपूर्ण स्त्री महल में आई। वह दुष्ट नजर को दूर करने के लिए सदा सुगंधि द्रव्य जलाया करती थी और इस बहाने हमारे पास भी आती थी। वह दान-पुण्य की वस्तु लिया करती थी। उसने हमें अकेले में पाया और आज्ञा का बिना ध्यान रखे उसने निम्नलिखित शैर हमें सिखलाया—

ऐ परमेश्वर आशा की कली को विकसित करो।
अक्षय रौजा (उद्यान) का फूल दिखलाओ ॥[1]

हम शेख के पास गए और इस शैर को दुहराया। वह तत्काल उठे और बादशाह के पास जाकर इसकी सूचना दी। भाग्यानुसार उसी दिन रात्रि में ज्वर के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे और दूसरे दिन उन्होंने बादशाह के पास किसी को भेजा कि तानसेन कलावंत को बुलाया है, जो अद्वितीय गायक है। तानसेन इनके यहाँ पहुँच कर गाने लगा। इसके अनंतर किसीको बादशाह को बुलाने भेजा। जब बादशाह आए तब कहा कि मिलन का निश्चित समय आ गया अब हम आप से छुट्टी लेते हैं। अपनी पगड़ी उतार कर हमारे सिर पर रख दी और कहा कि हम लोगों ने सुलतान सलीम को उत्तराधिकारी बनाया और उस रक्षक तथा पालक ईश्वर के हाथ सौंपा। क्रमशः उनकी निर्बलता बढ़ने लगी और मृत्यु के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे। अंत में वे सच्चे प्रियतम से जा मिले।

हमारे पिता के राज्यकाल का यह मसजिद तथा मकबरा सबसे बड़ा स्मारक है। वास्तव में ये बहुत ही ऊँची तथा दृढ़ इमारतें हैं।

१—यह शेर मौलाना जामी की मसनवी यूसुफ व जुलेखा का प्रथम शैर है।

इस मस्जिद के समान अन्य किसी देश में नहीं है। ये कुल अच्छे पत्थरों की बनी हुई हैं और राजकोष से पाँच लाख रुपए इनके निर्माण में व्यय हुए थे। कुतुबुद्दीन खाँ कोकलताश ने कब्र के चारों ओर संगमरमर की जाली, गुंबद तथा द्वार के फर्श बनवाए थे, जो इस पाँच लाख के ऊपर है। मस्जिद में दो बड़े फाटक हैं। दक्षिण की ओर का फाटक बहुत ऊँचा तथा सुंदर है। मेहराबदार फाटक बारह गज चौड़ा सोलह गज़ लंबा तथा बावन गज़ ऊँचा है। बत्तीस सीढ़ियाँ चढ़ने पर उसके सिरे[1] पर पहुँच सकते हैं। दूसरा फाटक इससे छोटा तथा पूर्व की ओर है। मस्जिद की लंबाई पूर्व-पश्चिम दीवालों की मुटाई लेकर दो सौ बारह गज है। इसमें से मकसूरा साढ़े पचीस गज है, मध्य पंद्रह गज चौड़ा-लंबा है और पिशताक सात गज चौड़ा, चौदह गज लंबा और पचीस गज ऊँचा है। बड़े गुंबद के दोनों ओर दो छोटे गुंबद हैं, जो दस गज लंबे-चौड़े हैं। इसके अनंतर दालान खंभों पर है। मस्जिद की चौड़ाई उत्तर-दक्षिण एक सौ बहत्तर गज है। इसके चारों ओर नव्वे ऐवान तथा चौरासी कोठरियाँ हैं। हर कोठरी की चौड़ाई चार गज तथा लंबाई पाँच गज है। दालानें साढ़े सात गज चौड़ी हैं। मस्जिद का आँगन मकसूरा, दालान तथा फाटकों को छोड़कर एक सौ उनहत्तर गज लंबा तथा एक सौ तैंतालीस गज चौड़ा है। दालानों, फाटकों तथा मस्जिद पर छोटे छोटे गुंबद बने हुए हैं और वार्षिक जलसों तथा अन्य उत्सवों की संध्या को इन पर दीपक बाले जाते हैं और इन्हें रंगीन पटों से ढाँप देते हैं, जो दीपको के ढक्कनों से हो जाते हैं। आँगन के नीचे एक कूँआ बना है, जिसे वर्षा के जल से भर देते

१—जमीन से फाटक तक पहुँचने की सीढ़ियों से तात्पर्य ज्ञात होता है। इसी फाटक को बुलंद दर्वाजा कहते हैं। जहाँगीर ने कुछ नाप जाँख अनुमान से लिख दिया है।

हैं। फतहपुर में पानी कम है और जो है अच्छा नहीं है पर इस कुएँ का पानी इतना हो जाता है कि चिश्ती के परिवार के लिए मस्जिद के मुजाविर दर्वेशों के लिए काफी हो जाता है। बड़े फाटक के सामने उत्तर-उत्तर-पूर्व शेख का मकबरा है। मध्य का गुबंद सात गज है और इसके चारों ओर संगमरमर का मुँडेरा है और सामने की ओर संगमरमर की जाली है। यह बड़ी सुंदर है। इस मकबरे के सामने पश्चिम की ओर कुछ हटकर दूसरा गुंबद है जिसमें शेख के लड़के तथा दामाद गड़े हुए हैं जैसे कुतुबुद्दीन खाँ, इस्लाम खाँ, मुअज्जम खाँ आदि। ये सब इस परिवार से संबंधित हैं और सभी अमीरी तथा उच्च पदों को पहुँचे थे। इसलिए इन सब का यथास्थान वर्णन आया है। वर्तमान समय में इस्लाम खाँ का पुत्र, जो इकराम खाँ की पदवी से प्रसिद्ध है, सज्जादनशीन है। उसके मुख पर पवित्रता के लक्षण स्पष्ट हैं और हम उसके पालन के बहुत इच्छुक हैं।

गुरुवार १६वीं को हमने अब्दुल्‌अजीज खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया और उसे काँगड़ा दुर्ग विजय करने तथा कृतघ्न सूरजमल को दंड देने के लिए नियत किया। हमने उसे एक हाथी, एक घोड़ा तथा खिलअत दिया। तरसून बहादुर को भी इसी कार्य पर नियत किया और उसका मंसब बढ़ाकर बारह सदी ४५० सवार का कर दिया। इसे एक घोड़ा दिया और जाने की छुट्टी दे दी। एतमादुद्दौला का गृह एक तालाब पर था और लोग इसके रमणीक स्थान तथा आकर्षक प्रासाद होने की प्रशंसा करते थे इसलिए उसकी प्रार्थना पर गुरुवार २६वीं को वहीं मदिरोत्सव हुआ। साम्राज्य के उस स्तंभ ने सिजदे तथा भेंटों का अच्छा प्रबंध किया और जलसे का भी भारी आयोजन किया। भोजन कर रात्रि में हम महल लौट आए। गुरुवार इस्फंदारमुज महीने की ३री को सैयद अब्दुल्‌वहाब

बारहा का मंसब, जिसने गुजरात में अच्छी सेवा की थी, बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया और उसे दिलेर खाँ की पदवी दी। शनिवार १२वीं को हम अहेर के लिए अमनाबाद गए और अतवार तक बेगमों के साथ अहेर खेलते रहे। गुरुवार १७वीं को संध्या को हम महल लौट आए।

संयोग से मंगलवार को अहेर में नूरजहाँ बेगम के गले में पड़ी मोती तथा लाल की एक माला टूट गई और एक लाल दस सहस्र रुपये मूल्य का और एक मोती एक सहस्र रुपए मूल्य की गुम हो गई। बुधवार को शिकारियों ने उन्हें बहुत ढूँढा पर वे नहीं मिलीं। हमारे विचार में आया कि आज कम शंबा है अतः उनका आज मिलना असंभव है। इसके विरुद्ध मुबारक शंबा गुरुवार हमारे लिए भाग्य-दिवस है और हमारे लिए शुभ भी है इसलिए शिकारियों ने उस दिन थोड़े ही परिश्रम में उस पटपर मैदान में उन्हें खोज लिया और हमारे पास ले आए। सब से अच्छा संयोग यह हुआ कि उसी शुभ दिन हमारे चांद्र तुलादान तथा वसंत वारी के उत्सव भी पड़े और मऊ दुर्ग के विजय तथा अभागे सूरजमल के पराजय का भी समाचार मिला।

इसका विवरण इस प्रकार है कि जब राजा विक्रमाजीत विजयी सेना के साथ उस प्रांत में पहुँचा तब सूरजमल ने चाहा कि उसे बातचीत तथा बहाने से कुछ दिन रोक रखें पर वह कुल वास्तविक बात जानता था इसलिए उसने इसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और साहस के साथ आगे बढ़ा। वह त्यक्त मनुष्य निरुपाय होकर न युद्ध करने का साहस कर सका और न अपने दुर्गों की रक्षा कर सका। थोड़े ही युद्ध पर जब उसके बहुत से आदमी मारे जा चुके तब वह भागा और मऊ तथा महरी दुर्ग, जिन पर उसे बड़ा घमंड था;

दोनों पर अधिकार हो गया। जिस राज्य को उसने अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में प्राप्त किया था वह विजयी सेना द्वारा रौंद डाला गया और वह भगोड़ा हो गया। वह पहाड़ों में चला गया और अपने भाग्य के सिर पर नाश तथा घृणा की धूल डाली। राजा विक्रमाजीत ने उसके राज्य से आगे बढ़कर विजयी सेना के साथ उसका पीछा किया। जब हमें यह सब सूचना मिली तब हमने राजा को इस सेवा के पुरस्कार में डंका दिया और क्रोध के समाट् का एक भाग्य-निर्णायक आज्ञापत्र भेजा गया कि सूरजमलके पिता तथा उसके बनवाए हुए दुर्ग इमारतों को जड़ से उखाड़ फेंके और उनका चिह्न भी पृथ्वी पर न रहने दें। एक विचित्र बात यह थी कि अभागे सूरजमल का एक भाई जगतसिंह था। जब हमने सूरजमल को बिना किसी भागीदार के राजा बनाया, मंसब दिया तथा राज्य प्रदान किया तब उसी को प्रसन्न करने के लिए जगतसिंह को एक छोटा मंसब देकर बंगाल भेज दिया क्योंकि दोनों में नहीं पटती थी। यह घर से दूर दरिद्रता के साथ कालयापन कर रहा था जिससे इसके शत्रु प्रसन्न थे और घृणा की दृष्टि से इसे देखते थे। यह भी किसी गुप्त सहायता की प्रतीक्षा कर रहा था कि इसके सौभाग्य से यह घटना घटी और उस अभागे ने स्वतः अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी। जगतसिंह को शीघ्रता से दरबार बुला कर हमने उसे राजा की पदवी, एक हजारी ५०० सवार का मंसब तथा बीस सहस्र दर्ब व्यय के लिए राजकोष से दिया। एक जड़ाऊ खपवा, खिलअत, एक घोड़ा और एक हाथी देकर राजा विक्रमाजीत के पास भेजा और साथ में आज्ञापत्र गया कि यदि यह सौभाग्य का अनुगमन कर अच्छी सेवा करे तथा राजभक्ति दिखलाए तो वह राज्य इसे दे दिया जाय।

नूरमंजिल के उद्यान तथा इमारतों की बड़ी प्रशंसा हम बराबर सुन रहे थे, जो अभी नई निर्मित हुई थी, इसलिए हम सोमवार को

घोड़े पर सवार होकर बोस्ताँ सराय के पड़ाव पर गए और मंगलवार उस गुलाब बाड़ी में सुख तथा आराम के साथ व्यतीत किया। बुधवार की संध्या को नूरमंजिल बाग ऐश्वर्य की सेना से सुशोभित हुआ। यह उद्यान इलाही गज से तीन सौ तीस जरीब के घेरे में है। इसके चारों ओर दीवाल, ऊँची तथा चौड़ी, ईंट एवं मसाले की बड़ी दृढ़ बनी हुई है। उद्यान के भीतर एक ऊँची इमारत निवासस्थान के लिए खूब सजी हुई बनी है। सुन्दर जलाशय बने हुए हैं और फाटक के बाहर एक विशाल कुँआ बना है जिसमें से बत्तीस जोड़े बैल निरंतर पानी निकालते रहते हैं। नहर उद्यान में से होकर गई है और जलाशयों में पानी भरता रहता है। इसके सिवा और भी कुएँ हैं, जिनका जल जलाशयों तथा क्यारियों में पड़ता है। इसकी सुंदरता अनेक प्रकार के फुहारों तथा प्रपातों से बहुत बढ़ गई है। उद्यान के मध्य में एक तालाब है, जिसमें वर्षा का पानी भरा जाता है। यदि संयोग से अधिक गर्मी में इसका पानी सूख जाय तो वे कुँओं के जल से इसे भरते हैं जिससे वह सदा लबालब भरा रहे। लगभग डेढ़ लाख रुपए अबतक इस उद्यान में लग चुके हैं और अभी यह अपूर्ण है। क्यारियों के बनवाने तथा पौधों को लगाने में अभी बहुत रुपए व्यय होंगे। यह भी निश्चय हुआ है कि मध्य के उद्यान को भी दीवाल से घेरा जाय और पानी आगे जाने की नहरें इतनी दृढ़ कर दी जायँ कि उनमें से जल किसी प्रकार चू न जाय और वे सदा जल से भरी रहें तथा कोई हानि न हो। यह संभव है कि इसके पूरे होने तक दो लाख रुपए इस पर व्यय हो जायेंगे।

गुरुवार २४वीं को ख्वाजाजहाँ ने रत्नों, जड़ाऊ बर्तनों, वस्त्र, एक हाथी तथा एक घोड़ा कुल डेढ़ लाख मूल्य की भेंट उपस्थित की। हमने उनमें से कुछ चुनकर बाकी लौटा दी। शनिवार तक प्रसन्नता के उस उद्यान में हमने आराम से समय व्यतीत किया। रविवार १७वीं

की संध्या को हम फतहपुर लौटे और आज्ञा दी कि बड़े अमीर लोग वार्षिक प्रथानुसार महल को सजावें। सोमवार २८ वीं को हमने देखा कि हमारी आँख में कुछ हो गया है। रक्त की अधिकता से ऐसा हुआ था इसलिए हमने अली अकबर जर्राह को एक नस खोलने के लिए कहा। दूसरे दिन इससे बहुत लाभ मालूम हुआ। हमने उसे एक सहस्र रुपए पुरस्कार दिए। मंगलवार २९वीं को मुकर्रब खाँ अपने देश से आया और सेवा में उपस्थित हुआ। हमने उस पर कई प्रकार की कृपा की।

———

चौदहवाँ जलूसी वर्ष

४थी रबीउल् आखिर सन् १०२८ हि० गुरुवार सवेरे संसार को प्रकाशित करनेवाले सूर्य मेष राशि में पधारे और हमारे राज्यकाल का चौदहवाँ वर्ष ऐश्वर्य तथा सुख से आरंभ हुआ। नव वर्ष के प्रथम दिन इसी गुरुवार को हमारे वैभवशाली पुत्र शाहजहाँ ने, जो पूर्णेच्छाओं के ललाट का तारा तथा ऐश्वर्य के भौं का प्रकाश है, भारी जलसा किया और अपने समय की बहुमूल्य वस्तुओं में से चुनी हुई वस्तुओं की तथा हर देश की अलभ्य चीजें भेंट में उपस्थित किया। इनमें एक लाल बाईस सुर्ख तौल तथा अच्छे रंग रूप एवं पानी का था जिसका मूल्य जौहरियों ने चालीस सहस्र रुपए आँका। दूसरा कुत्बी लाल तीन टाँक तौल का तथा बड़ा सुंदर चालीस सहस्र रुपए मूल्य का था। छ मोतियाँ थीं, जिनमें एक एक टाँक तथा आठ सुर्ख तौल में थी। हमारे पुत्र के वकीलों ने इसे गुजरात में पचीस सहस्र रुपए का क्रय किया था। अन्य पाँच तेंतीस सहस्र रुपए में खरीदे गए थे। एक हीरा अठारह सहस्र रुपए का था। एक जड़ाऊ पर्त तथा एक जड़ाऊ तलवार की मूठ थीं, जो उसी के कारखाने में बने थे और जिसके अधिकतर रत्न उसीके काटे तथा जड़े हुए थे। उसने इसके बनाने में बड़ी कुशलता दिखलाई थी। इसका मूल्य पचास सहस्र रुपया निश्चित किया गया। नक्कारखाना का भी कुल सामान उसी का था और किसी ने भी अबतक इसका विचार भी नहीं किया था। निस्संदेह ये कलापूर्ण सुन्दर वस्तु थीं। एक जोड़ा नक्कारा सोने का मुर्सिल बजानेवाला जो दमामे के साथ बजाया जाता है। नक्कारः, करना, सरना आदि जो कुछ सामान शाही नक्कारखाने का है वह सब चाँदी के बने हुए थे। जिस शुभ साइत में हम राजसिंहासन पर बैठे ये सब बजाए गए। इन सबका मूल्य पैंसठ सहस्र रुपए थे। हाथी पर बैठने का तख्त,

जिसे हिंदी लोग हौदा कहते हैं, सोने का तीस सहस्र रुपए मूल्य का बना हुआ था। इसके सिवा गोलकुण्डा के शासक कुतुबुलमुल्क की भेंट के दो हाथी तथा पाँच हाथियों का सामान भी था। पहले हाथी का नाम दादे इलाही था पर जब वह नौरोज के दिन हथसाल में गया तो उसका नाम हमने नूरे नौरोज रखा ? वास्तव में यह भव्य हाथी है और विशालता, सौंदर्य तथा दिखावट में कोई त्रुटि नहीं थी। यह हमें इतना अच्छा लगा कि हम उस पर सवार होकर महल के आँगन में घूमे। इसकी कीमत अस्सी सहस्र रुपए कूती गई और अन्य छ[1] की बीस सहस्र। नूरे नौरोज हाथी के लिए सोने का साज, सोने का सिकड़ आदि जो हमारे पुत्र ने बनवाया था उसमें तीस सहस्र रुपए व्यय हुए थे। दूसरे हाथी का सामान चाँदी का था और इसके सिवा दस सहस्र रुपए के अन्य रत्न आदि थे। हमारे पुत्र के कुरकुराकों ने गुजरात के अच्छे वस्त्र तैयार कर भेजे थे। यदि सबका विवरण लिखा जाय तो बहुत समय लगेगा। संक्षेप में कुल भेंट साढ़े चार लाख रुपए मूल्य की थी। आशा की जाती है कि वह चिरंजीवी तथा भाग्यशाली हो।

शुक्रवार २री को शुजाअतखाँ अरब तथा नूरुद्दीन कुली खाँ कोतवाल ने अपनी भेंटें उपस्थित कीं। शनिवार ३ री को खानखानाँ के पुत्र दाराबखाँ ने और रविवार ४ थी को खानजहाँ ने प्रार्थना की कि उन्हें हमें जलसे में निमंत्रित करने की आज्ञा दी जाय। अंतिम की भेंट में से

---

१. इकबालनामा में दो हाथी तथा पांच हथिनी लिखा है, जो ठीक ज्ञात होता है। सात में से एक का मूल्य बहुत अधिक तथा अन्य छ का कम। मूल में भूल से पाँच हाथियों का सामान लिखा गया है, वह पाँच मादः मै समान होना चाहिए।

हमने एक मोती, जो बीस सहस्र रुपए की खरीदी गई थी, तथा अलभ्य चीजें स्वीकार कीं, जिनका मूल्य एक लाख तीन सहस्र रुपए था और बाकी लौटा दीं। सोमवार ५वीं को राजा किशनदास तथा हकीम खाँ, मंगलवार ६वीं को सरदार खाँ तथा बुधवार ७वीं को मुस्तफाखाँ एवं अमानत खाँ ने अपनी अपनी भेंटें दीं। प्रत्येक की भेंट में से हमने कुछ साधारण सा उन्हें सम्मानित करने के लिए ले लिया। गुरुवार ८वीं को मदारुलमुल्क एतमादुद्दौला ने शाही जलसा कर हमें स्वागत करने की प्रार्थना की। इसे स्वीकार करने से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। वास्तव में उसने मजलिस सजाने में तथा भेंट तैयार करने में अपनी स्थिति से बढ़कर कार्य किया था। इसने सजावट बहुत की थी, झील के चारों ओर जहाँ तक दृष्टि जाती थी दीपक जलाए गए थे और आस पास तथा दूर के सारे मार्ग अनेक रंग के लालपटों तथा दीपकों से प्रकाशित किए गए थे। साम्राज्य के इस स्तंभ की भेंटों में एक राजसिंहासन सोने-चाँदी का बना हुआ था, जिस पर अनेक प्रकार की सजावट की गई थी तथा जो सिंहों के ऊपर स्थित था। यह बड़े परिश्रम से तीन वर्ष में साढ़े चार लाख रुपए व्यय कर बनवाया गया था। यह एक कुशल योरोपिअन, जिसका नाम हुनरमंद था, द्वारा बनवाया था, जो सोनारी तथा जड़िया के कार्य में अद्वितीय था तथा अन्य कलाएँ भी जानता था। इसने इसे अच्छा बनाया था और इसलिए हमने इसे यही नाम दिया। हमारे लिए जो भेंट प्रस्तुत की गई थी उसके सिवा एक लाख रुपए मूल्य के जड़ाऊ गहने तथा कपड़े इसने बेगमों तथा अन्य हरमवालियों को दिए। विगत सम्राट् के राज्यारंभ से अब तक, जो इस प्रार्थी के राज्यकाल का चौदहवाँ वर्ष है, किसी बड़े अमीर ने ऐसी भेंट नहीं उपस्थित की थी। वास्तव में इसके तथा अन्य सर्दारों में समता ही क्या है?

इसी दिन इस्लाम खाँ के पुत्र इकराम खाँ का मंसब बढ़ा कर

दो हजारी १००० सवार का और अनीराय सिंहदल का मंसब दो हजारी १६०० सवार का कर दिया। शुक्रवार ६वीं को एतबार खाँ ने अपनी भेंट उपस्थित की और उसी दिन हमने ख़ानदौराँ को एक हाथी तथा एक घोड़ा देकर पटना के शासन पर भेज दिया। पहले नियमानुसार इसका मंसब छ हजारी ५००० सवार का कर दिया। शनिवार १०वीं को फाजिल खाँ, रविवार ११वीं को मीर मीरान, सोमवार १२वीं को एतकाद खाँ, मंगलवार १३वीं को तातार खाँ तथा अनीराय सिंहदलन और बुधवार १४वीं को मिर्जाराजा भाऊसिंह ने अपनी अपनी भेंट उपस्थित की। उनमें से अच्छी तथा नई वस्तुएँ स्वीकार कर बाकी उन्हीं लोगों को लौटा दी। गुरुवार १४वीं को आसफ खाँ ने अपने घर पर भारी उत्सव तथा शाही जलसे का आयोजन किया। इसका निवासस्थान बहुत ही सुंदर है और उसने हमारा स्वागत करने के लिए प्रार्थना किया। उसकी प्रार्थना स्वीकार कर हमने उसे सम्मानित किया और बेगमों के साथ हम उसके गृह पर गए। उस साम्राज्य के स्तंभ ने इस स्वीकृति को गुप्त दाता की कृपा समझी और अपनी भेंट तथा जलसे की तैयारी में बहुत बढ़कर ऐश्वर्य दिखलाया। बहुमूल्य रत्नों, सुनहले वस्त्रों तथा सभी प्रकार की वस्तुएँ भेंट में उपस्थित कीं और हमें जो पसंद आईं उन्हें स्वीकृत कर बाकी हमने लौटा दीं। भेंट में एक लाल साढ़े बारह टाँक का था, जिसे सवा लाख रुपए का क्रय किया था। स्वीकृत भेंट का मूल्य एक लाख सड़सठ सहस्र रुपए था। इसी दिन ख्वाजाजहाँ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी २५०० सवार का कर दिया।

लश्कर खाँ आज्ञानुसार दक्षिण से आया था इससे हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। हमने निश्चय कर लिया था कि वर्षा ऋतु बीतने पर और अच्छी ऋतु के आरंभ होने पर ईश्वर की कृपा से कश्मीर के सदाबहार उद्यान में चलकर रहेंगे इसलिए हमें यह उचित ज्ञात हुआ

कि आगरा नगर तथा दुर्ग की रक्षा तथा प्रबंध और उस जिले की फौजदारी जिस प्रकार खानजहाँ को सौंपी हुई थी उसी प्रकार लश्कर ख़ाँ को सौंपी जाय तथा यह शुभ समाचार हमने उससे कह दिया। अमानत खाँ को हमने घोड़ों के दागने तथा सवारों के परेड कराने का दारोगा नियत किया। शुक्रवार १६वीं को ख्वाजाहसन मीर बख्शी, शनिवार १७वीं को सादिक खाँ बख्शी, रविवार १८वीं को इरादत खाँ मीर समान और सोमवार १६वीं को जो शर्फ का दिन है, अज़दुद्दौला खाँ ने अपनी अपनी भेटें उपस्थित कीं और हर एक में से हमने जो पसंद किया उसे उनका सम्मान बढ़ाने के लिए स्वीकार किया। इस नौरोज में दरबार के सेवकों की स्वीकृत भेटों का मूल्य बीस लाख हो गया। शर्फ के दिन हमने अपने भाग्यवान पुत्र सुलतान पर्वेज का मंसब बढ़ाकर बीस हजारी १०००० सवार का कर दिया। एतमादुद्दौला का मंसब सात हजारी ७००० सवार का कर दिया। हमने अजदुद्दौला को सल्तनत रूपी आँख की पुतली शाह शुजा के शिक्षक के कार्य के लिए चुना। हम आशा करते हैं कि यह अपनी प्राकृतिक पूर्ण अवस्था को पावेगा और भाग्यशाली होगा। कासिम खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़हजारी ५०० सवार का और बाकिरखाँ का एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। महाबतखाँ ने सैनिक सहायता माँगी थी इसलिए हमने पाँच सौ अहदी बंगश के लिए नियुक्त किया और इज्जतखाँ को, जिसने उस प्रांत में अच्छी सेवा की थी, एक घोड़ा तथा एक जड़ाऊ खपवा उपहार दिया। इसी समय अब्दुस्सत्तार ने गत सम्राट् हुमायूँ का लिखा एक संग्रह भेंट किया, ईश्वरी प्रकाश ही इसका साक्ष्य है, जिसमें कुछ प्रार्थनाएँ, ज्योतिष-विज्ञान-संबंधी भूमिका तथा अन्य आश्चर्यजनक बातें थीं, जिन्हें उन्होंने स्वयं मनन किया था तथा प्रयोग में लाए थे। इस शुभ लेख को श्रद्धापूर्वक देखकर हमें ऐसी प्रसन्नता हुई जैसी कम होती है। हम बहुत अधिक आनंदित हुए क्योंकि ईश्वर साक्षी है कि

मिलने से उस पुत्र ने गुप्त संसार की प्रेरणा से ऐसी कृपा का होना समझकर विश्व-समान इस दरबार की ओर अपनी आशा का मुख फेरा। इसी समय हमने मददे मआश (जीविका की सहायता) के लिए फकीरों तथा सुपात्रों को ४४७८६ बीघा भूमि, दो गाँव तथा कश्मीर के तीन सौ बीस खरवार बोझ अन्न और काबुल में सात हल की भूमि दान दी। हम आशा करते हैं कि ईश्वर की कृपा इन पर बनी रहेगी।

इसी समय की एक घटना जलाल के पुत्र अल्लहदाद अफगान का विद्रोह था। इसका विवरण इस प्रकार है कि जब महाबत खाँ ने बंगश जाकर उस पर अधिकार करने तथा अफगानों को दमन करने की आज्ञा पाई तब इस विचार से कि इस दुष्ट पर हमने बहुत सी कृपाएँ की हैं और उसके बदले में यह कुछ सेवा कार्य करेगा उसने इसे भी साथ ले जाने की प्रार्थना की। ऐसे कृतघ्नों की प्रकृत्या कुछ ऐसी प्रवृत्ति होती है कि वे सत्य को नहीं पहिचानते और शत्रुता तथा वैमनस्य ही रखते हैं अतः सतर्कता की दृष्टि से यह निश्चय हुआ कि वह अपने भाई तथा पुत्र को भेज दे जो ओल में रखे जायँगे। उसके पुत्र तथा भाई के आ जाने पर हमने उन्हें संतोष दिलाने के लिए हर प्रकार की कृपा की परंतु जैसा कहा गया है—

> जिसके भाग्य का कंबल बुना हुआ है वह
> ज़मज़म[1] तथा कौसर[2] के पानी से भी श्वेत नहीं हो सकता॥

जिस दिन यह उस प्रांत में पहुँचा उसी दिन से इसमें दुष्टता तथा कृतघ्नता के लक्षण इसके कार्यों में दिखलाई पड़ने लगे और महाबत

---

१. काबः के पास का एक कूँआ।

२. बिहिश्त अर्थात् स्वर्ग की नदी।

खाँ ने कुल कार्यों पर शासन रखने के लिए सहनशीलता की डोर को हाथ से जाने नहीं दिया। इसी समय उसने एक सेना अपने पुत्र की अधीनता में अफगानों के झुंड पर नियत किया और अल्लहदाद को उसके साथ भेजा। जब वे निश्चित स्थान पर पहुँचे तब इसकी शत्रुता तथा दुष्टता से वह आक्रमण सफल नहीं हुआ और वे असफल लौट आए। दुष्ट अल्लहदाद ने इस शंका से कि महावत खाँ इस बार सहिष्णुता का व्यवहार त्याग कर इस कार्य की वास्तविकता की जाँच करे और वह अपने दुष्ट कार्यों के लिए फँस जाय इससे इसने अधीनता का आच्छादन फाड़ डाला और अपनी निमकहरामी को जिसे उसने अभी तक छिपा रखा था विवशता से प्रगट कर दिया। जब महावत खाँ के पत्र से ठीक वृत्तांत हमें मिला तब हमने उसके पुत्र तथा भाई को ग्वालिअर दुर्ग में कैद करने की आज्ञा दी। ऐसा हो चुका था कि इस दुष्ट का पिता जलाल भी गत सम्राट् के समय उनकी सेवा से भागा और वर्षों तक चोरी तथा डकैती में जीवन व्यतीत किया तथा अंत में अपने दुष्कर्मों के बदले को पहुँचा। आशा है कि यह दुष्ट भी अपने कुकर्मों का शीघ्र फल पावेगा।

गुरुवार ५ वीं को राणा सगरा का पुत्र मानसिंह का मंसब, जो बिहार के सहायकों में नियत था, बढ़ाकर एक हजारी ६०० सवार का कर दिया। हमने आक़िल खाँ को बंगश के कार्य पर नियत मंसबदारों की सेनाओं की जाँच करने तथा सवारों की देखभाल करने के लिए भेजा और उसे एक हाथी दिया। हमने महावत खाँ के लिए माजिद-रानी चाल का बना एक निजी खंजर दोस्तबेग के हाथ भेजा। सोमवार की भेंट महमूद आबदार को दी गई क्योंकि वह हमारी शाहजादगी तथा बाल्यकाल से हमारी सेवा में रहा। पायंदा खाँ मुगल के दामाद मीरान के मंसब को बढ़ाकर सात सदी ४५० सवार का कर दिया। ख्वाजाजहाँ के भाई मुहम्मद हुसेन के मंसब को, जो काँगड़ा का बख्शी

था, बढ़ाकर छ सदी ४५० सवार का कर दिया। इसी दिन तरबियत खाँ की मृत्यु हुई, जो इस दरबार का वंशपरंपरा का खानःजाद था और अपने अच्छे स्वभाव के कारण एक सर्दार हो गया था। इसमें उच्चाकांक्षा का अभाव नहीं था पर यह विषय तथा आनंद का लोलुप युवक था। यह सुख से जीवन व्यतीत करना चाहता था और हिंदू गानविद्या में विशेष रुचि थी तथा उसे कुछ समझता था। इसमें दुष्टता नहीं थी। राजा सूरजसिंह का मंसब बढ़ाकर दो हजारी २००० सवार का कर दिया। अलीमर्दानखाँ बहादुर के पुत्र करमुल्ला, मुलतान के फौजदार बाकिरखाँ, मलिक मुहिब्ब अफगान और मकतूबखाँ को हाथी दिए गए। सैयद बायजीद भक्करी को भी, जो भक्कर दुर्ग का अध्यक्ष तथा उस प्रांत का फौजदार था, एक हाथी देकर सम्मानित किया। महाबतखाँ के पुत्र अमानुल्ला को एक जड़ाऊ खंजर दिया गया। शेख अहमद हाँसी, शेख अब्दुल् लतीफ संभली, फिरासतखाँ ख्वाजासारा तथा रायकुँअरचंद मुस्तौफी को एक एक हाथी दिए। पंजाब के बख्शी मुहम्मद शफी का मंसब बढ़ाकर पाँच सदी ३०० सवार का कर दिया। कालिंजर दुर्ग के रक्षक मूनिस को, जो मेहतरखाँ का पुत्र था, पाँच सदी १५० सवार का मंसब दिया।

इसी दिन समाचार मिला कि खानखानाँ सिपहसालार का पुत्र शाहनवाजखाँ मर गया। इससे हमें बहुत दुःख हुआ। जिस समय हमारे उस अतालीक (अभिभावक) ने हमारी सेवा में उपस्थित होने के अनंतर जाने की छुट्टी ली उस समय हमने उसे अच्छी प्रकार समझा दिया था कि हमने कई बार सुना है कि शाहनवाज खाँ मदिरा के पीछे पागल है और बहुत अधिक पीता है और यदि यह बात सच हो तो बड़े शोक की बात है कि वह इस अवस्था में अपने को नष्ट करे। इस लिए आवश्यक है कि खानखानाँ उसे उसकी चाल पर न छोड़ दे

और अच्छी प्रकार उसकी देखभाल करे। यदि वह कार्य पर से हट न सके तो पूरी स्पष्ट सूचना भेजे. जिससे उसे हम अपने सामने बुलाकर उसे स्थिति के अनुकूल उचित आज्ञा दें। जब वह बुर्हानपुर पहुँचा तब उसने शाहनवाज़ खाँ को बहुत निर्बल तथा गिरी दशा में पाया। औषधि करने का उसने प्रयत्न किया पर उसकी हालत बिगड़ती गई। हकीमों ने जो कुछ उपचार किए सब निष्फल गए और यौवन तथा ऐश्वर्य के सर्वोत्तम समय में अवस्था के तेंतीसवें वर्ष में वह मर गया, जिससे संसार को व्यथा तथा दुःख हुआ। इस शोकपूर्ण समाचार को सुनकर हमें बहुत दुःख हुआ क्योंकि वह वास्तव में बुद्धिमान युवक था तथा खानःजाद था। वह अवश्य इस साम्राज्य की सेवा में अच्छा कार्य करता तथा भारी चिह्न छोड़ जाता। यद्यपि यह मार्ग सभी के लिए है और कोई भी भाग्य के आदेश से बच नहीं सकता पर तब भी इस प्रकार चले जाना दुखद है। आशा है कि ईश्वर उसे क्षमा करेगा। हमने राजा सारंगदेव को, जो हमारा अंतरंग सेवक तथा कुशल पुरुष है, खानखानाँ के पास भेजा और हर प्रकार से उसे शोक-सान्त्वना दी। शाहनवाज के पाँच हजारी मंसब को हमने उसके भाई तथा पुत्रों में बाँट दिया। उसके छोटे भाई दाराब का मंसब बढ़ाकर हमने उसे पाँच हजारी कर दिया और खिलअत, एक हाथी, एक घोड़ा और एक जड़ाऊ तलवार देकर पिता के पास जाने की छुट्टी दी कि शाहनवाज़ के स्थान पर वह बरार तथा अहमदनगर के अध्यक्ष पद का कार्य करे। दूसरे भाई रहमानदाद का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ८०० सवार का कर दिया। शाहनवाज के पुत्र मनोचहर को दो हजारी १००० सवार का मंसब दिया। शाहनवाज़ के पुत्र तुगज़िल या तुग़रल का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया।

गुरुवार १२ वीं को एतमादुद्दौला के दामाद कासिमखाँ को एक झंडा देकर सम्मानित किया। सैयद हाजी का पुत्र असदुल्ला सेवा में

भर्ती होने के विचार से आया था इससे उसे पाँच सदी १०० सवार का मंसब दिया। मृत मुर्तजाखाँ के दामाद सदरजहाँ को सात सदी ६०० सवार का मंसब मिला और संभल की फौजदारी पर नियत हुआ। उसे एक हाथी देकर जाने की छुट्टी दी। भारथ बुंदेला को छ सदी ४०० सवार का मंसब तथा एक हाथी दिया और एक हाथी जम्मू के राजा संग्राम को भी दिया।

अहमदाबाद में हमारे यहाँ दो मारखोर बकरे थे। कोई बकरी हमारे यहाँ नहीं थी कि उनसे समागम कराई जाय। हमने सोचा कि वर्बरी बकरियों से, जो अरब से विशेपकर दरखर बंदर के नगर से लाई जाती हैं और जो देखने में जवान तथा गुणवाली होती हैं, इनसे जोड़ा खिलाया जाय। संक्षेप में हमने सात बकरियों से जोड़ा खिलवाया और छ महीने के बाद हर एक को फतहपुर में एक एक बच्चे हुए। इनमें चार मादे तथा तीन नर थे और सभी सुन्दर रूप रंग के थे। रंग में जो नर के समान थे उनका रंग वैसा ही था और पीठ पर काली धारियाँ थीं। लाल रंग अन्य रंगों से अच्छा मालूम होता है और वह अच्छी जाति का चिह्न है। उन बच्चों के कूदने फाँदने का ढंग अच्छा तथा विनोद युक्त था। यह प्रसिद्ध है कि चित्रकार बकरी के बच्चों के कूदने-फाँदने का चित्र ठीक नहीं खींच सकते। संभव है कि वे साधारण बच्चों की कूदफाँद का किसी प्रकार चित्र खींच लें पर इन बच्चों के कूद फाँद का चित्र खींचने में अवश्य ही उन्हें अपनी असमर्थता प्रगट करनी पड़ेगी। एक महीने या बीस दिन के होते ही ये बच्चे ऊँचे स्थानों पर कूद जाते और फिर भूमि पर इस प्रकार फाँद पड़ते कि यदि इनके सिवा और कोई वैसा करता तो उसके एक अंग भी साबूत न बचते। ये बड़े अच्छे लगते थे इस लिए हमने आज्ञा दी कि वे हमारे पास ही रखे जायँ और हमने प्रत्येक का उचित नाम

रखा। इनसे हम बहुत प्रसन्न रहते हैं और इसीलिए मारखुर बकरों तथा अच्छी जाति की बकरियों को साथ रखने का ध्यान रखते हैं। हम इनसे बहुत से बच्चे एकट्ठा करना चाहते हैं जिसमें वे आदमियों से हिलमिल जायँ। इन बच्चों के जोड़ा खाने से जो बच्चे होंगे वे और भी अच्छे होंगे। इनकी विशेषताओं में एक यह भी है कि साधारण बकरी के बच्चे जन्मते ही तथा दूध पीने तक बहुत मेमियाते हैं पर ये इसके विरुद्ध बिना चिल्लाये चुपचाप खड़े रहते हैं। स्यात् इनका मांस भी विशेष स्वादिष्ट हो।

पहले मुकर्रब खाँ को आज्ञा दी जा चुकी थी कि वह बिहार में नियुक्त हुआ है अतः वहाँ शीघ्रता से जाय। वहाँ जाने के पहले वह अभिवादन करने के लिए दरबार में उपस्थित हुआ और इसलिए उसे साज़सहित एक हाथी, दो घोड़े तथा एक जड़ाऊ खपवा दिया और उसे छुट्टी मिल गई। वेतन के अग्रिम रूप में उसे पचास सहस्र रुपए व्यय के लिए दिए गए। उसी दिन सर्दार खाँ को खिलअत, एक हाथी तथा एक घोड़ा दिया और मुँगेर सरकार में नियुक्त कर जाने की छुट्टी दी, जो बिहार तथा बंगाल प्रांत में है। कुतुबुलमुल्क के वकील मीर शरीफ ने, जो दरबार में उपस्थित था, जाने की आज्ञा ली। हमारे भाग्यवान पुत्र शाहजहाँ ने अपने दीवान अफजल खाँ के भाई को उसके साथ भेजा। कुतुबुलमुलक ने हमें प्रसन्न करने की रुचि दिखलाई तथा प्रयत्न भी किया और हमारे चित्र के लिए कई बार माँग की इसलिए हमने अपना चित्र, एक जड़ाऊ खपवा तथा फूलकटारः उसे भेंट में भेजा। चौबीस सहस्र दर्ब, एक जड़ाऊ खंजर, एक घोड़ा तथा खिलअत उक्त मीर शरीफ को दिया। इमारतों के निरीक्षक फाजिलखाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। हकीम रूहोनाथ का भी मंसब छ सदी ६० सवार का कर दिया। इसी समय

विगत सम्राट् की वार्षिकी थी इससे पाँच सहस्र रुपए कुछ मुख्य सेवकों को दिए कि दरिद्रों तथा सुपात्रों में वितरित कर दें। मुंगेर के जागीरदार हसनअली खाँ को ढाई हजारी २५०० सवार का मंसब देकर बंगाल के प्रांताध्यक्ष इब्राहीमखाँ फत्हजंग की सहायता को भेज दिया और उसे एक तलवार उपहार दिया। मिर्जा शरफुद्दीन हुसेन काशगरी बंगश में कार्य करते हुए मारा गया था इसलिए उसके पुत्र इब्राहीम हुसेन का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। इसी समय इब्राहीम खाँ ने दो नावें बनवाई, जिसे उस देश की भाषा में कोशा कहते हैं। इनमें एक सोने की तथा एक चाँदी की थी, जिन्हें भेंट के रूप में हमारे यहाँ भेज दिया। निस्संदेह अपने ढंग की बहुत अच्छी हैं। इनमें से एक हमने अपने पुत्र शाहजहाँ को दे दिया।

गुरुवार ६ वीं को सआदत खाँ को एक हजारी ६० सवार का मंसब दिया। इसी दिन अज़ुद्दौला और शुजाअतखाँ अरब ने अपनी जागीरों पर जाने की छुट्टी ली। इसी गुरुवार को हमने आसफ खाँ को एक जड़ाऊ खपवा तथा एक फूलकटारः दिया। हमारे पुत्र सुलतान पर्वेज ने दरबार आने का निश्चय किया और प्रार्थना की कि एक खास नादिरी खिलअत, एक चीरा तथा एक फोता उसके लिए भेजा जाय कि वह उन्हें पहिरकर मिलने के दिन आवे तथा अभिवादन करने का सौभाग्य प्राप्त करे। उसकी प्रार्थना पर उसके वकील शरीफ के हाथ बहुत अच्छा खिलअत चीरा तथा फोता के साथ भेज दिया। गुरुवार २३वीं को हमारी बूआ का पुत्र मिर्जा वली आज्ञानुसार दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसका पिता ख्वाजा हसन खालदार नक्शबंदी ख्वाजाओं में से था। हमारे पितृव्य मिर्जा मुहम्मद हकीम ने अपनी बहिन का निकाह ख्वाजा से कर दिया था। हमने लोगों से ख्वाजा की बहुत प्रशंसा सुनी थी। यह उच्च वंश का था

और सबसे सुव्यवहार रखता था। बहुत दिनों तक यह हमारे चाचा के कुल कार्यों का प्रबंध देखता रहा और उनसे व्यवहार ठीक बना रहा। मिर्जा की मृत्यु के पहले ही इसकी मृत्यु हो गई। इसके दो पुत्र मिर्जा बदीउज्जमाँ तथा मिर्जा वली थे। मिर्जा बदीउज्जमाँ मिर्जा की मृत्यु पर भागकर मावरुन्नहर चला गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गई। बेगम तथा मिर्जा वली इस दरबार में चले आए और बादशाह अकबर ने बेगम पर बड़ी कृपा की। मिर्जा भी सरल तथा गंभीर युवक है और बुद्धि तथा ज्ञान की भी कमी नहीं है। यह गान विद्या में भी बहुत कुशल है। इसी समय हमारा विचार हुआ कि मृत शाह-ज़ादा दानियाल की पुत्री का निकाह मिर्जा से कर दें और इसी विचार से हमने मिर्जा को दरबार बुलाया था। यह लड़की कुलीज मुहम्मद खाँ की पुत्री से हुई थी। आशा है कि प्रसन्न तथा सेवा करने से, जो सौभाग्य तथा समृद्धि का कारण है, यह भाग्यवान होगा।

इसी दिन सरबुलंदराय का मंसब जो दक्षिण के कार्य पर भेजा गया था, बढ़ाकर ढाई हजारी १५०० सवार का कर दिया।

इसी समय हमें सूचना दी गई कि शेख अहमद नामक एक सैयद ने सरहिंद में धोखे तथा पाखंड का जाल फैलाया है और बहुत से लोगों को, जो केवल दिखावटी धार्मिक थे पर वास्तव में नहीं थे, उसमें फँसा लिया है। इसने बहुत से लोगों को हर एक नगर तथा देश में अपने शिष्यों में से एक एक को भेजा है, जिन्हें वह अपना खलीफा कहता है और जिन्हें वह पाखंड विद्या तथा धार्मिक ज्ञान के विक्रय में एवं मनुष्यों को बहकाने में कुशल समझता है। इसने अपने शिष्यों तथा अनुयायियों के नाम बहुत सी कहानियाँ लिख डाली हैं और इनका संग्रह कर पुस्तक प्रस्तुत कर ली है, जिसका नाम मकतूबात रखा है। इस जिल्द में इसने बहुत सी असंभाव्य हानिकारक बातें लिख डाली हैं,

जिनसे लोगों में कुफ्र तथा अधार्मिकता फैलती है। इन्हीं में से एक पत्र में लिखता है 'कि अपने भ्रमणों में हम दोनों प्रकाशों (सूर्य तथा चंद्र) के निवासस्थान में पहुँचे तो वहाँ एक बड़ा ऊँचा तथा विशाल प्रासाद देखा। वहाँ से हम विवेक के घर पहुँचे तथा इसके अनंतर सत्य के और इन दोनों का उचित विवरण लिखा है। यहाँ से हम प्रेम के निवास-गृह पर पहुँचे और एक बहुत प्रकाशमान् गृह देखा, जिससे अनेक प्रकार के रंग, प्रकाश तथा प्रत्यावर्तित छायाएँ निकल रही थीं। अर्थात् (ईश्वर रक्षा करे), हम खलीफों के गृहों से आगे बढ़ गए तथा सबके आगे निकल गए।' इसी प्रकार की बहुत सी घमंडभरी बातें उसमें लिखी गई थीं जिनका विवरण बहुत सा है और शालीनता के विरुद्ध है। यह सुनकर हमने आज्ञा दी कि उसे इस न्यायसभा दरबार में उपस्थित करें। आज्ञानुसार वह आकर उपस्थित हुआ। जितनी बातें हमने उससे पूछीं उन सब में किसीका भी उसने उचित उत्तर नहीं दिया और हमें ज्ञात हुआ कि इतना मूर्ख होते भी वह बहुत ही घमंडी तथा अहंम्मन्य है। हमने यही उचित समझा कि इसे कुछ दिन तक शिक्षा के कारागार में बंद रखा जाय जिससे इसकी प्रकृति की गर्मी तथा मस्तिष्क की गड़बड़ी कुछ शांत हो जाय और मनुष्यों में जो उत्तेजना है वह भी ठंढी पड़ जाय। इसी के अनुसार हमने उसे अनीराय सिंहदलन को सौंप दिया कि उसे ग्वालिअर दुर्ग में कैद कर दे।

शनिवार २५ खुरदाद को हमारा भाग्यवान पुत्र सुलतान पर्वेज इलाहाबाद से आया और खिलाफत की देहली पर सिज्दः करके अपनी सचाई के कपोल को प्रकाशित किया। उसके सिज्दे की प्रथा पूरी करने और विशेष कृपा द्वारा सम्मानित होने पर हमने उसे बैठने की आज्ञा दी। उसने दो सहस्र मुहर तथा दो सहस्र रुपए भेंट दिया

और एक हीरा नजर किया। उसके लाए हुए हाथी अभी तक नहीं पहुँचे थे इससे उन्हें वह अन्य अवसर पर उपस्थित करेगा। वह अपने साथ रतनपुर के जमींदार राजा कल्याण को संसार के शरणस्थल इस दरबार को लिवा लाया था, जिसके विरुद्ध उसने सेना भेजी थी और जिससे अस्सी हाथी तथा एक लाख रुपए कर लिया था। हमारा पुत्र इसे साथ लिवा लाया और वह भी सेवा में उपस्थित हुआ। हमारे पुत्र के दीवान वजीर खाँ ने, जो दरबार के पुराने सेवकों में से है, सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त कर अट्ठाइस हाथी-हथिनी भेंट किए। इनमें से नौ स्वीकृत हुए और बाकी लौटा दिए गए।

हमें सूचना दी गई कि इफ्तखारखाँ का पुत्र मुरौवत खाँ, जो एक खानःजाद था, बंगाल की सीमा पर मघों के एक झुंड से युद्ध करते हुए मारा गया इसलिए हमने उसके भाई अल्लहयार का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का और दूसरे भाई का चार सदी १०० सवार का कर दिया, जिससे जिन्हें वह छोड़ गया है उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो। तीर महीने की ३ री सोमवार को नगर के पास में चार हरिण, एक हरिणी तथा एक बच्चा पकड़े गए। मार्ग में जाते हुए जब हम अपने भाग्यवान पुत्र सुलतान पर्वेज के गृह से होकर गए तो उसने दो हाथी साज सहित भेंट किए और दोनों हमारे निजी हथसाल में रखे गए।

गुरुवार १३ वीं को ईरान के शासक हमारे भाई शाह अब्बास के राजदूत सैयद हसन ने सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया और एक पत्र तथा एक बिल्लौरी प्याला, जिसके ढक्कन पर एक लाल लगा हुआ था, दिया। यह सत्यता तथा अत्यधिक मित्रता के साथ भेजा गया था इसलिए यह विशेष सौमनस्य तथा सौहार्द्र का कारण हुआ। इसी दिन फिदाई खाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार

का और फतहुल्ला के पुत्र नसरुल्ला का मंसब, जो अंबर दुर्ग का अध्यक्ष था, डेढ़ हजारी ४०० सवार का कर दिया। गुरुवार २० वीं को महाबत खाँ का पुत्र अमानुल्ला का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ८०० सवार का कर दिया। वजीर खाँ को बंगाल का दीवान नियत कर हमने उसे एक घोड़ा, खिलअत और जड़ाऊ खंजर दिया। मीर हिसामुद्दीन तथा जबर्दस्त खाँ को एक एक हाथी दिया। इसी दिन खानआलम का एक सेवक हाफिज हसन दरबार आया और हमारे भाई शाह अब्बास का एक बहुमूल्य पत्र तथा साम्राज्य के उस स्तंभ की एक सूचना भी साथ लाया। उसने हमारे सामने एक खंजर भी उपस्थित किया जिसकी मूठ मछली के दाँत की बनी हुई थी और जिस पर बड़ी चमक थी। इसे हमारे भाई ने खानआलम को दिया था और इस कारण कि वह अलभ्य वस्तु थी उसने हमारे यहाँ भेज दिया था। हमने इसे बहुत पसंद किया और वास्तव में यह एक अलभ्य वस्तु है। हमने अब तक ऐसा चिह्नित कभी नहीं देखा था इससे हम बहुत प्रसन्न हुए।

गुरुवार २७वीं को मिर्जा वली का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। २४ वीं को सैयद हसन एलची को एक सहस्र दर्ब दिया और अब्दुल्ला खाँ फीरोजजंग बहादुर को एक हाथी। अमूरदाद महीने की २ री को गुरुवार को एक घोड़ा एतबार खाँ को दिया। आकिल खाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ८०० सवार का कर दिया।

शनिवार की रात्रि में इलाही महीने अमूरदाद की ४ थी को, जो १५ वीं शाबान थी, शबबरात का जलसा था। आज्ञानुसार नावों को दीपकों तथा हर प्रकार की आतिशबाजी से सजाकर वे हमारे सामने नदी में ले आए। वास्तव में दीपकों को इस प्रकार सजाया था कि

बड़ा सुंदर लगता था और बहुत देर तक हम उन्हें देखते हुए आनंद लेते रहे। मंगलवार को नाद अली मैदानी के पुत्र मीरान को, जो एक सुशिक्षित खानःजाद है, सात सदी ५०० सवार का मंसब, ख्वाजा जैनुद्दीन को सात सदी ३०० सवार का और ख्वाजा मुहसिन को सात सदी १०० सवार का मंसब दिया। गुरुवार ९ वीं को हम सामूनगर ग्राम में अहेर खेलने गए। वहाँ सोमवार तक सुखपूर्वक घूमने तथा उस रमणीक मैदान में अहेर खेलने में व्यतीत कर मंगल की संध्या को राजमहल लौट आए। गुरुवार १६ वीं को शेख अबुल् फज्ल के पौत्र बिशूतन का मंसब बढ़ाकर सात सदी ३५० सवार का कर दिया। इसी दिन हम गुलअफशाँ बाग में घूमने गए, जो जमुना के किनारे है। मार्ग में खूब वर्षा हुई और पृथ्वी को ताजगी तथा हरियाली से भर दिया। अनन्नास पूर्णरूपेण तैयार हो गया था और हमने उसका खूब निरीक्षण किया। नदी पर जितनी इमारतें थीं उनमें कोई भी ऐसी नहीं थी जो हरियाली की शोभा तथा बहते पानी से खाली हो। अनवरी के ये शैर उस स्थान के लिए उपयुक्त थे।

शैर

यह दिन विनोद तथा प्रसन्नता का है।
फूलों तथा सुगंधियों का दैनिक हाट ॥
भूमि के टीले अंबर से सुगंधित हैं।
वायु अपने दामन से गुलाब छिड़क रही है ॥
तालाब प्रातः समीर की चपेट से
रेती के छोर के समान खुरखुरी तथा तेज है ॥

यह उद्यान ख्वाजाजहाँ की रक्षा में है और इसलिए उसने नए ढंग के कुछ जरी के थान भेंट किए, जो उसके लिए लोग एराक से लाए थे। पसंद के थान चुनकर हमने बाकी उसे लौटा दिए। इसने

उद्यान का प्रबंध अच्छा किया था इसलिए उसका मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ३००० सवार का कर दिया।

एक विचित्र घटना यह घटी कि उस चितकबरे दाँत के जड़ाऊ मूठ वाले खंजर से जो शाह अब्बास द्वारा खानआलम को मिला था और जिसे उसने हमारे पास भेज दिया था, हम इतने प्रसन्न थे कि हमने बहुत से कुशल मनुष्यों को ईरान तथा तूरान तक भेजा कि वे उसे खोजें और निरंतर उसकी खोज में लगे रहें तथा उसे जिस किसी से या जहाँ से हो एवं किसी मूल्य पर ले आवें। हमारे बहुत से सेवकगण जो हमारे विचार जानते थे तथा सम्मानित अमीरगण भी अपना कार्य करते हुए इस खोज में लग गए। ऐसा हुआ कि एक मूर्ख मनुष्य ने खुले बाजार में मामूली मूल्य पर एक बहुत ही सुंदर तथा अच्छा रंगीन दाँत क्रय किया। उसका विश्वास था कि यह दाँत कभी आग में गिर पड़ा था और इस पर जो काले चिह्न हैं वह जलने ही के हैं। कुछ दिन बाद उसने उसे हमारे ऐश्वर्यशाली पुत्र शाहजहाँ के कारखानों के एक बढ़ई को दिखलाया कि वह उस दाँत में से एक टुकड़ा काट दे जिससे वह एक शिस्त बनवावे। साथ ही उसने यह भी कहा कि उसके काले धब्बों को जो जलने से होगए हैं छीलकर निकाल दे पर वह नहीं जानता था कि उसकी श्वेतता के मूल्य को वह कालापन बढ़ा रहा था। ये तिल तथा धब्बे भाग्य रूपी स्त्री के सौंदर्य को बढ़ा रहे थे। बढ़ई तत्काल कारखाने के दारोगा के पास गया और सुसमाचार दिया कि ऐसी बहुमूल्य तथा अलभ्य वस्तु, जिसके लिए बहुत से मनुष्य दूर दूर तक हर देशों तथा दिशाओं में कोने कोने खोज रहे हैं, एक मूर्ख मनुष्य के हाथ नाम मात्र के मूल्य पर पड़ गई है, जो उसके मूल्य को नहीं जानता। वह उससे सस्ते में तुरंत मिल जायगा। दारोगा तुरंत उसके साथ गया

और उसे क्रय कर लिया तथा हमारे सामने उपस्थित किया। जब हमारा पुत्र शाहजहाँ हमारी सेवा में आया तब पहले उसने बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और जब उसका मस्तिष्क आनंद की मदिरा के नशे से स्वच्छ हुआ तब उसने उसे निकाला और हम बहुत प्रसन्न हुए—

तुझने हमें प्रसन्न किया है अतः तेरा समय प्रसन्नता में बीतेगा।

हमने उसे इतने आशीर्वाद दिए कि उन सैकड़ों में से एक भी स्वीकृत हुए तो वह उसके आध्यात्मिक तथा सांसारिक भलाई के लिए अलं होगा।

इसी दिन आदिलखाँ का एक मुख्य सेवक बहलीम खाँ आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने सचाई के साथ हमारी सेवा स्वीकार की थी इसलिए हमने उदारता से उस पर कृपा की और उसे खिलअत, एक घोड़ा, एक तलवार, दस सहस्र दर्ब तथा एक हजारी ५०० सवार का मंसब दिया। इसी समय खानदौराँ के यहाँ से प्रार्थनापत्र आया कि 'सम्राट् ने अपनी कृपाओं की पूर्णता तथा उसकी योग्यता के कारण एक पुराने दास को उसके वार्द्धक्य तथा निर्बल दृष्टि के होते भी ठट्टा के शासन पर नियत कर दिया था पर वह निश्शक्त वृद्ध अब बहुत झुक गया है और लुंज सा हो रहा है, उसमें उत्साह के साथ कार्य करने की शक्ति नहीं रह गई है, न सवारी कर सकता है। उसकी प्रार्थना है कि उसे युद्धीय सेवा क्षमा की जाय तथा दुआ माँगने वालों की सेना में भर्ती किया जाय।' उसको प्रार्थना पर हमने मुख्य दीवानों को आज्ञा दी कि उसे खुशाब पर्गना, जिसकी आय तीस लाख दाम है और जो बहुत दिनों से उसकी वेतन-जागीर में उसके पास है तथा जो अब बस गया एवं जुत गया है, स्थायी रूप में दिया जाय जिससे उसका व्यय चलता रहे और वह सुखपूर्वक कालयापन कर सके। उसके सबसे बड़े पुत्र शाह मुहम्मद का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ६०० सवार का तथा

दूसरे पुत्र याकूब बेग का साढ़े सात सदी ३५० सवार का कर दिया। तीसरे पुत्र असद बेग का मंसब बढ़ाकर तीन सदी ५० सवार का कर दिया।

शनिवार १ ली शहरिवर इलाही महीना को हमने वर्षा ऋतु के खिलअत अतालीक सिपहसालार खानखानाँ तथा अन्य बड़े अमीरों को, जो दक्षिण के कार्य पर भेजे गए थे, यज्दान के हाथ से भेजा।

कश्मीर के पुष्पोद्यान के सदा बहार को देखने का निश्चय हमारे मन में होगया था इसलिए हमने नूरुद्दीन कुली को आगे से भेजा कि कूँच के मार्ग के ऊँचे नीचे स्थानों को यथासंभव मरम्मत कर डाले और ऐसा बनावे कि लदे हुए पशु कठिन पहाड़ियों पर भी आराम से जा सकें और मनुष्यों को विशेष परिश्रम तथा कठिनाई न उठाना पड़े। एक बड़ी संख्या कारीगरों की जैसे पत्थर काटने वाले, बढ़ई, खोदने वाले आदि उसके साथ भेजे गए और उसे एक हाथी भी दिया गया। गुरुवार १३ वीं की संध्या को हम नूरमंजिल उद्यान में गए और रविवार १६ वीं तक वहाँ आनंद से व्यतीत किया। राजा विक्रमाजीत बघेला माँदपुर के दुर्ग से, जो उसका देश है, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक हाथी तथा एक जड़ाऊ कलगी भेंट दी। मकसूद खाँ को एक हजारी १३० सवार का मंसब देकर सम्मनित किया। गुरुवार २० वीं को हमारे पुत्र शाह पर्वेज ने दो हाथी भेंट किए और उन दोनों को हमने निजी हथसाल में रखने की आज्ञा दी। उक्त महीने की २४ वीं को सौर मास के तुलादान का उत्सव मरियमुज्जमानी के महल में हुआ और सौर वर्ष के अनुसार हमारा इक्यावनवाँ वर्ष प्रसन्नता तथा विजय के साथ आरंभ हुआ। यह आशा है कि हमारा जीवनकाल ईश्वर की अधीनता में व्यतीत होगा। सैयद मुहम्मद के पुत्र तथा शाहआलम बुखारी के पौत्र सैयद जलाल को, जिसके वृत्त का गुजरात

की चढ़ाई की घटनावली में उल्लेख कर चुके हैं, जाने की छुट्टी दी और उसे एक हथिनी चढ़ने के लिए तथा उसका व्यय भी दिया। रविवार ३० वीं को, जो १४ शव्वाल था और जिस दिन चंद्रबिंब पूर्ण था, चाँदनी का जलसा उन उद्यान गृहों में हुआ जो जमुना नदी की ओर हैं और बड़ा सुंदर जलसा हुआ।

इलाही महीने मेह की १ ली को हमने पुत्र शाहजहाँ के भेंट में दिए हुए जौहरदार धब्बेवाले दाँत में से दो टुकड़े खंजर की मूठों के लिए तथा एक शिस्त के लिए काटने की आज्ञा दी। यह बहुत ही सुंदर रंग का तथा बहुत ही अच्छा था। हमने पूरण तथा कल्याण नामक दो उस्तादों को, जो खुदाई की कला में अद्वितीय थे, ऐसे ढंग की मूठ बनाने की आज्ञा दी जो उस समय पसंद की गई और उसका जहाँगीरी शैली नाम पड़ गया। उसी समय फलक, मियान तथा साज़ बनाने की भी कुशल मनुष्यों को आज्ञा दी गई जो अपने अपने कामों में प्रसिद्ध थे। वास्तव में यह सब काम हमारी इच्छानुसार ही हुआ। एक मूठ तो ऐसे रंग की निकल आई कि आश्चर्य उत्पन्न करती थी। इसमें सातों रंग थे और कुछ फूल ऐसे लगते थे कि मानों कुशल चित्रकार ने इन्हें काली लकीरों से चारों ओर विचित्र लिखने वाली लेखनी से खींच दिया है। संक्षेप में यह इतनी सुंदर है कि उसे हम अपने से अलग एक क्षण के लिए भी नहीं रहने देना चाहते। राजकोष के बहुमूल्य जवाहिरात में हम इसे सबसे अधिक मूल्यवान समझते हैं। गुरुवार को हमने इसे शुभ समझकर तथा प्रसन्नता के साथ कमर में लगाया और उन लोगों को जिन्होंने इसके बनाने में बहुत कौशल तथा परिश्रम किया था पुरस्कृत किया। उस्ताद पूरण को एक हाथी, खिलअत और सोने का कलाई में पहिरने का आभूषण दिया जिसे भारत के लोग कड़ा कहते हैं। कल्याण को 'अजायब दस्त' पदवी,

मंसब में तरक्की, खिलअत और एक जड़ाऊ पहुँची दी। इसी प्रकार हर एक को उसके कार्य के अनुसार पुरस्कार दिया।

हमें सूचित किया गया कि महाबतखाँ के पुत्र अमानुल्ला ने विद्रोही अहदाद से युद्ध कर उसकी सेना को परास्त कर दिया है और बहुत से काले मुख तथा हृदय वाले अफगानों को अपनी रक्तपायी तलवार से काट गिराया है, इसलिए हमने एक विशिष्ट तलवार उसे सम्मानित करने को भेजी।

रविवार ५ वीं को राजा सूरजसिंह की मृत्यु का समाचार मिला, जिसकी दक्षिण में स्वाभाविक रूप से मृत्यु हुई। यह मालदेव का वंशज था, जो हिंदुस्थान के प्रधान जमींदारों में से एक था और जिस की जमींदारी राणा के बराबर थी और इसने एक युद्ध में उसे परास्त भी किया था। इसका वृत्तांत अकबरनामे में विस्तार से दिया है। राजा सूरजसिंह ने गत सम्राट् तथा हमारी छाया में उच्च पद तथा पदवी प्राप्त की। इसका राज्यविस्तार इसके पिता तथा पितामह के समय से बढ़ गया था। इसे एक पुत्र गजसिंह था जिसे इसने कुल शासनकार्य सौंप दिया। हम जानते थे कि वह योग्य तथा कृपा का पात्र है इसलिए हमने उसका मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया और उसे राजा की पदवी तथा झंडा दिया। उसके छोटे भाई को पाँच सदी २५० सवार का मंसब तथा उसी देश में जागीर दिया।

गुरुवार १० वीं मेह्र को आसफखाँ की प्रार्थना पर हम उसके जमुना-तटस्थ गृह पर गए। इसने एक बड़ा सुंदर स्नानगृह बनवाया था, जिसे देखकर हम बहुत प्रसन्न हुए। स्नान करने के अनंतर प्यालों का जलसा हुआ और हमारे निजी सेवकगण प्रसन्नता के प्यालों से संतुष्ट हुए। उसकी भेंट में से हमने कुछ वस्तुएँ चुन लीं और बाकी उसे

लौटा दिया। जो हमने लिया था उसका मूल्य तीस सहस्र रुपए हो सकता है। मुलतान के फौजदार बाक़िरखाँ को एक झंडा दिया।

इसके पहले आज्ञानुसार आगरे से अटक नदी तक मार्ग के दोनों ओर वृक्ष लगा दिए गए थे और इसी प्रकार आगरे से बंगाल तक। अब हमने आज्ञा दी कि आगरे से लाहौर तक हर कोस पर एक खंभा खड़ा करें जिससे ज्ञात हो कि कोस पूरा हो गया और हर तीसरे कोस पर एक कूँआ बनवावें जिससे यात्रियों को मार्ग चलने में सुविधा तथा आराम मिले और वे प्यास तथा सूर्य के ताप से कष्ट न उठावें।

गुरुवार २४ वीं मेह्र को दशहरा का जलसा हुआ। भारतीय प्रथानुसार घोड़ों को सजाकर वे हमारे सामने लाए। हमारे घोड़ों का निरीक्षण कर लेने पर वे थोड़े हाथी भी लाए। मोतमिदखाँ ने गत नौरोज के अवसर पर भेंट नहीं दी थी इसलिए इस त्योहार पर उसने सोने का एक तख्त, लाल की एक अँगूठी, मूँगे का एक टुकड़ा तथा अन्य वस्तुएँ भेंट कीं। तख्त अच्छा बना था। भेंट का मूल्य सोलह सहस्र था। वह यह सब सामान शुद्ध सत्यता तथा राजभक्ति से लाया था इसलिए सब स्वीकृत हो गया। इसी दिन जबर्दस्तखाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। दशहरा का दिन यात्रारंभ के लिए निश्चित किया गया था इसलिए हम संध्या के समय प्रसन्नता तथा शुभ शकुनों के साथ नाव पर सवार हुए और अपने लक्ष्य की ओर चले। हम पहले पड़ाव पर आठ दिन ठहरे, जिसमें सब आदमी सुखपूर्वक अपनी अपनी तैयारी कर आ जायँ। महाबतखाँ ने बंगश के सेब डाकचौकी से भेजे थे। ये ताजे पहुँचे और बहुत सुस्वादु थे। हम उन्हें खाकर बहुत प्रसन्न हुए। ये काबुल के अच्छे सेब की तुलना में नहीं थे जैसे हमने वहाँ खाए थे और न समरकंद के सेब के समान थे, जो प्रतिवर्ष लाए

जाते थे। मिठास तथा स्वाद में इनकी अंतिम दो में से किसी के साथ तुलना नहीं की जा सकती। अब तक हमने ऐसे स्वादिष्ट तथा सरस सेब नहीं देखे थे। कहते हैं कि ऊपरी बंगश में लश्कर दरा के पास एक ग्राम सिवराम[1] नामक है जिसमें सेब के तीन वृक्ष हैं और यद्यपि लोगों ने बहुत प्रयत्न किए पर वैसे अच्छे सेब अन्यत्र कहीं नहीं लग सके। हमने अपने भाई शाह अब्बास के राजदूत सैयद हसन को इन सेबों का एक थाल दिया कि वह बतला सके कि एराक में इससे अच्छे सेब मिलते हैं। उसने कहा कि सारे पारस में इस्फहान के सेब पसंद किए जाते हैं और वे इन्हीं के ऐसे होते हैं।

गुरुवार, इलाही महीने आबाँ की पहली को हम गत सम्राट् के मकबरे की जियारत को गए और देहली पर, जो फरिश्तों का निवास स्थान है, विनय के सिर को रगड़कर एक सौ मुहर भेंट की। सभी बेगमों तथा हरमवालियों ने मकबरे की परिक्रमा करने का पुण्य उठाया, जो फरिश्तों के घूमने का स्थान है, और भेंटें दीं। शुक्रवार की संध्या को शेखों, अम्मामावालों, हाफिजों तथा गानेवालों का बड़ा भारी जलसा हुआ, जिसमें बहुत भारी संख्या में वे उपस्थित थे और वज्द तथा समा खूब किया। हमने प्रत्येक को उनकी कला तथा गुण के अनुसार खिलअत, फर्जी तथा शाल दिए। इस पवित्र मकबरे की इमारत बड़ी ऊँची बनी थी। इसी बार व्यय किया हुआ धन सार्थक हुआ और उससे हमें संतोष हुआ। पहले जैसा था उससे अब बहुत बढ़कर हो गया।

३ री को चार घड़ी दिन बीतने पर हमने इस पड़ाव से कूच किया और नदी से साढ़े पाँच कोस कूच कर चार घड़ी में दूसरे पड़ाव पर

---

१. पाठा० शुक्रदरा तथा शिनवरान।

पहुँचे। दोपहर के बाद हमने नाव त्याग दिया और सात तीतर पकड़े। दिन के अंत में हमने राजदूत सैयद हसन को बीस सहस्र रुपए, कमख्वाब की खिलअत जड़ाऊ जीगा सहित और एक हाथी देकर लौटने की छुट्टी दी तथा अपने भाई के लिए एक जड़ाऊ सुराही, जो मुर्गे के आकार की बनी थी और जिसमें साधारणतः हमारे पीने की मदिरा का अंश रखा जा सकता था, भेजी। आशा है कि वह अपने गंतव्य स्थान तक सुरक्षित पहुँच जायगी। हमने लश्कर खाँ को, जो आगरा की रक्षा तथा शासन पर नियत किया गया था, खिलअत, एक घोड़ा, एक हाथी, डंके तथा एक जड़ाऊ खंजर देकर जाने की छुट्टी दी। इकराम खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजरी १५०० सवार का कर दिया और मेवात सरकार का फौजदार नियत किया। यह इस्लाम खाँ का पुत्र है, जो शेख सलीम का पौत्र था जिनके शारीरिक गुणों तथा अच्छे स्वभाव एवं इस प्रसिद्ध वंश के संबंध का उल्लेख इन पृष्ठों में सचाई के साथ किया जा चुका है।

इसी समय हमने एक मनुष्य से, जिसकी बातें सचाई के प्रकाश से शोभायमान हैं, सुना कि जिस समय हम अजमेर में बीमार तथा निर्बल पड़े हुए थे और यह कुसमाचार बंगाल प्रांत तक नहीं पहुँचा था तभी एक दिन इस्लाम खाँ एकांत में बैठा हुआ था कि वह एकारक अचेत हो गया। जब उसकी चेतना लौटी तब उसने अपने एक विश्वासपात्र से कहा, जिसका नाम भीखन था, कि रहस्यपूर्ण संसार से उसे सूचना मिली है कि सम्राट् का पवित्र शरीर रुग्ण हो गया है और उसका उपाय केवल यही है कि उनके लिए वह अपनी अत्यंत प्रिय तथा बहुमूल्य वस्तु निछावर कर दे। उसने पहले विचार किया कि श्रद्धेय के सिर के लिए वह अपने पुत्र होशंग को निछावर कर दे परंतु इस विचार से कि वह अवस्था में बहुत छोटा है, जीवन का उसने कोई आनंद नहीं उठाया है और अपनी मन चाही इच्छाएँ पूरी नहीं की है उसने स्वयं अपने

को निछावर करने का निश्चय किया। उसने आशा की कि उसने हृत्तल से और जीवन की सत्यता के साथ ऐसा निश्चय किया है अतः खुदा के तख्त पर वह स्वीकृत हो जायगा। प्रार्थना की तीर स्वीकृति के निशाने पर पहुँच गई और उसने अपने को निर्बलता तथा रोग के कष्ट से मुक्त पाया। शोक कि रोग बढ़ता गया और वह ईश्वरी कृपा के पास पहुँच गया अर्थात् मर गया। उस श्रेष्ठतम वैद्य ने गुप्त औषधालय से इस प्रार्थी को पूर्ण स्वस्थता प्रदान की। यद्यपि गत सम्राट् शेखुल् इस्लाम के संतानों तथा पौत्र-पौत्रियों पर बहुत स्नेह रखते थे और प्रत्येक की योग्यता तथा रुचि के अनुसार सभी पर कृपाएँ की थीं तब भी जब इस प्रार्थी का राज्यकाल आया तब इन सब पर अधिकतर कृपाएँ हुईं जिससे हम उस श्रद्धेय शेख सलीम के प्रति अपना दायित्व पूरा करें। इनमें बहुतों को उच्च सर्दारी तथा सूबेदारी तक मिली जिनका उचित स्थान पर उल्लेख किया गया है।

इस ग्राम[1] में हिलाल खाँ खोजा ने, जो हमारी शाहजादगी के समय से हमारा एक सेवक है, एक सराय तथा बाग बनवाया है और उसने यहीं भेंट उपस्थित की। उसे सम्मानित करने के लिए हमने साधारण सा कुछ ले लिया। इस पड़ाव से चार मंजिल कूच कर वैभवशाली सेना ने मथुरा के बाहर पड़ाव डाला। गुरुवार ८ वीं को हम वृंदावन तथा वहाँ के मंदिरों को देखने गए। यद्यपि गत सम्राट् के राज्यकाल में राजपूत सर्दारों ने अपने प्रथानुसार बहुत से मंदिर बनवाए थे और बाहरी ओर बहुत अच्छी सजावट की थी पर उनके भीतर चमगीदड़ तथा फाख्तों ने इतने घोंसले बना रखे थे कि उनके दुर्गंध से वहाँ साँस लेना कठिन था। शैर—

---

१. ग्राम का नाम नहीं दिया गया है। रनकट्टा के पास का हिलालाबाद हो सकता है।

काफिर के कब्र के समान बाहर से बहुत ठीक है।
भीतर सम्माननीय तथा शक्तिमान परमेश्वर का क्रोध है।

इसी दिन मुखलिस खाँ आज्ञानुसार बंगाल से आकर सेना में उपस्थित हुआ। इसने एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए नज़र और एक लाल तथा एक जड़ाऊ तुर्रा भेंट दिया। शुक्रवार ६ वीं को छ लाख रुपयों का कोष आसीरगढ़ की रक्षा के लिए खानखानाँ सिपहसालार के पास भेजा गया।

पहले के पृष्ठों में गोसाईं जदरूप के संबंध में, जो उज्जैन में तपस्वी के रूप में रहता था, कुछ लिखा जा चुका है। इस समय उसने मथुरा में निवासस्थान बनाया था, जो हिंदुओं के पवित्रतम तीर्थों में से एक है, और जमुना नदी के किनारे सच्चे ईश्वर के ध्यान में लगा हुआ था। हम उसके सत्संग के महत्व को समझते थे इसलिए उससे मिलने गए और बहुत देर तक उसके सत्संग का आनंद उठाया, जहाँ कोई अजनबी उपस्थित नहीं था। सत्यतः उसका अस्तित्व हमारे लिए बड़े लाभ का है और कोई भी उससे बहुत लाभ उठा सकता तथा आनंदित हो सकता है।

शनिवार १० वीं को अहेरियों ने सूचना दी कि आस पास में एक शेर है जो प्रजा तथा यात्रियों को बहुत हानि पहुँचा रहा है। हमने तुरंत आज्ञा दी कि हाथियों को एकत्र कर जंगल को घेर लें। दिन बीतने पर हम भी बेगमों के साथ सवार होकर निकले। इस कारण कि हमने अपने हाथ से किसी जीव की हत्या न करने का व्रत लिया था, हमने नूरजहाँ बेगम को गोली चलाने की आज्ञा दी। शेर की गंध पाकर हाथी कभी आराम से खड़ा नहीं रह सकता और बराबर हिलता डोलता रहता है और अंबारी से गोली चलाना भी बहुत कठिन है, यहाँ तक कि मिर्ज़ा रुस्तम भी जो हमारे बाद निशाना मारने में

अद्वितीय है, हाथी पर से गोली निशाने पर मारने में कई अवसर पर दो तीन वार चूक गया था। परंतु नूरजहाँ ने पहली ही गोली ऐसी मारी कि शेर ढेर हो गया।

सोमवार १२ वीं को गोसाइँ जदरूप से मिलने की हमारी इच्छा वढ़ी और उसके आश्रम पर विना कहलाए जाकर उसका सत्संग किया। हम दोनों के बीच उत्तम वार्तालाप हुआ। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने उसे असाधारण शालीनता, उच्च कोटि का विवेक, उदात्त प्रकृति, तीव्र मेधाशक्ति, स्वाभाविक ज्ञान तथा सांसारिक मोह से रिक्त हृदय दिया है जिससे संसार तथा उसमें की सभी वस्तुओं से पीठ फेरकर वह एकांत में संतुष्ट बैठा रहता है और न उसे किसी वस्तु की इच्छा ही है। सांसरिक वस्तुओं में से इसने आधा गज सूती वस्त्र स्त्री के निकाव के समान चुन लिया है और पानी पीने के लिए मिट्टी का एक पात्र। यह जाड़े-गर्मी तथा वर्षा ऋतुओं में नंगा रहता है और सिर-पैर सब खुले रहते हैं। इसने एक बिल सी बना रखी है जिसमें बड़ी कठनाई से करवट बदल सकता है और उसका मार्ग ऐसा सँकरा है कि उसमें दूध-पीता बच्चा भी कठिनाई से डाला जा सकता है। 'सनाई' के ये दो तीन शैर उसके लिए वहुत उपयुक्त हैं। शैर—

लुकमान की कुटी बहुत पतली थी।
कंठ की नली, वंशी और चंग के सीने के समान॥
किसी मूर्ख ने उससे प्रश्न किया।
यह गृह क्या है–तीन फुट तथा एक बित्ता॥
ठंढी साँस लेकर तथा आँखों में आसू भरकर।
कहा कि मौत जिस पर है उसके लिए बहुत है॥

बुधवार १४ वीं को हम पुनः गोसाइँ से भेंट करने तथा विदा होने गए। निस्संदेह उससे बिदा होने का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर

पड़ा, जो सत्य की आकांक्षा रखता है। गुरुवार १५ वीं को कूच कर वृंदावन पहुँचे। इसी पड़ाव पर हमारे भाग्यवान पुत्र सुलतान पर्वेज़ ने इलाहाबाद जाने की छुट्टी ली और अपनी जागीर पर गया। हमारा विचार था कि वह हमारे साथ इस यात्रा पर चले पर इससे उसमें कष्ट के चिन्ह लक्षित हुए इसलिए हमें उसे बिदा करना ही पड़ा। हमने उसे एक तिपचाक़ घोड़ा, जौहरदार दांत की मूठ का खंजर, एक तलवार तथा एक खास ढाल उपहार में दिया। आशा है कि शीघ्र ही पुनः आवेगा और हमारे सामने उपस्थित होगा। खुसरो को कैद हुए बहुत दिन होगए थे इसलिए हमें उसे अधिक कैद रखना और अपने सामने उपस्थित होने के सौभाग्य से उसे वंचित रखना कृपा का अभाव ज्ञात हुआ।[1] अतः हमने उसे बुला भेजा और अभिवादन करने का अवसर दिया। एक बार पुनः उसके दोषों के चिह्न क्षमा के स्वच्छ जल से धुल गए और अप्रतिष्ठा तथा पातित्य की धूल उसके कपोल से पुछ गई। हमें आशा है कि हमें प्रसन्न रखने तथा सेवा करने का उसका अंश हो।

शुक्रवार १६ वीं को हमने मुखलिसखाँ को, जिसे हमने शाह पर्वेज का दीवान नियत करने के लिए बुला भेजा था, बंगाल में रहते जो मंसब उसका था उसे अर्थात् दो हजारी ७०० सवार का मंसब बहालकर जाने की छुट्टी दी। शनिवार को हम रुके रहे। इसी पड़ाव पर मीर-मीरान सदरजहाँ का पुत्र सैयद निज़ाम, जो कन्नौज का फौजदार था, सेवा में उपस्थित हुआ और उसने दो हाथी तथा कुछ बाज़ भेंट किए। हमने एक हाथी और एक जोड़ बाज़ स्वीकार किया। रविवार १८ वीं को कूच किया। इसी समय ईरान के शाह ने परी बेग मीर शिकार के

१— इकबाल नामा जहाँगीरी फारसी पृ० १२६-३० पर लिखा है कि गोस्वामी जदुरूप के कहने से खुसरू को छुटकारा मिला था।

हाथ एक अच्छे रंग का शाहीन पक्षी भेजा। एक दूसरा भी था जो खानआलम को दिया गया था। यह भी साथ ही भेजा गया था पर मार्ग में मर गया। मीर शिकार की असावधानी से यह शाहीन भी बिल्ली द्वारा नोचा खसोटा गया था। यह दरबार में लाया गया था पर एक सप्ताह से अधिक जीवित न रह सका। हम इसके सौंदर्य तथा रंग के संबंध में क्या लिख सकते हैं। इसके हर एक डैनों, पीठ तथा बगल में सुंदर काले चिह्न बने हुए थे। यह कुछ असाधारण सा था इससे हमने उस्ताद मंसूर को, जिसकी पदवी नासिरुल्असर थी, आज्ञा दी कि इसका चित्र बनाकर सुरक्षित रखे। मीर शिकार को दो सहस्र रुपए देकर बिदा कर दिया।

हमारे पिता के काल में एक सेर का तौल तीस दाम था। इसी समय के लगभग हमारे मन में आया कि हम उस नियम के विरुद्ध क्यों चलें। अच्छा होगा कि अब भी वह तीस दाम का रहे। एक दिन गोसाईं जदुरूप ने कहा कि वैदिक ग्रंथों में, जिन्हें उसके धर्म-गुरुओं ने लिखा है, सेर का तौल छत्तीस दाम दिया है। 'गुप्त संसार के मिलानों से आपकी आज्ञा भी वही हो गई है जो हमारी पुस्तकों में लिखा है इसलिए तौल छत्तीस दाम होना ही अच्छा होगा।' इस पर आज्ञा दे दी गई कि सारे साम्राज्य में छत्तीस दाम[1] का सेर कर दिया जाय।

१—दाम ताँबे का एक सिक्का होता था और चालीस दाम का एक तनका (रुपया)। ये मुस्लिम-काल के सिक्के थे। दाम की तौल पाँच टंक अर्थात् बीस माशे से कुछ अधिक होती थी। तत्कालीन रुपया भी पूरा एक तोला नहीं होता था। अतः उस समय का सेर वर्तमान काल से छोटा होता था। जदरूप का कथन यह नहीं था कि वैदिक काल में दाम प्रचलित था प्रत्युत् यह कि उस समय का सेर वर्तमान के छत्तीस दाम के बराबर होता था।

सोमवार १६ वीं को हमने कूच किया। राजा भाऊ सिंह को एक घोड़ा तथा खिलअत दिया गया और उसे दक्षिण की सेना के सहायतार्थ भेजा गया। इस दिन से बुधवार २८ वीं तक बराबर यात्रा होती रही। गुरुवार २६ वीं को आशियों का आगार दिल्ली सौभाग्य की सेना के वहाँ पहुँचने से शोभायमान हुई। पहले हम अपनी संतानों तथा बेगमों के साथ हुमायूँ के पवित्र मकबरे को देखने गए और वहाँ अपनी भेंट देकर हम फकीरों के शाह शेख निजामुद्दीन चिश्ती की पाक दरगाह की परिक्रमा करने गए। यहाँ से दिन का अंत होते होते हम महल में पहुँचे, जो सलीमगढ़ में ठीक किया गया था। शुक्रवार ३० वीं को हम ठहरे रहे। पालम पर्गने का अहेरस्थान आज्ञानुसार सुरक्षित रखा गया था अतः हमें सूचना दी गई कि वहाँ बहुत से हरिण इकट्ठे हो गए हैं। इस पर इलाही महीने आज़र की १६ को हम चीतों के साथ अहेर खेलने गए। अहेर के समय दिनांत होते होते सेब के बराबर ओले खूब गिरे जिससे हवा खूब ठंढी हो गई। इस दिन तीन हरिण पकड़े गए। रविवार २ री को छिआलीस हरिण और सोमवार ३ री को चौबीस हरिण चीतों द्वारा पकड़े गए। हमारे पुत्र शाहजहाँ ने गोली से दो हरिण मारे। मंगलवार ४ थी को पाँच तथा बुधवार ५ वीं को सत्ताईस हरिण पकड़े गए। गुरुवार ६ ठी को सैयद बहवा बुखारी ने, जो दिल्ली के शासन का अधिकारी था, तीन हाथी, अठारह घोड़े तथा अन्य वस्तुएँ भेंट कीं।[1] एक हाथी तथा अन्य वस्तुएँ स्वीकृत हुईं और बाकी उसे लौटा दिया। मेवात के कुछ पर्गनों का फौजदार हाशिम खोस्ती सेवा में उपस्थित हुआ। पालम

१—देखिए मुगल दरबार भा० ३ पृ० ४७४। सैयद भोदः को दीनदारखाँ की पदवी मिली थी। फारसी अक्षरों की कृपा से यह बहवा भी पढ़ा जा सकता है।

की सीमा के भीतर चीतों के साथ हम गुरुवार १३ वीं तक अहेर खेलने में लगे रहे। बारह दिनों में चार सौ छब्बीस हरिण पकड़े गए और हम दिल्ली लौट आए। पिता की सेवा में रहते समय हमने सुना था कि चीता से पकड़ा गया हरिण यदि छूट भी जाय और उसके पंजों से घायल भी न हुआ हो तौ भी उसके लिए जीता रहना संभव नहीं है। इस अहेर के समय इस बात की जाँच करने के लिए हमने कई सुंदर तथा सशक्त हरिणों को दाँत या पंजे के घाव लगने के पहले छुड़वा दिया और आज्ञा दी कि उन्हें हमारे सामने रखा करें तथा उनकी बड़ी सावधानी से रक्षा करें। एक दिन तथा रात्रि वे ठीक तथा प्रकृतस्थ रहे। दूसरे दिन उनमें कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़ने लगा, वे अपने पैर इस प्रकार चलाने लगे मानों वे मत्त हों और अकारण ही गिरने-उठने लगे। उन्हें तिरियाके फारूकी तथा अन्य उचित औषधियाँ दी गईं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और जब इस प्रकार एक प्रहर बीत गया तब वे मर गए।

इसी दिन शाह पर्वेज के सब से बड़े पुत्र की आगरे में मृत्यु हो जाने का कुसमाचार मिला। यह कुछ बड़ा हो चुका था और अपने पिता से बहुत हिला मिला तथा स्नेहपात्र था जिससे उसे बहुत ही अधिक शोक तथा दुःख हुआ। वह इतना घबड़ा गया था कि स्पष्ट ही निर्बलता उसमें दिखलाई पड़ने लगी। उसे सान्त्वना देने तथा प्रसन्न करने के लिए हमने उसे कृपापूर्ण पत्र लिखे और प्रेम तथा दयालुता की औषधि से उसके हृदय के घाव को ढँक दिया। हम ईश्वर से आशा रखते हैं कि वह उसे सान्त्वना तथा संतोष दे क्योंकि ऐसी दुखद घटनाओं में केवल सहनशीलता तथा विरक्ति ही दुःख को दूर कर सकती है।

शुक्रवार १४वीं को आकए आकयान की प्रार्थना पर हम उसके गृह पर गए। उसकी पहली सेवाओं तथा इस प्रसिद्ध वंश के प्रति उसके

परंपरागत स्नेह के कारण हमारे विवाहित होने पर गत सम्राट् ने इसे हमारी बहिन शाहजादा खानम से लेकर हमारे जनाने की निरीक्षिका नियत कर दिया था। उस समय से तेंतीस वर्ष तक वह हमारी सेवा में रही और हम उसका सम्मान करते हैं क्योंकि उसने सचाई से हमारी सेवा की। किसी भी यात्रा या चढ़ाई में वह अपनी इच्छा से हमारी सेवा में अनुपस्थित नहीं रही। जब उसने अपनी बढ़ती अवस्था देखी तब उसने प्रार्थना की कि उसे दिल्ली ही में रहने की आज्ञा दी जाय और वह अपने बचे हुए जीवन को हमारे लिए प्रार्थना करते हुए व्यतीत करे क्योंकि उसमें अब चलने-फिरने की शक्ति नहीं रह गई है तथा आने-जाने में उसे बहुत कष्ट होता है। उसके संबंध में एक सुंदर घटना यह भी है कि वह सम्राट् अकबर की अवस्था की है। संक्षेप में उसे आराम देने के विचार से हमने उसे दिल्ली में रहने की आज्ञा दे दी। यहाँ इसने एक बाग, एक सराय तथा एक मकबरा अपने लिए बनवाया था, जिस कार्य में वह कुछ दिनों से लगी हुई थी। इसी पुरानी सेविका को प्रसन्न करने के लिए हम उसके गृह पर गए और नगर के अध्यक्ष सैयद बहवा को दृढ़ आज्ञा दी कि वह इसकी इस प्रकार रक्षा करता रहे कि इसके दामन के किनारे पर कष्ट के मार्ग की धूल न पड़े।

इसी दिन राजा किशुनदास का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ३०० सवार का कर दिया। सैयद बहवः ने दिल्ली की फौजदारी के पद के कर्तव्यों को अच्छी प्रकार पूरा किया था और वहाँ की प्रजा उसके सुव्यवहार से बहुत प्रसन्न थी इसलिए प्राचीन नियमानुसार दिल्ली नगर की रक्षा तथा शासन और उसके चारो ओर की भूमि की फौजदारी उसे दी गई और उसका मंसब बढ़ाकर एक हजारी ६०० सवार का कर दिया गया। उसे एक हाथी प्रदान कर जाने की छुट्टी दी गई। शनिवार १५ वीं को हमने मिर्जा वली को दो हजारी १००० सवार

का मंसब देकर सम्मानित किया और उसे एक झंडा तथा एक हाथी देकर दक्षिण में नियत किया। शेख अब्दुल्हक देहलवी विरक्त तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति था और वह सेवा में उपस्थित हुआ। इसने हिंदुस्तान के शेखों की जीवनियों पर एक पुस्तक लिखी थी जिसे उसने हमारे सामने उपस्थित किया। इसने कुछ कठिनाइयाँ उठाई थीं और बहुत समय से दिल्ली ही में एकांतवास करता रहा तथा खुदा पर भरोसा रखते हुए फकीरी में बिताता रहा। यह बहुत योग्य पुरुष है और इसका सत्संग प्रसन्नता-विहीन नहीं है। उस पर बहुत ही कृपाएँ कर हमने उसे छुट्टी दे दी।

रविवार १६ वीं को हमने दिल्ली से कूच किया और शुक्रवार २१ वीं को कैराना पर्गना में पहुँचे। यह पर्गना मुकर्रबखाँ का देश है। इसकी जलवायु अच्छी तथा भूमि उपजाऊ है। मुकर्रबखाँ ने यहाँ इमारतें तथा उद्यान बनवाए हैं। हमने इसके उद्यान की बहुत प्रशंसा सुनी थी इसलिए हमें उसके देखने की बड़ी इच्छा थी। शनिवार २२ वीं को हम तथा बेगमों ने इस उद्यान में भ्रमण करके आनंद उठाया। वस्तुतः यह बहुत ही रमणीक तथा आनंददायक उद्यान है। पक्की दीवाल के भीतर एक सौ चालीस बीघे के घेरे में फूलों की क्यारियाँ लगाई गई हैं। बाग के बीच में एक तालाब बना हुआ है जिसकी लंबाई दो सौ बीस गज और चौड़ाई दो सौ गज है। तालाब के बीच में बाईस गज वर्ग का चबूतरा माहताबी बना हुआ है। गर्म या ठंढे जलवायु के ऐसे कोई भी वृक्ष न होंगे जो इसमें लगे न हों। ईरान के फलवाले वृक्षों में हमने हरे पिस्ते के वृक्ष तथा सुंदर सरो के ऐसे पौधे देखे, जैसा हमने कभी नहीं देखा था। हमने सरो के पौधों को गिनने के लिए आज्ञा दी तो तीन सौ निकले। तालाब के चारों ओर योग्य इमारतों का निर्माण आरंभ हो गया है तथा बन रहीं हैं।

सोमवार २४ वीं को खंजरखाँ का मंसब, जो अहमदनगर दुर्ग का अध्यक्ष है, बढ़ाकर ढाई हजारी १६०० सवार का कर दिया। बुधवार २६ वीं को कृपाओं के दाता ने हमारे पुत्र शाहजहाँ को आसफखाँ की पुत्री से एक पुत्र दिया। उसने एक सहस्र मुहरें भेंट दीं और उसका नाम रखने को कहा। हमने उसका नाम उम्मीदबख्श (आशाओं का दाता) रखा।[१] हम आशा करते हैं कि उसका आगमन साम्राज्य के लिए शुभ हो। गुरुवार २७ वीं को हम ठहरे रहे। इन कुछ दिनों में हम बाज से जर्ज़ नामक पक्षियों का अहेर खेलते रहे। हमने एक लाल जर्ज को तौलने का आदेश दिया, जो सवा दो जहाँगीरी सेर हुआ। एक चित्तीदार जर्ज दो सेर आध पाव का निकला। बड़ा शिखावाला जर्ज लाल जर्ज से सवाया हुआ। गुरुवार ५वीं दै को हमने अकबरपुर में नाव छोड़ दिया और विजयी सेना ने स्थल से कूच आरंभ किया। आगरा से इस पड़ाव तक, जो पर्गना बुड़िया से दो कोस के भीतर है, नदी से एक सौ तेईस कोस और स्थल से इकान्नवे कोस की दूरी है। यह दूरी हमने चौंतीस दिन कूच तथा सत्रह दिन ठहरकर पूरी की। इसके सिवा नगर छोड़ने में एक सप्ताह रुके रहे और बारह दिन पालम में अहेर खेलते रहे। इस प्रकार कुल सत्तर दिन लगे। इसी दिन जहाँगीर कुली खाँ बिहार से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए भेंट दिए। अंतिम गुरुवार से बुधवार ११ वीं तक हम प्रति दिन कूच करते रहे। गुरुवार १२ वीं को हम सरहिंद के उद्यान में भ्रमण करने गए। यह पुराने उद्यानों

१—सरहिंद में १२ वीं दै गुरुवार को यह पुत्र हुआ था। (इक़बाल नामा पृ० १३०) बादशाह नामा भा० १ पृ० ३९२ पर ११ मुहर्रम सन् १०२९ बुधवार (८ दिसं० १६१९ ई०) को सरहिंद में जन्म लिखा है। यह लड़का तीन वर्ष बाद मर गया।

में से एक है और इसमें पुराने वृक्ष भी हैं। इसमें पहले सी नव्यता नहीं रह गई है पर तब भी मूल्यवान है। ख्वाजा वैसी कृषि तथा स्थापत्य का ज्ञाता है इसीलिए उसे सरहिंद का करोड़ी नियत किया गया था कि इस उद्यान का उचित प्रबंध रखे। हमने पुनः इसे कड़ाई से आज्ञा दी कि पुराने नीरस वृक्षों को निकलवाकर नए वृक्ष लगवाए और क्यारियों की खूब सफाई करा दे। साथ ही पुरानी इमारतों की मरम्मत कराते हुए उचित स्थानों पर हम्माम आदि अन्य नई इमारतें भी बनवावे। इसी दिन दोस्त बेग का मंसब, जो अब्दुल्लाखाँ का एक सहायक सर्दार है, बढ़ा कर सात सदी ४० सवार का और वजीरखाँ के पुत्र मुजफ्फर हुसेन का छ सदी ३०० सवार का कर दिया। शेख कासिम को दक्षिण में काम पर भेज दिया। गुरुवार १६ वीं को अपने भाग्यवान पुत्र शाहजहाँ की प्रार्थना पर हम उसके गृह पर गए। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दिए हुए पुत्र के उपलक्ष में उसने भारी जलसा किया और भेंट भी उपस्थित का। इन वस्तुओं में एक छोटी चौड़ी तलवार थी जो वेनिस की बनी हुई थी और जिस की मूठ तथा बधन यूरोपीय काट के नीलमों की बनी हुई थी। वास्तव में यह बहुत सुंदर बनी थी। दूसरी भेंट एक हाथी था जिसे बगलाना के राजा ने बुर्हानपुर में हमारे पुत्र को दिया था। स्वीकृत भेंट की वस्तुएँ एक लाख तीस सहस्र रुपए मूल्य की थीं। अपनी माताओं तथा बड़ों को चालीस सहस्र रुपए मूल्य की भेंट दी।

इसी दिन सैयद बायजीद बुखारी ने, जो भक्कर का फौजदार था, एक राँग भेजा जिसे वह पहाड़ों में से बचपन में पकड़ लाया और पाला था। हम इससे प्रसन्न हुए। मारखोर तथा पहाड़ी भेड़ पाली हुई हमने बहुत देखी थी पर पालतू राँग नहीं देखी थी। हमने आज्ञा दिया कि वह बर्बरी बकरों के साथ रखी जाय जिससे समागम होने से बच्चे पैदा हों। निस्संदेह यह मारखोर या कुचकार से भिन्न है। सैयद

बायजीद का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ७०० सवार का कर दिया। सोमवार २३ वीं को मुकीमखाँ को खिलअत, एक घोड़ा, एक हाथी तथा एक जड़ाऊ खपवा देकर बिहार में नियत किया। रविवार २६ वीं को व्यास नदी के किनारे अपने पुत्र शाहजहाँ के लिए बड़ा जलसा किया। इसी दिन राजा विक्रमाजीत, जो काँगड़ा की चढ़ाई पर नियत था, आज्ञानुसार कुछ आवश्यकताओं को सूचित करने के लिए दरबार आया और सेवा में उपस्थित हुआ। सोमवार ३० वीं को हमारे पुत्र शाहजहाँ ने दस दिन की छुट्टी ली और नवनिर्मित इमारतों को देखने के लिए लाहौर गया। राजा विक्रमाजीत को एक खास खंजर, खिलअत तथा एक घोड़ा देकर काँगड़ा के घेरे पर भेज दिया। बुधवार २ री बहमन को हम कलानौर के उद्यान में उतरे। यहीं हमारे पिता राजगद्दी पर बैठे थे।

जब खानआलम के शीघ्र पहुँचने का समाचार दरबार पहुँचा तब हम प्रति दिन एक सेवक को उससे मिलने के लिए भेजते रहे। हमने उसे अपनी कृपाओं तथा दयाओं से लाद दिया और उसके मंसब तथा पदवी बढ़ाई। उसके नाम जो फर्मान भेजे जाते थे उसके सिर-नामे को हम तुरंत बनाए अवसर के अनुकूल मिसरों या शैरों से सुशोभित कर देते थे। एक बार हमने कुछ जहाँगीरी इत्र उसको भेजे थे और यह शैर हमारे जिह्वा पर आ गया—

तेरे लिए हमने अपना इत्र भेजा है।
कि तुझे शीघ्रतर अपने पास लिवा लावे॥

गुरुवार ३ री को कलानौर के उद्यान में खानआलम सेवा में उपस्थित हुआ। नज़र के रूप में वह एक सौ मुहर और एक सहस्र रुपए लाया और प्रार्थना की कि वह भेंट समय पर उपस्थित करेगा। हमारे भाई शाह अब्बास का राजदूत जंबील बेग शाही पत्र तथा उस

देश की अलभ्य वस्तुएँ, जो भेंट के रूप में आई हैं, लिवाकर आ रहा है। हमारे भाई ने खानआलम पर जो कृपाएँ की थीं उनका विवरण विस्तार से लिखने से हम पर अतिरंजना का दोष लगेगा। वह वार्तालाप में बराबर इसे खानआलम कहकर संबोधित करता था और अपने सामने से कभी दूर नहीं रखता था। यदि यह कभी स्वेच्छा से घर पर ही रह जाता तो वह बिना आडंबर इसके घर चला जाता तथा अधिक से अधिक कृपा दिखलाता। एक दिन फर्रुखाबाद में कमूरगाह अहेर हो रहा था तो उसने इसे तीर चलाने की आज्ञा दे दी। शालीनता की दृष्टि से यह एक धनुष तथा दो तीर लेकर गया। शाह ने अपनी तूणीर से पचास तीर इसे दिए। ऐसा हुआ कि पचास तीर निशाने पर बैठे और केवल दो तीर खाली गए। तब शाह ने अपने अनुगामियों को तीर चलाने की आज्ञा दी जिसमें बहुतों ने अच्छा निशाना मारा। इनमें से मुहम्मद यूसुफ करावल ने एक ऐसी तीर मारी कि दो जंगली सूअरों को भेद दिया और जो लोग पास में खड़े थे बड़ी प्रशंसा करने लगे। जिस समय खानआलम ने उससे छुट्टी ली उस समय उसने इसे बलात् गले लगा लिया तथा बहुत स्नेह प्रदर्शित किया। जब खानआलम नगर के बाहर आया तब वह इसके पड़ाव पर आया और क्षमा-याचना कर विदा दी। जो सुन्दर बहुमूल्य वस्तुएँ खानआलम लाया था वह उसके सौभाग्य के कारण उसके हाथ पड़ गया था। इनमें एक चित्र तैमूरलंग तथा तकतमिशखाँ के युद्ध का है जिसमें उसकी, उसके पुत्रों तथा बड़े सर्दारों की शबीहें चित्रित हैं, जो उस युद्ध में उसके साथ थे, और प्रत्येक के पास उनका नाम दिया है जिनका वह चित्र है। इस चित्र में दो सौ चालीस शबीहें हैं। चित्रकार ने अपना नाम खलील मिर्जा शाहरुखी लिखा है। यह चित्र पूर्ण तथा भव्य है और उस्ताद बिहजाद की कलम से समानता रखता है। यदि चित्रकार का नाम

लिखा न होता तो यह चित्र उसीका बनाया माना जाता। बिहज़ाद के समय के पहले की कृति होने के कारण ज्ञात होता है कि यह खलील मिर्ज़ा का शिष्य रहा हो या उसकी शैली ग्रहण कर ली हो। यह बहुमूल्य चित्र शाह इस्माइल के प्रसिद्ध पुस्तकालय से मिला हो या हमारे भाई शाह अब्बास को शाह तहमास्प से प्राप्त हुई हो। उसके पुस्तकाध्यक्ष सादिकी ने इसे चुरा लिया था और किसी के हाथ बेच दिया था। सयोग से यह चित्र खानआलम को इस्फहान में मिला। शाह ने जब सुना कि ऐसी अलभ्य वस्तु इसे मिल गई है तब देखने के बहाने इसे माँगा। खानआलम ने भी बड़ी चतुराई से कई बहाने किए पर जब उसने बराबर हठ किया तब इसने भेज दिया। शाह ने उसे देखते ही पहिचान लिया पर एक दिन अपने पास रखकर लौटा दिया और इसके माँगने का प्रयास भी नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि हमारी ऐसी अलभ्य वस्तुओं पर बड़ी रुचि रहती है। उसने खानआलम से कुल बातें बतालाकर वह चित्र उसे दे दिया।

जिस समय हमने खानआलम को फारस भेजा था उस समय एक चित्रकार बिशनदास (विष्णुदास) को भी भेजा था, जो शबीह उतारने में अद्वितीय था, कि शाह तथा उसके दरबार के मुख्य लोगों का चित्र बनाकर लेता आवे। उनमें से बहुतों का चित्र वह ले आया था और विशेष कर हमारे भाई शाह अब्बास का चित्र बहुत सुंदर बना लाया था। उसके किसी सेवक को भी जब वह चित्र दिखलाता तो वे यही कहते कि बहुत अच्छा खींचा गया है।

उसी दिन कासिम खाँ लाहौर के बख्शी तथा दीवान के साथ सेवा में उपस्थित हुआ। चित्रकार बिशनदास को एक हाथी पुरस्कार में दिया। कंधार के सहायकों में से एक बाबा ख्वाजा का मंसब एक हजारी ५५० सवार का कर दिया। मंगलवार ३ री को मदारुल् महाम

एतमादुद्दौला ने अपनी सेना ठीक की। इस कारण कि पंजाब का शासन उसके प्रतिनिधियों के अधीन था और हिंदुस्थान में बहुत सी जागीरें उसके पास थीं उसने पाँच सहस्र सवारों का निरीक्षण कराया। कश्मीर का विस्तार ऐसा नहीं था कि वहाँ की उपज वैभवशाली सेना तथा उसके अनुयायिओं के लिए, जो सदा साथ रहते हैं, काफी हो और विजयी तथा ऐश्वर्यवान शाही झंडों के पास पहुँचने का समाचार पाकर अन्न एवं शाक का निर्ख भी बहुत बढ़ गया था इसलिए प्रजा की सुविधा के लिए आज्ञा प्रचारित की गई कि जो सेवकगण बादशाह के साथ हों वे अपने अपने अनुयायियों का इस प्रकार प्रबंध करें कि जिनका साथ रहना नितांत आवश्यक हो उन्हें साथ रखकर बाकी को जागीरों पर भेज दें और इसी प्रकार यथासंभव पशुओं तथा साथ वालों की संख्या में कमी कर दें। गुरुवार १० वीं को हमारा भाग्यवान पुत्र शाहजहाँ लाहौर से लौट आया और सेवा में उपस्थित हुआ। जहाँगीर कुली खाँ को खिलअत, एक घोड़ा तथा एक हाथी देकर उसे अपने भाइयों तथा पुत्रों के साथ दक्षिण जाने की छुट्टी दी। इसी दिन तालिब आमुली को मलिकुश्शुअरा (कवियों का राजा) की पदवी तथा खिलअत दिया। इसका देश आमुल था और यह कुछ दिनों से एतमादुद्दौला के साथ रहता था। अपने समकालीनों में इसकी शैली सबसे बढ़कर थी इससे इसे दरबारी कवियों में भर्ती कर लिया गया। निम्नलिखित शेर इसके हैं (जिनका अर्थ दिया जाता है)

पुष्पोद्यान की तुम्हारी लूट से बहार संतुष्ट है।
क्योंकि तुम्हारे हाथ के फूल शाखों के फूल से अधिक तर हैं॥

अन्य

हमने ओठों को बोलने से इस प्रकार बंद कर लिया है कि तू कहे
कि उसके चेहरे पर मुख एक घाव है, अच्छा हुआ।

अन्य

आरंभ तथा अंत दोनों में प्रेम गान तथा प्रसन्नता है।
स्वादिष्ट मदिरा ताजा तथा बासी दोनों अवस्थाओं में ॥

अन्य

यदि हम आईना होते शरीर के बदले।
तो तुम्हें तुम्हीं को बिना पर्दा उठाए दिखला देते ॥
हमें दो ओंठ हैं, एक मदिरा पीने को।
दूसरा मत्तता के लिए याचना करने के लिए ॥

सोमवार १४ वीं को सुलतान क़िवाम के पुत्र हुसेनी ने एक रुबाई पढ़ी। अर्थ—

धूलि दामन की ओर से तुझ पर पड़ती है।
मुख का पानी सुलेमानी सुर्मा डालता है ॥
तेरे द्वार पर यदि मिट्टी की परीक्षा करें।
तो उससे शाहों के कपोल का पसीना निकले ॥

इसी समय मोतमिद खाँ ने एक रुबाई[1] पढ़ी, जो हमें बहुत पसंद आई और जिसे हमने अपनी साधारण पुस्तक में लिख लिया। रुबाई का अर्थ—

हमें अपनी विरह का विष चखाया, कि क्या हुआ ?
रक्तपात किया और हटा दिया, कि क्या हुआ ?
ऐ असावधान तेरे विरह के तलवार ने क्या किया इसे
तू हमारी मिट्टी को उड़ा और देख कि क्या हुआ ?

---

१. मोतमिद खाँ अपने इक़बालनामा पृ० १२३ पर लिखता है कि यह रुबाई बाबा तालिब इस्फहानी ही की है, जो तालिब आमुली से भिन्न है।

यह तालिब इस्फ़हानी है। यह सूफी तथा कलंदर होकर युवावस्था के आरंभ में कश्मीर गया और उस स्थान की सुंदरता तथा जलवायु की रमणीकता से ऐसा मुग्ध हुआ कि वहीं बस गया। कश्मीर पर अधिकार हो जाने के अनंतर यह गत सम्राट् की सेवा में चला आया और दरबारियों में भर्ती हो गया। इसकी अवस्था अब सौ वर्ष के लगभग है और यह अब अपने पुत्रों तथा संबंधियों के साथ कश्मीर में रहता है और साम्राज्य के लिए प्रार्थना करता रहता है।

हमें सूचना मिली कि लाहौर में मियाँ शेख मुहम्मद मीर नामक एक दर्वेश रहता है, जो जन्मतः सिंधी है और वाचाल, आचारवान, तपस्वी, सुस्वभाव वाला तथा ईश्वर में मग्न रहने वाला है। इसने ईश्वर पर विश्वास तथा विरक्ति के कोने में स्थान बनाया और दरिद्रता में धनी तथा संसार से स्वतंत्र था। हमारी सत्यान्वेषिका बुद्धि बिना उसके रह न सकी और उससे मिलने की इच्छा बढ़ी। हमारे लिए लाहौर जाना असंभव था अतः हमने उसे एक पत्र लिखा और उसमें अपने मन की बात स्पष्ट करके लिख दिया। उस दर्वेश ने वृद्धावस्था तथा निर्बलता के होते हुए भी आने का कष्ट उठाया। हम उसके पास बहुत देर तक अकेले बैठे और उसके साथ वार्तालाप करके बहुत प्रसन्न हुए। वास्तव में यह बहुत उच्चाशय व्यक्ति है और इस काल से लिए यह एक लाभ तथा आनन्ददायक अस्तित्व है। ईश्वरी कृपा के इस प्रार्थी ने उसके सत्संग से बहुत सी बातें जानीं और उससे बहुत-सी सत्य तथा धार्मिक ज्ञान की बातें सुनीं। यद्यपि हमनें बहुत चाहा कि उसे कुछ भेंट दें पर उसका आशय इससे बहुत ऊँचा है इसलिए हमने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। हमने उसे श्वेत मृग का एक चर्म दिया कि उस पर निमाज पढ़े और उसने तुरंत बिदाई ली तथा लाहौर चला गया।

बुधवार २३ वीं को दौलताबाद में हमारा पड़ाव पड़ा। एक माली की लड़की हमारे सामने उपस्थित की गई जिसे मोंछ तथा तलवार की मूठ बराबर घनी दाढ़ी थी। उसका स्वरूप पुरुष के समान था। उसके वक्ष पर भी बाल थे, स्तन नहीं थे। हमने उसके स्वरूप से समझ लिया कि इसे संतान नहीं हो सकती। हमने कुछ स्त्रियों को आज्ञा दी कि एकांत में ले जाकर जाँच करें कि वह हिंजड़ा तो नहीं है। उन लोगों ने जाँचा कि वह अन्य स्त्रियों से भिन्न नहीं है। हमने इसकी विचित्रता के कारण इस पुस्तक में इसका उल्लेख कर दिया है।

गुरुवार २४ वीं को बाकिर खाँ मुलतान से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसके पूर्व के पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है कि जलाल तारीकी का पुत्र अल्लहदाद ने विजयी सेना का त्याग कर नाश का मार्ग लिया है। अब उसने पश्चात्ताप कर बाकिर खाँ की मध्यस्थता में एतमादुद्दौला के द्वारा क्षमा याचना की है। अंतिम की प्रार्थना पर हमने आज्ञा दी कि यदि वह अपने कार्यों के लिए वास्तविक पश्चात्ताप करे और इस दरबार को शरण ले तो उसके दोष क्षमा कर दिए जायँ। इसी दिन बाकिर खाँ उसे दरबार में लिवा लाया और एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर उसके सब दोप क्षमा कर दिए गए। जम्मू के भूम्याधिकारी संग्राम को राजा की पदवी और एक हजारी ५०० सवार का मंसब दिया गया तथा एक खिलअत एवं एक हाथी देकर उसे सम्मानित किया। दोआबा के फौजदार गैरत खाँ का मंसब बढ़ाकर आठ सदी ५०० सवार का कर दिया। ख्वाजा कासिम को सात सदी २५० सवार का और कासिम कोका के पुत्र तहमतन वेग को पाँच सदी ३०० सवार का मंसब दिया। हमने खानआलम को एक खास हाथी साज सहित दिया। इसी पड़ाव से बाकिर खाँ को डेढ़ हजारी ५०० सवार का मंसब देकर सूबेदारी पर जाने के लिए छुट्टी दे दी।

सोमवार २८ वीं को झेलम नदी के किनारे करोही परगना में पड़ाव पड़ा। वह पहाड़ी स्थान निश्चित अहेर स्थल है इसलिए शिकारी लोग पहले ही से आ गए थे और जिरगा तैयार कर रखा था। बुधवार १ म इस्फंदारमुज को उन्होंने छ कोस के अहेरों को उसमें हाँक दिया। गुरुवार २ री को घेरे में लाए हुए एक सौ एक पहाड़ी भेड़ तथा हरिण पकड़े गए। महाबत खाँ को बहुत दिनों से हमारे सामने उपस्थित होने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ था इसलिए उसकी प्रार्थना पर हमने आज्ञा दी कि यदि वह उस प्रान्त के सुशासन से संतुष्ट हो और किसी घटना के कारण उसे किसी प्रकार असंतोष न हो तो वह सेनाओं को थानों पर छोड़ कर दरबार अकेला चला आवे। इसी दिन वह सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर नजर किया। खानआलम का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ३००० सवार का कर दिया। इसी समय नूरुद्दीनकुली के यहाँ से लिखित सूचना आई कि उसने पूँच के मार्ग को मरम्मत करा दी है और यथासंभव दर्रों की भी भूमि बराबर करा दी है परंतु कई दिन-रात्रि बर्फ के गिरने से कोतलों में तीन हाथ बर्फ जम गई है। बर्फ अब भी गिर रही है और यदि हम पहाड़ों के बाहर एक महीने ठहरे रहें तब इस मार्ग से जा सकते हैं नहीं तो बड़ी कठिनाई होगी। इस यात्रा का हमारा उद्देश्य वर्षा ऋतु तथा कलियों के खिलने को देखने का था और इस प्रकार ठहरने से हमारी उद्देश-पूर्ति न होती इसलिए आवश्यकतावश हमने बाग सोढ़ी और पाकली तथा दमतर के मार्ग से रवाने हुए। शुक्रवार ३ री को हमने झेलम पार किया यद्यपि उसमें कमर तक पानी था। उसका प्रवाह तीव्र था और लोग बड़ी कठिनाई से पार कर रहे थे इससे हमने आज्ञा दी कि सौ हाथी उतारों पर ले जाए जायँ और लोगों का सामान तथा जो लोग निर्बल हों वे सब उन पर पार करा दिये जायँ, जिससे जीव या सामान की हानि न हो।

उसी दिन ख्वाजाजहाँ की मृत्यु का समाचार आया। यह एक पुराना सेवक था और,जबसे हम शाहजादा थे उसी समय से था। यद्यपि इसने हमारी सेवा त्याग दी थी और कुछ दिन हमारे पिता की सेवा में रहा पर वह कहीं अन्यत्र नहीं चला गया था इसलिए हमारे मन में इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इस कारण अपनी राजगद्दी के अनंतर हमने उस पर ऐसी कृपा की जैसा उसने कभी संभव नहीं समझा था और उसे पाँच हजारी ३००० सवार का मंसब दिया। हम इस पुस्तक में उसकी एक मूर्खता का विवरण इस अवसर पर लिखते हैं। इसे बड़े कार्यों को करने का बहुत अनुभव हो गया था और इनमें विचित्र कौशल इसने प्राप्त कर लिया था। परंतु इसकी योग्यताएँ अध्यवसाय से प्राप्त हुई थीं और इसमें स्वाभाविक योग्यता का अभाव था तथा मानवों के शृंगार रूपी जो अन्य गुण होते हैं वे भी इसमें नहीं थे। इस यात्रा में यह हृद्‌रोग से ग्रस्त था और रोग तथा निर्बलता के रहते भी यह बराबर साथ रहा। जब इसकी निर्बलता अधिक बढ़ी तब इसे कलानौर लौट जाने की आज्ञा मिली और वहीं इसकी मृत्यु हो गई।

शनिवार ४ थी को रोहतास के दुर्ग में पड़ाव पड़ा। हमने कासिम खाँ को एक घोड़ा, एक तलवार और एक परम नर्म शाल देकर लाहौर जाने की छुट्टी दी। सड़क के पास में एक छोटा उद्यान था जिसमें हमने कलियों का निरीक्षण किया। इस पड़ाव पर तीहू[1] मिलते हैं, जिनका माँस तीतर से अच्छा होता है।

रविवार ५वीं को मिर्जा रुस्तम के पुत्र मिर्जा हसन का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया और और उसे दक्षिण

---

१. एक प्रकार का तीतर।

में नियुक्त किया। ख्वाजा अब्दुल्लतीफ मुख्य अहेरी को भी एक हज़ारी ४०० सवार का मंसब दिया। इसी स्थान में हमने एक फूल देखा जो भीतर श्वेत तथा बाहर लाल था जब उन्हीं में से कुछ भीतर से लाल और बाहर पीले थे। फारसी में इसे लालए-बीगान और हिंदी में थल कमल कहते हैं। थल का अर्थ भूमि है और कमल जल का पुष्प है अतः इसे थल कमल कहने लगे।

गुरुवार ९वीं को कश्मीर के प्रांताध्यक्ष दिलावर खाँ के यहाँ से शुभ सूचना आई कि किश्तवार पर अधिकार हो गया। इसका विवरण उसके दरबार आने पर वाकेआनवीसों के लेख से ज्ञात होगा। हमने उसके लिए कृपापूर्ण फर्मान खिलअत तथा एक जड़ाऊ खंजर के साथ भेजा और विजित प्रांत की एक वर्ष की आय उसे इस अच्छी सेवा के उपलक्ष में पुरस्कार में दे दिया। मंगलवार १४वीं को हम हसन अब्दाल में ठहरे। इस मार्ग की तथा इधर के पड़ावों की विशेष बातों का उल्लेख काबुल की चढ़ाई के अवसर पर हो चुका है अतः यहाँ नहीं दुहराया जाता। इस स्थान से कश्मीर तक का हाल एक-एक पड़ाव का अब लिखा जायगा, ईश्वर की इच्छा। जिस तिथि को नाव को त्याग कर हम अकबरपुर कुशलपूर्वक पहुँचे उस दिन से और वहाँ से हसन अब्दाल तक एक सौ अठहत्तर कोस है और इन्हें हमने उनहत्तर दिनों में पूरा किया, जिसमें अड़तालीस दिन कूच हुआ और इक्कीस दिन रुके रहे। इस स्थान पर जल से भरा एक सोता पत्थरों पर टकराता बहता है और एक बहुत सुंदर तालाब है इसलिए हम यहाँ दो दिन तक ठहरे। गुरुवार १६वीं को हमारे चांद्र तुलादान का उत्सव हुआ। ईश्वर के इस प्रार्थी का चांद्र गणना के अनुसार तिरपनवाँ वर्ष आरंभ हुआ। इस स्थान के आगे पहाड़, दर्रे, ऊँचा-नीचा आरंभ हो जाता है और सेना का उन्हें पार करना कठिन था इसलिए निश्चय हुआ कि मरियमुज्जमानी तथा अन्य बेगमें यहाँ कुछ दिन के लिए रुक

जायँ और आराम से धीरे-धीरे आवें। मदारुलमुल्क एतमादुद्दौला अलखाकानी, सादिक खाँ बख्शी तथा इरादत खाँ मीर सामान बयूतात तथा कारखानों के कर्मचारियों के साथ उनकी यात्रा की सुविधा करने के लिए नियत किए गए। इसी समय रुस्तम मिर्जा सफवी, खान-आजम तथा अन्य बहुत से सेवकों को पूँच के मार्ग से जाने की आज्ञा दी और शाही सवारी कुछ खास दरबारियों तथा आवश्यक सेवकों के साथ आगे बढ़ी। शुक्रवार १७ वीं को साढ़े तीन कोस चलकर हम सुलतानपुर ग्राम में ठहरे। इसी दिन राणा अमरसिंह की मृत्यु का समाचार आया, जो उदयपुर में परलोक सिधारा। उसके पौत्र जगतसिंह और पुत्र भीम को, जो हमारी सेवा में उपस्थित थे, खिलअतें दी गईं। राजा किशनदास को आज्ञा मिली कि वह कर्ण के लिए राणा की पदवी देने का कृपापूर्ण फर्मान, खिलअत, एक घोड़ा तथा एक खास हाथी लेकर जाय और शोक मनाने तथा प्रसन्नता प्रगट करने की रस्म पूरा कर आवे।

इस देश के लोगों से हमने सुना है कि जब वर्षा ऋतु नहीं होती तथा बादल या बिजली का चिन्ह भी नहीं रहता उस समय भी पहाड़ों से बादल की तरह गर्ज सुनाई देती है, जिसे वे केवल गर्ज कहते हैं। यह शब्द प्रत्येक वर्ष या कम से कम दूसरे वर्ष सुनाई पड़ती है। जब हम अपने पिता के साथ थे तब भी यह बात कई बार सुन चुके थे। यह वैचित्र्य से खाली नहीं है इसलिए लिख दिया, आगे ईश्वर जाने। शनिवार १८वीं को साढ़े चार कोस कूच कर हम संजो ग्राम में ठहरे। इस ग्राम से हम परगना हजारा कारनूग में पहुँचे। रविवार १९वीं को पौने चार कोस यात्रा कर हम नौशहरा ग्राम में ठहरे। यहाँ से हम धनतूर स्थान में गए। जहाँ तक दृष्टि जाती थी सर्वत्र हरियाली दिखलाई पड़ती थी जिनके बीच थल कँवल तथा अन्य फूल खिले हुए थे। यह अत्यंत सुंदर दृश्य था। सोमवार २०वीं को

साढ़े तीन कोस चलकर सल्हार ग्राम में पड़ाव पड़ा। महाबत खाँ ने साठ सहस्र रुपयों के मूल्य की वस्तुएँ रत्न तथा काम किए बर्तन आदि भेंट किए। इस देश में हमने अग्नि के समान लाल पुष्प देखा, जिसका रूप खत्मी फूल सा था तथा उससे छोटा था। अन्य प्रकार के भी बहुत से फूल एक स्थान पर खिले हुए थे, जो दूर से एक फूल के समान दिखलाई पड़ते थे। इसका तना जर्द आलू के वृक्ष के इतना होता है। पहाड़ियों की ढालों पर जंगली बनफ्शे के फूल खूब खिले हुए थे और मीठी सुगंध आ रही थी। ये अधिक पीले थे।

मंगलवार २१वीं को तीन कोस कूचकर मालकली ग्राम में ठहरे। इसी दिन हमने महाबत खाँ को एक खास हाथी, खिलअत तथा पोस्तीन देकर अपने कार्य पर बंगश जाने की आज्ञा दी। इसी दिन यात्रा के अंत तक पानी बरसता रहा। बुधवार २२वीं की संध्या को भी पानी बरसा। प्रातः काल बर्फ भी गिरा और अधिकतर मार्ग में ऐसी फिसलन[1] हो गई कि निर्बल पशु हर जगह गिरने लगे और वे उठ नहीं सकते थे। हमारे निजी पचीस हाथी सहायतार्थ भेजे गए।[2] बर्फ के कारण हमें दो दिन रुकना पड़ा। गुरुवार २३वीं को पकली का जमींदार सुलतान हुसेन अभिवादन करने के लिए सेवा में उपस्थित हुआ। पकली प्रांत में जाने का यह स्थान द्वार है। यह विचित्र बात है कि जब सम्राट् अकबर यहाँ आए तब इस पड़ाव पर बर्फ गिरा था और अब भी खूब बर्फ गिरा। बहुत वर्षों से यहाँ बर्फ नहीं गिरा था और वर्षा भी कम हुई थी। शुक्रवार २४वीं को चार कोस चलकर सवादनगर

---

१. वस्तः शब्द यहाँ दिया है जिसका अर्थ बंद होता है।

२. यहाँ 'तसद्दुक शुद' शब्द है जिसका अर्थ निछावर हुआ या कृपया दिया गया होता है पर इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे नष्ट हो गए।

ग्राम में पड़ाव पड़ा। इस मार्ग पर भी बहुत कीचड़ था। चारों ओर शफ्तालू तथा जर्दालू के वृक्ष खिले हुए थे और सनोबर के वृक्षों के दृश्य आँखों को प्रसन्न कर रहे थे। शनिवार २५वीं को साढ़े तीन कोस चलकर पकली के पास पड़ाव डाला गया। रविवार २६वीं को हम तीतर मारने गए और संध्या को सुलतान हुसेन की प्रार्थना पर उसके गृह गए तथा पड़ोसियों एवं बराबर वालों में उसका सम्मान बढ़ाया। सम्राट् अकबर भी उसके गृह पर गए थे। उसने अनेक प्रकार के घोड़े, खंजर, बाज तथा शाहीन भेंट किए। हमने घोड़े तथा खंजर उसे ही दे दिए। हमने बाजों तथा शाहीनों को तैयार रखने की और जिन पर छोड़ना था उन्हें दिखलाने की आज्ञा दी।

पाकली सरकार की लंबाई पैंतीस कोस और चौड़ाई पचीस कोस है। पूर्व में दो ओर कश्मीर की पहाड़ियाँ हैं, पश्चिम में अटक-बनारस, उत्तर में कटोर (कनोर) और दक्षिण में गक्खर प्रांत[1] है। जब तैमूरलंग हिन्दुस्तान विजय कर तूरान की राजधानी की ओर लौटा तब, कहा जाता है कि, उसने इस स्थान में इन आदमियों के झुंड को, जो साथ में थे, छोड़ गया था। वे अपने को क़ारलुग़ कहते हैं पर उस समय इनका सरदार कौन था यह नहीं जानते। वास्तव में वे शुद्ध लाहौरी हैं और वही भाषा बोलते हैं। दमतूर (धमतूर) के लोग भी ऐसा ही समझते हैं। हमारे पिता के समय शाहरुख नामक कोई व्यक्ति दमतूर का जमींदार था और अब उसका पुत्र बहादुर है। ये सब एक दूसरे से संबंधित हैं पर सीमाओं के संबंध में जमींदारों के समान निरंतर झगड़ा करते रहते हैं। ये बराबर राजभक्त रहे। सुलतान हुसेन का पिता सुलतान महमूद और शाहरुख दोनों ही जब हम शाहजादा थे

---

१. इकबाल नामा पृ० १२५ पर पूँछ की पहाड़ी लिखा है।

तब सेवा में उपस्थित हुए थे। यद्यपि सुलतान हुसेन सत्तर वर्ष का वृद्ध है पर देखने में उसकी शक्ति कहीं क्षीण नहीं हुई है और वह घुड़सवारी भी कर सकता है तथा यथासंभव कर्मशील भी है। इस देश में रोटी तथा चावल का एक प्रकार का पेय बनाते हैं जिसे सिर या सर कहते हैं। यह बूजा से कड़ा होता है और जितना पुराना हो उतना ही अच्छा होता है। यह सिर इनका मुख्य भोजन है। यें इसे बड़े पात्रों में भर कर बंद कर देते हैं और दो तीन वर्ष तक घर में पड़ा रहने देते हैं। तब ये उसके ऊपर का जमा छूँट निकाल देते हैं और इसे अच्छी कहते हैं। अच्छी को दस वर्ष तक रख सकते हैं और उनके अनुसार जितनी पुरानी होगी उतनी ही स्वादिष्ट होगी पर कम से कम एक वर्ष बाद वे इसे काम में लाने लगते हैं। सुलतान महमूद इस सार का प्याले पर प्याला चढ़ाया करता था यहाँ तक कि एक गगरा पी जाता था। सुलतान हुसेन की भी इस पर विशेष रुचि है और उसके सबसे स्वादिष्ट अंश को हमारे लिए ले आया। हमने इसमें से कुछ पान किया। इसे हम पहले भी पी चुके हैं। इसके नशीलापन का प्रभाव विशेष नहीं है पर स्वाद तेज है। ऐसा ज्ञात होता है कि वे नशा बढ़ाने को इसमें भाँग भी मिलाते हैं। मदिरा के अभाव में आवश्यकता पड़ने पर यह काम दे सकता है। फलों में शफ्तालू, जर्दालू तथा अमरूद होता है। ये लगाए नहीं जाते प्रत्युत् आप ही से लग जाते हैं अतः ये फल कड़े तथा निस्वादु होते हैं। इनके फूल बड़े सुंदर होते हैं। इनके मकान लकड़ी के होते हैं और कश्मीरी चाल पर बने होते हैं। इनके यहाँ बाज, घोड़े, ऊँट, पशु, भैंस होती हैं तथा बकरी एवं मुर्गी बहुत होती हैं। इनके खच्चर छोटे होते हैं और अधिक बोझ नहीं ले सकते। हमें सूचना दी गई कि कुछ पड़ाव तक आगे इतना अन्न उत्पन्न नहीं होता कि शाही कैम्प की आवश्यकता पूरी कर सके इसलिए हमने आज्ञा दी कि वे छोटा अग्गल का पड़ाव आगे ले जायँ, जो हमारी

आवश्यकता के लिए काफी हो और कारखाने भी आवश्यक ही ले जाए जायँ। हाथियों की संख्या भी कम कर दी जाय और तीन-चार दिन का सामान भी साथ ले लिया जाय। यह भी आज्ञा थी कि खास शाही सेवक साथ लिए जायँ और बाकी लोग कुछ पड़ाव पीछे रह कर ख्वाजा अबुल्‌हसन बख्शी की अधीनता में आवें। इन सब सावधानियों तथा निर्देशों के होते भी यह आवश्यक हुआ कि सात सौ अगल पड़ाव यथा कारखानों के साथ जायँ।

सुलतान हुसेन का मंसब चार सदी ३०० सवार का था जिसे हमने बढ़ाकर छ सदी ३५० सवार का कर दिया और उसे खिलअत, जड़ाऊ खंजर यथा एक हाथी दिया। बहादुर दमतूरी बंगश की सेना में एक सहायक नियत था। उसका मंसब बढ़ाकर दो सदी १०० सवार का कर दिया। बुधवार २७ वीं को सवा पाँच कोस चलकर तथा नैनसुख[1] नदी पुलों से पार कर हमने एक स्थान पर पड़ाव डाला। यह नैनसुख नदी उत्तर से आती है और वारू[2] पहाड़ियों से निकलती है, जो बदख्शाँ और तिब्बत के बीच में हैं। इस स्थान पर यह नदी दो शाखाओं में बँट जाती है और इसी कारण लोगों ने आज्ञानुसार विजयी सेना को पार करने के लिए लकड़ी के दो पुल बनाए, जिनमें एक अठारह हाथ तथा दूसरा चौदह हाथ लंबा था और दोनों पाँच हाथ चौड़ा था। इनके बनाने का इस देश का यह ढंग है कि वे बड़े ताड़ के पेड़ को पानी के ऊपर डाल देते हैं और उनके दोनों सिरों को चट्टानों से बाँध कर दृढ़ कर देते हैं और इन पर लकड़ी के मोटे पल्ले बिछाकर काँटों तथा रस्सियों से ठोंक-बाँध कर मजबूत बना देते हैं। ये पुल थोड़ी मरम्मत कर देने से वर्षों चलते हैं। संक्षेप में हाथियों को

१—इस नदी को अब कुन्हार कहते हैं।

२—इकबाल नामा पृ० १३६ पर वाज़ूह लिखा है।

पानी में हलाकर पार कर दिया और धुड़ सवार तथा पैदल पुलों से पार उतर गए। सुलतान महमूद इस नदी को नैनसुख कहता था, जिसका अर्थ नेत्र को सुखदायक है। गुरुवार ३० वीं को साढ़े तीन कोस चल कर कृष्णगंगा के तट पर पड़ाव डाला गया। इस सड़क पर बड़ा ऊँचा एक कोतल है, जिसकी चढ़ाई एक कोस और उतराई डेढ़ कोस थी। इसे ये लोग पिम दरंग कहते हैं। इस नामकरण का यह कारण है कि कश्मीरी भाषा में रूई को पिम कहते हैं। कश्मीर के शासकों ने यहाँ एक दारोगा नियत किया था जो रूई के बोझों पर कर उगाहा करता था और इस कर उगाहने में देर होती ही थी इसलिए पिम दरंग नाम पड़ गया। दर्रा पार करने पर एक अति सुंदर तथा स्वच्छ जल का प्रपात् मिला। जल के किनारे वृक्षों की छाया में अपने नियमित प्याले पान कर हम संध्या को ठहरने के स्थान में गए। इस नदी पर एक पुराना पुल चौअन गज लंबा तथा डेढ़ गज चौड़ा था, जिससे पैदल सेना पर उतर गई। आज्ञानुसार इसी के समदूरी पर एक नया पुल तिरपन गज लंबा तथा तीन गज चौड़ा बनाया गया। यहाँ जल गहरा तथा प्रवाह तीव्र था इसलिए हाथियों को बिना बोझ के जल से पार उतारा गया तथा सवार और पैदल पुल से पार गए। हमारे पिता की आज्ञा से पत्थर तथा चूने की एक बड़ी दृढ़ सराय नदी के तट पर उभड़ते टीले पर बनाई गई थी। नौरोज के एक दिन पहले हमने मोतमिद खाँ को आगे भेजा कि वह सिंहासन रखने तथा नौरोज के जलसे के लिए स्थान चुन रखे। यह स्थान ऊँचा तथा अच्छा हो। संयोग से पुल पार करते ही उसे जल पर ही एक पहाड़ी मिल गई जो सुंदर तथा हरी भरी थी। इसके ऊपर एक समतल स्थान पचास हाथ का था, जिसे कह सकते हैं कि भाग्य के शासकों ने ऐसे ही अवसर के लिए बना रखा था। उक्त कर्मचारी ने इसी पहाड़ी पर नौरोज के जलसे का कुल आवश्यक प्रबंध कर रखा था, जो बहुत पसंद किया गया। इसके

लिए मोतमिद खाँ की बड़ी प्रशंसा की गई। कृष्णगंगा दक्षिण[1] से बहकर उत्तर की ओर आती है। झेलम पूर्व से आती है और कृष्णगंगा से मिलकर उत्तर की ओर प्रवाहित होती है।

पंद्रहवाँ जलूसी वर्ष

संसार की आशाओं को पूर्ण करनेवाले सूर्य का सौभाग्य - स्थान मेष राशि में गमन शुक्रवार १५ रबीउस्सानी सन् १०२६ हि० को साढ़े बारह घड़ी या पाँच घंटे व्यतीत होने पर हुआ और अल्ला के तख्त के इस प्रार्थी के राज्य का पंद्रहवाँ वर्ष आनंद तथा सौभाग्य के साथ आरंभ हुआ। शनिवार २ री फरवरदीन को साढ़े चार कोस चल कर हम बक्कर ग्राम में ठहरे। इस मार्ग में कोतल नहीं थे पर पथरीला बहुत था। हमने यहाँ मोर, काले तीतर तथा लंगूर देखे जैसे गर्मसीर प्रान्त में होते हैं। यह स्पष्ट है कि ये ठंढे देश में भी रह सकते हैं। इस स्थान से कश्मीर तक यह मार्ग झेलम नदी के किनारे किनारे चला गया है। दोनों ओर इसके पहाड़ हैं और घाटी के तल में पानी प्रबल वेग से उबलता खड़बड़ाता बहता है। हाथी कितना भी बड़ा हो इसमें दृढ़ता से पैर नहीं जमा सकता प्रत्युत् तुरंत लुढ़क पड़ता और बह जाता है। इस नदी में पानी के कुत्ते (ऊदबिलाव)

१—यह शुद्ध नहीं है।

भी होते हैं। शनिवार ३ री को साढ़े चार कोस चलकर मुसरान में ठहरे। शुक्रवार की संध्या को परगना बारःमूला के व्यापारीगण सेवा में उपस्थित हुए। हमने बारःमूला नाम पड़ने का कारण पूछा तो उन्होंने बतालाया कि हिंदी भाषा में जंगली सूअर को वाराह कहते हैं और मूला स्थान है अर्थात् वाराह का स्थान। हिंदुओं के धर्म में लिखे अवतारों में एक वाराह अवतार है। वाराह मूला बराबर प्रयोग में आते आते बारा मूला हो गया। सोमवार ४ थी को ढाई कोस चल कर भूलबास में रुके। लोगों के कहने पर कि ये पहाड़ियाँ बड़ी सँकरी तथा दुर्गम हैं और मनुष्यों के झुंड बड़ी कठिनाई से इन्हें पार कर सकते हैं हमने मोतमिद खाँ को आज्ञा दी कि सिवा आसफ खाँ के और कोई शाही सवारी के साथ न जाने पावे और कैंप एक पड़ाव पीछे रहे। संयोग से इस आज्ञा के दिए जाने के पहले ही उसने अपना खेमा आगे भेज दिया था। इसके अनंतर उसने अपने आदमियों को लिख भेजा कि उसे उसके संबंध में ऐसी आज्ञा मिली है अतः वे जहाँ पहुँच गए हों वहीं ठहरे रहें। इसके भाइयों ने भूलबास के कोतल की तली में यह बात सुनी इसलिए वहीं अपने खेमे लगाए। जब शाही भीड़भाड़ वहाँ पहुँची तब पानी तथा बर्फ गिरने लगा। सड़क का कुछ अंश पार करते न करते ये खेमे दिखलाई पड़ गए। इसे दैवी सहायता समझ कर हम तथा बेगमें इन्हीं में उतर पड़े और वर्षा तथा बर्फ से सुरक्षित रहे। उसके भाइयों ने आदेशानुसार उसे बुलाने को किसी को शीघ्रता से भेजा। जब उसने यह समाचार सुना उस समय हाथियाँ तथा अग्गल का पड़ाव कोतल के सिरे पर पहुँच गया था और सारा मार्ग रुक गया था। घोड़े पर सवार होकर जाना असंभव था अतः वह मारे उत्साह के कुछ न समझ पाकर कि क्या करें पैदल ही चल दिया और दो घंटे में ढाई कोस चल कर सेवा में उपस्थित हुआ। उसने अवसर के अनुकूल यह शेर पढ़ा—

तेरा ध्यान अर्द्धरात्रि में आया, जान दिया और लज्जित हुआ।

दर्वेश को बड़ी लज्जा आई जब अतिथि एकाएक अर्थात् बिना सूचना के आ गया।

उसने अपनी शक्ति के अनुसार नगद, सामान, जीवित पशु तथा माँस भेंट के रूप में दिया। हमने सब उसे लौटा दिया और कहा कि सांसारिक वस्तुओं का हम लोगों की साहसिक दृष्टि में क्या मूल्य है? हम लोग बड़े मूल्य पर राजभक्ति रूपी रत्न खरीदते हैं। उसके सौभाग्य से ऐसा अवसर आ गया कि हमारे ऐसा बादशाह अपनी बेगमों के साथ उसके निवासस्थान में आराम व सुख से एक दिन तथा रात्रि रहे। इससे उसकी उसके बराबरवालों तथा साथियों में प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जायगी। मंगलवार ५ वीं को दो कोस चलकर कहाई (कहताई) ग्राम में ठहरे। हमने अपना पहिरा हुआ वस्त्र मोतसिद खाँ को दिया और उसका मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १५०० सवार का कर दिया। इस पड़ाव से हम कश्मीर की सीमा में आ गए। इसी भूलबास कोतल में यूसुफ खाँ कश्मीरी के पुत्र याकूब से राजा मानसिंह के पिता राजा भगवान दास की अधीनता में हमारे पिता की विजयी सेना से युद्ध हुआ था।

इसी दिन समाचार मिला कि रुस्तम मिर्जा का पुत्र सुहराब खाँ झेलम नदी में डूब गया। विवरण इस प्रकार है कि वह आज्ञानुसार एक पड़ाव पीछे आ रहा था और मार्ग में उसकी इच्छा हुई कि नदी में स्नान कर लें यद्यपि गर्म पानी तैयार था। लोगों ने उसे मना किया और कहा कि जब हवा इतनी ठंडी है तब ऐसे प्रबल प्रवाह वाली तथा भयानक नदी में जिसमें युद्धीय मस्त हाथी भी लुढ़क जाते हैं, अनावश्यक रूप में स्नान करने जाना सावधानी के विरुद्ध है। वह इन शब्दों को सुन कर भी नहीं रुका और इस कारण कि उसका अनिवार्य

निश्चित समय आ पहुँचा था वह चला गया। हठ, यौवन के उन्माद, असतर्कता तथा अपनी तैरने की शक्ति पर विश्वास के कारण, जिसमें वह अद्वितीय था, उसने और भी स्नान करने का दृढ़ विचार कर लिया तथा एक सेवक और एक मल्लाह के साथ, जो दोनों तैराक थे, नदी के किनारे के एक चट्टान पर चढ़कर नदी में कूद पड़ा। ज्योंही वह पानी में गिरा त्यों ही लहरों की तीव्रता ने उसे उठने नहीं दिया कि वह तैर सके। गिरना तथा डूबना एक ही था और सुहराब खाँ तथा सेवक दोनों ने उस नाश के बाढ़ में अपनी जीवन-सामग्री को नष्ट कर दिया। मल्लाह सैकड़ों कठिनाई के अनंतर अपनी जीवन-नौका किनारे पर ले आया। मिर्जा रुस्तम का इस पुत्र पर अधिक स्नेह था। यह कुसमाचार उसने पूँच मार्ग में सुना और सहनशीलता के वस्त्र को फाड़कर बहुत घबड़ाया। अपने कुल अनुयायियों के साथ शोक के वस्त्र पहिर कर नगे सिर तथा पैरों से हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। उसकी माता के शोक का क्या हाल लिखें। यद्यपि मिर्जाको और भी पुत्र थे पर इस पर विशेष स्नेह था। इसकी अवस्था छब्बीस वर्ष की थी। बंदूक से निशाना मारने में यह अपने पिता का योग्य शिष्य था और हाथी की सवारी में भी कुशल था। गुजरात की यात्रा में इसे बहुधा हमारे निजी हाथी के आगे सवार होने की आज्ञा दी जाती थी। युद्ध कला में भी यह बहुत कुशल था।

बुधवार ६ ठी को तीन कोस चलकर रिवांद ग्राम में पहुँचे। गुरुवार ७ वीं को कुवरमत कोतल पार कर, जो इस मार्ग में सबसे कठिन है, बचहा ग्राम में पहुँचे। इस पड़ाव की दूरी साढ़े चार कोस थी। कुवरमत कोतल दुर्गम होते हुए इस मार्ग का अंतिम कोतल था। शुक्रवार ८ वीं को चार कोस चलकर बलतार ग्राम में ठहरे। इस मार्ग में कोई कोतल नहीं था। यह मार्ग चौड़ा था और वन के वन

तथा चमन के चमन खिले हुए थे। नरगिस, बनफ्शा तथा विचित्र प्रकार के अनेक अन्य पुष्प, जो विशेष रूप से इसी देश के हैं, खिले हुए देखने में आए। इन फूलों में हमने एक अद्भुत फूल देखा। इसमें नारंगी के से पाँच छ फूल उलटे खिले हुए थे. जिनके बीच से हरी पत्तियाँ निकली हुई थीं, जैसी अनन्नास की होती हैं। इसे बूलानीक फूल कहते हैं। एक दूसरा फूल 'पूय' के समान होता है, जिसके चारों ओर जूही के रूप-रंग के समान छोटे-छोटे फूल होते हैं और उसमें कोई नीला तथा कोई लाल होता है जिनके मध्य में पीली नोकें रहती हैं। ये देखने में बड़े सुंदर होते हैं और इन्हें लदर पुष्प कहते हैं। ये साधारण पुष्प माने जाते हैं। पीले रंग के अर्गवाँ फूल भी मार्ग में बहुत मिलते हैं। कश्मीर के फूल असंख्य तथा अपरिमित हैं, कहाँ तक लिखा जाय ? कितने का हम वर्णन कर सकते हैं ? हमने केवल कुछ असाधारण पुष्पों का उल्लेख कर दिया है। इस मार्ग पर एक जल-प्रपात् है, ऊँचा तथा सुंदर। यह ऊँचे स्थान से नीचे गिरता है। रास्ते में इतना सुंदर और कोई प्रपात् नहीं मिला था। हम कुछ ठहर कर एक ऊँचे स्थान से इसे देखते रहे। शनिवार ६ वीं को हमने पौने पाँच कोस कूच किया और बारः मूला में उतर गए। यह कश्मीर की प्रसिद्ध बस्तियोंमें से एक है और नगर से चौदह कोस दूर झेलम नदी के किनारे पर है। कश्मीर के बहुत से व्यापारी यहाँ आकर बस गए हैं और मकान, मस्जिद आदि बनवाकर यहाँ सुखपूर्वक रहते हैं। आज्ञानुसार समृद्धिपूर्ण पड़ाव के पहुँचने के पहले सजी हुई नावें यहाँ तैयार थीं। सोमवार को दो प्रहर दिन चढ़े श्रीनगर में प्रवेश करने की साइत थी इसलिए वहाँ पहुँचते ही ठहरने का विचार छोड़कर हम नावों में बेगमों के साथ जा बैठे और आगे बढ़े। रविवार १० वीं को दो प्रहर दिन बीतने पर हम शहाबुद्दीनपुर पहुँच गए। इसी दिन कश्मीर का शासक दिलावर खाँ काकिर किश्तवार से आकर

सेवा में उपस्थित हुआ। इसे हर प्रकार की बादशाही कृपाओं से सम्मानित किया गया। इसने पसंद किए जाने योग्य सेवा-कार्य किया था और आशा की जाती है कि वह महान् दाता हमारे सभी सेवकों के कपोलों को ऐसी प्रतिष्ठा से प्रकाशमान करेगा।

किश्तवार कश्मीर के दक्षिण में है। कश्मीर के नगर से किश्तवार की मुख्य नगरी काह तक साठ कोस की दूरी है। इलाही महीने शहरिवर की १० वीं को हमारे १४ वें जलूसी वर्ष में दिलावर खाँ दस सहस्र सवार तथा पैदल सेना के साथ किश्तवार विजय करने गया। वह अपने पुत्र हसन को गिर्द अली मीर बहर के साथ नगर की रक्षा तथा राज्य के शासन पर छोड़ गया। गौहर चक तथा ऐबा चक कश्मीर पर अपना पैत्रिक स्वत्व प्रकट कर किश्तवार में उपद्रव खड़ा कर रहे तथा नाश एवं विद्रोह की घाटी में घूम रहे थे इसलिए इसने अपने एक भाई हैबत को कुछ सेना के साथ देसू में सतर्कता के के लिए छोड़ा, जो पीर पंजाल के कोतल के पास है, और अपनी सेना को बाँट कर वह स्वयं एक सेना के साथ संगीनपुर के मार्ग से फुर्ती से बढ़ा। इसने एक सेना अन्य मार्ग से अपने पुत्र जलाल के अधीन नसरुल्ला अरब, अली मलिक कश्मीरी तथा अन्य जहाँगीरी सेवकों के एक झुण्ड के साथ भेजा। एक दूसरी सेना अपने बड़े पुत्र जमाल के अधीन उत्साही युवकों के साथ अपनी सेना के अग्गल रूप में आगे भेजा। साथ ही दो सेनाएँ इसने अपने दाहिनी तथा बाईं ओर रख-कर कूच किया। इस मार्ग पर घोड़े नहीं जा सकते थे इसलिए कुछ को सावधानी की दृष्टि से साथ रखकर अपने सिपाहियों के कुल घोड़े छोड़ कर कश्मीर भेज दिया। युवकों ने कर्तव्य की कमरपेटी बाँधी और पैदल ही पहाड़ों पर चढ़ गए। इस्लाम की सेना के गाजी लोग अभागे काफिरों के साथ स्थान स्थान पर लड़ते हुए नरकोट तक पहुँच गए, जो शत्रु के दुर्गों में से एक है। यहीं जलाल तथा जमाल की सेनाएँ,

जो दो मार्ग से भेजी गई थीं, मिल गईं और शत्रु सामना करने में अपने को असमर्थ पाकर भाग गए। ये वीरगण बहुत सी ऊँचाई तथा निचाई पार कर दृढ़ता तथा साहस से धावा करते हुए मारू नदी तक पहुँच गए। उस नदी के किनारे पर घोर युद्ध हुआ और इस्लाम की सेना के गाजियों ने बड़ी वीरता दिखलाई। अभागा ऐबा चक बहुत से मनुष्यों के साथ मारा गया। ऐबा के मारे जाने पर राजा निश्शक्त हो साहस छोड़कर भागा और पुल से नदी पार कर दूसरी ओर भंडर कोट में चला गया। वीरों ने शीघ्रता से पीछा कर पुल पार करना चाहा पर उसके इस सिरे पर घोर युद्ध हुआ और बहुत के युवक मारे गए। इस प्रकार बीस दिन तथा रात्रि पुल पार करने के लिए युद्ध होता रहा और अभागे काफिरों ने बराबर धावा कर इन्हें हटाने का प्रयत्न किया। अंत में दिलावर खाँ भी थाने जमाकर तथा कमसरियट का प्रबंध कर अपनी सेना के साथ आ पहुँचा। राजा ने कपट तथा बहाने से अपने वकीलों को दिलावर खाँ के पास भेजा तथा प्रार्थना की कि वह अपने भाई को भेंट के साथ दरबार भेज सके, जिससे जब उसके दोष क्षमा हो जायँ और वह भय तथा कष्ट से निश्चिंत हो जाय तब वह भी संसार के शरणस्थल दरबार में उपस्थित हो। दिलावर खाँने उसके कपटपूर्ण वचनों पर ध्यान नहीं दिया और ऐसे सुअवसर को हाथ से जाने नहीं दिया। इसने राजा के वकीलों को उनके ध्येय पूरे होने के पहले ही विदा कर दिया और पुल पार करने का पूरा प्रयत्न करने लगा। इसका सबसे बड़ा पुत्र जमाल वीरता तथा साहस के समुद्र के घड़ियालों के साथ नदी के ऊपर की ओर गया और बड़ी वीरता से नदी तैर करके, जो बढ़ी हुई थी, पार चला गया और शत्रुओं से घोर युद्ध करने लगा। दरबार के राजभक्त सैनिकों ने दूसरी ओर से आक्रमण कर दिया और उन अभागे शत्रुओं को घेर लिया। जब उन सब ने देखा कि अब वे युद्ध करने में असमर्थ हो रहे

हैं तब पुल के तख्तों को तोड़ कर वे भाग गए। विजयी सैनिकों ने पुल को पुनः दृढ़ किया और बाकी कुल सेना को पार उतार दिया। दिलावर खाँ ने कुल सेना भंडरकोट के सामने एकत्र की। उक्त नदी से चिनाब तक, जो इन अभागे मनुष्यों का दृढ़ स्थान है तीर की दो उड़ान की दूरी है और चिनाब नदी के किनारे पर एक ऊँचा पहाड़ है। यहाँ नदी पार करना अत्यंत कठिन है और लोगों के पैदल आने-जाने के लिए यह उपाय किया है कि दो दृढ़ रस्सों में एक एक हाथ के तख्ते बाँध देते हैं और फिर एक सिरे को पहाड़ की चोटी पर दृढ़ता से कस देते हैं तथा दूसरे सिरे को नदी के उस पार। इसके अनंतर दो रस्सियों को उससे एक गज ऊँचे पर बाँधते हैं जिससे यात्री लोग तख्ते पर पैर रखते समय ऊपरी रस्सियों को पकड़ कर पहाड़ की चोटी पर से नीचे उतरें तथा नदी को पार करें। इस पुल को उस पर्वतस्थली के लोग झंपा कहते हैं। शत्रु ने जहाँ भी झंपा बाँधने योग्य स्थान देखा वहाँ वहाँ बंदूकची, धनुर्धारी तथा सैनिकों को नियत कर अपने को सुरक्षित समझ लिया। दिलावर ने जाल्हा (घंडैल) बनवाकर रात्रि में अस्सी वीर युवकों को उन पर चढ़ाकर उस पार भेजा। प्रवाह अत्यंत तीव्र था जिससे ये जाल्हे नाश की बाढ़ में पड़ गए और अड़सठ वीर अनस्तित्व के समुद्र में डूब गए तथा 'शहीद' हो गए। दस किसी प्रकार तैर कर लौट आए और दो उस पार पहुँचकर काफिरों के हाथ पकड़े गए। संक्षेप में चार महीने दस दिन तक दिलावर खाँ साहस के साथ भंडरकोट के सामने रुककर नदी पार करने का प्रयत्न करता रहा परंतु उसकी इच्छा के निशाने पर उपाय का तीर नहीं बैठा। अंत में एक जमींदार ने एक स्थान बतलाया जिसका शत्रु को पता नहीं था। वहाँ अर्द्धरात्रि में झंपा लगाकर दिलावर खाँ का पुत्र जलाल शाही सेवकों तथा अफगानों के एक झुंड के साथ, जो लगभग दो सौ के थे, कुशल-पूर्वक पार उतर गया। प्रातःकाल होते ही उसने असतर्क राजा पर

आक्रमण कर विजय का करना बजा दिया। जो थोड़े मनुष्य राजा के आस पास थे वे घबड़ाए हुए अर्द्ध निद्रित अवस्था में बाहर निकल आए और उनमें से अधिकतर रक्तपिपासु तलवारों के घाट उतार दिए गए तथा बचे हुए उस वधस्थल से भाग गए। इस उपद्रव में एक सैनिक ने राजा के पास पहुँचकर चाहा कि उसे तलवार से समाप्त कर दे कि उसने चिल्ला कर कहा कि हम राजा हैं, हमें दिलावर खाँ के पास लिवा चलो। लोगों ने उसे घेर लिया और कैद कर लिया। राजा के पकड़े जाने पर उसके सभी आदमी भाग गए। दिलावर खाँ ने जब यह विजय समाचार सुना तब अल्ला मियाँ को धन्यवाद देते सिज्दा किया और विजयी सेना के साथ नदी पार कर मंदल बद्र पहुँचा, जो उस देश की राजधानी है। यह नदी से तीन कोस पर है। जम्मू के राजा संग्राम की पुत्री तथा राजा बासू के पुत्र सूरजमल की पुत्री इसके गृह में थीं। संग्राम की पुत्री से इसे कई पुत्र थे। इस विजय के पहले इसने अपने परिवार को दूरदर्शिता के कारण राजा जसवाल तथा जमींदारों की रक्षा में भेज दिया था। जब विजयी सेना वहाँ पहुँच गई तब दिलावर खाँ आज्ञानुसार राजा को लेकर दरबार चला आया और नसरुल्ला अरब को कुछ पैदल तथा सवार सेना के साथ वहाँ की रक्षा के लिए छोड़ गया।

किश्तवार प्रांत में गेहूँ, ज्वार, मसूर तथा दाल बहुत होती है पर कश्मीर से भिन्न होकर यहाँ धान बहुत कम होता है। यहाँ का केशर कश्मीर से अच्छा होता है। प्रायः एक सौ बाज तथा जुर्रें (प्रति वर्ष) पकड़े जाते हैं। नारंगी, संतरे तथा तरबूज बहुत अच्छे होते हैं। यहाँ के खरबूजे कश्मीर ही के से होते हैं। अन्य मेवे अंगूर, शफ्तालू, जर्द-आलू व अमरूद खट्टे तथा छोटे होते हैं। यदि इनकी खेती की जाय तो अच्छे हो सकते हैं। सनहसी नामक एक ताँबे का सिक्का कश्मीर के

राजाओं के समय का चला आता है जिसका डेढ़ सिक्का एक रुपए के बराबर होता है। व्यापार कार्य में पंद्रह सनहसी या दस रुपए को बादशाही मुहर के बराबर मानते हैं। ये हिन्दुस्तानी दो सेर को एक मन कहते हैं। यहाँ की चाल है कि राजा कृपिकर नहीं लेता प्रत्युत् घर पीछे छ सनसही या चार रुपए लेता है। सारा केशर वेतन रूप में राजपूत सेना तथा सात सौ बंदूकचियों पर व्यय होता है जो पुराने सेवक चले आते हैं। जब केशर बेंचा जाता है तो क्रेताओं से चार रुपए मन अर्थात् दो रुपये सेर मूल्य लेते हैं। राजा की आय अधिकतर दंड से थी और छोटे छोटे दोष पर भी बहुत धन कर में लेता था। जो लोग धनी या सुखी अवस्था में होते तो राजा किसी न किसी बहाने उसका सर्वस्व ले लेता था। राजा की आय सब मदों से एक लाख रुपए थी। युद्ध काल में यह छ सात सहस्र पैदल सेना तैयार कर लेता था पर घोड़े बहुत कम थे। राजा तथा उसके सरदारों के पास मिलाकर पचास घोड़े थे। हमने पुरस्कार में दिलावर खाँ को एक वर्ष की आय दी। जहाँगीरी नियमों के अनुसार अनुमान से इसकी जागीर एक हजारी १००० सवार के मंसब के बराबर थी। जब मुख्य दीवानगण जागीरदारों के वेतन का हिसाब करते हैं तो ठीक यही रकम आती है।

सोमवार ११ वीं को दो प्रहर चार घड़ी दिन बीतने पर बादशाही सवारी शुभ साइत में प्रसन्नतापूर्वक डल झील के किनारे पर नई निर्मित इमारत में उतरी। हमारे पिता की आज्ञा से पत्थर तथा चूने से एक दृढ़ दुर्ग यहाँ बना था पर यह पूरा नहीं हुआ था और एक अंश बचा हुआ था। आशा है कि शीघ्र ही पूरा हो जायगा। जिस मार्ग से हम हसन अब्दाल से कश्मीर आए उससे दोनों में पचहत्तर कोस की दूरी है और इसे उन्नीस कूच तथा ठहराव में अर्थात् पचीस दिनों में पूरा किया था। आगरे से कश्मीर तक एक सौ अड़सठ दिनों

में तीन सौ छिअत्तर कोस की दूरी एक सौ दो दिन की यात्रा तथा तिरसठ दिन ठहरने में पूरी हुई। भूमि तथा साधारण मार्ग से तीन सौ साढ़े चार कोस की दूरी है।

मंगलवार १२ वीं को दिलावर खाँ आज्ञानुसार किश्तवार के राजा को सिकड़ी में बाँधे हुए दरबार ले आया और अभिवादन किया। राजा में उच्चता का अभाव नहीं है। इसका पहिरावा हिंदुस्थानी है और यह हिंदी तथा कश्मीरी दोनों भाषाएँ जानता है। इस प्रांत के अन्य भूम्याधिकारियों से भिन्न यह नागरिक सा ज्ञात होता है। हमने आज्ञा दी कि उसके इतने दोषों के होते भी यदि वह अपने पुत्रों को दरबार बुला लेगा तो उसे कैद से छुटकारा मिल जायगा और इस अक्षय साम्राज्य की छाया में सुखपूर्वक रह सकेगा नहीं तो हिंदुस्थान के किसी दुर्ग में कैद कर दिया जायगा। उसने प्रार्थना की कि वह अपने लोगों परिवार तथा पुत्रों को बुला लेगा, सेवा में पुत्रों को उपस्थित करेगा और हमारी कृपा की आशा रखेगा।

अब हम कश्मीर का विवरण तथा वहाँ की विशेषताओं का वर्णन लिखेंगे। कश्मीर चौथे इकलीम में है। इसका अक्षांश (लंबाई) विषुवत् रेखा से पैंतीस डिगरी है और चौड़ाई श्वेत (शुभ) टापुओं से १०५ डिगरी पर है। प्राचीन काल में यह देश राजाओं के अधिकार में था। उनकी पीढ़ियाँ चार सहस्र वर्ष तक चलती रहीं। इनका विवरण तथा नामों की सूची राजः तरंग (राजतरंगिणी) में दी हुई है जिसे हमारे पिता की आज्ञा से हिंदवी संस्कृत से फारसी में अनूदित किया गया है। सन् ७१२ हि० में कश्मीर इस्लाम धर्म के द्वारा प्रकाशित हुआ। बत्तीस मुसल्मानों ने दो सौ बयासी वर्ष तक राज्य किया जब कि सन् ९९४ हि० में हमारे पिता ने इस प्रांत को विजय कर लिया। उस दिन से अब तक पैंतीस वर्ष हुए कि यह

साम्राज्य के अधिकार में है। कश्मीर बुलियास (फूलबास) से कंबर बर तक छप्पन कोस जहाँगीरी लंबा है और चौड़ाई में सत्ताईस कोस से अधिक या दस कोस से कम नहीं है। शेख अबुल्फजल ने अकबरनामा में केवल कल्पना से लिखा है कि कश्मीर की लंबाई किशन गंगा से कंबर बर तक एक सौ बीस कोस है और चौड़ाई दस से पचीस कोस तक है। हमने विशेष सावधानी की दृष्टि से कई विश्वसनीय तथा बुद्धिमान मनुष्यों को लंबाई-चौड़ाई को रस्सियों से माप करने का आदेश दिया। इसका फल यह निकला कि शेख ने जो एक सौ बीस कोस लिखा है उसके बदले सड़सठ आया। यह माना हुआ है कि किसी देश की सीमा वहीं तक है जहाँ तक लोग उस देश की भाषा बोलते हैं इससे बुलियास ही कश्मीर की सीमा है, जो किशनगंगा से ग्यारह कोस इसी ओर है। इस प्रकार हिसाब से कश्मीर की लंबाई छप्पन कोस ही रह जाती है। चौड़ाई में भी दो कोस से अधिक की भिन्नता नहीं मिली। हमारे राज्यकाल में उसी गज का प्रयोग है जो पिता के समय का चलाया हुआ है। अर्थात् एक कोस पाँच सहस्र गज होता है और एक गज दो शरई गजके बराबर है तथा प्रत्येक शरई गज चौबीस अंगुल का होता है। जहाँ कहीं कोस या गज का उल्लेख हुआ है वहाँ इसी कोस तथा गज से तात्पर्य है। नगर का नाम श्रीनगर है और झेलम नदी इसके बीच से बहती है। इसका स्रोत वीरनाग कहलाता है, जो चौदह कोस दक्षिण है। हमारी आज्ञा से सोते के पास एक इमारत तथा उद्यान निर्मित हुआ है। नगर में पत्थर तथा लकड़ी के बड़े दृढ़ चार पुल बने हुए हैं, जिनसे लोग आते जाते हैं। इस देश की भाषा में पुल को कदल कहते हैं। नगर में एक बड़ी ऊँची मस्जिद है, जो सुलतान सिकंदर के चिन्ह स्वरूप है और सन् ७९५ हि० में बनी थी। कुछ दिनों के बाद यह जल गई और तब पुनः सुलतान हुसेन ने इसे बनवाया। यह पूरा नहीं हुआ था कि

उसके जीवन का प्रासाद ढह गया। सन् ६०६ हि० में सुलतान हुसेन के वजीर इब्राहीम माकरी ने इसे सुंदरता के साथ पूर्ण किया। उस समय से अब तक एक सौ बीस साल से बना हुआ है। मेहराब से पूर्वी दीवाल तक एक सौ पैंतालीस गज है और चौड़ाई एक सौ चौआलीस गज है। इसमें चार ताक हैं और चारों ओर दालान तथा खंभे हैं। संक्षेप में कश्मीर के शासकों का इससे अच्छा स्मारक और कोई नहीं है। मीर सैयद अली हमदानी कुछ दिन इस नगर में रहा था। इसके स्मारक में यहाँ एक खानकाह है। नगर के पास दो झीलें हैं जो वर्ष भर जल से भरी रहती हैं। इनके जल का स्वाद कभी बिगड़ता नहीं। मनुष्यों के आने-जाने और अन्न-ईंधन आदि को लाने के लिए नावें काम में आती हैं। नगर तथा पर्गनों में सत्तावन सौ नावें तथा चौहत्तर सौ नाविक हैं। कश्मीर प्रांत में अड़तीस पर्गने हैं। यह दो भाग में विभक्त है और नदी के ऊपरी भाग को मराज कहते हैं तथा नीचे के भाग को कमराज। यहाँ भूमि का कर या व्यापार के लेन-देन में सोना-चाँदी देने की प्रथा नहीं है, केवल कुछ सायर कर में दिया जाता है। ये वस्तुओं का मूल्य चावल के खरवारों से करते हैं और हर खरवार तीन मन आठ सेर का वर्तमान तौल से होता है। कश्मीरियों में से दो सेर का एक मन होता है और चार मन अर्थात् आठ सेर का एक तर्क होता है। कश्मीर की आय तीस लाख तिरसठ हजार पचास खरवार और ग्यारह तर्क है। यह नगदी में सात करोड़ छिआलीस लाख सत्तर सहस्र दाम होता है। साधारणतः यहाँ साढ़े आठ सहस्र सवार रहते हैं। कश्मीर आने जाने के मार्ग गिने हुए हैं और उनमें भीमबर तथा पकली के मार्ग सबसे अच्छे हैं। यद्यपि भीमबर का मार्ग छोटा है पर वसंत ऋतु में वहाँ पहुँचनेवालों के लिए पकली ही का मार्ग है क्योंकि अन्य मार्ग उस ऋतु में बर्फ से ढँके रहते हैं। यदि कोई कश्मीर की प्रशंसा

में कुछ लिखना चाहे तो बहुत से ग्रंथ लिख डालने पड़ेंगे। इस कारण अत्यंत संक्षेप में लिखा जाता है।

कश्मीर एक उद्यान है जहाँ सदा वसंत ऋतु रहती है या बादशाहों के निवासस्थानों का लौह दुर्ग है। यह सुखदायक पुष्पोद्यान है और दर्वेशों के लिए एकांतवास करने की कुटीर है। इसकी रमणीक फुलवारी तथा आकर्षक जल प्रपात अवर्णनीय हैं। यहाँ बहते हुए सोते तथा छोटे छोटे जलाशय असंख्य हैं। जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक सर्वत्र हरियाला तथा बहता पानी दिखलाई देता है। लाल गुलाब, वनफ्शा तथा नरगिस आप ही आप लगा करते हैं। अनेक प्रकार के फूल तथा मीठे सुगंधित पौधे इतने होते हैं कि गिने नहीं जा सकते। हृदय को आकर्षित करनेवाले वसंत में पहाड़ तथा जंगल कलियों से भर जाते हैं। फाटक, दीवाल, आँगन तथा छत सभी जलसों को सजानेवाले लालः फूलों से प्रकाशमान हो उठते हैं। इन सब वस्तुओं का या विस्तृत मैदानों का या सुगंधि देनेवाले तिप्रतिया का क्या वर्णन किया जाय। मसनवी के कुछ शैर —

उद्यान की सुन्दरियाँ सुशोभित हुईं।
प्रत्येक के मुख दीपक से प्रकाशमान हो गए॥
कलियाँ छिलके के नीचे सुगंधित हो गईं।
प्रिय की बाहों की सुगंधित तावीज़ के समान॥
प्रातः उठनेवाली बुलबुल की चहचहाहट से।
मदिरा पीनेवालों की इच्छा तीव्र होती है॥
हर जलाशय में बत्तक अपनी चोंच डाले पानी पी रहा है।
मानों सोने की कतरनी से रेशमी वस्त्रों को काट रहा है॥
बिछावन फूलों तथा हरियाली से उद्यान बन रहा है।
पुष्परूपी दीपक वायु से प्रकाशमान हो गया है॥

वनफ्शा ने जुल्फ के सिरों को टेढ़ा कर दिया है।
कलियों के हृदय में गाँठें दृढ़ हो गईं ॥

मेवों के वृक्षों के फूलों में सबसे अच्छे बादाम तथा शफ्तालू के होते हैं। पार्वत्य स्थानों के बाहर फूलों के आने का आरंभ इस्फंदारमुज की पहली तारीख से होता है। कश्मीर प्रांत में १ली फरवरदीन से और नगर के उद्यानों में इसी महीने की ९वीं या १०वीं से फूल आने लगते हैं। इस फूलने का अंत नीली चमेली के विकसित होने के काल में होता है। अपने श्रद्धेय पिता के साथ हम बहुधा केसर की क्यारियों में घूमे हैं और शरत् ऋतु की शोभा देखी है। ईश्वर को धन्यवाद है कि इस बार हम वर्षा की तरुण शोभा देख रहे हैं। शरत् ऋतु की शोभा का वर्णन उचित स्थान पर किया जायगा। कश्मीर के मकान सभी लकड़ी के होते हैं और दो, तीन तथा चार खंड के होते हैं। वे छतों को मिट्टी से पाटकर लालः चौगाशी के पौधे लगा देते हैं और प्रतिवर्ष ये वसंत में फूलते हैं तथा बड़े सुंदर होते हैं। यह चाल कश्मीरियों में निराली है। इस वर्ष राजमहल के छोटे उद्यान तथा मस्जिद के छत पर लालः खूब विकसित हुए थे। उद्यानों में नीली चमेली भी बहुत हैं और श्वेत चमेली की सुगंधि बड़ी मीठी होती है। चंदनी रंग की भी चमेली होती है जिसकी सुगंधि भी बड़ी मीठी होती है। यह खास कश्मीर ही का फूल है। लाल गुलाब कई प्रकार के दिखलाई पड़े, जिनमें से एक में अच्छी सुगंधि है और दूसरी में चंदनी रंग होते बड़ी हलकी सुगंधि है, जो लाल गुलाब ही की सी है। इसका डंठल भी उसी के ऐसा होता है। सौसन दो प्रकार का होता है—एक जो उद्यानों में होता है वह बहुत बड़ा तथा हरे रंग का होता है और दूसरा जंगली है जिसमें रंग कम होता है पर सुगंधि अधिक होती है। जाफरी पुष्प बड़ा तथा बहुत होता है और इसका पौधा

आदमी की ऊँचाई का होता है। परंतु कुछ वर्ष बीतने पर इसके बड़े होने एवं फूल लगने पर इसमें एक प्रकार की कृमि पैदा हो जाती है जो इस पर जाला सा बुन डालती है जिससे यह नष्ट हो जाता है तथा तना तक सूख जाता है। इस वर्ष भी ऐसा ही हुआ। कश्मीर के प्रांत में जितने प्रकार के फूल दिखाई देते हैं वे संख्या के बाहर हैं। नादिरुल् असर उस्ताद मंसूर ने जिनका चित्र खींचा है वे एक सौ से संख्या में अधिक हैं। हमारे पिता के समय के पहले शाह आलू यहाँ नहीं होता था। मुहम्मद कुली अफशार ने काबुल से लाकर इसे लगाया और अब दस पंद्रह वृक्ष फल देने लगे हैं। जर्द आलू के भी कुछ पेड़ यहाँ लगाए गए हैं। उक्त अफशार ही ने इस देश में इन्हें लगाया और अब ये बहुत हो गए हैं। वास्तव में कश्मीर का जर्द आलू अच्छा होता है। काबुल के शहरआरा बाग में मिर्जाई नाम का एक वृक्ष था कि उससे अच्छा फल वहाँ हमने नहीं खाया था पर कश्मीर में वैसे वृक्ष शाही उद्यान में कई हैं। यहाँ नाशपाती बहुत अच्छी होती है, काबुल तथा बदख्शाँ की नाशपातियों से अच्छी और समरकंदी के समान होती है। कश्मीर के सेब तो बहुत प्रसिद्ध हैं। अमरूद साधारण होते हैं। अंगूर होते बहुत हैं पर बहुधा खट्टे तथा छोटे होते हैं। अनार यहाँ के वैसे नहीं होते। तरबूज बहुत अच्छे मिलते हैं तथा खरबूजे बहुत ही सुकुमार, मीठे तथा शिकन पड़े होते हैं पर बहुधा ऐसा होता है कि जब वे पकने पर आते हैं तब उनमें कीड़े पड़ जाते हैं जिससे वे खराब हो जाते हैं। यदि किसी प्रकार सुरक्षित रहकर कीड़ों से बच गए तो बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं। शहतूत यहाँ नहीं होता पर तूत के जंगल के जंगल होते हैं। तूत के वृक्ष की जड़ से अंगूर की लता ऊपर चढ़ी रहती है। यहाँ की तूत खाने योग्य नहीं होती सिवा उन कुछ वृक्षों के जो उद्यानों में लगे हुए हैं। तूत की पत्तियाँ करमपिल्लों (रेशम के कीड़ों) के खाने में काम

आती हैं। ये गिलगिट तथा तिब्बत से करमथिल्लों के अंडे लाते हैं। मदिरा तथा सिरके बहुत होते हैं। मदिरा खट्टी तथा हलकी होती है, जिसें कश्मीरी भाषा में मिस कहते हैं। कई प्याले लेने पर तब कुछ गर्मी आती है। सिरके से ये अनेक प्रकार के अँचार बनाते हैं। कश्मीर के लहसुन अच्छे होते हैं इसलिए इसका अँचार बहुत अच्छा होता है। यहाँ अन्न सब प्रकार का होता है सिवा चना के। यदि चना बोते है तो पहले वर्ष अच्छा होता है, दूसरे वर्ष दाने छोटे हो जाते हैं और तीसरे वर्ष तो नहीं के समान हो जाता है। चावल सब अन्नों से अधिक होता है, एक मन में तीन भाग चावल और एक भाग में अन्य सब अन्न होते हैं। कश्मीर का प्रधान खाद्य चावल ही है पर यह छोटा होता है। सूखा हुआ नर्म ही रहते इसे पकाते हैं और छोड़ देते हैं। ठंढा होने पर इसे खाते हैं तथा इसे भत्तः (भात) कहते हैं। गर्म खाना यहाँ की प्रथा नहीं है, यहाँ तक कि कम हैसियत के आदमी भात का कुछ भाग रात्रि में रख देते हैं और दूसरे दिन खाते हैं। निमक हिंदुस्तान से आता है पर भात में निमक डालने की चाल नहीं है। शाक को पानी में उबाल कर थोड़ा निमक स्वाद बदलने के लिए इसमें डाल देते हैं और तब भात के साथ खाते हैं। जो इसे स्वादिष्ट बनाना चाहते हैं वे शाक में अखरोट का तेल छोड़ देते हैं। अखरोट का तेल शीघ्र ही कड़ुआ तथा अस्वादिष्ट हो जाता है। ये घी का भी उपयोग करते हैं पर ताजा मक्खन से निकाला हुआ डालते हैं। इसको ये सदा पवित्र कश्मीरी भाषा में कहते हैं। यहाँ की वायु ठंढी तथा नम है इसलिए तीन चार दिन रहने पर इसमें परिवर्तन हो जाता है। यहाँ भैंस नहीं होती और जो होती हैं वे बड़ी छोटी होती हैं। गेहूँ छोटा होता है और गूदा कम होता है। रोटी खाने को प्रथा यहाँ नहीं है। यहाँ की भेड़ों को दुम नहीं होती, जो विद्वानों के गृह हिंदुस्थान में हिंदू कहलाता

है। इसका माँस स्वादहीन नहीं होता। मुर्गी, बत्तक, मुर्गाबी सोना आदि बहुत होती हैं। मछलियाँ भी हर प्रकार की काँटेदार या बिना काँटे की मिलती हैं पर छोटी तथा निस्वादु होती हैं। यहाँ के पश्मीने प्रसिद्ध हैं। यहाँ के स्त्री-पुरुष ऊनी कुर्ते पहिरते हैं और उन्हें पट्टू कहते हैं। यदि वे कुर्ते नहीं पहिरते तो समझते हैं कि हवा का उन पर असर होता है, यहाँ तक कि इनके बिना भोजन नहीं पचता। कश्मीरी शाल जिन्हें हमारे पिता ने परमनर्म नाम दिया था, बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ इनकी प्रशंसा लिखने की आवश्यकता नहीं है। दूसरे प्रकार के ऊनी वस्त्र को तहरमः कहते हैं, जो शाल से मोटा पर नर्म होता है। एक अन्य दर्मः कहलाता है, जिसे फर्श पर बिछाते हैं। शाल के सिवा अन्य सब तिब्बत में अच्छी बनती हैं। यहाँ तक कि तिब्बत से ऊन लाकर ये यहाँ शाल बनाते हैं। शाल के लिए ऊन तिब्बत की खास प्रकार की भेड़ों का होता है। कश्मीर में ऊन से पट्टू बीनते हैं और इनके दो शालों को सीकर सकरलात बनाते हैं। वर्षा के कपड़े इनके अच्छे बनते हैं। कश्मीर के पुरुष सिर मुँड़ाए रहते हैं और गोल पगड़ी पहिरते हैं और साधारण स्त्रियाँ स्वच्छ धुले कपड़े नहीं पहिरतीं। पट्टू का एक कुर्ता तीन चार वर्ष तक चलता है। बुनकार के यहाँ से बिना धुला हुआ कपड़ा लाकर वे कुर्ते सी लेती हैं और उनके फटकर टुकड़े हो जाने तक वे पानी में नहीं पहुँचतीं। पैजामा पहिरना दोष माना जाता है। कुर्ते ढीले ढाले लंबे होते हैं जिनसे सिर से पैर तक ढँक जाता है। यद्यपि अधिकतर गृह नदी के किनारे पर हैं पर एक बूँद भी जल इनके शरीर पर नहीं पड़ता। संक्षेप में ये बाहर-भीतर दोनों में गंदे होते हैं और स्वच्छता नहीं होती। मिर्जा हैदर के समय में यहाँ बहुत से गुणी मनुष्य थे। गायन-वादन में ये बड़े कुशल थे और वंशी, चंग, डफ, सारंगी आदि में प्रसिद्ध थे। पूर्व काल में इनके यहाँ एक वाद्य यंत्र कमान्चः की चाल का था और उस पर ये कश्मीरी भाषा के गाने

हिंदी स्वर के अनुसार गाते थे, जिनमें कभी कभी दो तीन स्वर मिले रहते थे। साथ ही कभी कभी कई मनुष्य मिलकर गाते थे। वास्तव में कश्मीर अपनी अनेक अच्छाइयों के लिए मिर्जा हैदर का ऋणी है। सम्राट् अकबर के समय के पहले कश्मीर के लोगों की सवारी विशेष कर गुंतों (टाँघनों) ही की थी और उनके यहाँ बड़े घोड़े नहीं होते थे। एराकी तथा तुर्की घोड़े अपने शासकों के लिए भेंट के रूप में लाया करते थे। गुंत से तात्पर्य याबू से है जिनके कंधे भारी होते हैं और पेट भूमि के बहुत पास रहता है। हिंदुस्तान के अन्य पार्वत्यस्थानों में भी ये बहुत मिलते हैं। ये अधिकतर दुष्ट तथा मुँहजोर होते हैं। जब इस ईश्वर-निर्मित पुष्पोद्यान ने साम्राज्य की शुभ छाया में अक्षय सौंदर्य प्राप्त किया और सिकंदर के समान सम्राट् की शिक्षा के रूप में एमाकों को इस प्रांत में जागीरें मिलीं तब इन्हें बहुत से एराकी तथा तुर्की घोड़े भी दिए गए कि इनसे बड़े घोड़े उत्पन्न करें। सैनिकगण भी अपने लिए घोड़े लाए जिससे शीघ्र ही घोड़े मिलने लगे। दो सौ, तीन सौ यहाँ तक कि एक सहस्र रुपए के भी घोड़े यहाँ बिकने तथा खरीदे जाने लगे।

इस देश के व्यापारी तथा कारीगर अधिकतर सुन्नी हैं और सैनिकगण इमामिया शीआ हैं। एक झुंड नूरबख्शियों का भी है। यहाँ साधुओं का भी झुंड है जिन्हें 'रिषी' कहते हैं। यद्यपि इनमें धार्मिक ज्ञान तथा किसी प्रकार की विद्वत्ता का अभाव है पर सरलता तथा सादगी है। ये किसी की बुराई नहीं करते, कुछ माँगते नहीं, न कुछ चाहते हैं और ये मांसाहारी नहीं है, स्त्री नहीं रखते तथा खेतों में फल वाले वृक्ष लगाते है जिससे लोग लाभ उठा सकें पर वे स्वयं इनसे लाभ नहीं उठाते। इस प्रकार के प्रायः दो सहस्र मनुष्य हैं। प्राचीन काल से इस देश में बहुत से ब्राह्मण बसे हुए हैं, जो अभी भी हैं और कश्मीरी

भाषा बोलते हैं। साधारणतः ये मुसलमानों से भिन्न नहीं मालूम होते। इनके पास संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं, जिन्हें वे पढ़ते हैं। ये विग्रह-पूजन भी सोपचार किया करते हैं। संस्कृत भाषा में भारतवर्ष के विद्वानों ने बहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनकी बड़ी प्रतिष्ठा है। इस्लाम धर्म के प्रकट होने के पहले के बहुत से उच्च मंदिर अभी तक वर्तमान हैं, जो सब पत्थर के हैं और जड़ से छत तक तीस तीस तथा चालीस चालीस मन के पत्थर काट कर एक दूसरे पर रखकर बनाए गए हैं। नगर के पास एक पर्वत है जिसे कोहे मारान या हरि पर्वत कहते हैं। पर्वत के पूर्व ओर डल झील है, जिसका घेरा साढ़े छ कोस है। हमारे पिता सम्राट् अकबर ने आज्ञा दी थी कि एक दृढ़ दुर्ग पत्थर-चूने का बनाया जाय। वह इस प्रार्थी के राज्यकाल में प्रायः पूरा हो गया है जिससे यह छोटा पर्वत दुर्ग के भीतर आ गया है और इसके चारों ओर चहार दीवारी खींच दी गई है। झील दुर्ग के पास है। महल में एक छोटा उद्यान है, जिसमें एक छोटी इमारत है जहाँ हमारे श्रद्धेय पिता बहुधा बैठा करते थे। इस समय हमें वह स्थान बहुत बुरी अवस्था तथा गिरहर दिखलाई पड़ा। यह हमारे किब्ला तथा इश्य देवता का स्थान है जहाँ वह बैठा करते थे और इस प्रार्थी के लिए यह वास्तव में सिज्दा करने का स्थान है इसलिए इस प्रकार इसकी जीर्णता हमें अनुचित ज्ञात हुई। हमने मोतमिद खाँ को, जो हमारी प्रकृति को समझने वाला सेवक है, आज्ञा दी कि इस छोटे बाग को ठीक करने का तथा इमारतों की मरम्मत कराने का पूरा प्रयत्न करे। थोड़े ही समय में उसके विशेष प्रयत्नों से इन सब में नई सुंदरता आ गई। उद्यान में बत्तीस गज चौकोर चबूतरे पर तीन खंड का ऊँचा 'सफः' बनवाया और इमारत की मरम्मत कराकर उसमें उस्तादों के बनाए चित्र लगवाए जिससे वह चीन की चित्रशाला की ईर्ष्या-वस्तु हो गई। हमने इस उद्यान का नाम नूरअफजा रखा।

इलाही महीने फरवरदीन की १५वीं को शुक्रवार के दिन तिब्बत के जमींदार की भेंट में से दो 'क़तास' बैल हमारे सामने आए। रूप तथा बनावट में ये भैंस के समान हैं। इनके सारे अंग ऊन से ढँके हुए हैं जो ठंढे देशों में सभी पशुओं में पाया जाता है। जैसे भक्कर (सिंध) प्रांत के तथा गर्मसीर के पहाड़ी स्थान से लाए गए रंग बकरे बड़े सुंदर थे और उन पर ऊन भी कम थे पर यहाँ के पहाड़ों में जो मिलते हैं वे अत्यधिक ठंढक तथा बर्फ के कारण बालों से भरे रहते हैं तथा असुन्दर हैं। कश्मीरी इन रंगों को कील[1] कहते हैं। इसी दिन एक कस्तूरी मृग भी भेंट में लाया गया। हमने इस मृग का मांस नहीं खाया था इसलिए इसे पकाने की आज्ञा दी। यह बिलकुल निस्वादु तथा अखाद्य है। किसी भी अन्य जंगली जानवर का मांस इसके समान खराब नहीं होता। कस्तूरी की नाभि ताजी रहने पर गंध नहीं देती पर कुछ दिन छोड़ देने तथा सूख जाने पर मीठी गंध देने लगती है। मादा को कस्तूरी की नाभि नहीं होती। इधर दो तीन दिनों में हम कई बार नाव पर चढ़कर घूमने गए और बहाक तथा शालामाल के फूलों को देखकर एवं भ्रमण कर प्रसन्न हुए। बहाक (फाक) एक पर्गने का नाम है, जो झील के दूसरी ओर हटकर है। शालामाल झील के पास है। इसमें एक रमणीक धारा है जो पहाड़ों से आकर डल झील में गिरती है। हमने अपने पुत्र खुर्रम को आज्ञा दी कि इसे बाँध से रोककर प्रपात् बनवावे, जो देखने में अत्यंत सुंदर होगा। यह स्थान कश्मीर के सुंदर दृश्यों में से एक है।

रविवार १०वीं को एक विचित्र घटना घटी। शाह शुजा महल की एक इमारत में खेल रहा था। संयोग से उसमें एक खिड़की नदी की

---

1. फारसी लिपि के कारण इसे कपल भी पढ़ा गया है।

ओर थी, जिसका पर्दा तो गिरा हुआ था पर उसके पल्ले बंद नहीं किए हुए थे। शाहजादा खेलते हुए उस खिड़की में बाहर देखने के लिए चला गया। उस खिड़की में पहुँचते ही वह सिर के बल नीचे जा गिरा। दैवयोग से खिड़की के नीचे तह किए हुए मोटे जाजिम रखे हुए थे और एक फर्राश वहीं बैठा हुआ था। लड़के का सिर जाजिम पर था, पैर फर्राश के कंधे और पीठ पर पड़ा और इस प्रकार वह गिरा। यद्यपि ऊँचाई सात गज थी पर ईश्वर की दया से जाजिम तथा फर्राश उसके प्राण बचाने के कारण हो गए। ईश्वर न करे, यदि ये न होते तो उसके लिए यह संकट का अवसर था। उस समय खिदमती प्यादों का सर्दार राय मान झरोखे के नीचे खड़ा था। इसने तुरंत दौड़कर उसे उठा लिया और उसे गोद में लेकर ऊपर जा रहा था कि उसी अवस्था में उसने पूछा कि कहाँ ले जा रहे हो। इसने कहा कि बादशाह की सेवा में। इसके अनंतर यह अचेतन हो गया और कुछ न बोल सका। हम लेटे हुए थे कि यह भयावना समाचार हमें मिला और हम घबड़ाहट में बाहर दौड़ आए। जब हमने उसे देखा तो हमारी बुद्धि भी नष्ट हो गई और हम बहुत देर तक उसे गले में चिपकाए हुए ईश्वर की कृपा की चिंतना करते रहे। चार वर्ष का बालक सिर के बल दस साधारण गज की ऊँचाई से गिर पड़े और उसके अंगों को कोई चोट न पहुँचे तो वह वैचित्र्य का कारण हो जाता है। इस नई कृपा के लिए ईश्वर का सिज्दा बजा लाकर हमने दान किए और आज्ञा दी कि नगर के सुपात्र तथा दीन मनुष्य हमारे सामने उपस्थित किए जायँ जिससे हम उनके कालयापन का निश्चित प्रबंध कर दें। इससे विचित्र बात यह है कि तीन चार महीने पहले एक ज्योतिषी ज्योतिपराय ने, जो अपने शास्त्र-ज्ञान में अत्यंत कुशल है, हमसे बिना किसी मध्यस्थ के कहा था कि शाहजादे की जन्मकुण्डली से ज्ञात होता है कि इधर शाहजादे के तीन चार महीने शुभ नहीं है और संभव है

कि यह ऊँचे स्थान से नीचे गिर जायँ पर इनके जीवन पर किसी प्रकार का कष्ट नहीं आवेगा। इसकी भविष्यवाणी बारबार ठीक उतरी था इससे हमें यह भय बराबर बना रहा और इन भयानक मार्गों तथा दुर्गम पहाड़ी दर्रों में हम एक क्षण के लिए भी इस सौभाग्योद्यान के नवांकुर को नहीं भूले। जब हम कश्मीर पहुँच गए तब यह अनिवार्य घटना घटी। इसकी धायें तथा दूध पिलानेवालियाँ अत्यंत असावधान रहीं। ईश्वर की स्तुति है कि अंत अच्छा हुआ।

ऐशाबाद के बाग में हमने एक वृक्ष देखा जिसमें असंख्य फूल लगे हुए थे। वे सब बहुत बड़े तथा सुंदर थे पर उसके फल सेब बड़े कड़ुए थे।

दिलावर खाँ काकिर ने अच्छी सेवा की थी इसलिए हमने उसका मंसब बढ़ाकर चार हजारी ३००० सवार का कर दिया और उसके पुत्रों को भी मंसब दिया। कुतुबुद्दीनखाँ के पुत्र शेख फरीद का भी मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। सरबराह खाँ का मंसब सात सदी २५० सवार का करने की आज्ञा दी और नूरुल्ला कुरकुराक का मंसब बढ़ाकर छ सदी १०० सवार का कर दिया तथा उसे तशरीफ खाँ की पदवी दी। गुरुवार २१ वीं की भेंट प्रधान शिकारी कियाम खाँ को पुरस्कार में दे दी गई। तारीकी के पुत्र अल्लहदाद अफग़ान ने अपने दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप किया और दरबार चला आया। एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर हमने उसे क्षमा कर दिया। लज्जा तथा पश्चात्ताप के लक्षण उसके मुख से प्रगट होते थे और पहले निश्चित हुए प्रबंध के अनुसार हमने उसे ढाई हजारी २०० सवार का मंसब दिया। बंगाल के एक सहायक सर्दार मीरक जलायर का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ४०० सवार का कर दिया।

हमें सूचना मिली थी कि जामअ मस्जिद की छत पर काले तुलचंद खूब खिले हैं इसलिए शनिवार २३ वीं को हम उन्हें देखने गए। वास्तव में उस उद्यान का एक अंश बहुत सुंदर था। मऊ तथा मिहरी[1] के पर्गने पहले राजा बासू को दिए गए थे और उसके अनंतर उसके विद्रोही पुत्र सूरजमल के पास चले आए थे। अब वे उसके भाई जगतसिंह को मिले, जिसे टीका नहीं हुआ था। हमने राजा संग्राम को जम्मू का पर्गना दिया। सोमवार १ म उर्दिबिहिश्त को हम खुर्रम के निवासस्थान पर गए। जब हम उसके हम्माम में से निकलकर बाहर आए तब उसने अपनी भेंट दी। हमने उसमें से थोड़ा उसे प्रसन्न करने के लिए पसद किया। गुरुवार ४ थी को मीर जुमला का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ३०० सवार का कर दिया। रविवार ७ वीं को हम चारदरा गाँव को, जो हैदर मलिक का देश है, तीतर मारने के लिए गए। वास्तव में यह स्थान बहुत रमणीक है, बहती धाराएँ हैं और ऊँचे चिनार के वृक्ष हैं। उसकी प्रार्थना पर हमने इसका नाम नूरपुर रखा। मार्ग में एक वृक्ष मिला जिसे हलथल कहते हैं। जब इसकी एक शाखा पकड़कर हिलाया जाता तो सारा पेड़ हिलने लगता था। जनसाधारण का विश्वास है कि इस प्रकार का हिलना इसी वृक्ष की विशेषता है। संयोग से उसी गाँव में एक वृक्ष दूसरा दिखलाई दिया, जो उसी प्रकार हिलता था। इससे ज्ञात हुआ कि इस जाति के सभी वृक्षों की यह विशेषता है केवल एक ही वृक्ष की नहीं। रावलपुर ग्राम में, जो नगर से हिंदुस्तान की ओर ढाई कोस पर है, एक वृक्ष है, जो भीतर से जला हुआ है। आज से पचीस वर्ष पहले जब हम घोड़े पर सवार होकर पाँच अन्य सजे हुए घोड़ों तथा दो खोजों के साथ इसके भीतर गए थे। जब हम कभी संयोग से इस बात को कहते तो लोग आश्चर्य करते थे।

---

१. मऊ नूरपुर।

इस बार भी हमने कुछ मनुष्यों को उसके भीतर जाने के लिए कहा और जैसा हमने कहा था वैसा ही निकला। अकबरनामा में लिखा है कि हमारे पिता चौंतीस[1] मनुष्यों को भीतर लिवा गए और सबको पास पास खड़ा किया था।

इसी दिन हमें सूचना मिली कि राय मनोहर के पुत्र पृथीचंद ने, जो काँगड़ा के विरुद्ध भेजी गई सेना के सहायकों में नियत था, शत्रु से व्यर्थ के युद्ध में अपना प्राण निछावर कर दिया। गुरुवार ११ वीं को दरबार के कुछ सेवकों का मंसब इस प्रकार बढ़ाया गया, तातारखाँ को दो हजार ५०० सवार का, अब्दुल् अज़ीज़ खाँ को दो हजारी १००० सवार का, ग्वालिअर के देवीचंद को डेढ़ हजारी ५०० सवार का, अबुल्कासिमखाँ नमकीन के पुत्र मीरखाँ को एक हजारी ६०० सवार का, मिर्जा मुहम्मद को सात सदी ३०० सवार का, लुत्फुल्ला को तीन सदी ५०० सवार का तथा नसरुल्ला अरब को पाँच सदी २५० सवार का। तहौव्वर खाँ मेवात का फौजदार नियत किया गया। गुरुवार २५ वीं को भक्कर के फौजदार सैयद बायजीद बुखारी सिंध की प्रांताध्यक्षता पाकर सम्मानित हुआ और इसका मंसब बढ़कर दो हजारी १५०० सवार का होगया। इसे झंडा भी प्रदान किया गया। शुजाअत खाँ अरब का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी २००० सवार का कर दिया। महाबतखाँ की प्रार्थना पर अनीराय सिंहदलन बंगश में नियत किया गया। जानसिपार खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया।

इसी समय सिपहसालार खानखानाँ तथा (दक्षिण के) सभी राजभक्तों की ओर से सूचना मिली कि अभागे अंबर ने पुनः राजभक्ति

---

१. इकबालनामा पृ० १५९ पर लिखा है कि सत्तर आदमी इसके भीतर खड़े हो सकते हैं।

की सीमा से आगे पैर बढ़ाकर अपनी प्रकृति के अनुसार उपद्रव तथा विद्रोह करना आरंभ कर दिया है और इस कारण कि विजयी सेना देश के दूरस्थित प्रांत में चली आई है, उसने इसे अच्छा अवसर समझ कर दरबार के सेवकों को उसने जो वचन दिए थे उन्हें तोड़कर बादशाही साम्राज्य की भूमि पर अधिकार करने लगा है। आशा की जाती है कि शीघ्र ही उसे उसके इन दुष्ट कार्यों का उचित फल मिलेगा। सिपहसालार ने धनकी सहायता के लिए प्रार्थना की थी इसलिए हमने आगरे के दीवानों को आज्ञा भेजी कि वे बीस लाख रुपए उसके पास भेज दें। इस समाचार के मिलने के अनंतर शीघ्र ही अन्य समाचार आए कि अमीरों ने अपने थाने छोड़ दिए और दाराबखाँ के पास चले आए, जिसके पड़ाव को मराठा बर्गियों ने घेर लिया है तथा खंजर खाँ अहमदनगर दुर्ग में जा बैठा है। शत्रु तथा शाही सेनाओं में दो तीन युद्ध भी हो चुके हैं, जिनमें हर बार शत्रु परास्त हुए तथा बहुत से मारे गए। अंतिम बार दाराबखाँ ने नवयुवक घुड़सवारों के साथ शत्रु के पड़ाव पर धावा किया और घोर युद्ध हुआ। शत्रु परास्त होकर भाग गए, उसका पड़ाव लूट लिया गया और विजयी सेना कुशलपूर्वक अपने पड़ाव पर लौट आई। परंतु विजयी सेना पर कठोर संकट आ पड़ा था इसलिए राजभक्त सर्दारों को निश्चय करना पड़ा कि वे रोहनखेड़ा दर्रे से घाट के नीचे उतर जायँ जहाँ रसद तथा दाना-घास सुगमता से मिल सके और मनुष्यों को विशेष परिश्रम तथा कष्ट न उठाना पड़े। निरुपाय होकर बालापुर में सेना तैयार की गई और दुष्ट शत्रु दुस्साहस तथा उद्दंडता से बालापुर तक पहुँच गए। राजा वीरसिंह देव ने अपने स्वामिभक्त सेवकों के साथ बड़े साहस के साथ उन पर आक्रमण कर दिया और बहुतों को मारकर शत्रु को भगा दिया। शत्रु का एक सर्दार मंसूर नामक एक हब्शी जीवित पकड़ा गया और इसे वे हाथी पर बैठाना चाहते थे पर मूर्खता से उसने नहीं

माना और उद्दंडता दिखलाई। राजा वीरसिंह देव ने उसका सिर काट लेने की आज्ञा दे दी। आशा है कि यह भ्रमणकारी आकाशचक्र अनुचित कार्यों का दंड उन लोगों को तुरंत दे देता है, जो दूसरों के स्वत्व को नहीं पहिचानते।

३ री उर्दिबिहिश्त को हम सुखनाग गए। यह सुंदर ग्रीष्म निवास है। यह जलप्रपात् घाटी के बीच में है और ऊँचे स्थान से गिरता है। अभी तक इसके अगल बगल वर्फ जमा हुआ था। गुरुवार का उत्सव इसी पुण्य-भूमि में मनाया गया और ज़ल के किनारे अपने नियमित प्याले पीकर हम बहुत प्रसन्न हुए। इस धारा में हमने साज के समान एक पक्षी देखा। साज काले रंग का सफेद धव्वे वाला पक्षी होता पर यह बुलबुल के रंग का होते हुए सफेद धव्वे सहित होता है, जो जल में डूबकर बहुत देर नीचे रहने के अनंतर दूसरे स्थान पर निकलता है। हमने आज्ञा दी कि इन पक्षियों में से दो तीन को पकड़ लावें जिससे निश्चय किया जा सके कि ये जल पक्षी हैं और इनके पैर की उँगलियाँ चर्म से जुटी हैं या ये स्थल पक्षी हैं और इनके पैर की उँगलियाँ अलग अलग हैं। वे दो को पकड़कर ले आए। एक तत्काल मर गई और दूसरी एक दिन जीवित रही। इसके पैर बत्तक के समान जुटे हुए नहीं थे। हमने नादिरुल् असर उस्ताद मंसूर को इसका चित्र खींचने की आज्ञा दी। कश्मीरी इसे 'गलकर' कहते हैं अर्थात् जल का साज।

इसी दिन काजी तथा मीर अदल ने सूचना दी कि हकीम अली के पुत्र अब्दुल्वहाब ने लाहौर के सैयदों पर अस्सी सहस्र रुपयों का वाद उपस्थित किया है और काजी नूरुल्ला की मुहर सहित एक दस्तावेज उपस्थित किया है। वह कहता है कि उसके पिता ने इतना रुपया इन सैयदों के पिता सैयद वली के पास जमा किया था, जो अब

अस्वीकार कर रहे हैं। यदि आज्ञा दी जाय तो हकीम का पुत्र कुरान पर सौगंध खाकर अपना स्वत्व प्रमाणित करे और अपना धन उनसे प्राप्त करे। हमने आज्ञा दी कि शरश्र के अनुसार जो उचित हो वह करें। दूसरे दिन मोतमिद खाँ ने प्रार्थना की कि सैयद लोग बड़ी नम्रता तथा घबड़ाहट दिखला रहे हैं कि यह वाद झूठा है। यह वाद पेंचीला है यह समझकर हमने आसफ खाँ को आज्ञा दी कि वह इस वाद की सच्चाई को पूर्ण संयम तथा दूरदर्शिता से समझे और ऐसा निर्णय करे कि किसी प्रकार की शंका न रह जाय। यदि इतने पर भी ठीक निर्णय न हो सके तो हमारे सामने यह वाद उपस्थित किया जाय। ज्योंही हकीम अलीके पुत्र ने यह आज्ञा सुनी त्यों ही वह इस कार्य से साहस छोड़ बैठा और कई मनुष्यों को मध्यस्थ बनाकर इस वाद को उठा लेना चाहा। उसका कहना था कि यदि सैयदगण आसफ खाँ के पास यह वाद न ले जावें तो वह यह वाद उठा लेगा और फिर उसका कोई स्वत्व इन लोगों के विरुद्ध नहीं रह जायगा। जब जब आसफखाँ ने इसे बुलवाया तब तब इसने बहाने किए क्योंकि यह कपटी था और जब इसने अपने वाद उठा लेने का पत्रक अपने एक मध्यस्थ मित्र को दे दिया तब यह उपस्थित हुआ। उस समय कुल सच्ची बातें आसफखाँ को ज्ञात हुईं। जब इसे पकड़कर परीक्षा स्थल में ले गए तब इसने निरुपाय होकर कहा कि उसके नौकर ने यह दस्तावेज तैयार कर हस्ताक्षर किया और उसे इस कुमार्ग पर ले गया। उसने लिखकर यह बयान दे दिया। जब आसफखाँ ने यह कुल बातें हमें सुनाईं तब हमने उसका मंसब तथा जागीर जब्त कर ली और उसे दरबार से निकलवा दिया। सैयदों को ससम्मान लाहौर लौट जाने की आज्ञा दे दी।

गुरुवार ८ वीं खुरदाद को एतकाद खाँ का मंसब बढ़ाकर चार हजारी १५०० सवार का और सादिक़ खाँ का ढाई हजारी १४००

सवार का कर दिया। मृत आसफखाँ के पुत्र जैनुल्आबदीन को अहदियों का बख्शी नियत किया। राजा वीरसिंह देव बुंदेला का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ५००० सवार का कर दिया।

कश्मीर में सबसे अधिक रसीला फल अश्कान (अस्कामी) है, जो कुछ खटास लिए होता है। यह आलू बालू से छोटा, अधिक स्वादिष्ट तथा सुकुमार होता है। मदिरापान करते समय कोई भी तीन-चार से अधिक आलू-बालू नहीं खा सकता पर इसे चौबीस घंटे में एक सौ तक खा सकता है, विशेष कर पैवंदी चाल का। हमने आज्ञा दी कि इसे अब से खुश-कान कहा करें। यह बदख्शाँ तथा खुरासान की पहाड़ियों में होता है और वहाँ इसे जमदमी कहते हैं। इनमें सबसे बड़ा आधी मिस्काल तौल में होता है। ४ थी उर्दिबिहिश्त को शाह आलू दाल के दाने के बराबर दिखलाई पड़े, २७ वीं को लाल हो गए और १४ वीं खुरदाद को पक गए तथा नए फल आने लगे। शाह आलू हमारी रुचि के अनुसार अधिकतर फलों से अच्छा होता है। नूर अफजा बाग में चार वृक्षों में फल लगे थे। हम इनमें एक को शीरींबार (मीठा बोझ का), दूसरे को खुशगवार (स्वादिष्ट), तीसरे को जिसमें अधिक फल था पुर बार (अधिक बोझ का) तथा जिसमें कम फल था उस चौथे को कम बार कहते थे। खुर्रम के बाग में भी एक वृक्ष में फल लगे थे, जिसे हम शाहवार कहते थे। इशरत अफजा नामक छोटे बाग में एक छोटा पौधा था जिसे हम नौ बार कहते थे। प्रति दिन हम अपने हाथ से काफी फल तोड़ लेते थे, जो हमारे प्यालों को स्वादिष्ट बना देते थे। यद्यपि डाक चौकी से काबुल से यह भी भेजा जाता था पर अपने ही बाग में से अपने हाथ से तोड़े हुए फल में विशेष मिठास आ जाती है। कश्मीर का शाहआलू काबुल के शाह आलू से घटकर नहीं होता, प्रत्युत् बड़ा ही होता है। इनमें सबसे बड़ा एक टंक पाँच सुर्ख तौल में होता है।

मंगलवार २१ वीं को बादशाहबानू बेगम परलोकगामिनी हो गईं और इसका हमें बहुत शोक हुआ। हम आशा करते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर उन्हें अपनी क्षमा के पास स्थान देगा। विचित्र बात यह है कि ज्योतिपराय ज्योतिपी ने दो महीने पहले हमारे कुछ सेवकों से कह दिया था कि हरम की कोई प्रधान स्त्री अनस्तित्व के लोक में चली जायगी। इसे उसने हमारी जन्म कुंडली की गणना से देखा था और यह ठीक निकली।

एक अन्य घटना सैयद इज्जतखाँ और जलालखाँ गक्खर का, जो बंगश की सेना में थे, मारा जाना था। इसका विवरण इस प्रकार है कि जब सरकारी लगान वसूल करने का समय आया तब महाबतखाँ ने एक सेना नियत की कि पहाड़ी प्रांतों में जाकर अफगानों की फसल को खा जाय और उन पर धावा करने, लूटने, बाँधने तथा मारने में कुछ न उठा रखे। जब शाही सेना दर्रे के नीचे पहुँची तब अभागे अफगानों ने उस पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया और दर्रे के सिरे पर अधिकार कर उसे दृढ़ बना लिया। जलालखाँ अनुभवी तथा वृद्ध पुरुष था, जिसने बहुत ऐसे कार्य देखे थे। उसने विचार किया कि यदि कुछ दिन ठहर जायँ तो जो कुछ थोड़े दिन का सामान रसद आदि वे अफगान पीठ पर लाद कर लाए हैं वह समाप्त हो जायगा और वे स्वयं निरुपाय होकर भाग जाएँगे। तब उसके मनुष्य दुर्गम दर्रे के सिरे को सुविधा से पार कर लेंगे। जब वह दर्रे के सिरे को पार कर लेगा तब शत्रु कुछ न कर सकेगा और दंडित भी किया जा सकेगा। इज्जतखाँ ने, जो युद्ध करने में बड़ा उत्साही था, जलालखाँ की सम्मति नहीं स्वीकार की और बारहा के कुछ सैयदों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया। अफगानोंने चारों ओर से चींटी तथा टिड्डी के समान घूम कर इस पर धावा कर दिया और

इसे घेर लिया। यद्यपि यह युद्धस्थल घुड़सवारी के उपयुक्त नहीं था पर तब भी वह जिस ओर क्रोध के साथ गया उधर कितने शत्रुओं को अपनी क्रोधाग्नि में जला दिया। युद्ध के बीच में शत्रु ने उसके घोड़े को मार डाला पर वह पैदल ही अंतिम स्वाँस तक लड़ता रहा यहाँ तक कि वीरता के साथ युद्ध में मारा गया। जिस समय इज्जत खाँ ने आक्रमण किया उस समय जलालखाँ गक्खर, अहमद बेग खाँ का पुत्र मसऊद, नाद अली मैदानी का पुत्र बिजन तथा अन्य नौकर रुक न सके और दर्रे के चारों ओर से धावा कर दिया। शत्रु ने अवसर पाकर पहाड़ियों पर अधिकार कर लिया और पत्थर-तीर बरसाने लगे। राजभक्त युवकों ने, बादशाही सेवकों तथा महाबतखाँ के सैनिकों दोनों ने बड़ी वीरता दिखलाई और बहुत से अफगानों को मार डाला। इस युद्ध में जलालखाँ तथा मसऊद बहुत से अन्य वीरों के साथ मारे गए। इज्जतखाँ की उदंडता के कारण शाही सेना पर ऐसी कठोर घटना घटी।

जब महाबतखाँ ने यह भयावह समाचार सुना तब एक नई सेना सहायतार्थ भेजी और थानों को दृढ़ किया। जहाँ कहीं इन्होंने उन अभागों का चिन्ह पाया वहाँ उन्हें मारने तथा बाँधने में कसर नहीं की। हमने जब यह समाचार सुना तब जलालखाँ के पुत्र अकबर कुली को अपने सामने बुलाया, जो काँगड़ा दुर्ग की चढ़ाई पर भेजा गया था और उसे एक हजारी १००० सवार का मंसब देकर यथानियम उसका पैतृक देश उसे जागीर में दिया। साथही उसे खिलअत तथा एक घोड़ा देकर बंगश की सेना के सहायतार्थ भेज दिया। इज्जतखाँ का एक पुत्र बहुत छोटा था अतः हमारी सत्यान्वेषी बुद्धि ने उसके प्राण-निछावर करने का विचार कर उस बच्चे को मंसब तथा जागीर दिया जिससे वह जिन लोगों को छोड़ गया है वे अस्तव्यस्त न हों और दूसरों की आशा बढ़े।

इसी दिन शेख अहमद सरहिंदी, जो कुछ दिनों तक अपने अहंता तथा अनुचित बोलों के कारण शिक्षण के कारागार में बंद किया गया था, हमारे सम्मुख बुलाया गया और हमने उसे खिलअत तथा एक सहस्र रुपए देकर छोड़ दिया कि वह चाहे रहे या चला जाय। उसने ठीक प्रार्थना की कि इस दंड से उसे बहुत अच्छी शिक्षा मिली और उसकी इच्छा अब हमारी सेवा में रहने की है।

२७ वीं खुरदाद को जर्दालू आए। उद्यान की चित्रशाला की मरम्मत करने के लिए आज्ञा दी गई थी। अब वह कुशल चित्रकारों के चित्रों से सजा दी गई। सबसे अधिक सम्मानित स्थान पर हुमायूँ तथा हमारे पिता के चित्र हमारे तथा हमारे भाई शाह अब्बास के चित्रों के सामने लगाए गए थे। इनके अनंतर मिर्जा कामराँ, मिर्जा मुहम्मद हकीम, शाह मुराद तथा सुलतान दानियाल के चित्र थे। दूसरी पंक्ति में अमीरों तथा प्रधान सेवकों के चित्र लगाए गए थे। बाहरी बड़े कमरे की दीवालों पर कश्मीर आते समय के पड़ावों के दृश्य जिस क्रम से हम आए थे उसी क्रम से चित्रित किए गए थे। एक कवि ने इस मिसरे से तारीख कही—

सुलेमान-सदृश ऐश्वर्यवाले शाहों के चित्र।

इलाही महीने तीर की ४ थी को गुरुवार के दिन 'बोरिया-कोबी' उत्सव हुआ। इसी से कश्मीर के शाहआलू का अंत होता है। नूर अफजा बाग से पंद्रह सौ और अन्य वृक्षों से पाँच सौ फल तोड़े गए। हमने कश्मीर के कर्मचारियों को कड़ी आज्ञा दी कि शाह आलू के वृक्ष सभी उद्यानों में लगावें। इसी दिन राणा अमर सिंह के पुत्र भीम को राजा की पदवी दी और वीर इज्जतखाँ के भाई दिलेरखाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ८०० सवार का कर दिया। अहमद बेगखाँ के पुत्र मुहम्मद सईद का मंसब बढ़ाकर छ सदी ४०० सवार

का और उसके भाई मुखलिसुल्ला का पाँच सदी २५० सवार का कर दिया। सैयद अहमद सदर को एक हजारी मंसब और मिर्जा रुस्तम सफवी के पुत्र मिर्जा हुसेन को एक हजारी ४०० सवार का मंसब प्रदान किया तथा अंतिम को दक्षिण के कार्य पर भेजा। रविवार १४ वीं तीर को हसन अली तुर्कमान को उड़ीसा का प्रांताध्यक्ष नियत किया और उसका मंसब बढ़ाकर तीन हजारी ३००० सवार का कर दिया। इसी दिन कंधार के अध्यक्ष बहादुरखाँ के भेजे हुए भेंट के नौ एराकी घोड़े, सुनहले जरी के नौ थान, काम किए हुए साटन, किश के कुछ चमड़े तथा अन्य वस्तुएँ हमारे सामने उपस्थित की गईं।

सोमवार १५वीं को तूसीमर्ग के ग्रीष्मावास को देखने गए। दो मंजिलों में कोतल के नीचे पहुँच कर बुधवार १७वीं को दर्रे के सिरे पर पहुँचे। दो कोस तक की ऊँची चढ़ाई कठिनाई से पार की गई। कोतल के सिरे से ग्रीष्मावास तक एक कोस और ऊँची-नीची भूमि थी। यद्यपि यहाँ वहाँ अनेक रंग के फुल खिले हुए थे पर हमने उतने फूल नहीं देखे जितने कि हमें बतलाए गए थे या हमने आशा की थी। हमने सुना कि यहाँ पास में एक बड़ी सुंदर घाटी है इसलिए गुरुवार १८वीं को हम उसे देखने गए। निस्संदेह इस फूलों से भरी घाटी की जो प्रशंसा की जाय वह कम ही है। जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ तक खिले हुए फूल ही फूल दिखलाई पड़ते थे। हमारे सामने पचास प्रकार के फूल चुने गए। संभवतः और भी हों जिन्हें हम देख नहीं पाए। दिन बीतने पर हम लौट चले। इसी रात्रि को अहमदनगर के घेरे का हाल हमारे समक्ष कहा गया। खानजहाँ ने एक विचित्र कहानी कही, जिसे हम पहले भी सुन चुके हैं और जिसे वैचित्र्य के कारण यहाँ लिख दिया जाता है। जिस समय हमारा भाई दानियाल अहमदनगर दुर्ग घेरे हुए था उस समय दुर्गवालों ने एक

दिन मलिके मैदान नामक तोप शाहजादे के पड़ाव के सामने लगाकर गोला चलाया। गोला शाहजादे के खेमे के लगभग पास पहुँचा पर वहाँ से छिटक कर काजी बायजीद के खेमे पर पहुँचकर गिरा, जो शाहजादे का एक साथी था। काजी का घोड़ा तीन-चार गज की दूरी पर बँधा हुआ था। गोले के जमीन पर गिरते ही घोड़े की जीभ जड़ से टूटकर भूमि पर गिर गई। गोला पत्थर का हिन्दुस्तानी दस मन का था, जो खुरासान के अस्सी मन के बराबर होता है। वह तोप इतनी बड़ी है कि एक आदमी उसमें सुख पूर्वक बैठ सकता है।

इसी दिन हमने मीर बख्शी अबुलहसन का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी २००० सवार का, मुबारिज खाँ का दो हजारी १७०० सवार का, नाद अली के पुत्र बिजन का एक हजारी ५०० सवार का तथा अमानत खाँ का दो हजारी ४०० सवार का कर दिया। गुरुवार २५वीं को सईद खाँ के पुत्र नवाजिश खाँ को तीन हजारी २००० सवार का, हिम्मत खाँ को दो हजारी १५०० सवार का और सैयद कमाल बुखारी के पुत्र सैयद याकूब खाँ को आठ सदी ५०० सवार का मंसब प्रदान किया। मीर अली अकबर मूसवी के पुत्र मीर अली असकर को मूसवी खाँ की पदवी दी। हमने कूरीमर्ग के ग्रीष्मावास की प्रशंसा कई बार सुनी थी इसलिए इस बार उसे देखने की बड़ी इच्छा हुई और मंगलवार ७वीं अमूरदाद को हम उस ओर चले। हम उसकी प्रशंसा क्या लिखें? जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ तक अनेक रंग के फूल खिले हुए दिखलाई देते थे और फूलों तथा हरियाली के बीच सुंदर जल-धाराएँ प्रवाहित हो रही थीं। कहा जा सकता है कि भाग्य रूपी चित्रकार ने सृष्टि की लेखनी से यह पृष्ठ अंकित कर दिया है। हृदय की कलियाँ इन्हें देखकर प्रफुल्लित हो जाती थीं। निस्संदेह इस

ग्रीष्मावास की अन्य ग्रीष्मावासों से कोई तुलना नहीं और यही स्थान है जो कश्मीर में सबसे अधिक दर्शनीय है।

उत्तरी भारत में पपीहा नामक एक मधुर-भाषी पक्षी है, जो वर्षा ऋतु में हृदय-विदारक शब्द बोला करता है। जिस प्रकार कोयल अपने अंडे कौए के घोंसले में दे आती है और कौए उसके बच्चे को पालते हैं उसी प्रकार हमने कश्मीर में देखा कि पपीहे अपने अंडे गौगाई (पक्षी) के घोंसले में रख आते हैं जो उनके बच्चों का पालन करता है।

गुरुवार १७वीं को हमने फिदाई खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ७०० सवार का कर दिया। इसी दिन उरगंज के शासक इज्जत खाँ का एलची मुहम्मद जाहिद दरबार आया और कुछ साधारण भेंट के साथ उसने एक प्रार्थनापत्र दिया और पैत्रिक संबंध का स्मरण दिलाया। हमने उस पर बड़ी कृपा दिखाई और तत्काल उसे दस सहस्र दर्ब अर्थात् पाँच सहस्र रुपए उपहार रूप में दिए और बयूतात के कर्मचारियों को आदेश दिया कि वह जो माँगे उसे दिया जाय।

इसी समय हमारे पुत्र खानजहाँ लोदी ने एक विचित्र शुभ कार्य किया। मदिरा की अधिकता के कारण वह बहुत बीमार पड़ गया और इस मनुष्य-विनाशक नशे के आधिक्य का यह फल हुआ कि उसके बहुमूल्य प्राण संकट में पड़ गए। एकाएक इस संबंध में उसका मत बदला और ईश्वर के आदेश से उसने व्रत लिया कि वह अपने ओठों को मदिरा से अपवित्र नहीं करेगा। यद्यपि हमने उसे सचेत किया कि एकाएक सब छोड़ देना अच्छा नहीं है और धीरे-धीरे इसे छोड़ना चाहिए पर उसने नहीं माना और साहस के साथ छोड़ दिया।

२५वीं अमुर्दाद को हमने कंधार के अध्यक्ष बहादुर खाँ का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी ४००० सवार का कर दिया और इलाही महीने शहरिवर की २री को रावत शंकर के पुत्र मानसिंह का मंसब डेढ़ हजारी ८०० सवार का, मीर हुसामुद्दीन का डेढ़ हजारी ५०० सवार का तथा अली मर्दान खाँ के पुत्र करमुल्ला का छसदी ३०० सवार का कर दिया।

इस समय चित्तीदार सुंदर पानी के दाँत की हमारी बड़ी इच्छा थी इसलिए सभी बड़े अमीर इसकी खोज में लगे हुए थे। इनमें से अब्दुलअज़ीज खाँ नक्शबंदी ने अब्दुल्ला नामक अपने एक नौकर को एक पत्र के साथ ख्वाजा कलाँ जूएबारी के पुत्रों ख्वाजा हसन तथा ख्वाजा अब्दुर्रहीम के पास भेजा जो मावरुन्नहर के मुख्य फकीरों में से थे और उस पत्र में इन वस्तुओं के लिए प्रार्थना की। संयोग से ख्वाजा हसन के पास एक पूरा दाँत बहुत सुंदर था, जिसे उसने तुरंत उस सेवक के हाथ भेज दिया और वह आज ही पहुँचा। हम बड़े प्रसन्न हुए और आज्ञा दी कि इसका मूल्य तीस सहस्र रुपए अच्छी वस्तुओं के रूप में ख्वाजों के पास भेजे जावें, जिस कार्य के लिए मीर बर्का बुखारी नियत किया गया। गुरुवार १२वीं शहरिवर को मीर मीरान को अपनी फौजदारी मेवात जाने की छुट्टी मिली और उसका मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया। हमने इसे एक खास घोड़ा, खिलअत तथा एक तलवार दिया।

इसी समय सुंदर की सूचना से ज्ञात हुआ कि विद्रोही जौहर मल नर्क चला गया। यह भी सूचित किया गया कि एक सेना जो एक जमींदार के विरुद्ध भेजी गई थी, सतर्कता का मार्ग छोड़कर बिना आने जाने के मार्ग में थानाबंदी किए हुए या पहाड़ियों पर अधिकार किए हुए पहाड़ी दुर्गों के भीतर चली गई और युद्ध भी किया जिसका

कोई समुचित फल नहीं निकला। जब दिन समाप्त हो चला तो वह असफल लौटी और लौटने में बड़ी शीघ्रता की। इससे बहुत से आदमी मारे गए, विशेषकर वे लोग जो भागने के निरादर को नहीं सह सकते थे। वे अपने जीवन के बदले शहीद होगए। इनमें एक शहबाज़खाँ दोतानी लोदी अफगानों की एक जाति का था जो अपने सेवकों तथा जाति वालों के साथ मारा गया। वास्तव में वह अच्छा सेवक था और बुद्धि के साथ इसमें विनम्रता भी थी। दूसरी सूचना थी कि जमाल अफ़गान, उसका भाई रुस्तम, सैयद नसीब बारहा तथा कई अन्य घायल होकर चले आए। यह भी सूचना मिली कि काँगड़ा दुर्ग का घेरा पास होगया है और दुर्गवाले संकट में पड़ गए हैं। उन सब ने दूत भेजे हैं और क्षमा माँग रहे हैं। आशा है कि बढ़ते हुए भाग्य की कृपा से दुर्ग शीघ्र विजय हो जायगा।

उसी महीने की १८ वीं, बुधवार को दिलावरखाँ काकिर मर गया। उच्चपदस्थ अमीरों में इसमें सेनापतित्व तथा अनुभव के साथ वीरता भी थी और हमारी शाहजादगी के समय से अब तक हमारी सेवा में यह सबसे बढ़ गया था। यह बराबर पूर्ण सच्चाई से तथा ठीक ठीक कार्य करता रहा और इसी से यह एक अमीर होगया। इसके जीवन के अंतकाल में सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कृपा की कि यह किश्तवार पर अधिकार कर लेने के अच्छे सेवा-कार्य में साहस के साथ सफल हो गया। आशा है कि ईश्वर इसे क्षमाप्राप्त की श्रेणी देगा। इसके पुत्रों तथा अन्य लोगों को जिन्हें यह छोड़ गया था हमने अपनी कृपाओं तथा आश्रय से सम्मानित किया और जो लोग इस योग्य थे उन्हें मंसब देकर दरबार में भर्ती कर लिया। अन्य लोगों को हमने आज्ञा दी कि वे उसके पुत्रों के साथ यथापूर्व रहें जिसमें उसका गरोह अस्तव्यस्त न हो।

इसी दिन फोर यसावल एक हीरे के साथ आया, जिसे इब्राहीम खाँ फत्हजंग ने बंगाल की खान से पाया था और हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। बंगाल का दीवान वज़ीर खाँ, जो इस दरबार के पुराने सेवकों में से एक था, अपनी मृत्यु से मरा।

गुरुवार की रात्रि में १६ वीं को कश्मीरियों ने झेलम नदी के दोनों ओर दीपकमालाएँ बालीं। यह पुरानी प्रथा है कि प्रति वर्ष इस दिन हर एक धनी-दरिद्र जिसका गृह नदी के तट पर होता है शब बरात को दीपक बालता है। हमने ब्राह्मणों से इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि इसी दिन झेलम के स्रोत का पता लगा था और प्राचीन काल से यह प्रथा चली आती है कि इस दिन 'वेथ तेरवाह' का उत्सव मनाया जाय। वेथ (वितस्ता) का अर्थ झेलम है और त्रयोदशी को यह तेरवाह कहते हैं। यह दिन शव्वाल की १३ वीं है इसलिए दीपक बाले गए। इस प्रकार वे इसे वेथ-तेरवाह कहते हैं। निस्संदेह दीपक जलाने की सजावट अच्छी थी। हम नाव पर बैठकर देखने गए। इसी दिन हमारे सौर तुलादान का उत्सव हुआ और साधारण प्रथानुसार हम सोने तथा अन्य वस्तुओं से तौले गए, जो सुपात्रों में बँटवा दिया गया। अल्ला के सिंहासन के इस विनीत प्रार्थी का ५१ वाँ वर्ष समाप्त हुआ तथा ५२ वें ने आशा के मुखको प्रकाशित कर दिया। आशा है कि हमारा जीवन खुदा को प्रसन्न करने में बीतेगा। २६ वीं को गुरु को मदिरोत्सव आसफखाँ के गृह पर हुआ और साम्राज्य के इस स्तंभ ने सेवा तथा भेंट के कर्तव्य पूरे कर अक्षय धन्यवाद प्राप्त किया।

१ म शहरिवर को वूलर झील में मुर्गाबियाँ दिखलाई पड़ीं और उसी महीने की २४ वीं को डल झील में भी दीख पड़ीं। जो पक्षी कश्मीर में नहीं मिलते उनकी सूची नीचे दी जाती है—

१. कुलंग २. सारस ३. मोर ४. जार्ज (चर्ज) ५. लगलग

६. तोगदरी ७. तोग़दाग़ (तफदाग़) ८. करवानक ६. जर्दतिलक (पलक) १०. नुकरा पा ११. अज़म पै १२. वोज़ा लगलग १३. हवासिल १४. मकिसा १५. वगुला १६. क़ाज १७. कोकिला १८. तीतर १६. शावक (शारक) २०. नोके सुर्ख २१. मूसीचा २२. हरैल २३. धिंग २४. कोयल २५. शकरख्वार २६. महोख २७. महिरलात २८. धनेश २६. गुलछरी ३०. टिटिहरी।

इनमें कुछ के फारसी नाम नहीं ज्ञात हुए या कहें कि ये फारस में होते ही नहीं इससे हमने हिंदी नाम ही दिए हैं। चरनेवाले तथा मांसाहारी पशुओं के नाम जो कश्मीर में नहीं होते इस प्रकार हैं। शेर (पीला शेर), चीता, भेड़िया, जंगली भैंसा, कालामृग, चिकारा, छोटा हरिण, नीलगाय, गोरखर, खरगोश, स्याहगोश, जंगली बिल्ली, मूशक कर्बलाई, गोह तथा साही।

इसी दिन काबुल से डाक चौकी द्वारा बहुत सा सेब आया। इनमें सबसे बड़ा छब्बीस तोले या पैंसठ मिस्काल तौल में था। जब तक इसका ऋतु रहा वह इतना अधिक आया कि हमने बहुत से अमीरों में बाँट दिया और शाही दस्तरख्वान के खानेवाले सेवकों को खिलाया।

शुक्रवार २७ वीं को हम वीर नाग, झेलम नदी के स्रोत स्थान, को देखने गए। पाँच कोस नाव पर ऊपर की ओर जाकर हम पामपुर[1] ग्राम में उतरे। इसी दिन किश्तवार से अशुभ समाचार आया कि दिलावर खाँ जब उसे विजय करके दरबार के लिए लौटा तब वह नसरुल्ला अरब को कुछ मंसबदारों के साथ वहाँ रक्षा के लिए छोड़ आया था। नसरुल्ला ने दो भूलें कीं। पहला यह कि उसने वहाँ

१—प्राचीन नाम पद्मपुर।

के जमींदारों तथा मनुष्यों के साथ कठोरता से व्यवहार किया और उनके साथ शांतिपूर्ण व्यवहार नहीं किया। दूसरे जो सहायक सेना उसके पास भेजी गई थी उसने मंसब बढ़ने की आशा में दरबार जाने तथा अपना कार्य निपटाने के लिए उससे छुट्टी माँगी। इसने उनकी बातों को मानकर एक के बाद दूसरे को छुट्टी दे दी। जब उसके पास थोड़ी सेना रह गई तब जमींदारों ने, जिनके हृदय इसके व्यवहार से घायल हो गए थे और उपद्रव करने को प्रस्तुत थे, इसे अच्छा अवसर समझकर चारों ओर से आक्रमण कर दिया। जिस पुल से यह सेना गई थी और जिससे सहायक सेना आ सकती थी उसे जलाकर उन्होंने उपद्रव तथा विद्रोह आरंभ कर दिया। नसरुल्ला दुर्ग बंद कर बैठ गया और दो-तीन दिन तक बड़ी कठिनाई से अपनी रक्षा कर सका। उसके पास रसद की कमी हो गई थी और मार्ग बंद कर दिए गए थे इसलिए युद्ध में मारा जाना निश्चित कर उसने अपने कुछ साथियों के साथ युद्ध किया और वीरता तथा साहस दिखलाकर अधिकतर लोगों सहित मारा गया तथा बचे हुए कुछ पकड़े गए।

जब यह समाचार हमें मिला तब हमने दिलावरखाँ के पुत्र जलाल खाँ को, जिसके कपोल से वीरता तथा उच्चाकांक्षा के चिन्ह प्रगट थे और जिसने किश्तवार की चढ़ाई में अच्छी सेवा की थी, नियत किया और उसे एक हजारी ६०० सवार का मंसब दिया। उसके साथ हमने उसके पिता के अनुयायियों को, जो दरबार की सेवा में भर्ती कर लिए गए थे, कश्मीर के सैनिकों की एक सेना को तथा कुछ जमींदारों और पैदल बंदूकचियों को भेजा कि उन अभागे उपद्रवियों को दमन करने में सहायक हों। जम्मू के जमींदार राजा संग्राम को भी आज्ञा दी कि वह अपने सैनिकों के साथ जम्मू के पहाड़ी मार्ग से जाय। आशा है कि विद्रोहीगण शीघ्र ही अपने कर्मों का दंड पावेंगे।

शनिवार २८ वीं को हमने साढ़े चार कोस कूच किया। काका-

पुर से एक कोस आगे बढ़कर हम नदी के तट पर पहुँचे। काकापुर की भाँग प्रसिद्ध है। यह नदी के किनारे बहुत सी स्वतः पैदा होती रहती है। रविवार २९ को हम पंजबरार[1] ग्राम में ठहरे। यह ग्राम हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज को दिया गया था। उसके वकीलों ने यहाँ एक छोटी सी इमारत तथा एक छोटा उद्यान नदी के तट पर बनवाया था। पंजबरार प्रांत के पास एक मैदान बहुत ही स्वच्छ तथा हराभरा है, जिसके बीच में सात ऊँचे चिनार वृक्ष थे और जिनके चारों ओर नदी को एक धारा बह रही थी। कश्मीर इसे सतफूली कहते हैं। कश्मीर के सैर के स्थानों में से यह एक है।

इसी दिन खानदौराँ की मृत्यु का समाचार आया, जो अपनी मृत्यु से लाहौर में मरा था। यह लगभग नब्बे वर्ष की अवस्था को पहुँचा था। यह अपने समय का एक वीर पुरुष था और युद्धस्थल में वीरता दिखला चुका था। वीरता के साथ सेनापतित्व भी इसमें था। इस राजवंश के लिए इसने बहुत सी बड़ी सेवाएँ की थीं। आशा है कि क्षमा-प्राप्त लोगों में रहेगा। इसके चार पुत्र थे पर एक भी इसके पुत्र होने के योग्य नहीं था। इसने चार लाख रुपए नगद तथा सामान छोड़ा था, जो उसके पुत्रों को दे दिया गया।

सोमवार ३० वीं को हमने पहले इंच[2] का जल प्रपात् देखा। यह ग्राम हमारे पिता द्वारा रामदास कछवाहा को दिया गया था और उसने यहाँ इमारतें तथा जलाशय बनवाए थे। निस्संदेह यह स्थान अत्यंत रमणीक तथा आनंददायक है। इसका पानी बहुत ही स्वच्छ तथा निर्मल है और मछलियाँ भी बहुत हैं।

इसके जल की तल के बालू का कण स्वच्छता के कारण
अर्द्धरात्रि में अंधा भी गिन सकता है॥

---

१. पाठा०-बांज बरारः या बोज बहारः। प्राचीन नाम विजयेश्वर है।
२. पाठा०-मबंज या अपज।

इस कारण कि हमने यह ग्राम अपने पुत्र खानजहाँ को दे दिया था इसलिए इसने जलसे का प्रबंध किया और भेंट भी दिया। हमने उसका मन रखने को साधारण सी वस्तु पसंद कर ली। इस चश्मे से आध कोस पर मच्छीभवन का जलाशय है, जिस पर राय बिहारी-चंद ने, जो हमारे पिता का एक सेवक था, एक मंदिर बनवाया था। इस सोते का सौंदर्य वर्णन करने के बाहर है और पुराने बड़े वृक्ष चिनार, सफेदार तथा काले बेंत के इसके चारों ओर लगे थे। हमने इसी स्थल में रात्रि व्यतीत किया और मंगल ३१ वीं को अछबल के जलाशय के पास पड़ाव पड़ा। पहले से इसमें जल बहुत अधिक है और इसमें एक सुन्दर जल प्रपात भी है। इसके चारों ओर ऊँचे चिनार तथा सुन्दर सफेदार वृक्षों के झुंड ऊपर से ऐसे मिले हुए हैं कि उनके नीचे बैठने के लिए सुन्दर कुंज बन गए हैं। जहाँ तक देखा जा सकता है वहाँ तक सुंदर उद्यान जाफरी फूलों का खिला दिखलाई पड़ता है मानों वह स्वर्ग का एक टुकड़ा है। बुधवार १८ वीं मिह महीने को अछबल से कूचकर वीरनाग के जलाशय के किनारे पड़ाव डाला गया। गुरुवार २ री को इसी जलाशय के पास मदिरोत्सव मनाया गया। हमने अपने व्यक्तिगत सेवकों को बैठने की आज्ञा दे दी। प्यालों को भरकर हमने काबुली सेब उन्हें खाने को दिए और संध्या को वे मस्त होकर अपने अपने निवासस्थान गए। यह सोता झेलम नदी का स्रोत है और एक पहाड़ी के नीचे है, जिसकी भूमि वृक्षों की अधिकता, हरियाली तथा घास से भरी होने के कारण दिखलाई नहीं पड़ती। जब हम शाहजादा थे तभी हमने आज्ञा दी थी कि इस स्थान के उपयुक्त यहाँ एक इमारत बनावें। वह अब पूरी हो गई। इसमें एक अठपहल तालाब बना हुआ था जो बयालीस-बयालीस गज था और गहराई चौदह गज थी। इसका जल पहाड़ की हरि-याली तथा पौधों की छाया से हरित रंग का ज्ञात होता था तथा इसमें

मछलियाँ बहुत थीं। इसके चारों ओर दालान बुर्जियों सहित बने थे और इसके आगे उद्यान निर्मित किया गया था। तालाब के किनारे से उद्यान के फाटक[1] तक एक नहर चार गज चौड़ी एक सौ अस्सी[2] गज़ लंबी तथा दो गज़ गहरी बनाई गई थी। इस तालाब के चारों ओर[3] प्रस्तर-निर्मित मार्ग बना हुआ था। इस नहर का जल इतना साफ था कि चार गज़ की गहराई होते भी एक दाना इसमें गिरे तो भी दिखलाई पड़े। पानी के नीचे उगे हुए घास आदि से वह ऐसा सुशोभित था कि क्या लिखा जाय ? वहाँ अनेक प्रकार की सुगंधित जड़ी-बूटियाँ तथा पौधे खूब लगे हुए थे और इनमें एक वृक्ष ऐसा दिखलाई पड़ रहा था, जो ठीक मोर के पूछ की तरह रंजित था तथा जल की धारा से हिलता रहता था। फूल भी स्थान स्थान पर खिले हुए थे। संक्षेप में सारे कश्मीर में ऐसा रमणीक तथा चित्ताकर्षक स्थान दूसरा कोई नहीं था। हमें ऐसा ज्ञात होता है कि कश्मीर के ऊपरी भाग का दृश्य निम्न भाग की तुलना में बहुत बढ़कर है। हर एक को इस देश में कुछ दिन ठहरकर तथा चारों ओर भ्रमण कर यहाँ का दृश्य देखकर अच्छी प्रकार आनंद लेना चाहिए। लौट चलने का समय आ गया था और बर्फ भी दर्रों के ऊपर गिरने लगा था इसलिए हमें ठहरने का अवसर नहीं मिला तथा नगर की ओर लौटने को बाध्य होना पड़ा। हमने आज्ञा दी कि पूर्वोक्त नहर के दोनों ओर चिनार वृक्ष लगाए जायँ।

शनिवार ४ थी को लोक भवन के सोते पर पड़ाव पड़ा। यह सोता भी सुंदर स्थान है। यद्यपि यह इस समय उतना अच्छा नहीं है पर

१—इकबाल नामा पृ० १६५ पर 'अंत तक' है।

२—इकबालनामा पृ० १६५ पर एक सौ छिआसी है।

३—इकबालनामा पृ० १६५ पर नहर के दोनों ओर है।

यदि इसकी मरम्मत करा दी जाय तो बहुत सुंदर हो जाय। हम ने आज्ञा दे दी कि यहाँ एक उपयुक्त इमारत बनाई जाय और सामने के जलाशय की मरम्मत कर दी जाय। मार्ग में हम एक चश्मे अंधनाग[1] से आए। यह प्रसिद्ध है कि इसमें की मछलियाँ अंधी होती हैं। हम थोड़ी देर तक इस चश्मे के पास रुके और जाल डलवाकर बारह मछलियाँ पकड़वाईं। इनमें तीन अंधी थीं और नौ को आँखें थीं। इससे ज्ञात होता है कि इसके जल में अंधा करने का प्रभाव है। अवश्य ही यह विचित्रता से खाली नहीं है। रविवार ५वीं को मच्छी भवन तथा इंच सोतों से होते हुए हम नगर पहुँच गए।

बुधवार ८वीं को कासिम खाँ के पुत्र हाशिम की मृत्यु का समाचार आया। गुरुवार ९वीं को इरादत खाँ कश्मीर का प्रांताध्यक्ष नियत किया गया। इसके स्थान पर मीर जुमला खानसामाँ के पद पर और मोतमिद खाँ अर्जमुकर्रर के पद पर नियत किए गए। दो हजारी ५०० सवार का मंसब मीर जुमला को दिया गया। शनिवार ११वीं की रात्रि को हमने नगर में प्रवेश किया। आसफ खाँ गुजरात का दीवान नियत किया गया और जम्मू के राजा संग्राम का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया।

इस दिन हमने कश्मीर के मछुवों को असाधारण प्रकार से मछली मारते देखा। ऐसे स्थान पर जहाँ कमर भर जल था, दो नावें आस-पास करके इस प्रकार चलाते थे, कि दोनों के एक-एक सिरे सटे होते थे और दूसरे सिरे चौदह-पंद्रह गज दूरी पर रहते थे। दो मछुए लंबी डाँडी लेकर दोनों नावों के किनारे बैठकर उन्हें उतनी ही दूरी पर रखते थे जिनमें वे उतनी दूरी रखते चलती रहें। इसके अनंतर

१—इकबालनामा में 'अंदोहनाक' शब्द है पर यह अनंत नाग, इसलामाबाद हो सकता है जो मार्ग में पड़ता है।

दस बारह मछुए पानी में उतर पड़े और नावों के सटे हुए अंश को हाथों से पकड़कर जल के नीचे तल को कूटते हुए आगे बढ़ने लगे। नावों के बीच में जो मछलियाँ आ जाती थीं वे इसी संकीर्ण मार्ग से निकलना चाहती थीं और मछुओं के पैरों से टकराती थीं। तत्काल एक मछुआ गोता मारता और दूसरा उसके पीठ पर झुक कर दोनों हाथों से उसे दबाता कि पानी ऊपर न फेंक दे। वह मछली पकड़ कर ऊपर निकल आता। जो इस कार्य में कुशल होते हैं वे दोनों हाथ में मछलियाँ पकड़ लाते। इनमें एक वृद्ध मछुआ था, जो हर बार दो मछलियाँ पकड़ लाता था। मछली मारने का यह ढंग पंजबरार में देखा और यह झेलम नदी की विशेषता है। यह ढंग अन्य तालाबों या नदियों में नहीं है। यह भी शिकार वर्षा ऋतु में होता है जब पानी बहुत ठंढा तथा ठिठुराने वाला नहीं होता।

सोमवार १३वीं को दशहरे का जलसा हुआ। वार्षिक प्रथानुसार खास तबेलों के तथा अमीरों के यहाँ सुरक्षित घोड़ों को सजाकर हमारे सामने लाए। इसी समय हमें स्वाँस लेने में कठिनाई तथा कमी ज्ञात होने लगी। हमें आशा है कि अंत में ईश्वर सब भला करेगा। बुधवार १५वीं को हम सफापुर तथा लार की घाटी की ओर पतझड़ की सैर को गए, जो कश्मीर नदी के नीचे की ओर है। सफापुर में एक अच्छा तालाब है, जिसके उत्तर की ओर वृक्षों से भरा पहाड़ है। अभी पतझड़ का आरंभ था इससे उसका दृश्य बहुत सुंदर था। इसमें चिनार, जर्दालू आदि सभी प्रकार के रंगबिरंगे वृक्षों की छाया तालाब में बड़ी सुंदरता से पड़ रही थी। निस्संदेह पतझड़ का सौंदर्य वसंत (बहार) के सौंदर्य से कम नहीं है।

नाश में कोई विशेषता नहीं है, नहीं तो आँखों को
पतझड़ का सौंदर्य बहार के सौंदर्य से अधिक अच्छा न लगता।

समय कम था और कूच करने की साइत आ गई थी इसलिए थोड़ा भ्रमण कर लौट आए। ये थोड़े दिन बत्तक का शिकार करने में आनंदपूर्वक व्यतीत किया। एक दिन अहेर के समय में एक मछुआ करकरा के एक बच्चे को पकड़ कर हमारे पास ले आया। यह बहुत कृश तथा दीन था। यह एक रात्रि से अधिक नहीं जीवित रहा। करकरा कश्मीर में नहीं रहता। यह हिंदुस्तान से आते या वहाँ जाते हुए कृशता तथा रोग के कारण यहाँ गिर गया था।

शुक्रवार को खानखानाँ के पुत्र रहमानदाद की मृत्यु का समाचार मिला। यह बालापुर में अपनी मृत्यु से मरा। ज्ञात हुआ कि यह कुछ दिनों से ज्वर से पीड़ित था। जब यह कुछ अच्छा हो रहा था तभी दक्खिनी सेना सहित एक दिन आ पड़े। इसका बड़ा भाई दाराब खाँ युद्ध करने के लिए सवार हुआ। जब यह समाचार इसे मिला तब यह कृशता एवं निर्बलता के होते हुए बड़ी वीरता से अपने भाई के पास पहुँचा। शत्रु को परास्त कर लौटने पर अपना जुब्बा उतारने में इसने उचित सावधानी नहीं रखी। हवा के एकाएक लग जाने से इसके शरीर में कँपकँपी आरंभ हो गई और बोलने की शक्ति जाती रही। दो तीन दिन इसी अवस्था में रहने के अनंतर इसकी मृत्यु हो गई। यह अच्छा वीर युवक था और तलवार चलाने में निपुण होते हुए उत्साही था। हर एक स्थान में खड्गविद्या के अपने नैपुण्य को दिखलाना यह अच्छा समझता था। यद्यपि अग्नि हरे तथा सूखे दोनों को जला देती है पर इससे हमें बहुत शोक हुआ और तब इसके वृद्ध पिता को कितना अधिक शोक हुआ होगा। शाहनवाज खाँ की मृत्यु से जो घाव उसके हृदय में हुआ था वह अभी भरा भी न था कि यह घाव फिर हो गया। हमें विश्वास है कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर उसे सान्त्वना तथा संतोष देगा।

गुरुवार १६वीं को खंजर खाँ का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी ३००० सवार का, कासिम खाँ का दो हजारी १००० सवार का और ख्वाजा-जहाँ के भाई मुहम्मद हुसेन का, जो काँगड़ा के बख्शी के पद पर नियत था, आठ सदी ८०० सवार का कर दिया। २७वीं इलाही महीने मिह्र को सोमवार की रात्रि में जब एक प्रहर सात घड़ी बीत गए थे तब शाही झंडे शुभ साइत में प्रसन्नता के साथ हिंदुस्तान की ओर लौटने के लिए उठाए गए। केशर इस समय खिल गया था इसलिए नगर के पास से पामपुर ग्राम को कूच किया। सारे कश्मीर में केवल इसी स्थान में केशर होता है। गुरुवार ३०वीं को इसी केशर के खेत में मदिरोत्सव मनाया गया। क्यारियों की क्यारियाँ तथा खेतों पर खेत फूले हुए थे। यहाँ की हवा से मस्तिष्क सुगंधित हो जाता है। इसकी डंठल (बुत्ता) भूमि में लगी रहती है। इस पुष्प में चार पत्ते होते हैं और इसका रंग बैंगनी होता है। यह चंपा फूल के बराबर होता है और इसके मध्य में से केशर के तीन तार निकले रहते हैं। ये फूल बोते है। अच्छे वर्ष में चार सौ मन वर्तमान तौल से होता है जो खुरासानी तौल से तीन हजार दो मन[1] होता है। यहाँ की प्रथा है कि आधा शासक का होता है और आधा प्रजा का। दस रुपए में एक सेर बिकता है। कभी कभी बाजार की दर घट बढ़ जाती है। यह भी यहाँ की प्रथा है कि ये फूलों को तोड़कर लाते हैं और जैसा प्राचीन काल से चला आता है कि ये उसका आधा तौल निमक मजदूरी में लेते हैं। कश्मीर में निमक नहीं होता और यह हिंदुस्तान से लाया जाता है। कश्मीर की अन्य विशिष्ट वस्तुएँ कलगी के पर तथा शिकारी पक्षी होते हैं। प्रति वर्ष दस सहस्र सात सौ[2] पर पाए जाते हैं। बाज तथा जुर्रे प्रायः दो सौ साठ प्रति वर्ष फँसाए जाते

---

१. इकबालनामा पृ० १६८ पर बत्तीस सौ मन है।
२. इकबालनामा पृ. १६८ पर दो सहस्र सात सौ है।

हैं। यहाँ बाशे भी बहुत हैं और घोंसले से पकड़े हुए बाशे अच्छे होते हैं। इलाही महीने आबाँ की १ ली शुक्रवार को पामपुर से कूचकर खानपुर में पड़ाव डाला।

हमें सूचना मिली थी कि हमारे भाई शाह अब्बास का राजदूत जंमील बेग लाहौर के पास पहुँच गया है इसलिए हमने एक खिलअत तथा व्यय के लिए तीस सहस्र रुपए अजदुद्दौला[1] अंजू के पुत्र मीर हुसामुद्दीन के हाथ उसके पास व्यय के लिए भेज दिए। हमने यह भी आज्ञा दी कि राजदूत की अभ्यर्थना में वह जो कुछ व्यय करे वह पाँच सहस्र रुपए तक उसे दे दिया जाय। इसके पहले हमने आज्ञा दे रखी थी कि कश्मीर से पार्वत्यस्थान के अंत तक हर पड़ाव पर हमारे तथा बेगमों के निवास के लिए इमारतें बना दी जायँ क्योंकि ठंढी ऋतु में खेमों में नहीं रहना चाहिए। यद्यपि इस पड़ाव की इमारत बन चुकी थी पर वह अभी नम थी तथा चूने की गंध आती थी इसलिए हम लोग खेमों में ही रहे। शनिवार दूसरी को कलमपुर में ठहरे। हमसे कई बार सूचित किया गया था कि हीरापुर[2] के पास एक बड़ा ऊँचा तथा विचित्र जलप्रपात् है और वह मार्ग से तीन-चार कोस बाएँ हटकर था इसलिए हम शीघ्रता से उसे देखने गए। इसकी प्रशंसा में क्या कहा जा सकता है ? जल ऊपर से तीन-चार श्रेणियों से होकर गिरता है। हमने ऐसा सुंदर जलप्रपात् नहीं देखा था। निस्संदेह यह दृश्य दर्शनीय है, बहुत ही आकर्षक तथा आश्चर्यजनक है। हमने वहाँ दिन के तीसरे प्रहर तक समय आनंद के साथ व्यतीत किया और मनभर कर वह दृश्य देखता रहा। अवश्य ही बादल तथा वर्षा के समय यह स्थान जंगलीपन से हीन नहीं रहता। तीसरा प्रहर बीत जाने पर

---

१. इकबालनामा पृ० १६९ पर मीर जमालुद्दीन हुसेन अंजू है। यह पदवी ज्ञात होती है।

२. प्राचीन नाम सूर पुर था जिससे हूर पुर होगया।

संध्या को हम हीरापुर चले आए और वहीं रात्रि व्यतीत किया। सोमवार ४ थी को वारी ब्रार[1] की घाटी पार कर उसके सिरे पर स्थित पीर पंजाल में पड़ाव बनाया। इस दर्रे के पथरीलेपन तथा इस मार्ग की कठिनाइयों के संबंध में हम क्या लिखें? विचार को भी इसे पार करना कठिन है। इन कुछ अंतिम दिनों में बर्फ बार बार गिरी थी, पहाड़ सब श्वेत होगए थे और मार्ग के बीच में कई स्थानों पर बर्फ इकट्ठा होगया था, जिससे घोड़े के खुर उस पर नहीं जम रहे थे और सवार बड़ी कठिनाई से उसे पार कर सकता था। सर्व शक्तिमान ईश्वर की कृपा हम लोगों पर थी कि आज दिन बर्फ नहीं गिरा। जो आगे जा चुके थे उन्हें इसका लाभ हुआ और जो उनके पीछे आए बर्फ में आए। मंगलवार ५ वीं को पीरपंजाल के दर्रे से चलकर पोशाना में पड़ाव पड़ा। यद्यपि इस ओर ढाल थी पर बहुत ऊँची होने से अधिकतर लोग पैदल ही गए। बुधवार ६ वीं को बहरामगल्ला में पड़ाव पड़ा। इस ग्राम के पास एक जलप्रपात् तथा एक अच्छा सोता है। हमारे आज्ञानुसार यहाँ एक चबूतरा बैठने के लिए बनाया गया था। वास्तव में यहाँ का दृश्य अच्छा है। हमने आज्ञा दी कि एक शिला पर हमारे इधर से जाने की तारीख खोदकर उस चबूतरे के ऊपर लगादें। बेबदलखाँ[2] ने कुछ शेर बनाए और हमारे सौभाग्य का यह चिन्ह कविता में समय-पट पर स्मारक रूप में होगया। इस मार्ग पर दो जमींदार हैं, जिनके अधीन उस मार्ग के आने जाने का कुल प्रबंध है। ये कश्मीर देशकी वास्तविक कुंजियाँ हैं। वे इनमें एक को महदी नायक तथा दूसरे को हुसेन नायक कहते हैं। हीरापुर से बहरामगल्ला तक के मार्ग का प्रबंध इन्हीं के हाथ में है। महदी नायक का पिता बहराम

---

१. पाठा०—मारी या नारी ब्रार।

२. बेबदलखाँ सईदाई गीलानी। देखिए मुग़ल दरबार भा. ४ पृ. १६८-७०।

नायक कश्मीरी शासन के समय एक प्रधान पुरुष था। जब वहाँ का शासन शाही सेवकों के हाथ में आया तब मिर्जा यूसुफखाँ ने अपनी अध्यक्षता के समय बहराम नायक को मार डाला। अब यह दोनों ही के अधिकार तथा रक्षा में है। यद्यपि वाहरी व्यवहार दोनों का अच्छा है पर वास्तव में दोनों एक दूसरे से पूरी शत्रुता रखते हैं।

इसी दिन शेख इब्न यामीन मर गया, जो एक पुराना विश्वस्त सेवक था। हमारे पूर्ण विश्वास के कारण हमारी अफीम तथा आब-दारखाना का कुल प्रबंध इसीके हाथ में था। जिस रात्रि हम पीर पंजाल के कोतल के ऊपर ठहरे हुए थे तब तक खेमे तथा सामान नहीं आए थे। यह निर्बल पुरुप था इससे ठंढ का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह ऐंठ गया और बोलने की शक्ति मारी गई। यह दो दिन जीवित रहा और तब मर गया। हमने अफीम की सेवा खवासखाँ को दी और जल-विभाग पर मूसवी खाँ को नियत किया। गुरुवार ७ वीं को थाना में पड़ाव पड़ा। बहरामगल्ला में बहुत से बंदर दिखलाई दिए और इस पड़ाव से जलवायु, भाषा, पहिरावा तथा पशुओं में बहुत भिन्नता दिखलाई पड़ने लगी, जैसी गर्म प्रांतों में विशेष कर होती है। यहाँ के लोग कश्मीरी तथा हिंदी दोनों बोलते हैं। स्पष्टतः इनकी भाषा हिंदी है और ये कश्मीर के पास होने के कारण कश्मीरी भी बोल लेते हैं। सक्षेपतः यहीं से लोग हिंदुस्तान में प्रवेश करते हैं, स्त्रियाँ ऊनी कपड़े नहीं पहिरतीं और हिंदुस्तानी स्त्रियों की तरह नाक में नत्थ आदि पहिरती हैं।

शुक्रवार ८ वीं को राजौर में पड़ाव हुआ। यहाँ के लोग पूर्वकाल में हिंदू थे और यहाँ के जमींदार राजा कहे जाते थे। सुलतान फीरोज ने इन्हें मुसलमान बनाया पर ये अब भी राजा कहलाते हैं। अभी तक इनमें मूर्खता-काल की प्रथाएँ बची हुई हैं। इनमें एक यह है कि जिस

प्रकार हिंदू स्त्रियाँ अपने पतियों के शवों के साथ जल जाती हैं उसी प्रकार यहाँ की स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ में कब्र में गाड़ दी जाती हैं। हमने सुना कि अभी इधर ही एक दस-बारह वर्ष की लड़की को उसके इसी अवस्था के पति के शव के साथ गाड़ दिया है। यह भी है कि जब किसी दरिद्र मनुष्य को लड़की होती है तो उसे गला घोंटकर मार डालते हैं। ये हिंदुओं से संबंध करते हैं और लड़की देते-लेते हैं। लेना तो अच्छा है पर देना, ईश्वर न करे। हमने आज्ञा दी कि अब से वे ऐसा न किया करें और जो भी ऐसा करेगा उसे प्राणदंड दिया जायगा। यहाँ एक नदी है, जिसका जल वर्षाऋतु में बहुत विषैला हो जाता है। यहाँ के बहुत से आदमियों को घेंघा निकल आता है और पीले तथा निर्बल होते हैं। राजौर का चावल कश्मीर के चावल से बहुत अच्छा होता है। यहाँ पहाड़ियों की तलहटी में सुगंधित बनफ्शे के स्वतः लगे हुए पौधे बहुत हैं।

रविवार १० वीं को हमने नौशहरा में पड़ाव डाला। यहाँ हमारे पिता की आज्ञा से एक प्रस्तरनिर्मित दुर्ग बना था, जिसमें कश्मीर के प्रांताध्यक्षकी ओरसे एक सैनिक टुकड़ी थाना बनाकर रहती थी। सोमवार को चौकी हट्टी में पड़ाव रहा। मुराद नामक एक चेला ने इस स्थान की इमारत को पूरा करने में बड़ा प्रयत्न किया था और अच्छा किया था। मंगलवार १२ वीं को भीमबर में ठहरे। यह दिन कोतलों तथा पहाड़ियों में व्यतीत कर हमने हिंदुस्तान के चौड़े मैदानों में प्रवेश किया। शिकारियों को पहले ही से भेज दिया गया था कि वे भीमबर, गिरझाक तथा मखियाल में कमूरगाह अहेर का प्रबंध करें। बुधवार तथा गुरुवार को अहेरों को उनमें हाँक दिया। शुक्रवार को हमने अहेर का आनंद लिया। पहाड़ी भेड़ आदि लगभग छप्पन पकड़ी गईं। इसी दिन राजा सारंगदेव का मंसब, जो हमारा निजी सेवक था,

बढ़ाकर आठ सदी ४०० सवार का कर दिया। शनिवार १६ वीं को हम गिरझाक की ओर गए और पाँच यात्राओं में झेलम नदी के किनारे पहुँच गए। गुरुवार २१ वीं को गिरझाक में कमूरगाह अहेर खेला। साधारणतः जितने पशु मिल जाते हैं उससे भी कम मिले इससे हमें संतोष नहीं हुआ सोमवार २५ वीं को मखियाल के अहेरस्थल में हमने प्रसन्नता से अहेर खेला और इसके अनंतर दस यात्राओं में हम जहाँगीराबाद के शिकारगाह में पहुँच गए। जब हम शाहजादा थे तब यह हमारा अहेर खेलने का स्थान था। बाद में हमने यहाँ अपने नाम पर एक गाँव बसाया और एक छोटी इमारत बनवाकर इसको सिकंदर मुईन (मई) को दे दिया, जो हमारा सबसे अच्छा शिकारी था। जब हम राजगद्दी पर बैठे तब इसे परगना बनाकर उसे जागीर में दिया। हमने आज्ञा दी कि यहाँ शाही निवासस्थान के योग्य इमारत बनावें तथा उसके पास तालाब एव मनार भी बनाया जाय। उसकी (सिकंदर) मृत्यु पर यह परगना इरादतखाँ को जागीर में दिया गया और उसे इमारतों के प्रबंध का भार भी दिया। अब सब बड़ी सुंदरता से पूरी होगई। निस्संदेह तालाब बहुत भारी है और उसके बीच में बड़ी सुंदर इमारत बनी है। सब इमारतों में मिलाकर डेढ़ लाख रुपए व्यय हुए। वास्तव में यह शाही शिकारगाह है। गुरुवार तथा शुक्रवार को यहाँ ठहरकर हमने अनेक प्रकार के अहेर का आनंद उठाया। लाहौर के अध्यक्ष कासिम खाँ ने सेवा में उपस्थित होकर पचास मुहरें भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस पड़ाव से एक कूच कर हम मोमिन इश्कबाज़ के बाग़ में उतरे, जो लाहौर की नदी रावी के किनारे स्थित है और जिसमें लगभग पचास ऊँचे चिनार के वृक्ष तथा सुंदर सरो के पौधे हैं। यह अच्छा उद्यान है। सोमवार ६ वीं इलाही महीने आज़र को, जो ५ मुहर्रम

सन् १०३० हि०[1] होता है, इंद्र नामक गज पर सवार होकर हम मार्ग में सिक्के लुटाते हुए नगर को गए। तीन प्रहर दो घड़ी दिन व्यतीत होने पर निश्चित शुभ साइत में हमने शाही महल में प्रवेश किया। हम उस नई इमारत में, जो अभी ही पूरी हुई थी और जिसके सुंदर निर्माण में मामूर खाँ ने बहुत प्रयत्न किया था, प्रसन्नता तथा शुभता के साथ उतरे। अधिक अतिरंजना न करते हुए भी आकर्षक निवासगृह तथा बैठकें बड़ी सुंदरता तथा सुकुमारता से बनाई गई थीं और कुशल चित्रकारों के चित्रों से वे अच्छी प्रकार सजाई गई थीं। सुंदर हरे भरे उद्यान हर प्रकार के फूलों तथा सुगंधित जड़ियों से युक्त आँखों को बड़े सुखद जान पड़ते थे। शैर—

पैर से सिर तक जिधर भी हम देखते थे।
हृदय के अंचल को दृष्टि खींचती है कि यही स्थान है।

ज्ञात हुआ कि इन सब इमारतों पर कुल सात लाख रुपए व्यय हुए, जो ईरान के तेईस सहस्र तूमान के बराबर होता है।

इसी दिन काँगड़ा दुर्ग के विजय का शुभ संवाद मिला जिससे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस बड़ी कृपा तथा भारी विजय के धन्यवाद में, जो उस महान् दाता की विशेष कृपा है, हमने विनम्रता का सिर उस कृपालु स्रष्टा के सिंहासन के आगे झुकाया और प्रसन्नता तथा आनंद के डंके को खूब बजाया। काँगड़ाका प्राचीन दुर्ग लाहौर के उत्तर में पार्वत्यस्थान के बीच में स्थित है और अपनी दृढ़ता तथा दुर्भेद्यता के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग को किसने बनवाया था इसे ईश्वर ही जानता है। पंजाब प्रांत के जमींदारों का विश्वास है कि अब तक किसी अन्य जाति ने या किसी अजनबी ने इस पर अधिकार करने का साहस नहीं किया था। ज्ञान अल्लाह से है! पर वास्तव में जब से इस्लाम की

आवाज़ उठी और मुहम्मद का स्थापित किया हुआ धर्म हिंदुस्तान में आया तब से किसी भी ऐश्वर्यशाली सुलतान ने इसे विजय नहीं किया था। सुलतान फीरोज शाह अपनी कुल शक्ति के साथ स्वयं इसे विजय करने गया और बहुत दिनों तक घेरा डाले रहा। वह समझ गया कि दुर्ग इतना दृढ़ है कि जब तक कि दुर्गवालों के पास युद्धीय सामान तथा रसद रहेगा तब तक विजय नहीं मिल सकती तब वह निरुपाय होकर राजा के आकर अभिवादन करने पर हट गया। लोग कहते हैं कि राजा ने भेंट तथा भोज की तैयारी की और उसकी प्रार्थना पर सुलतान दुर्ग के भीतर गया। सुलतान ने उसके चारों ओर निरीक्षण करने के अनंतर उससे कहा कि हमारे ऐसे बादशाह को भीतर लाकर दिखलाना सावधानी की कोटि से बाहर है। जो सैनिकगण साथ हैं यदि वे उस पर आक्रमण कर दुर्ग पर अधिकार करलें तो वह क्या कर सकता है ? राजा ने अपने आदमियों को संकेत किया और तुरंत छिपे स्थान से सशस्त्र सुसज्जित वीरों की एक सेना निकल आई तथा सुलतान को अभिवादन किया। सुलतान सशंकित होगया और उसे इन सैनिकों द्वारा आक्रमण किए जाने की तथा किसी षड्यंत्र की आशंका होगई। राजा ने तुरंत आकर सिर झुकाया और कहा कि हमारे में सिवा सेवा तथा अधीनता के कोई दूसरा विचार नहीं है पर जैसा अभी हुजूर के मुख से निकला है हम दूरदर्शिता से सावधान हैं क्योंकि सदा समय एक सा नहीं रहता। सुलतान ने उसकी प्रशंसा की। राजा कुछ पड़ाव तक उसके साथ गया और तब लौटने की छुट्टी पाई। इसके अनंतर दिल्ली के तख्त पर जो भी बैठा उसीने काँगड़ा विजय करने के लिए सेना भेजी पर कुछ फल नहीं निकला, हमारे श्रद्धेय पिता ने भी एक विशाल सेना हुसेन कुलीखाँ की अधीनता में भेजी थी, जिसने अच्छी सेवा करके खानजहाँ की पदवी प्राप्त की थी। जिस समय घेरा चल रहा था उसी समय इब्राहीम हुसेन मिर्जा का विद्रोह हुआ। वह

अकृतज्ञ गुजरात से भागा और पंजाब की ओर उपद्रव तथा अशांति मचाने के लिए चला आया। खानजहाँ को बाध्य होकर घेरा उठाना पड़ा और इस विद्रोह को दमन करने में प्रयत्नशील होना पड़ा। इस प्रकार दुर्ग के अधिकार का कार्य रुक गया। शाही मस्तिष्क में यह विचार बराबर बना रहा कि इच्छित प्रिय ने सौभाग्य के गुप्त स्थान से अपना मुख नहीं दिखलाया। जब सर्व-ऐश्वर्य परमेश्वर की कृपा से साम्राज्य का सिंहासन इस प्रार्थी द्वारा सुशोभित हुआ तब (जिहादों) पवित्र युद्धों में से एक यह भी हमारे लिए आवश्यक होगया। पहले हमने पंजाब के प्रांताध्यक्ष मुर्तजाखाँ के अधीन युद्ध-कुशल वीर सैनिकों की एक सेना दुर्ग को विजय करने के लिए भेजा। यह महत्वपूर्ण कार्य पूरा नहीं हुआ था कि उसकी मृत्यु होगई। इसके अनंतर राजा बासू के पुत्र जौहर मल (सूरजमल) को यह कार्य सौंपा गया। हमनें इसे सेना का पूरा आधिपत्य देकर भेजा। इस दुष्ट ने विद्रोह तथा अकृतज्ञता का मार्ग पकड़कर दुष्कार्य किए और सेना में अस्तव्यस्तता फैल गई, जिससे यह कार्य फिर कुछ समय के लिए टल गया। अधिक समय नहीं बीता था कि इस अकृतज्ञ को इसके दुष्कर्मों का फल मिल गया और यह मर गया, जैसा कि यथास्थान वर्णन किया जा चुका है। अंत में खुर्रम ने यह कार्य अपने ऊपर लिया और अपने सेवक सुंदर को शीघ्रता से भेजा। बहुत से शाही सेवकगण भी इसकी सहायता के लिए साथ भेजे गए। १६ शव्वाल सन् १०२९ हि० (५ सितंबर सन् १६२० ई०) को सेनाओं ने दुर्ग घेरकर मोर्चे बाँधे। दुर्ग से आने-जाने के मार्गों को सावधानी से रोक कर रसद का जाना बंद कर दिया। क्रमशः दुर्गवाले कष्ट में पड़ने लगे और जब दुर्ग में अन्न नहीं रह गया तब चार महीने तक वे सूखी घास को उबालकर निमक से खाते रहे। जब इस पर भी नाश प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ने लगा और बचाव की आशा नहीं रही तब ये शरण में आए और दुर्ग पर अधिकार दे दिया।

गुरुवार १ मुहर्रम सन् १०३० हि० (१६ नवंबर सन् १६२० ई०) को वह विजय, जो बड़े वैभवशाली सुलतानों को अप्राप्य तथा अदूरदर्शियों को बहुत दूर थी, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने इस प्रार्थी को अपनी कृपा तथा दया से प्राप्त करा दी। सेनाओं को, जिसने इस कार्य में प्रशंसनीय सेवा की थी, उनके प्रयत्नों तथा योग्यता के अनुसार मंसब में उन्नति एवं पदवियाँ दी गईं।

गुरुवार ११ वीं को खुर्रम की प्रार्थना पर हम उस के नवनिर्मित गृह पर गए। उसकी भेंट में से हमें जो पसंद आया उसे स्वीकार किया। तीन हाथी निजी हथसाल में रखे गए। उसी दिन हमने अब्दुल्अजीज खाँ नक्शबंदी को काँगड़ा सरकार का फौजदार नियत किया और उसका मंसब दो हजारी १५०० सवार का निश्चित कर दिया। हमने एतकाद खाँ को एक खास हाथी दिया। अलफखाँ कायमखानी खाँ को काँगड़ा दुर्ग का अध्यक्ष नियत कर जाने की छुट्टी दी और उसका मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया। मुर्तजाखाँ के दामाद शेख फज्लुल्ला को उसके साथ नियत कर ऊपरी दुर्ग में रहने की आज्ञा दी।

इसी महीने में शनिवार १३ वीं की रात्रि में चंद्रग्रहण हुआ। उच्चतम तथा सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के सिंहासन पर विनम्रता प्रगट करने का कुल कर्तव्य पूरा कर हमने नगद तथा वस्तुएँ दान में दरिद्रों, फकीरों तथा सुपात्रों में वितरित किया। इसी दिन जम्बीलबेग ईरान के शासक का राजदूत सेवा में उपस्थित हुआ और अभिवादन करने के उपरांत हमारे उच्चकोटि के भाई का पत्र हमारे समक्ष उपस्थित किया, जो सत्यता एवं पूर्ण मित्रता के भावों से भरा हुआ था। इसने बारह अब्बासी सिक्के, साज़ सहित चार[1] घोड़े, तीन सफेद बाज, पाँच खच्चर,

---

१. इकबालनामा पृ० १७५ पर चौदह दिया है।

पाँच ऊँट, नौ कमान तथा नौ टेढ़ी तलवारें भेंट कीं। शाह ने खान-आलम के साथ ही आने की छुट्टी दी थी पर कई आवश्यक कार्यों के कारण यह उसके साथ नहीं आ सका। इस दिन वह दरबार पहुँचा। हमने इसे बहुत अच्छा खिलअत, जीगा, जड़ाऊ तुर्रः तथा जड़ाऊ खंजर दिया। विसाल बेग और हाजी नेअमत, जो इसके साथ आए थे, हमारी सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुए। महाबतखाँ का पुत्र अमानुल्ला का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया। महाबतखाँ की संस्तुति पर हमने मुबारिजखाँ अफगान के मंसब में ३०० सवार बढ़ा दिए और उसका मंसब दो हजारी १७०० सवार का कर दिया। एक सौ घोड़े मंसबेकबक में भी बढ़ाए गए। हमने अब्दुल्लाखाँ और लश्करखाँ को जाड़े के खिलअत भेजे। कासिमखाँ की प्रार्थना पर नगर के पास उसके उद्यान में गए और मार्ग में दस सहस्र 'चरन' लुटाए। उसकी भेंट में से हमने एक लाल, एक हीरा तथा कुछ कपड़े स्वीकृत किए।

रविवार २१ वीं की रात्रि में अग्गल पड़ाव शुभ साइत में आगरे की ओर रवाना हुआ। बर्क़ंदाज़खाँ दक्षिण की सेना के तोपखाने का दारोग़ा नियत हुआ। शेख इसहाक़ काँगड़ा के काम पर नियत किया गया। अल्लहदाद अफगान के भाई को कैद से छुटकारा दिलाकर उसे दस सहस्र रुपए दिए। हमने एक सफेद बाज खुर्रम को दिया। गुरुवार २६ वीं को सदा के समान उत्सव हुआ। ईरान के शाह की भेंट जो जंबीलबेग के साथ भेजी गई थी हमारे सामने उपस्थित की गई। हमने सुलतान हुसेन को एक हाथी और मुल्ला मुहम्मद कश्मीरी को एक सहस्र रुपए दिए। महाबतखाँ की प्रार्थना पर सरदार अफगान का मंसब एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। ग्वालिअर के राजा रूपचंद ने काँगड़ा के सेवाकार्य में बड़ी तत्परता दिखलाई थी इसलिए

प्रधान बख्शियों को आज्ञा दी गई कि उसका आधा राज्य उसे निष्कर भेंट में दिया जाय और आधा वेतन-जागीर में।

३ री को हमने मदारुल्‌मुल्क एतमादुद्दौला की पुत्री को शहरयार के लिए माँगा और एक लाख रुपए में नगद तथा सामान साचक की रस्म में भेजा। अधिकतर अमीर तथा मुख्य सेवक गण उसके गृह पर भेंट लेकर गए। उसने बड़े समारोह से जलसा किया। आशा है कि यह उसके लिए शुभ हो। साम्राज्य के उस सर्दार ने कई ऊँची इमारतें तथा अपने गृह में अत्यंत सजे हुए कमरे बनवाए थे इसलिए उसने जलसे में हमें निमंत्रित किया। हम बेगमों के साथ वहाँ गए। उसने भोज का भारी प्रबंध किया था और उपयुक्त भेंट भी हमारे सामने उप-स्थित की। उसे प्रसन्न करने के लिए हमें जो पसंद आए उसे स्वी-कार किया। इसी दिन पचास सहस्र रुपए जंबीलबेग एलची को दिए। जबर्दस्तखाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। कासिमखाँ के भाई मकसूद का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का और मिर्जा रुस्तम के पुत्र मिर्जा दक्खिनी का पाँच सदी २०० सवार का कर दिया।

ऐसे ही शुभ समय में जब विजय तथा अधिकार के झंडे कश्मीर में, जो सदा बहार का प्रांत है, प्रसन्नता के साथ सैर तथा शिकार में लगे थे उस समय दक्षिण के प्रांतों से वहाँ के अधिकारियों के भेजे बराबर समाचार आते रहे कि विजयी झंडों के साम्राज्य के केन्द्रस्थान से दूर चले जानेके कारण दक्षिण के शासकों ने, दुष्टता से अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़कर विद्रोह कर दिया है तथा उपद्रव कर रहे हैं और अपनी सीमा के बाहर पैर बढ़ाकर अहमदनगर तथा बरार के अनेक सरकारों पर अधिकार कर लिया है। यह भी बार बार सूचना मिली कि इन दुष्टों का मुख्य उद्देश्य खेतियों तथा चरागाहों का लूटना है।

जब पहली बार संसार विजयी झंडे दक्षिण प्रांतों को विजय करने के लिए गए और खुर्रम हरावल के साथ आगे बुर्हानपुर गया तब उन विद्रोहियों ने प्रकृति के अनुसार कपटपूर्ण बहानों से उसे अपना मध्यस्थ बनाया और साम्राज्य के कुल अधिकृत स्थानों को छोड़ दिया। उन्होंने कर के रूप में बहुत सा धन और सामान भेजा और प्रतिज्ञा की कि वे अधीनता से कभी विमुख न होंगे और न कभी अपनी सीमा के बाहर पैर रखेंगे। यह सब पूर्व पृष्ठों में उल्लिखित हो चुका है। खुर्रम की प्रार्थना पर हम शादियाबाद मांडू दुर्ग में कुछ दिन के लिए ठहर गए और इसके मध्यस्थ होने तथा उनके रोने-गाने व नम्रता प्रगट करने पर उन्हें क्षमा कर दिया था।

परन्तु उन सब ने अपने उपद्रवी दुष्ट प्रकृति के कारण जब संधि तोड़ दी तथा अधीनता और सेवा के मार्ग से विमुख हो गए तब हमने विशाल सेना पुनः उसको अधीनता में भेजा कि उन्हें अपने दुष्कर्म का पूरा दंड मिले और अन्य दुष्टों तथा अभागों को उपदेश मिले। परंतु उसे काँगड़ा का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था इसलिए उसने अधिकतर अपने अनुभवी मनुष्यों को वहाँ भेज दिया था। इस कारण कुछ दिनों तक वह प्रबंध ठीक नहीं कर सका। अंत में समाचार पर समाचार आने लगा कि शत्रु ने बड़ी शक्ति संचित कर ली है और साठ सहस्र दुष्ट सवारों ने इकट्ठे होकर बादशाही प्रांतों पर अधिकार कर लिया है। जहाँ जहाँ शाही थाने थे उन्हें उठाकर वे सब मेहकर में इकट्ठे हो गए हैं। तीन महीने तक शाही सेनाएँ अपने दुष्ट शत्रुओं से बराबर युद्ध करती रहीं और इस समय के बीच में तीन घोर युद्ध हुए, जिसमें तीनों बार बादशाही सेना उन अभागे विद्रोहियों से प्रबल रही। अन्न तथा दाना-घास किसी मार्ग से पड़ाव पर नहीं पहुँच पाता था क्योंकि शत्रु बादशाही सेना के चारों ओर लूटमार मचाए हुए था इससे अन्न का अकाल पड़ गया तथा पशुओं को बड़ा

कष्ट होने लगा। निरुपाय होकर वे बालाघाट से नीचे उतर आए और बालापुर में मोर्चा बाँधा। शत्रु का पीछा करने में साहस बढ़ गया और वह बालापुर के आस पास लूट मचाने लगा। बादशाही सेना के छ-सात सहस्र सवारों को, जो अच्छे घोड़ों पर सवार थे, चुनकर शत्रु के पड़ाव पर आक्रमण करने भेजा गया। शत्रु की संख्या साठ सहस्र सवार थी। संक्षेप में घोर युद्ध हुआ और शत्रु का पड़ाव लूट लिया गया। उनमें से बहुतों को मारकर तथा कैद कर ये कुशलपूर्वक लूट के साथ लौटे। इनके लौटते ही उन दुष्टों ने पुनः चारो ओर से आक्रमण कर दिया और ये लड़ते हुए अपने पड़ाव तक लौट आए। लगभग एक सहस्र मनुष्य दोनों पक्ष के मारे गए। इस युद्ध के अनंतर शाही पड़ाव चार महीने तक बालापुर में रहा पर जब अन्न का बहुत कष्ट होने लगा तब बहुत से श्रमिक भागकर शत्रुके पास चले गए और बराबर इनके झुंड राजद्रोह के मार्ग पर चलकर शत्रु के यहाँ भर्ती हो गए। इस कारण वहाँ ठहरना अनुचित समझकर शाही सेना बुर्हानपुर चली आई और यहाँ छ महीने तक पड़ी रही। बरार तथा खानदेश के बहुत से परगने शत्रु के अधिकार में चले गए और वे कृषकों तथा गरीबों पर अत्याचार कर लगान वसूल करने लगे। बादशाही सेना बहुत कष्ट झेल चुकी थी और पशुगण बुरी हालत में थे इसलिए वे नगर से निकलकर शत्रु को दंड नहीं दे सकते थे। इससे उन अदूरदर्शियों का घमंड तथा उद्धतता बहुत बढ़ गई। ठीक इसी समय शाही झंडे राजधानी लौट आए और ईश्वरी कृपा से काँगड़ा विजय हो गया।

इस पर हमने शुक्रवार ४ दै को खुर्रम को उस ओर भेजा और उसे खिलअत, तलवार, तथा एक हाथी उपहार दिया। नूरजहाँ बेगम ने भी इसे एक हाथी दिया। हमने उससे कह दिया कि दक्षिण प्रांत

विजय करने के अनंतर विजित प्रांत से दो[1] करोड़ दाम पुरस्कार ले लेगा। छ सौ पचास मंसबदार, एक सहस्र अहदी, एक सहस्र तुर्की बंदूकची तथा एक सहस्र पैदल बंदूकची, विशाल तोपखाना तथा बहुत से हाथी उसके साथ भेजे गए, जो उस प्रांत के इकतीस सहस्र सवार सेना के सिवा थे। हमने उसे एक करोड़ रुपए विजयी सेना के व्यय के लिए दिए। इस सेवा पर नियुक्त सभी शाही सेवकों ने अपनी स्थिति के अनुकूल घोड़े, हाथी तथा खिलअत पाए।[2]

उसी शुभ साइत व घड़ी में बादशाही झंडे आगरे की ओर चले और नौ शहर[3] में पडाव पड़ा। मुहम्मद रिज़ा जाबिरी बंगाल का दीवान तथा ख्वाजा मुल्की वहीं का बख्शी नियत किए गए और इनके मंसब बढ़ाए गए। राजा कर्ण का पुत्र जगतसिंह अपने देश से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसी महीने की ६ वीं को राजा टोडरमल के तालाब पर खुले मैदान में बादशाही पड़ाव पड़ा। यहाँ हम चार दिन तक ठहरे रहे। इसी दिन दक्षिण प्रांत को विजय करने के लिए जाने वाले कुछ मंसबदारों का मंसब इस प्रकार बढ़ाया गया। जाहिद खाँ का मंसब एक हजारी ४०० सवार का था उसे एक हजारी ५०० सवार का कर दिया, हृदयनारायण हाड़ा का मंसब बढ़ाकर नौ सदी ६०० सवार का कर दिया, खानदौराँ के पुत्र

---

१. इकबालनामा में दस करोड़ दिया है।

२. यहीं इकबाल नामा में पृ० १७६ पर लिखा है कि 'खुसरू के संबंध में जो बड़ले के कारागार में कैद था और जिसकी शाही सेवकगण रक्षा करते थे, आज्ञा हुई कि उसे अपने साथ लिवा जाकर वह पुत्र (खुर्रम) अपनी इच्छा के अनुसार, जिससे उसे संतोष हो, कैद में रखे।'

३. शहर के बाहर।

याकूब को आठ सदी ४०० सवार का मंसब दिया और इसी प्रकार बहुत से शाही सेवकों का उनकी योग्यता के अनुसार मंसब बढ़ा दिया गया। मोतमिद खाँ शाही सेना का बख्शी तथा वाकेआनवीस नियत किया गया और उसे एक तोग़ (झंडा) प्रदान किया गया। कमायूँ के राजा लक्ष्मीचंद की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई जिसमें बाज़, जुर्रे तथा अन्य शिकारी जानवर थे। राणा कर्ण के पुत्र जगतसिंह को एक निजी घोड़ा तथा जीन देकर दक्षिण की सहायक सेना के रूप में जाने की छुट्टी दी। राजा रूपचंद ने एक हाथी तथा एक घोड़ा पाकर सम्मानित हो अपनी जागीर पर जाने की छुट्टी पाई। १२ वीं को हमारा 'पुत्र' खानजहाँ मुलतान का प्रांताध्यक्ष नियत होकर वहाँ गया। इसे एक पूरा खिलअत नादिरी सहित, एक जड़ाऊ खंजर, साज सहित एक खास हाथी, एक मादा हाथी, खदंग नामक एक खास घोड़ा और एक जोड़ बाज दिया। सैयद हिजब्रखाँ एक हजारी ४०० सवार का मंसबदार था, जिसे पाँच सदी २०० सवार की उन्नति देकर खानजहाँ के साथ जाने की छुट्टी दी। मुहम्मद शफी मुलतान प्रांत का बख्शी तथा वाकेआनवीस नियत किया गया। भवाल को, जो एक पुराना सेवक था, तोपखाने का प्रधान बनाकर राय की पदवी दी। १३ वीं को गोविंदवाल की नदी के किनारे शाही पड़ाव पड़ा और चार दिन वहाँ ठहरे। जयसिंह नामक एक खास हाथी एक हथिनी के साथ महाबत खाँ को दिया गया और उसके नौकर सफीया के द्वारा भेजा गया। बंगश प्रांत के सर्दारों के लिए खिलअत ईसा बेग के हाथ भेजे गए।

१७ वीं को हमारे चांद्र तुलादान का जलसा हुआ। मोतमिद खाँ दक्षिण की सेना का बख्शी नियत होकर वहाँ भेजा गया इसलिए अर्ज मुकर्रर के पद पर ख्वाजा कासिम नियुक्त हुआ। मीर शरफ अहदियों का तथा फाजिलबेग पंजाब का बख्शी नियत हुआ। कंधार के अध्यक्ष

बहादुर खाँ ने नेत्र रोग के कारण प्रार्थना की थी कि उसे दरबार आने की आज्ञा दी जावे इसलिए कंधार की रक्षा का भार अब्दुल् अजीज खाँ को सौंपा और यह आज्ञापत्र बहादुर खाँ के नाम भेजा कि इसके पहुँचने पर इसे दुर्ग सौंपकर वह दरबार चला आवे। इसी महीने की २१ वीं को हम नूर सराय में उतरे। इस स्थान पर नूरजहाँ बेगम के वकीलों ने एक ऊँचा महल तथा शाही उद्यान बनवाए थे। यह पूरा हो गया था। इसी कारण बेगम ने जलसा करने के लिए प्रार्थना कर उसका भारी आयोजन किया और भेंट में बहुत सी अलभ्य तथा अच्छी वस्तुएँ प्रस्तुत कीं। उसे प्रसन्न करने के लिए हमने पसंद की कुछ वस्तुएँ ले लीं। हम यहाँ दो दिन ठहरे। यह निश्चित हो चुका था कि पंजाब के कर्मचारीगण दो लाख रुपए, जो पहले के निश्चित साठ सहस्र रुपए के सिवा था, कंधार दुर्ग के सामान आदि के लिए भेज दें। पंजाब के दीवान मीर किवामुद्दीन ने लाहौर जाने की छुट्टी तथा खिलअत पाया। काँगड़ा के आस पास के विद्रोहियों को दमन करने तथा उन प्रांतों में शांति स्थापन करने के लिए कासिम खाँ को जाने की छुट्टी मिली और हमने उसे एक खास नादिरी, एक घोड़ा, एक खंजर और एक हाथी दिया। उसका मंसब भी हमने बढ़ाकर दो हजारी ५०० सवार का कर दिया। उसकी प्रार्थना पर हमने राजा संग्राम को भी खिलअत, एक घोड़ा तथा एक हाथी देकर उसके साथ जाने की आज्ञा दे दी।

गुरुवार को सरहिंद (सहरिंद) नगर के बाहर पड़ाव डाला गया। हम एक दिन यहाँ ठहरे और बागों में घूमने में दिन व्यतीत किया। रविवार ४ थी को अबुल्हसन दक्षिण की चढ़ाई पर भेजा गया। नादिरी के साथ खिलअत, एक खास दोशाला, सुन्हदस नामक हाथी, अश्वपुच्छ झंडा तथा डंका उसे दिया। मोतमिद खाँ को खिलअत तथा सुब्ह सादिक नामक खास घोड़ा देकर जाने की छुट्टी दी। उसी

महीने की ७ वीं को सरस्वती नदी के किनारे मुस्तफाबाद कस्बे के पास पड़ाव पड़ा। दूसरे दिन अकबरपुर पहुँच गए जहाँ से हम नाव पर बैठकर जमुना नदी से अपने गंतव्य स्थान की ओर चल दिए। इसी दिन इज्जतखाँ चची उस स्थान के फौजदार के साथ सेवा में उपस्थित हुआ। मुहम्मद शफी को मुलतान जाने की छुट्टी देकर हमने उसे एक घोड़ा, खिलअत तथा एक नूरशाही मुहर दिया और उसके हाथ अपने पुत्र खानजहाँ के लिए एक खास चीरा पगड़ी भेजी।

यहाँ से पाँच दिन की यात्रा पर हम किराना परगने में पहुँचे, जो मुकर्रबखाँ का देश था और वहाँ पड़ाव डाला गया। भेंट में उसके वकीलों ने इक्यानवे[1] लाल, चार हीरे तथा एक सहस्र गज़ मखमल पायंदाज के लिए एक पत्र के साथ हमारे सामने उपस्थित किया और एक सौ ऊँट निछावर में दिए। हमने आज्ञा दी कि वे इन्हें सुपात्रों में वितरित कर दें। इस स्थान से पाँच यात्राएँ करने पर दिल्ली सौभाग्य-शाली भंडों का पड़ाव हुआ। हमने एतमादुद्दौला को अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज के पास उसके लिए एक खास 'फर्जी' के साथ भेजा और यह निश्चय हुआ कि वह एक महीने में लौट आकर सेवा में उपस्थित हो। दो दिन सलीमगढ़ में ठहरकर गुरुवार २३ वीं को दिल्ली के जिले में से होकर हम पालम पर्गने में अहेर खेलने के विचार से गए और शम्सी तालाब पर ठहरे। मार्ग में हमने अपने हाथ से चार सहस्र चरण लुटाए। इफ्तखार खाँ के पुत्र अल्लहयार के द्वारा भेंट में भेजे गए बाइस हाथी-हथिनी हमारे सामने लाए गए।

जुल्करनैन[2] को अपनी साँभर की फौजदारी पर जाने की छुट्टी मिली। यह सिकंदर अर्मनी का पुत्र है और इसके पिता को सम्राट्

---

१. यह एक होना चाहिए जैसा इकबाल नामा में लिखा है।

२. यह सिकंदर की पदवी थी।

अकबर की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिसने इसको अब्दुलहई अर्मनी की पुत्री निकाह में दिलवा दी थी, जो शाही हरम का एक सेवक था। इससे इसे दो पुत्र हुए। इनमें एक जुल्क़रनैन था, जो बुद्धिमान तथा कर्मठ था और इसी को हमारे राज्यकाल में मुख्य दीवानों ने साँभर के निमक के सरकारी कारखानों का प्रबंध सौंपा था, जिसे इसने बड़ी योग्यता से किया। यह अब उस स्थान का फौजदार नियत किया गया। यह हिंदी गाने बनाने में बड़ा कुशल है। इस कला में इसकी शैली बहुत ठीक है और इसकी रचनाएँ बहुधा हमारे देखने में आईं तथा हमने पसंद भी किया। नूरुद्दीन कुली के स्थान पर लालबेग मिस्त्रों का दारोगा नियत हुआ। हमने पालम के आस पास चार दिन प्रसन्नता से अहेर खेलने में व्यतीत किए और सलीम गढ़ लौट आए। २९ वीं को उन्नीस हाथी, दो[1] खोजे, एक दास, इकतालीस लड़ाकू मुर्ग़े, तेरह बैल और सात भैंसे हमारे सामने लाए गए, जो इब्राहीम खाँ फत्हजंग ने भेंट में भेजे थे। गुरुवार ३० वीं को, जो २५ रबीउल् अव्वल होता है, हमारा चांद्र तुलादान[2] हुआ। हमने कोका खाँ को खानखानाँ के पास भेजा था और कुछ संदेश कहलाया था। आज के दिन उसका भेजा एक प्रार्थनापत्र आया। मीर मीरान, जो मेवात की फौजदारी पर नियत था, आज के दिन आकर से।ा में उपस्थित हुआ और वह सैयद बहवा के स्थान पर दिल्ली का अध्यक्ष नियत होकर सम्मानित हुआ।

इसी दिन आका बेग तथा मुहिब्बअली फारस के शाह के एलची सेवा में उपस्थित हुए और हमारे उच्चपदस्थ भाई के स्नेहपूर्ण पत्र

---

१. इक़बाल नामा में बयालीस लिखा है।

२. एक अन्य तुलादन का तीन-चार पृष्ठ पहले उल्लेख हो चुका है।

को सफेद-काले परों से युक्त एक कलग़ी के साथ दिया, जिसका मूल्य जौहरियों ने पचास सहस्र रुपए आँका। हमारे भाई ने एक लाल भी भेजा था, जो तौल में बारह टंक[1] का था और जो मिर्जा शाहरुख के उत्तराधिकारी मिर्जा उलुगबेग के कोषागार का था। यह समय के फेर तथा भाग्य के परिवर्तन से सफवी वंश के अधिकार में चला आया था। इस लाल पर नस्ख़ लिपि में ये शब्द खुदे हुए थे—उलुग़ बेग पुत्र शाहरुख बहादुर पुत्र अमीर तैमूर गुरगान। हमारे भाई शाह अब्बास ने आज्ञा दी कि इसके दूसरे कोने में नस्तालीक लिपि में ये शब्द खोदे जायँ— बंदः शाहे विलायत अब्बास।[2] इस लाल को एक जीगे में जड़वाकर उसे स्मृति समझकर हमारे पास भेज दिया था। इस लाल पर हमारे पूर्वजों के नाम अंकित थे इसलिए शुभ समझ कर हमने अपने सोनारखाने के दारोग़ा सईदाई को आज्ञा दी कि इसके एक अन्य कोने में 'जहाँगीर शाह पुत्र अकबर शाह' तथा वर्तमान तिथि खुदवा दे। कुछ दिनों के बाद जब दक्षिण की चढ़ाई का समाचार आया तब हमने यह लाल खुर्रम को दिया और उसके पास भेज दिया।

शनिवार १ ली इस्फंदारमुज़ को हमने सलीमगढ़ से कूच किया और पहले हुमायूँ के भव्य मकबरे में जाकर हमने वहाँ अपनी श्रद्धा प्रगट की और दो सहस्र चरण उन लोगों को दिए, जो उस पवित्र मकबरे में एकांत सेवन करते हैं। हमने यमुना के किनारे नगर के पास दो दिन पड़ाव किया। सैयद हिज़ब्र खाँ को, जो खानजहाँ का सहायक नियत किया गया था, खिलअत, तलवार, खंजर, एक घोड़ा

---

1. इकबालनामा में टाँक के स्थान पर मिस्काल है।

२. शाहे विलायत से खलीफा का तात्पर्य है। खलीफा का दास अब्बास अर्थ हुआ।

तथा झंडा देकर वहाँ जाने के लिए छुट्टी दे दी। उसके भाई सैयद आलिम तथा अब्दुलहादी को भी हर एक को खिलअत तथा घोड़ा दिया। मीर बरका बुखारी को मावरुन्नहर जाने को आज्ञा दी और उसके हाथ दस सहस्र रुपए भेजे कि पाँच सहस्र रुपए वह ख्वाजा सालिह देहबीदी को दे, जो अपने पूर्वजों के समय से इस साम्राज्य का एक हितैषी है और पाँच सहस्र रुपए तैमूर के मकबरे के मुजाविरों (रक्षकों) में वितरित कर दे। हमने एक विशिष्ट चीरा पगड़ी महाबत खाँ के लिए मीर बरका के हाथ भेजा। हमने मीर बरका को यह भी आदेश दिया था कि वह मत्स्य दंत को प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करे और किसी भी स्थान से किसी भी मूल्य पर उसे क्रय कर ले।

हम नाव से दिल्ली चले और छ पड़ाव करते हुए वृंदावन के मैदान में पहुँच गए। हमने मीर मीरान को एक हाथी दिया और दिल्ली जाने को आज्ञा दी। जबर्दस्त खाँ को फिदाई खाँ के स्थान पर मीर तुजुक नियुक्त किया और उसे एक परम नर्म शाल दिया। दूसरे दिन गोकुल में पड़ाव पड़ा। यहीं आगरा का अध्यक्ष लश्कर खाँ, अब्दुल् वहाब दीवान, राजनाथ मल, आसीरगढ़ तथा बुर्हानपुर का शासक खिज्र खाँ फारूकी, उसका भाई अहमद खाँ, काजी, मुफ्ती तथा अन्य प्रधान मनुष्यगण स्वागत करने के लिए आकर सेवा में उपस्थित हुए। ११ वीं को हम नूरअफशाँ बाग़ में ठहरे, जो जमुना नदी के दूसरी ओर है। नगर में प्रवेश करने की शुभ साइत १४ वीं को निश्चित हुई थी इसलिए हम यहीं ठहरे और निश्चित समय पर दुर्ग को ओर चलकर प्रसन्नता तथा विजयोल्लास के साथ महल में पहुँच गए। लाहौर से आगरे तक की शुभ यात्रा दो महीने दो[1] दिन में

---

१. यह शुद्ध नहीं ज्ञात होता, दस होना चाहिए, जैसा आगे दिए गए दिनों के जोड़से ज्ञात होता है।

हुई जिसमें उंचास दिन यात्राएँ हुईं और उन्नीस दिन ठहरे रहे। ठहरते या स्थल या जलसे यात्रा करते कोई दिन ऐसा नहीं गया कि अहेर न खेला गया हो। एक सौ चौदह हरिण, इक्यावन बत्तख, चार करवानक, दस काले तीतर और दो सौ बोदना पकड़े गए।

लश्कर खाँ ने आगरे में अपने कर्तव्य संतोपजनक रीति से किए थे इसलिए उसके मंसब में एक हजारी ५०० सवार बढ़ाकर उसका मंसब चार हजारी २५०० सवार का कर दिया और उसे दक्षिण की सेना में सहायक बनाकर भेज दिया। सोनारखाने के दारोगा सईदा को बेबदल खाँ की पदवी दी। चार घोड़े, चाँदी के कुछ आभूषण तथा वस्त्र, जिसे फारस के शासक ने आक़ा बेग तथा मुहिब्बअली खाँ के हाथ भेजा था, हमारे सामने उपस्थित किए गए। गुरुवार २० वीं का उत्सव नूरमंजिल बाग़ में हुआ। हमने एक लाख रुपए अपने पुत्र शहरयार को उपहार दिए। मुजफ्फर खाँ आज्ञानुसार ठट्टा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए भेंट किए। लश्कर खाँ ने एक लाल भेंट किया, जिसका मूल्य चार सहस्र रुपए था। मुसाहिब नामक एक खास घोड़ा अब्दुल्ला खाँ को दिया। मुअज्जम खाँ का पुत्र अब्दुस्सलाम उड़ीसा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और एक सौ मुहर तथा एक सौ रुपए भेंट किए। तोलक खाँ के पुत्र दोस्त बेग का मंसब नौ सदी ४०० सवार का कर दिया। गुरुवार २७ वीं का उत्सव नूर अफशाँ बाग़ में हुआ। एक खास खिलअत मिर्जा रुस्तम को, एक घोड़ा उसके पुत्र दखिनी को और एक हाथी लश्कर खाँ को दिया गया।

शुक्रवार २८ वीं को सामूनगर के ग्राम में अहेर खेलने गए और रात्रि में लौट आए! आका बेग और मुहिब्ब अली की ओर से सात ईरानी घोड़े भेंट में उपस्थित किए गए। हमने जंबील बेग एलची

को सौ तोले का एक नूरजहानी मुहर और एक जड़ाऊ कलम मीर बख्शी सादिक खाँ को दिया। हमने खिज्र खाँ फारूकी को एक गाँव आगरे में इनाम दिया। इस वर्ष में पचासी सहस्र बीघा भूमि, तेंतीस सौ पचीस खरवार अन्न, चार गाँव, दो हल की खेती, एक उद्यान, तेईस सौ सत्ताइस रुपए, एक मुहर, बासठ सौ दर्ब, सात सहस्र आठ सौ अस्सी चरन, पंद्रह सौ बारह तोले सोना-चाँदी और दस सहस्र दाम कोष से हमारे सामने फकीरों तथा दरिद्रों को दिए गए। दो लाख इकतालिस सहस्र रुपए मूल्य के अड़तीस हाथी भेंट में आए और खास हथसाल में रखे गए। इक्यावन हाथी हमने बड़े अमीरों को तथा दरबार के सेवकों को उपहार में दिए।

सोलहवाँ जलूसी वर्ष

सोमवार २७ वीं रबीउल् आखिर सन् १०३० हि० को सूर्य ने, जो संसार को कृपाएँ देनेवाला है, मीन राशि के सौभाग्य स्थान को अपने विश्व-प्रकाशक प्रकाश से प्रकाशित कर दिया और संसार तथा उसके निवासियों को प्रसन्न कर दिया। अल्लाह के तख्त के इस प्रार्थी के जलूस का सोलहवाँ वर्ष प्रसन्नता तथा विजय के साथ आरंभ हुआ और हम राजधानी आगरे में शुभ साइत तथा अच्छे समय में राज-सिंहासन पर बैठे। ऐसे आनन्दवर्द्धक दिन में हमारा भाग्यवान पुत्र शहरयार आठ हजारी ४००० सवार का मंसब पाकर सम्मानित हुआ। हमारे श्रद्धेय पिता ने पहले पहल यह मंसब हमारे भाइयों को को दिया था। यह आशा है कि हमारे शिक्षण की छाया में तथा हमारी आज्ञा-पालन में रहते हुए यह पूर्ण जीवन तथा सौभाग्य को प्राप्त होगा। इस दिन बाकिर खाँ ने अपने आदमी सजाकर हमें निरीक्षण कराया। मुख्य बख्शियों ने एक सहस्र सवार तथा दो सहस्र पैदल गिने और हमें सूचित किया। उसका मंसब बढ़ा कर दो हजारी १००० सवार का कर दिया और उसे आगरा का फौजदार नियत किया।

बुधवार को बेगमों के साथ नाव में बैठकर हम नूरअफशाँ बाग में गए और रात्रि में वहीं रहे। यह बाग़ नूरजहाँ बेगम के अधिकार में था इसलिए गुरुवार ४ थी को उसने शाही जलसा किया और भारी भेंट उपस्थित की। भेंट किए हुए रत्नों, जड़ाऊ आभूषणों तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं में से हमने एक लाख रुपए मूल्य की वस्तुएँ पसंद कर स्वीकृत कीं। इन दिनों हम प्रति दिन दोपहर को नाव से नगर से चार कोस पर सामूनगर अहेर खेलने जाते और रात्रि को लौट आते। हमने शाह पर्वेज के पास राजा सारंगदेव को

भेजा और इसके हाथ उसके लिए खास खिलअत जड़ाऊ कमरबंद सहित भेजा, जिसमें एक नीलम तथा बहुत से लाल लगे हुए थे। इस पुत्र को मुकर्रब खाँ के स्थान पर हमने बिहार प्रांत दिया था इसलिए हमने एक सजावल को भेजा कि उसे इलाहाबाद से बिहार लिवा जावे। मुजफ्फर खाँ का दामाद मीर जाहिद ठट्टा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। मीर अजदुद्दौला (जमालुद्दीन हुसेन अंजू) बहुत वृद्ध तथा चलने में असमर्थ हो रहा था, इसलिए वह पड़ाव तथा जागीर के कार्य को नहीं कर सकता था। अतः हमने उसे सेवाकार्य तथा अन्य कामों से छुट्टी दे दी और आज्ञा दी से कि उसे राजकोष से चार सहस्र रुपए मासिक दिया जाय, जिससे वह आगरा या लाहौर या अन्य जहाँ इच्छा हो सुखपूर्वक रहे तथा हमारे दीर्घायु तथा उन्नति के लिए प्रर्थना करता रहे।

६वीं फरवरदीन को एतबार खाँ की भेंट हमारे सामने लाई गई। रत्नों, वस्त्रों आदि में से सत्तर सहस्र रुपए मूल्य की वस्तुएँ स्वीकृत हुईं तथा बाकी उसे लौटा दी गईं। फारस के शासक के राजदूतों आकिल बेग तथा मुहिब्बअली ने चौबीस घोड़े, दो खच्चर, तीन ऊँट, सात ताजी कुत्ते, सत्ताईस थान जरी के वस्त्र, एक शमामा अंबर, दो जोड़े दरी तथा दो नमदे के तकिए भेंट किए। बच्चों के साथ दो घोड़ियाँ भी हमारे भाई ने भेजी थीं वे भी सामने लाईं गई।

गुरुवार को आसफ खाँ की प्रार्थना पर हम बेगमों के साथ उसके गृह पर गए। भारी जलसे के साथ उसने बहुत से अच्छे रत्न, बड़े सुंदर वस्त्र तथा अलभ्य वस्तुएँ भेंट कीं। एक लाख तीस हजार की वस्तुएँ स्वीकार कर बाकी उसे लौटा दीं। उड़ीसा के प्रांताध्यक्ष मुकर्रम खाँ ने बत्तीस हाथी-हथिनी भेंट में भेजे, जो सब स्वीकृत हुए। इसी समय हमने एक गोरखर देखा जो रूप में बहुत ही विचित्र ठीक

शेर के समान था। नाक की नोक से दुम के अंत तक और कान के सिरे से खुर तक काले चिन्ह छोटे-बड़े अपने उचित स्थान पर बने हुए थे। आँखों को घेर कर महीन काली लकीर खिंची हुई थी। कहा जा सकता है कि भाग्य रूपी चित्रकार ने विचित्र कूची से संसार-पृष्ठ पर इसे बना दिया है। यह आश्चर्यजनक है इसलिए लोगों ने शंका की कि यह रँगा हुआ न हो। बहुत जाँच करने पर भी यही निश्चय हुआ कि इसका बनानेवाला संसार का स्रष्टा ही है। यह एक अलभ्य पशु है इसलिए अपने भाई शाह अब्बास को भेजे जाने वाले भेंट में रखा गया। बहादुर खाँ उजबेग ने तिपचाक घोड़े तथा एराकी वस्त्र भेंट में भेजे थे जो हमारे सामने उपस्थित किए गए। जाड़े के खिलअत मोमिन शीराजी के हाथ इब्राहीम खाँ फत्हजंग तथा बंगाल के अमीरों के लिए भेजे गए। १५वीं को सादिक खाँ की भेंट सामने लाई गई जिसमें से पंद्रह सहस्र रुपए मूल्य को स्वीकृत की गई और बाकी लौटा दी गई। फाजिल खाँ ने भी अपनी स्थिति के अनुकूल भेंट दी जिसमें से कुछ स्वीकृत की गई। गुरुवार १६ फरवरदीन को शरफ का उत्सव हुआ और जब दो प्रहर तथा एक घड़ी दिन बीत चुका था तब हम राजसिंहासन पर बैठे। मदारुलमुल्क एतमादुद्दौला की प्रार्थना पर शरफ का भोज उसी के गृह पर हुआ। अनेक देशों की अलभ्य तथा सुंदर वस्तुएँ उसने भेंट कीं। हमने एक लाख अड़तीस सहस्र रुपए मूल्य की भेंट स्वीकार की। इसी दिन हमने जंबील बेग एलची को दो सौ तोले की मुहर दी। इसी समय इब्राहीम खाँ ने बंगाल से कुछ हिंजड़े भेजे। इनमें से एक उभय चिन्हित था। पूर्वोक्त व्यक्ति की भेंट में बंगाल की बनी हुई दो नावें थीं, जो बड़ी सुंदर थीं और जिनके बनवाने में दस सहस्र रुपए व्यय हुए थे। वे शाही नावें थीं। शेख कासिम खाँ को इलाहाबाद का प्रांताध्यक्ष नियत कर उसे मुहतशिम खाँ की पदवी तथा पाँच हजारी मंसब दिया और दीवानों को आज्ञा दी

कि इसकी जागीर में अनधिकृत महाल से और भी भूमि दे दें। श्रीनगर (गढ़वाल) के जमींदार राजा श्यामसिंह को एक घोड़ा तथा एक हाथी दिया।

इसी समय सूचना मिला कि हुसेन खाँ का पुत्र यूसुफ खाँ एकाएक मर गया, जो दक्षिण की विजयी सेना में नियुक्त था। सूचना से यह भी ज्ञात हुआ कि जब वह अपनी जागीर पर था तभी वह इतना मोटा हो गया था कि तनिक भी काम करने पर उसे स्वाँस लेने में कठिनाई होने लगती थी। एक दिन जब वह खुर्रम का अभिवादन करने गया तो आने-जाने के परिश्रम से उसका स्वाँस फूलने लगा। जब उसे खिलअत दिया गया तब वह पहिरने तथा सलाम करने में असहाय हो गया तथा सब अंग काँपने लगे। बहुत अधिक प्रयत्न कर किसी प्रकार अभिवादन कर वह बाहर निकल आया और खेमे के भीतर ही छाया में गिरकर बेहोश हो गया। उसके सेवक उसे पालकी में डालकर उसके निवासस्थान पर ले गए पर मृत्यु भी साथ ही पहुँच गई। उसे आज्ञा मिल गई और वह अपनी भारी मिट्टी नश्वर कूड़ाखाने में छोड़ गया।

१ म उर्दिबिहिश्त को हमने एक खास खंजर जंबीलवेग एलची को दिया। उसी महीने ४ थी को हमारे पुत्र शहरयार के निकाह की मजलिस हुई जिससे हमें प्रसन्नता हुई। मेंहदी की रस्म मरियमुज्जमानी के महल में हुई। निकाह की जेवनार एतमादुद्दौला के गृह पर हुई। हम स्वयं बेगमों के साथ वहाँ गए और भोज में सम्मिलित हुए। शुक्रवार को सात घड़ी रात्रि बीतने पर निकाह बाँधा गया। हमें आशा है कि यह साम्राज्य के लिए शुभ होगा। मंगलवार १६ वीं को नूरअफशाँ बाग में हमने अपने पुत्र शहरयार को जड़ाऊ चारकब,

पगड़ी, कमरबंद तथा दो घोड़े दिए, जिनमें एक सोने के साज़ सहित एराकी था तथा दूसरा कारचोब के ज़ीन सहित तुर्की था।

इन्हीं दिनों शाह शुजा को एक ऐसा फोड़ा हुआ कि गले से जल नहीं उतरता था और उसके बचने की आशा नहीं रह गई थी। उसके पिता की जन्मकुंडली में लिखा हुआ था कि उसका पुत्र इस वर्ष मर जायगा इसलिए सभी ज्योतिषी एक मत थे कि यह नहीं बचेगा पर इसके विरुद्ध ज्योतिषराय कहता था कि इसके दामन को मृत्यु-कष्ट की धूलि भी न छू सकेगी। हमने पूछा कि इसका क्या प्रमाण है? उसने उत्तर दिया कि हमारे भाग्यकुंडली में लिखा है कि इस वर्ष किसी प्रकार का शोक बादशाह के चित्त में किसी ओर से नहीं आवेगा और हम इस लड़के पर अत्यंत स्नेह रखते हैं इसलिए इस पर कोई कष्ट नहीं आवेगा भले ही कोई अन्य संतान जाती रहे। इसने जैसा कहा था वैसा ही हुआ और यह मृत्युस्थान से प्राण लेकर बच गया। शाहनवाज़ खाँ की पुत्री से उसे जो पुत्र हुआ था वह बुर्हानपुर में मर गया। ज्योतिषराय के इस प्रकार के निर्णय बहुत से ठीक उतरे। यह विचित्रता से खाली नहीं है इसलिए यहाँ लिखे गए। इस पर हमने आज्ञा दी कि ज्योतिषराय को रुपयों से तौलकर, जो साढ़े छ सहस्र रुपए हुए, उसे पुरस्कार में दिए जायँ और ये दे दिए गए।

मुहम्मद हुसेन जाबिरी उड़ीसा प्रांत का बख्शी तथा वाकेआनवीस नियत किया गया। लाचीन क़ाक़शाल मुनज्जिम (ज्योतिषी) का मंसब महाबतखाँ की संस्तुति पर बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। ख्वाजाजहाँ का भाई मुहम्मद हुसेन काँगड़ा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। बहादुरखाँ उजबेग को एक हाथी देकर उसके वकील के साथ भेज किया। हुरमुज़ तथा होशंग मिर्जा मुहम्मद

हकीम के पौत्रगण, शासकों के लिए उचित सावधानी के कारण, ग्वालियर के दुर्ग में कैद थे। इस समय उनको अपने सामने बुलाकर उन्हें आगरे में रहने की आज्ञा दी और उनके व्यय के लिए दैनिक वृत्ति निश्चित कर दी। इसी समय रुद्र भट्टाचार्य नामक एक ब्राह्मण, जो अपनी जाति का एक विद्वान् था तथा बनारस में शिक्षा कार्य करता था, हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। वास्तव में इसने कई विद्याओं का अच्छा मनन किया है और अपने विषयों का पूरा विद्वान् है।

इस काल की एक विचित्र घटना यह है कि ३० वीं फरवरदीन को जालधंर पर्गना के एक ग्राम में प्रातःकाल पूर्व की ओर से ऐसी भयानक आवाज़ आने लगी कि वहाँ के निवासीगण भय के मारे अपने प्राण प्रायः छोड़ने लगे। जिस समय यह भयानक शब्द तथा अशांति थी उसी समय एक प्रकाश ऊपर से पृथ्वी पर गिरा और लोगों ने समझा कि आकाश से आग बरस रही है। कुछ देर के बाद जब शोर बंद हुआ और वहाँ के लोगों के हृदयों की भय तथा त्रास के कारण धड़कन कम हुई तब उन्होंने मुहम्मद सईद आमिल के पास शीघ्र संदेश भेजा और कुल वृत्त कहलाया। वह स्वयं सवार होकर वहाँ आया और उस स्थान को देखने गया। दस-बारह हाथ की लंबाई-चौड़ाई में भूमि ऐसी जल गई थी कि घास या किसी हरियाली का नाम नहीं रह गया था और गर्मी तथा जलने के चिह्न बने हुए थे। इसने लोगों को वह स्थान खोदने की आज्ञा दी और जितना ही खोदा जाता उतनी ही अधिक गर्मी बढ़ती जाती थी। अंत में वे वहाँ तक पहुँचे जहाँ गर्म लोहे का टुकड़ा मिला। वह इतना गर्म था कि मानो भट्टी में से अभी निकाला गया हो। कुछ देर के बाद वह ठंढा हुआ तब उसे निकलवाकर वह अपने घर ले गया। उसने इसे एक खरीते में

बंद कर तथा मुहर करके दरबार भेज दिया। हमने उसे अपने सामने तौलने की आज्ञा दी और वह एक सौ साठ तोले निकला। हमने उस्ताद दाऊद को आज्ञा दी कि इसमें से एक तलवार, एक खंजर तथा एक चक्कू बनाकर ले आवे। उसने प्रार्थना की कि यह हथौड़े के नीचे न ठहरेगा और टुकड़े टुकड़े हो जायेगा। हमने आज्ञा दी कि वैसी अवस्था में अन्य लोहा मिलाकर उसका उपयोग करे। उसने तीन भाग विद्युत्-लौह और एक भाग अन्य लोहा मिलाकर दो तलवार एक खंजर तथा एक छूरा बनाकर हमारे सामने लाया। अन्य लोहा मिलाने के कारण उसका पानी निखर आया था। यमन तथा दक्षिण की अच्छी तलवारों के समान ये भी मोड़ी जा सकती थीं तथा फिर सीधी हो जाती थी। हमने अपने सामने इसकी जाँच कराई। सच्ची तलवारों के समान इसकी काट अच्छी थी। हमने एक को शमशेरे कातः और दूसरे को वर्कसरिश्त नाम दिया। बेबदल खाँ ने एक कितः बनाया जिसमें ये बातें आगई थीं और उसे सुनाया।

शाह जहाँगीर द्वारा संसार ने आज्ञा प्राप्त की।
उसके राज्यकाल में बिजली से कच्चा लोहा गिरा॥
उस लोहे से उसकी संसार विजयी आज्ञा से बनाया गया।
एक खंजर, एक छुरा और दो तलवार॥

इसकी तारीख भी 'शाही बिजली की चिनगारी' से (१०३० हि०) निकलती है।

इसी समय राजा सारंग देव, जो हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज के पास गया था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ। पर्वेज ने सूचित किया था कि आज्ञानुसार वह इलाहाबाद से बिहार चला गया है। आशा है कि वह वहाँ फले फूलेगा। कासिम खाँ को डंका देकर सम्मानित किया। इसी दिन खुर्रम का एक सेवक अलीमुद्दीन

उसके पास से विजय के शुभ समाचार की सूचना तथा एक जड़ाऊ अँगूठी भेंट में लाया। हमने उसे जाने की छुट्टी दी और उसके हाथ खिलअत भेजा। फ़ाजिल वेग खाँ का भाई अमीर वेग हमारे पुत्र शहरयार का दीवान, ख्वाजाजहाँ का भाई मुहम्मद हुसेन बख्शी तथा मासूम मीरसामान नियत किए गए। सैयद हाजो दक्षिण की सेना का बख्शी नियत किया जाकर वहाँ भेजा गया और उसे हमने एक घोड़ा दिया। मुजफ्फर खाँ भी बख्शी पद पर नियत हुआ।

इसी समय तूरान के शासक इमामकुली खाँ की माता ने नूरजहाँ वेगम के पास शुभ कामना तथा परिचय के भावों से एक पत्र तथा उस देश की कुछ अलभ्य वस्तुएँ भेजीं इसलिए नूरजहाँ वेगम की ओर से ख्वाजा नसीर, जो हमारे पुराने सेवकों में से एक है और हमारी शाहजादगी के समय से हमारी सेवा में हैं, पत्र का उत्तर तथा इस देश की अच्छी सौगात लेकर भेजा गया। जिस समय वेगमें नूरअफशाँ बाग में ठहरी हुई थीं उसी समय रंग का आठ दिन का बच्चा महल के आठ गज ऊँचे चबूतरे से नीचे भूमि पर कूद पड़ा और इधर-उधर कूदने लगा। उसे किसी प्रकार की चोट या कष्ट नहीं ज्ञात होता था।

इलाही महीने खुरदाद को ४थी को खुर्रम का दीवान अफजल खाँ उसका एक पत्र लेकर आया जिसमें विजय का शुभ समाचार था और देहली-चुंबन किया। विवरण इस प्रकार है—जब विजयी सेना उज्जैन पहुँची तब दरबार के सेवकों की उस टुकड़ी ने, जो मांडू के दुर्ग में थी, यह सूचना भेजी कि शत्रु की एक सेना ने उद्दंडता के कारण नर्मदा नदी पार कर दुर्ग के नीचे के कई ग्राम जला दिए हैं और लूटमार में लगे हुए हैं। मदारुल्महाम ख्वाजा अबुल्हसन पाँच सहस्र सवारों के साथ शीघ्रता से उन उपद्रवियों को दंड देने के लिए नियत किया गया।

ख्वाजा ने रात्रि में कूच किया और प्रातः काल नर्बदा नदी के किनारे पहुँच गया। जब शत्रु को यह बात ज्ञात हुई तब वे तुरंत नदी में कूद पड़े और सुरक्षा के तट पर पहुँच गए। वीर सवार सेना ने भी उनका पीछा किया और चार कोस तक बदले की तलवार से उन्हें मारते चले गए। अभागे उपद्रवियों ने बुर्हानपुर पहुँचने तक उलट कर देखा भी नहीं। खुर्रम ने अबुल्हसन को आज्ञा भेज दी कि वह नदी के उस पार ही रुका रहे जब तक वह न आ जाय। शीघ्र ही वह सेना के साथ अग्गल से जा मिला और कूच पर कूच करते हुए बुर्हानपुर पहुँच गया। अभागे दुष्ट शत्रु अब भी नगर के पास डटे हुए थे। शाही सेवकगण दो वर्ष से इन विद्रोहियों से युद्ध कर रहे थे इसलिए जागीरों के छिन जाने तथा अन्न की कमी से वे बहुत कष्ट सहन कर चुके थे और उनके घोड़े भी निरंतर की दौड़-धूप से थक गए थे। इस कारण नौ दिन तक इन्हें ठीक होने के लिए अवसर देना उचित समझकर ठहरे रहे। इस समय में तीस लाख रुपए तथा बहुत से जुब्बे (युद्धीय वस्त्र) सैनिकों में वितरित किए गए। सजावलगण नगर में घूमकर बहुत से आदमियों को लिवा लाए। वीर सेना ने अभी कार्य में हाथ भी नहीं लगाया था कि दुष्ट विद्रोही अपने में सामना करने की सामर्थ्य न देखकर सप्तर्षि के समान अस्तव्यस्त हो गए। वीर तथा तीव्रगामी सवारों ने उनका पीछा किया और बदले की तलवार से बहुतों का अंत कर दिया। इन सवारों ने उन्हें रुकने नहीं दिया और मार काट करते हुए खिरकी तक पीछा करते चले गए जो निजामुल्मुल्क तथा अन्य विद्रोहियों का निवासस्थान था। इसके एक दिन पहले अभागे (अंबर) को बादशाही सेना के पहुँचने की खबर मिल गई थी और उसने निजामुल्मुल्क, उसके परिवार तथा सामान को दौलताबाद दुर्ग में पहुँचवा दिया। वहीं उसने दुर्ग को पीछे रखकर सैनिक पड़ाव डाला और उसके आगे की

ओर दलदल तथा चहला भरा था। उसके बहुत से सैनिक चारों ओर फैल गए थे। विजयी सेना के नायकगण अपने बदला लेनेवाले सैनिकों के साथ तीन दिन तक खिरकी नगर में ठहरे रहे और एक ऐसे नगर को ऐसा नष्ट कर दिया, जिसे बनने में बीस वर्ष लग गए थे और यह भी आशा न थी कि बीस वर्ष में भी वह पहले के ऐश्वर्य को प्राप्त कर सकेगा। संक्षेप में वहाँ की कुल इमारतों को गिराकर सब ने यह निश्चित किया कि शत्रु की सेना अभी तक अहमदनगर को घेरे हुए है इसलिए तुरंत वहाँ पहले जाना चाहिए और विद्रोहियों को पूर्ण दंड देकर तथा वहाँ सामान एवं सहायता छोड़कर तब लौटना चाहिए। इस विचार के अनुसार उन्होंने कूच किया और पट्टननगर तक पहुँच गए। इसी बीच कपटी अंबर ने अपने वकीलों तथा सरदारों को भेजकर कहलाया कि वह सेवा तथा राजभक्ति का मार्ग नहीं छोड़ेगा और न आज्ञाओं के विरुद्ध कोई कार्य करेगा। जो कुछ दंड तथा कर की आज्ञा होगी उसे सरकार में भेज देगा। ठीक इसी समय ऐसी घटना घटी कि शाही पड़ाव में सामान की महँगी के कारण अन्न-कष्ट हो गया और साथ ही यह भी समाचार मिला कि अहमदनगर को घेरनेवाली शत्रुसेना बादशाही सेना के पहुँचने का समाचार सुनकर हट गई है। इन कारणों से खंजर खाँ के पास एक सेना उसके सहायतार्थ तथा कुछ धन व्यय के लिए भेज दिया गया। इसके बाद शाही सेना की आशंकाएँ दूर हो गईं और वे लौट आईं। अंबर के बहुत कुछ कहने सुनने पर यह निश्चय हुआ कि उन सब भूमि के सिवा, जो पहले से साम्राज्य की थी, उसी के पास चौदह कोस भूमि वह दे देगा और पचास लाख रुपए कर के रूप में कोष में जमा कर देगा।

हमने अफजल खाँ को लौट जाने की छुट्टी दे दी और उसके हाथ खुर्रम के लिए ईरान के शाह की भेजी हुई लाल की कलगी भेजी। अफजल खाँ को खिलअत, एक हाथी, एक दवात तथा जड़ाऊ कलम

दिया। खंजर खाँ ने अहमदनगर के घेरे में बहुत अच्छी सेवा की थी और रक्षा में बड़ा उत्साह दिखलाया था इसलिए उसका मंसब बढ़ाकर चार हजारी १००० सवार का कर दिया। मुकर्रमखाँ आज्ञानुसार अपने भाइयों के साथ उड़ीसा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने मोतियों की एक माला भेंट दी। बहादुरुलमुल्क का पुत्र मुजफ्फरुल्मुल्क को नुसरत खाँ की पदवी मिली। ऊदाराम दक्खिनी को एक झंडा दिया गया तथा यूसुफखाँ के पुत्र अजीजुल्ला को एक हजारी ५०० सवार का मंसब मिला। गुरुवार २१ वीं को मुकर्रब खाँ बिहार से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसी समय आकाअली, मुहिब्बअली बेग, हाजी बेग और फाजिल बेग को, जो ईरान के शासक के राजदूत थे और क्रमशः भिन्न भिन्न समय पर आए थे, लौट जाने की आज्ञा दी। आका बेग को हमने खिलअत, जड़ाऊ खंजर तथा चालीस सहस्र नगद दिए। मुहिब्बअली बेग को खिलअत तथा तीस सहस्र रुपए दिए और इसी प्रकार दूसरों को भी उनके पदानुसार दिया गया। इन्हीं लोगों के हाथ अपने भाई के लिए हमने भेंट भेज दिया। इसी दिन मुकर्रमखाँ दिल्ली का सूबेदार तथा मेवात का फौजदार नियत हुआ। शुजाअतखाँ अरब को तीन हजारी २५००सवार का मंसब बढ़ाकर दिया गया। शरजाखाँ को दो हजारी १००० सवार का और रायसाल कछवाहा के पुत्र गिरिधर को बारह सदी ६०० सवार का मंसब दिया गया।

२९ वीं को ईरान के शासक का राजदूत कासिम बेग आकर सेवा में उपस्थित हुआ और हमारे भाई का सत्यता और मित्रता के भावों से पूर्ण एक पत्र भी ले आया। उसने जो शाही भेंट भेजी थी वह हमारे सामने उपस्थित की गई। तीर महीने को १ ली को हमने गजरतन नामक खास हाथी अपने फर्ज़ंद खानजहाँ के लिए भेजा। खुर्रम के एक सेवक नजर बेग ने उसका एक पत्र लाकर हमारे सामने

उपस्थित किया, जिसमें घोड़े माँगे गए थे। हमने राजा किशन दास मुशरिफ (हिसाब रखनेवाला) को आज्ञा दी कि पंद्रह दिन के भीतर शाही घुड़साल से एक सहस्र घोड़े ठीक कर इसके साथ भेज दें। हमने खुर्रम के लिए रूमरतन नामक एक घोड़ा भेजा, जिसे ईरान के शाह ने तुर्कों के पड़ाव की लूट में से भेजा था।

इसी दिन इरादत खाँ के एक सेवक गियासुद्दीन ने विजय के शुभ समाचार से युक्त उसका प्रार्थनापत्र लाकर हमारे सामने उपस्थित किया। इसके पहले पृष्ठों में लिखा जा चुका है कि किश्तवार के जमींदारों ने जब विद्रोह किया था तब दिलावर खाँ का पुत्र जलाल वहाँ भेजा गया था। जब यह महत्वपूर्ण कार्य उससे ठीक प्रकार से नहीं हो सका तब इरादत खाँ को आज्ञा भेजी गई कि वह शीघ्र जाकर इस कार्य को हाथ में ले और विद्रोहियों को कठोर दंड दे तथा उस पार्वत्यस्थान में ऐसा प्रबंध रखे कि सीमाओं पर अस्तव्यस्तता तथा कष्ट की धूलि न पड़े। आज्ञानुसार शीघ्रता से वह वहाँ गया और अच्छी सेवा की जिससे विद्रोही तथा उपद्रवी भागकर अपनी प्राण रक्षा कर सके। इस प्रकार पुनः एक बार उस देश से उपद्रव और अशांति दूर हो गई और वहाँ कर्मचारियों को तथा थाने नियत कर वह कश्मीर लौट आया। इस सेवा के उपलक्ष में उसके मंसब में ५०० सवार की उन्नति की गई।

ख्वाजा अबुल् हसन ने दक्षिण में अच्छी सेवा की थी और उस प्रांत के कार्यों में उत्साह दिखलाया था इसलिए उसका मंसब १००० सवार से बढ़ा दिया गया। इब्राहीम खाँ फत्हजंग का भतीजा अहमद बेग उड़ीसा की प्रांताध्यक्षता, खाँ की पदवी तथा झंडा और डंका पाकर सम्मानित हुआ। इसका मंसब भी बढ़ाकर दो हजारी ५०० सवार का कर दिया गया।

हमने कभी नसीर बुर्हानपुरी के अच्छे गुणों तथा पवित्रता को कई बार सुना था इसलिए हमारे सत्यान्वेषी मस्तिष्क को उसके सत्संग की बड़ी इच्छा हुई। इसी समय निमंत्रित होकर वह दरबार आया। उसकी विद्वत्ता का विचार कर हमने उसका बहुत आदर किया। काजी हर प्रकार के ज्ञान विज्ञान में अपने समय का अद्वितीय है और बहुत कम होंगी जिसे उसने पढ़ा न हो। परंतु उसका बाह्य रूप उसके आंतरिक रूप के समान नहीं था इसलिए हम उसके सत्संग से प्रसन्न नहीं हुए। वह फकीरी तथा एकांत ही अधिक पसंद करता था इसलिए हमने उसे अपनी सेवा में रखने का कष्ट नहीं दिया और उसे पाँच सहस्र रुपए देकर विदा कर दिया कि अपने देश जाकर सुख से कालयापन करे।

इलाही महीने अमूरदाद की पहली को बाकिर खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १२०० सवार का कर दिया। दक्षिण की चढ़ाई में जिन अमीरों तथा शाही सेवकों ने अच्छी सेवाएँ की थीं उनमें से बत्तीस व्यक्तियों के मंसबों में उन्नति की गई। अब्दुल् अज़ीज़ खाँ नक्शबंदी हमारे पुत्र खानजहाँ की संस्तुति पर कंधार का अध्यक्ष नियत हुआ था, उसका मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया। १ म शहरिवर को हमने जम्बीलबेग एलची को एक जड़ाऊ तलवार दी और उसे राजधानी के पास एक ग्राम दिया, जिसकी आय सोलह सहस्र रुपए वार्षिक थी।

इसी समय यह जानकर कि अपनी दुष्ट प्रकृति तथा अज्ञान के कारण हकीम रुक्ना किसी भी कार्य के लिए अयोग्य है हमने उसे सेवा-कार्य से हटा दिया और उससे कह दिया कि जहाँ वह चाहे चला जाय। हमें यह सूचना मिली कि खानआलम के भतीजे होशंग ने अन्याय से एक खून कर डाला है, इस पर उसे बुलाकर इसकी जाँच

की और जब यह दोप सिद्ध हो गया तब उसको प्राणदंड की आज्ञा दी। ईश्वर न करे कि हम ऐसे न्याय के समय शाहजादों तक का विचार करें और इससे भी कहीं कम अमीरों का। ईश्वर की कृपा इसमें हमारी सहायता करे। १ म शहरिवर को आसफखाँ की प्रार्थना पर हम उसके गृह पर गए और उसके नए बनवाए हुए स्नानघर में स्नान किया। यह बहुत सुंदर बना हुआ है। हमारे स्नान कर लेने के अनतर उसने अपनी भेंट हमारे सामने रखी। हमने कुछ पसंद कर ले लिया और बाकी लौटा दिया। खानदेश के गत शासक खिज्र खाँ की वार्षिक वृत्ति बढ़ाकर तीस सहस्र रुपए कर दिया।

इसी समय हमें सूचना मिली कि कल्याण नामक एक लोहार अपनी जाति की एक स्त्री से अत्यधिक प्रेम करने लगा है और सदा उसके पैरों पर अपना सिर रखा करता है तथा उसके लिए उसमें पागलपन के चिह्न मिल रहे हैं। वह स्त्री बेवा है और इसे किसी प्रकार स्वीकार नहीं करती। इस अभागे के प्रेम का उसके हृदय पर, जिसे उसने अपना हृदय दे दिया था, तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। हमने दोनों को अपने सामने बुलवाकर इसकी जाँच की और उस स्त्री को बहुत समझाया कि उससे संबंध कर ले पर उसने स्वीकार नहीं किया। इसी समय लोहार ने कहा कि यदि उसे यह निश्चित हो जाय कि हम उसे उसको दिला देंगे तो वह अपने को दुर्ग के शाह बुर्ज के ऊपर से गिरा देगा। हमने हँसी में कह दिया कि 'शाह बुर्ज को जाने दो यदि तुम्हारा प्रेम सच्चा है तो इसी घर की छत से कूदो तो हम इसे तुम्हारे साथ रहने को बाध्य करेंगे।' हमने कथन समाप्त भी नहीं किया था कि वह बिजली के समान दौड़कर छत पर से कूद पड़ा। जब वह गिरा तब उसकी आँखों तथा मुख से रक्त बहने लगा। हमें इस हँसी करने पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ और हमने

आसफखाँ को आज्ञा दी कि इसे अपने घर लिवा जाकर इसकी देख-भाल करे। उसका जीवन-प्याला भर उठा था इससे वह चोट के कारण मर गया। शैर—

> प्राण निछावर करनेवाला प्रेमी, जो देहली पर खड़ा था।
> प्रसन्नता से प्राण दे दिया और मृत्यु को अति तुच्छ समझा॥

महाबत खाँ की प्रार्थना पर लाचीन काकशाल का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया।

यह लिखा जा चुका है कि कश्मीर में दशहरा के उत्सव पर हमें स्वाँस-कष्ट होने लगा था। संक्षेप में वर्षा तथा वायु की अधिकता की नमी के कारण हमारे हृदय के पास बाईं ओर स्वाँस लेने में बाधा ज्ञात होने लगी। यह क्रमशः बढ़ने लगा। हमारे पास रहनेवाले हकीमों में से पहले हकीम रूहुल्ला ने दवा दी और कुछ समय तक गर्म तथा शांतिप्रदायक औषधियों से लाभ ज्ञात हुआ क्योंकि कुछ कमी थी। जब हम पहाड़ों से नीचे उतर आए तब इसका प्रकोप बहुत बढ़ गया। इस बार भी कई दिनों तक हमने बकरी का दूध और ऊँटनी का दूध लिया पर उससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। इसी समय हकीम रुक्ना, जिसे कश्मीर की यात्रा करने से छुट्टी मिल गई थी और आगरे में छोड़ दिया गया था, हमारे यहाँ आया और विश्वास के साथ अपना जोर प्रगट कर हमारी दवा अपने हाथ में लेली और गर्म तथा रूक्ष औषधियाँ देने लगा। इसकी दवाओं से भी हमें कुछ लाभ नहीं हुआ प्रत्युत् इसके विरुद्ध हमारे मस्तिष्क तथा प्रकृति में गर्मी एवं रूक्षता पैदा हो गई, जिससे निर्बलता आने लगी। रोग बढ़ गया और कष्ट अधिक होने लगा। ऐसे समय तथा ऐसी अवस्था में जब हमारे पास के रहनेवाले का पत्थर का हृदय भी पसीज जाता तब हकीम मिर्जा मुहम्मद का पुत्र सदरा भी हमारी सेवा में था। मिर्जा मुहम्मद

फारस के प्रधान हकीमों में से एक था और हमारे श्रद्धेय पिता के समय वहाँ से यहाँ चला आया था। हमारी राजगद्दी हो जाने के अनंतर यह अपने अनुभव तथा हकीमी की कुशलता से हमारी सेवा में रहने लगा और इसे हमने मसीहुज्जमाँ की पदवी दी। हमने अन्य दरबारी हकीमों से इसका स्थान विशेष सम्मानित कर दिया था कि किसी कठिन अवस्था में यह हमारे काम आवेगा। उस अकृतज्ञ मनुष्य ने हमारे इतने उपकारों के रहते हुए तथा हमारी अवस्था देखते हुए भी हमारी दवा नहीं की और न औषधि दी। यद्यपि हमने अपनी सेवा में रहनेवाले सभी हकीमों से इसे ऊँचे बढ़ा रखा था पर उसने हमारी औषधि करना स्वीकार नहीं किया। हमने उसे बहुत समझाया तथा उसका सम्मान किया पर उसका हठ बढ़ता गया और उसने कहा कि हमें अपने ज्ञान पर इतना विश्वास नहीं है कि अच्छा करने का बीड़ा उठावें। यही बात हकीमुल्मुल्क के पुत्र हकीम अबुल्‌-कासिम के साथ भी थी, जो कि खानःजाद था और पालित-पोषित हुआ था। उसने अपने को शंका तथा भय में पड़ा हुआ समझा और इस कारण वह भयभीत तथा दुखी था अतः वह किस प्रकार औषधि कर सकता था। इस प्रकार कोई उपाय नहीं रहने पर हमने उन सबका आसरा छोड़ दिया और प्रत्यक्ष औषधियों से हमने अपना मन हटाकर उसी सर्व-श्रेष्ठ वैद्य की शरण ली। मदिरापान करने से कष्ट कुछ कम होता था इसलिए आदत के विरुद्ध दिन में भी पीना आरंभ किया और क्रमशः इसे बहुत बढ़ा दिया। जब ऋतु में गर्मी आ गई तो इसका कुप्रभाव बढ़ गया और हमारी निर्बलता तथा स्वाँस-कष्ट भी बढ़ गया। नूरजहाँ बेगम ने, जिसकी कुशलता तथा अनुभव इन हकीमों से बढ़कर था और विशेषकर प्रेम तथा सहवेदना के कारण जो अधिक हो गया था, हमारे प्यालों की संख्या में कमी की और ऐसी औषधियों का भी उपयोग करने लगी जो अवसर के अनुकूल तथा

हमारे कष्ट को कम करनेवाली थी। यद्यपि इसके पहले हकीमों की औषधियाँ भी इसीकी स्वीकृति पर दी गई थीं पर इस बार हम उसकी दया पर निर्भर थे। धीरे-धीरे उसने मदिरा बहुत कम कर दी और हमें ऐसी वस्तु खाने से रोक रखा जो हमारे लिए अनुकूल न थी और हमारे लिए सुपाच्य भी नहीं थी। हमें आशा है कि वह सर्व श्रेष्ठ सच्चा वैद्य गुप्त संसार के औषधालय से हमें पूरा स्वास्थ्य देने की दया करेगा।

सोमवार उसी महीने की २२वीं को, जो २५वीं शव्वाल सन् १०३० हि० होता है, हमारे सौर तुलादान का उत्सव प्रसन्नता तथा आनंद के साथ हुआ। इस कारण कि गत वर्ष हमने कड़ी बीमारी से कष्ट भोगा था और बराबर पीड़ा तथा दुःख उठाया था तब भी ऐसे वर्ष के अच्छी प्रकार कुशलपूर्वक बीतने पर और इस वर्ष के आरंभ होने पर स्वास्थ्य के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे थे, नूरजहाँ बेगम ने प्रार्थना की कि उसके वकीलों द्वारा इस तुलादान का प्रबंध किए जाने की आज्ञा हो। वास्तव में उन सब ने ऐसा प्रबंध किया कि देखनेवालों को आश्चर्य हुआ। जिस दिन से नूरजहाँ बेगम का इस प्रार्थी से संबंध हुआ तभी से वह सभी सौर तथा चांद्र तुलादानों का प्रबंध साम्राज्य के उपयुक्त करती आई थी और सौभाग्य तथा ऐश्वर्य के लिए सभी आवश्यकताओं को अच्छी प्रकार जानती थी। ऐसा होते भी इस बार उसने अधिक ध्यान उत्सव के प्रबंध तथा सजावट में किया। सभी अच्छे सेवक-सेविकाओं को, जो हमारे स्वभाव को जाननेवाले थे और हमारी उस निर्बलता के काल में बराबर सेवा में उपस्थित रहते थे, प्राण निछावर करने को सदा तत्पर रहते थे और निरंतर हमारे सिर के पास फतिंगों के समान मँडराया करते थे, उचित कृपाओं द्वारा जैसे खिलअत, जड़ाऊ कमरबंद, जड़ाऊ खंजर, घोड़े, हाथी तथा धन से भरी थालियों से प्रत्येक को उनकी स्थिति के अनुकूल देकर सम्मानित

किया। यद्यपि हकीमों ने सेवा नहीं की थी और दो तीन दिनों तक जो कुछ प्रयत्न किया था उसके लिए वे बहुत कुछ पा चुके थे तब भी इस उत्सव के अवसर पर इन्हे रत्न-धन पुरस्कार दिए गए।

तुलादान का कार्य निपटने पर सोने-चाँदी से भरी थालियाँ निछावर कर गाने-बजाने वालों तथा गरीबों में बाँटी गईं। ज्योतिषराय ज्योतिषी ने हमारे अच्छे तथा स्वस्थ होने की भविष्यवाणी की थी इसलिए हमने उसे मुहर तथा रुपयों से तौलवाकर वह धन दिया, जो पाँच सौ मुहर तथा सात सहस्र रुपए हुए। उत्सव के समाप्त होने पर बेगम की प्रस्तुत की हुई भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। रत्नों, जड़ाऊ आभूषणों, वस्त्रों तथा अन्य अलभ्य वस्तुओं में से हमें जो पसंद आया उन्हें हमने स्वीकार किया। नूरजहाँ बेगम का इस उत्सव के भारी आयोजन में भेंट के मूल्य को छोड़कर दो लाख रुपए व्यय हुए। पहले वर्षों में जब हम स्वस्थ थे तब हमारी तौल तीन मन एक या दो सेर कम या अधिक रहती थी पर इस वर्ष हमारी दुर्बलता तथा कृशता के कारण हमारा तौल दो मन सत्ताईस सेर ही रह गया।

इलाही महीने मिह की १ली को गुरुवार के दिन कश्मीर का प्रांताध्यक्ष एतकाद खाँ का मंसब चारहजारी २५०० सवार का और राजा गजसिंह का चारहजारी ३००० सवार का कर दिया। जब हमारी बीमारी का हाल हमारे पुत्र शाह पर्वेज को मिला तब वह बिना आज्ञापत्र पाए हमें देखने चला आया क्योंकि वह अपने को रोक न सका। उसी महीने की १४वीं को शुभ घड़ी तथा अच्छे समय में वह भाग्यवान पुत्र हमारी सेवा में आया और उसने तीन बार तख्त की परिक्रमा की। हमने इसके लिए उसे बहुत रोका तथा मना किया पर

उसने रोते हुए हठवश इसे पूरा किया। हमने उसका हाथ पकड़कर बड़े स्नेह तथा दया से गले लगा लिया और उस पर अत्यधिक स्नेह दिखलाया। हम आशा करते हैं कि वह दीर्घ जीवन तथा सौभाग्य भोगे।

इसी समय बीस लाख रुपए खुर्रम के पास दक्षिण की सेना के व्यय के लिए अल्लहदाद खाँ के हाथ भेजे गए, जिसे एक हाथी तथा झंडा दिया गया। २८वीं को कियाम खाँ प्रधान शिकारी मर गया। यह विश्वासपात्र सेवक था और अहेर की कुशलता के सिवा अहेर कार्य की कुल साधारण बातों तक का प्रबंध देखा करता और हमारी प्रसन्नता को सदा दृष्टि में रखता था। हम इसके लिए बहुत दुखी हुए। आशा है कि ईश्वर उसे क्षमा करेगा।

२९वीं को नूरजहाँ बेगम की माता की मृत्यु हुई। सती परिवार के इस वृद्धा के अच्छे गुणों के बारे में हम क्या लिखें। बिना किसी प्रकार की अतिरंजना के इसके स्वभाव की पवित्रता, बुद्धिमत्ता तथा गुणों में, जो स्त्रियों के आभूषण हैं, संसार में कोई भी माता इसके बराबर नहीं हुई होगी और हम भी इसे अपनी माता से कम नहीं समझते थे। इस स्त्री के प्रति एतमादुद्दौला का भी जो प्रेम था उसके समान किसी पति का न होगा। कोई भी उस शोकग्रस्त वृद्ध मनुष्य के कष्ट की कल्पना कर सकता है। साथ ही नूरजहाँ बेगम का अपनी माता के प्रति जो स्नेह था वह भी लिखने योग्य नहीं है। आसफ खाँ के समान पुत्र ने भी अत्यधिक बुद्धिमान तथा कुशल होते हुए धैर्य रूपी वस्त्र को फाड़ डाला और सामाजिक स्थिति के अनुकूल वस्त्रों को फेंक दिया। इस प्रिय पुत्र की हालत देखकर हार्दिक कष्ट पाते हुए पिता का कष्ट और शोक बहुत बढ़ गया। हम लोगों ने कितना ही समझाया पर कोई फल नहीं निकला। जिस दिन हम शोक मनाने गए उस दिन भी प्रेम

तथा दया के साथ समझाया पर विशेष जोर नहीं दिया। हमने शोक को क्रमशः शांत होने के लिए छोड़ दिया। कुछ दिन बीतने पर हमने अपनी कृपा की दवा उसके घाव पर लगाई और उसे सामाजिक स्थिति में ले आए। यद्यपि हमें प्रसन्न करने तथा हमारे मन को संतोष दिलाने के लिए उसने बाहर से अपने को शांत प्रगट किया तथा संतुष्ट दिखलाया। पर उसके प्रति अपने प्रेम को वह क्या समझा सकता था।

इलाही महीने आबाँ की १ली को सरबुलंद खाँ, जानसिपार खाँ और बाकी खाँ डंका पाकर सम्मानित हुए। अब्दुल्लाखाँ दक्षिण के प्रांताध्यक्ष की आज्ञा बिना लिए ही अपनी जागीर पर चला गया था इसलिए हमने प्रधान दीवानों को आज्ञा दी कि उसकी जागीर जब्त करलें और एतमाद राय को सज़ावल नियत किया कि उसे दक्षिण लौटा दे।

लिखा जा चुका है कि किस प्रकार मसीहुज्जमाँ (हकीम सदरा) ने पालित-पोषित होते और हमारी कृपाओं को पाते हुए भी उन सबको दृष्टि में न रखकर ऐसी बीमारी में हमारी दवा करना अस्वीकार कर दिया था। इससे भी विचित्र बात यह हुई कि उसने प्रगट रूप में विनम्रता का पर्दा फाड़ दिया और हिजाज़ की यात्रा करने तथा पवित्र स्थानों का दर्शन करने के लिए जाने की आज्ञा माँगी। इस प्रार्थी का दयालु स्रष्टा पर हर समय तथा हर अवस्था में इतना विश्वास है कि हमने उसके लौटने न लौटने का ध्यान भी न रखा और प्रसन्नता से जाने की छुट्टी देदी। उसके पास सभी प्रकार के सामान थे पर तब भी हमने बीस सहस्र रुपए उसके व्यय के लिए दिलवा दिए और हमें आशा है कि वह सर्वश्रेष्ठ हकीम अपनी दया के औषधालय से इस प्रार्थी को पूर्ण स्वस्थता देगा।

आगरे का जल-वायु गर्मी के बढ़ने के कारण हमारी प्रकृति के

अनुकूल नहीं था इसलिए सोमवार १३ वीं इलाही महीना आबाँ को १६ वें जलूसी वर्ष में शाही झंडे उत्तरी पार्वत्यस्थान की ओर जाने के लिए खड़े किए गए। हमारा विचार था कि यदि उस ओर की जल-वायु हमारी प्रकृति के अनुकूल पड़ेगी तो गंगा नदी के किनारे कोई अच्छा स्थान चुनकर वहाँ नगर बसावें, जो ग्रीष्मऋतु के लिए स्थायी निवासस्थान हो जावे और नहीं तो कश्मीर की ओर चले जायँ। आगरे के शासन तथा रक्षा का भार मुजफ्फर खाँ को सौंपकर उसे डंका, एक घोड़ा तथा एक हाथी देकर सम्मानित किया। उसके भतीजे मुहम्मद को नगर का फौजदार नियत किया और उसे असदखाँ की पदवी दी तथा मंसब बढ़ाने वालों की सूची में रखा। बाकिरखाँ को अवध प्रांत का कार्य देकर वहाँ जाने की छुट्टी दी। उक्त महीने की २६ वीं को हमारे ऐश्वर्यवान् पुत्र शाह पर्वेज़ को मथुरा से अपने प्रांत बिहार तथा जागीर पर जाने की छुट्टी मिली। हमने उसे जाते समय खास खिलअत, एक नादिरी, एक जड़ाऊ खंजर, एक घोड़ा तथा एक हाथी दिया। आशा है कि वह दीर्घ जीवन पावेगा। ४ थी आज़र को दिल्ली का अध्यक्ष मुकर्रमखाँ सेवा में आकर सम्मानित हुआ। ६ ठी को हम दिल्ली में उतरे और सलीमगढ़ में दो दिन ठहरकर अहेर खेलने का आनंद लिया। इसी समय सूचना मिली कि जादो राय कनसठिया ने, जो दक्षिण के बड़े सर्दारों में से एक है, अपने सौभाग्य तथा ईश्वरी कृपा की प्रेरणा से राजभक्ति स्वीकार करली है और बादशाही सेवकों में भर्ती होगया है। नरायनदास राठौर के हाथ हमने एक दयापूर्ण आज्ञापत्र तथा खिलअत और एक जड़ाऊ खंजर भेजा। इलाही महीने दै को १ ली को, ७ सफर सन् १०३१ हि० को कासिमखाँ के भाई मक-सूद को हाशिमखाँ की पदवी दी और हाशिम बेग खोशी को जान निसार खाँ की।

उसी महीने की ७ वीं को हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे पड़ाव

पड़ा। यह हिंदुओं के प्रसिद्धतम तीर्थस्थानों में से एक है और बहुत से ब्राह्मण तथा साधु यहाँ अपने लिए एकांतस्थान बनाकर अपने धर्म के नियमानुसार ईश्वर का पूजन करते हैं। हमने सभी को धन तथा सामान उनकी आवश्यकतानुसार दिए। पहाड़ियों की यहाँ की तराई की जलवायु हमें पसंद नहीं आई और यहाँ कोई ऐसा स्थान नहीं दिखलाई पड़ा जहाँ स्थायी निवासस्थान बनाया जा सके इसलिए हम जम्मू तथा काँगड़ा की तराई की ओर आगे बढ़े।

इसी समय हमें सूचना मिली कि राजा भाऊ सिंह की मृत्यु दक्षिण में हो गई। मदिरापान के आधिक्य से वह बहुत निर्बल तथा अस्वस्थ हो गया था। एकाएक अचेतनता उस पर आ गई। वैद्यों ने औषधियाँ देकर बहुत कुछ प्रयत्न किए और उसके सिर पर दागा भी पर चेतनता नहीं लौटी। एक दिन-रात इसी प्रकार पड़े रहने के अनंतर दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गई। दो पत्नियाँ तथा आठ रक्षिताएँ उसके साथ पातिव्रत्य की अग्नि में जल मरीं। उसका बड़ा भाई जगतसिंह तथा उसका भतीजा महासिंह इसी मदिरापन पर निछावर हो चुके थे पर उसने इससे कोई उपदेश ग्रहण नहीं किया और मधुर जीवन को कड़ुए तरल पदार्थ पर बेच दिया। वह बहुत अच्छी प्रकृति का तथा गंभीर था। हम जब शाहजादा थे तभी से यह हमारी बराबर सेवा में था और हमारे शिक्षण की कृपा से वह पाँच हजारी मंसबदार हो गया था। उसे कोई पुत्र नहीं था इसलिए उसके बड़े भाई के पौत्र को, जो अल्पावस्था का था, राजा की पदवी तथा दो हजारी १००० सवार का मंसब दिया। पुरानी प्रथा के अनुसार उसका देश आमेर का परगना उसे जागीर में दिया गया जिससे उसका परिवार अस्तव्यस्त न हो जाय। खानजहाँ के पुत्र असालत खाँ का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया।

उसी महीने की २०वीं को हम अलनातू सराय में ठहरे। अहेर खेलने का आनंद हम बराबर लिया करते हैं और अपने हाथ से मारे हुए पशुओं का मांस हमें विशेष रुचिकर होता है। ऐसे विषयों में अपनी आशंकाओं तथा सतर्कता के कारण हम अपने सामने इन पशुओं को साफ कराते हैं और उनके पेटों को देखते हैं कि उन्होंने क्या खाया है और उनका क्या भोज्य है। यदि संयोग से कोई ऐसी वस्तु दिखला गई जिसे हमने पसंद नहीं किया तो उसका मांस नहीं खाते थे। इसके पहले हम सिवा सोना बत्तक के किसी अन्य जलपक्षी का माँस नहीं खाते थे। जब हम अजमेर में थे तब हमने एक पालतू सोना बत्तक को घृणित कीड़ों को खाते हुए देखा और इस कारण हमारी रुचि उससे हट गई और तब हमने सोनाबत्तक का माँस खाना छोड़ दिया। इस समय भी एक सोना बत्तक पकड़ा गया और इसे अपने सामने साफ कराया। उसके पेट में से पहले एक छोटी मछली निकली और उसके अनंतर इतना बड़ा एक कीड़ा निकला कि हमें विश्वास नहीं हुआ कि इतनी बड़ी वस्तु वह निगल सकता है जब तक स्वयं उसे नहीं देखा। संक्षेप में उस दिन हमने निश्चय किया कि हम अब जलपक्षी नहीं खाएँगे। खानआलम ने प्रार्थना की कि सफेद गिद्ध का मांस बहुत ही स्वादिष्ट तथा सुपाच्य होता है। इस पर हमने एक सफेद गिद्ध को मँगवाया और अपने सामने साफ करने की आज्ञा दी। संयोग से उसके पेट से दस कीड़े इस प्रकार घृणित ढंग से निकले कि उसके स्मरण से दुःख तथा घृणा होती है।

२१वीं को सरहिंद के बाग में पहुँचे जिससे बड़ा आनंद मिला और हमने ठहरने के दिन उसी में घूमते फिरते व्यतीत किया। इसी समय दक्षिण से आकर ख्वाजा अबुल् हसन हमारी सेवा में उपस्थित हुआ। इस पर विशेष कृपा दिखलाई गई। इलाही महीने बहमन की

१लीको हम नूरसराय में ठहरे। मोतमिद खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ६०० सवार का कर दिया। खानआलम को इलाहाबास (इलाहाबाद) का प्रांताध्यक्ष नियतकर और एक घोड़ा, खिलअत तथा एक जड़ाऊ तलवार देकर जाने की छुट्टी दी। मुकर्रब खाँ को पाँच हजारी ५००० सवार का मंसब दिया। गुरुवार को जब हम व्यास नदी के किनारे ठहरे हुए थे तभी कासिम खाँ लाहौर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसका भाई हाशिम खाँ उस प्रांत के पार्वत्यस्थान के जमींदारों के साथ देहली चूमकर सम्मानित हुआ।

तलवाड़ा का जमींदार बासू एक पक्षी लाया, जिसे पहाड़ी लोग जाँबहाँ कहते हैं। इसकी पूछ किरकावल के समान है, जिसे तजरू भी कहते हैं। इसका रंग ठीक मादा किरकावल के समान है पर आकार में यह उसका आधा है। इसकी आँखों का घेरा लाल है जब कि किरकावल का सफेद होता है। उक्त बासू ने बतलाया कि यह पक्षी बर्फीले पहाड़ों पर रहता है और यह घास आदि खाता है। हमने किरकावलों को पाला है और उनके बच्चों को भी तथा बहुधा छोटे बड़े सभी का माँस खाया है। यह कहा जा सकता है कि इस पक्षी तथा किरकावल के मांस की कोई तुलना नहीं की जा सकती। इस पक्षी का मांस बहुत हलका है। पार्वत्य प्रदेश के पक्षियों में एक फूलपैकर होता है जिसे कश्मीरी सोनलू कहते हैं। यह मुर्गी से एक अष्टभांश आकार में छोटा होता है। पीठ, पुच्छ तथा डैने स्थल पक्षी तर्दा के समान होते हैं और कुछ कालापन लिए श्वेत धब्बेदार होते हैं। छाती का रंग काला होता है, जिसमें श्वेत धब्बे तथा कुछ लाल भी होते हैं। परों का किनारा चमकता लाल होता है और अत्यंत प्रकाशमान तथा सुंदर होता है। गले के पीछे के अंत से चमकदार काला होता है। सिर के ऊपर दो मांसल सींगें नीलम के रंग की होती हैं। इसकी आँखों तथा मुख के चारों ओर का चर्म लाल होता है। इसके गले के नीचे इतना चमड़ा

चारों ओर लटका रहता है जिससे दो हाथ की हथेली ढँक सकती है और इसके मध्य में चमड़ा हाथ भर बैंगनी रंग का होता है जिसके बीच में नीले धब्बे होते हैं। इसके चारों ओर प्रत्येक धारी नीले रंग की होती है, जिसके आठ भाग होते हैं। नीले घेरे के चारों ओर दो अंगुल चौड़ाई तक लाल रंग के फूल के समान होता है। उसके गले पर भी नीले रंग की धारी होती है। इसके पैर भी लाल होते हैं। यह जीवित पक्षी तौल में एक सौ बावन तोले था। मारने तथा साफ करने के अनंतर इसका तौल एक सौ उनतालीस तोले रहा। एक दूसरा पक्षी सुनहले रंग का था जिसे लाहौर के लोग शान (साल) तथा कश्मीरी लोग पूट (लूत) कहते हैं। इसका रंग मोर की छाती के समान है। इसके सिर पर काकुल होता है। इसकी पाँच अंगुल चौड़ी पूँछ पीली होती है और मोर के बड़े पर के समान होता है। इसका शरीर हंस के इतना बड़ा होता है। हंस का गला लंबा तथा असुंदर होता है और इसका छोटा तथा स्वरूपवान होता है।

हमारे भाई शाह अब्बास ने सुनहले पक्षी माँगे थे इसलिए हमने कुछ उसके राजदूत द्वारा भेज दिए। सोमवार को चांद्र तुलादान का उत्सव हुआ। इस अवसर पर नूरजहाँ बेगम ने पैंतालिस बड़े सरदारों तथा निजी सेवकों को खिलअत दिए। उसी महीने की १४ वीं को हलवान ग्राम में, जो सीबा परगने के अंतर्गत है, पड़ाव पड़ा। हम बराबर काँगड़ा तथा उक्त पार्वत्यस्थान की जलवायु की इच्छा रखते थे इसलिए हमने बड़े पड़ाव को इसी स्थान पर छोड़ा और कुछ खास सेवकों तथा अनुयायियों के साथ उक्त दुर्ग को देखने चले गए। एतमादुद्दौला रुग्ण था इसलिए उसे पड़ाव में छोड़ गया था और मीर बख्शी सादिक खाँ को उसकी देखभाल तथा पड़ाव की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया था। दूसरे दिन समा-

चार मिला कि उसकी हालत में परिवर्तन हो गया है और अब कोई आशा नहीं रह गई है। हम नूरजहाँ बेगम की घबराहट नहीं सहन कर सकते थे और उसके प्रति भी हमें जो स्नेह था उसके कारण भी हम पड़ाव पर लौट आए। दिन के अंत में हम उसे देखने गए। वह कभी अचेत हो जाता था और कभी कुछ चेतनता आ जाती थी। नूरजहाँ बेगम ने हमारी ओर संकेत कर कहा कि आपने इन्हें पहिचाना ? उसने उसी समय 'अनवरी' का यह शैर पढ़ा—

यदि जन्मांध भी उपस्थित हो।
तो संसार को शोभित करनेवाले कपोल पर बड़प्पन देख ले ॥

हम दो घंटे तक उसके सिरहाने रहे। जब कभी वह चेतन रहता तब जो कुछ कहता वह समझदारी ही की बुद्धिगम्य बातें होतीं। संक्षेप में उक्त महीने की १७ वीं को तीन घड़ी बीतने पर उसकी मृत्यु हो गई। इस कठोर घटना से हमारे हृदय में क्या भाव आए यह कहना कठिन है। वह बुद्धिमान तथा कुशल मंत्री और विद्वान तथा स्नेही मित्र था।

नेत्रों के देखने से एक शरीर कम हो गया।
पर बुद्धि की दृष्टि से सहस्रों से भी अधिक कमी हो गई ॥

यद्यपि उसके कंधों पर एक साम्राज्य का बोझ था और यह किसी नश्वर की शक्ति के भीतर या उसके लिए संभव नहीं था कि वह सबको संतुष्ट कर सके पर कोई भी एतमादुद्दौला के पास प्रार्थनापत्र लेकर या किसी कार्य से गया हो और असंतुष्ट होकर लौटा हो ऐसा नहीं हुआ। उसने सम्राट् के प्रति राजभक्ति भी दिखलाई और माँगनेवालों को प्रसन्न तथा आशापूर्ण भी रखा। वस्तुतः यह उसकी विशेषता थी। जिस दिन उसकी स्त्री मरी उसी दिन से उसने अपना ध्यान नहीं रखा और प्रति दिन कृश होता चला गया। यद्यपि वह

साम्राज्य के सभी कार्यों का निरीक्षण करता रहा तथा दीवानी कार्यवाही में भी पूरा प्रयत्न करते हुए कभी चुपचाप नहीं बैठा पर हृदय से उसका शोक नहीं गया और अंत में तीन महीने बीस दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके दूसरे दिन शोक मनाने के लिए हम उसके पुत्रों तथा दामादों के यहाँ गए और उसकी इकतालीस संतानों तथा बारह अधीनों को खिलअतें देकर शोक से उठाया।

इसके दूसरे दिन हमने उसी इच्छा से यात्रा की और काँगड़ा दुर्ग देखने गए। चार पड़ाव करने पर हम बानगंगा के किनारे ठहरे। दुर्ग के रक्षक अलफ खाँ तथा शेख फैजुल्ला सेवा में आकर उपस्थित हुए। इसी पड़ाव पर चाम्बा के राजा की भेंट हमारे सामने उपस्थित की गई। इसका देश काँगड़ा से पचीस कोस आगे है। इन पहाड़ों में इससे बड़ी जमींदारी दूसरी नहीं है। इस देश के सभी जमींदारों का यह शरणस्थल है। इसमें दुर्गम दर्रे हैं। अब तक इसने किसी बादशाह का आज्ञा नहीं मानी थी और न किसी के पास भेंट भेजा था। इसका भाई भी सेवा में आकर सम्मानित हुआ और उसने अधीनता तथा सेवा स्वीकार की। वह समझदार, बुद्धिमान तथा सुशील ज्ञात होता था। हमने भी हर प्रकार की कृपा कर उसे सम्मानित किया।

उसी महीने की २४वीं को हम काँगड़ा दुर्ग देखने गए और आज्ञा दी कि काजी, मीर अदल तथा अन्य मुल्ले हमारे साथ चलें और दुर्ग में मुहम्मदी मत के अनुसार जो हो वह दुर्ग में करें। संक्षेप में एक कोस चलकर हम दुर्ग के ऊपर गए और ईश्वरी कृपा से अजाँ की पुकार, खुतबे का पढ़ना तथा एक बैल का वध सब हमारे समक्ष हुआ, जैसा कि दुर्ग के निर्माण के समय से अब तक वहाँ नहीं हुआ था। इतनी बड़ी कृपा के लिए सिज्दा किया, जैसा कि किसी

बादशाह ने कभी आशा भी नहीं की थी और उस दुर्ग में एक ऊँची मस्जिद बनाने की आज्ञा दी। काँगड़ा का दुर्ग एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और इतना दृढ़ है कि यदि दुर्ग की आवश्यकतानुसार रसद तथा सामान रहे तो शक्ति उसके अंचल तक नहीं पहुँच सकती और पाश सदैव छोटा पड़ता रहेगा। यद्यपि उसके आस-पास कुछ ऊँचाइयाँ हैं और उनसे गोले-गोलियाँ दुर्ग तक पहुँच सकती हैं पर दुर्गवालों को कोई हानि नहीं पहुँच सकती क्योंकि वे दुर्ग के अन्य भाग में जाकर सुरक्षित रह सकते हैं। इसमें तेईस बुर्ज तथा सात फाटक हैं। इसका भीतरी घेरा एक कोस पंद्रह लाठा है, लंबाई चौथाई कोस दो तनाब और चौड़ाई बाईस तनाब से अधिक तथा पंद्रह से कम नहीं है। इसकी ऊँचाई एक सौ चौदह हाथ है। दुर्ग के भीतर दो जलाशय हैं, एक दो तनाब लंबा और डेढ़ चौड़ा है और दूसरा भी उसी लंबाई का है।

दुर्ग के चारों ओर घूमकर हम दुर्गा मंदिर देखने गए, जो भवन के नाम से विख्यात है। एक संसार यहाँ भूल की मरुस्थली में आता रहा है। काफिरों की बात छोड़कर, जिनका मूर्तिपूजन धर्म ही है, झुंड के झुंड मुसल्मान दूर दूर से आकर भेंट चढ़ाते तथा काले पत्थर की प्रार्थना करते हैं। मंदिर के पास पहाड़ी की ढाल पर गंधक की खान है और गर्मी के कारण उसमें से लौ बराबर निकलती है। वे इसे ज्वालामुखी कहते हैं और इसे मूर्ति का एक चमत्कार बतलाते हैं। वास्तव में हिंदू इसका तथ्य समझते हैं पर दूसरों को बहकाते हैं। हिंदू कहते हैं कि जब महादेव की स्त्री की मृत्यु हो गई तब महादेव उसके प्रेम के कारण उसका शव कंधे पर लादे हुए संसार में भ्रमण करते रहे। कुछ दिन बीतने पर जब वह शव गल गया तब उसके अंग टूट कर अलग-अलग हो गए और हर एक अंग भिन्न-भिन्न स्थानों पर गिरा। अंग की विशेषता के अनुसार वे उस स्थान के महत्व को

झाँकते हैं। छाती अन्य अंगों की तुलना में सबसे अधिक प्रतिष्ठित है और वह यहीं गिरा है इसलिए अन्य स्थानों से यह स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। कुछ लोग दृढ़ता से कहते हैं कि यह पत्थर, जो अब दुष्ट काफिरों का पूज्यस्थान है, वह पत्थर नहीं है जो पहले से यहाँ स्थापित था और उसे पहले कुछ मुसल्मान आकर उठा ले गए और नदी के तल में डाल दिया, जिससे कोई उसे पा न सके। बहुत दिनों तक काफिरों तथा मूर्ति-पूजकों का यह उपद्रव संसार से दूर रहा पर इसके अनंतर एक झूठे ब्राह्मण ने स्वार्थ-लाभ की इच्छा से एक पत्थर छिपाकर रख दिया और उस समय के राजा से जाकर कहा कि हमने स्वप्न में दुर्गा को देखा है और उन्होंने कहा कि हमें अमुक स्थान पर फेंक गए हैं, शीघ्र जाकर उठा लाओ। राजा ने सिधाई के कारण तथा भेंट में चढ़े हुए सोने की आय की लोभ में पड़कर ब्राह्मण की कहानी को सच्ची मान ली और कुछ लोगों को उसके साथ कर दिया। उस पत्थर को लाकर पुनः वहीं स्थापित कर दिया और इस भ्रांतिपूर्ण झूठे मार्ग को पुनः खोल दिया। ईश्वर ही तथ्य जाने।

इस मंदिर से हम कोहे मदार की घाटी देखने गए। यह आनंद-दायक स्थान है। इसकी जलवायु, हरियाली की नवीनता तथा सुंदर स्थिति के कारण यह रमणीक तथा दर्शनीय स्थान हो गया है। यहाँ एक जल प्रपात है जो पर्वत के ऊपर से गिरता है। हमने यहाँ एक सुंदर इमारत बनाने की आज्ञा दी। उसी महीने की २५ वीं को झंडे लौट चले। अलफखाँ तथा शेख फैजुल्ला को घोड़े तथा हाथी देकर दुर्ग की रक्षा के लिए वहीं छोड़ दिया। दूसरे दिन हम नूरपुर में पहुँचे। हमें सूचना दी गई कि यहाँ पास में बहुत से जंगली पक्षी हैं। हमने इन सबको अभी तक नहीं पकड़ा था। इसलिए यहाँ एक दिन ठहर गए और अहेर खेलने का आनंद उठाते हुए चार को पकड़ा।

रूप तथा रंग में पालतू पक्षियों से कोई विभिन्नता नहीं ज्ञात होती थी। इन पक्षियों में यह विशेषता है कि यदि इन्हें उलटा लटकाकर पैर पकड़ ले जाया जाय तो ये चुप रहते हैं और चिल्लाते नहीं पर पालतू इसका उलटा करते हैं। पालतू पक्षियों को जब तक गर्म जल में नहीं डुबोते तब तक उनका पर सहज में नहीं निकाला जा सकता। इसके विपरीत तीतर तथा बोदना के समान जंगली पक्षी के पर सूखे ही झट निकल जाते हैं। हमने इन्हें भूँजने की आज्ञा दी। यह ज्ञात हुआ कि बड़े पक्षियों का मांस निस्वादु तथा रूक्ष होता है। बच्चों के मांस में कुछ सरसता थी पर खाने योग्य नहीं होता। वे तीर की एक उड़ान से अधिक नहीं उड़ सकते। मुर्गा विशेषकर लाल होता है और मुर्गियाँ काली। नूरपुर के जंगलों में बहुत होते हैं। नूरपुर का पुराना नाम धमेरी है। जब से राजा बासू ने दुर्ग बनवाया तथा गृह एवं उद्यान निर्मित कराए तब से हमारे नाम पर वे नूरपुर कहने लगे। इसके निर्माण में तीस सहस्र रुपए व्यय हुए। वास्तव में हिंदू लोग जो प्रासाद अपने ढंग से बनाते हैं उन्हें कितना भी वे सजावें अच्छे नहीं होते। यह स्थान इस योग्य तथा स्थिति ऐसी सुंदर थी कि हमने एक लाख रुपए राजकोष से लेकर उस स्थान के उपयुक्त ऊँची इमारतें बनाने की आज्ञा दे दी।

इसी समय हमें समाचार मिला कि पास में मोती नामक एक संन्यासी[1] है जिसने अपने ऊपर का कुल अधिकार त्याग दिया है।

---

१. विवरण से ज्ञात होता है कि यह संन्यासी नहीं था। यह उन साधुओं में से रहा होगा जो शरीर को काँटों पर बैठकर, ऊर्ध्वबाहु खड़े होकर, पंचाग्नि तापकर कष्ट देते हैं। जहाँगीर ने इसे कितना कष्ट दिया होगा कि वह मृतक सा हो गया। यह मुसल्मानीपन की प्रकृति है। ऐसी नीचता करने पर भी कहता है कि वह बच गया।

हमने आज्ञा दी कि उसे हमारे सामने लावें कि हम वास्तविक बात की जाँच करें। वे हिंदू साधुओं को 'सर्व वासी' कहते हैं, जो बोलते बोलते संन्यासी हो गया है। इनमें अनेक कोटियाँ हैं और सर्ववासियों में अनेक आश्रम भी होते हैं। इनमें ही एक आश्रम मोनी कहलाता है। ये अपने को स्वस्तिक (सलब=क्रौस।) ढंग में रखते हैं और विरक्त हो जाते हैं, जैसे ये मौनी बन जाते हैं। ये अपने पैर आगे-पीछे नहीं बढ़ाते। यहाँ तक कि ये किसी प्रकार की हरकत नहीं करते और अचेतन के समान हो जाते हैं। जब वह हमारे सामने आया तब हमने उसकी परीक्षा ली और विचित्र प्रकार की सहन-शीलता देखी। हमें ध्यान आया कि मदिरोन्मत्त होने पर या मस्तिष्क की अचेतना तथा प्रलाप की अवस्था में इसमें कुछ परिवर्तन आ सकता है। इसके अनुसार हमने उसे कड़ी मदिरा के कुछ प्याले देने के लिए कहा और यह शाही उदारता से किया गया पर उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ और वह उसी अज्ञान अवस्था में रहा। अंत में उसकी चेतनता जाती रही और वे उसे शव के समान उठा ले गए। ईश्वर की कृपा थी कि वह मरा नहीं। वास्तव में इसकी प्रकृति में बड़ी सहनशीलता थी।

इसी समय बेबदल खाँ ने काँगड़ा विजय पर तथा उस मस्जिद के नींव डालने पर एक तारीख प्रस्तुत कर हमारे सामने उपस्थित किया, जिस मस्जिद के बनाने की हमने आज्ञा दी थी। इसने अच्छा लिखा था इसलिए यहाँ दिया जाता है—

संसार को अधिकृत करनेवाला,
देनेवाला, पकड़नेवाला तथा बादशाह ने
गाजीपन की तलवार से इस दुर्ग को विजय किया।

बुद्धि ने तारीख कही कि जहाँगीरी इक़्बाल ने दुर्ग को खोला।
(१०२६ हि०)

मस्जिद बनने की तारीख उसने इस प्रकार कही—

नूरुद्दीन शाह जहाँगीर पुत्र शाह अकबर
ऐसा बादशाह है जिसके समान इस काल में कोई नहीं।
ईश्वर की सहायता से इसने काँगड़ा दुर्ग विजय किया।
उसके तलवार-रूपी बादल का एक बूँद भी तूफ़ान है।
इसी की आज्ञा से यह प्रकाशमान मस्जिद बनी।
इसके सिज्दे से इसका सिर चमके।
गुप्त संदेशदाता ने कहा कि तारीख ढूँढने में (कहो)
शाह जहाँगीर की मस्जिद प्रकाशमान हुई। (१०३१ हि०)

इलाही महीना इस्फंदारमुज़ की १ ली को हमने एतमादुद्दौला की सारी अमीरी तथा प्रबंध का कुल सामान कारखानें आदि नूरजहाँ बेगम को देदिए और आज्ञा दी कि उसके गाजे-बाजे बादशाह के पीछे बजते रहा करें। उसी महीने की ४ थी को कशूना पर्गना के पास पड़ाव पड़ा। इसी दिन ख्वाजा अबुलहसन प्रथम दीवान के उच्च पद पर नियत हुआ। दक्षिण के बत्तीस अमीरों को हमने खिलअत दिए। एतमादुद्दौला के पौत्र अबू सईद का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ५०० सवार का कर दिया। इसी समय खुर्रम के यहाँ से सूचना आई कि खुसरू की उसी महीने की ८वीं[1] को कौलंज की बीमारी से मृत्यु हो गई और ईश्वर की कृपा को पहुँचा।

---

१. जहाँगीर अपने सबसे बड़े पुत्र पर असफल प्रतिद्वंद्वी की मृत्यु का समाचार लिख रहा है। इकबालनामा पृ० १६१ पर बीस बहमन को खुसरू की मृत्यु लिखी है।

उसी महीने की १६वीं को हम झेलम के किनारे पहुँचे। कासिम खाँ का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी २००० सवार का कर दिया। दिल्ली की फौजदारी के लिए राजा कृष्णदास चुने गए और इसका मंसब बढ़ाकर दो हजारी ५०० सवार कर दिया। इसके पहले अहेरियों तथा यसावलों को गिरभाक में जिरगा तैयार करने की आज्ञा दी जा चुकी थी। जब यह सूचना मिली कि वे पशुओं को घेरे में ले आए तब हम २४वीं को अपने कुछ खास सेवकों के साथ अहेर खेलने गए। पहाड़ी कूचकार (मेढ़े)[1] तथा हरिणों में से एक सौ चौबीस[2] पशु पकड़े गए। इसी दिन समाचार मिला कि जैन खाँ का पुत्र जफर खाँ मर गया। हमने उसके पुत्र सआदत उमीद को आठ सदी ४०० सवार का मंसब दिया।

---

२. अन्य पाठ एक सौ इक्कीस है।

सत्रहवाँ जलूसी वर्ष

सोमवार की संध्या को जमादिउल् अव्वल[1] सन् १०३१ हि० को एक प्रहर पाँच तथा कुछ अंश घड़ी बीतने पर संसार को प्रकाशमान करनेवाला सूर्य मीन राशि में गया और इस प्रार्थी के राज्य के सत्रहवें जलूसी वर्ष का आरंभ प्रसन्नता तथा शुभता के साथ हुआ। इसी आनंददायक दिन में आसफ खाँ का मंसब बढ़ाकर छ हजारी ६००० सवार का कर दिया। कासिम खाँ को पंजाब के शासन पर जाने की छुट्टी दी और उसे एक घोड़ा, एक हाथी तथा खिलअत दिया। अस्सी सहस्र दर्ब ईरान के शासक के एलची जंबील बेग को दिया। उसी महीने फरवरदीन की ६वीं को शाही पड़ाव रावलपिंडी में पड़ा। फाजिल खाँ को बख्शी का पद दिया गया। जंबीलबेग को लाहौर में आराम से तब तक रहने को आज्ञा दी जब तक शाही झंडे कश्मीर से नहीं लौट आते। अकबर कुली खाँ गक्खर को एक हाथी दिया।

इसी समय हमने बहुधा सुना कि ईरान का शासक खुरासान से कंधार विजय करने के लिए शीघ्रता से आ रहा है। यद्यपि हम लोगों के पूर्व तथा वर्तमान के संबंधों का ध्यान रखते हुए ऐसा होना संभव नहीं ज्ञात होता और इसकी आशा नहीं होती कि इतना बड़ा शाह इतना साधारण तथा हलका विचार रखेगा कि वह स्वयं हमारे एक छोटे दास के विरुद्ध, जो कंधार में तीन-चार सौ सैनिकों के साथ है, चढ़ाई करेगा पर शासक के कर्तव्य तथा शाहों के औचित्य की दृष्टि से सावधानी के लिए हमने अहदियों के बख्शी जैनुल् आबदीन को खुर्रम के पास आज्ञापत्र के साथ भेजा कि वह शीघ्रता से विजयी विशाल सेना,

---

१. इकबालनामा पृ० १९१ पर ८वीं तिथि दी है।

पर्वताकार हाथियों तथा असंख्य तोपखाने के साथ आवे, जो उस प्रांत में उसके सहायतार्थ नियत किए गए थे। इसलिए कि यदि यह समाचार सत्य निकले तो वह आ जाने पर असंख्य सेना तथा अगणित कोष के साथ वहाँ भेजा जा सके जिससे वचनभंग करने का फल उसे मिल जाय।

८वीं को हम हसन अब्दाल के सोते के पास ठहरे। फिदाई खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया और बदीउज्जमाँ को अहदियों का बख्शी नियत किया। शुक्रवार १२वीं को महाबत खाँ काबुल से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और नित्य बढ़नेवाली कृपाओं को प्राप्त किया। इसने एक सौ मुहर भेंट तथा दस सहस्र रुपए निछावर के दिए। ख्वाजा अबुल्हसन ने अपनी सेना का निरीक्षण कराया, जिसमें ढाई सहस्र सवार थे। इन्हीं में चार सौ बंदूकची थे। इसी पड़ाव में कमूरगाह अहेर हुआ जिसमें तीर और गोली से तेंतीस कूचकार आदि मारे गए। इसी समय साम्राज्य के स्तंभ महाबत खाँ की प्रार्थना पर हकीम मोमिना को सेवा में उपस्थित होने की आज्ञा मिली। साहस तथा विश्वास के साथ उसने हमारी औषधि करना आरंभ किया और आशा है कि इसके आने से हमें लाभ पहुँचे। महाबत खाँ के पुत्र अमानुल्ला का मंसब दो हजारी १८०० सवार का कर दिया। १६वीं को हम पाखली में ठहरे और शर्फ का उत्सव मनाया। महाबत खाँ को काबुल लौट जाने की आज्ञा देकर उसे एक घोड़ा, एक हाथी तथा खिलअत दिया। एतबार खाँ का मंसब पाँच हजारी ४००० सवार का कर दिया। यह पुराना सेवक था और बहुत निर्बल तथा वृद्ध हो गया था इसलिए इसे आगरा प्रांत दिया और दुर्ग तथा राजाकोष की रक्षा का भार सौंपा। इसे एक घोड़ा, एक हाथी तथा खिलअत देकर बिदा किया। कँवर मस्त दर्रे में इरादत खाँ कश्मीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

इलाही महीने उर्दिबिहिश्त की २री को हम रमणीक कश्मीर देश में पहुँचे। मीर मीरान का मंसब बढ़ाकर ढाई हजारी १४०० सवार का कर दिया। इसी समय प्रजा तथा सैनिकों को संतुष्ट करने के लिए हमने फौजदारी कर बंद करा दिए और आज्ञा दी कि हमारे सारे साम्राज्य में कहीं भी यह कर न लगाए जायँ। जबर्दस्त खाँ मीर तोजक का मंसब बढ़ाकर दो हजारी ७०० सवार का कर दिया। १३वीं को हकीमों की विशेष कर हकीम मोमिना की सम्मति से बाएँ पैर से रक्त निकलवाकर हम कुछ हलके हुए। मुकर्रब खाँ को एक खिलअत तथा हकीम मोमिना को एक सहस्र दर्ब पुरस्कार में दिया। खुर्रम की प्रार्थना पर अब्दुल्ला खाँ का मंसब छ हजारी कर दिया। सर्फराज़ खाँ को डंका देकर सम्मानित किया। बहादुर खाँ उज़बेग कंधार से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और उसने एक सौ मुहर भेंट में तथा चार सहस्र रुपए निछावर में उपस्थित किए। ठट्टा के प्रांताध्यक्ष मुस्तफा खाँ ने शाहनामा तथा शेख निजामी के खमसा की प्रतियाँ, जो उस्तादों द्वारा चित्रित की हुई थीं तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में भेजीं, जो हमारे सामने उपस्थित की गईं।

इलाही महीना खुरदाद की १ ली को लश्कर खाँ का मंसब बढ़ाकर चार हजारी ३००० सवार का और मीर जुमला का ढाई हजारी १००० सवार का कर दिया। दक्षिण के भी कुछ अमीरों के मंसब भी इसी प्रकार बढ़ाए गए। निम्न प्रकार से औरों के भी मंसब बढ़ाए गए—सरदार खाँ का तीन हजारी २५०० सवार, सर बुलंद खाँ का ढाई हजारी २२०० सवार, बाकी खाँ का ढाई हजारी २००० सवार, शरज़ा खाँ का ढाई हजारी १२०० सवार, जानसिपार खाँ का दो हजारी २००० सवार, मिर्जा वली का ढाई हजारी १००० सवार, मिर्जा शाहरुख के पुत्र मिर्जा बदीउज्जमाँ का डेढ़ हजारी १५०० सवार,

जाहिद खाँ का डेढ़ हजारी ७०० सवार, अकीदत खाँ का बारह सदी ३०० सवार, इब्राहीम हुसेन काशगरी का बारह सदी ६०० सवार तथा जुल्फिक़ार खाँ का एक हजारी ५०० सवार। राजा गजसिंह तथा हिम्मत खाँ डंके के लिए चुने गए। इलाही महीने तीर की २ री को सैयद बायज़ीद को मुस्तफा खाँ की पदवी तथा डंका देकर सम्मानित किया। इसी समय तहौव्वर खाँ, जो हमारा एक व्यक्तिगत सेवक है, दयापूर्ण आज्ञापत्र के साथ हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज को बुलाने भेजा गया।

इसके कुछ दिन पहले कंधार के राजकर्मचारियों के यहाँ से प्रार्थनापत्र आए कि फारस का शाह कंधार विजय करने की इच्छा रखता है पर हमारे मन ने सचाई तथा पूर्व एवं वर्तमान के संबंधों का ध्यान रखते हुए इस समाचार की सत्यता पर विश्वास नहीं किया जब तक कि हमारे पुत्र खानजहाँ की सूचना नहीं मिली की शाह अब्बास एराक़ तथा खुरासान की सेनाओं के साथ आ पहुँचा है और उसने कंधार घेर लिया है। हमने आज्ञा दी कि कश्मीर छोड़ने की साइत निकालें। दीवान ख्वाजा अबुल्हसन तथा बख्शी सादिक खाँ विजयी सेना के पहले ही शीघ्रता से लाहौर की ओर चल दिए जिसमें वे उच्चपदस्थ शाहजादों के दक्षिण, गुजरात, बंगाल तथा बिहार की सेनाओं के साथ शीघ्र आने का प्रबंध करें और उन अमीरों को जो विजयी रिकाब के साथ हैं तथा जो अपनी जागीरों पर से एक के बाद दूसरे आते जायँ उन सबको हमारे पुत्र खानजहाँ के पास मुलतान भेजते जायँ। साथ ही तोपखाना, युद्धीय हाथियों के झुंड तथा शस्त्रागार ठीक किए जाकर आगे भेजे जायँ। मुलतान तथा कंधार के बीच बहुत कम कृषि होती है इसलिए बिना रसद के भारी सेना भेजना व्यर्थ ही है। इसलिए अन्न बेचनेवालों को, जिन्हें भारतवर्ष की भाषा में बनजारा कहते हैं, उत्साह दिलाना आवश्यक हुआ और उन्हें अग्रिम

धन देकर विजयी सेना के साथ लिवा चलना निश्चित हुआ, जिससे रसद के लिए कठिनाई न हो। बनजारों की जाति होती है। इनमें किसी के पास सहस्र तथा किसी के पास कुछ कम - अधिक बैल रहते हैं। इनका व्यापार भिन्न भिन्न स्थानों से अन्न क्रय कर नगरों में ले जाकर बेंचना है। ये सेनाओं के साथ भी जाते हैं और ऐसी सेना के साथ एक लाख या अधिक बैल हो जाते हैं। आशा है कि स्रष्टा की कृपा से यह सेना भी इतनी संख्या तथा शस्त्रों से युक्त हो जायगी कि इसे इस्फहान तक, जो उसकी राजधानी है पहुँचने में कोई रुकावट या हिचक नहीं रह जायगी। खानजहाँ के पास आज्ञापत्र भेजा गया कि वह सतर्क रहे और उस ओर मुलतान से तब तक आगे न बढ़े जब तक विजयी सेना वहाँ न पहुँच जाय और वह घबराय नहीं केवल आज्ञा पालन करे। बहादुर खाँ उजबेग कंधार की सेना का सहायक होकर वहाँ जाने के लिए चुना गया और उसे एक घोड़ा तथा खिलअत दिया गया। फाजिल खाँ को दो हजारी ७५० सवार का मंसब दिया।

हमें सूचना दी गई कि जाड़े में अत्यधिक ठंढक से कश्मीर के गरीबों को बहुत कष्ट होता है और वे कठिनाई से जीवित रह पाते हैं इसपर हमने आज्ञा दी कि तीन-चार सहस्र रुपए वार्षिक आय का एक ग्राम मुल्ला तालिब इस्फहानी को सौंपा जाय जिससे वह उन गरीबों में कपड़ा वितरित करे और मस्जिदों में स्नान करने के लिए जल गर्म कराया करे।

इसी समय सूचना मिली कि किश्तवार के जमींदारों ने पुनः विद्रोह तथा अशांति मचाना आरंभ कर दिया है और उपद्रव तथा गड़बड़ कर रहे हैं तब हमने इरादत खाँ को शीघ्र वहाँ जाने की आज्ञा दी कि उनको दृढ़ता से जम जाने का अवसर मिलने के पहले वह वहाँ पहुँच-

फर उन्हें ऐसा दंड दे कि विद्रोह की जड़ नष्ट हो जाय। इसी दिन ज़ैनुलआबदीन, जो खुर्रम को बुलाने भेजा गया था, आकर सेवा में उपस्थित हुआ और उसने सूचना दी कि उसने यह अनुबंध लगाकर कहा है कि मांडू दुर्ग में वर्षा व्यतीतकर वह दरबार आवेगा। उसकी सूचना पढ़ी गई। हमें उसकी व्यंजना शैली तथा प्रार्थनाएँ अच्छी नहीं ज्ञात हुईं प्रत्युत् इसके विपरीत विद्रोह की भावना परिलक्षित हो रही थी। कोई उपाय नहीं था इसलिए आज्ञा दी गई कि जब वह वर्षा के बाद आना चाहता है तो वह उन बड़े सर्दारों को, जो दरबार के सेवक हैं तथा उसकी सहायता में लगे हुए थे, विशेषकर बारहा तथा बुखारा के सैयदों, शेखजादों, अफगानों तथा राजपूतों को भेज दे। मिर्जा रुस्तम तथा एतक़ाद खाँ को आगे से लाहौर जाने तथा कंधार की सेना की सहयता करने को आज्ञा दी गई। एक लाख रुपये वेतन मद्धे अग्रिम इन्हें दिए गए। इनायत खाँ तथा एतमाद खाँ को डंके भी दिए। इरादतखाँ किश्तवार के विद्रोहियों को दंड देने के लिए शीघ्रता से गया और बहुतों को मारकर तथा अपना अधिकार दृढ़ता से जमाकर अपने कार्य पर लौट आया। मोतमिद खाँ दक्षिण की सेना का बख्शी नियत किया गया था। उस कार्य के समाप्त हो जाने पर उसकी प्रार्थना पर उसे बुला भेजा था। इसी दिन वह आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

यह एक विचित्र बात है कि जब चौदह-पंद्रह सहस्र रुपये मूल्य की एक मोती हरम में खो गई तब ज्योतिषराय ज्योतिषी ने बतलाया कि वह दो-तीन दिन में मिल जायगी। सादिक खाँ रम्माल ने कहा कि दो-तीन दिन में वह एक पवित्र तथा स्वच्छ स्थान से, जैसे पूजा-स्थान या उपासनागृह से मिल जायगी। एक स्त्री रम्माल ने कहा वि वह शीघ्रही मिलेगी और एक गोरी स्त्री प्रसन्नता के साथ लाकर बादशाह

के हाथ में दे देगी। ऐसा हुआ कि तीसरे दिन एक तुर्की स्त्री ने इसे उपसनागृह में पाया और मुस्कराती हुई प्रसन्न वदना होकर हमें दे गई। तीनों ही की बातें ठीक हुई थीं इसलिए प्रत्येक को पुरस्कार दिया गया। विचित्रता से यह बात खाली नहीं है इसलिए यहाँ लिख दी गई।

इसी समय हमने कौकब, खिदमतगार खाँ तथा अन्य कई को कुल मिलाकर बारह मनुष्यों को, जो हमारे परिचित सेवकों में से थे, दक्षिण के अमीरों का सजावल नियत किया कि वे प्रयत्न कर उन्हें यथासंभव शीघ्र दरबार भेज दें जिसमें वे कंधार की विजयी सेना की सहायता के लिए भेजे जा सकें। इसी समय बार बार यह सूचना मिली कि खुर्रम ने नूरजहाँ बेगम तथा शहरयार की जागीरों के इलाकों पर अधिकार कर लिया है विशेषकर परगना धौलपुर पर, जिसे बड़े दीवान ने शहरयार को दिया था। उसने अपने एक सेवक दरिया अफगान को सेना सहित वहाँ भेजा, जो शहरयार के सेवक तथा उस प्रांत में नियुक्त फौजदार शरीफुलमुल्क से लड़ गया, जिसमें दोनों पक्ष के बहुत से मनुष्य मारे गए। यद्यपि खुर्रम मांडू दुर्ग में रह जाने तथा उसके पत्र की अनुचित माँगों से ज्ञात हो गया था कि उसका मस्तिष्क कुछ फिर गया है पर यह समाचार सुनकर स्पष्ट हो गया कि वह हमारी की हुई उन सब कृपाओं तथा दयाओं के अयोग्य था तथा उसका मस्तिष्क बिगड़ गया है। इस पर हमने राजा रोजअफजूँ को, जो हमारा विश्वास-पात्र सेवक था, उसके पास भेजा और उसके ऐसे साहस के कारणों को पुछवाया। उसे आज्ञा भेजी कि वह औचित्य के राजमार्ग तथा विनम्रता के पथ को न छोड़े और उसे बड़े दीवान के द्वारा जो जागीरें मिली हैं उन्हीं पर संतोष करे। वह यह भी समझ ले कि हमारी सेवा में उपस्थित होने का वह विचार भी न करे तथा बुलाए गए दरबार के सभी सेवकों को तुरंत भेज दे जो कंधार के उपद्रवों के कारण बुलाए

गए हैं। यदि इस आज्ञा के विरुद्ध कोई बात सुनी जायगी तो उसके लिए उसे पश्चात्ताप करना पड़ेगा।

इसी समय प्रसिद्ध शाह नेअमतुल्ला के पुत्र मीर मीरान का पौत्र मीर जहीरुद्दीन फारस से आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुआ और उसे खिलअत तथा आठ सहस्र दर्ब मिला। उजाला दक्खिनी को राजा वीरसिंह देव के पास कृपापूर्ण आज्ञापत्र के साथ भेजा कि वह सजावल का कार्य कर सेना एकत्र करे। इसके पहले खुर्रम तथा उसके पुत्रों के प्रति हमारा जो अगाध स्नेह तथा ऊँचे विचार थे उसके कारण जब उसका पुत्र (शुजा) बहुत बीमार था तब हमने प्रतिज्ञा की थी कि यदि ईश्वर उसे हमें लौटा देगा तो हम कभी बंदूक से अहेर न खेलेंगे और न किसी जीव को अपने हाथ से किसी प्रकार की हानि पहुँचावेंगे। अहेर खेलने की हमारी विशेष रुचि तथा प्रेम के होते भी, विशेषकर बंदूक से, हमने यह नियम पाँच वर्ष तक निबाहा। इस समय उसके ऐसे कुव्यवहार के कारण हमें बड़ा दुःख हुआ इससे हमने पुनः बंदूक से अहेर खेलना आरंभ कर दिया[1] और आज्ञा दी कि शाही महल में कोई भी बिना बंदूक के न रहे। थोड़े ही समय में अधिकतर सेवकों ने बंदूकों से गोली चलाना पसंद कर लिया और धनुर्धारीगण अपना कार्य करने के लिए सवार सेना में भरती हो गए।

उक्त महीने की २५वीं को, जो ७ शव्वाल होता है, निश्चित शुभ समय में हम कश्मीर से लाहौर की ओर चल दिए। हमने बिहारीदास

---

१. अपने ईश्वर से किए हुए वचन को इस प्रकार तोड़ देना नितांत अनुचित तथा जहाँगीर की प्रकृति का द्योतक है। जिसके निमित्त वह वचनबद्ध हुआ था वह कार्य पूरा हो गया था अतः बाद में उसपर क्रुद्ध होने से भी वचन का भंग करना अनियमित था।

ब्राह्मण को कृपापूर्ण फर्मान के साथ राणा कर्ण के पास भेजा कि वह उसके पुत्र को सेना के साथ अभिवादन करने के लिए लिवा लावे। मीर जहीरुद्दीन को एक हजारी ४०० सवार का मंसब दिया। उसने प्रार्थना की कि वह ऋणग्रस्त है अतः हमने उसे दस सहस्र रुपए दिए। १८ शहरिवर को हम अछबल के जलाशय के पास ठहरे और गुरुवार को मदिरोत्सव वहीं मनाया। इसी शुभ दिवस पर हमारा भाग्यवान पुत्र शहरयार कंधार की सेना का अध्यक्ष नियत हुआ। उसका मंसब बारह हजारी ८००० सवार निश्चित हुआ। एक खास खिलअत मोतियों के बटनों की नादिरी के साथ उसे दिया। इसी समय एक व्यापारी तुर्की देश से दो बड़े मोती लाया, जिनमें एक की तौल सवा मिस्काल थी और दूसरे की एक सुर्ख कम थी। नूरजहाँ बेगम ने दोनों को साठ साठ सहस्र रुपए में क्रय कर लिया और हमें इसी दिन भेंट में दे दिया। शुक्रवार १०वीं को हकीम मोमिना की सम्मति से हाथ से रक्त निकलवाकर हमने कुछ आराम पाया। मुकर्रब खाँ इस कार्य में अत्यंत कुशल था और वही सदा हमारा रक्त निकालता था। वह कभी असफल नहीं हुआ था पर इस समय दो बार असफल रहा। इसके अनंतर उसके भतीजे कासिम ने रक्त निकाला। हमने इसे खिलअत तथा दो सहस्र रुपए पुरस्कार दिए और हकीम मोमिना को एक सहस्र दर्ब। खानजहाँ की प्रार्थना पर मीर खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ९०० सवार का कर दिया।

उसी महीने की २१वीं को हमारे सौर तुलादान का उत्सव हुआ और ईश्वर के सिंहासन के इस प्रार्थी का ५४वाँ वर्ष शुभता तथा प्रसन्नता के साथ आरंभ हुआ। हमें आशा है कि हमारा सारा जीवन ईश्वरेच्छा पूरी करने में व्यतीत होगा। २८वीं को हम अशर का जल-प्रपात् देखने गए। इसके सोते का जल मिठास तथा स्वाद के लिए

प्रसिद्ध है अतः हमने गंगाजल तथा लार की घाटी के जल से इसे तौलवाया। अशर का जल गंगाजल से तीन माशा अधिक भारी था और गंगाजल लार की घाटी के जल से आधा माशा हलका था। ३०वीं को हीरापुर में पड़ाव पड़ा। यद्यपि इरादत खाँ ने किश्तवार में अच्छा कार्य किया था पर कश्मीर की प्रजा तथा निवासी उसके व्यवहार पर दोषारोपण कर रहे थे इसलिए हमने एतकाद खाँ को वहाँ का प्रांताध्यक्ष नियत कर दिया। हमने इसे एक घोड़ा, खिलअत और एक खास शत्रुघातिनी तलवार दी और इरादत खाँ को कंधार की सेना में नियत कर दिया। हमने ग्वालिअर दुर्ग से किश्तवार के राजा कुँअरसिंह को बुलवाकर, जहाँ वह कैद था, उसे किश्तवार दे दिया और खिलअत, एक घोड़ा तथा राजा की पदवी देकर विदा किया। हमने हैदर मलिक को भेजा कि वह लार की घाटी से एक नहर नूर अफजा बाग तक लावे और इसके सामान तथा परिश्रम के लिए उसे तीस सहस्र रुपए दिए गए। उसी महीने को १२वीं को हमने जम्मू के पार्वत्यस्थान से नीचे उतरकर भीमबर में पड़ाव डाला। इसके दूसरे दिन कमूरगाह अहेर हुआ। खुसरू के पुत्र दावरबख्शको हमने पाँच हजारी २००० सवार का मंसब दिया। २४ वीं को हमने चिनाव पार किया। मिर्जा रुस्तम लाहौर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसी दिन खुर्रम का दीवान अफजल खाँ उसका एक प्रार्थनापत्र लेकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसमें उसने अपनी अनुचित माँगों को क्षमा के वस्त्रों द्वारा आच्छादित किया था और इसे इस विचार से भेजा था कि यह अपनी चापलूसी तथा मीठी बातों से अपना कार्य बना लेगा और उसके औचित्य को ठीक कर लेगा। हमने उस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, न उसकी बातें सुनीं। ख्वाजा अबुल्हसन दीवान तथा सादिक खाँ बख्शी, जो आगे से कंधार की सेना का कुल प्रबंध करने के लिए लाहौर चले आए थे, सेवा में उपस्थित हुए।

इलाही महीने आबाँ की १ ली को महाबत खाँ के पुत्र अमानुल्ला का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी १७०० सवार का कर दिया। एक कृपापूर्ण आज्ञापत्र महाबत खाँ के नाम उसे बुलाने के लिए भेजा गया। इसी समय अब्दुल्ला खाँ, जिसे हमने कंधार की सेवा के लिए बुला भेजा था, अपनी जागीर से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसी महीने की ४ थी को हम प्रसन्नता तथा शुभता के साथ लाहौर नगर में पहुँच गए। अलफ खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया। हमने मुख्य दीवानों को आज्ञा दी कि कंधार के कार्य पर नियत दरबार के सेवकों का वेतन खुर्रम की जागीरों से, जो सरकार हिसार, दोआबा तथा उन प्रांतों में हैं, दी जाय। इनके बदले में यदि उसकी इच्छा हो तो मालवा, दक्षिण, गुजरात तथा खानदेश प्रांतों में से जहाँ चाहे लेले। अफजल खाँ को खिलअत देकर जाने को छुट्टी दे दी। यह भी आज्ञा भेज दी कि गुजरात, मालवा, दक्षिण तथा खानदेश प्रांतों का अधिकार उसे दे दिया जाय और वह जहाँ चाहे अपना स्थायी निवासस्थान बनाकर उन प्रांतों का प्रबंध करता रहे। वह उन सजावलों को, जो दरबार के सेवकों को कंधार के उपद्रव के कारण शीघ्र बुला लाने के लिए नियत किए गए हैं, जल्दी भेज दे। इसके अनंतर वह अपने शासन का कार्य देखे और आज्ञा के विरुद्ध न चले, नहीं तो पश्चात्ताप करना पड़ेगा। इसी दिन हमने सर्वश्रेष्ठ तिपचाक़ घोड़ा जो हमारे घुड़साल में था अब्दुल्ला खाँ को दिया। २६ वीं को फारस के शासक के राजदूत हैदरबेग तथा वली बेग हमारे सामने उपस्थित किए गए। अभिवादन करने के अनंतर उन्होंने शाह का पत्र निकाला। हमारा पुत्र खानजहाँ आज्ञानुसार मुलतान से शीघ्र आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक सहस्र मुहर तथा एक सहस्र रुपए और अठारह घोड़े भेंट दिए। महाबत खाँ का मंसब बढ़ाकर छ हजारी ५००० सवार का कर दिया। हमने एक हाथी

मिर्जा रुस्तम को दिया। राजा सारंग देव राजा वीरसिंह देव का सज़ावल नियत किया गया। हमने उससे कहा कि उसे शीघ्र दरबार में उपस्थित करे। इलाही महीने आज़र की ७ वीं को शाह अब्बास के भिन्न भिन्न समय पर आए हुए राजदूतों को खिलअत तथा व्यय देकर जाने की छुट्टी दे दी। उसने हैदरबेग के हाथ जो पत्र कंधार के संबंध में बहाने भरे भेजा था वह उसके उत्तर के साथ इस इकबालनामे में दे दिया गया है।

फारस के शाह का पत्र

(अलक़ाब-आदाब आदि के अनंतर पत्र इस प्रकार है)

आप जानते होंगे कि नवाब शाह जन्नत मकान (तहमास्प) की मृत्यु के अनंतर फारस पर बड़ी आपत्ति आई। बहुत सी भूमि जो हमारे पवित्र परिवार की थी हम लोगों के अधिकार से निकल गई पर ईश्वर के सिंहासन का यह प्रार्थी जब शाह हुआ तब ईश्वर की सहायता तथा मित्रों के सुप्रबंध से उसने अपनी पैतृक भूमि शत्रुओं के अधिकार से निकाल ली। इस कारण कि कंधार आपके उच्च वंश के प्रतिनिधियोंके अधिकार में था और आपको अपने ही सा समझते थे इसलिए हमने उसके लिए कोई आपत्ति नहीं की। मित्रता तथा भ्रातृत्व के विचार से हम प्रतीक्षा करते रहे कि आप भी अपने स्वर्गवासी पूर्वजों की प्रथा पर स्वतः ही इस संबंध में विचार करेंगे। जब आपने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया तब हमने कई बार लिखित तथा मौखिक संदेशों में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कहलाया, यह विचार कर कि आप इस छोटी सी भूमि पर दृष्टि डालना अपने योग्य नहीं समझते होंगे। आपने कई बार कहा कि उस स्थान को हमारे परिवार को दे देने से शत्रुओं तथा निंदकों के विचार मंद पड़ जाएँगे और

बकनेवाले द्वेषियों तथा दोषारोपण करनेवालों का मुख बंद हो जायगा। पहले कुछ मनोमालिन्य के कारण यह कार्य नहीं निपट सका। इस कार्य की सत्यता मित्रों तथा शत्रुओं को ज्ञात थी और कोई स्पष्ट उत्तर स्वीकृति या अस्वीकृति का आपकी ओर से नहीं मिला तब हमारा विचार हुआ कि हम कंधार देखने तथा अहेर खेलने जायँ। इस प्रकार हमारे प्रसिद्ध भाई के प्रतिनिधिगण हम लोगों में जो मित्रता का संबंध है उसका ध्यानकर हमारा स्वागत करेंगे तथा सेवा में उपस्थित होंगे। इस उपाय से मित्रता का संबंध बढ़ेगा और ससार पर प्रकट हो जायगा तथा द्वेषियों एवं छिद्रान्वेषियों का मुख बद हो जायगा। इस विचार से हम दुर्ग विजय करने के आवश्यक शस्त्रादि बिना साथ लिए उस ओर चले और जब फराह पहुँचे तब हमने कंधार के दुर्गाध्यक्ष को एक सूचना भेज दी कि हम उस स्थान को देखने तथा अहेर खेलने आ रहे हैं। हमने ऐसा इसलिए किया कि वह हमें अतिथि समझे। हमने माननीय ख्वाजा बाकी कुरकुराक को बुलाया तथा वहाँ के दुर्गाध्यक्ष एवं अन्य राजकर्मचारियों के पास संदेश कहलाया कि आपके तथा हम लोगों के बीच कोई भेद नहीं है और हम लोग अपने अपने राज्यों की सीमा जानते हैं तथा हम केवल देश देखने के लिए आ रहे हैं। इसलिये वे कोई ऐसा कार्य न करें जिससे किसी को कोई कष्ट या दुःख हो। उन लोगों ने इस शांतिपूर्ण आदेश तथा संदेश को उचित रीति से नहीं माना और हठ तथा विद्रोही भाव प्रगट किया। जब दुर्ग के पास पहुँचे तब हमने पुनः उक्त माननीय को बुलवाया और उसे इस संदेश के साथ भेजा कि हमने सेना को आदेश दे दिया है कि दस दिन बीतने के पहले वे दुर्ग का घेरा न डालें। उन लोगों ने इस उचित संमति को नहीं माना और विरोध का हठ करते रहे। जब कुछ करने के लिए दूसरा उपाय नहीं रह गया तब पारसीक सेना ने दुर्ग लेना आरंभ कर

दिया। यद्यपि दुर्ग लेने के शस्त्र नहीं थे तब भी शीघ्र ही बुर्जों तथा दीवाल को तोड़कर भूमिसात् कर दिया। दुर्गवालों ने कष्ट में पड़कर शरण माँगी। हमने भी दोनों उच्च परिवारों के पुराने प्रेम संबंध का तथा हमारे आपके बीच के भ्रातृत्व के संबंध का जो आपकी शाहजादगी के समय से चला आ रहा है और जो समकालीन बादशाहों की ईर्ष्या का कारण बन गया है, ध्यान रखकर और अपनी स्वाभाविक उदारता के कारण उनकी भूलों तथा दोषों को क्षमा कर दिया। उन लोगों पर अपनी कृपाएँ कर उन्हें कुशलपूर्वक अपने दरबार में हैदरबेग कोरबाशी के साथ, जो इस परिवार का सच्चा सूफी है, भेज दिया। वास्तव में प्रेम तथा मित्रता की नींव चाहे पैतृक या प्राप्त की हुई हो इस प्रेम के अन्वेषक की ओर से पुरानी या गली हुई नहीं है, प्रत्युत् दृढ़ है जिससे भाग्य के खेल द्वारा हुई इस घटना से जो कुछ भी हो पर उसमें कोई त्रुटि नहीं हो सकती। शैर

हमारे और आपके बीच कोई भेद नहीं आ सकता।
सिवा प्रेम तथा विश्वास के और कुछ भी नहीं रह सकता।

यह आशा है कि आप भी हमारे प्रति अपना प्रेम बनाए रखेंगे। कुछ विचित्र कार्यों के हो जाने से जिन्हें आप पसद न करेंगे यदि मित्रता में कोई शंका उठे तो आप आंतरिक अच्छेपन तथा निरंतर के प्रेम से उसे मिटा देंगे। मेल तथा सुव्यवहार का सदा हरा पुष्प कली रूप में बना रहे और सौमनस्य की नींव दृढ़ करने का तथा मिलाप के स्रोत को स्वच्छ रखने का, जो स्वभाव एवं राज्यों का नियमन करता है, सदा प्रयत्न होता रहे। आप हमारे कुल राज्य को अपना समझें और उसमें के निवासियों पर मित्रता की दृष्टि रखें। आप घोषित कर दें कि इसे (कंधार) उसको (शाह अब्बास) किसी आपत्ति के बिना दे दिया है क्योंकि ऐसी छोटी वस्तु विशेष महत्व की

नहीं है। यद्यपि दुर्गाध्यक्ष तथा दुर्ग के कर्मचारियों ने कुछ ऐसा काम किया जो मित्रता में बाधा रूप थे पर जो हुआ हमारे तथा आपके किए हुआ। उन्होंने सेवा तथा राजभक्ति के कर्तव्य ही पूरे किए। यह निश्चय है कि आप उन पर कृपा रखेंगे तथा शाही उदारता बरतेंगे, जिसमें उनके सामने हमें लज्जित न होना पड़े। इससे अधिक और क्या लिखें ? दैवी सहायता आपके आकाशगामी झंडों पर बनी रहे।

शाह अब्बास के पत्र का उत्तर

शुद्ध धन्यवाद तथा पवित्र धन्यवाद-प्रदान उस एक मात्र उपास्य को है कि बड़े शाहों के मिलाप तथा संधियाँ सृष्टि की शांति तथा मनुष्य जाति के सुख के लिए हैं। इसका एक प्रमाण वह मित्रता तथा सौमनस्य है जो हमारे तथा आपके उच्चपदस्थ परिवार के बीच थी और हम लोगों के समय में बढ़ी थी। यह बात समकालीनों में ईर्ष्या की वस्तु थी। ऐश्वर्य-शाली शाह ने, जो आसमानी सेना का नक्षत्र, जातियों का शासक, कयानी ताज का शोभावर्द्धक, खुसरू के तख्त का योग्य उपवेष्टा, साम्राज्यत्व-उद्यान का फलवान् वृक्ष, पैगंबरी तथा फकीरी को क्यारियों का भव्य पौधा तथा सफवी वंश का सिरमौर है, अकारण ही प्रेम, भ्रातृत्व तथा मित्रता की गुलाब बाड़ी को हिलाना आरंभ कर दिया है जिसमें बहुत समय से उपद्रव के स्वाँस लेने की भी संभावना नहीं थी। स्पष्टतः बादशाहों में मेल तथा मित्रता की प्रथा में आवश्यक है कि वे एक दूसरे के प्रति मित्रता की शपथ लेते हैं और दोनों पक्ष में पूर्ण रूपेण आध्यात्मिक मिलाप रहता है। इसमें शारीरिक मिलाप की आवश्यकता नहीं रहती और इससे भी कम आवश्यकता एक दूसरे के राज्य में 'सैरो शिकार' के लिए जाने की होती है। मिसरा—

शोक, शत बार, इस प्रेम को दूर करनेवाले विचार को।

आप के कंधार के 'सैरो शिकार' के संबंध में क्षमा याचना करने-वाले प्रेमपूर्ण पत्र के पहुँचने से, जिसे माननीय हैदरवेग तथा वलीवेग लाए हैं हम आपके सुंदर व्यक्तित्व की शारीरिक स्वस्थता से अवगत हुए और प्रसन्नता के फूल संसार भर में बरस गए। हमारे उच्चपदस्थ तथा ऐश्यवर्यवान् भाई के संसार-शोभायमान मस्तिष्क से यह छिपा न होगा कि जंबील वेग द्वारा लाए गए पत्र तथा संदेश के पहुँचने तक कोई भी उल्लेख कंधार लेने की आपकी इच्छा के संबध में किसी पत्र या मौखिक संदेश में नहीं हुआ था। जिस समय हम कश्मीर की रमणीक भूमि की सैर करने गए हुए थे उस समय दक्खिन के सुलतानों ने अदूरदर्शिता से अधीनता की सीमा से पैर वाहर निकाले और विद्रोह के मार्ग पर चले। इस कारण हमें उन्हें दंड देना आवश्यक हुआ। हमने अपने झंडे लाहौर की ओर फेरे और अपने योग्य पुत्र शाहजहाँ को विजयी सेना के साथ उनके विरुद्ध भेजा। हम स्वयं आगरे की ओर जा रहे थे जब जंबीलवेग पहुँचा और आपका प्रेमपूर्ण पत्र दिया। इसे हमने शुभसूचक समझा और शत्रुओं तथा विद्रोहियों को दमन करने के लिए आगरे चले गए। उस रत्न जटित तथा मोती झड़नेवाले पत्र में कंधार की इच्छा के संबंध में कुछ भी उल्लेख नहीं था। इसका मौखिक उल्लेख जंबील वेग ने किया था। उत्तर में हमने उससे कहा कि हमारे भाई जो चाहते हैं उसमें हम कोई कठिनाई नहीं उपस्थित करना चाहते। ईश्वरेच्छा से दक्षिण का कार्य निपटा लेने पर हम उसे अपने साम्राज्य के अनुकूल विदाई देंगे। हमने उससे यह भी कहा कि उसने बहुत यात्रा की है इसलिए वह कुछ दिन लाहौर में आराम करे और तब हम उसे बुलावेंगे। आगरा आने पर हमने उसे बुलवाया और जाने की छुट्टी दी। इस प्रार्थी पर ईश्वर की कृपा रहती है इसलिए हम विजयों से मन हटाकर पंजाब को चले गए। हमारा विचार उसे भेज देना

था पर कुछ आवश्यक कार्य पूरा कर ग्रीष्म ऋतु के कारण हम कश्मीर चले गए। वहाँ पहुँचने पर हमने जंबील बेग को विदा करने के लिए बुलवाया और हम यह भी चाहते थे कि उसे वह रमणीक देश दिखलावें। इसी बीच हमें समाचार मिला कि हमारे वैभवशाली भाई कंधार लेने के लिए आगए हैं। यह विचार हमारे मन में आया भी न था और इससे हम चकित हो गए। एक छोटे ग्राम में क्या हो सकता है कि उसके लिए वह स्वयं लेने आवे और इतनी मित्रता तथा भ्रातृत्व की ओर से आँखें बंद कर ले। यद्यपि सच्चे लेखकों ने समाचार भेजा था पर हमने विश्वास नहीं किया। पर जब समाचार निश्चित हो गया तब हमने तत्काल अब्दुल् अज़ीज़ खाँ को आज्ञा भेजी कि हमारे वैभवशाली भाई की इच्छा में कोई रुकावट न डाले। अब तक भ्रातृत्व का संबंध दृढ़ है और उसकी तुलना में हम संसार का कोई मूल्य नहीं समझते तथा किसी भी भेंट को उसके बराबर नहीं मानते। परन्तु यह अधिक उचित तथा भ्रातृत्व के उपयुक्त होता कि वह राजदूत के पहुँचने तक प्रतीक्षा करता। स्यात् वह अपने उद्देश्य तथा माँग में सफल हो जाता जिसके लिए वह आया था। जब वह राजदूत के लौटने के पहले ही ऐसा कार्य कर बैठे तब मानव जाति संधियों को स्थिर रखने तथा मनुष्यत्व एवं उदारता के कोष की रक्षा करने में स्वत्व का किसे दायी मानेगी। ईश्वर आपकी सदा रक्षा करे।

राजदूतों को विदा करने के अनंतर हमने अपना कुल उत्साह कंधार-सेना को भेजने में लगा दिया और अपने पुत्र खानजहाँ को एक हाथी, एक खास घोड़ा, एक जड़ाऊ तलवार तथा खिलअत उपहार दिया, जो कुछ कामों के लिए भेजा गया था। हमने उसे अग्गल रूप में आगे भेजा और आदेश दिया कि वह मुलतान में विजयी सेना के साथ शहरयार के पहुँचने तक ठहरा रहे। मुलतान के फौजदार बाकिर

खाँ को दरबार बुला लिया और अली कुली बेग दर्मान को खानजहाँ की सहायता पर नियत कर इसका मंसब डेढ़ हजारी कर दिया। इसी प्रकार मिर्जा रुस्तम का मंसब पाँच हजारी करके उसे भी उस पुत्र की सहायता सैनिक कार्य में करने के लिए नियत किया। लश्कर खाँ के दक्षिण से आने पर इसे भी उसी में सम्मिलित कर दिया। अल्लहदाद खाँ अफ़गान, मुहम्मद ईसा तर्खान, मुकर्रमखाँ, इकराम खाँ तथा अन्य अमीरों को, जो दक्षिण से तथा अपनी जागीरों पर से आ गए थे, घोड़े तथा खिलअत देकर खानजहाँ के साथ भेज दिया। उमूदतुस्सलतनत आसफ खाँ को आगरे भेजा[1] कि वह वहाँ के राजकोष से कुल मुहर तथा रुपए ले आवे, जो हमारे पिता के राज्यकाल के आरंभ से संचित हो रहा था। खानजहाँ का पुत्र असालत खाँ का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। मुलतान के बख्शी मुहम्मद शफीआ को खाँ की पदवी दी। हमने अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज़ के वकील शरीफ को छुट्टी दी कि वह शीघ्रता से जाकर हमारे पुत्र को बिहार की सेना के साथ लिवा लावे और हमने एक कृपापूर्ण आज्ञापत्र अपने हाथ से लिखकर उसे शीघ्र आने को बाध्य किया।

इसी दिन शाह नेअमतुल्ला का पौत्र मीर मीरान एकाएक मर गया। हमें आशा है कि वह क्षमाप्राप्तों ही में होगा। एक बिगड़ैल हाथी ने शिकारी मिर्जा बेग को नीचे फेंककर मार डाला। हमने इसका काम इमाम वर्दी को सौंप दिया।

दो वर्ष हुए कि हममें जो निश्शक्तता आगई थी और अब तक बनी हुई है उसके कारण हृदय तथा मस्तिष्क काम नहीं करता। हम अब

---

१. वास्तविक कारण इसके भेजने का यह था कि इसके रहते महाबत खाँ दरबार में न आता इसलिए इस बहाने हटाया।

घटनाओं तथा वृत्तांतों को लिख नहीं पाते। अब मोतमिद खाँ भी दक्षिण से लौटकर आगया है और भाग्य से देहली चूम चुका है। यह ऐसा सेवक है जो हमारी प्रकृति को जानता है तथा हमारे शब्दों को समझता है और पहले भी इसे यह कार्य सौंपा जा चुका है इसलिए हमने आज्ञा दी कि जिस तिथि तक हम हाल लिख चुके हैं उसके बाद से वह सब हाल अपने हाथ से लिखे और हमारे संस्मरण में जोड़ दिया करे। इसके उपरांत जो भी घटनाएँ घटें वह दैनिक के रूप में लिखे और हमारे समर्थन के लिए उपस्थित करे तथा तब पुस्तक में प्रतिलिपि करे।

यहाँ से मोतमिद खाँ द्वारा लिखा हुआ अंश है।[1]

हमारा सारा संसार-द्रष्टा मन कंधार सेना की तैयारी तथा उसके उपाय में लगा हुआ था कि हमने खुर्रम की हालत में परिवर्तन होने का दुखद समाचार सुना और उसके सुव्यवहार की कमी घृणा तथा झगड़े का कारण हुई। हमने इस पर मूसवी खाँ को, जो सच्चा सेवक तथा हमारे स्वभाव को जाननेवाला है, उस अभागे के पास भेजा कि वह उसके सामने धमकी से भरा हमारा संदेश तथा इच्छाएँ रखे और उसे समझावे कि उसकी बुद्धि तीव्र हो जिससे वह सौभाग्य के मार्ग-प्रदर्शन से अहंकार एवं अदूरदर्शिता के स्वप्न से जाग उठे। साथ ही आदेश था कि मूसवी खाँ उसके व्यर्थ विचारों तथा उद्देश्य को समझकर शीघ्रता से हमारे पास चला आवे और जो आवश्यक समझे करे।

इलाही महीने बहमन की १ली को हमारा चांद्र तुलादान का उत्सव हुआ। इसी शुभ उत्सव पर महावत खाँ काबुल से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और उस पर विशेष कृपाएँ हुईं। हमने याकूब खाँ

---

१. ये शब्द अन्य हस्तलिखित प्रतियों में नहीं हैं।

बदख्शी को काबुल में नियत किया और डंका देकर सम्मानित किया। इसी समय आगरे से एतबार खाँ ने समाचार भेजा कि खुर्रम ने विद्रोही सेना के साथ मांडू से इस ओर कूच आरंभ कर दिया है। उसने स्यात् यह समाचार सुन लिया है कि आगरे से कोप मँगाया गया है और उसके मन में उत्तेजना पैदा हो गई तथा वह उस पर अधिकार न रख सकने पर इस विचार से यात्रा करने लग गया कि मार्ग में वह कोप छीन ले। इस पर हमने भी उचित समझा कि हम भी (व्यास) सुलतानपुर की नदी तक घूमने तथा अहेर खेलने चलें। यदि वह दुष्ट कुमार्ग ग्रहण कर साहस की मरुस्थली में पैर रखेगा तो हम शीघ्रता से आगे बढ़ चलेंगे और उसके कुव्यवहार का दंड उसके भाग्य के अंचल में डाल देंगे। यदि कार्य-प्रवाह दूसरे मार्ग पर चलेगा तो वैसा प्रबंध किया जायगा। इसी विचार से उसी महीने की १७वीं को शुभ साइत में हमने कूच आरंभ कर दिया। महाबत खाँ को खिलअत देकर सम्मानित किया। मिर्जा रुस्तम को एक लाख रुपए तथा अब्दुल्ला खाँ को दो लाख रुपए वेतन में अग्रिम रूप में दिए। हमने जैन खाँ के पुत्र मिर्जा खाँ को कृपापूर्ण फर्मान के साथ अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज के पास भेजा और उसके शीघ्र आने की आवश्यकता बतलाई। हमने राजा सारंग देव को राजा वीरसिंह देव को बुलाने के लिए भेजा था, उसने आकर कहा कि राजा उचित तथा सुसज्जित सेना के साथ हम से थानेश्वर में मिल जायगा। इसी समय बारबार आगरे से एतबार खाँ तथा अन्य राजकर्मचारियों के यहाँ से सूचनाएँ आती रहीं कि विद्रोही तथा राजद्रोही खुर्रम ने औचित्य को लाँघ कर तथा कर्तव्यहीनता अपनाकर मूर्खता तथा भ्रम की घाटी में नाश-रूपी पैर रख दिया है और इस ओर आ रहा है। इसलिए वे कोप को लाना उचित एवं नीतियुक्त नहीं समझते तथा बुर्जों और फाटकों को दृढ़ कर दुर्ग की रक्षा का पूरा प्रबंध कर रहे हैं। इसी प्रकार की आसफ खाँ की

भी सूचना आई कि दुष्ट ने सम्मान का ओट फाड़ डाला है और नाश की घाटी की ओर बढ़ चला है क्योंकि उसके आने की चाल से अच्छाई की गंध नहीं आती। साम्राज्य के लिए ऐसे समय कोप लाना हितकर नहीं है इसीलिए उसे ईश्वर की रक्षा में छोड़कर वह स्वयं दरबार आ रहा है। इस पर हम सुलतानपुर में नदी पार कर बराबर कूच करते हुए उस अभागे को दंड देने के लिए चले और आज्ञा दी कि अब से लोग उसे 'बेदौलत' कहा करें। इस ग्रंथ में जहाँ कहीं बेदौलत लिखा जायगा उससे उसीका तात्पर्य होगा। उस पर अब तक जो कुछ कृपाएँ तथा उपकार किए गए थे वैसा हम कह सकते हैं कि किसी बादशाह ने अब तक अपने पुत्र पर न किए होंगे। हमारे श्रद्धेय पिता ने हमारे भाइयों के लिए जो कुछ किया था वैसा हमने उसके सेवकों के लिए किया है, पदवियाँ, झंडे तथा डंके दिए हैं, जैसा पहले के पृष्ठों में उल्लेख हो चुका है। इस सौभाग्य-ग्रंथ के पाठकों से छिपा न होगा कि हमने इसपर कितना स्नेह तथा कृपा रखी थी। हमारे लेखनी की जिह्वा उन्हें वर्णन करने में असमर्थ है। हम अपने कष्ट पाने का क्या वर्णन करें ? कष्ट तथा निर्बलता के रहते हमारे स्वास्थ्य के लिए अहितकर गर्म जलवायु में हमें कर्मठ तथा सवार होना पड़ रहा है और वह ऐसी अवस्था में ऐसे दुष्ट पुत्र के विरुद्ध जाना पड़ रहा है। बहुत से सेवक जिन्हें वर्षों से हमने पाला है और अमीरी के उच्च पद पर पहुँचाया है तथा जिन्हें उजबेगों एवं पारसीकों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भेजते उन्हीं को इसकी दुष्टता के कारण दंड देना और अपने हाथ से नष्ट करना पड़ेगा। ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने हम में ऐसी योग्यता दी है कि हम अपना कार्यभार सँभाल सकें, इन सबको सहन करते हुए उसी मार्ग पर चलते रहें तथा इन सब को साधारण समझें। पर जो हमें विशेष कष्टदायी है तथा हमारे उत्साही हृदय को पीड़ा दे रहा है वह यही है कि जिस

अवसर पर हमारे भाग्यवान पुत्रों तथा राजभक्त सर्दारों में प्रत्येक कंधार तथा खुरासान के विरुद्ध चढ़ाई करने में एक दूसरे से अधिक उत्साह दिखलाना चाहता था और जिससे साम्राज्य की प्रसिद्धि बढ़ती, उसी समय इस अभागे ने अपने ही राज्य के पैर पर कुठाराघात किया और इस चढ़ाई के मार्ग में बाधा बन गया। कंधार के तात्कालिक कार्य को रोकना ही पड़ा पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास है कि वह हमारे इन हार्दिक कष्टों को दूर कर देगा।

इसी समय हमें सूचना मिली कि ख्वाजासरा मुहतरिमखाँ[1], खलीलबेग जुल्क़द्र तथा फिदाई खाँ मीर तोज़क ने बेदौलत का साथ दिया है और उससे पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। यह अवसर उदारता तथा उपेक्षा का नहीं था इसलिए हमने तीनों को कैद में डलवा दिया। इनकी जाँच-पड़ताल करने पर इनकी निकमहरामी में कोई शंका नहीं रह गई और मुहतरिम तथा खलील की दुष्टता एवं षड्यंत्र सिद्ध हो गया। मिर्जा रुस्तम के समान बड़े सर्दारों ने खलील की दुष्टता तथा स्वामिद्रोह की शपथ खाई इसलिए निरुपाय हो कर उनको प्राणदंड दिया। फिदाई खाँ की सचाई में शंका नहीं हुई और वह स्वच्छ ज्ञात हुई इसलिए उसे कैद से छुटकारा देकर उन्नति दी। हमने डाक चौकी से राजा रोजअफजूँ को अपने पुत्र शाह पर्वेज़ के पास भेजा कि उसे शीघ्र लिवाकर हमारी सेवा में उपस्थित हो जिससे बेदौलत अपने दुष्ट व्यवहार के लिए दंडित किया जा सके। जवाहिर खाँ ख्वाजासरा महल के दरबार के प्रबंध का अध्यक्ष नियत किया गया।

---

१. इकबालनामा पृ० १९९ पर महरम खाँ नाम दिया है। मोतमिद खाँ ने मिर्जा रुस्तम आदि के द्वेष से झूठे सौगंध का तथा महरम तथा खलील के व्यर्थ मारे जाने का उल्लेख किया है।

१ म इसफंदारमुज को शाही सेना नूर सराय पहुँच गई। इसी दिन एतबारखाँ के यहाँ से समाचार आया कि बेदौलत शीघ्रता के साथ आगरे के पास इस आशा से आ पहुँचा है कि दुर्ग के दृढ़ किए जाने तथा युद्ध आदि होने के पहले ही वह अपना उद्देश्य पूरा कर ले। जब वह फतहपुर पहुँचा तभी उसे उसके फाटक बंद मिले और नाश के अपमान द्वारा तिरस्कृत होकर वह वहीं ठहर गया। खानखानाँ, उसका पुत्र तथा दक्षिण और गुजरात के अन्य अमीर भी विद्रोह एवं कृतघ्नता के मार्ग पर उसके साथ आए हैं। मूसवीखाँ उससे फतहपुर में मिला और शाही आज्ञाएँ दिखलाईं। इस पर यह निश्चित हुआ कि वह काजी अब्दुल्‌अज़ीज को उसके साथ दरबार भेजकर अपनी प्रार्थनाएँ हमारे सामने रखेगा। उसने अपने सेवक सुंदर[1] को, जो विद्रोहियों का मुखिया तथा उपद्रवियों का प्रधान था, आगरे भेजा कि वहाँ के कोषों तथा छिपे हुए धन-संग्रहों को साम्राज्य के सेवकों से छीन ले। इनमें से एक लश्करखाँ के घर में यह घुसा और नौलाख रुपए ले लिए। इसी प्रकार जिन अन्य सेवकों पर शंका हुई कि इसके यहाँ धन है उन्हीं पर धावा कर जो कुछ पाया सर्वस्व मोचन कर लिया। जब खानखानाँ के ऐसा सर्दार, जो हमारा अभिभावक होकर सम्मानित हो चुका था तथा सत्तर वर्ष का वृद्ध था, विद्रोह तथा कृतघ्नता से अपना मुख काला करले तो अन्य लोगों के संबंध में क्या कहा जा सकता है? यह कहा जा सकता है कि वह प्रकृत्या विद्रोही तथा कृतघ्न है। इसके पिता[2] ने भी अपने जीवन के अंत में इसी प्रकार हमारे श्रद्धेय पिता के विरुद्ध ऐसा ही आचरण किया था। इसने भी अपने पिता का अनुगमन करते हुए इस अवस्था में अपने को सदा के लिए तिरस्कृत तथा शापित बना लिया है। शैर—

---

१. सुंदरदास राजा विक्रमाजीत।

२. बैरामखाँ खानखानाँ।

अंत में भेड़िए का बच्चा भेड़िया हो जाता है।
भले ही वह मनुष्य के साथ पालित हो ॥

(शेख सादी)

आज के दिन मूसवीखाँ बेदौलत के दूत अब्दुल् अज़ीज़ के साथ आया। उसकी प्रार्थनाएँ अनुचित थीं इसलिए हमने उसे बोलने नहीं दिया और उसे कैद में सुरक्षित रखने के लिए महाबतखाँ को सौंप दिया। ५ वीं को हम लुधियाना की नदी (सतलज) के किनारे पहुँच गए। हमने खानआज़म को सातहजारी ५००० सवार का मंसब दिया। राजा भारथ बुंदेला दक्षिण से और दियानतखाँ आगरे से आकर सेवा में उपस्थित हुए। हमने दियानतखाँ के दोष क्षमाकर उसे वही मंसब दिया जो पहले था। राजा भारथ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का और मूसवी खाँ का एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। गुरुवार १२ वीं को थानेश्वर पर्गने में राजा बीरसिंह देव सेवा में आया और अपनी सेना का निरीक्षण कराकर प्रशंसा का पात्र हुआ। राजा सारंगदेव का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ६०० सवार का कर दिया। कर्नाल में आसफखाँ आगरे से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इस समय इसका आना विजय का सूचक था। सईदखाँ का पुत्र नवाज़िश खाँ गुजरात से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। जब बेदौलत बुर्हानपुर में था तब उसकी प्रार्थना पर हमने बाकी खाँ को जूनागढ़ में नियत किया था। हमने उसे आने की आज्ञा भेजी थी इस लिए वह आकर सेवा में उपस्थित होगया। लाहौर से हमारी यात्रा एकाएक बिना सूचना दिए आरंभ हो गई थी और देर करने या विचार करने का अवसर नहीं था इसलिए जो थोड़े अमीर सेवा में थे उन्हीं के साथ चल पड़े। हमारे सिहरिंद पहुँचने तक थोड़े आदमियों को हमारे साथ आने का सौभाग्य मिला था पर इससे आगे बढ़ने पर चारों ओर से

बहुत सी सेना हमारे पास एकत्र होगई। दिल्ली पहुँचने के पहले इतनी सेना एकत्र होगई थी कि किसी ओर दृष्टि डालिए सारे मैदान में सेना दिखलाई पड़ती थी।

यह सूचना मिल चुकी थी कि बेदौलत फतहपुर से चलकर इसी ओर आ रहा है और दिल्ली की ओर बराबर कूच कर रहा है इस लिए हमने विजयी सेना को सुसज्जित होने की आज्ञा दी। इस उपद्रव में सेना का सारा प्रबंध तथा तत्संबंधी कार्यसंचालन महाबतखाँ को सौंपा गया था। हरावल की अध्यक्षता पर अब्दुल्लाखाँ नियत हुआ। जिन चुने हुए युवकों तथा अनुभवी सिपाहियों को उसने कहा वे सब उसकी सेना में भर्ती कर दिए गए। हमने उसे एक कोस आगे अन्य सेनाओं से रहने की आज्ञा दी। हमने चरविभाग तथा मार्ग के नियंत्रण का अधिकार भी उसे सौंप दिया था। हम यह नहीं जानते थे कि यह बेदौलत से मिला हुआ है और इस दुष्ट का वास्तविक उद्देश्य हमारी सेना का समाचार उसके पास भेजना है। इसके पहले वह लंबी लिखी सूचनाएँ, सच्ची तथा झूठी बातें, लाता था कि उसके दूतों ने वहाँ से भेजा है। उसका तात्पर्य था कि वे चर हमारे सेवकों में से कुछ को बेदौलत से मिला हुआ तथा समाचार भेजनेवाला समझते हैं। यदि हम उसके षड्यंत्र में पड़ जाते तथा भयभीत हो जाते तो ऐसे समय जब उपद्रव की आँधी वेग से बह रही थी तो हमें बाध्य होकर अपने बहुत से सेवकों को नष्ट कर डालना पड़ता। यद्यपि कुछ विश्वस्त सेवकों ने इसके दुष्ट विचारों तथा कपट की शंका की थी पर यह समय ऐसा नहीं था कि उसके आचरण का पर्दा हटा दिया जाय, हमने अपने नेत्रों तथा जिह्वा को ऐसा कुछ न करने से रोक रखा कि उस दुष्ट के मन में भय उत्पन्न कर दे और उस पर पहले से अधिक कृपा तथा दया दिखलाई कि वह संभवतः लज्जा से दंशित होकर अपने दुष्कर्मों से हट जाय और दुष्टता तथा विद्रोहाचरण त्याग दे। सर्वदा के लिए तिरस्कृत तथा जिसमें

प्रकृत्या नीचता तथा झूठेपन की प्रवृत्ति थी उसने अपनी मनोवृत्ति के अनुकूल करने में कमी नहीं की, जैसा आगे लिखा जायगा।

शैरों के अर्थ

जो वृक्ष स्वभावतः कड़ुआ होता है
यदि उसे स्वर्ग के उद्यान में भी लगाया जाय
और उसे वहाँ के अक्षय नदी के जल से सींचा जाय
यदि उसकी जड़ में शुद्ध मधु डाला जाय
तब भी अंत में वह अपना प्राकृतिक गुण दिखलाता है
और वही कड़ुआ फल देता है[1] ॥

संक्षेप में, जब हम दिल्ली के पास पहुँचे तब सैयद बहवा बुखारी, सदर खाँ तथा राजा किशनदास नगर से बाहर आकर हमारी सेवा में उपस्थित हुए। अवध का फौजदार बाकिरखाँ भी इसी दिन आकर विजयी सेना में मिल गया। इसी महीने की २५ वीं को दिल्ली के पास से आगे बढ़कर हमने जमुना नदी के किनारे पड़ाव डाला। राय-साल दरबारी का पुत्र गिरिधर दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसका मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का कर दिया और इसे राजा की पदवी तथा खिलअत दिया। मीर तोज़क जबर्दस्तखाँ को एक झंडा देकर सम्मानित किया।

---

१. महमूद गजनवी पर लिखी फिरदौसी की हजो का अंश है।

अठारहवाँ जलूसी वर्ष

मंगलवार की संध्या को २० जमादिउल् अव्वल सन् १०३२ हि० को संसार को प्रकाशित करनेवाले सूर्य अपने सम्मान-गृह मेष राशि में गए और हमारा अठारहवाँ जलूसी वर्ष शुभता तथा प्रसन्नता से आरंभ हुआ। इसी दिन हमने सुना कि बेदौलत ने मथुरा के पास जाकर शाहपुर के पर्गना में अपनी नष्ट सेना का पड़ाव डाला है और सत्ताईस सहस्र सवारों का निरीक्षण किया है। आशा है कि वे शीघ्र दमन तथा नष्ट कर दिए जायँगे। राजा मानसिंह का पौत्र[1] राजा जयसिंह अपने देश से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। हमने राजा वीरसिंह देव को, जिससे बड़ा राजपूत जाति में कोई सरदार नहीं था, महाराजा की पदवी दी और उसके पुत्र जोगराज का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। सैयद बहवा को एक हाथी दिया। यह सूचना हमें मिली कि बेदौलत जमुना नदी के किनारे किनारे आगे बढ़ रहा है इस लिए विजयी सेना का भी उसी ओर बढ़ना निश्चित हुआ। समुद्र की लहरों के समान सेना का व्यूह बनाया गया और उसे हरावल, दाएँ तथा बाएँ भाग, (अल्तमिश) मध्य, तरह (सहायक), चंदावल आदि में विभाजित किया गया। यह सब स्थानीय स्थिति तथा अवसर के अनुकूल किया गया। इसी के साथ ही साथ समाचार मिला कि दुष्ट खानखानाँ के साथ बेदौलत ने सीधा मार्ग छोड़ दिया है और बीस कोस बाएँ हटकर पर्गना कोटिला की ओर चला गया है। इसके साथ विद्रोह के मरुस्थल की ओर मार्ग-प्रदर्शन करनेवाला सुंदर ब्राह्मण खानखानाँ के पुत्र दाराब सहित गया

---

१. यह जगतसिंह के पुत्र महासिंह का पुत्र था अतः यह मानसिंह का प्रपौत्र हुआ।

है जिनके विद्रोह तथा दुष्टता के मार्ग के सहयोगी बहुत से सर्दार हैं, जैसे, हिम्मत खाँ, सरबुलंद खाँ, शरजा खाँ, आबिद खाँ, जादोराय, ऊदाराम, आतिश खाँ, मंसूर खाँ तथा अन्य मंसबदार, जो दक्षिण, गुजरात तथा मालवा में नियत थे। इनकी पूरी नामावली देने में बहुत देर लग जायगी। उसके साथ उसके सभी सेवक भी थे जैसे राणा का पुत्र राजा भीम, रुस्तम खाँ, बैरम बेग, दरिया अफ़ग़ान तथा अन्य जिन्हें शाही सेना का सामना करने के लिए छोड़ गया था। इस सेना के पाँच भाग थे। यद्यपि नाम के लिए सेनापतित्व दुष्ट दाराब के हाथ में था पर वास्तव में दुष्कर्मी सुन्दर ही सब कार्यों का संचालक तथा केंद्र था। इन सब अभागों ने बल्छपुर के पास अपने नाश के लिए सेना दृढ़ किया। ८ वीं को हम भी कबूलपुर में उतरे। इस दिन चंदावल की अध्यक्षता की पारी बाकिर खाँ की थी। हमने उसे सब के पीछे छोड़ दिया था। विद्रोहियों की एक टुकड़ी ने कूच करते समय उस पर आक्रमण किया और लूटमार करना चाहा। बाकिर साहस के साथ डटा रहा और उन्हें भगा देने में सफल हुआ। ख्वाजा अबुल्हसन ने यह सुना और उसकी सहायता को लौट पड़ा। ख्वाजा के पहुँचने के पहले ही विद्रोही सामना करने में असमर्थ होकर भाग चुके थे।

बुधवार ९ वीं को पचीस सहस्र सवार अलग करके आसफ खाँ, ख्वाजा अबुल्हसन और अब्दुल्ला खाँ की अधीनता में हमने विद्रोहियों पर आक्रमण करने भेजा, जो इसके अंत को नहीं समझ रहे थे। आसफ खाँ की सेना में कासिम खाँ, लश्कर खाँ, इरादत खाँ, फिदाई खाँ तथा अन्य सेवकगण आठ सहस्र की संख्या में थे। अबुल्हसन की सहायता में बाकिर खाँ, नूरुद्दीन कुली, इब्राहीम हुसेन काशगरी आदि आठ सहस्र सवार नियत थे। अब्दुल्ला खाँ के साथ नवाजिश खाँ,

अब्दुल् अजीज खाँ, अजीजुल्ला और बहुत से अमरोहा तथा बारहा के सैयदों को जाने की आज्ञा दी गई। इस सेना में दस सहस्र सवार थे। सुंदर ने भी नाश की सेना सजाई और निर्लज्जता का पैर आगे बढ़ाया। इसी समय हमने अपनी खास तूणीर मीर तोजक जबर्दस्त खाँ के हाथ अब्दुल्ला खाँ के पास भेजा कि इससे उसका उत्साह बढ़ेगा। जब दोनों पक्ष की मुठभेड़ हुई तब सदा के लिए अपना मुख काला करनेवाले इस नीच ने, जिसमें विद्रोह तथा कृतघ्नता की प्रवृत्ति स्वभावतः थी, भागकर विद्रोहियों का पक्ष ग्रहण कर लिया। खानदौराँ का पुत्र अब्दुलअजीज खाँ भी ईश्वर जाने कि जानबूझ कर या धोखे में उसके साथ चला गया। नवाजिश खाँ, जबर्दस्त खाँ तथा शेरहमला, जो उस निर्लज्ज के साथ थे, साहस के साथ दृढ़ रहे और उसके जाने से घबड़ाए नहीं। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की सहायता इस प्रार्थी के सदा निकट रहती है इसलिए जब अब्दुल्ला खाँ के ऐसा सेनापति दस सहस्र सवार सेना को अस्त-व्यस्त कर शत्रु से जा मिला और घोर पराजय समीप था उसी समय गुप्त हाथों से एक गोली सुंदर तक पहुँच गई। उसके गिरने से विद्रोहियों के साहस के स्तंभ हिल गए। ख्वाजा अबुलहसन ने अपने सामने की सेना को परास्त कर भगा दिया। बाकिर खाँ के पहुँचने पर आसफ खाँ ने बड़ा उत्साह दिखलाया और काम समाप्त कर दिया। इस विजय ने, जो उस समय के विजयों का शुभ सूचक था, रहस्यमय संसार से अपना उद्देश्यपूर्ण मुख दिखलाया। जबर्दस्त खाँ, शेरहमला, शेरबच्चा[1] उसका पुत्र, असद खाँ मामूरी का पुत्र,[2] ख्वाजाजहाँ का भाई मुहम्मद हुसेन तथा बारहा के बहुत से सैयदों ने, जो उस कलमुँहे

---

१. पाठा० शेर पंजः।

२. इसका नाम नूरुलज़माँ था।

अब्दुल्ला खाँ की सेना में थे, मारे गए और अमरत्व को प्राप्त हुए। हुसेन खाँ का पौत्र अजीजुल्ला गोली से घायल होकर भी बच निकला। यद्यपि इस तिरस्कृत दुष्ट का भाग जाना एक प्रकार से गुप्त सहायता ही है पर यदि वह ऐसा दुष्कार्य ठीक युद्धकाल में नहीं करता तो बहुत से विद्रोही सरदार मारे या पकड़े जाते। ऐसा हुआ कि साधारण लोगों में वह लानतुल्ला की पदवी से प्रसिद्ध हो गया था और उसे यह नाम रहस्यपूर्ण संसार से मिल गया था इसलिए हमने भी उसे इसी नाम से पुकारा। इसके अनंतर जहाँ भी लानतुल्ला खाँ का उपयोग हो वहाँ इसी से तात्पर्य समझना चाहिए। संक्षेप में, नष्ट होने वाले विद्रोहियों के युद्धस्थल से भागने पर तथा नाश की घाटी की ओर मुख कर लेने के कारण पुनः वे एकत्र होकर व्यूह न रच सके तथा लानतुल्ला कुल विद्रोहियों के साथ तब तक भागता रहा जब तक वेदौलत के पास न पहुँच गया, जो बीस कोस पर था।

साम्राज्य के सेवकों के विजय का समाचार जब ईश्वर के इस प्रार्थी को मिला तब इसने धन्यवाद में पुनः कृपा करनेवाले उस 'अल्ला' का सिज्दा किया और राजभक्तों को अपने समक्ष बुलवाया। इसके दूसरे दिन वे सुंदर का सिर हमारे सामने लाए। ज्ञात हुआ कि जब उसे गोली लगी तभी उसने अपने प्राण नर्क के स्वामी को सौंप दिया और उसके शव को पास के गाँव में जलाने के लिए ले गए। जब वे आग लगा रहे थे तभी दूर पर एक सेना दिखलाई दी और वे पकड़े जाने के डर से सभी भाग गए। गाँव के मुक़द्दम ने उसका सिर काट लिया और अपने बचाव के लिए खानआजम के पास उसे ले गया, जिसकी जागीर में वह था। वह हमारे सामने उपस्थित किया गया। सिर बिलकुल पहचानने योग्य था और उसमें अब तक कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ था पर लोगों ने मोतियों के लोभ में उसके कान काट लिए

थे। कोई नहीं जानता था कि किसकी गोली से वह मरा। इसके मारे जाने से बेदौलत ने पुनः कमर नहीं बाँधी। यह कहा जा सकता है कि उसका सौभाग्य, साहस तथा बुद्धि इसी हिंदू कुत्ते के साथ थी। जब हमारे ऐसे बाप से जो उसका प्रत्यक्ष स्रष्टा है और जिसने अपने जीवनकाल में उसे सुलतान के पद तक ऊँचे उठा दिया तथा उसके लिए कुछ भी उठा न रखा, उसने ऐसा व्यवहार किया तब हम अल्ला से यही न्याय चाहते हैं कि वह उस पर पुनः दया न करे। जिन सेवकों ने इस उपद्रव में अच्छे कार्य किए थे उन सबको उनके पदानुसार विशेष-विशेष कृपाएँ कर सम्मानित किया। ख्वाजा अबुल् हसन का मंसब बढ़ाकर पाँच हजारी, नवाजिश खाँ का चार हजारी २००० सवार का, बाकिर खाँ का तीन हजारी ५०० सवार का डंके सहित, इब्राहीम हुसेन काशगरी का दो हजारी १००० सवार का, अजीजुल्ला का दो हजारी १००० सवार का, नूरुद्दीन कुली का दो हजारी ७०० सवार का, राजा रामदास का दो हजारी १००० सवार का, लुत्फुल्ला खाँ का एक हजारी ५०० सवार का और परवरिशखाँ का एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। यदि सब सेवकों का विस्तार से लिखा जाय तो बहुत हो जायगा। संक्षेप में हम एक दिन वहाँ ठहरे और दूसरे दिन आगे बढ़े। खानआलम इलाहाबाद से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। उसी महीने की १२ वीं को हम झाँसा ग्राम में ठहरे।

इसी दिन दक्षिण से सर बुलंदराय आकर सेवा में उपस्थित हुआ और खास जड़ाऊ खंजर फूल कटारः सहित उसे देकर सम्मानित किया। अब्दुल्अज़ीज़ख़ाँ तथा कुछ अन्य लोग जो लानतुल्ला के साथ चले गए थे बेदौलत के हाथ से छुटकारा पाकर लौट आए और सेवा में उपस्थित हुए। उन सब ने प्रार्थना की कि जब लानतुल्ला ने धावा

किया तब वे समझे कि युद्ध के लिए है पर जब वे विद्रोहियों के बीच जा फँसे तब निरुपाय हो उन्होंने अधीनता स्वीकार कर सेवा की पर अब अवसर मिल जाने से वे इस देहली के चूमने का सौभाग्य प्राप्त कर सके। यद्यपि उन सब ने दो सहस्र मुहर बेदौलत से व्यय के लिए लिया था परंतु उस संकट-काल में इस पर कुछ ध्यान न देकर उनकी बात को ठीक मान लिया।

१९ वीं को शर्फ का उत्सव हुआ और साम्राज्य के बहुत से सेवकों के मंसब बढ़ाए गए और उन पर उचित कृपाएँ की गईं। आगरे से आकर मीर अज़दुद्दौला सेवा में उपस्थित हुआ। यह एक शब्दकोश ले आया जिसे उसने प्रस्तुत किया था। वास्तव में इसने बहुत परिश्रम किया था और पुराने कवियों की रचनाओं से उसने शब्दों का संकलन किया था। ज्ञान की ऐसी कोई अन्य पुस्तक नहीं है। राजा जयसिंह का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी १४०० सवार का कर दिया। एक खास हाथी अपने पुत्र शहरयार को दिया। मूसवीखाँ को अर्जमुकर्रर का पद दिया। महाबतखाँ के पुत्र अमानुल्ला को खानःजादखाँ की पदवी दी और उसका मंसब चार हजारी ४००० सवार का करके झंडा तथा डंका देकर सम्मानित किया।

इलाही महीने उर्दिबिहिश्त की १ली को फतहपुर की झील के किनारे पड़ाव पड़ा। एतबार खाँ आगरे से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और उसका अच्छा स्वागत हुआ। मुजफ्फर खाँ, मुकर्रम खाँ और उसका भाई आगरे से आकर सेवा में उपस्थित हुए। एतबार खाँ ने आगरा दुर्ग की रक्षा में बहुत अच्छी सेवा की थी इसलिये उसे मुम्ताज खाँ की पदवी दी और उसका मंसब बढ़ाकर छ हजारी ५००० सवार का कर दिया। उसे खिलअत, एक जड़ाऊ तलवार, एक घोड़ा तथा एक खास हाथी देकर उसके कार्य पर लौटा दिया। सैयद

बहवा का मंसब बढ़ाकर दो हजारी १५०० सवार का, मुकर्रम खाँ का तीन हजारी २००० सवार का तथा ख्वाजा कासिम का एक हजारी ४०० सवार का कर दिया। ४ थी को मंसूर खाँ फिरंगी, जिसका वृत्तांत पहले के पृष्ठों में लिखा जा चुका है अपने भाई[1] तथा नौबत खाँ दक्खिनी[2] के साथ सौभाग्य से बेदौलत से अलग होकर सेवा में उपस्थित हुआ। हमने खवास खाँ को अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज के पास भेजा। मिर्जा ईसा तर्खान मुलतान से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। एक खास तलावर महाबत खाँ को दी गई। १० वीं को हिंडौन पर्गने में पड़ाव डाला गया। मंसूर खाँ का मंसब बढ़ा कर चार हजारी ३००० सवार का और नौबत खाँ का दो हजारी १००० सवार का कर दिया। ११ वीं को हम ठहरे रहे। अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज से मिलने का यही दिन निश्चित हुआ था इस लिए हमने आज्ञा दी कि शक्तिमान शाहजादे, प्रसिद्ध अमीरगण तथा सभी राजभक्त सेवकगण उसका स्वागत करने के लिए जायँ और उसे उचित प्रकार से हमारी सेवा में लिवा लावें। दोपहर बीतने पर शुभ साइत में उसने आकर सिज्दः किया तथा सचाई के कपोल को प्रकाशमान बनाया। सलाम-आदाब तथा अन्य आवश्यक रस्मों के पूरे होने पर हमने बड़े प्रेम तथा स्नेह से अपने भाग्यवान पुत्र का आलिंगन किया और उसे अपनी अधिक से अधिक कृपा से भाराक्रांत कर दिया। इसी समय समाचार मिला कि बेदौलत जब आमेर पर्गना के पाससे जा रहा था, जो राजा मान सिंह का पैत्रिक निवासस्थान था तब उसने

१—मगरूर नाम अन्य हस्तलिखित प्रतियों में दिया है।

२—पाठा० यूनास या चूनश।

दुष्टों का एक झुंड भेजा, जिसने उस खेती किए हुए स्थान को लूट लिया।

१२ वीं को साखली में ग्राम में पड़ाव पड़ा। हमने हब्श खाँ को अजमेर की इमारतों को मरम्मत के लिए पहले ही भेज दिया था। हमने अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज का मंसब बढ़ाकर चालीस हजारी ३०००० सवार का उच्च मंसब प्रदान किया। यह सूचना मिलने पर कि बेदौलत ने राजा बासू के पुत्र जगतसिंह को उसके देश में भेजा है कि पंजाब के उस पार्वत्यस्थान में उपद्रव खड़ा करे हमने सादिक खाँ मीरबख्शी को उस प्रांत का अध्यक्ष नियत किया और उसे उस दुष्ट को दंड देने की आज्ञा दी। हमने उसे खिलअत, एक तलवार, एक हाथी देकर उसका मंसब चार हजारी ३००० सवार का बढ़ाकर कर दिया और एक तोग झंडा तथा डंका देकर विदा किया।

इसी समय हमें समाचार मिला कि मिर्जा शाहरुख के पुत्र मिर्जा बदीउज्जमाँ[1] को, जो फतहपुरी के नाम से प्रसिद्ध था, उसके छोटे भाइयों ने एकाएक धोखे से आक्रमण कर मार डाला। इसी समय के लगभग वे भाई सेवा में उपस्थित हुए तथा अभिवादन किया। उसकी माता भी सेवा में उपस्थित हुई पर उसने भी, जैसा उचित था, अपने पुत्र के रक्त की प्रार्थी नहीं हुई और इसलिए विधानतः उनपर कोई वाद नहीं चल सका। यद्यपि उसका स्वभाव ऐसा दुष्ट था कि उसके अपघात के लिए किसी को दुःख नहीं हुआ प्रत्युत इसके विरुद्ध अवसर के अनुकूल तथा लाभदायक ही हुआ तब भी इन दुष्टों ने

---

१. गुजरात के सरकार पत्तन में इसे जागीर मिली थी। रात्रि में सोते हुए इसे मारा गया था। इकबालनामा पृ० २०४।

अपने बड़े भाई के प्रति, जो उनका पितृ-तुल्य था, ऐसा कठोर साहस दिखलाया था इसलिए हमने उन्हें कारागार भेज दिया कि बाद में जो कुछ उचित समझा जायगा किया जायगा। २१वीं को राजा गजसिंह तथा राय सूरजसिंह अपनी अपनी जागीर पर से आकर सेवा में उपस्थित हुए। हमने मुइज्जुलमुल्क को अपने पुत्र खानजहाँ को बुलाने के लिए मुलतान भेजा था, वह आकर सेवा में उपस्थित हुआ और उसका पत्र दिया जिसमें उसकी कठिन बीमारी तथा निर्बलता का हाल था। उसने अपने पुत्र असालत खाँ को एक सहस्र सवारों के साथ भेजा था और अपना दुःख प्रगट किया था कि वह सेवा में उपस्थित नहीं हो सका। उसकी क्षमायाचना स्पष्टतः सत्य थी इसलिए हमने स्वीकार कर लिया। २५ वीं को हमारा भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज़ विजयी सेना के साथ बेदौलत का पीछाकर परास्त करने भेजा गया। शक्तिमान शाहजादे पर अधिकार तथा विजयी सेना के संचालन का कुल भार मोतमिनुद्दौला महाबत खाँ को दिया गया। सौभाग्यवान शाहजादे के साथ जो प्रसिद्ध अमीर तथा राजभक्त वीर सेवकगण गए थे उनका विवरण इस प्रकार है—

खान आलम[1], महाराज गजसिंह, फाजिल खाँ, रशीद खाँ, राजा गिरिधर, राजा रामदास कछवाहा, ख्वाजा मीर अब्दुल् अजीज, अजीजुल्ला, असद खाँ, परवरिश खाँ, इकराम खाँ, सैयद हिजब्र खाँ, लुत्फुल्ला, राय नरायन दास तथा अन्य चालीस सहस्र सवारों एवं भारी तोपखाने के साथ गए। बीस लाख का कोष इनके साथ भेजा गया। शुभ घड़ी में ये हमारे पुत्र के साथ विजय लिए हुए चले। इस विजयी

१—इकबाल नामा पृ० २८४ पर कई अन्य नाम भी दिए गए हैं और इसमें के कई छोड़ दिए गए हैं। भ्रम से इसमें गजसिंह को कछवाहा लिखा गया है।

सेना का बख्शी तथा वाकेआनवीस फाजिल खाँ नियत हुआ। शाहजादे को एक खास खिलअत कारचोबी की नादिरी के साथ जिसके कालर तथा दामन में इकतालीस सहस्र मूल्य की मोतियाँ टँकी हुई थीं और हमारे खास कारखाने में प्रस्तुत की गई थी प्रदान किया और रत्नगज नामक खास हाथी दस हथनियों के साथ, एक खास घोड़ा तथा एक जड़ाऊ तलवार भी दिया, जिन सबका मूल्य सतहत्तर सहस्र रुपए था। ये सब शाहजादे को दिए गए। नूरजहाँ बेगम ने भी उसे प्रथानुसार खिलअत, एक घोड़ा तथा एक हाथी दिया। महाबत खाँ तथा अन्य अमीरों को भी उनके पदों के अनुसार घोड़े, हाथी तथा खिलअत दिए गए। शाहजादे के निजी सेवकों को भी कृपाओं से सम्मानित किया। इसी दिन मुजफ्फर खाँ को मीर बख्शी के पद पर नियत किए जाने पर खिलअत दिया गया।

इलाही महीने खुरदाद की पहली को खुसरू के पुत्र शाहजादे दावरबख्श को गुजरात में नियत किया और खानआजम को उसका अभिभावक होने का उच्च पद दिया। हमने शाहजादे को एक घोड़ा, एक हाथी, खिलअत, एक खास जड़ाऊ खंजर, एक तोग झंडा तथा डंका दिया। खान आजम, नवाजिश खाँ तथा अन्य सेवकों को भी पदानुसार उपहार दिए गए। फाजिल खाँ के स्थान पर इरादत खाँ बख्शी नियत किया गया। रुक्नुस्सलतन आसफखाँ बंगाल तथा उड़ीसा का प्रांताध्यक्ष नियत किया गया। एक खास खिलअत तथा एक जड़ाऊ तलवार उसे दिए गए। उसके पुत्र अबूतालिब को उसके साथ जाने की आज्ञा मिली और उसका मंसब बढ़ाकर दो हजारी १००० सवार का कर दिया। शनिवार ९ वीं को, जो १६ रज्जब सन् १०३२ हि० होता है, अजमेर के बाहर आनासागर पर पड़ाव पड़ा। शाहजादे दावरबख्श को आठ हजारी ३००० सवार का मंसब दिया

और उसके साथ की सेना के व्यय के लिए दो लाख रुपए का कोष दिया गया। खानआजम को भी एक लाख रुपए अग्रिम दिए गए। इफ्तखार बेग के पुत्र अल्लाहयार को, जो हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज की सेवा में था, उसकी प्रार्थना पर एक झंडा दिया। ग्वालिअर दुर्ग का अध्यक्ष नियत होने पर तातार खाँ को जाने की आज्ञा दी गई। राजा गजसिंह का मंसब चार हजारी ३००० सवार का कर दिया।

इसी दिन आगरे से समाचार आया कि मरियमुज्जमानी ईश्वरेच्छा से मर गईं। हमें विश्वास है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर उसे अपनी दया के समुद्र में ढँक लेगा। राणा कर्ण का पुत्र जगतसिंह अपने देश से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। बंगाल के प्रांताध्यक्ष इब्राहीम खाँ फत्हजंग ने भेंट रूप में चौंतीस हाथी भेजे जो हमारे सामने उपस्थित किए गए। बाकिर खाँ अवध का और सादत खाँ दोआब का फौजदार नियत हुआ। मीर मुशरिफ बयूतात का दीवान नियत हुआ।

इलाही महीने तीर की १२वीं को गुजरात के कर्मचारियों की सूचना मिली कि विजय तथा अधिकार मिल गया। इसका विवरण इस प्रकार है कि हमने गुजरात प्रांत, जो उच्चपदस्थ सुलतानों का निवासस्थान था, बेदौलत को राणा पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में दे दिया था, जैसा कि पूर्व पृष्ठों में लिखा जा चुका है। ब्राह्मण सुंदर उस प्रांत का शासन तथा प्रबंध करता था। जब उसके कृतघ्न मन में व्यर्थ की बातें घुसीं तब उसने उस हिंदू कुत्ते को, जो सर्वदा शत्रुता तथा विद्रोह के सिक्कड़ को हिलाया करता था, हिम्मत खाँ, शरजा खाँ, सर्फराज खाँ तथा अन्य शाही सेवकों के साथ, जो उस प्रांत के जागीरदार थे, बुला भेजा। सुंदर का भाई कन्हर उसके स्थान

पर नियत हुआ। जब सुंदर मारा गया और बेदौलत पराजय के अनंतर मांडू चला गया तब गुजरात प्रांत का शासन लानतुल्ला को जागीर रूप में मिला तथा कन्हर दीवान सफी खाँ के साथ बुला लिया गया। इसी के साथ वहाँ का कोष, पाँच लाख रुपए व्यय कर बना हुआ जड़ाऊ सिंहासन तथा दो लाख रुपए व्यय से बना परतला भी जो हमारे लिए भेंट करने को बनवाया गया था, मँगवाया गया। सफी खाँ जाफरबेग का भतीजा था, जिसे हमारे पिता के समय आसफ खाँ की पदवी मिली थी, और इसके साथ नूरजहाँ बेगम के भाई की लड़की ब्याही थी, जिसने हमारी कृपा से आसफखाँ की पदवी पाई थी। इसकी बड़ी लड़की का निकाह बेदौलत से हुआ था। दोनों लड़कियाँ एक ही माँ से थीं और बेदौलत को आशा थी कि इस संबंध के कारण सफीखाँ उसी का पक्ष लेगा। परंतु सफीखाँ की राजभक्ति तथा ऐश्वर्य का अमर निर्णय हो चुका था और उसे उच्च पद को पहुँचना था। इसलिए सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने उसे राजभक्त तथा अच्छा कार्य करनेवाला बनाया, जिसका वर्णन अभी दिया जायगा। संक्षेप में कृतघ्न लानतुल्ला ने अपने खोजे वफादार को उस प्रांत का अध्यक्ष बनाकर भेजा और वह बिना सामान आदि के कुछ लोगों के साथ अहमदाबाद पहुँचा और नगर पर अधिकार कर लिया। इस कारण कि सफीखाँ ने राजभक्त रहना निश्चित कर लिया था उसने साहस के साथ नौकरों का प्रबंध कर और सेना इकट्ठी कर प्रजा को प्रसन्न कर लिया। कन्हर के नगर के बाहर निकलने के कुछ दिन पहले सफीखाँ ने कँकड़िया तालाब के किनारे पड़ाव डाला और वहाँ से महमूदाबाद की ओर यह कहते हुए चल दिया कि वह बेदौलत के पास जा रहा है। छिपे रूप से इसने नाहरखाँ, सैयद दिलेर खाँ, नान्हूखाँ[1] अफगान तथा साम्राज्य के अन्य राजभक्त सेवकों के

साथ पत्र-व्यवहार एवं प्रबंध कर लिया था, जो अपनी जागीरों में प्रतीक्षा कर रहे थे। यह अवसर देखता रहा। बेदौलत के एक सेवक सालिह ने, जो पितलाद सरकार का फौजदार था और जिसके पास अच्छी सेना थी, सुना कि सफी के विचार कुछ और हैं। कहर को भी इसका पता लग गया पर सफीखाँ ने उन्हें शांत रखा और अपने व्यवहार में ऐसा सतर्क तथा गंभीर था कि वे हाथ-पैर नहीं हिला सके। सफीखाँ के भय से कि कहीं वह कपट व्यवहार छोड़ कर कोष पर हाथ न मारे सालिह लगभग दस लाख कोष के साथ दूरदर्शिता से आगे बढ़ गया और मांडू में बेदौलत के पास पहुँच गया। कहर भी जड़ाऊ परतला लेकर उसके पीछे चल दिया पर भारी होने के कारण सिंहासन नहीं ले जा सका। सफीखाँ इसे अपने योग्य अवसर समझकर महमूदाबाद से करंज पर्गना चला आया, जो राजमार्ग के बाईं ओर है और जहाँ नान्हू खाँ था। साथ ही उसने पत्र तथा मौखिक संदेशों से नाहरखाँ तथा अन्य राजभक्त सेवकों से यह प्रबंध किया कि हर एक अपनी जागीरों से जो सेना तैयार हो उसे लेकर शीघ्रता से आवें और प्रातः काल में सूर्योदय के समय, जो भाग्यवानों के लिए ऐश्वर्य का सवेरा और दुष्टों के लिए नाश की संध्या है, नगर में अपने सामने के फाटकों से घुस आवें। सफी ने अपनी स्त्रियों को उसी परगने में छोड़ा और नान्हू खाँ के साथ प्रातःकाल नगर के पास पहुँच गया। यह कुछ देर तक शवान बाग में ठहरा रहा जब तक कि सवेरा अच्छी प्रकार नहीं हो गया और शत्रु-मित्र की पहचान पड़ने लगी। जब संसार को प्रकाशित करने वाला सूर्य ऊँचे उठ गया और सौभाग्य का फाटक खुला हुआ मिला तब नाहर खाँ तथा अन्य राजभक्तों का कुछ चिह्न न मिलने पर भी इस आशंका से कि कहीं शत्रु पता लग जाने पर दुर्ग के फाटकों को बंद न कर ले विजय देने वाले ईश्वर पर भरोसा कर के वह सारंगपुर फाटक से नगर में चला गया। प्रायः इसी समय

नाहर खाँ भी पहुँच गया और फाटक में से घुस कर नगर में चला गया। लानतुल्ला का खोजा हमारे सदा सफल सौभाग्य को निश्चित कर निजाम वजीहुद्दीन के पौत्र शेख हैदर के गृह में जा छिपा। राजभक्त सेवकों ने ऊँचे स्वर से विजय को घोषणा करके बुर्जों तथा फाटकों को दृढ़ करना आरंभ किया। बेदौलत के दीवान मुहम्मद तकी तथा बख्शी हसन बेग के गृहों पर मनुष्य भेज कर उन्हें कैद कर लिया। शेख हैदर ने स्वयं आकर सफी खाँ को सूचित किया कि लानतुल्ला का खोजा उसके गृह पर है और तब उसके हाथों को उसी के गले में बाँध कर पकड़ लाए। बेदौलत के सेवकों तथा अनुयायियों को कारागार में बंद कर वे नगर में शांति रखने का प्रबंध करने लगे। जड़ाऊ सिंहासन, दो लाख रुपए नगद तथा बेदौलत एवं उसके सेवकों की संपत्ति एवं सामान पर वे अधिकृत हो गए। जब यह समाचार बेदौलत को मिला तब उसने लानतुल्ला को हिम्मत खाँ, शरजा खाँ, सर्फराज खाँ, काबिल बेग, रुस्तम बहादुर, सालिह बदख्शी तथा अन्य दुष्टों के साथ भेजा। उसके तथा शाही सेवकों के सब मिलाकर पाँच छ सहस्र[1] सवार उसके साथ थे। सफी खाँ तथा नाहर खाँ ने इस बात से अवगत होकर दृढ़ता से साहस किया और अपने मनुष्यों को प्रोत्साहित करते हुए सेना एकत्र करने लगे। जो कुछ नगद तथा बहुमूल्य सामान वे प्राप्त कर सके यहाँ तक कि सिंहासन भी तोड़ कर पुराने तथा नए सैनिकों में वेतन में वितरण कर दिया। ईडर का जमींदार राजा कल्याण, लाल गोप का पुत्र तथा हर एक ओर के जमींदार नगर में बुला लिए गए थे। इसी प्रकार अच्छी सेना एकत्र हो गई। लानतुल्ला सहायकों की प्रतीक्षा न कर आठ दिन में मांडू से बड़ौदा पहुँच गया। राजभक्त अपने साहस पर निर्भर हो तथा

१—इकबालनामा में चार-पाँच सौ सवार लिखा है।

ईश्वर पर भरोसा कर नगर से बाहर निकले और कँकड़िया ताल के पास मोर्चा बाँधा। लानतुल्ला ने सोचा था कि शीघ्रता करने से राजभक्तों की शक्ति की रस्सी टूट जायगी परंतु जब उसने राजभक्त सेवकों के नगर के बाहर आने का समाचार सुना तब नाश की बागडोर रोक ली और सहायता की प्रतीक्षा में बड़ौदा में ठहर गया। जब सभी नाश होनेवाले दुष्टगण उपद्रव के उस मुख्य स्थान में एकत्र हो गए तब उसने सत्य मार्ग से हटकर मूर्खता के मार्ग पर पैर रखा और राजभक्त सेना ने भी कँकडियाताल से कूच कर बटोह ग्राम में कुतुबआलम के मकबरे के पास पड़ाव डाला। लानतुल्ला भी तीन दिन का मार्ग दो दिन में तै कर महमूदाबाद पहुँच गया। सैयद दिलेर खाँ ने शरजा खाँ की स्त्रियों को पकड़ लिया था और बड़ौदा से नगर में ले आया था और सर्फराज खाँ की स्त्रियाँ भी नगर में थीं इसलिए सफी खाँ ने गुप्त रूप से दोनों के पास संदेश भेजा कि यदि सौभाग्य से वे विद्रोह के धब्बे को अपने सिरों से मिटा देंगे तथा राजभक्त सेवकों में अपने को सम्मिलित कर लेंगे तो वर्तमान तथा भविष्य लोकों में उनकी स्थिति मुक्ति के पास पहुँच जायगी नहीं तो वह उनकी स्त्रियों तथा बच्चों की पूरी अप्रतिष्ठा कर डालेगा। लानतुल्ला ने यह समाचार पाकर बहाने से सर्फराज खाँ को अपने घर बुलाकर कैद कर लिया। शरजाखाँ, हिम्मत खाँ तथा सालिह बदख्शी मिले हुए थे और उसी स्थान पर उतरे हुए थे इसलिए वह शरजा खाँ को अपने अधिकार में नहीं ला सका। संक्षेप में २१ वीं शाबान सन् १०३२ हि० को लानतुल्ला सवार हुआ और अपनी सेना सजाई, जो संकट से रंजित थी। राजभक्त सेना ने भी व्यूह बाँधा और युद्ध के लिए तैयार हुए। लानतुल्ला ने सोचा कि यदि वह स्वयं आगे बढ़े तो शत्रु का साहस न पड़ेगा और बिना युद्ध ही के वे अस्तव्यस्त हो जाएँगे। परंतु जब उसने राजभक्तों की दृढ़ता देखी तब वह युद्ध का साहस नहीं कर सका और बाईं ओर

बढ़ा तथा यह घोषित किया कि शत्रु ने वहाँ बारूद बिछा रखी है और उसके मनुष्य उससे नष्ट हो जायँगे इसलिए सरखेज के मैदान में चलकर युद्ध करना उचित होगा। इस प्रकार के व्यर्थ विचार सौभाग्य द्वारा प्रेरित हुए थे क्योंकि उसके भाग मोड़ते ही पराजय का शोर मचा और विजयस्थल के सवारों ने उसके बाएँ भाग पर धावा कर दिया। वह अभागा सरखेज के मैदान तक नहीं पहुँच सका और नारंग ग्राम में ठहर गया। शाही सेना बालूद ग्राम में, जो तीन कोस पर है, पुनः सुसज्जित हुई। दूसरे दिन सवेरे नियमानुकूल युद्ध हुआ और सेनाएँ इस प्रकार सजाई गईं। अग्गल में नाहर खाँ, ईडर का जमींदार राजा कल्याण तथा अन्य वीर पुरुष थे। बाएँ भाग में सैयद दिलेर खाँ, सैयद सीदू तथा अन्य राजभक्त स्थित थे। दाएँ भाग में नान्हू खाँ, सैयद गुलाम मुहम्मद तथा बचे हुए राजभक्त गण थे। मध्य में सफो खाँ, किफायत खाँ बख्शी तथा अन्य अच्छे सेवक थे। सौभाग्य से ऐसा हुआ कि लानतुल्ला जिस स्थान पर ठहरा हुआ था वहाँ की भूमि ऊँची नीची काँटों से भरी हुई थी जिसमें पतली गलियाँ थीं इसलिए सेना भी पास पास नहीं थी। उसने रुस्तम बहादुर के साथ प्रायः सभी अनुभवी मनुष्यों को भेज दिया था और हिम्मत खाँ तथा सालिह बेग सबके आगे थे। यह संकटग्रस्त सेना पहले नाहर खाँ के सामने पहुँची और खूब युद्ध हुआ। संयोग से हिम्मत खाँ गोली लगने से गिर गया और सालिह बेग तथा नान्हू खाँ, सैयद गुलाम मुहम्मद आदि के बीच युद्ध होने लगा। युद्ध के मध्य में सैयद गुलाम मुहम्मद के हाथी ने आकर सालिह को घोड़े से गिरा दिया। वह अत्यन्त घायल होकर गिरा और उसके प्रायः एक सौ मनुष्य मारे गए। इसी समय शत्रु की सेना का आगे चलने वाला हाथी आतिशबाजी तथा गोलियों की चमक से घूम कर एक पतली गली में जा घुसा, जिसके दोनों ओर

काँटों का झंखाड़ था और बहुत से विद्रोहियों को कुचल डाला। हाथी के भागने से शत्रु-सेना अस्त-व्यस्त हो गई। इसी समय सैयद दिलेर खाँ दाईं ओर से लड़ता हुआ आ पहुँचा। लानतुल्ला को हिम्मत खाँ तथा सालिह के मारे जाने का ज्ञान नहीं था और उनकी सहायता के विचार से उसने अपना घोड़ा बढ़ाया। अग्गल के वीर गण युद्ध में विशेष भाग लेने के कारण घायल हो चुके थे अतः लानतुल्ला के आक्रमण को सहन न कर सके और पीछे हटने लगे तथा कड़ी पराजय की संभावना ज्ञात होने लगी। इसी समय ईश्वरी सहायता दिखाई पड़ी। सफी खाँ अग्गल की सहायता के लिए मध्य से आगे बढ़ा। ठीक ऐसे समय लानतुल्ला को हिम्मत खाँ तथा सालिह के मारे जाने का समाचार मिला और मध्य के आजाने तथा सफी खाँ के आक्रमण से उसका साहस छूट गया और वह भाग निकला। सैयद दिलेर खाँ ने एक कोस तक उसका पीछा किया और बहुतेरों को मार डाला। नमकहराम काबिलबेग विद्रोहियों के एक झुंड के साथ पकड़ा गया। लानतुल्ला सर्फराज खाँ की ओर से निश्चिंत नहीं था इसलिए उसने उसको बँधवाकर हाथी पर बैठा रखा था और अपने एक गुलाम को इस आदेश के साथ उसकी देख भाल को नियत किया था कि यदि पराजय हो तो उसे मार डाले। इसी प्रकार उसने सुलतान अहमद के पुत्र बहादुर को भी एक हाथी पर बँधवा कर रखवा दिया था और उसे भी मार डालने की आज्ञा दे दी थी। जब युद्ध आरंभ हुआ तब सुलतान अहमद के पुत्र के रक्षक ने छुरे से उसे मार डाला परंतु सर्फराज खाँ हाथी पर से कूद पड़ा। उसके रक्षक ने घबड़ाहट में उस पर एक चोट मारी पर उसका कोई असर नहीं हुआ। सफी खाँ ने युद्ध में उसे पाकर नगर में भेज दिया। लानतुल्ला बड़ौदा पहुँचने तक तनिक भी कहीं नहीं रुका। शरजा खाँ की स्त्रियाँ राजभक्तों की कैद में थीं इसलिए वह निरुपाय होकर सफी खाँ के

पास चला आया । संक्षेप में लानतुल्ला बड़ौदा से भड़ोच चला गया। हिम्मत खाँ के पुत्रगण वहाँ दुर्ग में थे। यद्यपि उसे दुर्ग में नहीं आने दिया पर पाँच सहस्र महमूदी सिक्के उसे व्यय के लिए दिए। तीन दिन तक वह भड़ोच दुर्ग के बाहर दुरवस्था में पड़ा रहा और चौथे दिन समुद्र से सूरत चला गया। लगभग दो महीने तक वह वहाँ रहा और अपने मनुष्यों को एकत्र करता रहा। सूरत बेदौलत की जागीर में था इसलिए उसने वहाँ के कर्मचारियों से चार लाख महमूदी लिए और वहाँ अत्याचार तथा अन्याय से भी जो पा सका संग्रह कर लिया। इसके अनंतर वह पुनः बहुत से अभागों की सेना इकट्ठी कर बेदौलत के पास बुर्हानपुर चला गया।

जब सैफ खाँ तथा अन्य राजभक्तों की इस अच्छी सेवा का समाचार मिला तब उनमें से प्रत्येक पर कृपा कर उन्हें सम्मानित किया गया। सफी खाँ का मंसब सात सदी ३०० सवार का था, उसे तीन हजारी २००० सवार का मंसब, सैफ खाँ जहाँगीर शाही की पदवी, झंडा व डंका देकर सम्मानित किया। नाहर खाँ का मंसब एक हजारी २०० सवार का था उसे तीन हजारी २००० सवार का मंसब तथा शेर खाँकी पदवी दी और एक घोड़ा, एक हाथी तथा जड़ाऊ तलवार दिया। यह किसी पूरणमल लूल् के भाई का पौत्र था, जो रायसेन तथा चंदेरी का दुर्गाध्यक्ष था। जब शेरखाँ अफगान ने रायसेन दुर्ग घेर लिया तब यह विख्यात है कि उसने उसे रक्षा का वचन देकर भी मार डाला और उसकी स्त्रियों ने अपने को जला डाला, हिंदू प्रथानुसार ख्याति तथा पातिव्रत्य की अग्नि में जौहर कर डाला, जिससे कोई अन्यायी मनुष्य उनके पातिव्रत्य के अंचल को छू न सके। उसके पुत्रगण तथा जातिवाले भिन्न स्थानों को चले गए। नाहर खाँ का पिता, जिसकी पदवी खानजहाँ थी, आसीर तथा बुर्हानपुर के अध्यक्ष

मुहम्मद खाँ के पास चला गया और मुसल्मान हो गया। मुहम्मद खाँ की मृत्यु पर उसका पुत्र हसन छोटी अवस्था में उसका उत्तराधिकारी हुआ। मुहम्मद खाँ का भाई राजा अली खाँ ने लड़के को कैद कर शासन पर अधिकार कर लिया। कुछ समय के अंनतर राजा अली खाँ को समाचार मिला कि खानजहाँ तथा मुहम्मद खाँ के सेवकों के एक दल ने एक षड्यंत्र कर उस पर चढ़ाई करने और हसन खाँ को दुर्ग से बाहर निकाल कर उसे शासनारूढ़ करने का निश्चय किया है। इसने उन सब से अधिक शीघ्रता की और हयात खाँ हब्शी को कुछ साहसिकों के साथ खानजहाँ के घर भेजा कि उसे जीवित पकड़ लावें या मार डालें। उसने अपनी ख्याति के अनुकूल साहस को दृढ़ कर युद्ध करना आरंभ किया पर जब पराजय के लक्षण देखे तब उसने जौहर कर लिया तथा इस उधार लिए जीवन को त्याग दिया। उस समय नाहर खाँ बहुत छोटा था। हयात खाँ हब्शी ने राजा अली खाँ से आज्ञा लेकर इसे अपना पोष्य पुत्र तथा मुसल्मान बना लिया। हयात खाँ की मृत्यु पर राजा अली खाँ ने इसका पालन-पोषण किया। जब हमारे श्रद्धेय पिता ने आसीर विजय किया तब नाहर खाँ उनकी सेवा में चला आया। उन्होंने इसमें वीरता के लक्षण देखकर योग्य मंसब दिया तथा मालवा के अंतर्गत मुहम्मदपुर पर्गना जागीर दी। हमारी सेवा में इसने बराबर उन्नति की। अब इस पर कृतज्ञता के कारण जो दया की गई तब इसे उचित कार्य करने का फल ज्ञात हुआ।

सैयद दिलेर खाँ बारहा के सैयदों में से है। इसका नाम पहले सैयद अब्दुल्वहाब था। हमने इसका मंसब एक हजारी ८०० सवार से दो हजारी १२०० सवार का कर दिया और इसे झंडा प्रदान किया। हिंदी में वे द्वादश संख्या को बारह कहते हैं। दो आब में बारह गाँव

आस-पास हैं, जो इन सैयदों का निवासस्थान है इसलिए ये बारहा के सैयद कहलाते हैं। कुछ लोग इनकी वंशपरंपरा पर उँगली उठाते हैं पर इनकी वीरता इनके सैयद होने को प्रमाणित करती है क्योंकि इस राज्यकाल में ऐसा कोई युद्ध नहीं हुआ है जिसमें इन्होंने प्रमुख भाग न लिया हो और कुछ मारे न गए हों। मिर्जा अजीज कोका सदा कहा करता था कि ये इस साम्राज्य के संकट को दूर करनेवाले हैं और यह वास्तव में ठीक भी है।

नान्हू खाँ अफगान का मंसब आठ सदी ८०० सवार का था और इसे बढ़ाकर डेढ़ हजारी १००० सवार का कर दिया। इसी प्रकार अन्य राजभक्त सेवकों का उनकी सेवाओं तथा बलिदानों को ध्यान में रखकर मंसब बढ़ाया गया तथा उच्च पद पाकर उनके हृदय की आकांक्षा पूरी हुई। इसी समय खानजहाँ का पुत्र असालत खाँ हमारे पौत्र दावरबख्श की सहायता को गुजरात भेजा गया और हमने नूरुद्दीन कुली को उसी प्रांत में भेजा कि वह शरजा खाँ, सर्फराज खाँ तथा अन्य बलवाई सर्दारों को जो कैद किए जा चुके हैं जंजीर में बाँध कर लिवा लावे।

इसी दिन हमें समाचार मिला कि शाहनवाज खाँ का पुत्र मनोचेहर बेदौलत से सौभाग्य से अलग होकर हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज की सेवा में चला आया है। कश्मीर के प्रांताध्यक्ष एतकाद खाँ का मंसब बढ़ाकर चार हजारी ३००० सवार का कर दिया गया।

अहेरियों ने समाचार दिया कि पास ही में एक शेर दिखलाई पड़ा है और इससे हमें अहेर खेलने की इच्छा हुई। जंगल में जाने पर तीन शेर और दिखलाई दिए। चारों को मारकर हम महल में लौट आए। शेर का शिकार करने की हमारी रुचि ऐसी प्रबल है कि जब तक यह मिलता है तब तक हम दूसरे शिकार की इच्छा ही नहीं करते।

सुलतान महमूद के पुत्र सुलतान मसऊद की भी शेर मारने की बड़ी इच्छा रहा करती थी। उसके शेर मारने की विचित्र कहानियाँ लिखी गई हैं, विशेप कर बैहाकी के इतिहास में, जिसने अपनी दैनिकी में आँखों देखा वर्णन लिखा है। इन्हीं में एक के संबंध में लिखता है कि एक दिन वह हिंदुस्थानकी सीमा पर शेर का अहेर खेलने गया और उस समय वह हाथीपर सवार था। एक भारी शेर जंगल से निकला और हाथी पर टूटा। उसने एक कटार मारा जो शेर की छाती में लगा। चोट लगने से क्रुद्ध शेर हाथी की पीठ पर पहुँच गया और अमीर ने घुटनों के बल होकर तलवार से ऐसा हाथ मारा कि शेर के अगले दोनों पैर काट डाले तथा शेर गिर कर मर गया। ऐसी ही घटना एक बार हमारे साथ भी हुई कि जब हम शाहजादे थे तब हम पंजाब में शेर का शिकार खेलने गए। एक बड़ा सशक्त सिंह जंगल में से निकला। हमने हाथी पर से उस पर गोली चलाई जिससे अत्यन्त क्रुद्ध होकर शेर उछला और हाथी के पीठ पर आ गया। हमें इतना अवसर नहीं मिला कि बंदूक रखकर तलवार उठावें इस लिए बंदूक को उलटाकर हम घुटने के बल हो गए और दोनों हाथ से कुंदे से उसके सिर तथा मुख पर चोटें मारीं जिनसे वह भूमि पर गिर कर मर गया।

विचित्र घटनाओं में से एक इस प्रकार है कि एक दिन हम हाथी पर सवार होकर अलीगढ़ के नूह जंगल में भेड़ियों का अहेर खेल रहे थे। एक भेड़िया दिखलाई दिया और हमने उसके सिर में कान के पास तीर मारी जो एक बित्ता घुस गई और इसी से वह गिर कर मर गया। बहुधा हमारे सामने ऐसा हुआ है कि सशक्त अच्छे धनुर्धारियों ने बीस तथा तीस तीर तक चलाए पर मार न सके। अपने ही संबंध में विशेष लिखना उचित नहीं है इसलिए हम अपनी लेखनी का मुख अधिक कहने से रोक लेते हैं।

उसी महीने की २६ वीं को हमने राणा कर्ण के पुत्र जगतसिंह को मोतियों की एक माला दी। इसी समय समाचार मिला कि पाकली का जमींदार सुलतान हुसेन मर गया। हमने उसका मंसब तथा जागीर उसके बड़े पुत्र शादमान को दे दिया।

इलाही महीने अमुरदाद की ७ वीं को हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज का एक सेवक इब्राहीम हुसेन विजयी सेना से आया और अक्षय साम्राज्य के सर्दारों को विजय का समाचार लाया। हमारे पुत्र की सूचना में युद्ध का तथा उन वीरों एवं प्रसिद्ध मनुष्यों के प्रयत्नों का विवरण था। केवल ईश्वर की कृपा से प्राप्त इन दयाओं के लिए हमने उसके धन्यवाद की प्रथा पूरी की। इसका विवरण इस प्रकार है—

जब उच्चपदस्थ शाहजादे की सेना की शाही वाहिनी चांदा दर्रे के पार उतरी और मालवा प्रांत में पहुँची तब बेदौलत बीस सहस्र सवार, तीन सौ युद्धीय हाथी और भारी तोपखाने के साथ युद्ध के लिए मांडू से निकला। उसने दक्षिण के बर्गियों का एक दल जादोराय तथा ऊदाराम और आतिशखाँ आदि विद्रोहियों की अधीनतामें आगे भेजा कि शाही सेना पर आक्रमण कर लूटमार करते रहें। महाबतखाँ ने इसका उचित प्रबंध किया। उसने प्रसिद्ध शाहजादे को मध्य में रखा और स्वयं सारी सेना के साथ आगे बढ़ा। कूच तथा पड़ाव के समय यह बड़ी सावधानी रखता था। बर्गीगण काफी दूर पर रहा करते थे और कभी साहस का पैर नहीं बढ़ाया। एक दिन मंसूर खाँ फिरंगी की पारी अंत में रहने की थी। पड़ाव डालने के समय महाबतखाँ सतर्कता की दृष्टि से सजी हुई सेना के साथ पड़ाव के बाहर खड़ा था कि मनुष्यगण सुविधापूर्वक उसका हाता बना सकें। मंसूर खाँ मार्ग में पीता चला आ रहा था इसलिए पड़ाव पर आते आते वह मत्त हो गया। ऐसा हुआ कि उसे दूर पर एक सेना दिखलाई दी और मदिरा ने

उसके मस्तिष्क में भर दिया कि उसे धावा करना चाहिये। उसने अपने भाइयों तथा मनुष्यों से बिना कुछ कहे घोड़े पर सवार हो धावा कर दिया और दो तीन बर्गियों को भगाता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ जादोराय तथा ऊदाराम दो तीन सहस्र सवारों के साथ खड़े थे। अपनी प्रथानुसार चारों ओर से आक्रमण कर उसे घेर लिया। वह जब तक प्राण रहा लड़ता रहा और अंत में राजभक्ति पर निछावर हो गया।

इन्हीं दिनों के बीच महाबत खाँ निरंतर पत्रों तथा संदेशों से बहुत से पीड़ितों के हृदयों को, जो संकोच तथा घबराहट के कारण बेदौलत के साथ हो गए थे, आकर्षित करता रहा। जब लोगों ने उसकी हालत के पृष्ठों पर नैराश्य की पंक्तियाँ पढ़ीं तब उस ओर से भी पत्र वचन के लिए आने लगे। जब बेदौलत मांडू दुर्ग से बाहर निकला तब उसने पहले बर्गियों का एक दल भेजा और उसके अनंतर रुस्तमखाँ, तकी तथा बर्कन्दाज़ खाँ को बंदूकचियों के एक दल के साथ भेजा। उसके बाद दाराबखाँ, भीम, बैरम बेग आदि अन्य उत्साही मनुष्यों को भेजा। वह स्वयं युद्ध करने की इच्छा नहीं रखता था और सदा पीछे की ओर देखता रहता था। उसने युद्धीय हाथियों को तोपखाने की गाड़ियों के साथ नर्मदा पार किया और स्वयं बिना अनुगामियों के दाराब तथा भीम के पीछे युद्ध की ओर अपना नाश का मुख फेरा। जिस दिन शाही सेना कालियादह में पड़ाव डाले हुई थी उसी दिन बेदौलत ने अपनी सेना उसके विरुद्ध भेजी और स्वयं खानखानाँ तथा कुछ मनुष्यों के साथ पीछे एक कोस पर ठहरा रहा। बर्कंदाज़खाँ ने महाबतखाँ से बातचीत निश्चित कर ली थी इसलिए वह प्रतीक्षा में खड़ा रहा। जब दोनों सेनाएँ आमने सामने आ डटीं तब उसे अवसर मिला और बंदूक्चियों के एक दल के साथ आक्रमण कर शाही

सेना में 'शाह जहाँगीर की जय' चिल्लाता हुआ आ मिला। जब वह महाबत खाँ के पास पहुँचा तब वह उसे हमारे भाग्यवान पुत्र की सेवा में लिवा गया, जिसने उस पर शाही कृपा की। पहले इसका नाम बहाउद्दीन था और यह जैन खाँ का एक सेवक था। जैनखाँ की मृत्यु पर यह तुर्की बंदूकचियों में भर्ती हो गया। यह कार्य करने में बहुत कर्मठ था और इसके साथ एक दल भी था। इसलिए हमने शरण का इसे योग्य पात्र समझा और इसे बर्कंदाज खाँ की पदवी दी। जब हमने बेदौलत को दक्षिण भेजा तब इसे तोपखाने का दारोगा बनाकर उसके साथ भेजा था। यद्यपि आरंभ में इसने अपनी अधीनता के सिर पर शाप का चिह्न लगाया पर अंत में इसने अच्छा किया और ठीक समय पर लौट आया। उसी दिन रुस्तम ने भी, जो उसके मुख्य सेवकों में से एक था और जिस पर उसको पूरा भरोसा था, जब उसका भाग्य पलटा हुआ देखा तब महाबत खाँ से मिल गया। सौभाग्य के मार्ग-प्रदर्शन तथा ईश्वर के भरोसे यह मुहम्मद मुराद बदख्शी तथा अन्य मंसबदारों के साथ उस अभाग्यग्रस्त सेना को छोड़कर प्रसिद्ध शाहजादे की सेवा में आ मिला। बेदौलत के हाथ तथा हृदय इस समाचार को सुनकर बेकार हो गए और वह अपने सभी सेवकों पर शंका करने लगा, विशेषकर अपने साथ के शाही सेवकों पर कृतघ्नता तथा अविश्वास करने लगा। रात्रि में आगे भेजे गए सभी मनुष्यों को बुला लिया और भागने का निश्चय कर घबराहट में नर्मदा पार उतर गया। इसी समय और भी बहुतों ने उससे अलग होने का अवसर पाया और हमारे भाग्यवान पुत्र से आ मिले। प्रत्येक पर उनके पदानुसार कृपा की गई। जिस दिन उसने नर्मदा पार किया उसी दिन महाबतखाँ का एक पत्र ज़ाहिद खाँ के नाम का उसके आदमियों के हाथ में पड़ गया जिसमें मानों उसके पत्र के उत्तर में शाही कृपा की आशा दिलाई गई थी तथा चले आने को लिखा गया था। इस पत्र को

उन्होंने सीधे बेदौलत के पास भेज दिया और उसने जाहिद खाँ पर शंका कर उसको तीन पुत्रों के साथ कैद कर दिया। जाहिद खाँ शुजाअत खाँ का पुत्र है, जो हमारे श्रद्धेय पिता के अमीरों तथा विश्वासपात्र सेवकों में से एक था। हमने इस दुष्ट को पहले की सेवाओं के विचार तथा इसके खानःजाद होने की दृष्टि से आश्रय दिया था और इसे खाँ की पदवी तथा डेढ़ हजारी मंसब देकर बेदौलत के साथ दक्षिण भेजा था। जब हमने कंधार के कार्य के कारण उस प्रांत के अमीरों को बुलाया और यद्यपि शीघ्रता करने का खास फर्मान इसके पास गया पर यह दुष्ट दरबार नहीं आया एवं अपने को बेदौलत का अनुयायी तथा स्वामिभक्त सेवक प्रगट किया। दिल्ली के पास पराजय के अनंतर वह पलटा। यद्यपि उसको परिवार नहीं था पर तब भी उसका सौभाग्य नहीं था कि सेवा में उपस्थित हो या अपने कपाल-पट से लज्जा को धूलि तथा पाप का धब्बा मिटावे। अंत में उसे सत्य बदला लेनेवाले ने इस दिन पकड़ा और उसकी एक लाख तीस सहस्र रूपयों को संपत्ति बेदौलत ने जब्त कर ली।

> जब तूने पाप किया है तब अपने को संकट से दूर न समझ
> क्योंकि बदला प्राकृतिक विधान है।[1]

संक्षेप में, बेदौलत ने शीघ्रता से नर्मदा पार कर कुल नावों को अपनी ओर खिंचवा लिया और सभी उतारों को अपने विश्वासपात्र सेवकों द्वारा सुरक्षित कर अपने बख्शी बैरमबेग को नदी के तट पर विश्वसनीय सेना तथा दक्षिण के बर्गियों के एक दल के साथ छोड़ा। तोपखाने की गाड़ियों को लेकर वह आसीर की ओर तथा बुर्हानपुर को गया। इसी बीच उसके सेवक तकी ने उस संवादाता को पकड़ा जिसे खानखानाँ ने महाबत खाँ के पास भेजा था और उसे बेदौलत

---

१. निजाम के 'खुसरू व शीरीं' मसनवी का एक शैर है।

के पास ले गया। यह शैर आरंभ ही में लिखा हुआ था। अर्थ—

सौ मनुष्य हमें अपनी दृष्टि में रखे हुए हैं।
नहीं हम इस कष्ट से उड़कर चले आते ॥

बेदौलत ने उसे पुत्रों के साथ गृह से बुलवाकर वह पत्र दिखलाया। यद्यपि उसने इस पर कुछ आपत्ति की पर ऐसा कोई उत्तर नहीं था कि सुनने योग्य हो। इसपर उसे दाराब तथा अन्य पुत्रों के साथ रक्षा में रखा और जो बात उसने लिखी थी वही उसके सिर पर घहराई अर्थात् सैकड़ों उसे रक्षा में रखने लगे। इसी समय हमने अपने भाग्यवान पुत्र के सेवक इब्राहीम हुसेन को विजय का समाचार लाने पर, खुश खबर खाँ की पदवी, खिलअत तथा एक हाथी दिया और खवासखाँ के हाथ शाहजादे तथा महाबत खाँ के नाम कृपापूर्ण फर्मान भेजा। इसी के साथ अपने पुत्र के लिए एक बहुमूल्य पहुँची और महाबत खाँ के लिए एक जड़ाऊ तलवार भेजा। महाबत खाँ ने बहुत अच्छी सेवा की थी इसलिए उसका मंसब सात हजारी ७००० सवार का कर दिया।

सैयद सलामत खाँ दक्षिण से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और विशेष कृपा प्राप्त की। दक्षिण में नियत लोगों में से वह भी एक था। जब बेदौलत दिल्ली में परास्त हो जाने के अनंतर मांडू दुर्ग चला गया तब इसने अपने परिवार को स्वतंत्र राज्य में ईश्वर के भरोसे रखकर हमारी सेवा में गुप्त मार्गों से चला आया। रुस्तम सफवी के पुत्र हसन ने बहराइच के फौजदार पद पर अपनी नियुक्ति होने से वहाँ जाने की छुट्टी पाई तब उसका मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ५०० सवार का कर दिया। मुहाफिज़खाने के दारोगा लाल बेग को अपने भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज के पास उसके लिए खास खिलअत तथा नादिरी और महाबत खाँ के लिए एक पगड़ी भेजा। खवास खाँ, जो पहले भेजा

गया था, शुभ समाचार लेकर लौटा तथा सेवा में उपस्थित हुआ। महाबत खाँ के पुत्र खानःजाद खाँ को पाँच हजारी ५००० सवार का मंसब दिया।

इसी समय हमने एक दिन नील गाय का शिकार खेला। अहेर खेलते समय हमने ढाई गज लंबा एक सर्प देखा जिसकी मोटाई तीन बित्ते थी। इसने खरगोश को आधा निगल लिया था और आधा निगल रहा था। अहेरियों ने जब उसे पकड़ लिया और हमारे पास लाए तब खरगोश उसके मुख से गिर गया। हमने आज्ञा दी कि उसे उठाकर फिर उसके मुख में डाल दें पर बहुत परिश्रम करके भी वे न डाल सके यहाँ तक कि उसका मुख फटकर कई टुकड़े हो गया। इसके अनंतर उसका पेट फाड़ने की आज्ञा दी। उसमें से पूरा एक और खरगोश निकल पड़ा। लोग इस प्रकार के सर्प को भारत वर्ष में चीतल कहते हैं और यह इतना बड़ा होता है कि यह पूरे छोटे हिरन को निगल जाता है पर यह विषधर नहीं होता तथा काटता नहीं। इसी अहेर में हमने एक नील गाय मारा जिसके पेट में पूरे दो बच्चे थे। हमने सुना था कि नीलगाय के बच्चों का मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है इसलिए शाही बावर्चियों को 'दो पियाजा' बनाने की आज्ञा दी। वास्तव में बड़ा स्वादिष्ट था।

इलाही महीने शहरिवर की १५ वीं को रुस्तम खाँ, मुहम्मद मुराद तथा बेदौलत के अन्य सेवकगण अपने सौभाग्य के मार्ग-प्रदर्शन से उससे अलग होकर हमारे भाग्यवान पुत्र की सेवा में चले आए थे और आज्ञा मिलने पर वे दरबार आकर तथा देहली चूम कर भाग्यान्वित हुए। रुस्तम खाँ का मंसब बढ़ा कर पाँच हजारी ४००० सवार का और मुहम्मद मुराद का एक हजारी ५०० सवार का करके उन्हें बराबर कृपा बढ़ने की आशा दी। जन्मतः रुस्तम खाँ बदख्शी

है और इसका नाम यूसुफ वेग है। इसका संबंध मुहम्मद कुली इस्फहानी से है, जो मिर्जा सुलेमान का प्रतिनिधि (वकील) तथा मंत्री था। वह पहले सरकारी सेवक था और प्रान्तों में बहुत दिन व्यतीत किए थे। किसी कारण वश जागीर छिन जाने पर वह वेदौलत के पास गया और उसकी सेवा में भर्ती हो गया। शेर के शिकार का इसे बहुत अनुभव था। इसने उसके यहाँ अच्छी सेवा की विशेपकर राणा के कार्य में। वेदौलत ने इसे अपने सेवकों में से चुनकर एक अमीर बना दिया। उस समय उस पर हमारी बहुत कृपा थी इसलिए उसकी प्रार्थना पर हमने इसे खाँ की पदवी तथा झंडा एवं डंका दिया। कुछ दिनों तक यह उसकी ओर से गुजरात का शासन करता रहा और प्रबंध भी बुरा नहीं किया। मुहम्मद मुराद मीर आब मकसूद का पुत्र था, जो मिर्जा सुलेमान तथा मिर्जा शाहरुख के पुराने सेवकों में से था।

इसी दिन सैयद बहवा गुजरात से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। नूरुद्दीन कुली इकतालीस बलवाइयों को बाँध कर दरबार में लिवा लाया, जो अहमदाबाद में कैद किए गए थे। शरजाखाँ तथा काबिल वेग विद्रोहियों के मुखिए थे इसलिए उन्हें मस्त हाथियों के पैर के नीचे डलवा कर मरवा डाला। इसी महीने की २० वीं को जो १८ जीकाद होता है, हमारे पुत्र शहरयार को एतमादुद्दौला की नतनी से एक पुत्री हुई। आशा है कि इसका आगमन साम्राज्य के लिए शुभ होगा। इसी महीने की २२ वीं को सौर तुलादान का उत्सव हुआ और इस प्रार्थी का ५५ वाँ वर्ष प्रसन्नता तथा शुभता के साथ आरंभ हुआ। वार्षिक प्रथानुसार हमने अपने को सुवर्ण तथा मूल्यवान वस्तुओं से तौलवाया और उसे सुपात्रों में वितरित करा दिया। इनमें से शेख अहमद सरहिंदी को दो सहस्र रुपये दिए।

इलाही महीने मेह्र की १ली को मीर जुमला का मंसब बढ़ाकर तीन हजारी ३०० सवार का कर दिया। गुजरात के बख्शी मुनीम को किफायत खाँ की पदवी दी। सर्फराज खाँ की निर्दोषिता हमारी इच्छानुसार प्रमाणित हो गई तब उसे कैद से छुटकारा दिलाकर सेवा में उपस्थित होने की आज्ञा दी। अपने पुत्र शहरयार की प्रार्थना पर हम उसके गृह पर गए। उसने भारी जलसे का आयोजन किया, उचित भेंट दी और बहुत से सेवकों को खिलअतें दीं।

इसी समय हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज के यहाँ से समाचार आया कि बेदौलत बुर्हानपुर की नदी (ताप्ती) पार कर भ्रम की मरुस्थली में टक्कर खाने चला गया। इसका विवरण इस प्रकार है कि जब उसने नर्बदा पार किया और कुल नावों को उस ओर मँगा लिया तथा नदी के किनारों एवं उतारों को तोपों तथा बंदूकों से दृढ़ कर बैरम बेग को बहुत से बलवाइओं के साथ वहीं छोड़कर वह स्वयं आसीर तथा बुर्हानपुर की ओर चला गया। खानखानाँ तथा दाराब को रक्षा में अपने साथ लिवा गया।

अब अपने वर्णन को कुछ आकर्षक बनाने के लिए आसीर के संबंध में कुछ लिखना आवश्यक है। उक्त दुर्ग अपनी ऊँचाई तथा दृढ़ता के लिए हमारी प्रशंसा से वंचित नहीं है। बेदौलत के दक्षिण जाने के पहले यह दुर्ग ख्वाजा फतहुल्ला के पुत्र ख्वाजा नसरुल्ला की अध्यक्षता में था, जो एक खानःजाद तथा पुराने सेवकों में था। इसके अनंतर बेदौलत की प्रार्थना पर यह दुर्ग मीर जमालुद्दीन हुसेन के पुत्र मीर हुसामुद्दीन की रक्षा में दिया गया। नूरजहाँ बेगम के मामा की पुत्री इससे विवाही गई थी इसलिए जब बेदौलत दिल्ली के पास परास्त होकर मालवा तथा माँडू की ओर चला तब नूरजहाँ बेगम ने इसे पत्र लिखा और उस पर यह कहकर जोर डाला कि सावधान

रहो, सहस्र बार सावधान रहो और बेदौलत तथा उसके मनुष्यों को दुर्ग के पास मत आने दो प्रत्युत् दुर्ग के बुर्जों तथा फाटकों को दृढ़ कर अपना कर्तव्य पूरा करो और इस प्रकार कार्य मत करो कि एक सैयद के सिर पर कृपाओं के प्रति कृतघ्नता तथा शाप का धब्बा लगे। वास्तव में उसने दुर्ग को अच्छी प्रकार दृढ़ किया और दुर्ग का प्रबंध ऐसा नहीं था कि बेदौलत का विचार रूपी पक्षी उसकी सीमा तक पहुँच सके या शीघ्र उस पर वह अधिकार कर सके। संक्षेप में जब बेदौलत ने अपने एक सेवक शरीफा को उसके पास भेजा तब प्रतिज्ञाओं तथा धमकियों से शरीफा ने उसे मिला लिया और यह बात निश्चित हुई कि जब हुसामुद्दीन भेजे गए पत्र तथा खिलअत लेने के लिए नीचे आवे तब उसे फिर ऊपर जाने न दिया जाय। वह दुष्ट शरीफा के पहुँचते ही अपने पालन-पोषण तथा मिली हुई कृपाओंकी कुल बातों को भूलकर बिना किसी प्रकार का विरोध किए हुए शरीफा को दुर्ग सौंपकर अपने स्त्री-बच्चों के साथ बेदौलत के पास चला गया, जिसने उसे चार हजारी मंसब, डंका, झंडा तथा मुर्तजा खाँ की पदवी देकर सदा के लिए परलोक तथा इहलोक में शापग्रस्त बना दिया।

जब वह अभागा आसीर दुर्ग के नीचे पहुँचा तब खानखानाँ, दाराब तथा उसके सभी दुष्ट संतानों को लेकर वह दुर्ग में गया और तीन चार दिन तक वहाँ रहकर तथा रसद आदि कुल सामान का प्रबंध ठीककर उसे गोपालदास राजपूत को सौंपा, जो पहले सर बुलंद राय का एक सेवक था और दक्षिण जाने के अनंतर इसकी सेवा में चला आया था। बेदौलतने अपने महल की स्त्रियों तथा अधिक सामान को वहीं छोड़ा और अपनी तीन स्त्रियों, बच्चों तथा कुछ सेविकाओं को साथ लिया। पहले उसने खानखानाँ तथा दाराब को दुर्ग में कैद किया था पर अंत में संमति बदलने पर उन लोगों को साथ लिवाकर

बुर्हानपुर गया। इसी समय लानतुल्ला अप्रतिष्ठा तथा घृणा उठाकर सूरत से आया और उससे मिल गया। कष्ट में पड़कर बेदौलत ने राय भोज हाड़ा के पुत्र सर बुलंदराय को मध्यस्थ मनाया, जो एक वीर राजपूत सेवक है तथा शाही सेवा में है और पत्रों तथा संदेशों से संधि का प्रस्ताव किया। महाबत खाँ ने उत्तर दिया कि जब तक खानखानाँ न आवेगा संधि की बात असंभव है। उसका मुख्य उद्देश्य यही था कि इस प्रकार वह उस कपटियों के प्रधान तथा विद्रोह एवं उपद्रव के सर्दार को उससे (बेदौलत) अलग करे। निरुपाय होकर बेदौलत ने उसे कैद से बाहर निकाला और उससे कुरान का शपथ लेकर अपना संतोष किया। उसे प्रसन्न करने तथा उसके वचनों एवं शपथ को दृढ़ करने के लिए वह उसे महल के भीतर लिवा गया और अपना महरम बनाया। अपनी स्त्री तथा लड़के को उसके सामने लाकर हर प्रकार से उसे रो गाकर समझाया। उसके कहने का सार इस प्रकार था कि 'हम पर कठिन समय आ गया है और हम अपनी प्रतिष्ठा का आपको रक्षक बनाते हैं। ऐसा करें कि हमें अधिक घृणा तथा उपहास का पात्र न बनना पड़े।' खानखानाँ संधि की बातचीत निश्चित करने के लिए बेदौलत से अलग होकर शाही सेना की ओर बढ़ा। यह निश्चित हुआ था कि खानखानाँ नदी के उसी पार रहकर पत्र-व्यवहार से संधि की कुल बातें तै करे। संयोग से खानखानाँ के नदी के किनारे पहुँचने के पहले कुछ वीर सैनिकों तथा उत्साही युवकों ने एक रात्रि में एक अवसर पाया और जहाँ विद्रोही असावधान थे वहीं वे पार हो गए। यह समाचार पाकर उनके साहस का स्तंभ हिल गया और बैरम बेग दृढ़ नहीं रह सका और न इन्हें भगाने का साहस कर सका। जब तक वह इस घबराहट में पड़ा रहा तब तक बहुत से लोग नदी पार कर गए और उसी रात्रि में अभागे विद्रोहीगण एक दूसरे से अलग होकर

( )

भाग खड़े हुए । शाही सौभाग्य से खानखानाँ विचार में पड़ गया और न वहीं ठहर सका न आगे बढ़ सका । इसी समय हमारे भाग्यवान पुत्र के पत्र उसे मिले जिसमें धमकी तथा आशा दी गई थी । खानखानाँ ने बेदौलत की हालत में निराशा तथा दुर्दशा ही देखी और महाबतखाँ की मध्यस्थता में हमारे भाग्यवान पुत्र की सेवा में चला आया। बेदौलत ने खानखानाँ के चले जाने, विजयी सेना के नर्मदा पार उतर आने और बैरम बेग के भागने का समाचार सुना और साहस छोड़कर बढ़ी हुई ताप्ती को वर्षा के वेग के रहते हुए घबड़ाहट में पार किया तथा दक्षिण की ओर चला गया । इस उपद्रव में बहुत से शाही सेवक तथा उसके निजी सेवकगण प्रसन्नता से या अप्रसन्नता से अलग हो गए और साथ नहीं गए । जादो राय तथा ऊदाराम और आतिश खाँ के देश उसी मार्ग पर पड़ते थे इसलिए उन सबने कुछ पड़ावों तक साथ जाना उचित समझा पर जादोराय उसके पड़ाव में नहीं गया और एक पड़ाव पीछे रहकर चलता रहा । मनुष्यगण जो सामान घबड़ाहट तथा जीवन के भय से छोड़ते जाते थे उसे वह अधिकृत करता जाता था । जिस दिन बेदौलत नदी (ताप्ती) के उस पार से भागा उसी दिन उसने अपने एक निजी सेवक जुल्फिकार खाँ तुर्कमान के द्वारा सर बुलंद खाँ अफगान के पास बुलाने को समाचार भेजा और संदेश कहलाया कि उसे ज्ञात होता है कि वह साहस तथा उसके वचनों की पूर्ति के विरुद्ध है कि उसने अबतक नदी पार नहीं किया है । 'स्वामिभक्ति मनुष्यों की शोभा है, तुम्हारे स्वामिद्रोह के समान किसी अन्य के द्रोह ने हम पर प्रभाव नहीं डाला है ।' सर बुलंद नदी के किनारे घोड़े पर सवार होकर खड़ा था जब जुल्फिकार खाँ ने पहुँच कर यह संदेश दिया । सर बुलंद ने ठीक उत्तर नहीं दिया और ठहरे या जाय इसी सोच-विचार में पड़ा था । इसी विचार में तथा भर्त्सना की दृष्टि से उसने जुल्फिकार से घोड़े की बाग

छोड़ देने के लिए कहा। जुल्फिकार ने तलवार खींचकर उसकी कमर पर मारा। ठीक इसी संकट में एक अफगान ने अपना छोटा भाला, जिसे हिंदुस्तान के लोग बर्छा कहते हैं, बीच में डाल दिया जिससे तलवार की चोट बर्छे के दंड पर पड़ी और सर बुलंद के कमर तक नहीं पहुँची। जब तलवारें खिंच गईं तब अफगानों ने जुल्फिकार पर आक्रमण कर उसे काट डाला। सुलतान मुहम्मद कोषाध्यक्ष का पुत्र, जो बेदौलत का खिदमतगार था, मित्रता के कारण उसके साथ बिना आज्ञा के चला आया था और वह भी मारा गया।

संक्षेप में, जब उसके बुर्हानपुर छोड़ने तथा विजयी सेना के उस नगर के पास पहुँचने का समाचार आया तब हमने खवास खाँ को शीघ्रता के साथ अपने राजभक्त पुत्र के पास भेजा और उसे दृढ़ आदेश भेजा कि वह किसी प्रकार प्रयत्नों में ढिलाई न करे और उसे या तो जीवित पकड़ ले या शाही साम्राज्य के बाहर निकाल दे। यह कहा जाता था कि यदि इस ओर उसकी अवस्था नहीं सँभली तो संभव है कि वह कुतुबुलमुल्क के राज्य से होकर उड़ीसा तथा बंगाल चला जाय। ऐसा भी युद्धीय कौशल की दृष्टि से था। इसलिए सतर्कता के लिए, जो सम्राट् के लिए उचित है, हमने मिर्जा रुस्तम को इलाहाबाद का प्रांताध्यक्ष नियत कर वहाँ भेजा कि यदि वैसी घटना घटित हो तो उसका उचित प्रबंध करे।

इसी समय हमारा 'फर्जंद' खानजहाँ मुलतान से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसने एक सहस्र मुहर, एक लाख रुपए का एक लाल, एक मोती तथा अन्य रत्न भेंट दिए। हमने रुस्तम खाँ को एक हाथी दिया। इलाही महीने आबाँ की ६वीं को खवास खाँ शाहजादे तथा महाबत खाँ के यहाँ से समाचार लेकर आया कि जब हमारा पुत्र बुर्हानपुर पहुँचा तब वर्षा की अधिकता के कारण बहुत से मनुष्य पीछे

रह गए थे पर तब भी आज्ञानुसार उसने बिना रुके नदी पार किया और बेदौलत का पीछा करने लगा। बेदौलत भी यह भयानक समाचार सुनकर भागता चला गया। वर्षाधिक्य से कीचड़ बहुत हो जाने से तथा निरंतर कूच करते रहने से उसके लद्दू पशुगण थक गए थे। यदि कोई सामान छूट जाता था तो उसकी जाँच नहीं की जाती थी और वह, उसके पुत्र तथा अनुयायीगण अपने प्राणों को बचा लेना ही सौभाग्य समझते थे तथा अपने सामान की चिंता नहीं करते थे। सौभाग्यशाली सेना भाँगर दर्रे से नीचे उतरकर अनकोट पर्गना तक पीछा करती चली गई, जो बुर्हानपुर से चालीस कोस पर है। बेदौलत इसी अवस्था में माहूर दुर्ग पहुँच गया और जब उसे ज्ञात हुआ कि जादोराय, ऊदाराम तथा दक्खिनो उसके साथ अब आगे न जायँगे तब उसने उनका असम्मान न कर चले जाने दिया। दुर्ग में उदैराम के यहाँ भारी हाथियों को सामान सज्जा आदि के साथ छोड़कर वह स्वयं कुतुबुल्मुल्क के राज्य की ओर चल दिया। जब उसके शाही साम्राज्य को छोड़कर चले जाने का निश्चय हो गया तब हमारा भाग्यवान् पुत्र महाबतखाँ तथा अन्य राजभक्तों की सहमति से उस पर्गने से लौटा। इलाही महीने आबाँ की १ ली को वह बुर्हानपुर पहुँच गया। कृपापूर्ण फर्मान के साथ राजा सारंग देव हमारे पुत्र के पास भेजा गया।

कासिमखाँ का मंसब बढ़ाकर चार हजारी २००० सवार का कर दिया। काबुल के बख्शी मीरक मुईन को महाबतखाँ की प्रार्थना पर खाँ की पदवी दी। अलिफखाँ कियामखानी पटना प्रांत से आकर सेवा में उपस्थित हुआ और काँगड़ा दुर्ग की अध्यक्षता पर नियत हुआ। हमने उसे एक झंडा दिया। इलाही महीने आजर की १ ली को बाकी खाँ जूनागढ़ से आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

बेदौलत के कार्य से सुचित्त होने पर और हिंदुस्थान की गर्मी के हमारे शरीर के अनुकूल न होने के कारण उस महीने की २ री को, जो १म सफर महीना होता है, हमारा पड़ाव अजमेर से कश्मीर के रमणीक मैदानों में भ्रमण करने तथा अहेर खेलने के लिए बाहर निकला। इसके पहले हमने साम्राज्य के प्रधान आसफखाँ को बंगाल का प्रांताध्यक्ष नियत कर वहाँ जाने की आज्ञा दे दी थी। हमें उसका सत्संग बहुत पसंद था, वह अन्य सेवकों से योग्यता सुप्रकृति तथा कौशल में बहुत बढ़चढ़कर था, एवं हर प्रकार के शील-व्यवहार में अद्वितीय था इसलिए उससे अलग रहने में हमें शोक हुआ तथा हमने उस इच्छा को स्थगित रखकर अपने पास बुला भेजा।[1] यह आज ही के दिन आया और सेवा में उपस्थित हुआ। राणा कर्ण के पुत्र जगतसिंह को अपने देश जाने के लिए छुट्टी मिल गई और उसे खिलअत तथा एक जड़ाऊ खंजर दिया गया। राजा सारंगदेव हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज तथा मदारुस्सलतनत महाबतखाँ के यहाँ से समाचार लेकर आया और देहली चूमी। यह लिखा हुआ था कि बेदौलत के कार्य से उनके मन अब सुचित्त हो गए हैं और दक्षिण के शासकगण इच्छा से या अनिच्छा से अधीनता तथा आज्ञाकारिता के कर्तव्य पूरे कर रहे हैं। अब शाहन्शाह प्रसन्न मन से इस ओर से सुचित्त रहकर अहेर या यात्रा में अपने साम्राज्य में जहाँ इच्छा करें या जहाँ का जलवायु उनके स्वास्थ्य के लिए हितकर हो आनंद से व्यतीत करें।

---

१. इकबालनामा पृ० २१३ पर नूरजहाँ के भाई की जुदाई के कारण बुलाना लिखा गया है पर वास्तव में कारण राजनीतिक था। शाहजहाँ के उड़ीसा-बंगाल जाने की खबर थी और आसफखाँ के अपने दामाद का पक्ष ले लेने की विशेष संभावना थी इसलिए इसकी बंगाल की नियुक्ति तोड़कर जहाँगीर ने अपने पास बुला लिया।

महीने की २० वीं को मिर्जा वली सिरोंज से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। हकीम मोमिना का मंसब बढ़ाकर एक हजारी कर दिया। खानजहाँ का पुत्र असालत खाँ आज्ञानुसार गुजरात से आया और अभिवादन करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसी समय दक्षिण के बख्शी अकीदतखाँ के यहाँ से समाचार आया कि राजा गिरिधर मारा गया। इस घटना का विवरण इस प्रकार है कि सैयद कबीर बारहा के एक भाई ने, जो हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज का एक सेवक था, अपनी तलवार एक लोहार को तेज करने तथा धार बनाने के लिए दिया था, जिसकी दूकान राजा गिरिधर के गृह के पास थी। दूसरे दिन जब वह तलवार ले जाने के लिए आया तो कार्य के पारिश्रमिक के संबंध में बातचीत होने लगी जिसमें सैयद के आदमियों ने लोहार को छड़ी से कई चोट मारी। राजा के आदमियों ने उसका पक्ष लेकर उन्हें कोड़ों से पीटा। संयोग से बारहा के दो तीन युवक सैयदों का भी निवास वहीं पास में था और वे उपद्रव सुनकर उक्त सैयद की सहायता को पहुँच गए। इस प्रकार झगड़ा बढ़ गया और सैयदों तथा राजपूतों में लड़ाई छिड़ गई और तीर-तलवार चलने लगे। सैयद कबीर यह सुनकर तीस-चालीस सवारों के साथ सहायता को आया। इस समय राजा गिरधर कुछ राजपूतों तथा अपनी जातिवालों के साथ हिंदुओं की प्रथानुसार नंगे शरीर बैठे भोजन कर रहे थे। सैयद कबीर के आने का तथा सैयदों के उपद्रव का समाचार पाकर उसने अपने आदमियों को घर में बुला लिया और दृढ़ता से फाटक बंद करवा लिया। सैयदगण फाटक में आग लगाकर भीतर घुस गए और ऐसी मारकाट की कि राजा गिरिधर छब्बीस सेवकों के साथ मारा गया तथा अन्य चालीस घायल हो गए। चार सैयद भी मारे गए। राजा गिरिधर के

मारे जाने पर सैयद अपने घोड़ों को निकलवाकर सवार हो घर लौट आया। राजा गिरिधर के मारे जाने का समाचार पाकर राजपूत सर्दारगण अपने अपने गृहों से सवार होकर बहुत संख्या में आ पहुँचे और सैयद कबीर की सहायता को भी बारहा के सभी सैयद आ गए। दुर्ग के बाहर मैदान में सभी जम गए और उपद्रव तथा अशान्ति की आग भड़कने लगी तथा यह उपद्रव बहुत अधिक बढ़ने के पास आ गया। महाबत खाँ इसकी सूचना पाते ही सवार होकर वहाँ गया और सैयदों को दुर्ग के भीतर लिवा जाकर तथा राजपूतों को अवसर के अनुकूल शान्त करके उनके कुछ मुखियों को साथ लेकर खानआलम के गृह पर गया जो पास ही था। उसने उन लोगों को अच्छी प्रकार समझा कर शांत किया तथा इस कार्य की जाँच करने का वचन दिया एवं इसके लिए ओल हुआ। जब यह समाचार शाहजादे ने सुना तब वह भी खानआलम के निवासस्थान पर गया तथा उसने भी राजपूतों को समय के अनुसार बहुत समझा कर उन्हें अपने अपने घर भेज दिया। दूसरे दिन महाबत खाँ राजा गिरिधर के गृह पर गया और उसके पुत्रों को सान्त्वना दी तथा शोक प्रकट किया। उसने बहाने से सैयद कबीर को पकड़वा कर कैद कर दिया। राजपूतगण बिना उसके प्राणदंड के शांत नहीं हो सकते थे इसलिए कुछ दिन बाद उसे मरवा डाला।

२३ वीं को हमने मुहम्मद मुराद को अजमेर का फौजदार नियत कर वहाँ भेज दिया। इस मार्ग पर हमने बराबर अहेर का आनंद उठाया। एक दिन अहेर खेलते हुए हमें 'तूयगून' तीतर दिखलाई पड़ा, जिसे हमने अभी तक नहीं देखा था और हमने उसे बाज द्वारा पकड़ लिया। संयोग से जिस बाज ने उसे पकड़ा वह भी तूयगून था। हमने जाँच कर देखा कि काले तीतर का मांस श्वेत तीतर से अच्छा

होता है और बड़े बूदना का मांस जिसे हिन्दुस्तान के लोग घागर कहते हैं, साधारण तीतर से अच्छा होता है, जो लड़नेवाला होता है। हमने बकरी के मोटे बच्चे तथा भेड़ के माँसों की तुलना की तो बकरी के बच्चे का अधिक स्वादिष्ट पाया। जाँच करने की दृष्टि से हमने दोनों का मांस एक ही प्रकार से पकवाया जिसमें ठीक-ठीक तौर से इसका पता लग सके। इसी कारण हमने यहाँ इसे लिखा है।

दै महीने की १० वीं को रहीमाबाद पर्गना के पास शेर के होने का समाचार अहेरीगण ले आए। हमने इरादत खाँ तथा फिदाई खाँ को आज्ञा दिया कि वे कुछ रखवालों को लेकर जंगल को घेर लें और हम हाथी पर सवार होकर उनके पीछे गए तथा शिकार के पास चले। वृक्षों की अधिकता तथा जंगल के घने होने से वह अच्छी प्रकार दिखलाई नहीं पड़ता था। हाथी को आगे बढ़ाने पर शेर का बगल दिखलाई पड़ने लगा और हमारी एक गोली लगने से वह गिर पड़ा और मर गया। हमने अपने शाहजादगी के काल से अबतक जितने शेरों का शिकार किया है उनमें से कोई भी इतना भारी, भव्य तथा सुगठित शरीरवाला नहीं देखा था। हमने चित्रकारों को उसके पूरे कद के शरीर का चित्र बनाने की आज्ञा दी। यह तौल में साढ़े आठ मन जहाँगीरी था और लंबाई सिर से पूछ के अंत तक साढ़े तीन हाथ दो तसू था।

१६ वीं को सूचना मिली कि आगरा का अध्यक्ष मुमताज खाँ मर गया। पहले यह खानजमाँ के भाई बहादुर खाँ की सेवा में था। उन लोगों के मारे जाने पर इसने हमारे श्रद्धेय पिता की सेवा कर ली। जब हम इस लोक में आए तब उन श्रद्धेय ने कृपापूर्वक इसे हमारे कार्यों का नाजिर नियत कर दिया। छप्पन वर्ष तक इसने सचाई तथा उत्साह के साथ हमें प्रसन्न रखते हुए सेवा की और कभी

उसकी ओर से हमारे हृदय पर तनिक भी मालिन्य नहीं आया। उसकी सेवाओं की अच्छाई लिखने के लिए एक लेखक से अधिक की आवश्यकता पड़ेगी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर उसे अपने दया-सागर में स्थान दें।

मुकर्रबखाँ को जो पुराना कर्मचारी है, आगरा के शासन तथा प्रबंध पर नियत कर वहाँ जाने की आज्ञा दी। फतहपुर के पास में मुकर्रमखाँ और उसका भाई अब्दुस्सलीम सेवा में उपस्थित हुए। २२वीं को चांद्र तुलादान का उत्सव मथुरा नगर में हुआ और हमारी अवस्था का ५७वाँ वर्ष प्रसन्नता के साथ आरंभ हुआ। मथुरा में हम नाव पर सवार होकर दर्शनीय स्थानों को देखने तथा अहेर खेलने गए। मार्ग में अहेरियों ने सूचना दी कि एक शेरनी तीन बच्चों के साथ दिखलाई पड़ी है। नाव से उतर कर हम अहेर खेलने गए। बच्चे छोटे थे इसलिए उन्हें हाथों से पकड़ने की आज्ञा देकर उनकी माँ को गोली से मारडाला। इसी समय हमें सूचित किया गया कि जमुना नदी के उस पार के कृषकों तथा ग्रामीणों ने चोरी डकैती करना नहीं छोड़ा है और घने जंगलों की आड़ तथा दुर्गम दृढ़ स्थानों के कारण निर्भयता से तथा हठपूर्वक जमींदारों को कर नहीं देते। हमने खानजहाँ को आज्ञा दी कि मंसबदारों को एक सेना ले जाकर उन्हें आदर्श दंड दे और उन्हें मार कर, कैद कर तथा लूटकर उनके दृढ़ स्थानों को तोड़-फाड़कर मिट्टी में मिला दे एवं उनके उपद्रव तथा झगड़ों के काँटों के झंखाट को जड़ से उखाड़ फेंके। दूसरे दिन सेना नदी पार उतरी और उन पर घोर आक्रमण किया। उन सब को भागकर निकल जाने का अवसर नहीं मिला इसलिए वे साहस के साथ युद्ध करने के लिए दृढ़ता से जम गए। उनमें से बहुत से मारे गए, स्त्रियाँ-बच्चे कैद हुए और विजयी सेना के हाथ बहुत लूट आई।

१म वहमन को रुस्तम खाँ को कन्नौज सरकार का फौजदार नियत कर वहाँ भेज दिया। २री को हकीम नूरुद्दीन तेहरानी के पुत्र अब्दुल्ला को अपने सामने प्राणदंड दिलवाया। इस संक्षिप्त बात का विवरण इस प्रकार है कि जब ईरान के शासक ने इसके पिता को धन-संपत्ति रखने की शंका में (शिकंजे में) कष्ट दिया तब यह फारस से भागा और सैकड़ों कष्ट तथा दुःख उठाता हुआ हिंदुस्थान आया। एतमादुद्दौला के आश्रय में इसे दरबार के सेवकों में भर्ती होने का अवसर मिल गया। सौभाग्य के सहारे थोड़े ही दिनों में यह प्रसिद्ध हो गया और उन लोगों में जो हमारी पास की सेवा में रहते थे परिगणित हो गया। इसे पाँच सदी मंसब तथा अच्छी जागीर भी मिल गई परंतु यह छोटी योग्यता का मनुष्य था इसलिए इतनी संपत्ति को सहन (संतोप) न कर सका और कृतघ्नता तथा अकृतज्ञता प्रगट करते हुए अपने स्वामी एवं शाह के प्रति कुवाच्य कहने लगा। इसी समय हमें बार-बार सूचना मिली कि ज्यों-ज्यों हमारी कृपा उस पर बढ़ती गई उतना ही अधिक वह कृतघ्न हमें कुवाच्य कहने लगा। जब हम अपनी कृपाओं का ध्यान करते तो हमें इन बातों पर विश्वास नहीं होता था पर अंत में जब हमने निष्पक्ष तथा निस्वार्थ मनुष्यों से यही बातें सुनीं जो उसने जलसों तथा बहुतों के सामने हमारे संबध में कुवाच्य कहे थे तब यह प्रमाणित हुई और इस पर हमने उसे अपने सामने प्राणदंड दिलवाया।

मिसरा—

लाल जिह्वा तथा हरा सिर बर्बाद कर देता है।

अहेरियों ने सूचना दी कि पास में एक शेरनी है जिसके उपद्रव से यहाँ के निवासीगण बड़े दुखित हैं। हमने फिदाई खाँ को हाथियों को ले जाकर जंगल घेर लेने की आज्ञा दी। हम भी सवार होकर उसके

पीछे जंगल में पहुँच गए। वह शीघ्र ही दिखलाई पड़ गई और हम ने एक ही गोली में उसका कार्य समाप्त कर दिया। हम एक दिन अहेर का आनंद ले रहे थे और बाज के द्वारा एक काले तीतर को पकड़ा। हमने अपने सामने उसके पेट को चीरने की आज्ञा दी। उसने एक समूचा चूहा निगला था वह उसमें से निकल आया जो अब तक पचा नहीं था। हमको बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके गले की नली पतली है तब भी वह कैसे समूचा चूहा निगल गया। यदि कोई यह बात कहता तो हम विश्वास कभी न करते यह निश्चित है। इसे हमने स्वयं देखा है इसलिए यहाँ वैचित्र्य के कारण लिख दिया है। उस महीने की ६वीं को दिल्ली पहुँच गए।

राजा बासू का पुत्र जगतसिंह बेदौलत के संकेत पर पंजाब के उत्तरी पार्वत्यस्थान में चला गया था, जो उसका पैतृक निवासस्थान था और वहाँ उसने उपद्रव आरंभ कर दिया था इसलिए हमने सादिक खाँ को उसे दमन करने के लिए नियत किया था, जैसा पहले लिखा जा चुका है। इसी समय उसके छोटे भाई माधोसिंह को हमने राजा की पदवी, एक घोड़ा तथा खिलअत दिया और उसे सादिक खाँ के पास जाने तथा विद्रोहियों पर आक्रमण करने की आज्ञा दी।

दूसरे दिन हम नगर के पास से आगे बढ़े और सलीमगढ़ में उतरे। राजा किशनदास का गृह मार्ग में था और उसने बहुत प्रयत्न किए तथा प्रार्थना की इसलिए उसके निमंत्रण पर हम उसके गृह पर गए और उस पुराने सेवक की इच्छा पूरी की। उसकी कुछ भेंट उसे प्रसन्न करने के विचार से हमने स्वीकार कर ली। २० वीं को सलीम-गढ़ से हमने कूच किया और सैयद बहवा बुखारी को दिल्ली का शासन सौंपा, जो उसका साधारण निवासस्थान है। वास्तव में वह

यह कार्य अच्छी प्रकार कर चुका है और हमने उसे ऊँचा मंसब दिया है।

इसी समय तिब्बत के शासक अलीराय का पुत्र अली मुहम्मद अपने पिता की आज्ञा से दरबार आकर सेवा में उपस्थित हुआ। यह स्पष्ट था कि अलीराय इस पुत्र के प्रति विशेष स्नेह रखता था और अपनी अन्य संतानों से बढ़कर प्रेम करता था। वह इसे अपना उत्तराधिकारी भी बनाना चाहता था इसलिए अन्य भाई इससे द्वेष करते थे और उनमें आपस में झगड़ा भी होता था। अलीराय के पुत्र अब्दाल ने, जो उसकी संतानों में सबसे बड़ा था, इसी ईर्ष्या के कारण काशगर के खाँ की शरण ली और उसे अपना पृष्ठ-पोषक बनाया, जिससे जब अलीराय मरे, जो बहुत वृद्ध तथा लुंज हो गया है, तो उसकी सहायता से वह तिब्बत का शासक बन जाय। अलीराय ने यह शंका कर कि सब भाई अलीमुहम्मद पर आक्रमण कर देंगे और उसके देश में बड़ा उपद्रव मचेगा इसलिए उसने इसे दरबार भेज दिया कि यह इसी दरबार के आश्रय में रहे और अपनी सेवा तथा दरबार की कृपा से उन्नति करता रहे।

इलाही महीने इस्फंदारमुज की १९ वीं को हम परगना अंबाला में उतरे। इमामवर्दी का पुत्र लश्करी, जिसने बेदौलत के यहाँ से भाग आकर हमारे भाग्यवान पुत्र शाह पर्वेज की सेवा स्वीकार कर ली थी, इसी दिन दरबार आकर सेवा में उपस्थित हुआ। हमारे पुत्र तथा महाबत खाँ के यहाँ से सूचना आई जिसमें आदिलखाँ की सेवा की इच्छा तथा उसके लिए संस्तुति भी लिखी हुई थी। इसके साथ आदिलखाँ का पत्र भी था जिसे उसने महाबतखाँ को भेजा था और जिसमें उसने अपनी अधीनता तथा राजभक्ति प्रगट की थी। लश्करी को हमने पुनः शाह पर्वेज के पास भेज दिया और उसके हाथ शाहजादे के लिए खास

खिलअत तथा मोती के बटन टँकी हुई नादिरी एवं खानआलम तथा महावतखाँ के लिए खिलअतें भेजीं। अपने पुत्र की प्रार्थना पर हमने आदिलखाँ को एक अत्यंत कृपापूर्ण फर्मान तथा नादिरी सहित खिलअत भेजा। हमने आज्ञा दी कि वे यदि उचित समझेंगे तो उक्त वस्तु को आदिलखाँ के पास भेजेंगे।

५वीं को हम सहरिंद के बाग में ठहरे। व्यास नदी के किनारे सादिकखाँ, मुख्तारखाँ, इस्फंदियार, ग्वालिअर का राजा रूपचन्द तथा अन्य अमीरगण, जो उसकी सहायता पर नियत हुए थे उत्तरी पार्वत्य देश में शांति स्थापित कर दरबार चले आए और सेवा में उपस्थित हुए। संक्षेप में विवरण इस प्रकार है कि बेदौलत के कहने पर जगतसिंह उक्त पहाड़ी स्थान में जाकर विद्रोह तथा अशांति मचाने लगा था। इस कारण कि वहाँ मैदान खाली था वह दुर्गम पहाड़ों तथा दर्रों को पार कर कृषकों पर धावा करते तथा लूटते चला गया और सादिकखाँ के पहुँचने तक उनपर अत्याचार करता रहा। सादिक खाँ ने भय से तथा आशा दिलाकर जमींदारों को अपने अधीन कर लिया और इस दुष्ट को दमन करने का प्रयत्न करने लगा। जगतसिंह मऊ दुर्ग को दृढ़ कर उसकी रक्षा में रहने लगा। जब वह अवसर देखता तब दुर्ग से निकल कर शाही सेवकों से युद्ध करता। अंत में उसका सामान चुक गया और अन्य जमींदारों से सहायता मिलने की आशा नहीं रह गई। छोटे भाई को राजा की पदवी का मिलना भी उसके लिए अशांति तथा चिंता का विषय हो गया। निरुपाय होकर उसने नूरजहाँ बेगम की शरण ली और रक्षा की प्रार्थना करने लगा तथा लज्जा एवं पश्चात्ताप प्रगट करते हुए उसकी मध्यस्थता में क्षमा याचना की। बेगम को प्रसन्न करने के लिए उसके दोषों के लेखों पर क्षमा की लेखनी दौड़ा दी गई।

इसीदिन दक्षिण के राजकर्मचारियों के यहाँ से सूचना आई कि

वेदौलत लानतुल्ला, दाराब तथा अन्य दुष्टों के साथ, जिनके डैने तथा पर टूट गए हैं, बड़ी बुरी हालत में अपना मुख काला कर कुतुबुलमुल्क के राज्य की सीमा से निकल कर उड़ीसा-बंगाल की ओर चला गया है। इस यात्रा में उसको तथा उसके साथियों की बड़ी हानि हुई, जिनमें से बहुत से अवसर पाते ही नंगे सिर तथा पैरों से और प्राणों की आशा छोड़कर भाग गए। एक दिन इनमें से एक उसके दीवान अफजलखाँ का पुत्र मिर्जा मुहम्मद अपनी माता तथा परिवार के साथ मार्ग से भाग गया। जब इसका समाचार वेदौलत को मिला तब उसने जाफ़र तथा खान कुली उजबेग एवं अपने कुछ विश्वसनीय मनुष्यों को उसके पीछे भेजा कि यदि वे उसे जीवित पकड़ लावें तो अच्छा ही है नहीं तो उसका सिर काट कर उसके सामने ले आवें। वे वेग से उसके पीछे दौड़े और मार्ग ही में उसे जा पकड़ा। इसे जानकर उसने अपनी माँ तथा परिवार को जंगलों में भेजकर छिपा दिया और स्वयं युवकों के एक दल के साथ जिन पर उसे पूरा भरोसा था दृढ़ता के साथ युद्ध के लिए धनुष लेकर डट गया। इनके सामने एक नहर तथा दलदल था। सैयद जाफरखाँ चाहता था कि उसके पास पहुँच कर तथा कपट से फँसाकर उसे साथ लिवा जाय परंतु इसने धमकी देकर तथा आशाएँ दिलाकर उसे वाध्य करने का जितना प्रयत्न किया सब निष्फल गया और उसने प्राणहारी तीरों ही से उत्तर दिया। उसने खूब युद्ध किया और वेदौलत के खानकुली आदि बहुत से मनुष्यों को नर्क भेज दिया। सैयद जाफर भी घायल हुआ। अंत में मिर्जा मुहम्मद भी बहुत घायल हो गया और प्राण-धन को जुए में गँवा दिया। जब तक उसको स्वाँस चली तबतक उसने बहुतों का स्वाँस हरण कर लिया। उसके मारे जाने पर लोग उसका सिर काटकर वेदौलत के पास ले गए।

जब वेदौलत दिल्ली के पास परास्त हुआ और मांडू गया तब

उसने अफजल खाँ को आदिल खाँ के पास उससे तथा दूसरों से सहायता पाने के लिए भेजा और उसके हाथ आदिल खाँ के लिए बाजूबंद तथा अंबर के लिए एक घोड़ा, एक हाथी तथा एक जड़ाऊ तलवार भेजा। वह पहले अंबर के पास गया। संदेश कहने के अनंतर उसने वह सब पेश किया जो बेदौलत ने उसके लिए दिया था पर अंबर ने कुछ स्वीकार नहीं किया और कहा कि वह आदिल खाँ का सेवक है, जो इस समय दक्षिण के शासकों का अग्रणी है, इसलिए उसे पहले उसके पास जाना चाहिए और अपनी बात समझाना चाहिए। यदि वह स्वीकार कर लें तो उसका सेवक भी सम्मिलित होकर आज्ञा मानेगा और तब जो भेजा जायगा वह ले लिया जायगा। अफजल खाँ आदिल खाँ के पास गया, जिसने उसका कुस्वागत किया और बहुत समय तक नगर के बाहर रहने दिया तथा उसके कार्य पर ध्यान ही नहीं दिया प्रत्युत् यथाशक्ति अपमान ही किया। परंतु गुप्त रूप से बेदौलत ने जो कुछ उसके तथा अंबर के लिए भेजा था उसका पता लगाकर मँगवा लिया। अफजल खाँ वहीं था जब उसने अपने पुत्र के मारे जाने तथा परिवार के नष्ट होने का समाचार सुना और बड़ी दुरवस्था में पड़ गया।

संक्षेप में बेदौलत ने अपने सौभाग्य तथा शुभता के रहते लंबी दूर की यात्रा स्वीकार की और मछलीपत्तन बंदर पर पहुँचा, जो कुतुबुल् मुल्क के राज्य में है। उस स्थान पर पहुँचने के पहले उसने अपने आदमी कुतुबुल्मुल्क के पास भेजकर सहायता तथा सहयोग की याचना की। कुतुबुल्मुल्क ने कुछ धन तथा सामान सहायतार्थ भेज दिया और सीमा के रक्षक को लिख दिया कि उसे अपने राज्य से कुशलता पूर्वक चले जाने दे तथा अन्न-विक्रेता एवं जमींदारों को उत्साहित करे कि उसके पड़ाव की आवश्यक वस्तुएँ बेचें।

२७ वीं को एक विचित्र घटना घटी। अहेर स्थल से लौटकर

हम रात्रि में पड़ाव पर आए। संयोग से हमने एक छोटी नदी पार की जिसका तल पथरीला था और प्रवाह बड़े वेग का था। शरबतखाने का एक सेवक अहेरियों के उपयुक्त सामान लिए था। थाली सोने की उसके हाथ में थी जिसमें एक कंटर तथा पाँच प्याले थे। इन प्यालों पर ढक्कन थे और सब एक सूती थैले में रखा था। जब वह पार कर रहा था तब उसका पैर फिसला और थाली उसके हाथ से गिर गई। पानी गहरा तथा तेजी से बह रहा था इसलिए कितना भी प्रयत्न किया और हाथ पैर मारा पर कुछ पता न लगा। दूसरे दिन यह वृत्तांत हम से कहा गया तब हमने अहेरियों तथा मल्लाहों को उस स्थान पर जाकर सावधानी से खोजने की आज्ञा दी कि स्यात् मिल जावे। संयोग से जिस स्थान पर वह गिरा था वहीं मिल गया और विचित्रता यह कि वह उलटा तक नहीं हुआ था और न एक बूँद पानी प्यालों में गया था। यह बात ठीक वैसी ही थी जैसी हादी के खिलाफत के तख्त पर बैठने के समय हुआ था। हारूँ को लाल की एक अँगूठी पिता से रिक्थक्रम में मिली थी। हादी ने एक दास हारूँ के पास भेजकर उसे मँगवाया। ऐसा हुआ कि उस समय हारूँ दजला नदी के किनारे बैठा हुआ था। दास ने जब वह संदेश कहा तब उसने क्रुद्ध होकर कहा कि हमने तुझे खिलाफत ले लेने दिया और तू हमें एक अँगूठी नहीं रखने देता। इसी क्रोध में उसने अँगूठी दजला नदी में फेंक दी। कई महीने के बाद हादी की मृत्यु हो गई और हारूँ खलीफा हुआ। उसने पनडुब्बों को उस स्थान पर अँगूठी खोजने के लिए कहा जहाँ उसने उसे फेंका था। संयोग से तथा सौभाग्य की सहायता से पहली ही डुबकी में अँगूठी मिल गई और लाकर हारूँ के हाथ में रख दी गई।

इसी समय एक दिन शिकारगाह में प्रधान अहेरी इमामवर्दी एक तीतर हमारे सामने ले आया जिसके एक पैर पर काँटा था पर

दूसरे पर नहीं। नर-मादा की पहिचान इसी काँटे से होती है इसलिए उसने जाँचने के तौर पर पूछा कि यह नर है या मादा। हमने तुरंत कह दिया कि मादा है। जब उसे चीरा गया तो एक अंडा उसके पेट से निकला। जो लोग उस समय सेवा में उपस्थित थे आश्चर्य के साथ पूछने लगे कि किस चिह्न से यह पता लग गया। हमने कहा कि नर के सिर तथा चोंच से मादा का छोटा होता है। जाँच करने तथा पक्षियों को बराबर देखने से हमने यह अनुभव प्राप्त किया है। यह एक विचित्र बात है कि सभी पशु-पक्षी में गले की नली, जिसे तुर्क हलका कहते हैं, गले से पेट तक एक ही होती है पर जुर्ज में इससे भिन्न होता है। जुर्ज में गले से चार अंगुल तक एक ही नली होती है और उसके अनतर दो शाख होकर पेट तक चली जाती है। जिस स्थान पर यह नली दो हो जाती है वहाँ एक रुकावट होती है और वह गाँठ हाथ से मालूम हो जाती है। कुलंग में अधिक विचित्र होता है। इसमें गले की नली टेढ़ी मेढ़ी छाती की हड्डियों के बीच से होती रीढ़ के अंत तक जाती है और तब वहाँ से घूमकर आती तथा गले से मिल जाती है। जुर्ज दो प्रकार का होता है, एक धब्बेदार काला तथा दूसरा हलके काले रंग का। अब हमें ज्ञात हुआ कि ये दो प्रकार नहीं हैं प्रत्युत् काला नर होता है और हलके रंग का मादा। इसका प्रमाण यह है कि काले में अंडकोष होते हैं और हलके रंगवाले में अंडे तथा कई बार जाँच करने पर ऐसा ही मिला।

हमें मछली बहुत पसंद है और हर प्रकार की मछली हमारे लिए लाई जाती है। हिंदुस्थान में सबसे अच्छी मछली रोहू होती है और उसके बाद बरीं। दोनों को काँटे होते हैं और रूप रंग भी एक सा होता है। हर एक उन्हें पहिचान नहीं सकता। उनके मांस में भी विशेष भिन्नता नहीं है पर जाननेवाला रोहू के मांस को दोनों में अधिक स्वादु समझता है।

उन्नीसवाँ जलूसी वर्ष

बुधवार २६वीं जमादिउलअव्वल सन् १०३३ हि० को एक प्रहर दो घड़ी दिन बीतने पर संसार-पालक सूर्य मीन राशि में पधारे, जो सम्मान का स्थान है। शाही सेवकों ने पदों तथा मंसबों में उन्नति पाई। ख्वाजा अबुलहसन के पुत्र अहसनुल्ला का मंसब बढ़ाकर एक हजारी ३०० सवार का कर दिया। अहमदबेगखाँ काबुली के पुत्र मुहम्मद सईद को वही और मीर शरीफ दीवाने बयूतात तथा खवास खाँ प्रत्येक को एक हजारी कर दिया। सरदारखाँ काँगड़ा से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। इसी समय हमने यसावलों तथा रक्षकों को आज्ञा दी कि जब हम महल से बाहर आया करें तब वे विकृत मनुष्यों को जैसे अंधे, नाक-कान कटे हुए, कोढ़ी, लूँजे तथा हर प्रकार के रोगी मनुष्यों को दूर कर दिया करें जिसमें ये दिखलाई न दें। १६वीं को शरफ का उत्सव हुआ। इमामवर्दी का भाई अल्लाहवर्दी बेदौलत के यहाँ से भागकर दरबार चला आया और उस पर कृपा हुई।

बेदौलत के उड़ीसा के सीमा पर पहुँचने का समाचार बार-बार आ रहा था इसलिए शाहजादे तथा महाबत खाँ एवं उन अमीरों के नाम फर्मान भेजा गया, जो कि हमारे पुत्र की सहायता के लिए भेजे गये थे, कि वे दक्षिण के प्रांतों के शासन का प्रबंध इच्छानुकूल करके इलाहाबाद तथा बिहार की ओर शीघ्रता से जायँ और यदि बंगाल का प्रांताध्यक्ष उसका प्रबंध न कर सके और वह साहस का पैर आगे बढ़ावे तो वह विजयी सेना के चोटों से जो हमारे पुत्र के झंडे की छाया में हैं, असफलता के मैदान में भगा दिया जावे। सावधानी के विचार से रुरी उर्दिबिहिश्त को हमने अपने फर्जंद खानजहाँ को आगरे जाने की छुट्टी दी कि वहीं पास रहकर आदेश की प्रतीक्षा करे। यदि किसी विशिष्ट सेवा की आवश्यकता पड़ जाय और आज्ञा भेजी

जाय तो वह अवसर के अनुसार कार्य करे। हमने उसके लिए मोती के बटन टँकी हुई नादिरी के साथ खास खिलअत तथा एक जड़ाऊ तलवार और उसके पुत्र असालत खाँ के लिए एक घोड़ा तथा खिलअत भेजा।

इसी दिन दक्षिण के बख्शी अकीदत खाँ के यहाँ से सूचना आई कि आज्ञा के अनुसार हमारे ऐश्वर्यवान् पुत्र शाह पर्वेज ने राजा गजसिंह की बहिन से शादी कर ली है। हमें आशा है कि उसका आना साम्राज्य के लिए शुभ होगा। उसने यह भी लिखा कि पत्तन से तुर्कमान खाँ को बुलवाकर उसके स्थान पर अजीजुल्ला नियत कर दिया गया। आज्ञानुसार जानसिपार खाँ आकर सेवा में उपस्थित हुआ। जब वेदौलत ने बुर्हानपुर की नदी पार कर नाश का मार्ग लिया तब मीर हुसामुद्दीन अपने दोषों को विचार कर बुर्हानपुर में नहीं ठहर सका। अपनी संतानों को लेकर वह दक्षिण की ओर चला कि आदिल खाँ की शरण में रहकर अपना दिन व्यतीत करे। संयोग से जब वह बीड़ के पास से जा रहा था तभी जानसिपार खाँ को इसकी सूचना मिल गई और उसने कुछ मनुष्यों को उसे रोकने को भेज दिया। उन्होंने उसे तथा उसके अनुयायियों को कैद कर महाबत के सामने पहुँचा दिया। महाबत ने उसे कैद में डाल दिया और उससे एक लाख रुपए नगद तथा सामान ले लिया। जादोराय तथा ऊदाराम ने वेदौलत द्वारा बुर्हानपुर में छोड़े गए हाथियों पर अधिकार कर लिया और उन्हें शाहजादे के पास पहुँचा दिया।

वेदौलत के यहाँ से उसके उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए आए हुए काज़ी अब्दुल्अज़ीज़ को हमने बोलने का अवसर नहीं दिया था और उसे महाबत खाँ को सौंप दिया था। वेदौलत के पराजय के अनंतर महाबत खाँ ने उसे अपना सेवक बना लिया था। यह आदिल

खाँ का पुराना मित्र था और कुछ वर्षों तक खानजहाँ का वकील होकर बीजापुर में रहा था इसलिए महाबत खाँ ने उसे अपना वकील बनाकर आदिल खाँ तथा दक्षिण के सर्दारों के पास भेजा। उन सरदारों ने समय को देखते हुए तथा घटनाओं पर विचार करते हुए अधीनता तथा सेवा की इच्छा प्रगट की। विद्रोही अंबर ने अपने एक विश्वसनीय सेवक अलीशेर को भेजा और बड़ी विनम्रता प्रगट की। उसने महाबत खाँ के सेवक के रूप में लिखा कि वह देवलगाँव में आकर उसकी सेवा में उपस्थित होगा और अपने सबसे बड़े पुत्र को शाही सेवा में भर्ती करा देगा तथा हमारे भाग्यवान पुत्र की सेवा में रखेगा। इसी समय के लगभग काज़ी अब्दुल् अज़ीज़ के यहाँ से सूचना आई कि आदिल खाँ हृदयस्तल से सेवा तथा राजभक्ति के लिए तैयार है और उसने स्वीकार किया है कि वह मुल्ला मुहम्मद लारी को, जो उसके प्रधान प्रतिनिधि तथा मंत्री हैं और जिसे वह पत्रों में तथा मौखिक संदेशों में मुल्ला बाबा कहता है, पाँच सहस्र सवारों के साथ भेजेगा, जो बराबर सेवा में उपस्थित रहेगा एवं जिससे दूसरे लोग समझेंगे कि अन्य सेना भी आ रही है। आवश्यक आज्ञापत्र हमारे पुत्र के पास भेजे गए कि वह बेदौलत को पराभूत करने के लिए शीघ्रता से इलाहाबाद तथा बिहार जाय। इसी समय समाचार मिला कि वर्षा ऋतु तथा वर्षा की अधिकता के होते भी वह पुत्र ६ फरवरदीन को विजयी सेना के साथ बुर्हानपुर से निकला है और लालबाग में पड़ाव पड़ा है। महाबत खाँ मुल्ला मुहम्मद लारी के आने की प्रतीक्षा में बुर्हानपुर में रुका हुआ है कि उसके आने पर वहाँ के प्रबंध का कुल भार छोड़कर वह उसे लिवाकर शाहजादे के पास चला आवे। लश्कर खाँ, जादो राय, उदैराम तथा अन्य शाही सेवकों को बालाघाट जाने की तथा जफरनगर में रहने की आज्ञा दी गई है। जानसिपार खाँ को पहले के समान छुट्टी देकर पर्वेज ने असद खाँ मामूरी को एलिच-

पुर में नियत किया। शाहनवाज खाँ के पुत्र मनोचेहर को जालनापुर में नियत किया। उसने रिजवी खाँ को थालनेर भेजा कि खानदेश प्रांत की रक्षा करे।

इस दिन समाचार मिला कि लश्करी फर्मान लेकर आदिल खाँ के पास पहुँचा और वह नगर सजाकर उसके बाहर चार कोस आगे स्वागत के लिए गया तथा फर्मान एवं खिलअत को आदाब बजा लाया। २१ वीं को हमने पुत्र दावरबख्श, खानआजम तथा सफी खाँ के लिए खिलअत भेजे। सादिक खाँ को लाहौर के शासन पर नियत कर तथा खिलअत और एक हाथी देकर जाने की छुट्टी दी। यह आज्ञा दी गई कि उसका मंसब चार सदी ४०० सवार का कर दिया जाय। मिर्जा रुस्तम के पुत्र मुलतफात खाँ का मंसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी ३०० सवार का कर दिया।

एक दिन अहेर खेलते समय हमने सुना कि एक काले साँप ने दूसरे साँप को निगल लिया है तथा बिल में घुस गया है। हमने आज्ञा दी कि बिल खोदकर साँप को निकाल लावें। अतिरंजना रहित हमने इतना बड़ा साँप कभी नहीं देखा था। जब उसका पेट चीरा गया तो उस साँप का शरीर पूरा निकल आया, जिसे वह निगल गया था। यद्यपि यह साँप दूसरे प्रकार का था पर लंबाई तथा मुटाई में कम भिन्नता दिखलाई पड़ती थी।

इसी समय दक्षिण के वाकेआनवीसों की सूचना से ज्ञात हुआ कि महावत खाँ ने ज़ाहिद के पुत्र आरिफ को प्राणदंड देने की आज्ञा दी है और उसे अन्य दो पुत्रों के साथ कैद कर दिया है। ज्ञात हुआ कि उसने अपने हाथ से बेदौलत के पास प्रार्थनापत्र लिखकर भेजा था जिसमें अपनी तथा अपने पिता की ओर से स्वामिभक्ति, सत्यता, पश्चा-

ताप तथा लज्जा प्रगट की गई थी। संयोग से वह पत्र महाब्रत खाँ के हाथ पड़ गया। उसने आरिफ को अपने सामने बुलाकर वह पत्र दिखलाया। उसने स्वयं अपने रक्त के विरुद्ध निर्णयपत्र लिख दिया था। वह कोई ध्यान देने योग्य आपत्ति नहीं कर सका और विवशतः उसे प्राणदंड दिया गया तथा उसका पिता और भाई कैद हुए।

१ म खुरदाद को सूचना मिली कि शुजाअत खाँ अरब दक्षिण में अपनी मृत्यु से मर गया। इसी समय इब्राहीम खाँ फतहजंग के यहाँ से सूचना आई कि वेदौलत उड़ीसा में आ पहुँचा है। इसका विवरण इस प्रकार है कि उड़ीसा तथा दक्षिण की मिली हुई सीमाओं पर[1] रुकावट है। एक ओर ऊँचे पहाड़ हैं और दूसरी ओर दलदल तथा नदी है। गोलकुंडा के शासक ने एक दुर्ग तथा दीवाल बनवाकर तोपों तथा बंदूकों से उसे दृढ़ किया है। उस मार्ग से कुतुबुल्मुल्क की आज्ञा बिना जाना दुर्गम है। वेदौलत कुतुबुल्मुल्क के मार्ग-प्रदर्शन से उस मार्ग को पार कर उड़ीसा देश में पहुँच गया। ऐसा संयोग हुआ कि उसी समय इब्राहीम खाँ का भतीजा अहमदवेग खाँ ने खुर्दा के जमींदारों पर आक्रमण किया था। इस कारण कि यह विचित्र घटना किसी प्रकार की आशंका, समाचार या सूचना के घटित हो गई थी, वह निरुत्साहित हो गया एवं घबड़ा गया और अपनी चढ़ाई का

---

१. मुगल दरबार भा० ४ पृ० १३९ पर लिखा है कि 'छत्र द्वार से दो कोस पर सीरः पाड़ा पर चढ़ाई की, जो उड़ीसा तथा तिलंग के बीच एक दर्रा है।...इसके दूसरी ओर चार कोस पर मंसूर गढ़ है, जिसे कुतुबुल् मुल्क के दास मंसूर ने बनवा कर अपने नाम पर नाम रक्खा था।

कोई उपाय न कर उड़ीसा प्रांत की राजधानी 'बुलंबुली'[1] चला आया। यहाँ से वह अपने परिवार को लेकर कटक भागा, जो पिपली से बारह कोस पर बंगाल की ओर है। समय बहुत थोड़ा था इससे सेना एकत्र करने तथा प्रबंध ठीक करने का उसे अवसर नहीं मिला। उसने बेदौलत से युद्ध करने में अपने को समर्थ नहीं पाया और सामयिक आवश्यकतानुसार उसके पास सहयोगी भी नहीं थे इस लिए वह कटक से बर्दवान गया, जहाँ का जागीरदार मृत आसफ खाँ का भतीजा सालिह था। पहले सालिह बहुत चकित हुआ और बेदौलत आ रहा है इस पर तब तक विश्वास ही नहीं किया जब तक लानतुल्ला का पत्र उसे शांत करने के लिए नहीं आ गया।[2] सालिह ने बर्दवान दुर्ग दृढ़ किया और उसमें डट गया। इब्राहीम खाँ भी ऐसा भयानक समाचार सुनकर आश्चर्य में पड़ गया। यद्यपि उसके बहुत से सहायक तथा सैनिक गाँवों में चारों ओर बिखरे हुए थे और शीघ्र आ नहीं सकते थे तब भी वह दृढ़ता के साथ अकबर नगर, राजमहल, में जम गया और दुर्ग को दृढ़ करने तथा सेना एकत्र करने में लग गया। उसने जातियों के मुखियों तथा सैनिकों को प्रोत्साहित किया। उसने तोपों, अन्य शस्त्रों तथा युद्ध के लिए सामान सुसज्जित किया, इसी बीच बेदौलत के यहाँ से उसके पास सूचना आई कि ईश्वर के निर्णय तथा आकाश की आज्ञा से जो कार्य उसके योग्य नहीं थे वे ही हो गए। समय के टेढ़े-मेढ़े चक्र से तथा रात्रि एवं दिन के फेर से उसका इस ओर आना हो गया है। यद्यपि उसके पौरुषेय साहस के लिए इस देश की लंबाई-

---

१. पिप्पली या पिपली, देखिए मुगल दरबार भाग २ पृ० २६१, ४६१।

२. एक हस्त० प्रति यहीं समाप्त हो जाती है। इसके अनंतर मुहम्मद हादी जहाँगीर के राज्यकाल के अंत तक का संक्षिप्त विवरण देता है।

चौड़ाई क्रीड़ास्थल से अधिक नहीं है या घास पौधे का झारखंड मात्र है और उसका उद्देश्य इससे बहुत उच्च है पर इस ओर आ जाने के कारण वह इसे योंही नहीं छोड़ सकता। यदि इब्राहीम की इच्छा दरबार जाने की हो तो वह उसके या उसके परिवार को हानि पहुँचाने से हाथ रोक लेगा और वह सुचित्त मन से दरबार चला जावे। यदि वह रहना चाहे तो इस प्रांत का जो अंश माँगेगा वह उसे दे दिया जायगा।

———

अनुक्रम (क)

(व्यक्तिगत)

आ

ग

च

ज

प

फ

ह

अनुक्रम (ख)

(भौगोलिक)

फ

ब

भ